संस्कृत साहित्य का सामान्य इतिहास

(प्रश्नोत्तर सहित)

NET, SET संस्कृत, उत्तर प्रदेश TGT & PGT संस्कृत, राजस्थान लोक सेवा आयोग, अजमेर द्वारा प्रायोजित प्रथम, द्वितीय श्रेणी संस्कृत अध्यापक, मध्यप्रदेश वर्ग 1&2 संस्कृत, हरियाणा PGT संस्कृत एवं अन्य संस्कृत प्रतियोगी परीक्षा हेतु सर्वाधिक उपयोगी पुस्तक।



लेखकः
डॉ. भूपेन्द्र कुमार राठौर

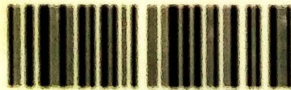
!!श्री गणेशाय नमः!!

संस्कृत साहित्य का सामान्य इतिहास

(प्रश्नोत्तर सहित)

NET, SET संस्कृत, उत्तर प्रदेश TGT, PGT संस्कृत, राजस्थान लोक सेवा आयोग, अजमेर द्वारा प्रायोजित प्रथम, द्वितीय श्रेणी संस्कृत अध्यापक, मध्यप्रदेश वर्ग 1-2 संस्कृत, हरियाणा PGT संस्कृत एवं अन्य संस्कृत प्रतियोगी परीक्षा हेतु सर्वाधिक उपयोगी पुस्तक

लेखक
डा. भूपेन्द्र कुमार राठौर
सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,रावतभाटा (चित्तौडगढ) (वि.स.यो.,राजस्थान सरकार)
(पूर्व अंशकालिक संस्कृत प्रवक्ता) वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय कोटा (राज.)
अध्यक्षः- हाडौती संस्कृत अकादमी (स्वायत्तशासी संस्था) कोटा (राज.)





शिवालिक प्रकाशन
दिल्ली भारत

प्रथम संस्करण : 2022

मूल्य : 2500.00 रुपये

ISBN : 978-93-91214-94-4

प्रकाशक :

शिवालिक प्रकाशन

4648/21, ग्राउंड फ्लोर, अंसारी रोड
दरियागंज, नई दिल्ली-110002
फोन : 011-42351161, 9811693579
ई-मेल : shivalikprakashan@yahoo.com

शाखा कार्यालय :

प्लॉट सं. 394, संजय नगर कालोनी
पहरिया, रामदत्तपुर, वाराणसी (उत्तर प्रदेश)

भारत में प्रकाशित

विरेन्द्र तिवारी द्वारा शिवालिक प्रकाशन 4648/21, अंसारी रोड, दिल्ली-110007 के लिए प्रकाशित। शब्द संयोजन : रूद्र ग्राफिक्स, दिल्ली और आर. के. ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली द्वारा मुद्रित।

Sanskrit Shatiya Ka Samanya Ithash by Bupendra Kumar Rathor

विषयानुक्रमणिका

!! अथ शुभः !!

!! मङ्गलाचरणम् !!

या सृष्टिःस्त्रष्टुराद्या, वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री,
ये द्वे कालं विधत्तः श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम्।
यामाहुःसर्वबीज प्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः,
प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः।।

(नान्दीवाक्-अभिज्ञानशाकुन्तलम्)

प्राक्कथन

संस्कृतं नाम दैवी वागन्वाख्याता महर्षिभिः।
भाषासु मधुरा मुख्या दिव्या गीर्वाणभारती॥

संस्कृत भारतीय संस्कृति की प्राणस्वरूपा है। भारतीय संस्कृति का अतीत एवं वर्तमान संस्कृत में ही निहित है, तो भविष्य भी संस्कृत पर ही अवलम्बित है। भारत और भारती अर्थात् संस्कृत वाणी का सम्बन्ध अटूट है। ज्ञान-विज्ञान का मूल स्त्रोत संस्कृत है। आधुनिकतम विज्ञान के सभी विषयों का मूल चिन्तन संस्कृत ग्रन्थों में हुआ है। संस्कृत धर्म-दर्शन-आयुर्वेद-विज्ञान-गणित-ज्योतिष-भूगोल-संगीत-ललित कला आदि सभी विषयों की जननी है। संस्कृत योगक्षेमं वहाम्यहम् सिद्धान्त की रक्षा करती हुई प्रतिभा पलायन जैसी राष्ट्रीय समस्या का हल सरलता से प्रस्तुत करती है। विश्व का सर्वप्राचीन लिखित अपोरुषेय ग्रन्थ ऋग्वेद है। इसमें त्याग-तपस्या एवं परोपकार का संदेश निहित है।

वेद-ब्राह्मण-आरण्यक-उपनिषद्-वेदांत-नाटक-महाकाव्य-दर्शन-व्याकरण आदि संस्कृत की थातियों में जनल्याणकारी सन्देश मिलता है। वेद कर्मपरायण एवं ज्ञानपरायणता सहित सत्मार्ग पर चलने का हमें उपदेश देते है, वैदिक ज्ञान बुद्धि से कर्तव्यपरायणता का मानवीय संदेश देता है, जिसकी वर्तमान में हमे अत्यन्त आवश्यकता है। ब्राह्मण ग्रन्थों एवं आरण्यक ग्रन्थों ने हमें सादगी ओर सदाचार का सन्देश दिया, जिससे मानवता फलती-फूलती रहे। संस्कृत ने मनुष्य को धर्म अर्थात् कर्तव्य का मंगलमय सन्देश दिया। उपनिषदों ने हमें चिन्तन-मनन की शक्ति का नवीन स्वरूप दिया है। उपनिषदों ने विद्ययाऽमृतमश्नुते, उतिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत् का सन्देश दिया तथा जीवन की सच्चाई को प्रस्तुत किया है।

भारतीय दर्शन ने हमें परम लक्ष्य को बताया है। जिस तरह नदियाँ हजारों मील चलकर समुद्र में समा जाती है, ठीक उसी तरह यह जीवन, यह संसार समय की खाड़यों को पाटता हुआ और ऊँची-नीची मंजिलों को पार करके ईश्वर में मिल जाता है। मनुष्य जाति के लिए दर्शनों का यह महान् सन्देश भारतीय मनीषियों की अमर देन है। छः वेदांगों ने संस्कृत में ज्ञान-विज्ञान की नवीन शाखाओं का प्रणयन किया है। पुराणों ने जनता की भाषा को सरल स्वरूप देकर धर्म, संस्कृति का उपदेश दिया है। महाभारत ने धर्म-अर्थ-काम और मोक्ष का सन्देश दिया है। श्रीमद्भगवद्गीता ने ज्ञान-कर्म-भक्ति का हमें उपदेश दिया हैं। गीता संसार में प्रेम और पवित्रता को फैलाती है। स्मृति ग्रन्थों से सत्य-न्याय-समानता का जनकल्याणकारी निर्देश मिलता है। महर्षि वाल्मीकि की रामायण लोक धर्म का कल्याणकारी उपदेश देती है। पिता-पुत्र, भाई-भाई, पति-पत्नी का आदर्श स्वरूप समाज में रामायण ने प्रस्तुत किया है, जो इतिहास में अन्यत्र दुर्लभ है।

भगवान् महावीर और बुद्ध ने संसार को तप, त्याग, अहिंसा, सत्य, उदारता, दया, प्रेम और समानता का संदेश दिया हैं। सत्य और अहिंसा हमारे जीवनाधार है और पंचशील हमारा राष्ट्रीय आदर्श। तथागत बुद्ध की शिक्षाओं ने ही हमें पंचशील का सन्देश दिया। यह पंचशील आज हमारी राष्ट्रनीति है। हमारी इस राष्ट्रनीति का

आधार मानवता का मंगल और कल्याण है। संस्कृत की यह लोक कल्याणकारी विरासत आगे बढ़ती गयी। व्याकरण, शब्दकोश, ज्योतिष, आयुर्वेद जैसे विषयों से संस्कृत में ज्ञान-विज्ञान की नवीन शाखाओं का उद्भव हुआ। साहित्य के साथ ही समाज भी आगे बढ़ता गया। संस्कृत ने समाज की इन आवश्यकताओं को पूर्ण किया हैं। चाणक्यनीति ने समाज में व्यवस्था बनायी तथा सबके अधिकारों का निर्धारण किया। अर्थशास्त्र ने न्याय और सुरक्षा का प्रबन्ध किया। हमारे देश के संविधान को संस्कृत के अर्थशास्त्र और धर्मशास्त्र के आधार पर स्वरूप दिया है। इस रूप में भी संस्कृत इस देश की जीवनाधार बनी है। विविध कलाओं के साथ संस्कृत की धरा पर कविता का जन्म हुआ है। अनेक कवियों व नाटककारों ने समाज की अच्छाइयों व बुराइयों को अपने कलम का आधार बनाया और समाज को बुराइयों से बचाकर अच्छाइयों की ओर प्रेरित किया।

महाकवि कालिदास का वह अमर संदेश जिसने शकुन्तला के जीवन को पवित्र प्रेम का प्रतिबिम्ब बनाकर गृहस्थ जीवन को सांस्कृतिक-व्यावहारिक-सामाजिक मूल्यों से युक्त बनाया है। पञ्चतन्त्र, हितोपदेश कथा ग्रन्थों में नैतिक उपदेश और सदाचार की बातों को सरलता से प्रस्तुत किया है। साहित्य, कला-कौशल और ज्ञान-विज्ञान की यह विपुल विरासत जो इस देश को परम्परा से मिलती रही, संस्कृत की ही देन है। संस्कृत हमें जीवन की उन्नति के लिए त्याग-तपस्या-सदाचार-सत्य और ईमादारी का सन्देश देती है। यह भी सत्य है कि सत्य की धरती पर ही भारतीय चेतना का जन्म हुआ है। सत्य विजय होता है - **सत्यमेव जयते**। संस्कृत ने मानव जीवन के लिए कल्याणकारी उपदेश दिया है। उसने **वसुधैव कुटुम्बकम्** का नैतिक उपदेश देकर सम्पूर्ण पृथिवी पर विद्यमान जड़ चेतन को परिवार का दर्जा देकर सर्वे भवन्तु सुखिनः के अमोघ वाक्य से सदैव कल्याण की कामना की है।

संस्कृत साहित्य का इतिहास अत्यन्त विशाल है, जिसे पूर्णतः उपस्थापित करना असम्भव तो नहीं किन्तु कठिन अवश्य है। इस विषय पर आचार्य बलदेव उपाध्याय, वाचस्पति गैरोला, डॉ. उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी, डॉ. जगन्नाथ पाठक, ए. बी किथ, विन्टरनित्ज जैसे उच्च कोटि के प्राच्य - पाश्चात्य विद्वानों ने बहुत कुछ लिखा है किन्तु विद्वानों के उक्त विषयक उन दीर्घकाय ग्रन्थों का पठन-पाठन आज के परिक्षार्थी के लिए काफी कठिन हो गया है। अतः इसको सरलतम प्रस्तुति के रूप में रामजी उपाध्याय, डॉ. बाबूराम, देवर्षि कलानाथ शास्त्री, डॉ. रामदेव साहू आदि विद्वानों ने स्तुत्य प्रयास किये है।

मेरा दृष्टिकोण एवं उद्देश्य सांस्कृतिक व ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में संस्कृत साहित्य के अनुशीलन की आवश्यकता की सम्पूर्ति है। संस्कृत साहित्य का सामान्य इतिहास (प्रश्नोत्तर सहित) वैदिक एवं लौकिक दोनों धाराओं को आधारभूत मानकर लिखा गया है। दोनों धाराओं के आधारभूत ग्रन्थों एवं उनके प्रणेताओं के विषय में वांछनीय जानकारी सरल, संक्षिप्त व सशक्त प्रस्तुति के रूप में उपस्थापित की गयी है। पुस्तक में भाषा एवं लेखनशैली को सरल, प्रवाहपूर्ण एवं बोधगम्य बनाने की पूर्ण चेष्टा की गयी है, जिससे आज के विद्यार्थी को अध्यापन में सरलता प्राप्त हो सकें।

प्रस्तुत संस्कृत साहित्य का सामान्य इतिहास (प्रश्नोत्तर सहित) कुल छः अध्यायों में लिखा गया है। प्रथम अध्याय में वैदिकसंस्कृतसाहित्य के अन्तर्गत वेद (संहिता), ब्राह्मणग्रन्थ, आरण्यकग्रन्थ, वेदांगग्रन्थ, प्रमुख उपनिषदों का सामान्य परिचय तथा याज्ञवल्क्यस्मृति के आचाराध्याय का विवेचन प्रश्नोत्तर शैली में हैं। द्वितीय अध्याय में लौकिकसंस्कृतसाहित्य के अन्तर्गत वीरकाव्य परम्परा में आदिकवि वाल्मीकि प्रणीत आदिकाव्य रामायण। महर्षि वेदव्यास प्रणीत महाभारत, श्रीमद्भगवद्गीता। महाकाव्यकार अश्वघोष, कालिदास, भारवि, माघ तथा श्रीहर्ष। नाट्यकार भास, कालिदास, भवभूति, शूद्रक एवं विशाखदत्त। गद्यकाव्यकार सुबन्धु, दण्डी, और बाणभट्ट। चम्पू काव्य, कथा एवं आख्यान साहित्य और मुक्तक काव्य/नीतिकाव्यकवि भर्तृहरि। कालिदास कृत मेघदूत खण्डकाव्य, गीतिकाव्य ऋतुसंहार तथा निम्नलिखित आधुनिक संस्कृत कवियों में पं. अम्बिकादत्त व्यास, पं. पद्म शास्त्री, भट्ट मथुरानाथ शास्त्री, देवर्षि कलानाथ शास्त्री, डॉ. प्रभाकर शास्त्री, प्रो. हरिराम आचार्य, डॉ.

शिवसागर त्रिपाठी, पं. मोहनलाल शर्मा पाण्डेय का परिचयात्मक वर्णन प्रश्नोत्तर सहित है। तृतीय अध्याय में भारतीय दर्शन का संक्षिप्त विवेचन है, इसमें निम्न दर्शन ग्रन्थों का सामान्य अध्ययन तर्कभाषा-प्रामाण्यवादपर्यन्त (केशवमिश्र), चार्वाकदर्शन, सांख्यकारिका (ईश्वरकृष्ण) प्रश्नोत्तर सहित वर्णित है। चतुर्थ अध्याय में अलंकार शास्त्र को रखा गया है, इसके अन्तर्गत अलंकारशास्त्र के निम्नांकित आचार्यों का संक्षिप्त परिचय (आचार्य भरत, अभिनवगुप्त, मम्मट, भामह, विश्वनाथकविराज, पीयूषवर्षजयदेव, वामन, कुन्तक, आनन्दवर्धन, क्षेमेन्द्र तथा पण्डितराजजगन्नाथ) दिया गया है। पंचम अध्याय में भाषा विज्ञान की जानकारी दी गयी है। इसके अन्तर्गत भाषा की उत्पत्तिः प्रमुखसिद्धान्त, उच्चारणस्थान, ध्वनिनियम तथा भाषाओं का वर्गीकरण है। षष्ठ अध्याय में भारतीय संस्कृति से सम्बन्धित निम्न प्रकरण वर्णव्यवस्था, आश्रमव्यवस्था, संस्कार तथा महायज्ञ का प्रश्नोत्तर सहित उल्लेख है।

प्रतिस्पर्धात्मक वर्तमान युग में शैक्षणिक क्षेत्र निरन्तर जटिल बन रहा है। विद्यार्थी अनेक प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में लगा रहता है, परन्तु परीक्षा-उपयोगी सामग्री के अभाव में उसे संघर्ष का अत्यधिक सामना करना पड़ता है। संस्कृत साहित्य का सामान्य इतिहास पुस्तक NET, SET संस्कृत, उत्तर प्रदेश TGT & PGT संस्कृत, राजस्थान लोक सेवा आयोग, अजमेर द्वारा प्रायोजित प्रथम, द्वितीय श्रेणी संस्कृत अध्यापक, मध्यप्रदेश वर्ग 1&2 संस्कृत, हरियाणा PGT संस्कृत एवं अन्य संस्कृत प्रतियोगी परीक्षा हेतु सर्वाधिक उपयोगी है। पुस्तक को छात्रवृन्द के मध्य प्रस्तुत करते हुए मुझे विश्वास है कि मेरा परिश्रम विद्यार्थी जगत् के लिए सदैव सर्वाधिक उपयोगी होगा। कहा गया है कि - धरति लोकोऽनेन धरति लोकं वा धरति विश्वमिति, धरति लोकान् ध्रियते वा जनैरिति अर्थात् जो कार्य संकल विनाश एवं अधोगति से बचाकर उत्कर्ष की ओर अग्रसित करें, वही धर्म है, सुकर्म ही धर्म है।

सर्वप्रथम पुस्तक के मूर्तस्वरूप को परमपिता परमेश्वर सहित श्री खडे गणेश जी महाराज (कोटा) श्री बेडे वाले हनुमान जी महाराज (बडवा) व आराध्य देवों के श्री चरणों में समर्पित करता हूँ, जिनके आशीर्वाद का यह प्रतिफल है।

मैं अपनी परम पूज्या वात्सल्यमयी माता श्रीमती तुलसा बाई एवं परम आदरणीय पिता श्री भैरुलाल राठौर के श्री चरणों में कोटिशः प्रणाम करता हूँ। जिसके शुभाशीश वचनों से यह महान कार्य पूर्णता की ओर अग्रसर हुआ है।

मैं अपने परम आदरणीय गुरु जी डॉ. उमारमण झा D. Lit. संस्कृत विद्वान् सेवानिवृत्त प्राचार्य राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, लखनऊ उत्तर प्रदेश, डॉ. रामदेव साहू सेवानिवृत्त सह आचार्य राजकीय शास्त्री संस्कृत महाविद्यालय कालाडेरा, जयपुर, डॉ. श्रीमती सुदेश आहूजा शोधनिदेशिका गुरुवर्या सेवानिवृत्त सह आचार्या राजकीय कला महाविद्यालय कोटा, डॉ. पंकज कुमार मिश्र सह आचार्य सेंट स्टीफन्स कॉलेज दिल्ली के आशीर्वाद को नमन करता हूँ। जिससे शिक्षा जगत् के लिए उपयोगी पुस्तक के निर्माण की प्रेरणा मिली है।

इसी श्रेणी में डॉ. श्री राजमल मालव, सह आचार्य राजकीय कन्या महाविद्यालय कोटा, डॉ. श्री राजेश कुमार बैरवा, डॉ. वन्दना शर्मा सह आचार्य राजकीय कला महाविद्यालय कोटा, श्री मुकेश कुमार मीना। प्राचार्य एवं सहायक आचार्या श्रीमती रजनी मीना सहित सभी स्नेही सहा. आ. (वि.स.थो.) राजकीय महाविद्यालय, रावतभाटा के प्रतिहार्दिक धन्यवाद प्रकट करती हूँ। राजकीय महाविद्यालय रावतभाटा के प्रति हार्दिक धन्यवाद अभिव्यक्त करता हूँ।

मैं अपने अनुज चेतन कुमार सहित भाई-बहिनों के असीम सहयोग एवं विश्वास के प्रति धन्यवाद व्यक्त करता हूँ। आत्मीयतापूर्ण संबल देने के लिए धर्मपत्नी श्रीमती देवीशा के साथ बालक चि. प्रणव एवं आदित्य भी धन्यवाद के पात्र है, जिसकी मधुर मुस्कान एवं तुतलाती वाणी मुझे नवीन ऊर्जा एवं स्फूर्ति प्रदान करती है।

मैं हाड़ौती संस्कृत अकादमी (संस्था) कोटा के सदस्य शुभाकांक्षी श्री बाबूलाल राठौर एवं डॉ. तारेश कुमार शर्मा स्नेही मित्र के प्रति हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

संस्कृत साहित्य का सामान्य इतिहास (प्रश्नोंत्तर सहित) पुस्तक के लेखन, सम्पादन, सामग्री, संकलन, निर्देशन एवं परामर्श में जो मेरे प्रेरणास्त्रोतस्वरूप तथा सहयोगी रहे है, इन सब के प्रति हृदय से कृतज्ञता प्रकट करते हुए हाड़ौती संस्कृत अकादमी (संस्था) कोटा को शतशः कोटि धन्यवाद देता हूँ।

मैं शिवालिक प्रकाशन नई दिल्ली के निदेशक श्रीमान् वीरेंन तिवारी का शुक्रगुजार हूँ कि उन्होंने प्रकाशन का अधिभार ग्रहण कर इस कार्य को विद्यार्थियों के समक्ष मूर्तरूप में लाकर स्तुत्य प्रयास किया है, उन्हें धन्यवाद ज्ञापित करता हुआ अन्तिम क्रम में यह करबद्ध अभ्यर्थना करता हूँ कि संस्कृत साहित्य का सामान्य इतिहास (प्रश्नोत्तर सहित) पुस्तक में जो भी अच्छाइयाँ है, वह अभीष्ट आशीर्वाद का प्रतिफल है तथा जो न्यूनताएँ हैं वे सब मेरी अल्पज्ञता एवं समयाभाव का हेतु है।

अतः इसमें जो भी दोषानुभूति हो, उनका समाधानपूर्वक दिग्दर्शन अवश्य कराते रहें क्योंकि न हि सर्वः सर्वं जानाति। इस कार्य में रचनाधर्मिता के साथ न्याय हो, यही शाश्वतधर्म है।

श्रावण शुक्ल पूर्णिमा
संस्कृत-दिवस
विक्रम संवत्-2079
11 अगस्त, 2022

–डॉ० भूपेन्द्र कुमार राठौर

अध्याय–1

वैदिकसंस्कृतसाहित्य

वेद (संहिता)

विद् धातु से घञ् प्रत्यय करने पर निष्पन्न वेद शब्द का शाब्दिक अर्थ होता है-**जिसके द्वारा हमें ज्ञान मिले वहीं वेद है**। विश्व साहित्य का सबसे प्राचीनतम ग्रंथ वेद (ऋग्वेद) है। वेद शब्द से उन समस्त वाङ्मय का ग्रहण होता हैं, जिसके अन्तर्गत संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् आदि का समावेश है। वेदों में भारतीय संस्कृति, सदाचार, धर्म, दर्शन, ज्ञान-विज्ञान, सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन से सम्बन्धित सभी विषय उपलब्ध होते है। भारतीय परम्परा के अनुसार वेद अपौरुषेय है। वे सदियों पूर्व से मानव जीवन के कल्याण के साधन बनकर हमें निर्देशित करते आए हैं। वेदो के अध्ययन के बिना भारतीय संस्कृति और जीवन दर्शन को समझना अत्यन्त कठिन है।

वेद का अर्थ

वेद शब्द ज्ञानार्थक विद् धातु से घञ् प्रत्यय होकर बनता है, जिसका अर्थ ज्ञान है।

वैदिक विभाजन

वस्तुतः वेद चार है–ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद किन्तु अथर्ववेद में मारण मोहन उच्चाटन सम्बन्धी मन्त्रों का संकलन किया गया है। ऐसी संभावना है कि ये विषय उस समय आदर को प्राप्त नहीं रहे होंगे, इसलिए वेदत्रयी के अन्तर्गत अथर्ववेद की गणना नहीं की जाती। ऋग्वेद के पुरुष सूक्त के एक मंत्र में ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद का नाम आया है, जिससे ज्ञात होता है कि वेदत्रयी के अन्तर्गत वेद तीन है। यथा–

तस्माद् यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे ।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद् यजुस्तस्मादजायत ।। (पुरुष सूक्त. 10/90)

वेद से तात्पर्य

वेद से तात्पर्य वैदिक साहित्य से है। आपस्तम्बधर्मसूत्र में लिखा है कि–**मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्** अर्थात् मन्त्र और ब्राह्मण भाग को वेद कहा जाता हैं। **मननात् मन्त्राः** अर्थात् जिसका मनन किया जाए उसे मंत्र कहते है। मंत्रों के समूह को संहिता कहते है। जिसमें स्तुति, यज्ञपरक ज्ञेय एवं रक्षा विधायक मन्त्रों का समन्वय होता है, ऐसे मंत्र समूह को संहिता कहते हैं। वेदव्यास ने चारों ऋत्विजों की आवश्यकता को ध्यान में रखकर उनके उपयुक्त मंत्रों का संकलन संहिता के रूप में किया है। संहिताएं चार है -

1) **ऋक् संहिता** 2) **यजु संहिता** 3) **साम संहिता** 4) अथर्व संहिता ।

ऋक् संहिता (ऋग्वेद)

ऋग्वेद वैदिक साहित्य का सबसे प्राचीनतम ग्रंथ है क्योंकि इसके मंत्र प्रत्येक संहिताओं में उपलब्ध है। यह किसी एक ऋषि की रचना नहीं है यह विभिन्न काल में विभिन्न ऋषियों द्वारा लिखी गई रचनाओं का संग्रह ग्रंथ है। इसलिए इसे ऋक् संहिता कहते है। छन्दों एवं चरणों से युक्त मंत्रों को ऋक् या ऋचा कहते है और ऋचाओं के संग्रह को ऋक् संहिता कहते है। मैक्समूलर ने ऋग्वेद के विषय में लिखा है विश्व साहित्य में ऋग्वेद उस रिक्त स्थान की पूर्ति करता है जो किसी भाषा की साहित्यिक कृति में सम्भव नहीं है। ऋग्वेद ज्ञान प्रधान वेद है। इसके मुख्य देवता अग्नि, ऋषि-पैल, ऋत्विक होता, छन्द-गायत्री, वर्ण-श्वेत एवं उपवेद आयुर्वेद है। होतृगण में होता मैत्रावरुण (प्रशास्ता), अच्छावाक ग्रावस्तुत आते है। ऋग्वेद की मूल लिपि ब्राहमी है।

ऋग्वेद की शाखाएँ

महाभाष्यकार पतंजलि के अनुसार ऋग्वेद की 21 शाखाएँ है। भर्तृहरि के अनुसार 15 शाखाएँ है किन्तु आचार्य शौनक ने चरणव्यूह नामक परिशिष्ट ग्रन्थ में ऋग्वेद की पाँच शाखाओं का उल्लेख किया है,जो निम्न है–1) शाकल 2) वाष्कल 3) आश्वालयन 4) शांखायन 5) माण्डूकायन। इनमें केवल शाकल शाखा ही पूर्णतया वर्तमान में उपलब्ध है। वाष्कल शाखा अपूर्ण है और शेष शाखाएँ अनुपलब्ध है। उनका केवल उल्लेख मात्र मिलता है। शाकल शाखा के प्रवर्तक शाकल ऋषि है। यह दस मण्डलों में विभाजित है। इसलिए ऋग्वेद को **दशतयी** भी कहते है। इसमें **1017** सूक्त है, इसके अतिरिक्त 11 सूक्त बालखिल्य है। इस प्रकार ऋग्वेद में कुल **1028** सूक्त है।

ऋग्वेद का रचनाक्रम

ऋग्वेद का विभाजन दो प्रकार से प्राप्त होता है–1) अष्टक क्रम तथा 2) मण्डल क्रम।

1) अष्टक क्रम : अष्टक क्रम के अनुसार यह ग्रंथ आठ अष्टकों में विभाजित हैं प्रत्येक अष्टक आठ अध्यायों में विभक्त है। इस प्रकार से ऋग्वेद में कुल 64 अध्याय तथा 2006 (18 बालखिल्य सुक्तों सहित 2024 वर्ग) है। आचार्य शौनक के सर्वानुक्रमणिका ग्रन्थ के अनुसार ऋग्वेद में सम्पूर्ण मंत्रों की संख्या 10580 ½ है तथा कुल 1,53,826 शब्द है और 4 लाख 32 हजार अक्षर है।

2) मण्डल क्रम : यह विभाजन अत्यधिक सुसंगत एवं मनोवैज्ञानिक है। इसमें सम्पूर्ण ऋग्वेद को ऋषि और देवता के अनुसार 10 मण्डलों में विभक्त किया है। इसमें 10 मण्डल, 85 अनुवाक, 11 बालखिल्य सूक्तों को जोड़कर 1028 सूक्त और 10580½) मंत्र है। ऋग्वेद में 20 छन्दों का प्रयोग हुआ है तथा 24 ऋषिकाओं का उल्लेख है।

मण्डल	सूक्त संख्या	मन्त्र संख्या	ऋषि का नाम	विशेष विवरण
प्रथम	191	2006	मधुच्छन्दा	अर्वाचीन
द्वितीय	43	429	गृत्समद	वंश/पारिवारिक
तृतीय	62	617	विश्वामित्र	....
चतुर्थ	58	589	वामदेव	....
पंचम	87	727	अत्रि	....
षष्ठ	75	765	भारद्वाज	....
सप्तम	104	841	वशिष्ठ	....
अष्टम	92+11 बालखिल्य	1716	कण्व	
नवम	114	1108	सोम	पवमान
दशम	191	1754	शूद्र	अर्वाचीन
कुल	**1028**	**10552/10580½)**		

ऋग्वेद की विषयवस्तु देवस्तुति।

ऋग्वेद में मुख्यतः यज्ञ सम्बन्धित देवताओं की स्तुति प्राप्त होती है। सामान्य रूप से सूक्तों के वर्गीकरण का आधार अधोलिखित बिन्दु हैं–1. देवतासूक्त 2. संवादसूक्त 3. दानस्तुतिसूक्त 4. तत्त्वज्ञानसूक्त 5. संस्कारसूक्त 6. मांत्रिकसूक्त 7. लौकिकसूक्त तथा 8. आप्रीसूक्त।

ऋग्वेद के त्रिदेवता

सूर्यदेवता–द्युस्थानीय। वायुदेवता–अन्तरिक्षस्थानीय। अग्निदेवता–पृथ्वीस्थानीय।

वेद के संरक्षण का उपाय (अष्ट विकृतियाँ)

जटा, माला, शिखा, रेखा, घन, ध्वज, दण्ड तथा रथपाठ। इनमें घनपाठ सबसे कठिन और बडा होता है।

ऋग्वेद से सम्बन्धित निम्न ब्राह्मण ग्रंथ है

(1) ऐतरेय ब्राह्मण ग्रंथ (2) कौषीतकि ब्राह्मण ग्रंथ

ऋग्वेद से सम्बन्धित निम्न आरण्यक ग्रंथ है -

(1) ऐतरेय आरण्यक ग्रंथ (2) कौषीतकि/शांखायन आरण्यक ग्रंथ

ऋग्वेद की तीन उपनिषदें प्राप्त होती है -

(1) ऐतरेयोपनिषद् (2) कौषीतकि उपनिषद् (3) वाष्कलोपनिषद्।

संवाद सूक्त/आख्यान

यम यमी	–10/10,	पुरूरवा उर्वशी	–10/95
सरमा पणि	–10/108,	विश्वामित्र नदी	–3/33

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्र. 1 संहिता का विकल्प है ?
उत्तर वेद।
प्र. 2 संहिता किसे कहते है ?
उत्तर समिश्रण, संकलन, मंत्रों के समूह, आर्चिक।
प्र. 3 संहिताएं कितनी है ? नाम लिखिए।
उत्तर चार। ऋक्, यजु, साम, अथर्व।
प्र. 4 'अपौरुषेयं वाक्यं वेदः' यह भाष्य है ?
उत्तर आचार्य सायण।
प्र. 5 "जिसके अन्तर्गत सभी सत्य विद्याओं का ज्ञान प्राप्त होता है" उसे कहते है, कथन है ?
उत्तर वेद, स्वामी दयानन्द का।
प्र. 6 संसार का सबसे प्राचीनतम साहित्य है ?
उत्तर वेद।
प्र. 7 वेद शब्द निष्पन्न होता है ?
उत्तर विद् धातु घञ् प्रत्यय।
प्र. 8 संहिताओं का संकलन किस ऋषि ने किया था ?
उत्तर वेदव्यास।

प्र. 9 यज्ञ का अध्यक्ष कौन होता है ?
उत्तर ब्रह्मा।
प्र. 10 वेदों में कितने प्रकार के देवताओं का वर्णन है ?
उत्तर 33 प्रकार के।
प्र. 11 वेदों में स्वर के कितने प्रकार है ?
उत्तर तीन प्रकार के (उदात्त, अनुदात्त, स्वरित)।
प्र. 12 वेदत्रयी के अन्तर्गत गणनीय नहीं है ?
उत्तर अथर्ववेद।
प्र. 13 पद्यात्मक वेद है ?
उत्तर ऋग्वेद।
प्र. 14 सुनिश्चित अक्षर, संज्ञा, पाद तथा विराम वाले मंत्रों की संहिता है ?
उत्तर ऋक् संहिता।
प्र. 15 ऋग्वेद संहिता का प्रतिपाद्य विषय है ?
उत्तर शस्त्र।
प्र. 16 जो मंत्रों द्वारा उच्चारित होता है तथा जिसका गान नहीं करते है, उसे कहते है ?
उत्तर शस्त्र।
प्र. 17 सर्वप्रथम वेदों का निर्वचन किसने किया था ?
उत्तर आचार्य यास्क ने।
प्र. 18 ऋग्वेद के ऋत्विक् कौन है ?
उत्तर होता।
प्र. 19 ऋचा किसे कहते है ?
उत्तर जिसके द्वारा देवताओं की स्तुति की जाती है।
प्र. 20 ऋचा की उत्पत्ति किससे हुई है ?
उत्तर विराट पुरूष के मुख से।
प्र. 21 वेदों में ऋचा का क्या अर्थ है ?
उत्तर मंत्र, याज्या, कंडिकाएँ।
प्र. 22 सर्वप्राचीन वेद है ?
उत्तर ऋग्वेद।
प्र. 23 सबसे विशाल वेद है ?
उत्तर ऋग्वेद।
प्र. 24 दशतयी की उपाधि से युक्त वेद है ?
उत्तर ऋग्वेद।
प्र. 25 होता का सम्बन्ध है ?
उत्तर ऋग्वेद।
प्र. 26 ऋग्वेद की अध्ययन परम्परा का आरम्भ किस ऋषि से हुआ?
उत्तर पैल ऋषि।
प्र. 27 ऋग्वेद के विभाग है ?

उत्तर दो विभाग (अष्टक व मण्डल)।
प्र. 28 सम्पूर्ण ऋग्वेद में कितने मण्डल, अनुवाक और सूक्त है ?
उत्तर 10 मण्डल, 85 अनुवाक, 1028 सूक्त।
प्र. 29 ऋग्वेद में कितने अष्टक, अध्याय एवं वर्ग है ?
उत्तर 8 अष्टक, 64 अध्याय, 2006 वर्ग।
प्र. 30 ऋग्वेद का सर्वप्रथम पद पाठ किस ऋषि ने किया ?
उत्तर शाकल ऋषि।
प्र. 31 शाकल संहिता है ?
उत्तर ऋग्वेद।
प्र. 32 ऋग्वेद की पतंजलि ने कितनी शाखाएं बताई है ?
उत्तर 21 शाखाएं।
प्र. 33 ऋग्वेद के चरणव्यूह ग्रंथ में कितनी शाखाएं है ?
उत्तर 5 शाखाएं।
प्र. 34 ऋग्वेद के प्रथम व दशम मण्डल को किस नाम से जाना जाता है ?
उत्तर अर्वाचिन मण्डल।
प्र. 35 ऋग्वेद में कितने सूक्त बालखिल्य है ?
उत्तर 11 सूक्त।
प्र. 36 ऋग्वेद में कितने संवाद सूक्त है ?
उत्तर 20 संवाद सूक्त।
प्र. 37 ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल से सप्तम मण्डल को कहते है ?
उत्तर वंश मण्डल/पारिवारिक मण्डल।
प्र. 38 ऋग्वेद के नवम् मण्डल को क्या कहते है ?
उत्तर पवमान मण्डल।
प्र. 39 ऋग्वेद संहिता के किन दो मण्डलों की सूक्त संख्या समान है ?
उत्तर प्रथम एवं दशम।
प्र. 40 ऋग्वेद के किस मण्डल में सर्वाधिक मंत्र है ?
उत्तर प्रथम मण्डल में (2006 मंत्र)।
प्र. 41 ऋग्वेद के किस मण्डल में सबसे कम मंत्र है ?
उत्तर चतुर्थ मण्डल में (589 मंत्र)।
प्र. 42 ऋग्वेद के किस मण्डल में सर्वाधिक सूक्त है ?
उत्तर प्रथम व दशम मण्डल ।
प्र. 43 ऋग्वेद के किस मण्डल में सबसे कम सूक्त है ?
उत्तर द्वितीय मण्डल (43 सूक्त)।
प्र. 44 ऋग्वेद का आरम्भ और अन्त किस देव की स्तुति से होता है ?
उत्तर आरम्भ अग्निदेव व अन्त संज्ञान देव।
प्र. 45 ऋग्वेद का उपवेद है ?
उत्तर आयुर्वेद।

प्र 6. देवताओं का दूत व पुरोहित है ?

उत्तर अग्निदेवता।

प्र 7. अग्नि की आकृति है ?

उत्तर दीप्तिमान्।

प्र 8. **'स नः पितेव सुनवे'** मन्त्रांश है ?

उत्तर अग्नि देवता से सम्बन्धित।

प्र 9. आचार्य यास्क के अनुसार अग्निदेवता का निवास स्थान है ?

उत्तर पृथिवी।

प्र 10. ऋग्वेद के कितने सूक्तों में अग्निदेवता की स्तुति की गई है ?

उत्तर 200।

प्र 11. **मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च** प्रस्तुत मन्त्रांश किस सूक्त से है ?

उत्तर पुरुष सूक्त।

प्र 12. ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के प्रथम सूक्त में किस छन्द का प्रयोग हुआ है ?

उत्तर गायत्री।

प्र 13. आर्यो का प्रमुख देव है ?

उत्तर अग्नि।

प्र 14. अग्नि का किस ऋतु से सम्बन्ध है ?

उत्तर वसन्त।

प्र 15. घृतमुख विशेषण है ?

उत्तर अग्नि का।

प्र 16. **उपत्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्धियावयम्। नमो भरन्त एमसि।।** मन्त्र में दोषावस्तः शब्द का क्या अर्थ है ?

उत्तर अहर्निशम् (रात-दिन)।

प्र 17. **राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम्। वर्धमानं स्वे दमे।।** मन्त्र किस देवता से सम्बन्धित है ?

उत्तर अग्निदेवता।

प्र 18. त्रिरूपात्मक देव है ?

उत्तर अग्निदेव।

प्र 19. **अग्निर्होताकविक्रतुः, सत्यश्चित्रश्रवस्तमः। देवोदेवेभिरागमत्।।** यहाँ **कविक्रतुः** विशेषण किसके लिए प्रयुक्त हुआ है ?

उत्तर अग्निदेवता के लिए।

प्र 20. 'अतिथि' विशेषण किस देव का है ?

उत्तर अग्निदेव।

अग्निदेवता के विशेषण

(1) धृतमुख (2) धृतपृष्ठ (3) धृतलोम (4) धृतकेश (5) धृताक्ष (6) चतुरक्ष (7) गृहपति (8) दमूनस (9) अंगिरस (10) दूत (11) विश्ववेदा(12) सहस्त्राक्ष(13) अर्चिलोम(14) बभ्रुलोम (15) जातवेदस् (16) भुवनचक्षु (17) ऋतुगोपा(18) सप्तरश्मि (19) अपानपात्(20) पुरोहित(21) धूमकेतु (22) यविष्ठ (23) ऋत्विक (24) धूम्रवर्णश्मश्रु (25) कविक्रतु (26) सहस् पुत्र (27) होता।

2) **विष्णु देवता :** ऋग्वेद के द्युस्थानीय देवताओं में विष्णु देवता का महत्वपूर्ण स्थान है। विष्णु शब्द व्यापकशील होने का द्योतक है। व्यापक होने से यह सूर्य के भी वाचक कहलाते है। जिसका अर्थ है–**तीनों लोकों को प्रकाशित करने वाला।** ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के 154 वें सूक्त में ऋषि दीर्घतमा ने विष्णुदेव की स्तुति की है। विष्णु का परम पद गोलोक है जो अमृत से परिपूर्ण है। विष्णु को वामन, वराह, कच्छप आदि अवतार धारण करने वाला बताया है। विष्णु देवता गर्भ के रक्षक देवता है। विष्णु देवता के लिए उरुगाय शब्द का प्रयोग किया गया है।

- द्युस्थानीय देवताओं में विष्णु देवता का महत्वपूर्ण स्थान है। त्रिविक्रम, उरुगाय, उरुक्रम आदि विशेषण विष्णु से सम्बन्धित है। त्रिविक्रम का अर्थ है- **तीन पादों से विश्व आक्रमण।**
- आचार्य और्णवाभ का मत है कि -सूर्य के दैनिक तीन पड़ाव उदय, मध्य एवं अस्त विष्णु के त्रिपाद है।
- विष्णु का सम्बन्ध गति से है। उसके गति सम्बन्ध से ही 90 दिवसों का एक ऋतु एवं चार ऋतु मिलकर 360 दिवसों के सौर वर्ष का वर्णन प्राप्त होता है।
- विष्णु को गिरिक्षित एवं गिरिष्ठा विशेषण प्राप्त है।
- गर्भ धारण एवं गर्भ संरक्षण विष्णु का अन्यतम कार्य है।
- वराहावतार, मत्स्यावतार, कूर्मावतार का मूल भी विष्णु के त्रिपाद से संकेत है।
- **वेवेष्टि व्याप्नोति इति विष्णुः** वह सर्वत्र व्याप्त है, अतः इसे विष्णु कहा जाता है।
- ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के 154 वें सूक्त में ऋषि दीर्घतमा ने विष्णु देव की स्तुति की है।
- विष्णु का वाहन गरुड है।
- **त्रेधा विचक्रमाणः** भगवान् विष्णु के वामन अवतार की ओर संकेत है।
- ऋग्वेद में विष्णु देवता से सम्बन्धित 5 सूक्त ही प्राप्त होते है।
- उरुक्रम, उरुगाय, त्रिविक्रम, विक्रम, कुचर, गिरिष्ठा, वृष्ण, गिरिक्षित, भीम, मातरिश्वा आदि विष्णु देवता के विशेषण है।
- विष्णु शब्द विषु धातु से बना है। जिसका अर्थ है-तीनों लोकों को प्रकाशित करने वाला।
- विष्णु ने वराह का अवतार लिया था।
- गर्भ के रक्षक व शरीर के अधिष्ठाता देवता विष्णु है।
- उरुगाय शब्द का ऋग्वेद में 121 बार प्रयोग हुआ है।
- त्रिपाद से सम्बन्धित देवता विष्णु है।
- पुराणों में कच्छप का अवतार विष्णु ने लिया था।
- यज्ञ प्रत्यक्षतः विष्णु का स्वरूप है।
- **यस्य त्रीपूर्णामधुनापदान्यक्षीयमाणा स्वधयामदन्ति,** मन्त्रांश किस देवता से सम्बन्धित है- विष्णुदेवता।
- **न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः** मन्त्राश विष्णु देवता से सम्बन्धित है।
- **ता वां वास्तून्युश्मसि गमध्यै, यत्र गावो भूरिशृंगा अयासः।**
  अत्राह तदुरुगायस्यद वृष्णः परमं पदमवभाति भूरि।। मन्त्र किस देवता से सम्बन्धित है- विष्णु देवता।

(विष्णु सूक्त (1/154 देवता-विष्णु, ऋषि-दीर्घतमा, मन्त्र-6, छन्द-त्रिष्टुप्)

- विष्णु देवता के विशेषण- **उरुक्रम, कुचर, भीम, उरुगाय, गिरिष्ठा, मातरिश्वा, त्रिविक्रम, वृष्ण, विक्रम, गिरिक्षित**

- विष्णु देवता के तीनों डग मधु से परिपूर्ण है।
- विष्णु देव की स्तुति किस ऋषि ने की है- दीर्घतमा।
- विष्णु का रूपान्तर देव 'नारायण' है
- विष्णु का वैदिक रूप पुराणों में जिस अवतार में प्राप्त होता है वह 'वामनावतार' है।
- विष्णु जिस देव की कल्पना है, वह है सूर्यदेव।
- विष्णु पद पृथिवी, वायु तथा स्वर्ग में किसका द्योतक है ?
  पृथ्वी पर- अग्नि, वायुमण्डल में विद्युत, स्वर्ग में सूर्य।

प्रश्नोत्तर

प्र. 1 विष्णु शब्द किस धातु से बना है ?
उत्तर विषू धातु से।
प्र. 2 विषू धातु का शाब्दिक अर्थ क्या है ?
उत्तर तीनों लोकों को प्रकाशित।
प्र. 3 वामन का अवतार लिया था ?
उत्तर विष्णु ने।
प्र. 4 विष्णु का वाहन है ?
उत्तर गरुड।
प्र. 5 गर्भ के रक्षक देवता है ?
उत्तर विष्णु।
प्र. 6 उरुक्रम व उरूगाय विशेषण है ?
उत्तर विष्णु देवता।
प्र. 7 शरीर का अधिष्ठाता देव है ?
उत्तर विष्णु।
प्र. 8 उरुगाय शब्द का ऋग्वेद में कितनी बार प्रयोग हुआ है ?
उत्तर 121 बार।
प्र. 9 ऋग्वेद के कितने सूक्तों में विष्णु देव की स्तुति मिलती है ?
उत्तर 5 सूक्तों में।
प्र. 10 विष्णु का निवास स्थान है ?
उत्तर भु लोक।
प्र. 11 पुराणों में कच्छप का अवतार किसने लिया था ?
उत्तर विष्णु ने।
प्र. 12 त्रिपाद से सम्बन्धित देवता है ?
उत्तर विष्णु।

विष्णु सूक्त (1/154, देवता- विष्णु, ऋषि-दीर्घतमा, मन्त्र-6, छन्द- त्रिष्टुप्)

प्र. 1. विष्णुदेवता का निवास स्थान है ?
उत्तर - द्युलोक।

प्र.2. ऋग्वेद में विष्णुदेवता से सम्बन्धित कितने सूक्त है ?
उत्तर - 5।
प्र.3. त्रिपाद से सम्बन्धित देवता है ?
उत्तर - विष्णुदेवता।
प्र.4. विष्णुदेवता का परमपद है ?
उत्तर - गोलोक।
प्र.5. कामनाओं की वर्षा करने वाले देव है ?
उत्तर - विष्णु।
प्र.6. 'उरुगाय' किसका विशेषण है ?
उत्तर - विष्णु।
प्र.7. ऋग्वेद में उरुगाय शब्द का प्रयोग कितनी बार हुआ है ?
उत्तर - 121।
प्र.8. त्रिविक्रम विशेषण है ?
उत्तर - विष्णु।
प्र.9. विष्णु का वाहन है ?
उत्तर - कूर्म/गरुड जी।
प्र.10. यज्ञ प्रत्यक्षतः किसका स्वरूप है ?
उत्तर - विष्णु।
प्र.11. **'यस्य त्रीपूर्णा मधुना पदान्यक्षीयमाणा स्वधया मदन्ति'** मन्त्रांश किस देवता से सम्बन्धित है ?
उत्तर- विष्णु।
प्र.12 विष्णुदेव की स्तुति किस ऋषि ने की थी ?
उत्तर - दीर्घतमा।
प्र.13. विष्णुदेवता के तीनों डग किससे परिपूर्ण है ?
उत्तर - मधु से।
प्र.14. **न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः** मन्त्रांश किस देवता से सम्बन्धित है ?
उत्तर - विष्णु देवता।
प्र.15. **तावां वास्तून्युश्मसि गमध्यै, यत्र गावो भूरिशृंगा अयासः।**
अत्राह तदुरूगायस्य वृष्णः, परमं पदमवभाति भूरि।। मन्त्र किस देवता से सम्बन्धित है ?
उत्तर - विष्णु देवता।

विष्णु देवता के विशेषण

(1) उरूक्रम (2) उरूगाय (3) त्रिविक्रम(4) विक्रम (5) कुचर (6) गिरिष्ठा (7) वृष्ण (8) गिरिक्षित(9) भीम (10) मातरिश्वा

3) पुरुष सूक्त/ देवता : ऋग्वेद के दार्शनिक एवं सृष्टि विषयक सूक्तों में पुरुष सूक्त का महत्वपूर्ण स्थान है। इस विराट पुरुष से ही सृष्टि की उत्पत्ति हुई है। यह ऋग्वेद के 10 वें मण्डल का 90 वां सूक्त है। इसमें पुरुष (परमात्मा) के विराट् स्वरूप का वर्णन ऋषि नारायण ने 16 मन्त्रों में किया है। श्रीमद्भगवद्गीता के एकादश

अध्याय मे अर्जुन द्वारा किये गये विराट् पुरुष की सिद्धि में यह सूक्त समानता रखता है। पुरुष सूक्त का वर्णन कृष्ण यजुर्वेद के अतिरिक्त सभी संहिताओं में प्राप्त होता है। वेदत्रयी, वर्णव्यवस्था आदि की उत्पत्ति पुरुष से ही हुई है।

पुरुष सूक्त

मण्डल- 10, ऋषि- नारायण, सूक्त- 90, देवता- पुरुष। मन्त्र- 16, (15 मन्त्र अनुष्टुप्, अन्तिम मन्त्र त्रिष्टुप्)

जगत् की उत्पति के विषय में जो सूक्त प्राप्त होते है, उनमें पुरुष सूक्त अन्यतम है। सृष्टि उत्पत्ति विषयक, दार्शनिक सूक्त के रूप में प्रसिद्ध इस सूक्त में विराट् पुरुष से ही सृष्टि प्रक्रिया, चारों वेदों के आविर्भाव, ग्राम्य तथा आरण्यक पशुओं की उत्पत्ति सूर्यादि ग्रहों के प्राकट्य तथा सामाजिक व्यवस्था की उत्पत्ति बतलाई गई है। व्यष्टि और समष्टि के रूप में पारस्परिक तादात्म्य का इस सूक्त में गम्भीरतापूर्वक पल्लवन हुआ है। वर्णव्यवस्था का क्रमबद्ध सुस्पष्ट समुल्लेख सर्वप्रथम इस सूक्त में ही प्राप्त होता है। मैक्डॉनल तथा वालिस का मत है कि इसमें सर्वेश्वरवाद के मूल बीज सन्निहित है। ग्रिस्वाल्ड के मत में परवर्ती एकेश्वरवाद सिद्धान्त का मूल स्त्रोत यही सूक्त है जो आगे चलकर अद्धैतवाद के **'सर्वखल्विदं ब्रह्म'** के रूप में स्थिर हुआ है। पुरुष सूक्तस्थ–**'तानि धर्माणि प्रथमान्यासन'** के रूप में पहली बार सामाजिक व धार्मिक सुव्यवस्था के लिए रचे गये नियमों का उल्लेख भी इसी सूक्त पर आधृत होकर पुरुष मेघ की कल्पना करते है। श्रीमद्भगवद्गीता के एकादश अध्याय में अर्जुन द्वारा किये गये विराट् पुरुष की सिद्धि में यह सूक्त समानता रखता है। पुरुष सूक्त का वर्णन कृष्ण यजुर्वेद के अतिरिक्त सभी संहिताओं में प्राप्त होता है।

प्रश्नोत्तर

प्र. 1 दार्शनिक सूक्त है ?
उत्तर पुरुष/नासदीय/प्रजापति/वाक्।
प्र. 2 ऋग्वेद के किस मण्डल में पुरुष सूक्त की स्तुति मिलती है ?
उत्तर 10 वें मण्डल के 90 वें सूक्त में।
प्र. 3 **'ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यकृतः'** किस सूक्त से है ?
उत्तर पुरुष सूक्त से।
प्र. 4 तीनों वेदों की उत्पत्ति किस सूक्त से बतायी है ?
उत्तर पुरुष सूक्त से।
प्र. 5 पुरुष देव का ऋग्वेद के कितने सूक्तों में वर्णन है ?
उत्तर 7 सूक्तों में।
प्र. 6 श्रीमद्भगवत्गीता के 11 वें अध्याय पर किसका प्रभाव है ?
उत्तर पुरुष सूक्त का।
प्र. 7 एकदेववाद का प्रतिपादक है ?
उत्तर पुरुष देव।
प्र. 8 आत्मज्ञान के रहस्य को बतलाने वाला देव है ?
उत्तर पुरुष देव।

पुरुष सूक्त (10/90, देवता- पुरुष, ऋषि-नारायण, मन्त्र-16, छन्द- अनुष्टुप् (1-15 मन्त्र तक) त्रिष्टुप्-16 वाँ मन्त्र)

प्र. 1. पुरुष सूक्त के ऋषि है ?
उत्तर- नारायण।
प्र. 2. पुरुष सूक्त में कितनी ऋचाएं है ?
उत्तर- 16।
प्र. 3. दार्शनिक सूक्त है ?
उत्तर- पुरुषसूक्त, हिरण्यगर्भ सूक्त, नासदीय सूक्त तथा वाक् सूक्त।
प्र. 4. **सहस्त्रशीर्षा पुरूषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्। स भूमिं विश्वतोवृत्वात्यतिष्ठद् दशांगुलम्।।** मन्त्र में कौन सा छन्द है ?
उत्तर - अनुष्टुप्।
प्र.5. **उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेताति रोहति।** मन्त्र किस देवता से सम्बन्धित है ?
उत्तर - पुरुष देवता।
प्र.6. **त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः। ततोविष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि।।** मन्त्र किस देवता से सम्बन्धित है ?
उत्तर - पुरुष देवता।
प्र.7. **तस्माद् विराट् अजायत विराजो अधिपुरुषः।** उपर्युक्त ऋचांश किस देवता से सम्बन्धित है ?
उत्तर - पुरुष देवता।
प्र. 8. **स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः।** मन्त्र से सम्बन्धित सूक्त है ?
उत्तर - पुरुष देवता।
प्र. 9. सृष्टि रूपी यज्ञ का धृत, ईंधन एवं हवि किसे कहा है ?
उत्तर - धृत–वसन्त, ईंधन–ग्रीष्म, हवि–शरद्।
प्र.10. **तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्य पुरुषं जातमग्रतः। तेन देवा अयजनत् साध्या ऋषयश्च ये।।** मन्त्र से सम्बन्धित सूक्त है ?
उत्तर - पुरुष सूक्त।
प्र.11. वेदत्रयी की उत्पत्ति किस सूक्त में बतायी है ?
उत्तर - पुरुष सूक्त।
प्र.12. **ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रोऽजायत।।** मन्त्र किस सूक्त से सम्बन्धित है ?
उत्तर - पुरुष सूक्त ।
प्र.13. **मुखादिद्रश्चाग्निश्च** मन्त्रांश किस सूक्त से सम्बन्धित है ?
उत्तर - पुरुष सूक्त।
प्र.14. **सप्तस्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वानां अबध्नन्पुरुषं पशुं।** सम्बन्धित है ?
उत्तर - पुरुष सूक्त।
प्र.15. **यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः, तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। तेन ह नाकं महिमानः सचन्तः यत्रपूर्वे साध्यः सन्ति देवाः।।** सम्बन्धित मन्त्रांश है ?
उत्तर - पुरुष सूक्त।

4) वरुण देवता : ऋग्वेद के 12 सूक्तों में वरुण देव का वर्णन है। यह द्युस्थानीय देवताओं में महत्वपूर्ण है। वरुण के पास उनके शस्त्र बताये गये है। यह देव प्रकृति के नियमों का महान अधिपति देव है। वरुण के विधान के कारण ही द्युलोक और पृथ्वी लोक अलग-अलग स्थित है। वरुण शब्द की व्युत्पत्ति वर् धातु से निष्पन्न होती है जिसका अर्थ है परिवर्तन करने वाला। इनके मुख अग्नि एवं नेत्र सूर्य है। इनका आवास सुवर्णमय है। वरुण देवता नैतिक मूल्यों के देवता है। इनके पाश बहुत प्रसिद्ध है, जो उत्तम, मध्यम और अधम प्रकार है। इनकी अनिवर्चनीय शक्ति का नाम माया है। वरुण देवता के प्रमुख विशेषणों में असुर, क्षत्रिय, ऋतगोपा, दूतदक्ष, स्वराट्, सम्राट, मायावी, अमृतस्यगोपा आदि है।

(वरुण सूक्त प्रथम मण्डल सूक्त- 25 ऋषि- शुनःशेष छन्द-गायत्री।)

वरुण एक द्युस्थानीय देवता है। ऋग्वेद के लगभग 12 सम्पूर्ण सूक्तों में तथा अंशतः 24 अन्य सूक्तों में वरुण की स्तुतियाँ संकलित है। वरुण की मानवाकृति अत्यन्त सुन्दर है। ये अपनी भुजाओं को हिलाते हुए भ्रमण करते है, रथ हाँकते है, खाते-पीते है तथा बैठते है इनका शरीर पुष्ट व मांसल है। इनका सुनहरा कवच दर्शकों के हृदय को चकाचौंध कर देता है। सूर्य इनके नेत्र है ऊर्ध्वतम लोक में एक हजार स्तम्भों तथा सहस्त्रद्वारों से मण्डित इनका स्वर्णिम प्रासाद है। 'असुर' विशेषण से विशिष्ट वरुण को ऋग्वेद में एक सम्राट के रूप में उपस्थित किया गया है। सभी लोक वरुण में ही समाहित है। विश्व के नैतिक-अध्यक्ष के रूप में वरुण से बढ़कर कोई भी देवता नहीं है। वरुण माया शक्ति से जगत् का संचालन करते है, सूर्य इनके नेत्र तथा वायुगत शब्द इनके श्वांस-प्रश्वांस है। वरुण की व्युत्पत्ति–**वरुणों वृणोतीति सतः।**

वरुण देवता के विशेषण- 1. असुर, 2. क्षत्रिय, 3. घृतव्रत, 4. ऋतगोपा, 5.अमृतस्यगोपा, 6. उरुशंशः, 7. दूतदक्ष, 8. मायावी, 9. सम्राट, 10. स्वराट्, 11. अपांपति।

प्रश्नोत्तर

प्र. 1 ऋग्वेद के कितने सूक्तों में वरुण देव का वर्णन है ?
उत्तर 12 सूक्तों में।
प्र. 2 वरुण शब्द की निष्पत्ति किस धातु से हुई है ?
उत्तर वर् धातु से।
प्र. 3 वरुण का निवास स्थान है ?
उत्तर द्यु-स्थानीय।
प्र. 4 विश्व का सम्राट है ?
उत्तर वरुण देव।
प्र. 5 वरुण देव का हथियार है ?
उत्तर पाश।
प्र. 6 वरुण किस वर्ण का देवता है ?
उत्तर क्षत्रिय वर्ण का।
प्र. 7 पुराणों में वरुण को कहा जाता है ?
उत्तर जल देवता।
प्र. 8 संसार को नियमों पर चलाने पर वरुण को उपाधि प्राप्त है ?
उत्तर धृतवत।
प्र. 9 नैतिक नियमों का नियामक देव है ?
उत्तर वरुण देव।

प्र. 10 वैदिक साहित्य में असुर कहा गया है ?
उत्तर वरुण देव।
प्र. 11 असुर का अर्थ है ?
उत्तर प्राणों को देने वाला।
प्र. 12 ऋग्वेद में असुर शब्द का प्रयोग होता है ?
उत्तर देवताओं के लिए।
प्र. 13 माया शक्ति से जगत् का संचालन करने वाला देव है ?
उत्तर वरुण देव।
प्र. 14 वरुण का नेत्र है ?
उत्तर सूर्य।
प्र. 15 किस देवता में सभी लोक समाहित है ?
उत्तर वरुण देव।
प्र. 16 सूर्य के कृष्ण पक्ष का प्रतिनिधित्व करने वाला देव है ?
उत्तर वरुण देव।
प्र. 17 किस देवता को कठोर न्यायाधीश माना गया है ?
उत्तर वरुण देव को।
प्र. 18 वरुण का कवच है ?
उत्तर सुवर्णमय।
प्र. 19 वरुण देव की शक्ति है ?
उत्तर दिव्य।

(वरुण, सूक्त प्रथम मण्डल सूक्त- 25 ऋषि- शुनःशेप छन्द- गायत्री।)

प्र. 1. वरुण देव का निवास स्थान है ?
उत्तर– द्युलोक।
प्र. 2. वरुण किस वर्ण के देवता है ?
उत्तर– क्षत्रिय।
प्र. 3. ऋग्वेद के कितने सूक्तों में वरुण देव का वर्णन है ?
उत्तर– 12।
प्र. 4. वरुण देव के हथियार है ?
उत्तर– पाश।
प्र. 5. पुराणों में वरुण को कहा जाता है ?
उत्तर– जल के देवता।
प्र. 6. संसार में नियमों को चलाने पर वरुण को उपाधि प्राप्त है ?
उत्तर– धृतव्रत।
प्र. 7. नैतिक नियमों के नियायमक देव है ?
उत्तर– वरुण।
प्र. 8. न्यायाधीश है ?
उत्तर– वरुण देवता।

प्र. 9. माया शक्ति से जगत् का संचालन करने वाले देव है ?
उत्तर– वरुण देव।
प्र. 10. अवेस्ता में अहुरमज्द किसे कहा है ?
उत्तर– वरुण देवता।
प्र. 11. ऋक् का सम्बन्ध किस देवता से है ?
उत्तर– वरुण देवता।
प्र. 12. सूर्य के कृष्ण पक्ष का प्रतिनिधित्व करने वाले देवता है ?
उत्तर– वरुण देवता।
प्र. 13. क्षत्र पद किस देव के लिए प्रयुक्त हुआ है ?
उत्तर– वरुण देवता।
प्र. 14. H_2O को स्पष्ट करने वाले ऋग्वेदीय देवता है ?
उत्तर– मित्रावरुणौ।
प्र. 15. वरुण सूक्त के ऋषि कौन है ?
उत्तर– शुनःशेप।
प्र. 16. वरुण सूक्त में (1/25) में किस छन्द का प्रयोग हुआ है ?
उत्तर– गायत्री।
प्र. 17. वरुण सूक्त के प्रथम मण्डल के 25 वे सूक्त में कितने मन्त्र है ?
उत्तर– 21।
प्र. 18. मा नो वधाय हत्नवे, जिहीळानस्यरीरधः मा हृणानस्य मन्यवे।। प्रस्तुत ऋचा किस सूक्त से है ?
उत्तर– वरुण सूक्त।
प्र. 19. परा हि विमन्यवः पतन्ति वस्य इष्टये। वयो न वसती रूपः।। प्रस्तुत ऋचा किस सूक्त से है ?
उत्तर– वरुण सूक्त।
प्र. 20. तदित्समानमाशाते <u>वेनन्ता</u> न प्रयुच्छतः। यहाँ रेखाङ्कित पद से क्या अभिप्राय है ?
उत्तर– मित्रावरुणौ।
प्र. 21. वेद यो वीनांपूदमन्तरिक्षेण पतताम्। वेद नावः समुद्रियः।। प्रस्तुत मन्त्र में वरुण देवता की कौनसी विशेषता व्यक्त हुयी है ?
उत्तर– सर्वज्ञता।
प्र. 22. अधिक माह को जानने वाला देवता है?
उत्तर– वरुण।
प्र. 23. वरुण देवता का कवच है ?
उत्तर– सुवर्णमय।
प्र. 24. वरुण देवता की शक्ति है ?
उत्तर– माया।
प्र. 25 परा में यन्ति धीतये। गावो न गव्यतीरनु। इच्छन्तीरुरूचक्षसम्।। यह मन्त्र किस देवता की स्तुति में है ?
उत्तर– वरुण देवता।
प्र. 26. उदुत्तमं मुमुग्धि नो विपाशं मध्यमं चृत। अबाधमानि जीवसे। वरुण देवता के पाश कहलाते है ?
उत्तर– उत्तम, मध्यम, अधम।

प्र. 27. वरुण देवता के पाश कितने प्रकार के है ?
उत्तर– 3।
प्र. 28. 'धृतव्रत' विशेषण किस देव के लिए प्रयुक्त होता है ?
उत्तर– वरुण।
प्र. 29. विमृळीकाय ते मनो रथीरश्वं न संदितम्। <u>गीर्भि</u>र्वरुण सीमहि।। यहाँ रेखाङ्कित पद क्या अर्थ है ?
उत्तर– स्तुतियाँ।
प्र. 30. परा हि में विमन्यवः पतन्ति वस्य इष्टये। वयो न वसतीरूप । मन्त्र किस सूक्त से उद्धृत है ?
उत्तर– वरुण।
प्र. 31. कदाक्षत्रश्रियं नरमा..........करामहे। मृळीकायोरुचक्षसम्।। रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए ?
उत्तर– वरुण।
प्र. 32. अतो विश्वान्यद्मुता चिकित्वाँ अभिपश्यति। कृतानि या च कर्त्वा।। मन्त्र किस सूक्त से उद्धृत है ?
उत्तर– वरुण।
प्र. 33. निषसाद धृतव्रतो, वरुणः <u>पस्त्या</u>3स्वा। साम्राज्याय सुक्रतुः।। रेखाङ्कित पद का अर्थ लिखिए ?
उत्तर– प्रजाओं।
प्र. 34. बिभ्रद्द्रापिं हिरण्ययं वरुणो वस्त निर्णिजम्। <u>परिस्पशो</u> निषेदिरे।। रेखाङ्कित पद का अर्थ लिखिए ?
उत्तर– किरण।
प्र. 35. न यं दिप्सन्ति दिप्सवो द्रुह्वाणो जनानाम्। न देवम् <u>अभिमातयः</u>।। रेखाङ्कित पद का क्या अर्थ है ?
उत्तर– पापीजन।
प्र. 36. उत यो मानुषेष्वा यशश्चके असाम्या। अस्माकमुदरेष्वा।। मन्त्र किस सूक्त से उद्धृत है ?
उत्तर– वरुण सूक्त।
प्र. 37. परा मे यन्ति धीतये। गावो न गव्यूतीरनु। इच्छन्तीरुरुचक्षसम्।। मन्त्र किस सूक्त से उद्धृत है ?
उत्तर– वरुण सूक्त।
प्र. 38. वेदमासो धृतव्रतो द्वादश प्रजावतः। वेदा य उपजायते।। मन्त्र किस सूक्त से उद्धृत है ?
उत्तर– वरुण सूक्त।
प्र. 39. वेद वातस्य वर्तनिमुरोर्ऋष्वस्य बृहतः। वेदा ये अध्यासते।। मन्त्र किस सूक्त से उद्धृत है ?
उत्तर– वरुण सूक्त।
प्र. 40. सं नु वोचावहै, पुनर्यतो में मध्वाभृतम्। होतेव क्षदसे प्रियम्।। मन्त्र किस सूक्त से उद्धृत है ?
उत्तर– वरुण सूक्त।
प्र. 41. इमं मे वरुण श्रुधि हवमद्या च मृळय।। त्वामवस्युराचके।। मन्त्र किस सूक्त से उद्धृत है ?
उत्तर– वरुण सूक्त।
प्र. 42. दर्शं नु विश्वदर्शतं दर्शं रथमधि क्षमि। एता जुषत मे गिरः।। मन्त्र किस सूक्त से उद्धृत है ?
उत्तर– वरुण सूक्त।
प्र. 43. अपांपति किसका विशेषण है ?
उत्तर– वरुण देवता।
प्र. 44. धर्मपति है ?
उत्तर– वरुण।
प्र. 45. वरुण देवता के पाशों से बचने का उपाय क्या है ?
उत्तर– सत्यभाषण, सत्यव्यवहार, निष्पाप होना।

संस्कृत साहित्य का सामान्य इतिहा

प्र. 46. वरुण देवता है, इनके दूत कहे जाते है ?

उत्तर– स्पश्।

प्र. 47. वरुण सूक्त के ऋषि (1.25) है ?

उत्तर– शुनःशेप।

प्र. 48. नैतिक नियमों के अधिष्ठाता देव है ?

उत्तर– वरुण।

5. इन्द्रदेवता : इन्द्रदेवता ऋग्वेद काल के सर्वाधिक प्रिय एवं राष्ट्रीय देवता है।

- ऋग्वेद के लगभग 250 सूक्तों में इन्द्र देवता का वर्णन किया गया है।
- इन्द्र देवता का निवास स्थान अंतरिक्ष है।
- इन्द्र द्यौः अदिति का पुत्र है। इन्द्र की पत्नी इन्द्राणी है, इसे शचि भी कहते हैं जो शक्ति का प्रतीक है।
- पुरुष सूक्त के अनुसार इन्द्र की उत्पति विराट पुरुष के मुख से हुई है। यथा–मुखाद्रिन्द्रश्चाग्निश्च है।
- वृत्रों के विनाश हेतु देवताओं द्वारा इन्द्र को उत्पन्न किया था। धनं वृत्राणां जनयन्तः देवाः।
- आचार्य यास्क ने इन्द्र की तीन विशेषताएं बताई है–
  1. रसानुप्रदान,
  2. वृत्रवध तथा
  3. बलकृति।
- इन्द्र को नर्य कहते हैं। वह जनहित कर्ता है।
- इन्द्र को शतक्रतु कहते है क्योंकि वह सैंकड़ों पुरुषार्थ के कार्य करता है।
- इन्द्र वह सोमप्रेमी है, इसलिए सोपमा कहते है।
- इन्द्र को लोकप्रिय आयुध वज्र है, जिसका निर्माण त्वष्टा ने किया था। इन्द्र का द्वितीय आयुध भाला है।
- इन्द्र का सर्वाधिक प्रेमी 'वृषाकपि' नामक बंदर है।
- इन्द्र सूक्त (2/12 के ऋषि गृत्समद है।
- इनके होठों के अत्यंत सुंदर होने के कारण इन्हें सुशिप्र कहा गया है।
- इन्द्र का प्रधान शस्त्र वज्र है। इसी व्रज को धारण करने के कारण इन्हें वज्रिन या वज्रबाहु कहा जाता है।
- इन्द्र का सर्वश्रेष्ठ पेय सोम है। इसलिए इसे सोमपा कहा जाता है–यो सोमपा निचितो वज्रबाहुः।

प्रश्न. 1 इन्द्र देवता का स्थान है?

उत्तर– अंतरिक्ष।

प्रश्न. 2 यः सोमपा निचितो में यः पद किसके लिए है?

उत्तर– इन्द्र।

प्रश्न. 3 मधवा विशेषण किस देवता के लिए है?

उत्तर– इन्द्र।

प्रश्न. 4 हिरण्यबाहुः इसका क्या अर्थ है?

उत्तर– इन्द्र।

प्रश्न. 5 इन्द्र के साथ स्तुत्य देवता है?

उत्तर– सोम।

प्रश्न. 6 इन्द्र को ऋग्वेद में किस नाम से पुकारा जाता है?

उत्तर– पुरंदर।

प्रश्न. 7 यः सूर्य यः उषसं जजान इसमें किस देव की स्तुति है?

उत्तर– इन्द्र।

प्रश्न. 8 वैदिक संहिताओं में सर्वाधिक पराक्रमी देव है?

उत्तर– इन्द्र देवता।

प्रश्न. 9 यस्मान्न ऋते विजयन्ते में यस्मात् का क्या अभिप्राय है?

उत्तर– इन्द्र।

प्रश्न. 10 द्यावाचिदस्मै पृथिवी नेमते यहां अस्मै पद किसको व्यक्त करता है?

उत्तर– इन्द्र।

प्रश्न. 11 रोदसी पद का क्या अर्थ है?

उत्तर– द्यावा पृथ्वी।

प्रश्न. 12 चालीसवीं शरद ऋतु में इन्द्र ने किस असुर को मारा था?

उत्तर– शंबर।

प्रश्न. 13 इन्द्र के किस नाम का उल्लेख ऋग्वेद में

उत्तर– वृत्रहन।

इन्द्र सूक्त 2.12, ऋषि-गृत्समद, देवता-इन्द्र, मण्डल-2, सूक्त-12, छन्द-त्रिष्टुप् मन्त्र = 15

प्रश्न. 14 इन्द्र सूक्त के ऋषि है?

उत्तर– गृत्समद।

प्रश्न. 15 ऋग्वेद के कितने सूक्तों में इन्द्र देवता की स्तुति मिलती है?

उत्तर– 250।

प्रश्न. 16 यो जात एव प्रथमो मनस्वान् मंत्रांश है?

उत्तर– इन्द्र देवता।

प्रश्न. 17 यस्य शुष्माद्रोदसी अभ्यसेतां नृम्णस्य मंत्रांश है?

उत्तर– इन्द्रदेवता।

प्रश्न. 18 यः पृथिवीव्यथमानामदृहद्यः पर्वतान् प्रकृपितां अरम्णा यो अंतरिक्ष विममे वरीयो द्यो धामस्तभमानत स जनास् .... रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए?

उत्तर– इन्द्रः।

प्रश्न. 19 वृत्रासुर हंता है?

उत्तर– इन्द्रदेव।

प्रश्न. 20 सातनदियों को प्रवाहित करने वाले देव हैं?

उत्तर– इन्द्रदेव।

प्रश्न. 21 बलासुर से गायों को मुक्त कराने वाले देवता है?

उत्तर– इन्द्र।

प्रश्न. 22 दो पत्थरों के मध्य अग्नि को किसने उत्पन्न किया?

उत्तर– इन्द्र।

प्रश्न. 23 यो अश्मनोस्तग्निं जजान संवृक्समतसु मंत्रांश है?

उत्तर– इन्द्र।

प्रश्न. 24 येनेमाविश्वाच्यवनाकृत्वा यो दासं वर्णमधरं गुहाकः मंत्रांश से संबंधित देवता है?

उत्तर– इन्द्र।

प्रश्न. 25 श्वघ्नीव यो जिगींवा लक्ष्माददर्यः पुष्टानि मंत्रांश है?

उत्तर– इन्द्र।

प्रश्न. 26 यं स्मा पृच्छन्ति कुहसेति घोरमुतेमाहुनैर्षो संबंधित देवता है?

उत्तर– इन्द्र।

प्रश्न. 27 सुशिप्र विशेषण है?

उत्तर– इन्द्र।

प्रश्न. 28 यो रध्रस्य चोदिता यः कृशस्य ब्राह्मणों नाथमानस्य कीरे पंक्ति किस देवता से संबंधित है?

उत्तर– इन्द्र।

प्रश्नः 29 सूर्य और उषस देवता को किसने उत्पन्न किया था?

उत्तर– इन्द्र।

प्रश्न. 30 अच्युतुत विशेषण है?

उत्तर– इन्द्र।

प्रश्न. 31 यस्याश्वासः प्रदिशि यस्य गावो यस्य ग्रामा यस्य विशेष रथासः। मंत्रांश में किस देवता की स्तुति है?

उत्तर– इन्द्र।

प्रश्न. 32 यो विश्वस्य प्रतिमानं बभूव मंत्रांश है?

उत्तर– इन्द्र देवता।

प्रश्न. 33 मरुत्वान् विशेषण किस देवता का है?

उत्तर– इन्द्र।

प्रश्न. 34 द्युलोक में प्रवेश करते समय इन्द्र ने किस असुर को मारा।

उत्तर– रोहिणी।

प्रश्न. 35 यः सुन्वते पचते दुध्र आ चिद् वाजं दर्दर्षि स किलासि सत्यः। मंत्रांश किस देवता से संबंधित है?

उत्तर– इन्द्र देवता।

प्रश्न. 36 द्यावा चिदस्मै पृथिवीर्नमेते शुष्माच्चिदस्य पर्वता भयन्ते मन्त्रांश किस देवता से संबंधित है? इन्द्र देवता।

प्रश्न. 37 यः शम्बरं पर्वतेषु क्षियन्तं चत्वारिंश्यां शरद्यन्वविन्दत्। ओजायमानं यो अहि जघान दानुं श्यानं सः मन्त्रांश है?

उत्तर– इन्द्रः।

प्रश्न. 38 यस्मान्न ऋते विजयन्ते जनासो यं युध्यमाना अवसे हवन्ते यो विश्वस्य प्रतिमानं बभूव यो अच्युत स मन्त्रांश है?

उत्तर– इन्द्र।

प्रश्न. 39 यं क्रन्दसी संयती विह्वयेते परेऽवर उभया अमित्राः। समानं चिद्रथं आतस्थिवासां नाना हवेते स मन्त्रांश है?

उत्तर– इन्द्रः।

प्रश्न. 40 येनेमा विश्वाच्यवना कृतानि यो दासं वर्णनधरं गुहाकः। श्वघ्नीव यो जिगीवाल्लक्षमा दद् अर्यः पुष्टानि।। मन्त्रांश है?

उत्तर– इन्द्रः।

प्रश्न. 41 यः पृथिवीं व्यथमानामदृहद् यः पर्वतान्प्रकुपितां अरम्वात्। मंत्रांश है?

उत्तर– इन्द्रसूक्त।

प्रश्न. 42 इन्द्र के आयुध का निर्माण किसने किया था?

उत्तर– विश्वकर्मा पुत्र त्वष्टा ऋषि ने।

प्रश्न. 43 इन्द्र के आयुध है?

उत्तर– व्रज, भाला, धनुष।

प्रश्न. 44 आर्यों का सर्वश्रेष्ठ एवं पराक्रमी देवता है?

उत्तर– इन्द्र।

प्रश्न. 45 इन्द्र देवता जनहित कर्ता है, इसलिए उसे कहते हैं?

उत्तर– नर्य।

प्रश्न. 46 द्युलोक में प्रवेश करते समय इन्द्र ने किस असुर को मारा था

उत्तर– रोहिणी।

प्रश्न. 47 राष्ट्रीय देवता है?

उत्तर– इन्द्र।

प्रश्न. 48 इन्द्र के माता-पिता का नाम क्या है?

उत्तर– अदिति-द्यौ।

प्रश्न. 49 इन्द्र का प्रधान शस्त्र है?

उत्तर– वज्र।

प्रश्न. 50 यास्क के अनुसार वृत्र किसका प्रतीक है?

उत्तर– मेघ।

प्रश्न. 51 शचि किसका प्रतीक है?

उत्तर– शक्ति।

प्रश्न. 52 इन्द्र का वेदिक नाम है?

उत्तर– वृत्रहन्।

प्रश्न. 53 इन्द्र देवता की स्तुति अन्य देवताओं के साथ कितने सूत्र में मिलती है?

उत्तर– 50।

प्रश्न. 54 यास्क मतानुसार इन्द्र की शक्तियां है?

उत्तर– वृत्रवध, रसानुप्रदान तथा बलप्रकृति।

प्रश्न. 55 देस्योर्हन्ता कौन है?

उत्तर– इन्द्र।

प्रश्न. 56 अपांनेता है?

उत्तर– इन्द्र।

प्रश्न. 57 इन्द्र के प्रमुख सहायक देव है?

उत्तर– मरुत।

इन्द्र देवता के विशेषण

वृत्रहा	वृषा
वज्री	मरुत्वान्
मघवन्	आखण्डल
सुशिप्र	शतक्रतु
सोमपा	सोमी
शक्र	धनंजय
पुरंदर	शचीपति
शमस्तु	शचीवान्
वज्रहस्त	पुरभिद
मरुत्सत्वा	गोत्रभिद्
वज्रबाहु	नर्य
चित्रभानु	मनस्वान्
सोमपा	सवृक्ससमत्सु
पुरूहूत	अपांनेता
वृषा	अच्युत्च्युत
मरुत्वान्	शर्व

इन्द्र की व्युत्पति :

1. इरां ददाति।
2. इरां वृणाति।
3. इरां दधाति।
4. इरां दारयते।
5. इरां धारयते।
6. इन्द्रवेदेव द्रवति।
7. इंदौ रमते, इन्द्रञ्छ त्रूणां दारयिता।

इन्द्र (2.12) संबंधित प्रमुख ऋचाएं :

1. यो जात एव प्रथमो मनस्वान (जो उत्पन्न होते ही सब देवताओं में प्रमुख मनस्वी हुआ।
2. येनेमा विश्वा च्यवना कृतानि जिसने इन संपूर्ण भुवनों को नश्वर किया।
3. यो रध्रस्य चोदिता यः कृशस्व।
   जो समृद्ध एवं निर्धन को प्रेरणा देने वाला है।
4. यः सूर्य यः उषसं जजान।
   जिसने सूर्य और उषा को उत्पन्न किया।
5. यः शश्वतो मध्येनो दधानान्।
   जिसने अत्यधिक पाप को धारण करने वाले व्यक्तियों का वध कर डाला।

6. संज्ञान सूक्त :

ऋग्वेद का अंतिम सूक्त संज्ञान सूक्त है। यह ऋग्वेद के दशम मंडल का 191 वां सूक्त है। इस सूक्त के ऋषि संवनन है। इस सूक्त में कुल चार मंत्र है। इसके प्रथम मंत्र में अग्नि देवता है तथा शेष मंत्रों में संज्ञान देवता की स्तुति की गई है। सूक्त के तृतीय मंत्र में त्रिष्टुप छंद तथा शेष मंत्रों में अनुष्टुप छंद का हुआ है।

प्रश्न. 1 संसमिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ।
इलस्पदे समिध्यसे स नो वसून्याभर।।
प्रस्तुत मंत्र में किस देवता की स्तुति की गई है?

उत्तर– अग्निदेवता।

प्रश्न. 2 इलस्पदे समिध्यसे स नो वसून्याभर' मंत्रांश सूक्त से उदधृत है?

उत्तर– संज्ञान सूक्त।

प्रश्न. 3 संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानतामुपास्ते।।
मंत्र किस सूक्त से है?

उत्तर– संज्ञान सूक्त।

प्रश्न. 4 संज्ञान सूक्त के ऋषि है?

उत्तर– संवनन।

प्रश्न. 5 समानो मंत्रः समितिः समानी
समानं मनः सह चितमेषाम्।
समानं मन्त्रमभि मंत्रये वः
समानेन वो हविषा जुहोभि।। मंत्रांश किस सूक्त से है?

उत्तर– संज्ञान सूक्त।

प्रश्न. 6 संज्ञानसूक्त किस मंडल से वर्णित है?

उत्तर– दशं मंडल

प्रश्न. 7 समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः किस वेद का अंतिम मंत्र है?

उत्तर– ऋग्वेद (संज्ञान सूक्त)।

प्रश्न. 8 समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति मंत्रांश है?

उत्तर– संज्ञान सूक्त।
संज्ञान सूक्त के चार मंत्रों में सामाजिक सौहार्द सांमजस्य सह-अस्तित्व, ऐक्यमत और संगठन का उपदेश दिया गया है। यह सूक्त सामाजिक, राष्ट्रीय और आर्थिक चिंतन में समवेत स्वर या समन्वय की भावना का प्रतिपादक है।

7. विश्वेदेव सूक्त :

ऋग्वेद में विश्वेदेव देवताओं का महान स्थान है। लगभग 40 सूक्तों में विश्वेदेव समूह का आह्वान किया गया है। ऋग्वेद में 33 देवता प्रधान है, द्युस्थानीय, पृथिवी स्थानीय और अंतरिक्ष स्थानीय है। विश्वेदेव में इन सभी का ग्रहण किया गया है। विश्वेदेव की दृष्टि से का 8/21 सूक्त अधिक महत्वपूर्ण है। इसके प्रत्येक मंत्र में एक देवता का वर्णन है। विश्वेदेव देव समूह में इन्द्र, अग्नि, सोम, त्वष्टा, रुद्र, पुषन्, विष्णु, अश्विनी, मित्रावरुण तथा आंगिरस का अधिक वर्णन आता है।

विश्वेदेव मानव का कल्याण करते है। सबके सो जाने पर ये हमारी रक्षा करते हैं। सुख-दुःख के क्रम के व्यवस्थापक हैं। सूर्य का नियमन और रात्रि का आगमन विश्वेदेव के ही अधीन है।

मंडल–8, सूक्त– 58 मंत्र–3 छंद–त्रिष्टुप, देवता–विश्वेदेवा, ऋषि–काण्व मेध्य

प्रश्न. 1 'यो अनूचानो ब्राह्मणों युक्त आसीत्' मंत्रांश किस सूक्त से है?

उत्तर– विश्वेदेवा सूक्त।

प्रश्न. 2 एकः एवाग्निर्बहुधा समिद्धः एकः सूर्यो विश्वमनु प्रभूतः।। मंत्र किस सूक्त से है?

उत्तर– विश्वेदेवा सूक्त।

प्रश्न. 3 'ज्योतिष्मन्तंक केतुमन्तं त्रिचकं, सुखं रथं सुसदं भूरिवारम्'' मंत्रांश है?

उत्तर– विश्वेदेवा सूक्त।

2) यजुःसहिता (यजुर्वेद)

यजुष् शब्द का अर्थ है देवपूजा और यज्ञ अर्थात् जिन मंत्रों के द्वारा देवताओं का मनन पूजन किया जाता है, उन्हें यजुष् कहते है। यह यजुष् गद्यात्मक होने के कारण इनमें अक्षरों की संख्या निश्चित नहीं होती है। यजुर्वेद विष्णु के स्वरूप, प्राणतत्व (वायु) तथा अन्तरिक्ष का वर्णन करता है। अतः यह अन्तरिक्ष का प्रतिनिधित्व करता है। यजुर्वेद तेजस्विता, क्षत्रियधर्म तथा कर्मण्यता की शिक्षा देता है। **यजुर्वेद के देवता वायु, ऋषि वैशम्पायन, ऋत्विक् अध्वर्यु तथा उपवेद धनुर्वेद है। यजुर्वेद दो भागों में विभक्त हैं -(क.) शुक्ल यजुर्वेद (ख.) कृष्ण यजुर्वेद।**

(क.) शुक्ल यजुर्वेद : शुक्ल यजुर्वेद आदित्य सम्प्रदाय से सम्बन्धित है। शुक्ल यजुर्वेद को वाजसनेयी (माध्यन्दिन) तथा शुक्ल संहिता भी कहते है। शुक्ल यजुर्वेद में यज्ञों से सम्बन्धित मंत्रात्मक भाग है।

(ख.) कृष्ण यजुर्वेद : कृष्ण यजुर्वेद का सम्बन्ध ब्रह्म सम्प्रदाय से है। इसमें मंत्रों के साथ ही व्याख्या और विनियोग का अंश भी मिश्रित है इसलिए इसे कृष्ण यजुर्वेद भी कहते है। इसमें अस्वच्छ और मिश्रित मंत्रों का समावेश हैं।

यजुर्वेद की शाखाएँ : पतंजलि ने यजुर्वेद की 100 शाखाओं का उल्लेख किया है किन्तु इस समय 6 शाखाएं उपलब्ध है। शुक्ल यजुर्वेद की दो तथा कृष्ण यजुर्वेद की चार शाखाएं प्राप्त होती है।

शुक्ल यजुर्वेद की शाखाएँ

माध्यन्दिन / वाजसनेयी : इसमें 40 अध्याय और 1975 मंत्र है। ईशावास्योपनिषद् यजुर्वेद का 40 वां अध्याय है। शतपथ ब्राह्मण में यजुर्वेद के अक्षरों की संख्या 2,88,000 बताई गई है। इस शाखा का उत्तर भारत में अधिक प्रचार-प्रसार है।

काण्व शाखा : इस शाखा में 40 अध्याय है तथा 2086 मंत्र हैं। इस शाखा का प्रचार महाराष्ट्र में अधिक है। महाभारत के आदि पर्व के अनुसार शकुन्तला के धर्म पिता महर्षि कण्व का आश्रम मालिनी नदी के तट पर था, जो इस समय महाराष्ट्र के बिजनौर जिले के कोटद्वार के पास मालन नदी का क्षेत्र है।

कृष्ण यजुर्वेद की शाखाएँ

तैतिरीय शाखा : यह कृष्ण यजुर्वेद की सबसे प्रमुख शाखा है। इसमें 17 काण्ड, 44 प्रपाठक, 631 अनुवाक् है। इसके ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् इत्यादि सभी प्राप्त है। इस संहिता का प्रचार-प्रसार महाराष्ट्र, आन्ध्रप्रदेश और दक्षिण भारत में है। आचार्य सायण की भी यहीं शाखा थी। जिस पर उन्होंने विस्तृत भाष्य किया था। इसमें आध्यात्मिक और आधिदैविक अर्थ भी दिये गये है। डॉ. कीथ ने इसका अंग्रेजी मे अनुवाद किया है।

मैत्रायणी शाखा : इसमें 4 काण्ड, 54 प्रपाठक और 3144 मंत्र है। इन मंत्रों में से 1701 ऋचा ऋग्वेद से ली गई है। इसमें विभिन्न यज्ञों का वर्णन है।

कठ् शाखा/काठक : कठ को मानने वाले काठक कहलाए। यह कृष्ण यजुर्वेद की कठ् शाखा हैं, इसमें 40 स्थानक और 543 अनुवाक तथा 3019 मंत्र है। इस शाखा का उपनिषद् कठोपनिषद् है। वर्तमान में यह शाखा प्रायः लुप्त हो चुकी है।

कपिष्ठल शाखा : इस शाखा के पर्वतक कपिष्ठल ऋषि है यह वशिष्ठ गौत्र के थे। विद्वानों का अनुमान है कि कुरुक्षेत्र के पास खेतल ग्राम कपिष्ठल का ही अपभ्रंश रूप है। वर्तमान में यह खण्डित अवस्था में ही प्राप्त होती है। इसका प्रकाशन डॉ. रघुवीर ने 1942 ई. में लाहौर में किया था। इसमें 6 अष्टक और 48 अध्याय है।

यजुर्वेद का वर्ण्य विषय : इसमें कर्मकाण्ड की प्रधानता है। इसके प्रथम 25 अध्याय अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं अन्तिम 15 अध्याय बाद में जोड़े गए होने के कारण परवर्तीकाल के माने जाते है। इसमें अग्नि चयन का विस्तृत वर्णन है। अग्नि निर्माण में 10800 ईंटे लगती है। वेदी का आकार पंख फैलाए हुए पक्षी जैसा होना चाहिए। कृष्ण यजुर्वेद पर सायण ने महत्वपूर्ण भाष्य लिखा है। इस शाखा के अधिकांश देवता ऋग्वेद के है। रुद्र देवता इनके प्रधान देवता है। इस संहिता में गद्य व पद्य दोनों का मिश्रण है। इसमें 33 देवताओं का वर्णन है। इसकी कठ शाखा की अपूर्ण प्रति सरस्वती भवन पुस्तकालय आड्यार (मद्रास) में सुरक्षित है। **शुक्ल यजुर्वेद से सम्बन्धित ब्राह्मण ग्रंथ शतपथब्राह्मण हैं। इसका आरण्यक बृहदारण्यक, उपनिषद् ईशावास्योनिषद् तथा बृहदारण्यकोपनिषद् हैं। कृष्ण यजुर्वेद से सम्बन्धित ब्राह्मण ग्रंथ तैतिरीय तथा मैत्रायणी ब्राह्मण हैं। इसका आरण्यक तैतिरीय एवं उपनिषद् कठोपनिषद्, तैतिरीयोपनिषद्, श्वेताश्वेतरोपनिषद्, मैत्रायणीउपनिषद् तथा महानारायणोंपनिषद्** प्राप्त होती है।

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्र. 1 यजुष् का अर्थ है ?
उत्तर यज्ञ, देव पूजा।
प्र. 2 यजुर्वेद का प्रतिपाद्य विषय क्या है ?
उत्तर कर्मकाण्ड।
प्र. 3 यजुर्वेद का ऋत्विक है ?
उत्तर अध्वर्यु।
प्र. 4 यजुर्वेद के देवता है ?
उत्तर वायु।
प्र. 5 यजुर्वेद में कितने विभाग है ? नाम लिखिए।
उत्तर दो, शुक्ल और कृष्ण।
प्र. 6 शुक्ल यजुर्वेद की कितनी शाखाएँ है ?
उत्तर दो, माध्यन्दिन तथा काण्व।
प्र. 7 माध्यन्दिन शाखा को यह भी कहते है ?
उत्तर वाजसनेयी।
प्र. 8 कृष्ण यजुर्वेद की शाखाओं के नाम लिखिए ?
उत्तर तैत्तिरीय, मैत्रायणी, कठ, तथा कपिष्ठल।

प्र. 9 तैतिरीय शाखा में कितने अध्याय है ?

उत्तर 7 अध्याय।

प्र. 10 कठ् शाखा में कितने खण्ड व स्थानक है ?

उत्तर 8 खण्ड व 40 स्थानक।

प्र. 11 शुक्ल यजुर्वेद का 40 वां अध्याय है ?

उत्तर ईशावास्योपनिषद्।

प्र. 12 शुक्ल यजुर्वेद का 34 वां अध्याय है ?

उत्तर शिव संकल्प सूक्त।

प्र. 13 यजुर्वेद की शाखाएं है ?

उत्तर 6 शाखाएं।

प्र. 14 वाजसनेयी एवं काण्व शाखा में कितने अध्याय है ?

उत्तर 40 अध्याय।

प्र. 15 यजुर्वेद का प्रमुख विषय है ?

उत्तर विविध यज्ञ।

प्र. 16 यजुर्वेद के आचार्य है ?

उत्तर वैशम्पायन।

प्र. 17 वाजसनेयी शाखा में कितने अनुवाक व मंत्र है ?

उत्तर 303 अनुवाक व 1975 मंत्र।

प्र. 18 काण्व शाखा में कितने मंत्र है ?

उत्तर 2086 मंत्र।

प्र. 19 यजुर्वेदिक होम/अग्निवेदी निर्माण में लगने वाली ईटें है ?

उत्तर 10800 ईटें।

प्र. 20 तैतिरीय संहिता का प्रचार-प्रसार भारत के किन-किन प्रदेशों में अधिक मिलता है ?

उत्तर महाराष्ट्र व आन्ध्रप्रदेश में।

प्र. 21 कृष्ण यजुर्वेद की किस शाखा का अंग्रेजी में अनुवाद हुआ है ?

उत्तर तैतिरीय शाखा।

प्र. 22 मैत्रायणी शाखा का उल्लेख किसमें मिलता है ?

उत्तर आचार्य शौनक कृत चरणव्युह में।

प्र. 23 आचार्य शौनक के अनुसार मैत्रायणी शाखा की कितनी उपशाखाओं का वर्णन मिलता है ?

उत्तर 7 शाखाओं का।

प्र. 24 मैत्रायणी शाखा का प्रवर्तक प. भगवतदत्त ने किस पुराण को माना है ?

उत्तर हरिवंश पुराण।

प्र. 25 10 पूर्णमास यज्ञ का वर्णन यजुर्वेद की किस शाखा में मिलता है ?

उत्तर मैत्रायणी।

प्र. 26 कठ् संहिता को अन्य किस नाम से जाना जाता है ?

उत्तर काठक शाखा।

प्र. 27 चरकों की मुख्य शाखा यजुर्वेद की कौनसी शाखा मानी गई है ?

उत्तर कठ् शाखा।

प्र. 28 कठ् शाखा में कितने खण्ड है ?

उत्तर 5 खण्ड।

प्र. 29 कठ् शाखा में कितने यज्ञों का वर्णन है ?

उत्तर 11 यज्ञों का।

प्र. 30 कपिष्ठल शाखा के प्रवर्तक ऋषि है ?

उत्तर कपिष्ठल।

प्र. 31 खेतल ग्राम किस शाखा का अपभ्रंश नाम है ?

उत्तर कपिष्ठल शाखा का।

प्र. 32 डॉ. रघुवीर ने किस शाखा को प्रकाशित किया है ?

उत्तर कपिष्ठल शाखा का।

प्र. 33 शुक्ल यजुर्वेद के भाष्यकार है ?

उत्तर महिधर।

प्र. 34 काण्व शाखा के भाष्यकार है ?

उत्तर आचार्य सायण।

प्र. 35 महर्षि पतंजलि के अनुसार यजुर्वेद की कितनी शाखाएं है ?

उत्तर 100 शाखाएं।

प्र. 36 शुक्ल यजुर्वेद के अनुसार रुद्र के धनुष का नाम है ?

उत्तर पिनाक।

प्र. 37 कृष्ण यजुर्वेद की सर्वप्रमुख संहिता है ?

उत्तर तैतिरीय संहिता।

प्र. 38 वैदिक राष्ट्रगीत किस वेद में है ?

उत्तर यजुर्वेद।

प्र. 39 यजुर्वेद का उपवेद है ?

उत्तर धनुर्वेद।

प्र. 40 वैदिक राष्ट्रिय गीत है ?

उत्तर वयं राष्ट्रे जागृयाम्।

3) साम संहिता (सामवेद)

वैदिक वाङ्मय में सामवेद का महत्वपूर्ण स्थान है। पूर्व मीमांसा दर्शन में गीति या गान को साम कहा गया है। इससें ज्ञात होता है कि जब मंत्र या ऋचा गीति के रूप में प्रस्तुत की जाती है तो उसे साम कहते है। साम शब्द का सन्धि विच्छेद सा +अम् होता है। सा का अर्थ है–ऋक् और अम् का अर्थ है–**गांधारादि स्वर गीति**। संगीत की दृष्टि से गीति तत्व का उद्गम स्थान सामवेद ही है। इस प्रकार बृहदारण्यकोपनिषद् में ज्ञान को ही सामवेद कहा है। ब्राह्मण ग्रंथों में सामवेद के दार्शनिक और आध्यात्मिक रूप का वर्णन किया गया है। सामवेद उपासना का वेद है। सामवेद सूर्य का प्रतिनिधि हैं। सामवेद का द्युलोक और पृथ्वीलोक में सर्वोच्च स्थान है और इसे परमात्मा का स्वरूप माना है। गीता में ही पद्मनाम श्री कृष्ण ने कहा है कि **''वेदानाम् सामवेदोऽस्मि''** अर्थात् वेदों में सामवेद हूँ। **सामवेद के देवता सूर्य, ऋषि जैमिनि तथा ऋत्विक्** उद्गाता तथा उपवेद गान्धर्ववेद है।

सामविकारों की संख्या छः है, ये है–विकार, विश्लेषण, विकर्षण, अभ्यास, विराम व स्तोभ। सामगान 5 है, ये है–प्रस्ताव, उद्गीथ, प्रतिहार, उपद्रव, निधन। महर्षि पतंजलि ने सामवेद की 1000 शाखाएं बताई है-**सहस्त्रवर्त्मा सामवेदः**। वर्तमान में तीन शाखाएं ही उपलब्ध है–(क.) कौथुमीय शाखा (ख.) जैमिनीय शाखा (ग.) राणायनीय शाखा। कौथुम शाखा के अनुसार इसके दो आर्चिक है–पूर्वार्चिक तथा उत्तरार्चिक। आर्चिक का अर्थ है–ऋचाओं का संकलन। इनमें क्रमशः 650 व 1225 मन्त्र है। इस प्रकार सामवेद में 1875 मंन्त्र है। इसमें ऋग्वेद के 1771 मन्त्र है, जिनमें 267 मंत्र पुनरुक्त है। सामवेद के 104 मन्त्र है, जिनमें 5 मन्त्र पुनरुक्त है। इस प्रकार सामवेद के अपने 99 मन्त्र प्राप्त होते है।

कौथुमीय शाखा

कौथुम शाखा वर्तमान में सर्वत्र प्रचलित है। इसका विभाजन अध्याय, खण्ड और मंत्रों के रूप में है। इस शाखा की एक उपशाखा ताण्ड्य है, जिसे ताण्ड्य ब्राह्मण कहते है। इसमें 1875 मन्त्र है।

जैमिनीय शाखा

यह शाखा डॉ. रघुवीर ने लाहौर से प्रकाशित की थी। इसकी एक शाखा तलवकार शाखा भी प्राप्त होती है, जिससे सम्बन्धित केनोपनिषद् है। इसमें 1687 मंन्त्र है।

राणायनीय शाखा

पतंजलि ने महाभाष्य में इसके विषय में विचार किया है। इस शाखा में मंत्रों तथा उनके क्रम में कोई भेद नहीं है। इस शाखा का प्रचार दक्षिण भारत में विशेष रूप से हुआ है। यह कौथुम शाखा से छोटी है।

सामवेद से सम्बन्धित निम्न ब्राह्मण ग्रंथ है -

(1) ताण्ड्य ब्राह्मण ग्रंथ	(2) षड्विंश ब्राह्मण ग्रंथ	(3) सामविधान ब्राह्मण ग्रंथ
(4) आर्षेय ब्राह्मण ग्रंथ	(5) देवताध्याय ब्राह्मण ग्रंथ	(6) छान्दोग्य ब्राह्मण ग्रंथ
(7) संहितोपनिषद् ब्राह्मण ग्रंथ	(8) वंश ब्राह्मण ग्रंथ	(9) जैमिनीय ब्राह्मण ग्रंथ।

इस प्रकार सामवेद के 9 ब्राह्मण ग्रंथ प्राप्त होते है। इसमें ताण्डय शाखा का ताण्डय ब्राह्मण ग्रंथ प्रमुख है। इसको ताण्डय, प्रौढ, पंचविंश तथा महाब्राह्मण के नाम से जाना जाता है। इसमें 25 अध्याय है। इसका प्रमुख विषय सोमयाग है।

सामवेद के दो आरण्यक ग्रन्थ प्राप्त होते है–

(1) **तलवकार आरण्यक** (2) **छान्दोग्य आरण्यक।**

सामवेद की दो उपनिषदें प्राप्त होती है -

(1) **छान्दोग्योपनिषद्** (2) **केनोपनिषद्।**

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्र. 1 सामवेद को इस नाम से भी जानते है ?
उत्तर गान्धर्ववेद।
प्र. 2 गान की प्रबलता किस वेद में है ?
उत्तर सामवेद में।

प्र. 3 नाटकों की रचना के समय गीतो का संग्रह किस वेद से किया गया ?
उत्तर सामवेद से।
प्र. 4 सामवेद में किन ऋचाओं की प्रबलता है ?
उत्तर गेय ऋचाओं की।
प्र. 5 सामवेद का देवता है ?
उत्तर सूर्य।
प्र. 6 सामवेद का प्रतिपाद्य विषय है ?
उत्तर उपासना।
प्र. 7 सामवेद का ऋत्विक है ?
उत्तर उद्गाता।
प्र. 8 सामवेद के आचार्य है ?
उत्तर जैमिनीय।
प्र. 9 सामवेद को किन 2 दो भागों में बाँटा गया है ?
उत्तर पूर्वार्चिक तथा उत्तरार्चिक।
प्र. 10 पूर्वार्चिक शाखा को अन्य किस नाम से जाना जाता है ?
उत्तर छन्द/छन्दसी/छन्दशिखा/अग्निपर्व/आग्नेय पर्व।
प्र. 11 सामगान के प्रारम्भ में होता है ?
उत्तर 'ॐ' से।
प्र. 12 सामवेद में ऋग्वेद के कितने मंत्र है ?
उत्तर 1771 मंत्र।
प्र. 13 सामवेद के अपने कुल मंत्र है ?
उत्तर सामवेद के 104 मन्त्र है, जिनमें 5 मन्त्र पुनरुक्त है। इस प्रकार सामवेद के अपने 99 मन्त्र प्राप्त होते है।
प्र. 14 सामवेद की कितनी शाखाएँ है ?
उत्तर (तीन) कौथुमीय, जैमिनीय तथा राणायनीय।
प्र. 15 ऋग्वेद और अथर्ववेद के बाद सबसे बड़ा ब्राह्मण ग्रंथ है।
उत्तर शतपथ ब्राह्मणग्रंथ।
प्र. 16 सामवेद में कितने छन्द प्रयुक्त हुए है ? नाम लिखिए।
उत्तर (4छन्द) गाथा, प्रगाथा, गायत्री, जगती।
प्र. 17 सामवेद की स्वर लिपि में किन-2 अक्षरों का उल्लेख है ?
उत्तर तृ, च, णृ, स्वास्तिक
प्र. 18 सामवेद की स्वर लिपि नें किन संख्याओं का उल्लेख है ?
उत्तर 1 से 7 तक।
प्र. 19 सामवेद को किस शास्त्र का उद्गम स्थान कहा गया है ?
उत्तर संगीत शास्त्र का।
प्र. 20 वेदव्यास से सामवेद की शिक्षा लेने वाले आचार्य थे ?
उत्तर जैमिनी।

प्र. 21 सामगान की संख्या है ?
उत्तर पांच।
प्र. 22 सहस्त्रवर्त्मा की उपाधि से युक्त वेद है ?
उत्तर सामवेद।
प्र. 23 सामगान वाली ऋचाओं की संज्ञा है ?
उत्तर योनि।
प्र. 24 'वेदानाम् सामवेदोऽस्मि' किसने कहा है ?
उत्तर श्री कृष्ण ने।
प्र. 25 सामवेद की जैमिनीय शाखा का अध्ययन अध्यापन कहाँ किया जाता है ?
उत्तर केरल में।
प्र. 26 महर्षि पतंजलि के अनुसार सामवेद की कितनी शाखाएँ है ?
उत्तर 1000 शाखाएँ।
प्र. 27 साम विकार कितने है ?
उत्तर सात ।
प्र. 28 सामगानों के नाम लिखिए।
उत्तर प्रस्ताव, उद्‌गीथ, प्रतीहार, उपद्रव, निधन।

4.) अथर्व संहिता (अथर्ववेद)

वैदिक वाङ्मय में अथर्वदवेद को परवर्तीकाल में गौरव प्राप्त हुआ है। ऋग्वेद आदि संहिताएँ अलौकिक या पारलौकिक फल देने वाली है और अथर्ववेद ईहलौकिक फल देने वाला है। इसीलिए इसे वेदत्रयी में स्थान नहीं मिला है। **अथर्ववेद का ऋत्विक् ब्रह्मा होता है, जो यज्ञ का अध्यक्ष एवं तीनों वेदों का ज्ञाता होता हैं। इसके देवता सोम तथा ऋषि सुमन्तु है। अथर्ववेद के अनेक उपनाम प्रचलित है–ब्रह्मवेद, अंगिरावेद, अथर्वांगिरस आदि।** अथर्व शब्द 'थर्व' धातु से बना है, जिसका अर्थ है अकुटिलता अर्थात हिंसा रहित मन वाला। अथर्व शब्द का अर्थ है अग्नि को उद्‌बोधन करने वाला पुरोहित। अथर्व का एक अर्थ जादू-टोना भी होता है। अथर्ववेद के उपवेद है -सर्पवेद, पिशाचवेद, अश्ववेद, इतिहासवेद, पुराणवेद। इनमें केवल इतिहास और पुराणवेद ही प्राप्य है, शेष अप्राप्य है।

अथर्ववेद की शाखाएँ

महर्षि पतंजलि ने अथर्ववेद की नौ शाखाओं का उल्लेख अपने भाष्य में किया है। यह है–(1) पिप्पलाद (2) स्तौद (3) मौद (4) शौनकीय (5) जाजल (6) जलद (7) ब्रह्मवेद (8) देवदर्श (9) चारणवैद्य। वर्तमान में पिप्पलाद और शौनकीय शाखा ही प्राप्त होती है।

पिप्पलाद शाखा

इस शाखा के प्रणेता पिप्पलाद ऋषि है। इसमें 20 काण्ड है। काश्मीर में शारदा लिपि में प्राप्त एक पाण्डुलिपि के आधार पर प्रो. ब्लूमफील्ड ने 1901 में अंगेजी अनुवाद के साथ इसे प्रकाशित किया था। बाद में डॉ. रघुवीर ने इन्हें पुनः प्रकाशित करवाया किन्तु यह शाखा अपूर्ण ही प्राप्त होती है।

शौनक शाखा

वर्तमान में प्रचलित अथर्ववेद शौनकीय शाखा का ही प्रारूप है। इसमें 20 काण्ड, 730 सूक्त एवं 5987 मंत्र है। इसमें तीन सबसे बडे काण्ड है। सबसे छोटा काण्ड 7 वां है इसमें केवल 30 मंत्र है। अथर्ववेद में गद्य भी प्राप्त होते है। इसका 15 वां तथा 16 वां काण्ड गद्यमय है।

अथर्ववेद का वर्ण्यविषय

अथर्ववेद में अनेक रोगों की निवृत्ति, दीर्घ आयु प्राप्ति, कृषि एवं पशुपालन, पापमोचन, ब्रह्मविद्या, आत्मा का वर्णन, विराट् ब्रह्म का वर्णन, अतिथि सत्कार, गाय का महत्व, ब्रह्मचर्य सूक्त, पृथिवी सूक्त, अध्यात्म वर्णन, विवाह संस्कार, सोमयाग वर्णन, इन्द्र स्तुति तथा अन्त में राजा परिक्षित के राज्य शासन आदि का वर्णन है। विद्वानों के द्वारा अथर्ववेद का रचनाकाल 1400 ई.पू. माना गया है। अथर्ववेद का गोपथ ब्राह्मण ग्रंथ प्राप्त होता है, इसके रचयिता गोपथ ऋषि है। गोपथ से आशय 'इन्द्रियों का ग्रहण' है। आंगिरस आचार्य द्वारा गायों का पथ जानने के कारण ही इसका नाम गोपथ पड़ा है। इसके दो भाग है–(क) पूर्वभाग (ख) उत्तर भाग। पूर्वभाग में 5 प्रपाठक है तथा उत्तर भाग में 6 प्रपाठक है। पूर्वभाग में 135 कण्डिकाएँ है तथा उत्तरभाग में 123 कण्डिकाएँ है। इसका रचनाकाल यास्क ने 800 ई.पू. के लगभग माना है। अथर्ववेद की तीन उपनिषदें प्राप्त होती है, यह है–मुण्डकोपनिषद्, माण्डूक्योपनिषद् तथा प्रश्नोपनिषद्। अथर्ववेद का कोई पृथक् आरण्यक नहीं है। अथर्ववेद का पृथिवी या भूमि सूक्त अत्यन्त महत्वपूर्ण है। विश्व के किसी भी ग्रन्थ में मातृभूमि का इतना सशक्त वर्णन प्राप्त नहीं हैं। इस सूक्त के 63 मन्त्रों में पृथिवी को माता के रूप में प्रस्तुत किया है। पृथिवी के सात तत्व है, जिन पर पृथिवी टिकी हुई है। यह विश्वम्भरा एवं धन देने वाली है।

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्र. 1 वेदत्रयी में गणनीय नहीं है ?
उत्तर अथर्ववेद।
प्र. 2 अथर्ववेद संहिता के ऋषि है ?
उत्तर अथर्वा ऋषि।
प्र. 3 अथर्ववेद का ऋत्विक है ?
उत्तर ब्रह्मा।
प्र. 4 अथर्ववेद का प्राचीन नाम है ?
उत्तर अथर्वांगीरस।
प्र. 5 जादू टोने से सम्बन्धित वेद है ?
उत्तर अथर्ववेद।
प्र. 6 अथर्ववेद का 19 वाँ तथा 20 वाँ काण्ड है ?
उत्तर उत्तरकालीन। जादू-टोना।
प्र. 7 अथर्ववेद का कितना भाग गद्य है ?
उत्तर 1/6 भाग।
प्र. 8 अथर्ववेद में बंगप्रदेश के किस वन्यजीव को भिन्न बताया गया है ?
उत्तर सिंह को।

प्र. 9 अथर्ववेद में समाज के कितने वर्णों का वर्णन है ?
उत्तर 4 वर्णों का।
प्र. 10 वेदों की चतुर्थ एवं अन्तिम संहिता है ?
उत्तर अथर्ववेद।
प्र. 11 अथर्ववेद का नामकरण किस ऋषि के आधार पर हुआ है ?
उत्तर अथर्वा ऋषि।
प्र. 12 अथर्वा ऋषि किस वंश के है ?
उत्तर अंगिरा वंश के।
प्र. 13 किस वेद का संबंध मंत्रों से नहीं है ?
उत्तर अथर्ववेद का।
प्र. 14 पतंजलि ने अथर्ववेद की कितनी शाखाओं का उल्लेख किया है ? वर्तमान में कौन-2 सी शाखा उपलब्ध है।
उत्तर नौ शाखाओं का। वर्तमान में (1) पिप्पलाद (2) शौनक शाखा।
प्र. 15 अथर्ववेद का ब्राह्मण ग्रंथ है ?
उत्तर गोपथ ब्राह्मण ग्रंथ।
प्र. 16 आरण्यक विहीन वेद है ?
उत्तर अथर्ववेद।
प्र. 17 'माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्यां' किस वेद की उक्ति है ?
उत्तर अथर्ववेद की।
प्र. 18 अथर्ववेद के कितने उपवेद है ?
उत्तर छः उपवेद।
प्र. 19 अथर्ववेद के कितने उपनिषद् है ?
उत्तर तीन।
प्र. 20 पृथिवी या भूमि सूक्त किस वेद में है ?
उत्तर अथर्ववेद।
प्र. 21 पृथिवी को कितनें तत्व धारण करते हैं ?
उत्तर सात।
प्र. 22 पृथिवी की कितनी दिशाएँ है ?
उत्तर चार।
प्र. 23 वैश्वानर को धारण करने वाली है ?
उत्तर पृथिवी।
प्र. 24 पृथिवी का पति कौन है ?
उत्तर पर्जन्य।
प्र. 25 स्वरू नामक यज्ञ साधनों का वर्णन मिलता है ?
उत्तर पृथिवी सूक्त में।

वेदों का रचनाकाल

1. **महर्षि दयानन्द सरस्वती :** इन्होंने वेद मंत्रों के आधार पर यह स्पष्ट किया है कि वेदों का आविर्भाव ईश्वर से ही हुआ है। वेद सृष्टि के आरम्भ मे ही उत्पन्न हो गए थे। अतः वेदों का रचनाकाल सृष्टि का आरम्भकाल ही है। इनके अनुसार 1960852976 वर्ष पूर्व सृष्टि की रचना हो चुकी है।
2. **पं. रघुनन्दन शर्मा :** इन्होंने अपनी वैदिकसम्पत्ति नामक पुस्तक में ऋषि दयानन्द सरस्वती के उपयुक्त मत का ही समर्थन किया हैं।
3. **पं. दीनानाथ शास्त्री :** इन्होंने वेदकालनिर्णय नामक पुस्तक में ज्योतिषी गणना के आधार पर यह सिद्ध किया है कि वेदों का निर्माण काल लगभग 3 लाख वर्ष पूर्व हो चुका था।
4. **श्री अविनाश चन्द्र व्यास :** इनके अनुसार ऋग्वेद का रचनाकाल 25000 ई.पू. का है।
5. **नारायण भवन राव पावगी :** इन्होंने भू-गर्भ शास्त्र के आधार पर 7000 ई.पू. वेदों की रचना का समय सिद्ध करने का प्रयास किया है।
6. **बाल गंगाधर तिलक :** ज्योतिष गणना के आधार पर ऋग्वेद के निर्माण का समय 4000 ई.पू. से 6000 ई.पू. तक स्वीकार किया गया है। इन्होंने विभिन्न नक्षत्रों में वसन्त सम्पात के आधार पर इस समय का निर्णय किया है।
7. **पं. शंकर बालकृष्ण दीक्षित :** इन्होंने वसन्त सम्पात को ही आधार मानकर इसकी गणना की है। उनका मानना है कि ऋग्वेद का रचनाकाल 3500 ई.पू. सिद्ध होता है।
8. **मैक्समूलर का मत :** डॉ. मैक्समूलर ने ऋग्वेद का रचनाकाल इतिहास और भाषाशास्त्र को आधार बनाकर सिद्ध किया है। इनका मानना है कि ऋग्वेद 1200 वर्ष ईसा पूर्व में पूर्णरूप से प्राप्त हो गया था। इन्होंने वैदिक काल को छन्द, मन्त्र, ब्राह्मण और सूत्र के भेद से चार भागों में विभक्त किया है।
9. **डॉ. जैकोबी :** इन्होंने गृहमण्डल की गतिविधि को वेदों का आधार माना है। इनका मानना है कि वेदों का निर्माणकाल ईसा से 4500 वर्ष पूर्व हो चुका था।
10. **ए.वेबर :** जर्मन विद्वान् ए.वेबर के अनुसार 1200 से 1500 ई.पू. वेद का रचनाकाल रहा है।
11. **मैक्डोनल :** भाषाविज्ञान के आधार पर मैक्डोनल ने वेदों का रचनाकाल 1300 ई.पू. माना है।
12. **डॉ. विन्टरनिट्ज :** इनका मत ज्योतिष गणना पर आधारित मतों की आलोचना करता हुआ पुरातत्व विज्ञान को प्रमाणिक मानता है। मितानी शिलालेख को आधार मानकर विन्टरनिट्ज ने 2500 ई.पू. वेदों का रचनाकाल माना है।

ब्राह्मण ग्रन्थ

ब्राह्मण शब्द का प्रयोग प्रायः नपुसंकलिंग में ही प्राप्त होता है। मेदिनीकोश के आधार पर वेदभाग का सूचक ब्राह्मण शब्द नपुंसक ही होता है–**ब्राह्मणं ब्रह्मसंधाते वेदभागे नपुसंकम्**। नपुसंकलिंग में इस शब्द का प्रयोग अष्टाध्यायी, निरुक्त, शतपथब्राह्मण, ऐतरेय ब्राह्मण तथा सर्वाधिक प्राचीन प्रयोग तैतिरीय शाखा में मिलता है। ब्राह्मण शब्द के अर्थ के विषय में विशेष मतभेद नहीं है। ब्राह्मण से सम्बन्धित ग्रंथ ब्राह्मण कहलाता है अर्थात् **ब्रह्म विषयक प्रतिपादन किए जाने से इन ग्रंथों का नाम ब्राह्मण पड़ा है।** ब्रह्म शब्द के निम्न अर्थ प्रयुक्त हुए है–

ब्राह्मण – मंत्र (शतपथ ब्राह्मण से)
ब्रह्म – यज्ञ (ज्ञान)
ब्रह्म – वितान (विस्तार से कथन)
ब्रह्म – रहस्य (आत्मा-परमात्मा)।

ब्राह्मणों का प्रतिपाद्य विषय तीन वर्गों में विभाजित है–विधि, अर्थवाद तथा उपनिषद्। इनमें विधिभाग यज्ञ विषयक प्रयोगात्मक नियमों का प्रतिपादन करता है। अर्थवाद में उपाख्यानों एवं प्रशंसात्मक कथाओं द्वारा प्रयोग विधान का सूक्ष्म रहस्य समझाया हैं। उपनिषद भाग में आध्यात्मिक एवं दार्शनिक विचारों का विवेचन है। ब्राह्मण ग्रन्थों का प्रमुख प्रतिपाद्य विषय **विधि** है, इसके अन्तर्गत यज्ञीय विधियों एवं अनुष्ठानों का निरूपण है अन्य प्रतिपाद्य विषयों में हेतु, निर्वचन, निन्दा, प्रशंसा, संशय, परक्रिया, पुराकल्प, व्यवधारण-कल्पना तथा उपमान है। ब्राह्मण ग्रंथों में मत्रों के विनियोग का भी वर्णन उपलब्ध होता है। डॉ. विन्टरनिट्ज ने ब्राह्मण साहित्य को दो भागों में बांटा है–विधि तथा अर्थवाद।

ब्राह्मण शब्द का अर्थ

मन्त्रब्राह्मणात्मको वेदः -(आप.थ.सू.31) अर्थात् मंत्र और ब्राह्मण का नाम ही वेद है। मंत्र भाग का प्रयोजन कर्मकाण्ड से विनियोग और इसी कर्मकाण्ड सम्बन्धी मंत्रों के विनियोग की विधि को बतलाना ब्राह्मण ग्रंथों का कार्य है। मन्त्र का पर्याय ब्रह्म (ब्रह्म वै मन्त्रः -श.ब्रा.) और ब्रह्म या मन्त्रों के व्याख्यान भूत ग्रन्थ का नाम ब्राह्मण है। आशय यह है कि जिसमें मन्त्रों एवं उनके विनियोगों की व्याख्या विहित होती है, उसे ब्राह्मण कहते हैं। भट्टभास्कर ने कर्मकाण्ड तथा मंत्रों के व्याख्यान ग्रन्थों को ब्राह्मण कहा है। वामन शिवराम आप्टे ने ब्राह्मण शब्द का अभिप्राय वेद के उस भाग से लिया हैं जिस भाग के अन्तर्गत यज्ञों के अवसरों पर मंत्रों के प्रयोग के नियम, उनकी उत्पत्ति तथा कभी-कभी विस्तृत व्याख्याएं भी सन्निहित हों।

ऋग्वेद से सम्बन्धित ब्राह्मण ग्रन्थ

ऐतरेय ब्राह्मण ग्रंथ

इसके रचयिता आचार्य महिदास है। इसके अन्तर्गत 10 अध्याय है, जो 5-5 अध्यायों की 8 पञ्जिकाओं में विभक्त है। इसमें 285 कण्डिकाएं है। इसमें सोमयाग, अग्निष्टोम, अग्निहोत्र, राजसूय यज्ञ तथा शुनःशेप आख्यान का वर्णन मिलता है। इसमें 'चरैवेति-चरैवेति' की शिक्षा का उल्लेख है।

कौषितकि ब्राह्मण ग्रंथ

ऋग्वेद का यह दूसरा ब्राह्मण ग्रंथ है। इसे शांखायन ब्राह्मण ग्रंथ भी कहते हैं। इसके रचयिता ऋषि शांखायन है। पाणिनि ने कौषितकि ब्राह्मण ग्रंथ को अष्टाध्यायी में 30 अध्याय वाला ब्राह्मण ग्रंथ बताया है। इसके अध्याय खण्डों में विभाजित है। सम्पूर्ण खण्डों की संख्या 266 है। इस ब्राह्मण ग्रंथ में अग्निदेव, वाक्देवी तथा ओम् भूर्भवः स्वः का सार भिन्न रूप सें प्राप्त होता है।

यजुर्वेद से सम्बन्धित ब्राह्मणग्रंथ

शतपथ ब्राह्मण ग्रंथ

यह शुक्लयजुर्वेद का ब्राह्मण ग्रंथ है। शतपथ ब्राह्मण ग्रन्थ के रचयिता महर्षि याज्ञवल्क्य है। इन्हें वाजसनेयि भी कहते है। महाभारत और स्कन्दपुराण के अनुसार याज्ञवल्क्य का आश्रम सौराष्ट्र में था। इनके पिता ब्रह्मरात (देवरात-भागवतपुराण) तथा माता सुनन्दा थी। इनकी दो पत्नियाँ मैत्रेयी व कात्यायनी थी। याज्ञवल्क्य ऋषि को स्कन्दपुराण में पारस्कर व कात्यायनी का पुत्र माना गया है।

महाभारत शान्तिपर्व के अनुसार सूर्य से वरदान प्राप्त करके याज्ञवल्क्य ने परिशिष्ट सहित शतपथ ब्राह्मण ग्रंथ की रचना की हैं। यह शुक्ल यजुर्वेद की माध्यन्दिन व काण्व दोनों शाखाओं पर मिलता है। इसमें 14 काण्ड, 100 अध्याय, 438 ब्राह्मण तथा 7624 कण्डिकाएँ है। इन्हीं 100 अध्यायों पर इसका नाम शतपथ पडा है। इसमें यज्ञ के आध्यात्मिक स्वरूप का वर्णन तथा 33 देवताओं का उल्लेख है। इसके 10 काण्डों में दर्शपौर्णमासयज्ञ, अग्निहोत्रयज्ञ, पिण्डपितृयज्ञ, सोमयाज्ञ, राजसूययज्ञ का वर्णन है तथा अन्तिम 4 काण्ड परिशिष्ट है। इनमें पंचमहायज्ञों, संवत्सरसत्र, अश्वमेध तथा बृहदारण्यकोपनिषद् का वर्णन है। इसमें पुरुरवा-उर्वशी, जल-प्लावन, वाणी का उपाख्यान वर्णित है। जल प्लावन की कथा में मनु के नौका बाँधनें का यह स्थान **मनोरव सर्पण** के नाम से विख्यात है। यह सबसे बड़ा ब्राह्मण ग्रंथ है।

इसका प्रथम संस्करण आचार्य वेबर ने 1853 ई.में तथा द्वितीय संस्करण 1912 ई.में सायण भाष्य के साथ आचार्य सत्यव्रत सामश्रम जी ने प्रकाशित किया है। इसका रचनाकाल 800 ईसा पूर्व से 500 ईसा पूर्व के मध्य माना गया है। श्री शंकरबालकृष्ण दीक्षित ने शतपथ ब्राह्मण का रचनाकाल 2500 ईसा पूर्व के लगभग माना है।

तैत्तिरीय ब्राह्मण ग्रन्थ

यह कृष्ण यजुर्वेद का ब्राह्मण ग्रंथ है। इसके रचयिता वैशम्पायन के शिष्य आचार्य तितिर है। कृष्ण यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा का एक मात्र यही ब्राह्मण ग्रंथ उपलब्ध होता है। इसमें 3 काण्ड, 25 प्रपाठक तथा 308 अनुवाक है। इसमें पुरुषमेध, चतुर्वर्ण, चतुर्विध आश्रम की व्यवस्था का विस्तृत प्रतिपादन है। इसका प्रथम संस्करण 1890 ई. में कलकत्ता तथा द्वितीय संस्करण 1899 ई. में पुना से प्रकाशित हो चुका है।

सामवेद के ब्राह्मण ग्रंथ

ताण्डय ब्राह्मण ग्रंथ

सामवेद की कौथुम शाखा के ताण्डय ब्राह्मण को महाब्राह्मण, पंचविंश और प्रौढ़ब्राह्मण ग्रंथ भी कहते है। यह विशालकाय ग्रंथ है। इसके रचयिता आचार्य ताण्डी है। इसमें 25 अध्याय है। इसका मुख्य प्रतिपाद्य विषय सोमयाग है। इसमें कुल 178 सोमयागों का वर्णन है।

षड्विंश ब्राह्मण ग्रंथ

यह कौथुम शाखा का महत्वपूर्ण ब्राह्मण ग्रंथ है। इसमें 26 अध्याय है। इस ब्राह्मण ग्रंथ में इन्द्र और अहिल्या का आख्यान प्रसिद्ध है।

सामविधान ब्राह्मण ग्रंथ

इसमें 3 प्रपाठक और 25 अनुवाक है। इस ग्रंथ में जादू-टोने व युद्ध विजय का वर्णन है।

आर्षेय ब्राह्मण ग्रंथ

इस ब्राह्मण ग्रंथ में 3 प्रपाठक है जो 22 खण्डों में विभक्त है। इसमें सामगान के चार प्रकारों का उल्लेख किया है।

देवताध्याय ब्राह्मण ग्रंथ

यह सूत्र शैली में लिखा गया सबसे छोटा ब्राह्मण ग्रंथ है। इसमें 4 खण्ड है। इन चारों खण्डों में सामगान के द्वारा देवताओं को प्रसन्न करने का वर्णन है।

उपनिषद् ब्राह्मण ग्रंथ

इसमें 10 प्रपाठक है। यह ब्राह्मण ग्रंथ दो भागों में मिलता है—मंत्र ब्राह्मण तथा छान्दोग्योपनिषद् ब्राह्मण।

संहितोपनिषद् ब्राह्मण ग्रंथ

संहितोपनिषद् का अर्थ है–रहस्य को बतलाने वाल ब्राह्मण ग्रंथ। इस ब्राह्मण ग्रंथ में 5 खण्ड है जो सूक्तों में विभक्त है।

वंश ब्राह्मण ग्रंथ

इसमें 3 खण्ड है तथा प्राचीन ऋषियों की वंश परम्परा का वर्णन किया गया है।

जैमिनीय ब्राह्मण ग्रंथ

यह सामवेद की जैमिनीय शाखा का ग्रंथ है। इसमें 3 काण्ड 5 अध्याय है, जो खण्डों में विभक्त है।

अथर्ववेद से सम्बन्धित ब्राह्मण ग्रंथ

गोपथ ब्राह्मण ग्रंथ

अथर्ववेद का एकमात्र ब्राह्मण ग्रंथ गोपथ है। यह पिप्पलाद शाखा से सम्बन्धित हैं। इसके रचयिता गोपथ ऋषि है। यह दो भागों में विभक्त है-पूर्वभाग तथा उत्तरभाग। पूर्वभाग में 5 प्रपाठक है तथा उत्तर भाग में 6 प्रपाठक है। इसका समय 800 ईसा पूर्व के लगभग माना जाता है। इसमें ओंझ्म् के महत्व का विशद् विवेचन है।

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्र. 1 पुरोहितों का अपना ग्रंथ है ?
उत्तर ब्राह्मण ग्रंथ।
प्र. 2 जो परम्परा सें मंत्र नहीं, वह है ?
उत्तर ब्राह्मण ग्रंथ।
प्र. 3 ब्रह्म शब्द का दूसरा नाम है ?
उत्तर यज्ञ।
प्र. 4 ब्राह्मणों के दृष्टा कहें जाते है ?
उत्तर ऋषि।
प्र. 5 ब्राह्मण ग्रंथों का मुख्य प्रतिपाद्य विषय है ?
उत्तर विधि।
प्र. 6 शाबर भाष्य के अनुसार ब्राह्मण ग्रन्थ के प्रतिपाद्य विषय कितने है ?
उत्तर 10 विषय।
प्र. 7 यज्ञ विधान निहित ग्रंथ को कहते है ?
उत्तर ब्राह्मण ग्रंथ।
प्र. 8 ऋग्वेद के ब्राह्मणों के नाम लिखिए ?
उत्तर ऐतरेय और कौषितकि।

प्र. 9 ऐतरेय ब्राह्मण ग्रंथ में कितने पंचक एवं अध्याय है ?
उत्तर 3 पंचक और 40 अध्याय।
प्र. 10 ऐतरेय ब्राह्मण के रचयिता है ?
उत्तर ऋषि महिदास।
प्र. 11 शुनःशेप आख्यान किस ब्राह्मण ग्रंथ में उपलब्ध होता है ?
उत्तर ऐतरेय ब्राह्मण ग्रंथ।
प्र. 12 'चरैवति-चरैवति' यह आख्यान किस ब्राह्मण ग्रन्थ में प्राप्त होता है ?
उत्तर ऐतरेय ब्राह्मण ग्रंथ।
प्र. 13 ऋग्वेद के शांखायन ब्राह्मण का दूसरा नाम है ?
उत्तर कौषितकि ब्राह्मण।
प्र. 14 कौषितकि ब्राह्मण ग्रंथ में कितने अध्याय है ?
उत्तर 36 अध्याय।
प्र. 15 अग्नि की अपेक्षा इन्द्र को किस ब्राह्मण ग्रंथ में श्रेष्ठ बताया गया ?
उत्तर कौषितकि ब्राह्मण ग्रंथ।
प्र. 16 शुक्लयजुर्वेद का ब्राह्मण ग्रंथ है ?
उत्तर शतपथ ब्राह्मण ग्रंथ।
प्र. 17 सबसे बड़ा ब्राह्मण ग्रंथ है ?
उत्तर शतपथ ब्राह्मण ग्रंथ।
प्र. 18 शतपथ ब्राह्मण ग्रन्थ किसमें विभाजित है ?
उत्तर 14 काण्ड, 100 अध्याय तथा 7624 मंत्रों में।
प्र. 19 शतपथ ब्राह्मण के रचयिता है ?
उत्तर महर्षि याज्ञवल्क्य।
प्र. 20 'यज्ञो वै श्रेष्ठतमः कर्म' किस ब्राह्मण ग्रंथ से संबंधित है ?
उत्तर शतपथ ब्राह्मण ग्रंथ।
प्र. 21 'पुरुरवा-उर्वशी आख्यान' किस ब्राह्मण ग्रंथ में वर्णित है ?
उत्तर शतपथ ब्राह्मण ग्रंथ।
प्र. 22 'शतपथ-ब्राह्मण' में राजसूय यज्ञ की कथावस्तु कौनसे काण्ड में है ?
उत्तर द्वितीय काण्ड में।
प्र. 23 जलप्लावन की कथा किस ब्राह्मण ग्रंथ में है ?
उत्तर शतपथ ब्राह्मण ग्रंथ।
प्र. 24 दुष्यन्त पुत्र भरत की कथा किस ब्राह्मण ग्रंथ में मिलती है ?
उत्तर शतपथ ब्राह्मण ग्रंथ।
प्र. 25 मत्स्यावतार के बीज किस ब्राह्मण ग्रंथ में है ?
उत्तर शतपथ ब्राह्मण ग्रंथ।
प्र. 26 'शतं पन्थानो यस्य तच्छतं पंथम्' यहाँ 'पंथ' शब्द किसका वाचक है ?
उत्तर अध्याय का।
प्र. 27 कृष्ण यजुर्वेद का ब्राह्मण ग्रंथ है ?
उत्तर तैत्तिरीय ब्राह्मण ग्रंथ।

प्र. 28 सामवेद के कितने ब्राह्मण ग्रंथ है ?
उत्तर 10 ब्राह्मण ग्रंथ।
प्र. 29 सामवेद की कौथुम शाखा के कितने ब्राह्मण ग्रंथ है ?
उत्तर 9 ब्राह्मण ग्रंथ।
प्र. 30 सामवेद की वह शाखा जिसका एक भी ब्राह्मण ग्रंथ उपलब्ध नहीं है ?
उत्तर राणायनीय शाखा।
प्र. 31 जैमिनीय ब्राह्मण ग्रंथ को अन्य किस नाम से जाना जाता है ?
उत्तर तवल्कार ब्राह्मण ग्रंथ।
प्र. 32 अथर्ववेद का ब्राह्मण ग्रंथ है ?
उत्तर गोपथ ब्राह्मण ग्रंथ।
प्र. 33 गोपथ ब्राह्मण अथर्ववेद की किस शाखा का ब्राह्मण ग्रंथ है ?
उत्तर पिप्पलाद शाखा का।
प्र. 34 गोपथ ब्राह्मण ग्रंथ के ऋषि है ?
उत्तर गोपथ ऋषि।
प्र. 35 अर्वाचीन ब्राह्मण ग्रंथ है ?
उत्तर गोपथ ब्राह्मण।
प्र. 36 किस ब्राह्मण ग्रंथ से 'ओंड्म्' की उत्पत्ति बताई है ?
उत्तर गोपथ ब्राह्मण।
प्र. 37 मैक्समूलर के अनुसार ब्राह्मण ग्रंथों का रचनाकाल है ?
उत्तर 600 -800 ईसा पूर्व। (निश्चित रूप से 800 ई.पू. ब्राह्मण ग्रन्थों का विकास हो चुका था।)
प्र. 38 शंकर बालकृष्ण दीक्षित के अनुसार ब्राह्मण ग्रंथों का रचनाकाल है ?
उत्तर 2500 ईसा पूर्व।
प्र. 39 ब्रह्मचर्य का महत्व एवं अनेक कर्त्तव्यों का वर्णन किस ब्राह्मण ग्रंथ में मिलता है ?
उत्तर गोपथ ब्राह्मण ग्रंथ में।
प्र. 40 आख्यान के कितने भेद होते है ?
उत्तर दो, स्वल्पकाय व दीर्घकाय।
प्र. 41 पुरुरवा-उर्वशी आख्यान किस आख्यान के अन्तर्गत आता है ?
उत्तर दीर्घकाल आख्यान के।

आरण्यक ग्रन्थ

एकान्त जनशून्य अरण्य में ब्रह्मचर्य में रत होकर ऋषियों ने जिस गंभीर और चिन्तनपूर्ण विद्या का अध्ययन किया उसे **आरण्यक** कहते है। आरण्यक ब्राह्मण ग्रंथों के ही परिशिष्ट भाग है। **अरण्यं भवं आरण्यकम्** अर्थात् जो वन में रची गई रचना है, उन्हें आरण्यक कहते है। अरण्य शब्द से वुञ् प्रत्यय करने पर आरण्यक शब्द निष्पन्न होता है। अभिप्राय यह है कि इन ग्रंथों के अध्ययन, मनन एवं चिन्तन किये जाने का स्थान वन का एकान्त, शान्त वातावरण था। इन आरण्यक ग्रंथों में आत्मविद्या, तत्वचिन्तन, रहस्यपूर्ण विषयों का वर्णन किया गया है। इसी कारण गोपथ ब्राह्मण में आरण्यक ग्रंथों को **रहस्यग्रंथ** भी कहा गया है। इसमें आत्मा एंव परमात्मा का विशद् विवेचन तथा ज्ञान, कर्म एवं उपासना विषयों का प्रमुख चिन्तन किया गया है। प्राणविद्या का विशिष्ट वर्णन आरण्यकों में उपलब्ध होता है। आरण्यकों की संख्या 1130 थी किन्तु वर्तमान में 7 आरण्यक उपलब्ध होते हैं। अथर्ववेद आरण्यक रहित वेद है।

ऋग्वेद के आरण्यक

ऐतरेय आरण्यक

ऋग्वेद का ऐतरेय आरण्यक ऐतरेय ब्राह्मण का ही परिशिष्ट भाग है। इसके रचयिता आचार्य महिदास है। इसमें 5 भाग, 18 अध्याय है। इसमें महाव्रत (गवामयन) उक्थ प्राणविद्या आदि का वर्णन है। इस आरण्यक का अंग्रेजी अनुवाद 1909 ई. में ए.बी. कीथ ने प्रकाशित किया था।

शांखायन आरण्यक -

ऋग्वेद का दूसरा आरण्यक शांखायन है। इसे कौषितकि आरण्यक भी कहते है। 1922 ई.में श्रीधर पाठक ने इसको प्रकाशित किया था। इसमें 15 अध्याय और 137 खण्ड है। इसके प्रथम दो अध्यायों को कौषतकि ब्राह्मण का भाग माना जाता है तथा 3 से लेकर 6 अध्याय को कौषितकि उपनिषद् कहा जाता है।

यजुर्वेद के आरण्यक

बृहदारण्यक

यह शुक्लयजर्वेद का आरण्यक ग्रन्थ है। शुक्त यजुर्वेद के शतपथ ब्राह्मण की माध्यन्दिन और काण्व शाखाओं के अन्तिम 6 अध्यायों को बृहदारण्यक कहते है। इसका प्रथम प्रकाशन 1989 ई. में 'ओटोबोहटलिंक' ने किया था। इसमें आत्मतत्व का विशद् विवेचन तथा अश्वमेघ यज्ञ का रहस्य बताया गया है।

तैत्तिरीय आरण्यक

कृष्ण यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा का तैत्तिरीय आरण्यक है। राजेन्द्रलाल मिश्र ने 1872 ई में सायण भाष्य के साथ इसे प्रकाशित किया था। इसमें 10 प्रपाठक तथा 170 अनुवाक है। इसमें पंचमहायज्ञों का वर्णन है। इस आरण्यक में कुरुक्षेत्र, खाण्डवा, पांचाल, मत्स्य प्रदेश, कांशी आदि भौगोलिक नामों का उल्लेख है। इसमें **श्रमण** शब्द का प्रयोग तपस्वी के लिए किया गया है। इसमें कश्यप को सर्वदर्शक तथा व्यास को पाराशर्य कहा गया है।

मैत्रायणी आरण्यक

कृष्ण यजुर्वेद के मैत्रायणी शाखा का मैत्रायणी आरण्यक है। इसमें सात प्रपाठक है। इसमें परमात्मा को अग्नि और प्राण कहा गया है तथा अश्वपति, हरीशचन्द्र, अम्बरीश, शर्याति, ययाति आदि राजाओं का उल्लेख मिलता है।

सामवेद के आरण्यक ग्रन्थ

तवल्कार आरण्यक

यह आरण्यक सामवेद की जैमिनीय शाखा से सम्बन्धित है। इसमें चार अध्याय है। इस आरण्यक के चतुर्थ अध्याय को केनोपषिद कहते हैं। इसका दूसरा नाम तवल्कार उपनिषद् है। इसमें सामवेद के मंत्रों की सुन्दर व्याख्या की गई है। इसका प्रकाशन 1931 ई. में एच. अर्टल ने किया था।

छान्दोग्यारण्यक

यह सामवेद के ताण्डय ब्राह्मणों से सम्बन्धित है। इसमें सामगान और उद्‌गीथ की धार्मिक दृष्टि से व्याख्या की गई है। इसका प्रकाशन 1978 ई. में सत्यव्रतसामश्री ने सामवेद आरण्यक संहिता के नाम से किया था।

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्र. 1 अरण्य शब्द का अर्थ है ?
उत्तर वन।
प्र. 2 आरण्यक शब्द में प्रकृति प्रत्यय है ?
उत्तर अरण्य शब्द वुञ् प्रत्यय ।
प्र. 3 ज्ञान, उपासना और कर्मयोग का समन्वय किसमें है ?
उत्तर आरण्यकों में।
प्र. 4 आरण्यकों का सर्वप्रमुख प्रतिपाद्य विषय क्या हैं ?
उत्तर प्राणविद्या एवं प्रतिकोपासना।
प्र. 5 आरण्यकों के प्राण किसे कहते है ?
उत्तर ऋषियों को।
प्र. 6 आरण्यक कितने है ?
उत्तर सात।
प्र. 7 ऋग्वेद के कौन-कौन से आरण्यक है ?
उत्तर ऐतरेय, कौपीतकि।
प्र. 8 ऐतरेय आरण्यक में उक्थ शब्द का क्या अर्थ है ?
उत्तर प्राणविद्या, पुरुष, कैवल्य।
प्र. 9 ऐतरेय आरण्यक को यह भी कहते है ?
उत्तर संहितोपनिषद्।
प्र. 10 शांखायन आरण्यक में कितने अध्याय है ?
उत्तर 15 अध्याय।
प्र. 11 शुक्ल यजुर्वेद का आरण्यक है ?
उत्तर बृहदारण्यक।
प्र. 12 अहंब्रह्माऽस्मि वेदांतदर्शन के इस महावाक्य को किस आरण्यक ग्रंथ से लिया गया है ?
उत्तर शांखायन आरण्यक से।
प्र. 13 बृहदारण्यक का प्रकाशन किस अंग्रेजी विद्वान् ने किया था ?
उत्तर ओटोबोह्टलिंक ।
प्र. 14 बृहदारण्यक में किसका विशद् विवेचनं मिलता है ?
उत्तर आत्मतत्व।
प्र. 15 कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा का आरण्यक है ?
उत्तर तैत्तिरीय आरण्यक।
प्र. 16 सायणभाष्य के साथ राजेन्द्र लाल मिश्र ने इसे कब प्रकाशित किया ?
उत्तर 1872 ई.में।

प्र. 17 तैत्तिरीय आरण्यक में कितने प्रपाठक है ?
उत्तर 10 प्रपाठक।
प्र. 18 पंचमहायज्ञों का विशद् विवेचन किस आरण्यक में मिलता है ?
उत्तर तैत्तिरीय आरण्यक में।
प्र. 19 श्रमण शब्द का प्रयोग किस आरण्यक में मिलता है ?
उत्तर तैत्तिरीय आरण्यक में।
प्र. 20 तैत्तिरीय आरण्यक में जल के कितने रूप है ?
उत्तर 6 ये हैं–वृष्टि, कुप, तड़ाग, नदी, पात्र, झरने का जल।
प्र. 21 सर्वदर्शक किस ऋषि को कहा गया है ?
उत्तर कश्यप (कण्व)।
प्र. 22 कृष्ण यजुर्वेद की मैत्रायणी शाखा का आरण्यक है ?
उत्तर मैत्रायणी आरण्यक।
प्र. 23 वह आरण्यक जिसमें सतयुग के राजाओं का उल्लेख है ?
उत्तर मैत्रायणी आरण्यक।
प्र. 24 सामवेद की जैमिनीय शाखा का आरण्यक है ?
उत्तर तवल्कार आरण्यक।
प्र. 25 तवल्कार आरण्यक का प्रकाशन कब हुआ ?
उत्तर 1931ई. में।
प्र. 26 वह आरण्यक जो केनोपनिषद् का पर्याय है ?
उत्तर तवल्कार आरण्यक।
प्र. 27 तवल्कार आरण्यक में कितने अध्याय है ?
उत्तर 4 अध्याय।
प्र. 28 ताण्ड्य ब्राह्मण से सम्बन्ध रखने वाला आरण्यक है ?
उत्तर छान्दोग्यारण्यक।
प्र. 29 सामगान की धार्मिक दृष्टि से व्याख्या किस आरण्यक में की गई है ?
उत्तर छान्दोग्यारण्यक।
प्र. 30 सत्यव्रत साम श्री ने छान्दोग्यारण्यक का प्रकाशन कब करवाया ?
उत्तर 1978 ई. में।
प्र. 31 'अरण्य एव पाठ्यत्वादारण्यकमितीर्यते' यह कथन किसका है ?
उत्तर आचार्य सायण का।
प्र. 32 'सर्वा ऋचः सर्वे वेदाः........' पंक्ति किस आरण्यक में संकलित है ?
उत्तर ऐतरेय आरण्यक।
प्र. 33 ब्राह्मणग्रन्थों के अन्तिम भाग को कहते है ?
उत्तर आरण्यक।
प्र. 34 वह वेद जिसका कोई आरण्यक नहीं है ?
उत्तर अथर्ववेद।

उपनिषद् ग्रन्थ

उपनिषद् शब्द का अर्थ

उपनिषद् शब्द उप, नि (उपसर्गपूर्वक) षद्लृ (धातु) से क्विप् प्रत्यय करने पर निष्पन्न होता है। जिसका अर्थ है–तत्वज्ञान के लिए गुरु के पास विनम्रतापूर्वक बैठना। आचार्य शंकर ने उपनिषद् का अर्थ ब्रह्मविद्या बताया है। उन्होंने षद्लृ धातु के तीन अर्थ बताये है–**षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु।**

(1) विशरण–विनाश होना,

(2) गति–प्रगति या जानना तथा

(3) अवसादन–शिथिल होना।

इस प्रकार स्पष्ट है कि जो विद्या समस्त अनर्थों के उत्पादक सांसारिक क्रियाकलापों का नाश करती है। संसार के कारणभूत अविद्या के बन्धन को शिथिल कर देती है, उसे उपनिषद् कहते है। वस्तुतः रहस्यात्मक आत्मविद्या सम्बन्धित ग्रन्थ उपनिषद् कहे जाते है। वेद का अन्तिम भाग होने के कारण इन्हें वेदान्त भी कहते है। **वेदानाम् अन्तः इति वेदान्तः** । ओल्डन वर्ग ने उपनिषद् का अर्थ पूजा की एक पद्धति किया है।

अकबर के पौत्र दाराशिकोह ने 17वी शताब्दी में इनका फारसी भाषा में अनुवाद कराया था। उसने 1756-57 ई. में लगभग 50 उपनिषदों का फारसी अनुवाद **'सिर्र ए अकबर'** (महान् रहस्य) के नाम से प्रकाशित किया था। एन्क्वेटिल ड्यूरेन ने 1775 ई. में फारसी अनुवाद का रूपान्तरण फ्रैन्च व लैटिन भाषा में किया था। लैटिन अनुवाद 1801 व 1802 में औपनिखत् के नाम से प्रकाशित किया गया। मैक्समूलर का कथन है कि यह अनुवाद अपूर्ण एवं अव्यवस्थित था परन्तु शोपेन हॉवर ने इसी अनुवाद को पढ़कर औपनिषदिक ज्ञान को विश्व की दार्शनिक विचारधारा का पथ प्रदर्शन माना था। इसी फारसी अनुवाद के आधार पर 1720ई. में उपनिषदों का एक हिन्दी अनुवाद हुआ, जिसका नाम 'उपनिषद् भाष्य' है।

उपनिषदों का रचनाकाल

बालगंगाधर तिलक ने उपनिषदों का रचनाकाल 1600 ई.पू. माना है। पाणिनि ने अष्टाध्यायी में उपनिषद् शब्द का प्रयोग किया है। इस आधार पर इनकी रचना 700 ई.पू. हो चुकी थी। प्रो. वैद्य ने लिखा है कि मैत्रायणीय उपनिषद् में कुछ ज्योतिष सम्बन्धी तथ्यों के उल्लेख है, इनको ध्यान में रखकर उपनिषदों का काल निर्णय उचित है। श्री तिलक ने मैत्रायणीय उपनिषद् का काल 1900 वि.पू. (लगभग 1950 ई.पू) माना है। अतः उपनिषद् का रचनाकाल का प्रारम्भ 2500 ई.पू. माना जाना उचित है। (वैद्य, संस्कृत साहित्य का इतिहास, भाग-2 पृ.-171-74)

उपनिषदों की संख्या

भारतीय परम्परा के अनुसार उपनिषदों की संख्या 108 है परन्तु 200 तक उल्लेख भी प्राप्त होता है। मुक्तिकोपनिषद् में 108 उपनिषदों का नामोल्लेख है परन्तु इनमें दस उपनिषदें ही प्रमुख एवं प्रामाणिक मानी जाती है। इसका प्रमुख आधार आचार्य शंकर का अपना भाष्य है।

ईश-केन-कठ-प्रश्न-मुण्ड-माण्डूक्य-तित्तिरिः।
ऐतरेयं च छान्दोग्यं बृहदारण्यकं तथा।। (मुक्तिकोपनिषद् 1/30)

संहिताओं से सम्बन्धित उपनिषदें

ऋग्वेद संहिता के उपनिषद् ग्रन्थ -
(1) ऐतरेय उपनिषद् (2) कौषीतकि उपनिषद्

यजुर्वेद संहिता के उपनिषद् ग्रन्थ -
क. शुक्ल यजुर्वेद के उपनिषद् ग्रन्थ
(1) ईशावास्योपनिषद् (2) बृहदारण्यकोपनिषद्
ख. कृष्ण यजुर्वेद के उपनिषद् ग्रन्थ -
(1) तैत्तिरीयोपनिषद् (2) कठोपनिषद्
(3) श्वेताश्वेतरोपनिषद् (4) मैत्रायणी उपनिषद्
(5) महानारायणोपनिषद्

सामवेद संहिता के उपनिषद् ग्रन्थ -
(1) केनोपनिषद् (2) छान्दोग्योपनिषद्

अथर्ववेद संहिता के उपनिषद् ग्रन्थ -
(1) प्रश्नोपनिषद् (2) मुण्डकोपनिषद्
(3) माण्डूक्योपनिषद्

प्रमुख उपनिषदों का परिचय (संहिताओं के संदर्भ में)

1 ऐतरेयोपनिषद् :- ऐतरेयारण्यक के द्वितीय भाग के चतुर्थ से षष्ठ अध्याओं को ऐतरेयोपनिषद् कहते है। यह लघुकाय उपनिषद है। इसमें तीन अध्याय है। प्रथम अध्याय में विश्व की उत्पत्ति, द्वितीय अध्याय में जन्म, जीवन और मरण इन तीन अवस्थाओं का, तृतीय अध्याय में आत्मा के स्वरूप का विवेचन है। इसमें प्रज्ञान की महिमा वर्णित है और आत्मा को प्रज्ञान का स्वरूप बताया गया है। यह प्रज्ञान ही ब्रह्म है। (प्रज्ञानं ब्रह्म) और इसी से समस्त विश्व की उत्पत्ति हुई है।

2 कौषीतकि उपनिषद् :- कौषीतकि आरण्यक के तृतीय से षष्ठ अध्याय तक को कौषीतकि उपनिषद कहते है। इसे कौषीतकि ब्राह्मणोपनिषद् भी कहते हैं। इसमें चार अध्याय है।

प्रथम अध्याय–देवयान और पितृयान का वर्णन

द्वितीय अध्याय–प्राण को ब्रह्म मानना । उक्थ (मन्त्र शक्ति) ब्रह्म है। उक्थं ब्रह्म । स एष त्रयी विद्याया आत्मा।

तृतीय अध्याय–प्राण और प्रज्ञा का महत्व।

चतुर्थ अध्याय–काशिराज अजातशत्रु और बालाकि का दार्शनिक संवाद।

3 बृहदारण्यकोपनिषद् :-शुक्ल यजुर्वेद से सम्बद्ध शतपथ ब्राह्मण के अन्तिम छः अध्यायों को बृहदारण्यक कहतें है। इसमें आरण्यक और उपनिषद् दोनों ही मिश्रित है। इसलिए इसका नाम बृहदारण्यकोपनिषद् पड़ा है। यह गद्यात्मक प्राचीन एवं विशालकाय उपनिषद् है। इसमें छः अध्याय है, इसमें तीन काण्ड है–मधुकाण्ड, याज्ञवल्क्यकाण्ड तथा खिलकाण्ड। इन्हे क्रमशःउपदेशकाण्ड, उपपत्तिकाण्ड, उपासनाकाण्ड भी कहा जाता है।

प्रथम अध्याय में–यज्ञिय अश्व के रूप में परमपुरुष का वर्णन, मृत्यु का विकराल रूप, जगत् की उत्पत्ति, प्राण की श्रेष्ठता का वर्णन है।

द्वितीय अध्याय में -गार्ग्य एवं अजातशत्रु का संवाद। याज्ञवल्क्य से ब्रह्मविद्या का उपदेश।

तृतीय अध्याय में–जनक की सभा में याज्ञवल्क्य का अपने प्रतिपक्षियों को हराना। गार्गी और याज्ञवल्क्य के प्रश्नोत्तर।

चतुर्थ अध्याय में–याज्ञवल्क्य का जनक को ब्रह्मविद्या का उपदेश।

पंचम अध्याय में–नीतिशास्त्र, सृष्टि निर्माणशास्त्र, परलोकशास्त्र आदि विषयों का विवेचन तथा गायत्री मन्त्र के स्वरूप का वर्णन है। इसमें दम-दान-दया की शिक्षा देवता, मनुष्य एवं असुरों को प्रजापति ने दी है।

षष्ठ अध्याय में–शरीर के अन्तर्गत समस्त शक्तियों की अपेक्षा प्राण श्रेष्ठ है इस तत्व को बताया है। *अहं ब्रह्मास्मि, अयमात्मा ब्रह्म* का वर्णन है।

इस उपनिषद का प्रमुख उपदेश है– **असतो मा सद्गमय।**

तमसो मा ज्योतिर्गमय।

मृत्योर्माऽमृतमगमय।।

4 **तैत्तिरीयोपनिषद् :-** कृष्ण यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा से सम्बद्ध है। तैत्तिरीय ब्राह्मण का अन्तिम भाग तैत्तिरीय आरण्यक है। तैत्तिरीय आरण्यक के दस प्रपाठकों में सप्तम, अष्टम एवं नवम प्रपाठकों को तैत्तिरीयोपनिषद् कहते है। इस उपनिषद् में तीन अध्याय है–जिन्हें शिक्षावली–ब्रह्मानन्दवल्ली- भृगुवल्ली के नाम से जाना जाता है।

शिक्षावल्ली- शिक्षाशास्त्र, संहिता के अनेक रूप भूः भुवः स्वः तीन व्याहृतियाँ, आत्मा का निवास, ओम्-ब्रह्म की व्याख्या, सत्य-तप एवं स्वाध्याय का महत्व, दिक्षान्त उपदेश आदि वर्णित है।

ब्रह्मानन्दवल्ली–अन्न, प्राण, मन, विज्ञान और आनन्दमय इन पाँच कोशों का वर्णन, ब्रह्म रस रूप है, सूर्य और पुरुष दोनों में एक ही शक्ति हैं।

भृगुवल्ली–पञ्चकोशों का वर्णन, अन्न का स्वरूप, अन्न का विराट् रूप। **रसो वै सः** अर्थात् ब्रह्म का स्वरूप ही रस या आनन्द है । उसको प्राप्त कर पूर्ण तृप्ति हो जाती है।

5 **श्वेताश्वेतरोपनिषद्**–यह कृष्ण यजुर्वेदीय उपनिषद् है। इसके वक्ता श्वेताश्वेतर ऋषि है। इसमें सांख्य–योग और वेदान्त के सिद्धान्तों का प्रतिपादन है। इसमें छः अध्याय है, इसके वर्ण्य विषय संक्षेप में निम्न है -

प्रथम अध्याय -हंस, त्रेतावाद, माया, क्षर, अक्षर, सत्य और तप से आत्मदर्शन।

द्वितीय अध्याय–योग, योगविधि, ब्रह्मतत्व का वर्णन ।

तृतीय अध्याय -रुद्र विश्वरूप, जीव का स्वरूप तथा आत्मा का स्वरूप।

चतुर्थ अध्याय -एकेश्वरवाद, शिवब्रह्मरूप।

पंचम अध्याय -जीवात्मा का स्वरूप।

षष्ठ अध्याय -ईश्वर प्रकृति एवं जीव का नियन्ता।

6 **मैत्रायणी उपनिषद्**–यह उपनिषद् कृष्णयजुर्वेद की मैत्रायणी संहिता से सम्बन्धित है। इसमें सात अध्याय है। यह परवर्तीकालीन उपनिषद् है। इसमें ब्रह्म की जाग्रत, सुषुप्ति और स्वप्न इन तीन अवस्थाओं का वर्णन है।

7 **महानारायणोपनिषद्**–कृष्ण यजुर्वेद से सम्बद्ध तैत्तिरीय आरण्यक का दशम प्रपाठक महानारायणोपनिषद् कहा जाता है। यह सायण भाष्य के साथ प्रकाशित है। इसे याज्ञिक्युपनिषद् भी कहते है। इसमें परमात्मा के एकत्व का वर्णन है।

8 **केनोपनिषद्**–यह सामवेदीयतवलकार ब्राह्मण के अन्तर्गत है। इसमें चार खण्ड है- प्रथम खण्ड दो पद्यात्मक और शेष दो गद्यात्मक।

प्रथम खण्ड में–इसमें चार प्रश्न है। जिनमें उपास्य ब्रह्म और निर्गुण ब्रह्म में अन्तर बताया गया है।

द्वितीय खण्ड में–ब्रह्म के रहस्यमय स्वरूप का विवेचन।

तृतीय/चतुर्थ खण्ड में- उमा हैमवती आख्यान।

प्रस्तुत उपनिषद् **केनोषितं पतति** से प्रारम्भ होने के कारण केनोपनिषद् कहा गया है।

9 **छान्दोग्योपनिषद्**–यह सामवेदीय उपनिषद् है। यह उपनिषद् प्राचीनता, गंभीरता तथा ब्रह्मज्ञान-प्रतिपादन की दृष्टि से उपनिषदों में नितांत प्रौढ़, प्रामाणिक तथा प्रमेय बहुल है। इसमें कुल आठ अध्याय या प्रपाठक है। इसका वर्ण्य- विषय संक्षेप में इस प्रकार है -

प्रथम अध्याय–साम तथा ओंइम् के स्वरूप का मार्मिक विवेचन।

द्वितीय अध्याय–ओंइम् त्रयीविद्या का सार।

तृतीय अध्याय–देव मधु के रूप में सूर्य की उपासना, **गायत्री का महत्व, सर्व खल्विदं ब्रह्म** महावाक्य का चिन्तन।

चतुर्थ अध्याय–रैक्व के दार्शनिक तथ्य एवं सत्यकाम जाबालि कथा।

पंचम अध्याय–प्राण की श्रेष्ठता। प्रवहण जैबालि के दार्शनिक सिद्धान्त, परलोक विज्ञान।

षष्ठ अध्याय–महर्षि आरुणि द्वारा अपने पुत्र श्वेतकेतु को अद्वैतवाद का उपदेश। **तत् त्वमसि** का विस्तृत विवेचन।

सप्तम अध्याय–ऋषि सनत्कुमार का नारद को उपदेश। **''यो वै भूमा तत् सुखम्''** भूमा दर्शन की शिक्षा।

अष्टम अध्याय–इन्द्र विरोचन आख्यान एवं आत्मज्ञान की शिक्षा का निर्देशन है।

10 **प्रश्नोपनिषद् :-** प्रस्तुत उपनिषद् अर्थवेदीय ब्राह्मण भाग के अन्तर्गत आता है। भाष्यकार आचार्य शंकर के अनुसार मुण्डकोपनिषद् में कहे हुए तथ्यों का विस्तृत विवेचन ही प्रश्नोपनिषद् है–**''मन्त्रोक्तस्यर्थस्य विस्तरानुवादीद ब्राह्मणमारभते''**। प्रश्नोपनिषद् पैप्पलाद शाखा से सम्बन्धित है। यह कुल छः खण्डों में विभक्त है। इसका प्रत्येक खण्ड एक प्रश्न के नाम से जाना जाता है । ब्रह्मविद्या के ज्ञान के लिए छः ऋषि सुकेशा, सत्यकाम, सौर्यायणि, अश्वलकुमार, भार्गव तथा कबन्धी ऋषि ब्रह्मविद्या की खोज में महर्षि पिप्पलाद के पास जाकर तत्वज्ञान के विषय में प्रश्न पूछते है।

11 **मुण्डकोपनिषद्**–यह अथर्ववेद की शौनक शाखा से सम्बन्धित उपनिषद् है । मुण्डक शब्द से तात्पर्य है–मन का मुण्डन कर अविद्या से मुक्त करने वाला ज्ञान। इसमें तीन मुण्डक है और प्रत्येक दो खण्डों में विभक्त है। इस उपनिषद् में ब्रह्मा ने अपने ज्येष्ठ पुत्र अथर्वा को ब्रह्मविद्या का उपनिषद् दिया है। **'सत्यमेव जयते नानृतम्'** उपदेश उपनिषद् में संकलित है।

12 **माण्डूक्योपनिषद्**–यह उपनिषद् अथर्ववेद की शौनक शाखा से सम्बन्धित है। इसमें 12 वाक्य या खण्ड है। इसमें ओ३म् की महत्ता का वर्णन है। गौडपादाचार्य ने इस उपनिषद् पर माण्डूक्यकारिका की रचना की है **सोऽयम् आत्मा चतुष्पाद। !! ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिः !**

13 **कठोपनिषद्**–कृष्ण यजुर्वेद की कठ् शाखा से सम्बन्धित उपनिषद् कठोपनिषद् है। इसमें दो अध्याय है, प्रत्येक अध्याय में तीन वल्लियाँ है। इस उपनिषद् में यम द्वारा नचिकेता को प्रदत्त ब्रह्मविद्या का प्रतिपादन है । इसमें नचिकेता को यमराज ने तीन वरदान दियें–जिनमें प्रथम पितृपरितोष, द्वितीय- स्वर्गसाधनभूत अग्निविद्या तथा तृतीय वरदान- आत्मतत्व का ज्ञान। यह उपनिषद् तत्वज्ञान की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। प्रत्येक मानव को–**उत्तिष्ठत् जाग्रत प्राप्य वरान् निबोधत्** इस संदेश को ग्रहण कर जीवन निर्माण करना चाहिए।

प्रश्नोत्तर

प्र.1 कठोपनिषद् किसमें विभक्त है ?
उत्तर– वल्ली में।
प्र.2 कठोनिषद् का सम्बन्ध किस शाखा से है ?
उत्तर– कृष्णयजुर्वेद की कठ्।
प्र.3 कठोपनिषद् का प्रतिपाद्य विषय है ?
उत्तर– आत्मज्ञान।
प्र.4 यमराज द्वारा नचिकेता को दिया गया उपदेश किस नाम से प्रसिद्ध है ?
उत्तर– कठोपनिषद्।
प्र. 5 ॐ सह नाववतु , सह नौ भुनक्तु, सह वीर्य करवावहै। तेजस्विनावधीतमस्तु, मा विद्विषावहे।। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः !! मंगलाचारण किस उपनिषद् से है ?
उत्तर– कठोपनिषद्।
प्र. 7 वाजश्रवा का पुत्र कौन था ?
उत्तर– उद्दालक (वंश) में उत्पन्न नचिकेता।
प्र.8 उद्दालक के पुत्र का क्या नाम था ?
उत्तर– वाजश्रवा।
प्र.9 सर्ववेदस् यज्ञ के अपर नाम है ?
उत्तर– विश्ववजित्, सर्वजित्, सर्वमेध।
प्र.10 अनन्दा नामक लोक को कौन प्राप्त होता है ?
उत्तर– अनुचितदान कर्ता।
प्र.11 "पीतोदका जग्धतृणा दुग्धदोहा निरिन्द्रियाँ" किसके विशेषण है ?
उत्तर– गायों के।
प्र.12 'मृत्यवे त्वां ददामि' किसने किससे कहा है ?
उत्तर– वाजश्रवा ने नचिकेता।
नोट :- नचिकेता के पिता का नाम वाजश्रवस् था जो उद्दालक वंश में उत्पन्न हुए थे किन्तु उन्हे अरुण का पुत्र भी कहा गया है।
प्र.13 सस्यमिव मर्त्यः पच्यते सस्यमिवाऽऽजायते पुनः पंक्ति उद्धृत है ?
उत्तर– कठोपनिषद्।
प्र.14 'वैश्वानरः' शब्द प्रयुक्त हुआ है ?
उत्तर– नचिकेता।
प्र.15 'वैवस्वत' शब्द प्रयुक्त हुआ है ?
उत्तर– यमराज।
प्र.16 आशाप्रतीक्षे संगतं सूनृतां, चेष्टापूर्ते पुत्र पशुंश्च सर्वान्। एतद् वृड्.क्ते पुरुषस्याल्पमेधसो, यस्यानश्नन्वसति ब्राह्मणो गृहे।। प्रस्तुत मन्त्र में किसका संकेत है ?
उत्तर– अतिथि सत्कार के अभाव का।
प्र.17 यमराज ने नचिकेता को कितने वरदान दियें ?
उत्तर– तीन।

प्र.18 नचिकेता का प्रथम वरदान है ?
उत्तर– पितृपरितोष।
प्र.19 नचिकेता का द्वितीय वरदान क्या है ?
उत्तर– स्वर्ग की अग्नि विद्या का ज्ञान।
प्र.20 यमराज के अनुसार स्वर्ग की अग्नि किस नाम से प्रसिद्ध होगी ?
उत्तर– नाचिकेतस्।
प्र.21 'सृड्.कां' शब्द से क्या अभिप्रेत है ?
उत्तर– कर्म बुद्धिरूपी ज्ञानमयीमाला।
प्र.22 त्रिनाचिकेत अग्नि से अभिप्राय क्या है ?
उत्तर– आह्वनीय, गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि।
प्र.23 नचिकेता का तृतीय वरदान क्या था ?
उत्तर– आत्मज्ञान।
प्र.24 येयं प्रेते विचिकत्सामनुष्येऽस्तीत्येके नायमस्तीतिचैके। मन्त्र में कथन किसका किसके प्रति है ?
उत्तर– नचिकेता का यमराज के प्रति।
प्र.25 देवाताओं ने किस विषय पर सन्देह किया था ?
उत्तर– आत्मज्ञान के विषय पर।
प्र.26 नचिकेतो मरणं माऽनुप्राक्षीः किसने कहा ?
उत्तर– यमराज ने।
प्र.27 न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यो, लप्स्यामहे वित्तमद्राक्ष्म चेत्त्वा यह किससे सम्बन्धित है ?
उत्तर– कठोपनिषद्।
प्र.28 कठोपनिषद में कितने मार्गो का वर्णन है ?
उत्तर– दो, श्रेय एवं प्रेय।
प्र.29 श्रेयमार्गानुरागी है ?
उत्तर– नचिकेता।
प्र.30 योगक्षेम से रहित व्यक्ति किस मार्ग का अनुसरण करते है ?
उत्तर– प्रेय।
प्र.31 अविद्यायामन्तरे वर्तमानाः स्वयं धीराः पण्डितं मन्यमानाः। मन्त्रांश किससे है ?
उत्तर– कठोपनिषद्।
प्र.32 न साम्परायः प्रतिभाति बालं यहाँ 'साम्परायः' शब्द से क्या अभिप्राय है ?
उत्तर– परलोक।
प्र.33 आश्चर्यो वक्ता कुशलोऽस्य लब्धाऽऽश्चर्यो ज्ञाता कुशलानुशिष्टः कथन किसका है ?
उत्तर– यमराज।
प्र.34 सर्वेवेदा यत्पदमामनन्ति तपांसि सर्वाणि च यद्वदन्ति। यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्य चरन्ति तत्ते पदं संग्रहेण ब्रवीमि॥ संक्षिप्त शब्द कौनसा है ?
उत्तर– ओ३म्।
प्र.35 न <u>हन्यते</u> हन्यमानें शरीरे रेखाकिंत शब्द का अर्थ है ?
उत्तर– आत्मतत्व।

प्र.36 अणोरणीयान्महतोमहीयानात्माऽस्य जन्तोर्निहितोगुहायाम् पंक्ति किससे उद्धृत है ?

उत्तर– कठोपनिषद्।

प्र.37 आसीनो दूरं व्रजति शयानो याति सर्वतः। पंक्ति से किसकी अभिव्यक्ति हुई है ?

उत्तर– आत्मा।

प्र.38. द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया, समानं वृक्षं परिषस्व जाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति।। मन्त्र किस ग्रन्थ से उद्धृत है ?

उत्तर– ऋग्वेद।

प्र.39 शरीर का स्वामी है ?

उत्तर– आत्मतत्व।

प्र.40 इन्द्रियाँ कितनी है ?

उत्तर– ग्यारह।

प्र.41 शरीर रूपी रथ का सारथि कौन है ?

उत्तर– बुद्धि
आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु। बुद्धि तु सारथि विद्धि मनः प्रग्रहमेव च ।।
इन्दियाणि हयानाहुर्विषयांस्तेषु गोचरान्। आत्मेन्द्रिय मनोयुक्तं भोक्तेत्याहुर्मनीषिणः।।
इन्द्रियभ्यःपराह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मन। मनसस्तू परा बुद्धिर्बुद्धेरात्मा महान्परः।।
महतः परमव्यक्तमव्यक्तात्पुरुषः पर। पुरुषान्न परं किंचित् सा काष्ठा सा परागतिः!!

प्र.42 एषः सर्वेषु भूतेषु गूढोऽऽत्मा-पंक्ति किससे उद्धृत है ?

उत्तर– कठोपनिषद्

प्र.43 उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत्। क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्ग पथस्तत्कवयो वदन्ति।। उपदेश है ?

उत्तर– कठोपनिषद् से।

प्र.44 अशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययं तथाऽरसं नित्यगमगन्धवच्चः यत्।
अनाद्यनन्तं महतः परं ध्रुवं निचाय्य तन्मृत्युमुखात्प्रमुच्यते।। मन्त्र उद्धृत है ?

उत्तर– कठोपनिषद्
नोट :- कठोपनिषद् प्रथम अध्याय–प्रथमवल्ली मन्त्र = 29 द्वितीयवल्ली मन्त्र = 25 तृतीयवल्ली मन्त्र = 17 कुल = 71 मन्त्र।

प्र.45 य एषः सुप्तेषु जागर्ति कामं कामं पुरूषो निर्मिमाणः पंक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है ?

उत्तर - कठोपनिषद्।

प्र.46 अंगुष्ठमात्रः पुरुषो मध्ये आत्मनि तिष्ठति।
ईशानो भूतभव्यस्य न ततो विजुगुप्सते॥ एतद्वैतत्॥ मन्त्र किस ग्रन्थ से हैं ?

उत्तर - कठोपनिषद्।

प्र.47 एवं मुनेः विजानत आत्मा भवति गौत्तम। यहाँ गौत्तम है ?

उत्तर– नचिकेता।

प्र.49 एकादशद्वार युक्त नगर है ?

उत्तर– शरीर।

प्र.50 नित्योऽनित्यानां चेतनश्चेतनामेको बहूनां यो विदधाति कामान् । पंक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है ?

उत्तर– कठोपनिषद्।

प्र.51 ऊर्ध्वमूलोऽवाक्शाख एषोऽश्वत्थः सनातनः किस ग्रन्थ से उद्धृत है?

उत्तर– कठोपनिषद्।

प्र.52 कठोपनिषद् में अक्षर है?

उत्तर– ब्रह्म।

ईशावास्योपनिषद :- शुक्ल यजुर्वेद की काण्व एंव वाजसनेयि शाखा का 40 वाँ अध्याय ईशावास्योपनिषद् के नाम से प्रसिद्ध है। यह सर्व प्राचीन लघुकाय रहस्यपूर्ण उपनिषद् है। इसमें कुल अठारह मन्त्र है। ईशावास्य से प्रारम्भ होने के कारण इसका नाम ईशावास्योपनिषद् है। त्यागपूर्वक वस्तुओं के उपभोग हेतु शिक्षा देते हुए 100 वर्षों तक निष्काम भाव से कर्म करने की प्रेरणा दी है। इसमें आत्मा सम्भूति आदि का विशद् विवेचन है। इसे संहितोपनिषद् भी कहा जाता है। इस उपनिषद् की सबसे बडी विशेषता यह है कि इसमें भोग-त्याग, व्यक्ति-समाज, विद्या-अविद्या, भौतिक-अध्यात्म आदि के प्रति समन्वयात्मक दृष्टि रखकर सभी का प्रतिपादन किया गया है।

प्रश्नोत्तर

प्र. 1. ईशावास्योपनिषद् किस वेद से सम्बन्धित है ?

उत्तर– यजुर्वेद।

प्र. 2. शुक्ल यजुर्वेद की काण्वशाखा का चालीसवाँ अध्याय है ?

उत्तर– ईशावास्योपनिषद्।

प्र. 3. ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदः पूर्णात् पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।। ॐ शान्तिः, शान्तिः, शान्ति।। प्रस्तुत मंगलाचरण है ?

उत्तर– बृहदारण्यकोपनिषद्।

प्र. 4 ॐ शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः से निर्देश है ?

उत्तर– त्रिविध दुःखों की शान्ति।

प्र. 5. 'मा गृधः कस्य स्विद् धनम्' पंक्ति किस उपनिषद् से है ?

उत्तर– ईशावास्योपनिषद्।

प्र. 6. कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविशेच्छतँ समाः। एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।। मन्त्र किस उपनिषद् से है ?

उत्तर– ईशावास्योपनिषद्।

प्र. 7. 'न कर्म लिप्यते नरे' में किस कर्म की अभिव्यक्ति है ?

उत्तर– निष्काम कर्म।

प्र. 8. असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसाऽऽवृताः। तांस्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः।। मन्त्र किससे उद्धृत है ?

उत्तर– ईशावास्योपनिषद्।

प्र. 9. ईशावास्योपनिषद् में कितने मन्त्र है ?

उत्तर– 18।

प्र. 10. तस्मिन् अपो मातरिश्वा दधाति पंक्ति किससे उद्धृत है ?

उत्तर– ईशावास्योपनिषद्।

प्र. 11. आत्महनः शब्द से अभिप्राय है ?

उत्तर– बुद्धिनाश।

प्र. 12. तदेजति तन्नैजति तद् दूरे तद्वन्तिके। तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः।। मन्त्र का अभिप्राय है ?

उत्तर– आत्मा की सूक्ष्मता एवं सर्वव्यापकता।

प्र. 13. यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति।सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते।। मन्त्र किस उपनिषद् से लिया गया है ?

उत्तर– ईशावास्योपनिषद्।

प्र. 14. तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः' पंक्ति किससे उद्धृत है ?

उत्तर– ईशावास्योपनिषद्।

प्र. 15. स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रण, मस्नाविरंशुद्धमपापविद्धम्। कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथा, तथ्यतोऽर्थान् व्यद्धाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः।। मन्त्र में किसके स्वरूप का विवेचन है ?

उत्तर– परब्रह्म।

प्र. 16. अन्धं तमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते। ततो भूय इव ते तमो य उ विद्यायां रताः।। मन्त्र किस उपनिषद् से उद्धृत है ?

उत्तर– ईशावास्योपषिद्।

प्र. 17. अविद्या की उपासना करने वाला किसको प्राप्त होता है ?

उत्तर– अज्ञान स्वरूप अन्धकार में।

प्र. 18. 'विद्ययामृतमश्नुते' पंक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है ?

उत्तर– ईशावास्योपनिषद्।

प्र. 19. सम्भूति तथा असम्भूति का विवेचन किसमें प्राप्त होता है ?

उत्तर– ईशावास्योपनिषद्।

प्र. 20. अन्यदेवाहः सम्भवादन्यदाहुरसम्भवात्।इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद् विचचक्षिरे।। मन्त्र किस उपनिषद् से है ?

उत्तर– ईशावास्योपनिषद्।

प्र. 21. ईशावास्योपनिषद् किसका उपदेश देती है ?

उत्तर– ब्रह्मविद्या।

प्र. 22. हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्। तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये।। मन्त्र किस उपनिषद् से है ?

उत्तर– ईशावास्योपनिषद्।

प्र. 23. हिरण्य का अर्थ है ?

उत्तर– ज्योति।

प्र. 24. 'योऽसावसौ पुरुषः सोऽहमस्मि' मन्त्रांश किससे उद्धृत है ?

उत्तर– ईशावास्योपनिषद्।

प्र. 25. ईशोपनिषद् के अनुसार किसका स्मरण करना चाहिए ?

उत्तर– ओंम क्रतं स्मर।

प्र. 26. पूषन्नेकर्षे यम सूर्य प्राजापत्य व्यूह रश्मीन् समूह तेजः। यत्तेरूपं कल्याणतमं तत्ते पश्यामि योऽसावसौ पुरुषः सोऽहमस्मि।। मन्त्र किस उपनिषद् से उद्धृत है ?

उत्तर– ईशावास्योपनिषद्।

प्र. 27. ईशावास्योपनिषद् के अन्तिम मन्त्र में किस देवता की स्तुति है ?

उत्तर– अग्नि।

प्र. 28. वायुरनिलममृतमथेदं भस्मांतँ शरीरम्। पंक्ति किससे उद्धृत है ?

उत्तर– ईशावास्योपनिषद्।

प्र. 29. 'योऽसावसौ पुरुषः सोऽहमस्मि' इस वाक्य से किस वेदान्त वाक्य की अनुभूति हुई है ?

उत्तर– अहम् ब्रह्मास्मि।

प्र. 30. अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेय।। मन्त्र किस उपनिषद् से उद्धृत है ?

उत्तर– ईशोपनिषद्।

प्र. 31. ईशावास्योपनिषद् के ऋषि है ?

उत्तर– दध्यंग आथर्वण।

प्र. 32. कविर्मनीषी परिभूः कहा गया है ?

उत्तर– आत्मतत्व को।

प्र. 33. ते नम उक्तिं विधेम यह मन्त्रांश है ?

उत्तर– ईशावास्योपनिषद्।

प्र. 34. कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूः उक्ति है ?

उत्तर– ईशावास्योपनिषद्।

3. तैत्तिरीयोपनिषद् :

प्रश्न. 1 कृष्णयजुर्वेद से संबंधित उपनिषद् है?

उत्तर– तैत्तिरीयोपनिषद्।

प्रश्न. 2 तैत्तिरीयोपनिषद में कितनी वल्लियां है?

उत्तर– शिक्षावल्ली, ब्रह्मानंदवल्ली तथा भृगुवल्ली।

प्रश्न. 3 ऋतं वदिष्यामि। सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु। पंक्ति किस उपनिषद् से उदधृत है?

उत्तर– तैत्तिरीयोपनिषद।

प्रश्न. 4 वर्णः स्वरः। मात्राबलम्। साम संतान। इत्युक्तः शिक्षाध्यायः पंक्ति किस उपनिषद है?

उत्तर– तैत्तिरीयोपनिषद्।

प्रश्न. 5 महः है?

उत्तर– ब्रह्म।

प्रश्न. 6 सत्यंवद। धर्मंचर। स्वाध्यायान्मा प्रमदः। पंक्ति है?

उत्तर– तैत्तिरीयोपनिषद्।

प्रश्न. 7 सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म पंक्ति है?

उत्तर– तैत्तिरीयोपनिषद् (ब्रह्मवल्ली)।

प्रश्न. 8 पञ्चकोशों का वर्णन किस उपनिषद् में है?
उत्तर– तैत्तिरीयोपनिषद्।
प्रश्न. 9 वरुण-भृगु का आख्यान किस उपनिषद से है?
उत्तर– तैत्तिरीयोपनिषद्।
प्रश्न. 10 ब्रह्म का वाचक है?
उत्तर– ओंइम्।
प्रश्न. 11 रसौ वै सः अन्नं ब्रह्मः अन्नं न निनधात्। किस उपनिषद् से उदधृत है?
उत्तर– तैत्तिरीयोपनिषद्।
प्रश्न. 12 शिक्षावल्ली प्राप्त होती है।
उत्तर– तैत्तिरीयोपनिषद् में।
प्रश्न. 13 कृष्ण-यजुर्वेद की तैत्तिरीय संहिता के ब्राहमण ग्रंथ के अंतिम भाग को कहते हैं?
उत्तर– तैत्तिरीय आख्यक।
प्रश्न. 14 तैत्तिरीयारण्यक के अंतिम तीन अध्यायों को कहते हैं?
उत्तर– तैत्तिरीयोपनिषद्।
प्रश्न. 15 शिक्षावल्ली में कितने अनुवाक है?
उत्तर– 12।
प्रश्न. 16 तैत्तिरीयोपनिषद की शिक्षावल्ली के एकादश अनुवाक से शिक्षा मिलती है?
उत्तर– गृहस्थ धर्म।
प्रश्न. 17 अथ यदि ते कर्मविचिकित्सा स्यात्। ते तत्र ब्राह्मणाः सम्भशिनिः युक्ता आयुक्ताः। अलूक्षा धर्मकामाः स्युः। यथा ते तत्र वर्तेरन्। तथा तत्र वर्तेथा। अथाभ्याज्यातेषु। प्रस्तुत मंत्र है?
उत्तर– तैत्तिरीयोपनिषद्।
प्रश्न. 18 सप्तम प्रपाठक है?
उत्तर– शिक्षावल्ली।
प्रश्न. 19 अष्टम प्रपाठक है?
उत्तर– ब्रह्मानंद वल्ली।
प्रश्न. 20 नवमप्रपाठक है?
उत्तर– भृगुवल्ली।
प्रश्न. 21 सप्तम-अष्टम एवं नवं प्रपाठक को कहते है?
उत्तर– साहिति उपनिषद एवं वारुणी उपनिषद्।
प्रश्न. 22 अन्नं न मिन्द्यात् अंश है?
उत्तर– तैत्तिरीयोपनिषद्
प्रश्न. 23 तैत्तिरीयोपनिषद की शिक्षावल्ली मे कितने मंत्र है?
उत्तर– 26।
प्रश्न. 24 ब्रहमानंद वल्ली में कितने अनुवाक है?
उत्तर– 9 अनुवाक।
प्रश्न. 25 ब्रहमानंद वल्ली में कितने मंत्र है?
उत्तर– 14 मंत्र

प्रश्न. 26 भृगुवल्ली में कितने मंत्र है?
उत्तर– 14।
प्रश्न. 27 भृगुवल्ली में कितने अनुवाक है?
उत्तर– 10।
प्रश्न. 28 तैत्तिरीयोपनिषद का शांतिपाठ है?
उत्तर– ॐ शनो मित्रः शं वरूणः। शं नो भवर्त्यमा। शं न इन्द्रो बृहस्पतिः। शं नो विष्णुरुक्रमः। नमो ब्रह्मणे। नमस्ते वायो। तामेव प्रत्यक्षं ब्रहासि।
प्रश्न. 29 तैत्तिरीयारण्यक के दशम् अध्याय को कहते हैं?
उत्तर– महानारायणोपनिषद्।
प्रश्न. 30 ॐ शिक्षा का शहक्षा रूप है?
उत्तर– वैदिक।
प्रश्न. 31 अधिलोकमधिज्योतिषमधिविद्यमधिप्रजमध्यात्मम् उदघृत अंश किस उपनिषद् से है?
उत्तर– तैत्तिरीयोपनिषद।
प्रश्न. 32 भूर्भूवः सुवरिति वा एतास्तित्रतो व्याहत्तयः। तासामुहस्मैतां चतुर्थी महाचमस्यः प्रवेदयते। मंत्रांश है?
उत्तर– तैत्तिरीयोपनिषद्।
प्रश्न. 33 श्रद्धयादेयम्। अश्रद्धयादेयम्। मंत्र किस उपनिषद से है?
उत्तर– तैत्तिरीयोपनिषद्।
प्रश्न. 34 अलूक्षा धर्मकामाः स्युः। यथा ते तेषु वर्तेरन्। मंत्र है?
उत्तर– तैत्तिरीयोपनिषद्।
प्रश्न. 35 आकाशाद्वायुः वापोरग्निः। अग्नेरापः। अभ्यदयः पृथिवी मंत्र है?
उत्तर– तैत्तिरीयोपनिषद्।
प्रश्न. 36 तैत्तिरीयोपनिषद् में द्वितीयवल्ली है?
उत्तर– ब्रहमानानन्द।
प्रश्न. 37 कुल व्याहततियां कितनी है?
उत्तर– भूः– पृथिवीलोक–ऋग्वेद–अग्नि–वाणी।
भुवः–अंतरिक्षलोक–सामवेद–वायु–त्वक्।
स्वः–स्वर्गलोक–यजुर्वेद–सूर्य–चक्षु।
महः–आदित्यलोक–ब्रह्म–चंद्रमा–मन।
प्रश्न. 38 अन्योऽन्तर आत्माप्राणमयः। तेनैष पूर्णः। स वा एष पुरुषविध एव। यह मंत्रांश है?
उत्तर– तैत्तिरीयोपनिषद्।
प्रश्न. 39 भृगु के प्रति वरुण उपदेश किस उपनिषद् में है?
उत्तर– तैत्तिरीयोपनिषद्।
प्रश्न. 40 शीक्षां व्याख्यास्यामः। वर्णः स्वरः। मात्रा बलम्। साम संतानः। इत्युक्तः शीक्षाध्याय। मंत्रांश है?
उत्तर– तैत्तिरीयोपनिषद्।
प्रश्न. 41 सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म। यो वेद निहितं गुहायां परमे व्योमन्। मंत्रांश है?
उत्तर– तैत्तिरीयोपनिषद्।

प्रश्न. 42 तैत्तिरीयोपनिषद् की भृगुवल्ली दशम अनुवाक में किसका फल है?
उत्तर– अतिथिसेवा।
प्रश्न. 43 प्राणं देवा अनुप्राणन्ति। मनुष्याः पशवश्च ये। प्राणो हि भूतानामायुः। मंत्रांश है?
उत्तर– तैत्तिरीयोपनिषद्।
प्रश्न. 44 तैत्तिरीयोपनिषद की भृगुवल्ली के द्वितीय अनुवाक में किसका वर्णन है?
उत्तर– अन्न की महत्ता का।
प्रश्न. 45 अन्नं न निन्द्यात्। तद्व्रतम। प्राणो वा अन्नम्। शरीरमन्नादम्। प्राणे शरीरं प्रतिष्ठितम्। मंत्र है?
उत्तर– तैत्तिरीयोपनिषद्-भृगुवल्ली।
प्रश्न. 46 आपो वा अन्नम् किस उपनिषद् का वाक्य है?
उत्तर– तैत्तिरीयोपनिषद्।
प्रश्न. 47 अहमन्नमहमन्नमहमन्नम्। अहम् ३५ मन्नादो ३ हमन्नादः। अहंश्लोक कृद हश्लोक कृत। मंत्रांश है?
उत्तर– तैत्तिरीयोपनिषद्।
प्रश्न. 48 अन्नवानन्नादो भवति। महान्भवति प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन महान कीर्त्या। उपर्युक्त मंत्र है?
उत्तर– तैत्तिरीयोपनिषद्।
प्रश्न. 49 तैत्तिरीयोपनिषद में आत्मा को कहा गया है?
उत्तर– विज्ञानमय।
प्रश्न. 50 भोमिति ब्रह्म। ओमितीदंसर्वम्। ओमित्येतदनुकृतिर्हस्म वा अप्यो श्रावये व्यान्श्रावयन्ति। मंत्रांश है?
उत्तर– तैत्तिरीयोपनिषद्।
प्रश्न. 51 वेदमनूच्ययाचार्योऽन्तेवासिन मनुशास्ति। सत्यंवद। धर्मंचर। स्वाध्यायान्मा प्रमदः। उद्धृत अंश है?
उत्तर– तैत्तिरीयोपनिषद।
प्रश्न. 52 मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव। अतिथिदेवो भव।
श्रद्धया देयम्। अश्रध्दयादेयम्। ह्रियादेयम। ह्रियादेयम्। भियादेयम। उदधृत अंश है?
उत्तर– तैत्तिरीयोपनिषद्।
प्रश्न. 53 अन्नमयकोश, प्राणमयकोश, मनोमयकोश, विज्ञानमयकोश, आनंदमयकोश इन पंचकोशों का वर्णन तैत्तिरीयोपनिषद् की किस वल्ली में मिलता है?
उत्तर– ब्रह्मानंदवल्ली।
प्रश्न. 54 ब्रह्मप्राप्ति के मुख्य साधन पंचकोशों का विवेक वरुण तथा भृगु के संवाद किस उपनिषद् में है?
उत्तर– तैत्तिरीयोपनिषद (भृगुवल्ली)।
प्रश्न. 55 वह उपनिषद जिसमें भाषा विज्ञान का उल्लेख है?
तैत्तिरीयोपनिषद्।
प्रश्न. 56 शिक्षामाहात्म्य का वर्णन है?
उत्तर– तैत्तिरीयोपनिषद् की शिक्षावल्ली।
प्रश्न. 57 आकाशरीरं ब्रह्म। अन्नं ब्रह्म उपासते। रसो वै सः। यह किस उपनिषद से है?
उत्तर– तैत्तिरीयोपनिषद।
प्रश्न. 58 शिक्षा माहात्म्य का वर्णन है?
उत्तर– तैत्तिरीयोपनिषद की शिक्षावल्ली।

प्रश्न. 59 वरुण द्वारा अपने पुत्र भृगु को उपदेश किस वल्ली में दिया गया है?
उत्तर– भृगुवल्ली।
प्रश्न. 60 भूरिति वा अयंलोकः। भूरिति वै प्राणः। मंत्रांश है?
उत्तर– तैत्तिरीयोपनिषद्।
प्रश्न. 61 सर्वौषध किसे कहा है?
उत्तर– अन्न को।
प्रश्न. 62 प्रश्नों का उत्तर एवं ब्रहमोपदेश किसे दिया गया?
उत्तर– भृगु।
प्रश्न. 63 दादाराज्ञ युद्ध हुआ था?
उत्तर– सुदास के साथ।
प्रश्न. 64 निर्मल बुद्धि में किसका दर्शन होता है?
उत्तर– आत्मतत्व का।
प्रश्न. 65 अथ शीक्षां व्याख्यास्यामः इति उक्तिः कुतः उदधृता?
उत्तर– तैत्तिरीयोपनिषद्।

4. केनोपनिषद् :

प्रश्न. 1 सामवेद के उपनिषद् ग्रंथ है?
उत्तर– केनोपनिषद् एवं छांदोग्यपनिषद्।
प्रश्न. 2 केनोपनिषद का प्रतिपाद्य विषय है?
उत्तर– ब्रह्मविद्या।
प्रश्न. 3 ॐ आप्यायन्तु ममाङ्गानि वाक् प्राणश्चक्षुः उपर्युक्त मंगलाचरण है?
उत्तर– केनोपनिषद्।
प्रश्न. 4 ॐ केनेषितं पतति प्रेषितं मनः संबंधित उपनिषद् है?
उत्तर– केनोपनिषद्।
प्रश्न. 5 केनोपनिषद् किसमें विभक्त है?
उत्तर– 4 खंडों में।
प्रश्न. 6 केनोपनिषद् किस ब्राह्मण ग्रन्थ से सम्बन्धित है?
उत्तर– तलवकार ब्राह्मण।
प्रश्न. 7 तदेव ब्रह्मं त्वं विद्धि नेदं यदिद मुपासते पंक्ति किस ग्रंथ से है?
उत्तर– केनोपनिषद्।
प्रश्न. 8 केनोपनिषद् के प्रथम खंड में कितनी ऋचाएं हैं?
उत्तर– 8।
प्रश्न. 9 केनोपनिषद् के प्रथम खंड में कितने प्रश्नों का वर्णन है?
उत्तर– 4।
प्रश्न. 10 ब्रह्म के रहस्यमय स्वरूप का विवेचन किस खंड में मिलता है?
उत्तर– द्वितीय खंड।

प्रश्न. 11 उमाहैमवती आख्यान किस उपनिषद् में प्राप्त होता है?
उत्तर– केनोपनिषद्।
प्रश्न. 12 केनोपनिषद् के द्वितीय खंड में कितने मंत्र है?
उत्तर– 5।
प्रश्न. 13 केनोपनिषद् में वर्णित दिव्य यक्ष कौन थे?
उत्तर– परब्रह्म परमेश्वर।
प्रश्न. 14 इह चेदवेदीयदधसत्यमस्ति न चेदिहावेदी न्महती विनष्टिः। भूतेषु भूतेषु विचित्य धीराः प्रेत्यास्माल्लोका दमृता भवन्ति। प्रस्तुत मंत्र किससे उद्धृत है?
उत्तर– केनोपनिषद्।
प्रश्न. 15 ब्रह्म विद्या की प्राप्ति किससे संभव है?
उत्तर– तप, दम एवं कर्म।
प्रश्न. 16 परमात्मस्वरूप संपूर्ण जगत है, यह किस उपनिषद से है?
उत्तर– केनोपनिषद्।
प्रश्न. 17 विधायाविन्तेऽमृतम किस उपनिषद का वाक्य है?
उत्तर– केनोपनिषद्।
प्रश्न. 18 पक्षरूप धारी पर ब्रह्म का आख्यान किस उपनिषद में है?
उत्तर– केनोपनिषद्।
प्रश्न. 19 उमा का आख्यान किस उपनिषद में है?
उत्तर– केनोपनिषद्।
प्रश्न. 20 यक्षोपाख्यान किस उपनिषद का विषय है?
उत्तर– केनोपनिषद्।
प्रश्न. 21 'तपोदमः कर्मेति प्रतिष्ठा वेदाः सर्वाग्नि सत्यमायतनम् यह किस उपनिषद से है?
उत्तर– केनोपनिषद्।
प्रश्न. 22 सामवेद केनोपनिषद की किस शाखा से है?
उत्तर– जैमिनीय शाखा।
प्रश्न. 23 केनोपनिषद् को अन्य किस नाम से जाना जाता है?
उत्तर– 1. ब्राह्मणोपनिषद जैमिनीय भाषा, 2. तलवकारोपनिषद्
प्रश्न. 24 तलवकार उपनिषद् है?
उत्तर– केनोपनिषद्।
प्रश्न. 25 यस्यामतं तस्यमतं, मतं यस्य न वेद सः। अविज्ञातं विजानतां विज्ञातमपि जानताम्।। किस उपनिषद् से है?
उत्तर– केनोपनिषद्।
प्रश्न. 26 इह चेदवेदीदथ सत्यनस्ति, न चेदिहावेदी-महती विनष्टि संबंधित है?
उत्तर– केनोपनिषद्।

5. बृहदारण्यकोपनिषद्

प्रश्न. 1 बृहदारण्यकोपनिषद् से संबंधित वेद है?
उत्तर– शुक्ल यजुर्वेद।

प्रश्न. 2 बृहदकाय उपनिषद् है?
उत्तर– बृहदारण्यकोपनिषद्।
प्रश्न. 3 बृहदारण्यकोपनिषद् में कितने कांड है?
उत्तर– 3 कांड, मधुकांड, याज्ञवल्क्यकांड, खिलकांड।
प्रश्न. 4 आप एवेदमग्न आसुस्ता आपः सत्यमसृजत पंक्ति उदधृत है।
उत्तर– बृहदारण्यकोपनिषद्।
प्रश्न. 5 तदेतत सत्यक्षरम त्र्यक्षरम। स इत्येकमक्षरम्। तीत्येकक्षरम् यमित्येकक्षरम्। प्रथमोत्तमे अक्षरे सत्यम्। मध्यतोऽन्नृतम्। तदेत मृतमुभपतः। सत्येन परिग्रहीतं सत्यभूयमेव भवति। किस उपनिषद् से है?
उत्तर– बृहदारण्यकोपनिषद्।
प्रश्न. 6 बृहदारण्यकोपनिषद् में किस-किस के संवाद वर्णित हैं?
उत्तर– गार्ग्य-अजातशत्रु संवाद,
याज्ञवल्क्य-मैत्रेयी संवाद,
याज्ञवल्क्य गार्गी संवाद तथा
जनक-याज्ञवल्क्य संवाद।
प्रश्न. 7 बृहदारण्यकोपनिषद् में कितने अध्याय है?
उत्तर– 6।
प्रश्न. 8 आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यों निदिध्यासितव्यो उद्धृत मन्त्रांश हैं?
उत्तर– बृहदारण्यकोपनिषद्।
प्रश्न. 9 अश्वमेघ विद्या का वर्णन किस उपनिषद् में प्राप्त होता है?
उत्तर– बृहदारण्यकोपनिषद्।
प्रश्न. 10 उषा वा अश्वस्यमेध्यस्य शिरः यहां अश्व किसका वाचक है?
उत्तर– शब्द शक्ति एवं गति।
प्रश्न. 11 जातमभिव्याददात्स भाण करौत्सैव वागभगत्। यहां भाण किसका वाचक हैं?
उत्तर– वाणी।
प्रश्न. 12 उद्गीथ विद्या का वर्णन प्राप्त होता है? उदगीथ का अर्थ है?
उत्तर– बृहदारण्यकोपनिषद् / ओॐम (प्राण)।
प्रश्न. 13 अपास्य/आंङ्रिस है?
उत्तर– प्राण, दूर।
प्रश्न. 14 ब्रह्माणस्पति है?
उत्तर– प्राण।
प्रश्न. 15 असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योर्तिर्गमंय, पंक्ति है?
उत्तर– बृहदारण्यकोपनिषद्।
प्रश्न. 16 वसु, रुद्र, आदित्य, विश्वदेवा और मरूत देवता किस वर्णन से है?
उत्तर– वैश्य।
प्रश्न. 17 पूषा देवता किस वर्ण के है?
उत्तर– शूद्र वर्ण।

प्रश्न. 18 मनएवास्यात्मा वाग्जायाप्राणः प्रजाचक्षुर्मानुषं वित्तम् उपर्युक्त है?
उत्तर– बृहदारण्यकोपनिषद्।
प्रश्न. 19 बृहदारण्यकोपनिषद् के अनुसार अन्नत्रय है?
उत्तर– मन, वाणी, प्राण।
प्रश्न. 20 बृहदारण्यकोपनिषद् के अनुसार लोक कितने हैं?
उत्तर– मनुष्य, पितृ एवं देव।
प्रश्न. 21 जीवात्मा की कितनी अवस्थाएं है?
उत्तर– 6।
प्रश्न. 22 पुरीशय है?
उत्तर– पुरुष।
प्रश्न. 23 अजातशत्रु बालाकि संवाद किस उपनिषद् में प्राप्त होता है?
उत्तर– बृहदारण्यकोपनिषद्।
प्रश्न. 24 याज्ञवल्क्य के अनुसार तीन स्त्रोत है?
उत्तर– पुरोनुवाक्या, याज्या, शस्या।

अन्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न. 1 वेद का अंतिम भाग है?
उत्तर– उपनिषद्।
प्रश्न. 2 उपनिषद् है?
उत्तर– वेदांत।
प्रश्न. 3 आचार्य शंकर ने उपनिषदों को कहा है?
उत्तर– ब्रह्म विद्या।
प्रश्न. 4 उपनिषदों का प्रतिपाद्य विषय है?
उत्तर– आत्म विद्या।
प्रश्न. 5 प्रामाणिक उपनिषदें कितनी है?
उत्तर– 10।
प्रश्न. 6 उपनिषद् शब्द का अर्थ है?
उत्तर– गुरु के समीप बैठकर प्राप्त किया गया ज्ञान।
प्रश्न. 7 आचार्य शंकर के अनुसार षद्लृ धातु के कितने अर्थ है?
उत्तर– तीन (विशरण, गति, अवसादन)।
प्रश्न. 8 मुक्तिकोपनिषद् में कितनी उपनिषदों का नामोल्लेख है?
उत्तर– 108।
प्रश्न. 9 उपनिषदों का रचनाकाल माना गया है?
उत्तर– 2500 ई. पूर्व।
प्रश्न. 10 सर्वानर्थकरं संसारं विनाशयति, संसार कारण भूतां अविद्यां च शिथिलयति, ब्रह्म च गमयति इति किमस्ति?
उत्तर– उपनिषद्।

प्रश्न. 11 ऋग्वेदीय उपनिषद् है?
उत्तर– ऐतरेय, कौषीतकि।
प्रश्न. 12 प्रज्ञान है?
उत्तर– ब्रह्म।
प्रश्न. 13 ऐतरेयोपनिषद् में कितने अध्याय व खंड है?
उत्तर– तीन अध्याय एवं पांच खंड।
प्रश्न. 14 ऐतरेयोपनिषद् का शांति पाठ है?
उत्तर– ॐ वाङ् में मनसि प्रतिष्ठिता।
प्रश्न. 15 कौषीतकि उपनिषद् का प्रमुख प्रतिपाद्य विषय है?
उत्तर– प्राण एवं प्राणोपासना/प्रतिकोपासना।
प्रश्न. 16 मृत्यु के पश्चात आत्मा के जाने वाले मार्गों का वर्णन किस उपनिषद् में है?
उत्तर– कौषीतकि उपनिषद् (देवयान, पितृयान मार्ग)।
प्रश्न. 17 कौषीतकि उपनिषद् में कितने अध्याय है?
उत्तर– 4।
प्रश्न. 18 यजुर्वेद संहिता के कुल कितने उपनिषद है?
उत्तर– 7।
प्रश्न. 19 शुक्ल यजुर्वेदीय उपनिषद कौन-कौन से है?
उत्तर– ईशावास्योपनिषद् तथा बृहदारण्यकोपनिषद्।
प्रश्न. 20 श्वेताश्वतरऋषि प्रणीत उपनिषद् है?
उत्तर– श्वेताश्वेतरोपनिषद्।
प्रश्न. 21 केनोपनिषद् में कितने प्रश्नों का वर्णन है?
उत्तर– 4।
प्रश्न. 22 केनेषितं पतति प्रेषितं मनः। से नामांकित उपनिषद् है?
उत्तर– केनोपनिषद्।
प्रश्न. 23 ॐ आप्यायन्तु ममाङानि वाक्प्राण मंगलाचरण किस उपनिषद् से है?
उत्तर– केनोपनिषद्।
प्रश्न. 24 सर्वखल्विदं ब्रह्म किस उपनिषद् से है?
उत्तर– छान्दोग्योपनिषद्।
प्रश्न. 25 ऐतदात्म्यमिदं सर्वम् स आत्मा तत्वमसि श्वेतकेतो मंत्रांश किस उपनिषद् से है?
उत्तर– छांदग्योपनिषद्।
प्रश्न. 26 सामवेद की तलवकार शाखा से संबंधित उपनिषद् है?
उत्तर– छान्दोग्योपनिषद्।
प्रश्न. 27 सत्यकाम जाबाल की कथा किस उपनिषद् में है?
उत्तर– छान्दोग्योपनिषद्।
प्रश्न. 28 इन्द्र एवं विरोचन की कथा किस उपनिषद् में प्राप्त होती है?
उत्तर– छान्दग्योपनिषद्।

प्रश्न. 29 उमा-हेमवती आख्यान किस उपनिषद् में प्राप्त होता है?
उत्तर– केनोपनिषद्।

प्रश्न. 30 नारद सत्न कुमार आख्यान किस उपनिषद् में प्राप्त होता है?
उत्तर– छान्दग्योपनिषद्।

प्रश्न. 31 यो वै भूमा तदमृतम् अथ यदल्पं तन्मर्त्यम् किस उपनिषद् से संबंधित उपनिषद् है?
उत्तर– छान्दग्योपनिषद्।

प्रश्न. 32 अर्थर्ववेदीय पैप्पलाद शाखा से संबंधित उपनिषद् है?
उत्तर– प्रश्नोपनिषद्।

प्रश्न. 33 प्रश्नोपनिषद् में कितने खंड है?
उत्तर– छः।

प्रश्न. 34 प्रश्नोपनिषद् में कितने प्रश्नों का विश्लेषण है?
उत्तर– छः।

प्रश्न. 35 मुण्डकोपनिषद किसमें विभक्त है?
उत्तर– मुण्डक।

प्रश्न. 36 वेदांत शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम किस उपनिषद् में प्राप्त होता है?
उत्तर– मुण्डकोपनिषद्।

प्रश्न. 37 षड्वेदाङ्गों का वर्णन सर्वप्रथम किस उपनिषद् में प्राप्त होता है?
उत्तर– मुण्डकोपनिषद्।

प्रश्न. 38 सत्यमेव जयते किस उपनिषद में प्राप्त होता है?
उत्तर– मुण्डकोपनिषद्।

प्रश्न. 39 'उद्गीथ' प्रयुक्त हुआ है?
उत्तर– ओउम्।

प्रश्न. 40 कस्मिन्नु भगवो विज्ञाते सर्वमिदं विज्ञातं भवति इति। किस उपनिषद् से है?
उत्तर– मुण्डकोपनिषद्।

प्रश्न. 41 भिद्यते हृदयग्रंथिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः।
क्षीयन्ते चास्यकर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे।। मंत्रांश किस उपनिषद में है?
उत्तर– मुण्डकोपनिषद्।

प्रश्न. 42 द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्ष परिषस्व जाते। तपोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति।
मंत्र किस उपनिषद से है?
उत्तर– मुण्डकोपनिषद्।

प्रश्न. 43 ॐ भद्र कर्णेभिः श्रृणुयाम देवाः किस उपनिषद् का मंगलचरण है?
उत्तर– मुण्डकोपनिषद्।

प्रश्न. 44 चतुष्पाद आत्मा का विवेचन किस उपनिषद् है?
उत्तर– माण्डूक्योपनिषद्।

प्रश्न. 45 माण्डूक्योपनिषद के अनुसार भूत-भविष्य-वर्तमान संसार है?
उत्तर– ओउम्

प्रश्न. 46 परा और अपरा विद्या का वर्णन किस उपनिषद् में है?।
उत्तर– मुण्डकोपनिषद्।

प्रश्न. 47 तमेव भान्तमनु भाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति। किस उपनिषद से है?
उत्तर– मुण्डकोपनिषद्।

वेदांग ग्रन्थ

वेदस्य अंगानि इति वेदांग अर्थात् वेदो के अंग को वेदांग कहते है। वेदांग का अर्थ है- वेद के अर्थ ज्ञान के लिए सहायक शास्त्र। वैदिक संहिता भारतीय साहित्य एवं संस्कृति का मूल उद्गम है। उपनिषदों में दो प्रकार की विधाओं का उल्लेख किया गया है–परा और अपरा। अपराविद्या के अन्तर्गत ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद सहित षड् वेदागों का उल्लेख है। वेदांग को वेदों के उपग्रन्थ भी कहते हैं।

(1) **शिक्षा :** वेदागों में सर्वप्रथम पठित अंग शिक्षा है। शिक्षा को वेद पुरुष का प्राण कहा गया है **शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य।** शिक्षा का अर्थ है-शिक्षण अर्थात् उच्चारण की शिक्षा देना। तैत्तिरीयोपनिषद् में कहा गया है कि शिक्षा के 6 अंग है–वर्ण, स्वर, मात्रा, बल, साम और सन्तान। ये निम्न है-

वर्ण -आकार आदि अक्षरों को वर्ण कहते है। शिक्षा ग्रंथों में 63 या 64 वर्णों का उल्लेख है।

स्वर–यहाँ पर स्वर से तात्पर्य उदात्त, अनुदात्त और स्वरित से है।

मात्रा–स्वरों के उच्चारण में लगने वाले समय को मात्रा कहते है। मात्राएं तीन होती है-ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत।

साम–वर्णों के दोषरहित एवं शुद्ध माधुर्य आदि गुणों से समन्वित उच्चारण को साम कहते है।

सन्तान–संतान का अर्थ संहिता है। 'पद प्रकृतिः संहिता' अर्थात पदों की अतिशय समीपता को संहिता कहते है।

बल–वर्णों के उच्चारण स्थान व प्रयत्न को बल कहते है।

(2) **व्याकरण : मुखं व्याकरणं स्मृतम्** अर्थात् वेद पुरुष का मुख व्याकरण हैं। जिसके द्वारा पदों की प्रकृति प्रत्यय का विवेचन किया जाता है, उसे व्याकरण कहते हैं। व्याकरण के पतंजलि ने पांच प्रयोजन बताए है–रक्षा, ऊह, आगम, लघु और असन्देह।

रक्षा–लोप, आगम और वर्ण विकार को जानने वाला ही वेदों की शुद्ध रूप से रक्षा कर सकता है। अतः वेदों की रक्षा के लिए व्याकरण का अध्ययन आवश्यक है।

ऊह–ऊह का अर्थ यथास्थान विभक्ति, लिंग, वचन, प्रत्यय आदि का परिवर्तन अथवा रूपान्तरण होता है।

आगम–आगम का अर्थ है वेद या श्रुति। श्रुति कहती है कि ब्राह्मण को फल विशेष की कामना से रहित होकर वेदांगों सहित वेद का अध्ययन करना चाहिए। इसके लिए व्याकरण का अध्ययन भी आवश्यक है।

लघु–जिसके द्वारा शब्दों का सरलता से थोड़े ही समय में ज्ञान हो जाता है, वह लघु है । अतः व्याकरण का अध्ययन आवश्यक है।

असन्देह–वैदिक शब्दों के सम्बन्ध में उत्पन्न संदेह का निराकरण व्याकरण के द्वारा ही होता है। अतः व्याकरण का अध्ययन आवश्यक है।

शाकटायन के अनुसार व्याकरण शास्त्र का प्रथम उपदेश ब्रह्मा ने बृहस्पति को दिया था। पाणिनि से पूर्व प्राचीनतम व्याकरण ऐन्द्र व्याकरण था। पाणिनि के आविर्भाव के पश्चात् संस्कृत व्याकरण का रूप स्थिर हो गया और वेदांग व्याकरण का प्रतिनिधित्व करने वाला आज एक मात्र ग्रंथ पाणिनि व्याकरण है। यह 8 अध्यायों में विभक्त है। इसका नाम अष्टाध्यायी है। इसके पश्चात् वररुचि कात्यायन ने वार्तिकों की रचना की तथा महर्षि पतंजलि ने महाभाष्य लिखा था। यह तीनों मुनित्रयी के नाम से विख्यात हुए।

(3) **निरुक्त :** वेद के छः अंगों में निरुक्त का महत्वपूर्ण स्थान है। निरुक्त निघण्टु की टीका है। निघण्टु में वेद के कठिन शब्दों का संकलन हैं। आचार्य यास्क ने निघण्टु पर निरुक्त नामक भाष्य लिखा है। निरुक्त के रचयिता आचार्य यास्क है। निघण्टु में शब्दों का निर्वचन किया गया है। इनका समय 700 ई.पू. के आस पास माना गया हैं। निरुक्त में तीन काण्ड 12 अध्याय है। निरुक्त के प्रथम काण्ड को नैघण्टुककाण्ड, द्वितीय काण्ड को नैगमकाण्ड तथा तृतीय काण्ड को दैवतकाण्ड कहते है। इसमें दो अध्याय परिशिष्ट है। निरुक्त के प्रतिपाद्य विषय पांच है–वर्णागम, वर्णविपर्यय, वर्णविकार वर्णनाश तथा धातुओं के अनेक अर्थों में प्रयोग। निरुक्त को वेद पुरुष का कान कहा गया है–**निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।**

(4) **छन्द :** '**छन्दःपादौ तु वेदस्य** अर्थात् छन्द वेद पुरुष के चरण कहे गए हैं। छन्द आचार्य पिगंल द्वारा लिखे गए छन्दसूत्रम् में मिलते है। जिसके आठ आध्यायों में वैदिक और लौकिक छन्दों का वर्णन किया गया है। छन्द शब्द छद् धातु से बनता है, जिसका अर्थ है- आच्छादित करना। **यमाताराजभानसलगम्** यह छन्द सूत्र है।

(5) **ज्योतिष :** वेद के षड् अंगों में ज्योतिष का महत्वपूर्ण स्थान है। पाणिनि ने ज्योतिष को वेद पुरुष का नेत्र कहा है- **ज्योतिषामयनम्।** वेदांगज्योतिष भारतीय ज्योतिषशास्त्र का प्राचीनतम ग्रंथ है। इसके रचयिता आचार्य लगध है। इसके दो पाठ मिलते है। एक ऋग्वेद से आर्चज्योतिष, जिसमें 36 श्लोक है। दूसरा यजुर्वेद से याजुष्ज्योतिष, जिसमें 44 श्लोक है। वेदांगज्योतिष के प्रथम आचार्य ब्रह्मा है। वेदांगज्योतिष का रचनाकाल 1400 ई.पू. माना गया है।

(6) **कल्पसूत्र :** वैदिक वाङ्मय में कल्पसूत्रों का महत्वपूर्ण स्थान है। कल्प शब्द का अर्थ है- वेद विहित कर्मो का क्रमपूर्वक कल्पना करने वाला शास्त्र। सूत्र शब्द का अर्थ है- संक्षेप। कल्प सूत्र में सम्पूर्ण धार्मिक नियमों तथा यज्ञ विधान के नियमों को संक्षेप में प्रतिपादित किया गया है। सूत्र साहित्य का रचनाकाल 1500 ईसा पूर्व के मध्य माना जाता है। कल्प चार प्रकार के होते है- श्रौतसूत्र, ग्रह्मसूत्र, धर्मसूत्र तथा शुल्वसूत्र।

श्रौतसूत्र–वैदिक संहिता में वर्णित यज्ञादि विधानों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करने वाले सूत्रों को श्रौतसूत्र कहते है।

ऋग्वेद के दो श्रौतसूत्र है -

(क) आश्वलायन (ख) शांखायन।

यजुर्वेद के सात श्रौतसूत्र है -

(क) कात्यायन (ख) बोधायन (ग) आपस्तम्ब
(घ) हिरण्यकेशी (ङ) वैखानस (च) भारद्वाज
(छ) मानव।

सामवेद के श्रौत्रसूत्र है -

(क) आर्षेय (ख) लाट्यायन (ग) द्राह्यायन (घ) जैमिनीय

अथर्ववेद के श्रौतसूत्र है -

(क) वैतान श्रौत।

गृह्यसूत्र–गृहस्थ जीवन से सम्बन्धित धार्मिक अनुष्ठानों का गृह्य सूत्र में विवेचन किया गया है।

धर्मसूत्र–सामाजिक जीवन के नियमों, रीति रिवाजों, धार्मिक अनुष्ठानों एवं राजा के कर्त्तव्यों का इसमें विवेचन किया गया है।

शुल्वसूत्र–यज्ञ स्थान और वेदियों के निर्माण विधि का विशिष्ट रूप से प्रतिपादन शुल्व सूत्रों के अन्तर्गत किया गया है। यह भारतीय ज्यामितीय शास्त्र का प्राचीनतम ग्रंथ माना जाता है।

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्र. 1 वेदों के स्वरूप को जानने में जो उपयोगी शास्त्र है, वह है ?
उत्तर वेदांग।
प्र. 2 वेदों के कितने अंग है ?
उत्तर षड् अंग।
प्र. 3 वेदांगों की उत्पत्ति किस काल में हुई ?
उत्तर उपनिषद् काल।
प्र. 4 वेदांगों का सर्वप्रथम वर्णन, नाम तथा क्रम किस उपनिषद् में प्राप्त होता है ?
उत्तर मुण्डकोपनिषद्।
प्र. 5 वेदांगों की शैली है ?
उत्तर सूत्र शैली।
प्र. 6 शिक्षा के कितने अंग है ?
उत्तर 6 अंग।
प्र. 7 वेद पुरुष का घ्राण है ?
उत्तर शिक्षा।
प्र. 8 संहिता के पदों की अत्यधिक समीपता को शिक्षा का कौनसा अंग कहा जाता है ?
उत्तर संतान।
प्र. 9 शिक्षा के अंगों का उल्लेख किस उपनिषद् में प्राप्त होता है ?
उत्तर तैतिरीयोपनिषद् में।
प्र. 10 वेद पुरुष का मुख है ?
उत्तर व्याकरण।
प्र. 11 वह शास्त्र जिसमें शब्दों के प्रकृति प्रत्ययों का विवेचन किया जाता है, वह है ?
उत्तर व्याकरणशास्त्र।
प्र. 12 व्याकरण महाभाष्य के रचयिता है ?
उत्तर पतंजलि।
प्र. 13 पतंजलि ने व्याकरण के कितने प्रयोजन बतायें है ?
उत्तर 5 प्रयोजन।
प्र. 14 वृषभ किसे कहते है ?
उत्तर व्याकरण।
प्र. 15 सर्वप्राचीन व्याकरण है ?
उत्तर ऐन्द्र व्याकरण।
प्र. 16 व्याकरण के कितने सम्प्रदाय है ?
उत्तर आठ सम्प्रदाय।
प्र. 17 निरुक्त के रचयिता है ?
उत्तर आचार्य यास्क।
प्र. 18 निरुक्त किसके निकट है ?
उत्तर वेदों।

प्र. 19 निरुक्त किसके ऊपर लिखी गई रचना है ?

उत्तर निघण्टु के ऊपर।

प्र. 20 निघण्टु का अर्थ है ?

उत्तर वैदिक शब्दों का कोश।

प्र. 21 महाभारत के शान्तिपर्व के अनुसार निघण्टु के प्रणेता बताए गये है ?

उत्तर प्रजापति ब्रह्मा।

प्र. 22 निरुक्त कितने काण्ड व अध्यायों में विभक्त है ?

उत्तर 3 काण्ड व 12 अध्यायों।

प्र. 23 निघण्टु में कितने अध्याय परिशिष्ट है ?

उत्तर 2 अध्याय।

प्र. 24 निरुक्त में शब्दों की कौनसी विधि स्वीकृत है ?

उत्तर निर्वचन विधि।

प्र. 25 यास्क ने कितने प्रकार के देवता व स्थान माने है ?

उत्तर 33 देवता व 3 स्थान।

प्र. 26 निरुक्त वेद पुरुष का क्या है ?

उत्तर श्रोत (कान)।

प्र. 27 छन्दःपादौ तु वेदस्य अर्थात् छन्द है ?

उत्तर चरण।

प्र. 28 छन्द वेदांग का प्रतिनिधि ग्रंथ है ?

उत्तर छन्द सूत्र।

प्र. 29 छन्द शास्त्र के आचार्य है ?

उत्तर आचार्य पिगंल।

प्र. 30 समस्त छन्द विचार किस सूत्र में निहित है ?

उत्तर यमाताराजभानसलगम् छन्दसूत्र में।

प्र. 31 छन्द शास्त्र में कितने अध्याय है ?

उत्तर 8 अध्याय।

प्र. 32 वेदों में कितने छन्द है ?

उत्तर 21 छन्द।

प्र. 33 वेद पुरुष का नेत्र है ?

उत्तर ज्योतिष।

प्र. 34 ज्योतिषशास्त्र के प्रणेता है ?

उत्तर लगध मुनि।

प्र. 35 लगध के ग्रंथों का सम्बन्ध किन किन वेदों से है ?

उत्तर ऋग्वेद और यजुर्वेद से।

प्र. 36 आर्च ज्योतिष किस वेद से सम्बन्धित है ?

उत्तर ऋग्वेद से।

प्र. 37 नक्षत्रों की संख्या है ?

उत्तर 27।

प्र. 38 वेद पुरुष का हाथ है ?

उत्तर कल्प।

प्र. 39 मैक्डॉनल ने गणित का प्राचीनतम सूत्र किसे माना है ?

उत्तर शुल्वसूत्र।

प्र. 40 किस सूत्र में वेद निर्माण की प्रक्रिया मिलती है ?

उत्तर शुल्वसूत्र में।

प्र. 41 धर्मसूत्रों में कौनसा प्राचीनतम है ?

उत्तर गौत्तम धर्मसूत्र।

प्र. 42 16 संस्कार किसके विषय है ?

उत्तर गृह्यसूत्र।

याज्ञवल्क्य स्मृति

धर्मशास्त्र का दूसरा महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ याज्ञवल्क्य स्मृति है। जिसका समय 200-300 ई. के मध्य माना जाता है। इसमें आचार अध्याय, व्यवहार अध्याय तथा प्रायश्चित अध्याय है। इसमें 1000 के लगभग श्लोक है।

प्रथम अध्याय में संस्कारों का विस्तृत विधान है। ब्रह्मचारी, गृहस्थ तथा राजा के कर्त्तव्यों का निरूपण, भक्ष्य-अभक्ष्य विधान, मांस प्रयोग नियम तथा श्राद्ध का भी विवेचन है।

द्वितीय अध्याय में न्याय शासन के वर्णनक्रम में विवादों के निपटारें का वर्णन है। इसमें न्यायालय की सारी व्यवस्था वर्णित है।

तृतीय अध्याय में मृतक कर्म, अशौच, वानप्रस्थ, धर्म, मोक्ष, आत्मज्ञान का साधन, प्रायश्चित द्वारा पापों के निराकरण नरक इत्यादि का वर्णन है।

याज्ञवल्क्य स्मृति के प्रथम अध्याय में मुनियों द्वारा योगिराज याज्ञवल्क्य की पूजा करके कहा गया कि आप वर्णाश्रम तथा राजा आदि के धर्मों को सम्पूर्ण रूप से बताइये तब याज्ञवल्क्य ने बताया कि मिथिला में स्थित उन योगिराज ने क्षणमात्र ध्यान कर मुनियों से कहा जिस देश में कृष्ण मृग चरता है या विचरण करता है उस देश में प्रचलित धर्मों को आप सुने। पुराण, न्यायशास्त्र, मीमांसा, धर्मशास्त्र, वेदांग तथा वेद ये 14 विद्यायें है। श्रुति, स्मृति, सदाचार और आत्मसन्तुष्टि ये धर्म के मूल है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये चार वर्ण है। इनमें प्रथम 3 द्विज है। इनका गर्भाधान से अंत्येष्टि तक सभी क्रियाएं वैदिक संस्कार से होती है। गर्भाधान संस्कार ऋतुकाल (निषेक संस्कार) में, पुसंवन संस्कार गर्भ संचलन से पूर्व, सीमन्ततोनयन संस्कार, (छठे या आठवें महिने में) बालक के उत्पन्न होने पर जातकर्म संस्कार, जन्म के 11 वें दिन नामकरण संस्कार, चतुर्थ महिने में निष्क्रमण संस्कार, छठे महिने में अन्नप्राशन संस्कार और कुलनियम के अनुसार चूडाकर्म संस्कार करना चाहिए। गर्भ के 8 वें या जन्म से 8 वें वर्ष में ब्राह्मण का उपनयन संस्कार और क्षत्रिय का 11 वें वर्ष में तथा वैश्य का 12 वें वर्ष में संस्कार करना चाहिए जो गर्भाधान आदि यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न करके ब्रह्मचारी को वेद ज्ञान दे वह गुरु होता है, जो **केवल उपनयन संस्कार करके वेद ज्ञान दे, वह आचार्य होता है।** वेद के एक भाग का ज्ञान देने वाला उपाध्याय कहा जाता है, और जो यज्ञ करवाता है वह ऋत्विक कहा जाता है। गुरु, आचार्य, उपाध्याय, ऋत्विक कर्मानुसार पूजनीय है और माता इन सबसे श्रेष्ठ है। प्रत्येक वेद अध्ययन के लिए 12 वर्षों या 5 वर्षों का ब्रह्मचर्य होता है। केशान्त या गोदान संस्कार 16 वें वर्ष में ब्राह्मण का, 22वें वर्ष में क्षत्रिय का और वैश्य का 24 वें वर्ष में होता है। ब्रह्मचारी के 2 भेद बताये है- (1.) उपकुर्वाणक (2.) नैष्ठिक (आजीवन)

विवाह प्रकरण–विवाह 8 प्रकार के होते है- 1. ब्रह्म विवाह, 2. देव विवाह, 3. प्रजापत्य विवाह, 4. आर्ष विवाह (मान्य), 5. आसुर विवाह, 6. गन्धर्व विवाह, 7.राक्षस विवाह, 8. पैशाच विवाह (अमान्य)

1. **ब्रह्म विवाह-** ब्रह्म विवाह वह है जिसमें वर को आमन्त्रित कर उसे यथा शक्ति कन्या दी जाती है। ऐसे विवाह से उत्पन्न पुत्र दोनों की 21 पीढ़ियों को पवित्र करती हैं।

2. **देव विवाह-** जब यज्ञ अनुष्ठान होने पर ऋत्विक को यथाशक्ति अंलकृत कर कन्या दी जाती है, तो यह देव विवाह कहलाता है।

3. **आर्ष विवाह-** जब गो मिथुन लेकर कन्या दी जाये तो यह आर्ष विवाह कहलाता है।

4. **प्राजापत्य विवाह-** जो माता-पिता अपनी कन्या वर को तुम दोनों साथ-साथ धर्म का आचरण करों यह कहकर समर्पित करके दी जाये वह प्राजापत्य विवाह कहलाता है।

5. **आसुर विवाह-** धन लेकर जो कन्या दी जावे वह आसुर विवाह होता है।

6. **गान्धर्व विवाह-** परस्पर समय अनुराग से गान्धर्व विवाह होता है।

7. **राक्षस विवाह-** युद्ध में कन्या के अपहरण से राक्षस विवाह होता है।

8. **पैशाच विवाह-** छल से या सोने की अवस्था में कन्या का हरण कर लिया जाये वह विवाह पैशाच विवाह कहलाता है।

- दोबारा विवाह करने वाली स्त्री **'पुनर्भू'** कहलाती है।
- अपने पति का त्याग कर इच्छानुसार अपने वर्ण के किसी दूसरे पति का आश्रय ले वह **स्वैरिणी** कहलाती है।
- ब्राह्मण द्वारा क्षत्रिय स्त्री से उत्पन्न पुत्र मूर्धावसिक्त कहलाता है।
- वैश्या स्त्री से उत्पन्न पुत्र 'अम्बष्ठ' कहलाता है।
- शूद्रा स्त्री से उत्पन्न पुत्र निशाद/पारशव कहलाता है।
- क्षत्रिय द्वारा वैश्या स्त्री से उत्पन्न पुत्र माहिष्य और शूद्रा स्त्री से उत्पन्न पुत्र उग्र कहलाता है।
- वैश्य द्वारा शूद्रा स्त्री से उत्पन्न पुत्र करण कहलाता है।
- क्षत्रिय द्वारा ब्राह्मणी स्त्री से उत्पन्न पुत्र **सूत**, वैश्य से **वैदेहक** और शूद्र से उत्पन्न पुत्र **चाण्डाल** कहलाता है।
- वैश्य द्वारा क्षत्रिय स्त्री से उत्पन्न पुत्र **मागध**, शूद्र द्वारा क्षत्रिया स्त्री से उत्पन्न पुत्र **क्षत्ता** तथा शूद्र द्वारा वैश्या स्त्री से उत्पन्न पुत्र **आयुगव** कहलाता है।
- इनके अतिरिक्त प्रतिलोम और अनुलोम विवाह भी होते है जो निन्दित विवाह कहे गये है।
- भूतयज्ञ, पितृयज्ञ, ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ तथा अतिथियज्ञ ये 5 महायज्ञ कहलाते है।
- आचार्य ने मार्ग में जाने वाले यात्री को अतिथि कहा है- **अध्वनीनों अतिथिः ज्ञेयः।**
- अहिंसा, सत्य, अचौर्य, पवित्रता, इन्द्रियसंयम, दान, दम, दया और क्षमा ये धर्म के साधन है।
- आचार अध्याय निम्नलिखित अधिकरणों/प्रकरणों में विभक्त है।
- उपोद्धात प्रकरण, 2. ब्रह्मचारी प्रकरण, 3. विवाह प्रकरण, 4. वर्ण जाति विवेक प्रकरण, 5. गृहस्थ धर्म प्रकरण 6. स्नातक धर्म प्रकरण, 7. भक्ष्याभक्ष्य प्रकरण, 8. द्रव्य शुद्धि प्रकरण, 9. दान प्रकरण, 10. श्राद्ध प्रकरण 11. गणपति कल्प प्रकरण, 12. ग्रहशान्ति प्रकरण, 13. राजधर्म प्रकरण।
- त्रयी विद्या के अंतर्गत आन्वीक्षिकी, दण्डनीति और वार्ता आते है।

यथा ह्येकेन चक्रेण रथस्य न गतिर्भवेत्।
एवं पुरुषकारेण विनां दैवं न सिध्यति।। (याज्ञवल्क्य स्मृति)

प्रश्नोत्तर

प्र. 1. याज्ञवल्क्य स्मृति में अध्याय है ?
उत्तर– आचाराध्याय, व्यवहाराध्याय, प्रायश्चिताध्याय।
प्र. 2. मनुस्मृति के पश्चात् गणनीय उपनिषद् है ?
उत्तर– याज्ञवल्क्य स्मृति।
प्र. 3. याज्ञवल्क्य स्मृति में किस छन्द का प्रयोग हुआ है ?
उत्तर– अनुष्टुप्।
प्र. 4. याज्ञवल्क्य ने किस मत का खण्डन किया है ?
उत्तर– बौद्ध।
प्र. 5. आचाराध्याय में कितने प्रकरण है ?
उत्तर– 13।
प्र. 6. सत्य कथन है ?
उत्तर– आचार खण्ड- 367, व्यवहार खण्ड- 307, प्रायश्चित खण्ड- 335।
प्र. 7. आचाराध्याय में कितनी विद्याओं का वर्णन है ?
उत्तर - 14।
प्र. 8. देशेकाले उपायेन द्रव्यं श्रृद्धासमन्वितम्। पात्रे प्रदीयते यत्तसकलं.................।। किसका लक्षण है?
उत्तर– धर्मलक्षणम्।
प्र. 9. श्रुतिः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः। सम्यक्संकल्पजः कामो धर्ममूलमिदं स्मृतम्।। प्रस्तुत श्लोक में मनुस्मृति के धर्म कारणों में अतिरिक्त है ?
उत्तर– सम्यक्संकल्पजः।
प्र. 10. याज्ञवल्क्य स्मृति के आचाराध्याय का द्वितीय प्रकरण है ?
उत्तर– ब्रह्मचारिप्रकरण।
प्र. 11. द्विज वर्ण है ?
उत्तर– ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य।
प्र. 12. गर्भाधान संस्कार कब होता है ?
उत्तर– ऋतुकाल।
प्र. 13. गर्भसंचलन से पूर्व संस्कार होता है ?
उत्तर– पुंसवन।
प्र. 14. बालक के उत्पन्न होने पर कौनसा संस्कार करना चाहिए ?
उत्तर– जातकर्म संस्कार।
प्र. 15. स्त्रियों के लिए समन्त्रक संस्कार है ?
उत्तर– विवाह संस्कार।
प्र. 16. याज्ञवल्क्य स्मृति के अनुसार द्विज वर्ण में उपनयन संस्कार की आयु है ?
उत्तर– ब्राह्मण का अष्टमवर्ष (जन्म से) क्षत्रिय का एकादश वर्ष (जन्म से), वैश्य का द्वादश वर्ष (जन्म से)।
प्र. 17. एकदेशमुपाध्याय यज्ञकृत् परिभाषा है ?
उत्तर– ऋत्विक।

प्र. 18. 'गरीयसी' है ?

उत्तर– माता।

प्र. 19. याज्ञवल्क्य स्मृति में ब्रह्मचारी के कितने भेद बताये है ?

उत्तर– 2, उपकुर्वाणक तथा नैष्ठिक।

प्र. 20. ब्रह्मचारिप्रकरण में कितने श्लोक है ?

उत्तर– 50।

प्र. 21. आचाराध्याय का तृतीय प्रकरण है ?

उत्तर– विवाह प्रकरणम्।

प्र. 22. याज्ञवल्क्य स्मृति के अनुसार विवाह कितने है ?

उत्तर– 8।

प्र. 23. महायज्ञ है ?

उत्तर– भूतयज्ञ, पितृयज्ञ, ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ तथा नृयज्ञ।

प्र. 24. अध्वनीनो किसे कहा गया है ?

उत्तर– अतिथि।

प्र. 25. स्नातक है ?

उत्तर– उपनयनसंस्कार युक्त ब्रह्मचारी।

प्र. 26. ग्रह कितने है ?

उत्तर– 9।

प्र. 27. त्रयी विद्या है ?

उत्तर– आन्वीक्षिकी, दण्डनीति, वार्ता।

प्र. 28. यथा ह्यकेन चक्रेण रथस्य न गतिः भवेत्। पुरुषार्थ के बिना क्या फल नहीं देता है ?

उत्तर– दैवम्।

प्र. 29. स्वाम्यमात्या जनो दुर्गं कोशो दण्डस्तथैव च। मित्राण्येताः प्रकृतयो राज्यम् उच्यते ?

उत्तर– सप्ताङ्गम्।

प्र. 30. आचाराध्याय का अन्तिम प्रकरण है ?

उत्तर– राजधर्म प्रकरण।

प्र. 31. याज्ञवल्क्य स्मृति के प्रणेता कौन है ?

उत्तर– महर्षि याज्ञवल्क्य।

प्र. 32. स्मृत्याचार व्यपेतेन मार्गेणाऽधर्शितः परेः। किससे सम्बन्धित है?

उत्तर– व्यवहारपद।

प्र. 33. स्त्रीधन कितने प्रकार का होता है ?

उत्तर– छः।

प्र. 34. याज्ञवल्क्यस्मृति के अनुसार पुत्रों की संख्या है ?

उत्तर– 12।

प्र. 35 याज्ञवल्क्यस्मृति विभक्त है ?

उत्तर– तीन भागों में।

प्र. 36 याज्ञवल्क्यस्मृति के भाग है ?

उत्तर– 1. आचाराध्याय 2. व्यवहाराध्याय 3. प्रायश्चित्ताध्याय।

प्र. 37 आचाराध्याय में कुल कितने प्रकरण हैं ?

उत्तर– 13।

प्र. 38 व्यवहाराध्याय में कुल कितने प्रकरण हैं ?

उत्तर– 25।

प्र. 39 प्रायश्चित्तध्याय में कुल कितने प्रकरण है ?

उत्तर– 6।

प्र. 40 याज्ञवल्क्यस्मृति में कुल कितने प्रकरण हैं ?

उत्तर– 44।

प्र. 41 याज्ञवल्क्यसमृति का हृदय कहा गया है ?

उत्तर– व्यवहाराध्याय को।

प्र. 42 सर्वाधिक प्रकरण है ?

उत्तर– व्यवहाराध्याय में।

प्र. 43 याज्ञवल्क्यस्मृति में सम्पूर्ण श्लोक हैं ?

उत्तर– 1009।

प्र. 44 'नानासन्देहहरणाद्' यह है ?

उत्तर– व्यवहार।

प्र. 45 व्यवहार के विषय को कहते है ?

उत्तर– व्यवहारपद।

प्र. 46 'स्मृत्याचारव्यपेतेन मार्गेणाऽधर्शितः परैः' यह है ?

उत्तर– व्यवहारपद।

प्र. 47 याज्ञवल्क्य ने व्यवहारपदों की गणना की है ?

उत्तर– 20।

प्र. 48 व्यवहारपद है

उत्तर– चतुष्पाद।

प्र. 49 देवऋण को चुकाने की परिकल्पना की गयी है

उत्तर– यज्ञाराधना से।

प्र. 50 ऋषिऋण को चुकाने की परिकल्पना की गयी है

उत्तर– अध्ययनाध्यापन से।

प्र. 51 पितृऋण को चुकाने की परिकल्पना की गयी है

उत्तर– सन्तानोत्पत्ति से।

प्र. 52 ऋणदान के प्रकार कहे गये हैं?

उत्तर– 7।

प्र. 53 इनमें प्रथम 5 का सम्बन्ध है?

उत्तर– ऋणदाता से।

प्र. 54 इनमें अन्तिम 2 का सम्बन्ध है?

उत्तर– ऋणी से।

प्र. 55 सूद के प्रकार हैं

उत्तर– चार 1. कारिका, 2. कालिका, 3. कायिका, 4. चक्रवृद्धि।

प्र. 56 व्यवहारपद हैं

उत्तर– 20, 1. ऋणदान, 2. उपनिधि, 3. अस्वामिविक्रय, 4. सम्भूयसमुत्थान, 5. दत्ताप्रदानिक, 6. संविदव्यतिक्रम, 8. क्रीतानुशय, 9. स्वामिपालविवाद, 10. सीमाविवाद, 11. वाक्पाष्य, 12. दण्डपाष्य, 13. विक्रीयसम्प्रदाय, 13. स्तेय, 15. साहस, 16. स्त्रीसंग्रहण, 17. दायविभाग, 18. दूतसमाह्वय, 19. अभ्युपेत्याशुश्रुषा, 20. प्रकीर्णक।

प्र. 57 ऋणदाता द्वारा निश्चित किया जाने वाला सूद है ?

उत्तर– कारिता।

प्र. 58 प्रतिमास दी जाने वाली वृद्धि है ?

उत्तर– कालिका।

प्र. 59 प्रतिदिन दिया जाने वाला सूद है ?

उत्तर– कायिका।

प्र. 60 ब्याज प्रतिमास मूलधन का लेना चाहिए ?

उत्तर 1/80–भाग ।

प्र. 61 मूलधन दुगुना हो जाता है ?

उत्तर– 6 वर्ष 8 मास में।

प्र. 62 धार्मिक सिद्धान्तों के अनुसार पितृऋण चुकाना होता हैं ?

उत्तर– पुत्रों एवं पौत्रों को।

प्र. 63 'वासनस्थमनाख्याय हस्तेऽनपयस्य यदर्प्यते'। द्रव्य तदौपनिधिकं प्रतिदेयं तथैव तत्।। यह है ?

उत्तर– उपनिधि।

प्र. 64 किसी पात्र में कुछ रखकर रूप संख्या आदि न बताकर किसी को दिया जाता है, वह है ?

उत्तर– उपनिधि।

प्र. 65 साक्षी होने चाहिए ?

उत्तर– तीन।

प्र. 66 दायभाग के सम्प्रदाय हैं ?

उत्तर– 1. मिताक्षरा 2. दायभाग।

प्र. 67 दाय के प्रकार हैं ?

उत्तर– 1. अप्रतिबिन्ध 2. सप्रतिबन्ध।

प्र. 68 दाय के विषय है ?

उत्तर– चार।

प्र. 69 विभाजन सम्पत्ति के भाग हैं ?

उत्तर– दो 1. संयुक्तकुलसम्पत्ति, 2. पृथक्सम्पत्ति।

प्र. 70 ज्येष्ठ पुत्र को देना चाहिए ?

उत्तर– श्रेष्ठ भाग।

प्र. 71 किसी ब्राह्मण के चारों वर्णों के पुत्र होने पर सम्पत्ति को बाँटा जाता है ?

उत्तर– 10 भागों में।

प्र. 72 ब्राह्मण पत्नी के पुत्र को दिया जाता है ?

उत्तर– 4 भाग।

प्र. 73 क्षत्रिय पत्नी के पुत्र को दिया जाता है ?

उत्तर– 3 भाग।

प्र. 74 वैश्य पत्नी के पुत्र को दिया जाता है ?

उत्तर– 2 भाग।

प्र. 75 शूद्र पत्नी के पुत्र को दिया जाता है ?

उत्तर– 1 भाग।

प्र. 76 स्त्रीधन के विषय हैं ?

उत्तर– तीन।

प्र. 77 'पितृमातृपतिभ्राददत्तमध्यग्न्युपागतम् आधिवेदनिपकाद्यं च स्त्रीधनं परिकीर्तितम्।। यह है ?

उत्तर– स्त्रीधन।

प्र. 78 'बन्धुदत्तं तथा शुल्कमन्वाधेयकमेव च' यह है ?

उत्तर– स्त्रीधन।

प्र. 79 स्त्रीधन के प्रकार है ?

उत्तर– 6।

प्र. 80 विवाह के समय अग्नि के समक्ष स्त्री को दिया जाने वाला धन है ?

उत्तर– अध्ययग्नि स्त्रीधन ।

प्र. 81 पति के घर जाते समय स्त्री द्वारा पिता के घर से प्राप्त धन है ?

उत्तर– अध्यावह्निक स्त्रीधन।

प्र. 82 श्वसुर या सास द्वारा स्नेह से एवं श्रेष्ठ जनों के वन्दन से प्राप्त धन है ?

उत्तर– प्रीतिदत्त स्त्रीधन।

प्र. 83 बरतनों, आभूषणों, पशुओं और दास-दासियों के रूप में प्राप्त धन है ?

उत्तर– शुल्क स्त्रीधन।

प्र. 84 विवाहोपरान्त पतिकुल एवं पितृकुल के बन्धुजनों से प्राप्त धन है ?

उत्तर– अन्वाधेय स्त्रीधन।

प्र. 85 पति द्वारा अन्य स्त्री के विवाह के समय प्राप्त धन है ?

उत्तर– आधिवेदनिक स्त्रीधन।

प्र. 86 याज्ञवल्क्य के अनुसार पुत्र के प्रकार है ?

उत्तर– 12।

प्र. 87 याज्ञवल्क्यस्मृति में दिव्य प्रयोग में परिगणित नहीं है ?

उत्तर– वायु प्रयोग।

प्र. 88 स्त्री-बाल-वृद्ध-अन्ध-पंगु-ब्राह्मण-रोगियों के लिए दिव्य प्रयोग है ?

उत्तर– तुला।

प्र. 89 क्षत्रिय के लिए किये जाने वाला दिव्य प्रयोग है ?

उत्तर– जल।

प्र. 90 विषय के दिव्य प्रयोग का विधान किसके लिए है ?

उत्तर– शूद्र के लिए।

प्र. 91 धर्म पत्नी से उत्पन्न पुत्र है ?
उत्तर– औरस।
प्र. 92 'सगोत्रेण इतरेण वा उत्पन्नः' यह है ?
उत्तर– क्षेत्रजपुत्र।
प्र. 93 'गृहे प्रच्छन्न उत्पन्न' यह है ?
उत्तर– गूढ़ज पुत्र।
प्र. 94 'कन्यकाजातो पुत्रः' यह है ?
उत्तर– कानीन पुत्र।
प्र. 95 पुत्र हैं ?
उत्तर– 12, 1. औरस, 2. पुत्रिका, 3. क्षेत्रज, 4. गूढोत्पन्न, 5. कानीन, 6. पौनर्भव, 7. दत्तक, 8. क्रीत, 9. कृत्रिम, 10. स्वयंदत्त, 11. सहोढ़, 12.अपविद्ध।
प्र. 96 'दद्यान्माता पिता या यम्' वह पुत्र है ?
उत्तर– दत्तक।
प्र. 97 याज्ञवल्क्य के मत में सामान्य द्रव्य प्रसभ हरण है ?
उत्तर– साहस।

प्रश्नोत्तराणि–

वैदिक साहित्यः

भाग–क

प्रश्नः-1 ऋग्वेदीय पुरुषसूक्ते कति मन्त्राः सन्ति -
(क) सप्तदशः (ख) षोडशः (ग) द्वाविंशतिः (घ) अष्टादशः (ख)
प्रश्नः-2 देवासः इति प्रयोगः -
(क) वैदिकः (ख) कार्मिकः (ग) साहित्यिकः (घ) यादृच्छिकः (क)
प्रश्नः-3 ईशवास्यदिशाकथममृतमश्नुते -
(क) एकत्वेन (ख) असम्भवात् (ग) सम्भूत्या (घ) सत्येन (ग)
प्रश्नः-4 श्रीमद्भागवते श्रीकृष्णस्य ज्येष्ठपुत्रस्य किं नाम -
(क) साम्बः (ख) प्रद्युम्नः (ग) सङ्कर्षणः (घ) अनिरूद्धः (ख)
प्रश्नः-5 मनुना अन्नप्राशनस्य काल उक्तः -
(क) द्वितीयमासे (ख) चतुर्थेमासि (ग) षष्ठे मासे (घ) अष्टमे मासे (ग)
प्रश्नः-6 भगवद्गीतायां द्वितीयाध्यायस्य नाम -
(क) ज्ञानयोगः (ख) कर्मयोगः (ग) साङ्ख्ययोगः (घ) भक्तियोगः (ग)
प्रश्नः-7 ऋग्वैदिकसूक्तिविशेषे 'दोषावस्तर्' इति पदस्य कोऽर्थः -
(क) प्रतिदिनम् (ख) रात्रिन्दिवा (ग) अन्धकारः (घ) विनाशकः (ख)
प्रश्नः-8 कठोपनिषत् केन वेदेन सम्बद्धा -
(क) ऋग्वेदेन (ख) अथर्ववेदेन (ग) शुक्लयजुर्वेदेन (घ) कृष्णयजुर्वेदेन (घ)

प्रश्नः-9 ईशोपनिषदि शुक्लयजुर्वेदस्य कतमोऽध्यायो वर्तते -
(क) 20 (ख) 40 (ग) 30 (घ) 35 (ख)
प्रश्नः-10 'न कर्म लिप्यते नरे' इत्यत्र कस्यकर्मणः वर्णनमस्ति -
(क) अनासक्तकर्म (ख) ज्ञानकर्म (ग) यज्ञकर्म (घ) आसक्तकर्म (क)
प्रश्नः-11 आश्रमव्यवस्थायां कः आश्रमः श्रेष्ठोऽस्ति -
(क) ब्रह्मचार्याश्रमः (ख) गृहस्थाश्रमः (ग) वानप्रस्थाश्रमः (घ) सन्यासाश्रमः (ख)
प्रश्नः-12 भारतीय संस्कृत्यां वेदाध्ययनं कस्मिन्नाश्रमे उक्तम् ?
(क) ब्रह्मचार्याश्रमः (ख) गृहस्थाश्रमः (ग) वानप्रस्थाश्रमः (घ) सन्यासाश्रमः (क)
प्रश्नः-13 भारतीयसंस्कृत्यौ वर्णव्यवस्थायाः कः आधारोऽस्ति -
(क) विचारः (ख) धर्मः (ग) परम्परा (घ) कर्म (घ)
प्रश्नः-14 ब्रह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू....................कृत इत्यत्र वर्णव्यवस्था अधिकृत्य रिक्तस्थानं प्रपूरयत् -
(क) वैश्यः (ख) शूद्रः (ग) ब्राह्मणः (घ) राजन्यः (घ)
प्रश्नः-15 षोडश संस्कारे न परिगणितोऽस्ति -
(क) उपनयन संस्कारः (ख) मार्जन संस्कारः
(ग) विवाह संस्कारः (घ) सीमन्तोन्नय संस्कारः (ख)
प्रश्नः-16 पञ्चमहायज्ञेषु परिगणितोऽस्ति -
(क) अश्वमेघयज्ञः (ख) राजसूययज्ञः (ग) देवयज्ञः (घ) ज्ञानयज्ञः (क)
प्रश्नः-17 अतिथि यज्ञः कथ्यते ?
(क) देवयज्ञः (ख) नृयज्ञः (ग) भूतयज्ञः (घ) पितृयज्ञः (ख)
प्रश्नः-18 दीर्घतमा कस्य सूक्तस्य ऋषिः विद्यते ?
(क) विष्णु सूक्तम् (ख) इन्द्र सूक्तम् (ग) अग्नि सूक्तम् (घ) पुरूष सूक्तम् (क)
प्रश्नः-19 'स देवाँ एह वक्षति' इत्यत्रः 'सः' इति पदेन को देवोऽभिप्रेतः ?
(क) इन्द्रः (ख) विष्णुः (ग) अग्निः (घ) पुरूषः (ग)
प्रश्नः-20 इन्द्रसूक्ते प्रयुक्तं छन्दो वर्तते -
(क) गायत्री (ख) त्रिष्टुप् (ग) जगती (घ) अनुष्टुम् (ख)
प्रश्नः-21 'तानि धर्माणि प्रथमान्यसान्' इति कस्य सूक्तस्य ऋचाशोऽस्ति ?
(क) पुरुष सूक्तम् (ख) इन्द्रसूक्तम् (ग) अग्निसूक्तम् (घ) विष्णु सूक्तम् (क)
प्रश्नः-22 गीतानुसारेणस्थिधीः..............उच्यते। इत्यत्र रिक्त स्थानं प्रयूरयत।
(क) मुनिः (ख) पण्डितः (ग) ऋषिः (घ) साधुः (क)
प्रश्नः-23 नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः पंक्तिरियं कमुद्दिश्य उदीरिता -
(क) कर्म (ख) ज्ञानम् (ग) आत्मानम् (घ) अर्जुनम् (ग)
प्रश्नः-24 ऋग्वेदे सूक्त संख्या वर्तते -
(क) 1048 (ख) 1038 (ग) 1028 (घ) 1035 (ग)
प्रश्नः-25 होता, कविक्रतुः, सत्य इत्यादयः कस्यदेवस्य कृते उक्तम् ?
(क) विष्णोः (ख) अग्नेः (ग) पुरूषस्य (घ) वरूणस्य (ख)
प्रश्नः-26 पुरुषसूक्तस्य ऋषिः अस्ति -
(क) गृत्समदः (ख) शुनः शेपः (ग) मधुच्छन्दा (घ) नारायणः (घ)

प्रश्नः-27 ऋचः सामानि कस्मात् जज्ञिरे ?
(क) सर्वहुतः यज्ञात् (ख) आरण्यात् यज्ञात् (ग) ग्राम्यात् यज्ञात् (घ) मानस यज्ञात् (क)

प्रश्नः-28 'गिरिष्ठा' विशेषणं कस्य देवस्य वर्तते -
(क) विष्णोः (ख) पुरूषस्य (ग) अग्नेः (घ) वरूणस्य (क)

प्रश्नः-29 ऋग्वेदे 'पुरोहितः' कस्य संज्ञास्ति ?
(क) अग्नेः (ख) वरूणस्य (ग) विष्णोः (घ) पुरूषस्य (क)

प्रश्नः-30 विष्णुः (1.154) सूक्ते किं छन्दः प्रयुक्तः -
(क) जगती (ख) त्रिष्टुप् (ग) पंक्ति (घ) बृहती (ख)

प्रश्नः-31 ऋग्वेदे प्रथम मण्डलस्य प्रथमसूक्तं किम् ?
(क) विष्णुसूक्तम् (ख) अग्निसूक्तम् (ग) वरूणसूक्तम् (घ) पुरूषसूक्तम् (ख)

प्रश्नः-32 वरूणसूक्ते (1.25) छन्दः वर्तते ?
(क) गायत्री (ख) अनुष्टुप् (ग) उद्गीथः (घ) त्रिष्टुप् (क)

प्रश्नः-33 ऋग्वेद नैतिकाध्यक्षरूपेण को देवः श्रेष्ठो वर्तते ?
(क) वरुणः (ख) अग्निः (ग) विष्णुः (घ) इन्द्रः (क)

प्रश्नः-34 त्रेधा विचक्रमाणः उरूगायः कः देवः ?
(क) वरूणः (ख) पुरुषः (ग) अग्निः (घ) विष्णुः (घ)

प्रश्नः-35 वेदानां संख्यास्ति -
(क) चत्रस्तः (ख) चत्वारः (ग) चत्वारि (घ) त्रयः (ख)

प्रश्नः-36 ऋग्वेदस्यं मण्डलानां संख्यास्ति ?
(क) १२ (ख) १३ (ग) ११ (घ) १० (घ)

प्रश्नः-37 वेदाङ्गानां संख्यास्ति -
(क) षट् (ख) सप्तम् (ग) अष्टौ (घ) नव (क)

प्रश्नः-38 "वेदत्रयी" पदेनागच्छति सः वेदः कः ?
(क) ऋग्वेदः (ख) यजुर्वेदः (ग) सामवेदः (घ) अथर्ववेदः (घ)

प्रश्नः-39 शिशोः जन्मात् पूर्व कति संस्काराः भवन्ति ?
(क) त्रयः (ख) चत्वारः (ग) पञ्च (घ) षट् (क)

प्रश्नः-40 समावर्तन संस्कार विधौ स्नातकानां प्रकारा भवन्ति ?
(क) चत्वारः (ख) पञ्च (ग) त्रयः (घ) षट् (ग)

प्रश्नः-41 सीमन्तोन्नयनम् अत्र सीमन्त पदस्य अर्थोऽस्ति -
(क) केशाः (ख) धनम् (ग) बलम् (घ) वस्त्रम् (क)

प्रश्नः-42 ऋग्वेदस्य प्रथम मण्डलस्य प्रथम सूक्तस्य देवः कः अस्ति ?
(क) अग्निः (ख) वरुणः (ग) इन्द्रः (घ) विष्णुः (क)

प्रश्नः-43 अग्निरस्ति ?
(क) द्युस्थानीयः (ख) पृथिवीस्थानीयः (ग) अन्तरिक्षस्थानीयः (घ) स्वस्थानीयः (क)

प्रश्नः-44 स्वाध्यायः वर्तते ?
(क) ब्रह्मयज्ञः (ख) देवयज्ञः (ग) पितृयज्ञः (घ) भूतयज्ञः (क)

प्रश्नः-45 वर्ण चतुष्टयं कुत्रवर्णितमस्ति -
(क) अग्निसूक्ते (ख) इन्द्रसूक्ते (ग) शिवसंकल्प सूक्ते (घ) पुरुष सूक्ते (घ)

प्रश्नः-46 जातवेदस् पदस्य अर्थोऽस्ति ?
(क) अग्निः (ख) मेघः (ग) जलम् (घ) नदी (क)

प्रश्नः-47 पुरुष सूक्ते चन्द्रमा उत्पन्नः ?
(क) नेत्राभ्याम् (ख) प्राणेभ्यः (ग) मनसः (घ) मुखात् (ग)

प्रश्नः-48 वैदिक छन्दो नास्ति -
(क) त्रिष्टुप् (ख) अनुष्टुप् (ग) जगती (घ) आर्या (घ)

प्रश्नः-49 'शिक्षा' वेदपुरुषस्य किमुच्यते -
(क) मुखम् (ख) घ्राणम् (ग) चक्षुः (घ) श्रोत्रम् (ख)

प्रश्नः-50 कर्ममार्गस्य महत्वं कस्यामुपनिषदि विवेचितम् -
(क) तैत्तिरीयोपनिषद् (ख) कठोपनिषद् (ग) मुण्डकोपनिषदि (घ) ईशोपनिषदि (घ)

प्रश्नः-51 पाश्चात्यानां मते ऋग्वेदस्य कतमो मण्डलः परवर्ती -
(क) प्रथमः (ख) द्वितीयः (ग) पञ्चम् (घ) सप्तम (क)

प्रश्नः-52 निम्नेषु कस्मिन् सूक्ते दार्शनिक विवेचनमस्ति -
(क) अग्निसूक्ते (ख) इन्द्रसूक्ते (ग) पुरुष सूक्ते (घ) वरूण सूक्ते (ग)

प्रश्नः-53 जातः एव प्रथमो मन्स्वान्देवो कः अभूत् ?
(क) इन्द्रः (ख) अग्निः (ग) प्रजापतिः (घ) कालः (क)

प्रश्नः-54 सोमपा कस्य विशेषणमस्ति -
(क) इन्द्रस्य (ख) रूद्रस्य (ग) अग्नेः (घ) विष्णोः (क)

प्रश्नः-55 पवमान मण्डलमस्ति ?
(क) ५ (ख) ६ (ग) ९ (घ) १० (ग)

प्रश्नः-56 कः वेदः ब्रह्मवेदोऽपि कथ्यते ?
(क) ऋग्वेदः (ख) यजुर्वेदः (ग) सामवेदः (घ) अथर्ववेदः (घ)

प्रश्नः-57 यविष्ठः कस्य विशेषणमस्ति ?
(क) इन्द्रस्य (ख) अग्नेः (ग) विष्णोः (घ) पुरूषस्य (ख)

प्रश्नः-58 मनुः ब्राह्मणेभ्यः किं कार्यं न अकल्पयत् -
(क) अध्ययनमध्यापनम् (ख) यजनं याजनम्
(ग) प्रजानां रक्षणम् (घ) दानप्रतिग्रहम् (ग)

प्रश्नः-59 ब्रह्मा कस्माद् दुदोह ऋग्वेदं ?
(क) अग्नेः (ख) वायोः (ग) रवेः (घ) चन्द्रात् (क)

प्रश्नः-60 लेट्लकारस्य प्रयोगः भवति -
(क) रामायणे (ख) वेदे (ग) पुराणे (घ) महाभारते (ख)

प्रश्नः-61 सृष्टेः प्रारम्भिकी स्थितिः कस्मिन् सूक्ते वर्णिता -
(क) अग्नि सूक्तेः (ख) इन्द्रसूक्ते (ग) नासदीय सूक्ते (घ) वाक् सूक्ते (ग)

प्रश्नः-62 कस्मै देवाय हविषा विधेम इत्यनेन को देवः स्तुतः ?
(क) पुरुषः (ख) इन्द्रः (ग) अग्निः (घ) हिरण्यगर्भः (घ)

प्रश्नः-63 विराट् पुरुषस्य उरूः कः ?
(क) वैश्यः (ख) ब्राह्मणः (ग) राजन्यः (घ) दासः (क)

प्रश्नः-64 माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः इति कस्मिन् वेदे निगदितम् ?
(क) यजुर्वेदे (ख) ऋग्वेदे (ग) अथर्ववेदे (घ) सामवेदे (ग)

प्रश्नः-65 स जनासः इन्द्रः अत्र जनासः इति प्रयोगः वैदिक संस्कृते कस्यां विभक्तौ कस्मिश्च वचने -
(क) षष्ठी विभक्तेः एकचने (ख) पञ्चमी विभक्तौ द्विवचने
(ग) प्रथमा विभक्तौ बहुवचने (घ) षष्ठी विभक्तेः द्विवचने (ग)

प्रश्नः-66 अविद्ययामृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते इति मन्त्रांशः कुत्र प्रयुक्तः ?
(क) ईशोपनिषदि (ख) मुण्डकोपनिषदि (ग) केनोपनिषदि (घ) कठोपनिषदि (क)

प्रश्नः-67 गोपथब्राह्मणं कं वेदमवलम्बते ?
(क) यजुर्वेदम् (ख) सामवेदम् (ग) ऋग्वेदम् (घ) अथर्ववेदम् (घ)

प्रश्नः-68 का अन्तरिक्ष स्थानीया देवता -
(क) सूर्यः (ख) अग्निः (ग) समुद्रः (घ) इन्द्रः (घ)

प्रश्नः-69 कस्य वेदस्यारण्यकं नोपलभ्यते ?
(क) ऋग्वेदस्य (ख) यजुर्वेदस्य (ग) अथर्ववेदस्य (घ) सामवेदस्य (ग)

प्रश्नः-70 स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव। सचस्वा नः स्वस्तये।। अस्य मन्त्रस्य का देवता अस्ति ?
(क) रूद्रः (ख) अग्निः (ग) सोमः (घ) सविता (ख)

प्रश्नः-71 सृष्टि उत्पत्तिविषयकं सूक्तमस्ति ऋग्वेदे ?
(क) पुरुष सूक्तम् (10.90) (ख) अग्नि सूक्तम् (1.1)
(ग) इन्द्र सूक्तम् (2.12) (घ) विष्णु सूक्तम् (1.12) (क)

प्रश्नः-72 वाष्कलसंहिता केन वेदेन सम्बद्या ?
(क) अथर्ववेदेन (ख) सामवेदेन (ग) ऋग्वेदेन (घ) यजुर्वेदेन (ग)

प्रश्नः-73 'रोदसी' पदस्य कोऽर्थः ?
(क) अन्तरिक्षम् (ख) अहोरात्रम् (ग) द्यावा पृथिवी (घ) रुद्रः (ग)

प्रश्नः-74 द्विविधो विभाजनक्रमों वर्तते ?
(क) ऋग्वेदे (ख) यजुर्वेदे (ग) सामवेदे (घ) अथर्ववेदे (क)

प्रश्नः-75 पुराणानां कति संख्या ?
(क) १५ (ख) १६ (ग) १६ (घ) १८ (घ)

प्रश्नः-76 योऽसावादित्यो पुरुषः सोऽसावहम्-इति वाक्ये कुत्र वर्तते ?
(क) ऋग्वेदे (ख) यजुर्वेदे (ग) सामवेदे (घ) अथर्ववेदे (ख)

प्रश्नः-77 मधवा देवः कः ?
(क) इन्द्रः (ख) विष्णुः (ग) वरूणः (घ) हिरण्यगर्भः (क)

प्रश्नः-78 "यः पृथिवीं व्यथमानामंदृहद्यः पर्वतान्प्रकुपिताँ अरम्णात् ?" मन्त्रांशस्य ऋषिः कः?
(क) विश्वामित्रः (ख) गृत्समदः (ग) मधुच्छन्दा (घ) दीर्घतमा (ख)

प्रश्नः-79 दानस्तुति सूक्तानि संहितायां सन्ति -
(क) काण्व संहितायाम् (ख) तैतिरीय संहितायाम्
(ग) ऋग्वेद संहितायाम् (घ) यजुर्वेद संहितायाम् (ग)

प्रश्नः-80 ऋग्वेदीय षष्ठ मण्डलस्य ऋषिः अस्ति -
(क) भारद्वाजः (ख) वामदेवः (ग) वसिष्ठः (घ) विश्वामित्रः (क)

प्रश्नः-81 'आग्नीध्र' नामा ऋत्विक कस्य गणस्य वर्तते -
(क) ब्रह्मगणस्य (ख) अध्वर्युगणस्य (ग) होतृगणस्य (घ) उद्गात गणस्य (क)

प्रश्नः-82 ऋग्वैदिक संहितायां विषये आंग्लपद्यानुवादकः वैदेशिकः विद्वान् वर्तते -
(क) एच. विल्सनः (ख) ए. ए. मैक्डानलः
(ग) आर.टी.एच. ग्रीफिथः (घ) विलियम कैलेण्डः (ग)

प्रश्नः-83 आत्मनः स्वरूपं भगवद् गीतायाः अध्याये वर्णितम् -
(क) प्रथमे (ख) द्वितीये (ग) तृतीये (घ) पञ्चमे (ख)

प्रश्नः-84 स्थित प्रज्ञस्य का भाषा इति कः कम् अपृच्छत् ?
(क) धृतराष्ट्रः संजयम् (ख) अर्जुनः कृष्णम् (ग) कृष्णः अर्जुनम् (घ) युधिष्ठिरः (ख)

प्रश्नः-85 क्रोधाद् भवति किं ?
(क) सन्तोषः (ख) स्नेहः (ग) संवेगः (घ) संमोहः (घ)

प्रश्नः-86 सामान्यतः कति संस्काराः ?
(क) पञ्चदशः (ख) सप्तदशः (ग) षोडशः (घ) अष्टादशः (ग)

प्रश्नः-87 वैदिक संहितासु सर्वाधिक पराक्रमी देवः वर्णितमस्ति -
(क) इन्द्रः (ख) अग्निः (ग) वरुणः (घ) पुरूषः (क)

प्रश्नः-88 ब्रह्मचर्याश्रमस्य मुख्योद्देश्यम् आसीत् ?
(क) विद्यार्जनम् (ख) धनार्जनम् (ग) यशार्जनम् (घ) बलार्जनम् (क)

प्रश्नः-89 पुराभारते आश्रमव्यवस्थासु किं विभक्तमासीत् ?
(क) वनम् (ख) मानवजीवनम् (ग) धनम् (घ) वैभवम् (ख)

प्रश्नः-90 नाट्यवेदस्य प्रणेता कः ?
(क) भरतमुनिः (ख) वेदव्यासः (ग) वाल्मीकिः (घ) ब्रह्मणाः (घ)

प्रश्नः-91 मंत्रदर्शनं के अकुर्वन् ?
(क) राक्षसाः (ख) ऋक्षयः (ग) ऋषयः (घ) मुनिगणः (ग)

प्रश्नः-92 वेदानुसारेण जगतस्तुस्थुषः च आत्मा कः -
(क) इन्द्रः (ख) सूर्यः (ग) अग्निः (घ) वायुः (ख)

प्रश्नः-93 सायणाचार्यः अभवत् -
(क) भाष्यकारः (ख) व्याकरणकारः (ग) साहित्यकारः (घ) दर्शनाचार्यः (क)

प्रश्नः-94 ब्राह्मणग्रन्थाः कस्य विस्तृत वर्णनं कुर्वन्ति ?
(क) वनस्पतेः (ख) ब्राह्मण वर्गस्य (ग) यज्ञानुष्ठानस्य (घ) आत्मनः (ग)

प्रश्नः-95 न जायते म्रियते वा कदाचित् इति कस्य कृते?
(क) आदित्यस्य (ख) आत्मनः (ग) शरीरस्य (घ) जलस्य (ग)

प्रश्नः-96 ईशोपनिषदि कति मन्त्राः सन्ति ?
(क) अष्टादशः (ख) षोडशः (ग) सप्तदशः (घ) एकादशः (क)

प्रश्नः-97 निरुक्तम् अस्ति ?
(क) वेदः (ख) शास्त्रम् (ग) वेदांगः (घ) दर्शनम् (ग)

प्रश्नः-98 छन्दोबद्धः वेदः कः ?
(क) ऋग्वेदः (ख) यजुर्वेदः (ग) सामवेदः (घ) अथर्ववेदः (क)

प्रश्नः-99 धर्मार्थकाममोक्षाणामस्ति ?
(क) वर्णव्यवस्थान्तर्गते (ख) आश्रमव्यवस्थान्तर्गते
(ग) संस्कारव्यवस्थाधीने (घ) पुरुषार्थव्यवस्थान्तर्गते (घ)

प्रश्नः-100 आरुणेः शिष्यः आसीत् ?
(क) ध्रुवः (ख) नचिकेता (ग) श्वेतकेतुः (घ) उद्दालकः (ग)

वैदिक साहित्यः

भाग–ख

प्रश्नः-1 दशतयीति शब्देन विधीयते ?
(क) यजुर्वेदः (ख) सामवेदः (ग) ऋग्वेदः (घ) अथर्ववेदः (ग)

प्रश्नः-2 वेदपौरुषेयत्वं कः न स्वीकरोति ?
(क) विन्टरनिट्ज (ख) सायणः (ग) माधवः (घ) दयानन्दः (क)

प्रश्नः-3 ऋग्वेदे कति अष्टकाः सन्ति
(क) दश (ख) सप्त (ग) नव (घ) अष्टौ (घ)

प्रश्नः-4 को नाम आरण्यकस्य मुख्य विषयः ?
(क) ज्ञानम् (ख) उपासनादिकम् (ग) स्तुतिः (घ) ज्ञानम् (ख)

प्रश्नः-5 महर्षि पतञ्जल्यनुसारेण ऋग्वेदस्य शाखाः सन्ति ?
(क) २२ (ख) २१ (ग) ११ (घ) १३ (ख)

प्रश्नः-6 यज्ञे यजुर्वेदसम्बद्धोऽस्ति ?
(क) होता (ख) अध्वर्युः (ग) उद्गाता (घ) ब्रह्मा (ख)

प्रश्नः-7 त्रिष्टुप् छन्दसि अक्षराणि भवन्ति ?
(क) ३३ (ख) ४४ (ग) ४ (घ) ४२ (ख)

प्रश्नः-8 ज्योतिर्विज्ञानमाश्रित्य असौवेदानां काल निर्धारणम करोत् -
(क) मैक्समूलरः (ख) लोकमान्य तिलकः (ग) मैक्डोनेल (घ) सायणाचार्यः (ख)

प्रश्नः-9 दाराशिकोहः उपनिषदामनुवादं कृतवान् इदं वाक्यमस्ति ?
(क) सत्यम् (ख) असत्यम् (ग) निर्विकारः (घ) वेदनायुक्तः (क)

प्रश्नः-10 त्रेधा निदधे पदम् इति केन सह सम्बध्यते ?
(क) इन्द्रसूक्तेन (ख) रूद्रसूक्तेन (ग) विष्णु सूक्तेन (घ) वरुणसूक्तेन (ग)

प्रश्नः-11 चरैवेति इति वाक्यांशोऽस्मिन् ग्रन्थेऽस्ति ?
(क) शतपथब्राह्मणे (ख) गोपथब्राह्मणे (ग) तैत्तिरीय ब्राह्मणे (घ) ऐतरेय ब्राह्मणे (घ)

प्रश्नः-12 कुर्वन्नेवेहकर्माणि जिजीविषेच्छतँ समाः इति सूक्तिः केन ग्रन्थेन सम्बद्धा ?
(क) कठोपनिषद् (ख) ईशावास्योपनिषद्
(ग) बृहदारण्यकोपनिषद् (घ) तैत्तिरीयोपनिषद् (ख)

प्रश्नः-13 असतो मा सद्गमय, तमसोर्माज्योतिर्गमय। इति कुत्र विद्यते ?
(क) ऋग्वेदः (ऐतरेय ब्राह्मणग्रन्थे) (ख) यजुर्वेदः (बृहदारण्यकोपनिषदि)
(ग) सामवेदः (आर्शेय ब्राह्मण ग्रन्थे) (घ) अथर्ववेदः (मुण्डकोपनिषदि) (ख)

प्रश्नः-14 'गृहपतिः' इति विशेषणं कस्य देवस्य प्रसिद्धम् -
(क) इन्द्रस्य (ख) सवितुः (ग) अश्विनोः (घ) अग्नेः (घ)

प्रश्नः-15 'अन्धं तमः प्रविशन्ति' इति वचनं कस्यामुपनिषदिवर्तते -
(क) कठोपनिषदि (ख) ईशावास्योपनिषदि (ग) केनोपनिषदि (घ) ऐतरेयोपनिषदि (ख)

प्रश्नः-16 यज्ञकालनिर्णयार्थं कस्य वेदाङ्गस्यो प्रयोगः -
(क) कल्पस्य (ख) ज्योतिषस्य (ग) निरुक्तस्य (घ) शिक्षायाः (ख)

प्रश्नः-17 उपनिषदा प्रतिपाद्यते -
(क) कर्मकाण्डम् (ख) ज्ञानकाण्डम् (ग) यन्त्रज्ञानम् (घ) वास्तुज्ञानम् (ख)

प्रश्नः-18 मैक्समूलरमतानुसार मृग्वेदस्य कालो वर्तते -
(क) 1200 ई.पू. (ख) 3000 ई.पू. (ग) 5000 ई.पू. (घ) 4000 ई.पू. (क)

प्रश्नः-19 सामवेदस्य प्रमुखः प्रतिपाद्य विषयोऽस्ति ?
(क) स्तुतिः (ख) ज्ञानम् (ग) गानम् (घ) यज्ञादि (ग)

प्रश्नः-20 को नाम देवः वृत्रहा इत्युच्यते ?
(क) अग्निः (ख) इन्द्रः (ग) रूद्रः (घ) विष्णुः (ख)

प्रश्नः-21 'सत्यमेव जयते नानृतम्' इति वचनं कस्याम् उपनिषदि लभ्ये ?
(क) केनोपनिषदि (ख) कठोपनिषदि (ग) मुण्डकोपनिषदि (घ) ऐतरेयोपनिषदि (ग)

प्रश्नः-22 यत्र विश्वं भवत्येकनीडम् इति मन्त्र कस्मिन् वेदेदृकपथ् पयाति ?
(क) ऋग्वेदः (ख) यजुर्वेदः (ग) सामवेदः (घ) अथर्ववेदः (ख)

प्रश्नः-23 विष्णोस्त्रीणि पदानि पूर्णानि भवन्ति -
(क) उदकेन (ख) अमृतेन (ग) घृतेन (घ) मधुना (ख)

प्रश्नः-24 यो अश्मनोरन्तरग्निं जजान अनेन मन्त्र भागेन परामृश्यते -
(क) विष्णुः (ख) सविता (ग) बृहस्पतिः (घ) इन्द्रः (घ)

प्रश्नः-25 बालखिल्यसूक्तानि विद्यन्ते ?
(क) ऋग्वेदे (ख) यजुर्वेदे (ग) सामवेदे (घ) अथर्ववेदे (क)

प्रश्नः-26 अजोनित्य शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे। अत्र न हन्यते शब्दस्य कोऽभिप्रायः ?
(क) आत्मनः (ख) शरीरः (ग) अवस्था (घ) इन्द्रियः (क)

प्रश्नः-27 तस्माद् यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दासि जज्ञिरे तस्माद् यजुस्तमादजायत।। इत्यस्मिन् मन्त्रे वर्णनमस्ति ?
(क) वर्ण चतुष्टयस्य (ख) वेदचतुष्टयस्य (ग) आश्रमव्यवस्थायाः (घ) वेदत्रयी (ख)

प्रश्नः-28 अपौरुषेयं वाक्यंवेदः कस्यकथनमस्ति -
(क) वेदव्यासः (ख) सायणः (ग) दयानन्दः (घ) ब्रह्मा (ख)

प्रश्नः-29 सर्वप्राचीन वेदः विद्यते ?
(क) ऋग्वेदः (ख) यजुर्वेदः (ग) सामवेदः (घ) अथर्ववेदः (क)

प्रश्नः-30 राष्ट्रियदेवतास्ति ?
(क) अग्निः (ख) वरुणः (ग) इन्द्रः (घ) विष्णुः (ग)

प्रश्नः-31 उरुगायः कस्य विशेषणमस्ति ?
(क) अग्नेः (ख) वरूणः (ग) इन्द्रः (घ) विष्णोः (घ)

प्रश्नः-32 वैदिकराष्ट्रियगीतः कः ?
(क) वयं राष्ट्रे जाग्रयाम्। (ख) उत्तिष्ठत् जाग्रत प्राप्य ।
(ग) वसुधैवकुटुम्बम् (घ) जनगणमनाधिनायकं। (क)

प्रश्नः-33 धनुर्वेदः कस्य वेदस्य उपवेदः ?
(क) ऋग्वेदः (ख) यजुर्वेदः (ग) सामवेदः (घ) अथर्ववेदः (ख)

प्रश्नः-34 गान्धर्ववेदः कः ?
(क) ऋक् (ख) यजुस् (ग) सामः (घ) अथर्वः (ग)

प्रश्नः-35 आरण्यकविहीनं वेदः ?
(क) ऋग्वेदः (ख) यजुर्वेदः (ग) सामवेदः (घ) अथर्ववेदः (घ)

प्रश्नः-36 हिरण्मयेन पात्रेणसत्यस्यापिहितं मुखम् मन्त्रांशास्ति ?
(क) वेदः (ख) उपनिषद् (ग) वेदागङः (घ) आरण्यक ग्रन्थः (ख)

प्रश्नः-37 महाभारतस्य कस्मिन् पर्वे गीता प्रोक्ता -
(क) वनपर्वे (ख) सभापर्वे (ग) भीष्मपर्वे (घ) विराट्पर्वे (ग)

प्रश्नः-38 कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूः उक्तिः अस्ति -
(क) कठोपनिषद् (ख) ऋग्वेदः
(ग) शतपथ ब्राह्मणम् (घ) ईशावास्योपनिषद् (घ)

प्रश्नः-39 जातस्य हि ध्रुवो मृत्यु ध्रुवं जन्ममृतस्य च अत्र कः दृष्टान्तः परिलक्ष्यते ?
(क) सत्कार्यवादः (ख) पुनर्जन्मः (ग) बुद्धिनाशः (घ) ज्ञानयोगः (ख)

प्रश्नः-40 प्रस्थात्रयां गणनीयास्ति ?
(क) श्रीमाद्भगवद्गीता (ख) उपनिषद्
(ग) ब्रह्मसूत्रशांकर भाष्यः (घ) सर्वे (घ)

प्रश्नः-41 गुडाकेशः कः ?
(क) सत्रुजयः (ख) धृतराष्ट्रः (ग) अर्जुनः (घ) सर्वे (ग)

प्रश्नः-42 श्रीमद् भगवद्गीतायां योगस्य किं परिभाषास्ति ?
(क) योगः कर्मसु कौशलम् (ख) समत्वं योगः उच्यते।
(ग) क तथा ख (घ) योगश्चिन्तवृन्तिनिरोधः (ग)

प्रश्नः-43 श्रीमद् भगवद्गीतायाः अध्यायान्ते कः लिखितः ? यथा..................
(क) धर्मशास्त्रः (ख) कर्मशास्त्रः (ग) दर्शनशास्त्रः (घ) योगशास्त्रः (घ)

प्रश्नः-44 व्यवसायात्मिका बुद्धिः भवति ?
(क) एका (ख) अनेकः (ग) द्विविधिः (घ) चतुर्विध (क)

प्रश्नः-45 वर्णव्यवस्थायान्तर्गते कः ?
(क) धर्मः (ख) अर्थः (ग) कर्मः (घ) शुद्रः (घ)

प्रश्नः-46 वानप्रस्थाश्रमस्य लक्ष्यास्ति ?
(क) मोक्षप्राप्तिः (ख) आध्यात्मिकोन्नतिः (ग) वसुधैवकुटुम्बकम् (घ) धर्मप्राप्तिः (ख)

प्रश्नः-47 यज्ञोवैश्रेष्ठतमं कर्म उक्तिः ?
(क) ऋग्वेदस्य (ख) यजुर्वेदस्य (ग) सामवेदस्य (घ) अथर्ववेद (ख)

प्रश्नः-48 राष्ट्रस्यार्थिक विकासस्योत्तर दायित्वं केशा वर्तते ?
(क) क्षत्रियाणाम् (ख) ब्राह्मणानाम् (ग) शूद्राणाम् (घ) वैश्यानाम् (घ)

प्रश्नः-49 वैखानसः कस्याश्रमस्यापरं नामास्ति -
(क) ब्रह्मचर्यः (ख) गृहस्थः (ग) वानप्रस्थः (घ) सन्यासः (क)

प्रश्नः-50 शिशोः जननान्तरं प्रथमो संस्कारो भवति -
(क) जातकर्मः (ख) नामकरणम् (ग) अन्न प्राशनम् (घ) गर्भाधान (क)

प्रश्नः-51 जन्मनः कस्मिन् मासे शिशोः गृहात् निष्क्रमणं भवति ?
(क) द्वितीय मासे (ख) तृतीय मासे (ग) चतुर्थ मासे (घ) षष्ठ मासे (ग)

प्रश्नः-52 पुंसवनसंस्कारः कस्मिन् मासे भवति -
(क) द्वितीये (ख) प्रथमे (ग) तृतीये (घ) षष्ठे (ग)

प्रश्नः-53 उपनयन संस्कारस्यापरं नाम वर्तते -
(क) मुण्डन संस्कारः (ख) यज्ञोपवीत संस्कारः
(ग) त्रेताग्नि संस्कार (घ) चूडाकर्म संस्कारः (ख)

प्रश्नः-54 केशान्तसंस्कारस्यापरं नाम वर्तते -
(क) मुण्डन संस्कारः (ख) गोदान संस्कारः
(ग) यज्ञोपवीत संस्कारः (घ) कोऽपि न (ख)

प्रश्नः-55 कस्य यज्ञस्यापरं नाम बलिवैश्वदेव यज्ञोऽस्ति -
(क) भूतयज्ञस्य (ख) पितृयज्ञस्य (ग) ब्रह्मयज्ञस्य (घ) मनुष्य यज्ञस्य (क)

प्रश्नः-56. 'कविक्रतुः', 'सत्यः' 'चित्रःश्रवऽतमः' इत्येतैः विशेषणैः कः देवः स्तुतः ?
(क) इन्द्रः (ख) रुद्रः (ग) अग्निः (घ) वरुणः (ग)

प्रश्नः-57. ऋक्काले 'वसन्तसम्पातः' कस्मिन् नक्षत्रे मान्यते ?
(क) रोहिणीनक्षत्रे (ख) मृगशिरानक्षत्रे (ग) कृतिकानक्षत्रे (घ) अर्द्रानक्षत्रे (ख)

प्रश्नः-58. 'वेदत्रयी' इत्यत्र कस्य वेदस्य गणना न कृता ?
(क) ऋग्वेदस्य (ख) यजुर्वेदस्य (ग) सामवेदस्य (घ) अथर्ववेदस्य (घ)

प्रश्नः-59. वैदिकमन्त्राणां संकलनम् उच्यते ?
(क) समुदायः (ख) समुच्चयः (ग) संहिता (घ) संकुलम् (ग)

प्रश्नः-60 'पृथ्वीस्थानीयाः', द्युस्थानीयाः, अन्तरिक्षस्थानीयाः' इति रूपेण के विभाजिताः कृताः ?
(क) देवाः (ख) भगवन्तः (ग) गन्धर्वाः (घ) ऋषयः (क)

प्रश्नः-61 "राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिवम्। वर्धमान स्वे दमे।" इति मन्त्रः कस्य देवस्य कृते अस्ति ?
(क) अग्नेः (ख) वरूणस्य (ग) रूद्रस्य (घ) प्रजापतेः (क)

प्रश्नः-62 "मा नो वधाय हन्तवे। जिहीळानस्य रीरधः। मा हृणानस्य मन्यवे।।" इति मन्त्रेण कः देवः स्तुतः ?
(क) अश्विनौ (ख) वाक् (ग) वरुणः (घ) उषस् (ग)

प्रश्नः-63 "त्रेधा विचक्रमाणः" इति रूपेण विष्णोः कस्य अवतारस्य संकेतः प्राप्यते ?
(क) नृसिंहावतारस्य (ख) वामनावतारस्य (ग) वराहावतारस्य (घ) मत्स्यावतारस्य (ख)

प्रश्नः-64 इन्द्रसूक्तस्य दृष्टा ऋषिरस्ति ?
(क) गौतमः (ख) विश्वामित्रः (ग) दीर्घतमा (घ) गृत्समदः (घ)

प्रश्नः-65 "प्रथमो मनस्वान्" इति कस्य देवस्य विशेषणं वर्तते ?
(क) इन्द्रस्य (ख) अग्नेः (ग) वरुणस्य (घ) प्रजापतेः। (क)

प्रश्नः-66 "कस्मै देवाय हविषा विधेम" इत्यत्र 'कस्मै' पदम् कस्य कृते उच्चरितम् अस्ति ?
(क) प्रजापतिः (ख) वाक् (ग) पृथिवी (घ) सूर्यः। (क)

प्रश्नः-67 "सहस्त्रशीर्षा......................सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्" इति रिक्तस्थानपूर्तिं कुरूत। ?
(क) भूपतिः (ख) पुरुषः (ग) देवः (घ) मनुष्यः। (ख)

प्रश्नः-68 "नासदीयसूक्तम्" कीदृषं सूक्तमस्ति ?
(क) संवादसूक्तम् (ख) दार्शनिकसूक्तम् (ग) दानसूक्तम् (घ) ज्ञानसूक्तम् (ख)

प्रश्नः-69 "शुक्लकृष्णौ" इति रूपेण को वेदः विभाजितः ?
(क) ऋग्वेदः (ख) यजुर्वेदः (ग) सामवेदः (घ) अथर्ववेदः। (ख)

प्रश्नः-70 तैत्तिरीयशाखायाः सम्बन्धः अस्ति ?
(क) शुक्लयजुर्वेदेन (ख) कृष्णयजुर्वेदेन (ग) सामवेदेन (घ) उपवेदेन (ख)

प्रश्नः-71 मुख्यत्वेन कर्मकाण्डं कस्मिन् वेदे विस्तरेण उक्तमस्ति ?
(क) अथर्ववेदे (ख) तैत्तरीयोपनिषदि (ग) यजुर्वेदे (घ) ऋग्वेदे (ख)

प्रश्नः-72 सप्तस्वराणां प्रयोगः कुत्रावलोक्यते ?
(क) ऋचाप्रयोगे (ख) सामगाने (ग) मन्त्रगोन (घ) न कुत्रापि (ख)

प्रश्नः-73 "सहस्त्रवर्त्मा......................" रिक्तस्थानपूर्तिं कुरूत ?
(क) सूर्यः (ख) सामवेदः (ग) चन्द्रः (घ) यज्ञः। (ख)

प्रश्नः-74 आयुर्वेदः कस्य वेदस्य मुख्यः प्रतिपाद्यो विषयः अस्ति ?
(क) अथर्ववेदस्य (ख) सामवेदस्य (ग) यजुर्वेदस्य (घ) ऋग्वेदस्य। (क)

प्रश्नः-75 अथर्ववेदे काण्डानां संख्याऽस्ति ?
(क) 22 (ख) 25 (ग) 20 (घ) 30 (ग)

प्रश्नः-76 वैदिकमन्त्राणां व्याख्यानग्रन्थाः सन्ति
(क) ब्राह्मणग्रन्थाः (ख) आरण्यकग्रन्थाः (ग) उपनिषद् (घ) कल्पग्रन्थाः (क)

प्रश्नः-77 अधस्तनेषु कः छन्दः वेदे न प्रयुक्तः ?
(क) गायत्री (ख) जगती (ग) त्रिष्टुप् (घ) स्त्रग्धरा (घ)

प्रश्नः-78 'निरूक्तम्' कस्य रचना अस्ति ?
(क) यास्कस्य (ख) वामनस्य (ग) वेदव्यासस्य (घ) वाल्मीकेः (क)

प्रश्नः-79 "सत्यमवे जयते" इति वाक्यमस्ति
(क) छान्दोग्योपनिषदि (ख) मुण्डकोपनिषदि (ग) ईशोपनिषदि (घ) प्रश्नोपनिषदि (ख)

प्रश्नः-80 "असतो मा सद्गमय" इति वाक्यमस्ति ?
(क) बृहदारण्यकोपनिषदि (ख) एतरेयोपनिषदि
(ग) केनोपनिषदि (घ) माडूक्योपनिषदि (क)

प्रश्नः-81 "शुनःशेपाख्यानम्" कस्मिन् वेदे कथितम् ?
(क) ऋग्वेदे (ऐतरेये) (ख) यजुर्वेदे (शतपथे)
(ग) सामवेदे (छान्दोग्ये) (घ) अथर्ववेदे (गोपथे) (क)

प्रश्नः-82 "वेदव्यासः" आसीत्–(वेदानाम्)
(क) रचयिता (ख) विभाजनकर्त्ता (ग) व्याख्याकर्त्ता (घ) पठनकर्त्ता। (ख)

प्रश्नः-83 "पुरुरवा-उर्वशी सम्वादः" ऋग्वेदस्य कस्मिन् मण्डले कथितम् ?
(क) 10 (ख) 5 (ग) 6 (घ) 2 (क)

प्रश्नः-84 य एष सुप्तेषु जागर्ति इतिवचनं कस्याम् उपनिषदि लभ्यते ?
(क) केनोपनिषदि (ख) कठोपनिषदि
(ग) मुण्डकोपनिषादि (घ) ऐतरेयोपनिषदि (ख)

प्रश्नः-85 त्रीणिपदानि कस्यदेवस्य प्रसिद्धानि ?
(क) अग्नेः (ख) इन्द्रस्य (ग) सवितुः (घ) विष्णोः (घ)

प्रश्नः-86 विश्वामित्र–नदी संवादः कस्मिन् मण्डले उपलभ्यते ?
(क) प्रथम मण्डले (ख) तृतीयमण्डले (ग) दशममण्डले (घ) अष्टममण्डले (ख)

प्रश्नः-87 शतपथब्राह्मणम् केन वेदेन सम्पृक्तम् ?
(क) सामवेदेन (ख) शुक्लयजुर्वेदेन (ग) ऋग्वेदेन (घ) अथर्ववेदेन (ख)

प्रश्नः-88 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' इति मन्त्रः कस्मिन् वेदे दृक्पथमुपयाति ?
(क) कृष्ण यजुर्वेदे (ख) ऋग्वेदे (ग) अथर्ववेदे (घ) शुक्लयजुर्वेदे (घ)

प्रश्नः-89 पैप्पलादशाखा केन वेदेन सम्पृक्ता ?
(क) ऋग्वेदेन (ख) सामवेदेन (ग) अथर्ववेदेन (घ) यजुर्वेदेन (ग)

प्रश्नः-90 तैत्तिरीयारण्यकम् कं वेदमवलम्बते ?
(क) यजुर्वेदम् (ख) ऋग्वेदम् (ग) सामवेदम् (घ) अथर्ववेदम् (क)

प्रश्नः-91 को नाम वेदः दशतयी इति शब्देन व्यपदिश्यते ?
(क) सामवेदः (ख) यजुर्वेदः (ग) अथर्ववेदः (घ) ऋग्वेदेन (घ)

प्रश्नः-92 ऋग्वेदस्य नवमे मण्डले को नाम देवः स्मृतिं लभते ?
(क) सोमः (ख) इन्द्रः (ग) विष्णुः (घ) अग्निः (क)

प्रश्नः-93 वेदाङ्गनि कति -
(क) पञ्च (ख) षट् (ग) दश (घ) द्वादश (ख)

प्रश्नः-94 त्रिष्टुप् छन्दसि कति अक्षराणि विराजन्ते ?
(क) ५१ (ख) ४४ (ग) ४६ (घ) ४८ (ख)

प्रश्नः-95 श्रौतसूत्रं किं वेदाङ्गविषयी करोति ?
(क) कल्पम् (ख) निरूक्तम् (ग) ज्योतिषम् (घ) व्याकरणम् (क)

प्रश्नः-96 को नामदेवः द्युस्थानीयः ?
(क) इन्द्रः (ख) अग्निः (ग) वायुः (घ) सूर्यः (घ)

प्रश्नः-97 जैमिनीय ब्राह्मणम् केन वेदेन सम्पृक्तम् ?
(क) ऋग्वेदेन (ख) यजुर्वेदेन (ग) सामवेदेन (घ) अथर्ववेदेन (ग)

प्रश्नः-98 वेदकालनिरूपणे कस्तावत् ज्योतिषमवलम्बते ?
(क) विन्टरनिट्ज (ख) मैक्समूलरः
(ग) वेबरः (घ) बालगङ्गधरतिलकः (घ)

प्रश्नः-99 मैत्रेयी–याज्ञवल्क्यसंवादः कस्यामुपनिषदि उपलभ्यते ?
(क) कठोपनिषदि (ख) केनोपनिषदि
(ग) ईशोपनिषदि (घ) बृहदारण्यकोपनिषदि (घ)

प्रश्नः-100 कस्यदेवस्य चराः प्रसिद्धाः ?
(क) विष्णोः (ख) वरुणस्य (ग) अग्नेः (घ) इन्द्रस्य (ख)

अध्याय-2
लौकिकसंस्कृतसाहित्य

वीरकाव्य

आदिकवि वाल्मीकि प्रणीत आदिकाव्य रामायण

प्रस्तावना

वैदिक साहित्य के पश्चात् लौकिक संस्कृत साहित्य की प्रारम्भिक अवस्था में रामायण तथा महाभारत जैसे ग्रन्थों का प्रणयन हुआ, जिन्होंने भारतीय साहित्य एवं जनमानस को अत्यधिक प्रभावित किया है। इनमें रामायण को आदिकाव्य तथा महाभारत को इतिहास कहा जाता है। इन ग्रन्थों का परवर्ती साहित्य के ऊपर बड़ा ही विशाल, मार्मिक तथा आभ्यन्तर प्रभाव रहा है। इन दोनों विधाओं का उद्भव स्त्रोत कर्मकाण्ड के काल में ही माना गया है।

रामायण का परिचय

भारतीय एकता का आदर्श ग्रन्थ रामायण राष्ट्रीय काव्य है। वाल्मीकि प्रणीत रामायण आदिकाव्य, आर्षकाव्य के नाम से लब्ध प्रतिष्ठित है। इसमें भारतीय संस्कृति के आदर्श मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम के सम्पूर्ण जीवन का काव्यात्मक शैली में वर्णन हुआ है। रामायण शब्द राम + अयन् इन दो शब्दों के योग से बना है। जिसका मूल अर्थ है–राम का दर्शाया हुआ सन्मार्ग। वीरकाव्य परम्परा में गणनीय रामायण करुणरस प्रधान काव्य है। इसमें 7 काण्ड, 500 सर्ग तथा 24000 श्लोक है। बालकाण्ड में वर्णित है -

चतुर्विंशतिसहस्त्राणि श्लोकानामुक्तवानृषिः।
तथा सर्गशतान्पंच षट् काण्डानि तथोत्तरम्।।

इसी कारण ही रामायण को **'चतुर्विंशति साहस्त्री संहिता'** कहते है। इसके नायक धीरोदात्त गुणों से युक्त श्रीराम तथा नायिका मुग्धा श्रेणी से युक्त सीताजी है। इसमें श्रीराम और रावण का संग्राम होने के कारण वीर काव्य परम्परा में स्वीकार किया जाता है। रामायण में तीन संस्कृतियों का वर्णन मिलता है- 1. आर्य संस्कृति 2. वानर संस्कृति तथा 3. राक्षस संस्कृति। महर्षि वाल्मीकि की दृष्टि से चरित्र ही मानवता की कसौटी है। चरित्र से युक्त मनुष्य की खोज तथा उसका विशद् वर्णन ही इसका मुख्य उद्देश्य है। वाल्मीकि ने महर्षि नारद से यही जिज्ञासा की है–**चारित्रेण च को युक्तः** ? रामायण में धर्म की प्रधानता है। इसकी जीवनी शक्ति या स्थिरता का संकेत स्वयं इस ग्रन्थ में मिलता है–

यावत्स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महितले।
तावद् रामायणकथा लोकेषु प्रचरिष्यति।।

रामायण की कथावस्तु

(1) बालकाण्ड (77 सर्ग)

इसके आरम्भ में चार सर्गों में रामायण की रचना की पूर्वपीठिका दी गई है कि नारद ने महर्षि वाल्मीकि को रामकथा सुनाई। नारद के लौट जाने पर वाल्मीकि जब वन में विचरण कर रहे थे तो क्रौञ्ची का विलाप सुनकर महर्षि में करुणा उमड़ आयी तथा उनके मुख से आक्रोश में पद्य निकल पड़ा -**मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः**। यत्क्रौचमिथुनादेकमवधीः काम मोहितम्।। (बालकाण्ड 1/2/15) इस श्लोक के आकस्मिक आगमन पर वाल्मीकि चकित थे कि ब्रह्म ने आकर उनसे प्रार्थना की कि राम का आख्यान इसी रूप में वर्णित करें। ब्रह्म ने उन्हें राम के विषय में सब कुछ ज्ञात हो जाने का वरदान दिया। तब वाल्मीकि ने समाधि में स्थित होकर राम और सीता से सम्बद्ध सभी वृतान्तों का साक्षात्कार किया। उन्होंने 500 सर्गों में छः काण्डों के साथ उत्तरकाण्ड को मिलाकर रामचरित की रचना की है।

इस काण्ड में अयोध्या में दशरथ द्वारा पुत्रेष्टि यज्ञ के अनुष्ठान से लेकर विवाह पश्चात् श्रीराम के अयोध्या प्रवेश तक का वृतान्त वर्णित है। विश्वामित्र, वशिष्ठ, वामावतरण, कार्तिकेय, सगरोपाख्यान, गंगावतरण, सागरमंथन आदि के आख्यानों ने इस काण्ड को पौराणिक रूप दिया है।

(2) अयोध्याकाण्ड (119 सर्ग)

इसमें राजतिलक की वेला में वनवास, श्रीराम-लक्ष्मण सहित सीताजी का वनगमन, दशरथमृत्यु, भरत द्वारा राज्याभिषेक की अस्वीकृति तथा भरत का राम की पादुकाएं लेकर अयोध्या लौटना आदि घटनाएं वर्णित है।

(3) अरण्यकाण्ड (75 सर्ग)

इस काण्ड में राम-लक्ष्मण-सीता का दण्डकवन में निवास, राक्षसों का वध, शूर्पणखा के अनुचित प्रलाप पर लक्ष्मण द्वारा नाक-कान काटना, खर-दूषण का वध, सीता हरण, जटायु की हत्या, राम का करुण विलाप, राम की कबन्ध से भेंट तथा उसके द्वारा राम को सुग्रीव से मैत्री करने का परामर्श दिया जाना, ये वृतान्त वर्णित है।

(4) किष्किन्धाकाण्ड (67 सर्ग)

इस काण्ड में राम की दुःखी अवस्था, हनुमान द्वारा राम व सुग्रीव की मित्रता कराना तथा बालिवध सहित वानर सेना द्वारा सीता की खोज में प्रवृत्त होने का वर्णन है।

(5) सुन्दरकाण्ड (68 सर्ग)

इस काण्ड में हनुमान जी द्वारा सागर को पार कर लंका में प्रवेश, सीता-खोज, लंकादहन, राम को हनुमान द्वारा सीता का वृतान्त सुनाना आदि का वर्णन है। हनुमान का एक नाम सुन्दर है, इसलिए इसे सुन्दरकाण्ड कहते है। इसमें नायक-नायिका के पुनर्मिलन का शुभ समाचार प्राप्त होता है।

(6) लंकाकाण्ड (128 सर्ग)

इसमें राम-रावण युद्ध, रावण की मृत्यु, विभीषण का राज्याभिषेक, सीता की अग्नि परीक्षा, ब्रह्मा द्वारा राम की स्तुति, सीता सहित राम का अयोध्या लौटना, राम और भरत का समागम, राम का राज्याभिषेक और राम द्वारा प्रजापालन आदि वृतान्त वर्णित है। यह विशाल काण्ड है, इसे युद्धकाण्ड भी कहते है।

(7) उत्तरकाण्ड (111 सर्ग)

सीता निर्वासन से लेकर श्रीराम के महाप्रस्थान तक के वृतान्तों का वर्णन है। इसमें श्रीराम द्वारा किये गये अश्वमेघ यज्ञ का वर्णन मिलता है।

प्रक्षिप्तकाण्ड = बालकाण्ड तथा उत्तरकाण्ड।

रामायण का रचनाकाल = 500 ई. पू.।

रामायण के संस्करण -

(1) **बम्बई संस्करण** : इसे देवनागरी संस्करण भी कहते है। इसका प्रकाशन 1902 ई. में के.पी. परब के सम्पादन में निर्णय सागर प्रेस बम्बई से हुआ था। गीता प्रेस गोरखपुर या वाराणसी से हिन्दी अनुवाद के साथ यही संस्करण प्रकाशित है, यह भारत का सर्वाधिक लोकप्रिय संस्करण है।

(2) **बंगाल संस्करण**।

(3) **काश्मीर संस्करण (पश्चिमोत्तर संस्करण)**

(4) **दाक्षिणात्य संस्करण**। इस प्रकार रामायण के चार प्रसिद्ध संस्करण प्राप्त होते है।

आधुनिक संस्करण

रामायण का आधुनिक संस्करण महाराजसयाजीराव विश्वविद्यालय, बडौदा गुजरात से प्रकाशित हुआ है।

रामायण का आदिकाव्यत्व

भारतवर्ष की साहित्यिक परम्परा में वाल्मीकि को **'आदिकवि'** तथा रामायण **'आदिकाव्य'** कहा गया है। आद्यः कविरस। (उत्तररामचरितम्)

उपजीव्य काव्य के रूप में रामायण

रामायण को आधार मानकर जिन परवर्ती कवियों ने अपने-अपने ग्रन्थों का प्रणयन किया है। उनका संक्षिप्त वर्णन निम्न है -

(क) **महाकाव्य**

कवि	रचनाएं
(1) महाकवि कालिदास	रघुवंश महाकाव्य
(2) महाकवि भट्टि	रावणवधं महाकाव्य
(3) कुमारदास	जानकीहरणम् महाकाव्य
(4) प्रवरसेन	सेतुबन्ध महाकाव्य
(5) कवि अभिनन्द	रामचरितम्
(6) क्षेमेन्द्र	रामायण मंजरी
(7) वामनभट्ट बाण	रघुनाथ अभ्युदय
(8) रघुनाथ	रामायणसार
(9) माधव भट्ट	राघवपाण्डवीय।

(ख) नाटक

कवि	रचनाएं
(1) महाकवि भास	प्रतिमानाटक, अभिषेकनाटक
(2) महाकवि भवभूति	महावीरचरितम्, उत्तररामचरितम्
(3) दिङ्नाग	कुन्दमालानाटक
(4) राजशेखर	बालरामायणनाटक
(5) दामोदर मिश्र	महानाटक
(6) मुरारि	अनर्घराघवनाटक
(7) शक्तिभद्र	आश्चर्यचूडामणिनाटक
(8) जयदेव	अनर्धराघवनाटक
(9) रामभद्र	जानकीपरिणयनाटक
(10) महादेव	अद्‌भुतदर्पणनाटक

(ग) गद्यकाव्य

कवि	रचनाएं
(1) अनन्त भट्ट	कल्पद्रूम मगध काव्य

(घ) चम्पूकाव्य

कवि	रचनाएं	कवि	रचनाएं
(1) भोज	रामायण चम्पू	(2) विश्वनाथ	रामचन्द्र चम्पू
(3) वेंकटाध्वरि	उत्तर चम्पू	(4) अनन्ताचार्य	चम्पूराघव
(5) दिवाकर	अमोघराघव		

(ङ) दूतकाव्य

कवि	रचनाएं	कवि	रचनाएं
(1) वेदान्त देशिक	हंसदूत	(2) वासुदेव	भ्रमर सन्देश
(3) रुद्रवाचस्पति	भ्रमरदूत	(4) वेंकटाचार्य	कोकिल संदेश
(5) कृष्णचन्द्र	चन्द्रदूतम्	(6) हरिशंकर	गीताराघवम्

(च) जैनकाव्य ग्रन्थ

कवि	रचनाएं	कवि	रचनाएं
(1) विमल सूरि	पउम चरिअ	(2) रविषेण	पद्म चरित
(3) गुणभद्र	उत्तरपुराण	(4) हरिदत्त सूरि	राघव नैषधीय

(छ)बौद्ध काव्य ग्रन्थ

कवि	रचनाएं	कवि	रचनाएं
(1) अज्ञात	दशरथजातकम्	(2) अज्ञात	अनामकजातकम्

नोटः- ज्ञानपीठ पुरस्कार से अलंकृत प्रथम संस्कृत मूर्धन्य विद्वान् प्रो. सत्यव्रत शास्त्री ने थाईलैण्ड की रामकथा पर आश्रित संस्कृत महाकाव्य **'श्रीरामकीर्तिमहाकाव्य'** लिखा है।

अन्य रामायण ग्रन्थ

कवि	रचनाएं
(1) रामानन्द	अध्यात्मरामायण,
	अद्‌भुतरामायण,
	अगस्त्य रामायण
	कम्बरामायण (तमिल)
	कृत्तिवास रामायण (तेलगु)
(2) तुलसीदास	रामचरित मानस (तुलसी कृत) (अवधी)

रामायण की टीकाएं

डॉ. आफ्रेक्ट के अनुसार रामायण पर 30 टीकाग्रन्थ प्राप्त होते है।

प्रश्नोत्तर

प्र. 1 आदिकाव्य व आदिकवि है ?
उत्तर रामायण व वाल्मीकि।
प्र. 2 उपजीव्य है ?
उत्तर रामायण, महाभारत, भागवतपुराण।
प्र. 3 रामायण में कितने काण्ड है ?
उत्तर सात काण्ड।
प्र. 4 पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार किन काण्डों को प्रक्षिप्त माना गया है ?
उत्तर बालकाण्ड और उत्तरकाण्ड।
प्र. 5 रामायण में कितने श्लोक है ?
उत्तर 24000 श्लोक।
प्र. 6 चतुर्विंशति साहस्त्री संहिता है ?
उत्तर रामायण।
प्र. 7 रामायण का पहला अक्षर किस मंत्र के प्रथम अक्षर से प्रारम्भ होता है ?
उत्तर गायत्री मंत्र से।
प्र. 8 रामायण के कितने पाठ प्रचलित है ?
उत्तर चार पाठ।
प्र. 9 जैन कवि विमलसूरी ने राम कथा को किस महाकाव्य में निबद्ध किया है ?
उत्तर पउमचरिअ।
प्र. 10 रामायण की सर्वाधिक लोकप्रिय टीका है ?
उत्तर राजाराम वर्मा कृत रामायणतिलक ।
प्र. 11 किस बौद्ध ग्रंथ में रामायण की कथा का उल्लेख मिलता है ?
उत्तर दशरथजातक में।

प्र. 12 रामायण निबद्ध है ?
उत्तर काण्डों में।
प्र. 13 रामायण का प्रथम उपदेश किसने दिया ?
उत्तर नारद ने।
प्र. 14 रामायण का अंगीरस है ?
उत्तर करुणरस।
प्र. 15 रामायण किस छन्द में निबद्ध है ?
उत्तर अनुष्टुप छन्द/श्लोक में।
प्र. 16 रामायण पर आश्रित महाकाव्यों के नाम बताइए ?
उत्तर रघुवंशम् (कालिदास), रावणवधम् (भट्टि)।
प्र. 17 रामायण पर आधारित नाटकों के नाम बताइए ?
उत्तर उत्तररामचरितम्, महावीरचरितम्—महाकवि भवभूति।
प्रतिमानाटक, अभिषेकनाटक—महाकवि भास।
बालरामायण—राजशेखर, प्रसन्नराघव—जयदेव।
हनुमाननाटक, जानकीहरणम-कुमारदास सेतुबन्ध—प्रवरसेन।
प्र. 18 रामायण पर आधारित चम्पूकाव्य बताइए ?
उत्तर भोज कृत चम्पूरामायण।
प्र. 19 रामायण पर आधारित गद्यकाव्य है ?
उत्तर कल्पद्रुमरचना—अनन्त भट्ट।
प्र. 20 रामायण पर आधारित दूतकाव्य है ?
उत्तर मेघदूत।
प्र. 21 रामायण का आधुनिक संस्करण कहां से प्रकाशित हुआ ?
उत्तर बड़ौदा नगर से (गुजरात)।
प्र. 22 रामायण में कौनसे अलंकार है ?
उत्तर उपमा, उत्प्रेक्षा और रूपक अलंकार।
प्र. 23 हेमन्त ऋतु का वर्णन रामायण के किस काण्ड में है ?
उत्तर अरण्य काण्ड में।
प्र. 24 वसन्त ऋतु का वर्णन रामायण के किस काण्ड में है ?
उत्तर किष्किंधा काण्ड में।
प्र. 25 सुन्दर काण्ड में सुन्दर किसका नाम है ?
उत्तर हनुमान जी का।
प्र. 26 राजसूय यज्ञ का वर्णन रामायण के किस काण्ड से प्राप्त होता है ?
उत्तर उत्तरकाण्ड में।
प्र. 27 राम का स्वर्गलोक को प्रस्थान किस काण्ड में मिलता है ?
उत्तर उत्तरकाण्ड में।
प्र. 28 व्याघ्र द्वारा क्रोंच पक्षी का वध किस नदी के तट पर किया गया था ?
उत्तर तमसा नदी के तट पर।

प्र. 29. रामायण के प्रणेता कौन है ?
उत्तर महर्षि वाल्मीकि।
प्र. 30. वाल्मीकि का बाल्यावस्था में क्या नाम था ?
उत्तर रत्नाकर।
प्र. 31. आर्षकाव्य है
उत्तर रामायण तथा महाभारत।
प्र. 32 गायत्रीमन्त्र (के प्रथम अक्षर से लेकर अन्तिम अक्षर तक) श्लोकों का आधार किस ग्रन्थ को प्राप्त हुआ ?
उत्तर रामायण।
प्र. 33. रामायण का प्रथम उपदेश किसने किसको दिया ?
उत्तर नारदमुनि ने महर्षि वाल्मीकि को।
प्र. 34. मा निषाद प्रतिष्ठां–श्लोक रामायण के किस काण्ड में है ?
उत्तर बालकाण्ड।
प्र. 35 लौकिक संस्कृत में व्यवहृत होने वाले सम अक्षर से युक्त अनुष्टुप् छन्द का प्रथम प्रयोग किसने किया?
उत्तर महर्षि वाल्मीकि।
प्र. 36. प्रक्षिप्त काण्ड है ?
उत्तर बालकाण्ड तथा उत्तरकाण्ड।
नोटः- जर्मन विद्वान् याकोबी मूलरामायण में अयोध्याकाण्ड से लेकर युद्धकाण्ड तक पाँच ही काण्ड मानते है।
प्र. 37. अयोध्या का प्राचीन नाम है ?
उत्तर साकेत।
प्र. 38. वाल्मीकि रामायण को किस सम्प्रदाय का उपास्य ग्रन्थ माना गया है ?
उत्तर वैष्णव सम्प्रदाय।
प्र. 39. रामायण का अंगीरस है ?
उत्तर करुण।
प्र. 40. अयोध्या किस नदी के तट पर है ?
उत्तर सरयू।
प्र. 41. राम किस वंश में उत्पन्न हुए थे ?
उत्तर ईक्ष्वाकुवंश।
प्र. 42. रामायण में किसकी प्रधानता है ?
उत्तर धर्म।
प्र. 43. रामायण का बृहद्काण्ड व लघुकाण्ड है ?
उत्तर बृहद्काण्ड–लंकाकाण्ड। लघुकाण्ड–किष्किन्धाकाण्ड।
प्र. 44. सत्य कथन है ?
उत्तर गंगा कथा–बालकाण्ड, हेमन्त ऋतु–अरण्यकाण्ड, प्रस्तवणगिरि–किष्किन्धाकाण्ड।
प्र. 45. रामायण में आयुर्वेद विज्ञान वर्णन किस काण्ड में मिलता है ?
उत्तर युद्धकाण्ड।

प्र. 46. रामायण के नायक-नायिका कौन है ?
उत्तर श्रीराम–सीता।
प्र. 47. त्रेतायुग की प्रमुख रचना है ?
उत्तर रामायण।
प्र. 48. गंगावतरण आख्यान रामायण के किस काण्ड में है ?
उत्तर बालकाण्ड।

महर्षि वेदव्यास प्रणीत महाभारत

लौकिक संस्कृत साहित्य में रामायण के पश्चात् महाभारत का स्थान है यह विश्व साहित्य में सबसे बड़ा ग्रंथ एवं ऐतिहासिक महाकाव्य है। वर्तमान महाभारत एक लाख दो श्लोकों का संग्रह है इसलिए इसे **'शत साहस्त्री संहिता'** भी कहते है। सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ **''श्रीमद्भगवद्गीता''** इसी महाभारत का एक अंश है। इसके अतिरिक्त **'विष्णुसहस्त्रनाम', 'अनुगीता', 'भीष्मस्तवराज', गजेन्द्रमोक्ष'** जैसे आध्यात्मिक तथा भक्तिपूर्ण ग्रन्थ भी इसी के अंश है। इन्हीं पाँच ग्रन्थों को **पंचरत्न** के नाम से पुकारते है। इन्हीं गुणों के कारण महाभारत **'पंचमवेद'** के नाम से विख्यात है । महाभारत के लेखक वेदव्यास है इनके पिता पाराशर ऋषि माता सत्यवती है। वेदव्यास का पालन यमुना के द्वीप में मल्लाओं के राजा दासराज के द्वारा हुआ था। इनको यमुनाद्वीप में जन्म के कारण द्वैपायन, शरीर से कृष्णवर्ण होने के कारण कृष्णमुनि तथा वैदिक मंत्रों को याज्ञिक उपयोग के लिए चार वेदों में विभक्त करने के कारण वेदव्यास कहा गया है। इसके नायक श्री कृष्ण है। इसमें कौरवों और पाण्डवों के बीच हुए उस युद्ध का वर्णन हुआ है जिसमें कौरवों का सर्वनाश हुआ और अन्याय पर न्याय की विजय हुई है। यह ग्रन्थ सदाचार, नीती, लोकव्यवहार तथा गीता जैसे अध्यात्मप्रधान ग्रन्थ का आगार होने के कारण स्फुट ज्ञानप्रधान है।

महाभारत का संक्षिप्त परिचय

महर्षि कृष्ण द्वैपायन बादरायण वेदव्यास प्रणीत महाभारत भारतीय संस्कृति का अनुपम ग्रन्थ है। इसके नायक श्रीकृष्ण ने अनीति पर नीति की विजय दिलाई है। वेदव्यास नें तीन वर्षो तक निरन्तर परिश्रम से महाभारत जैसे ग्रन्थ की रचना की है। जैसा कि वर्णित है-

त्रिभिर्वर्षैः सदोत्थायी कृष्णद्वैपायनोमुनिः।
महाभारतमाख्यानं कृतवान् इदम् उत्तमम्।। (महाभारत 1/56/52)

महाभारत के विषय में स्वीकरोति है कि–**यन्न भारते तन्न भारते।**

धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभः।
यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्।।

महाभारत का शाब्दिक अर्थ है–भारत के लोगों के युद्ध का महान आख्यान। जय, भारत तथा महाभारत की विशाल निधि आज 18 पर्वों एवं एक लाख दो श्लोकों में समुपलब्ध है। इसलिये यह ग्रन्थ **'शत साहस्त्री संहिता'** के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें धर्म, अध्यात्म, इतिहास, भूगोल, आख्यान, नीतिशास्त्र, आचार-विचार आदि समस्त सांस्कृतिक विषयों का ज्ञान समाविष्ट किया गया है। इसके 'महाभारत' कहे जाने की पृष्ठभूमि में विशालता और महत्ता है **महत्त्वाद् भारवत्त्वाच्च महाभारतमुच्यते**। महाभारत से सामान्यतः कौरवों-पाण्डवों के सुप्रसिद्ध महायुद्ध या रक्तपात का आभास होता है परन्तु महाभारत का वास्तविक उद्देश्य है इस भौतिक जीवन की निःसारता को दिखाकर उसे मोक्षमार्ग पर चलने के लिए उत्सुक बनाना। यही कारण है कि काव्यशास्त्र के आचार्यों ने महाभारत को **'शान्तरसप्रधान'** माना है।

महाभारत के संस्करण–

महाभारत के तीन प्राचीन संस्करण है, ये निम्नलिखित हैं–

1. कलकत्ता संस्करण

2. बम्बई संस्करणः- वर्तमान प्रचलित महाभारत का यह संस्करण 1862ई0 में नीलकण्ठी टीका के साथ बम्बई से प्रकाशित हुआ। गीताप्रेस गोरखपुर से यही संस्करण छः खण्डों में सुन्दर हिन्दी अनुवाद के साथ प्रकाशित है।

3.मद्रास संस्करणः- आधुनिक संस्करण- (समीक्षात्मक संस्करण) महाभारत के विभिन्न पाठों के आधार पर एक आलोचनात्मक संस्करण का सम्पादन-प्रकाशन पुणे (महाराष्ट्र) भण्डारकर ऑरिएण्टल रिसर्च इन्सटीट्यूट (BORIC) के तत्वाधान में 24 जिल्दों में हुआ है जो संस्कृत शोध का एक मापदण्ड है। यह संस्करण वैज्ञानिक तथा प्रामाणिक है। सन् 1923 ई0 में विराट पर्व के प्रकाशन से इसका आरम्भ हुआ। इसके सम्पादक उतगीकर थे।

महाभारत का विकास क्रम

महाभारत का विकास क्रमशः जय-भारत तथा महाभारत इस रूप में तीन विविध उद्देश्यों की पूर्ति के लिए पृथक्-पृथक् अवसरों पर हुआ। इनका विवरण इस प्रकार है-

(क) जय -

महाभारत का मूल रूप 'जय' नाम से प्रसिद्ध था। **'जयो नामेतिहासोऽयं श्रोतव्यो विजिगीषुणा।'** महाभारत के मंगल श्लोक में नारायण, नर और सरस्वती को नमस्कार करके 'जय' नामक ग्रन्थ के पाठ का स्पष्ट निर्देश है -

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततोजयमुदीरयेत्।

वर्तमान महाभारत के आदि पर्व के 65 वें अध्याय से 'जय' की सामग्री का आरम्भ हुआ था, जिसमें क्षत्रियों की उत्पत्ति का वर्णन है। जय को 'इतिहास' के नाम से जाना जाता है। इसमें 8800 श्लोक थे- **अष्टौश्लोकसहस्त्राणि, अष्टौश्लोक शतानि च।** वेदव्यास ने इस ग्रन्थ को वैशम्पायन को सुनाया था। इसकी विषयवस्तु धर्म की स्थापना रही है। इस ग्रंथ की रचना व्यास ने कौरवों के ऊपर पाण्डवों की विजय के व्रत को आधार बनाकर की थी इसलिए जय को इतिहास कहा जाता है।

(ख) भारत -

जय के पश्चात् द्वितीयावस्था में प्रकृतग्रन्थ का नाम 'भारत' हुआ। इसमें 24000 श्लोक थे। यह आख्यानों से रहित था। निम्नलिखित स्पष्ट है -

चतुर्विशंतिसाहस्त्रीचक्रेभारतसंहिताम्।
उपाख्यानैर्विना तावद् भारतं प्रोच्यते बुधैः।।

नागयज्ञ के अवसर पर **'भारत'** का प्रवचन वैशम्पायन ने जनमेजय के समक्ष किया था। इसमें 24000 श्लोक है। यह महाभारत के आदिपर्व के 61 वें अध्याय से प्रारम्भ होता है। इसमें भरतवंशीय राजाओं का वर्णन है।

(ग) महाभारत -

अन्तिम व्यवस्था में महाभारत एक लाख दो श्लोकों के रूप में उपलब्ध हुआ–**इदं शतसहस्त्रं तु लोकानां पुण्यकर्मणाम्।** इसका अपर नाम **'शतसाहस्त्रीसंहिता'** प्रसिद्ध हुआ। यह शौनक ऋषि अनुष्ठित (द्वादशवर्षीय यज्ञ) के अवसर पर नैमिषारण्य नामक पवित्र स्थान पर सौति ऋषि ने (भारत को परिवर्धित करके) शौनकादि ऋषियों को सुनाया था।

इस प्रकार महाभारत में 18 पर्व, 18 उपपर्व, (हरिवंशपर्व-परिशिष्ट) 2109 अध्याय तथा 100002 श्लोक है। (बम्बई संस्करण) इसका स्वरूप संवादात्मक तथा प्रतिपाद्य विषय प्रश्नोत्तर शैली में प्रस्तुत है।

महाभारत की कथावस्तु

1. **आदिपर्व :** इसमें चन्द्रवंश का इतिहास तथा कौरव-पाण्डवों की उत्पति का वर्णन है। भीष्म प्रतिज्ञा, अर्जुनविवाह तथा शकुन्तला का आख्यान वर्णित है।
2. **सभापर्व :** इसमें पाण्डवों की दिग्विजय यात्रा, जरासन्ध-वध, युधिष्ठिर द्वारा राजसूय यज्ञ का अनुष्ठान, शिशुपाल-वध एवं द्युतक्रीड़ा, दौपदी चीर हरण का वर्णन है।
3. **वनपर्व :** इसमें पाण्डवों का वनवास, नलोपाख्यान, रामोपाख्यान तथा सावित्रि उपाख्यान का वर्णन है।
4. **विराटपर्व :** इसमें पाण्डवों के अज्ञातवास का वर्णन है। अभिमन्यु उत्तरा का विवाह भी इसी पर्व में मिलता है।
5. **उद्योगपर्व :** इसमें श्रीकृष्ण का दूत बनकर कौरवों की सभा में जाना तथा शान्ति का उद्योग करना वर्णित है। महाभारत युद्ध की प्रस्तावना सम्यक् रूप से उद्योगपर्व में प्राप्त होती है।
6. **भीष्मपर्व :** अर्जुन को गीता का उपदेश, युद्ध का आरम्भ, भीष्म का युद्ध और शरशय्या पर आना तथा उत्तरायण की प्रतीक्षा का इस पर्व में वर्णन है।
7. **द्रोणपर्व :** इसमें अभिमन्यु का वध, द्रौणाचार्य युद्ध और उनका वध आदि का वर्णन है।
8. **कर्णपर्व :** इसमें कर्ण युद्ध और उसका वध तथा दुर्योधन द्वारा सरोवर में प्रवेश करने का वर्णन है।
9. **शल्यपर्व :** इस पर्व की मुख्य घटनाएँ है शल्य का वध, दुर्योधन का गदा युद्ध, उरुभंग आदि। इसमें महाभारत युद्ध के अन्तिम (18) वें दिन के युद्ध का वर्णन है। जब शल्य कौरवों का सेनापति बना था।
10. **सौप्तिकपर्व :** इसमें पाण्डवों के सुप्त पुत्रों का रात्रि में अश्वत्थामा द्वारा वध करने का वर्णन है। **(अश्वत्थामा द्रौपदी पुत्राणां वधः)**
11. **स्त्रीपर्व :** इसमें कुन्ती से युधिष्ठिर को कर्ण के जन्म का वृतान्त ज्ञात, युधिष्ठिर द्वारा स्त्री जाति को शाप, गान्धारी द्वारा कृष्णवंश के विनाश का शाप तथा स्त्री पुरुषों द्वारा अपने सम्बन्धियों को श्रद्धांजलि देने का वर्णन है।
12. **शान्तिपर्व :** इसमें भीष्मपितामह का युधिष्ठिर को मोक्षधर्म तथा राजधर्म का उपदेश वर्णित है। यह महाभारत का सबसे बड़ा पर्व है।
13. **अनुशासनपर्व :** इसमें धर्म तथा नीति से सम्बद्ध अनेक आख्यान एवं उपाख्यान समुपवर्णित है।
14. **आश्वमेधिकपर्व :** इसमें युधिष्ठिर का अश्वमेध यज्ञ करना, अर्जुन द्वारा एक वर्ष तक यज्ञाश्व की रक्षा करने का वर्णन है।
15. **आश्रमवासिकपर्व :** इसमें धृतराष्ट्र आदि का वानप्रस्थ में प्रवेश करने का वर्णन है।
16. **मौसलपर्व :** इसमें यादवों का मूसल के द्वारा विनाश वर्णित है।

17. **महाप्रस्थानिकपर्व**–इसमें पाण्डवों की हिमालय की यात्रा का वर्णन है। हिमालय पर क्रमशः द्रौपदी, सहदेव आदि गिरते जाते है और युधिष्ठिर उनके पतन का कारण बतलाते है। यह सबसे छोटा पर्व है।

18. **स्वर्गारोहण पर्व** : इसमें पाण्डवों का स्वर्ग मे जाना वर्णित है। महाभारत का माहात्म्य, भारत-सावित्री (महाभारत का सार)।

नोट : इन पर्वों के अतिरिक्त महाभारत का हरिवंशपर्व (खिलपर्व) भी है। जिसमें हरि (कृष्ण) के वंश वृष्णि-अन्धक की कथा विस्तार से वर्णित है। भगवान् श्रीकृष्ण का समग्र जीवन चरित प्रकृत पर्व में प्राप्त होता है। इसके तीन खण्ड (पर्व) है-हरिवंशपर्व, विष्णुपर्व तथा भविष्यपर्व।

महाभारत में वर्णित आख्यान-उपाख्यान

1. शकुन्तलोपाख्यान (आदिपर्व)
2. ययाति आख्यान (आदिपर्व)
3. मत्स्योपाख्यान (वनपर्व)
4. रामोपाख्यान (वनपर्व)
5. शिवि उपाख्यान (वनपर्व)
6. सावित्री उपाख्यान (वनपर्व)
7. नलोपाख्यान (वनपर्व)
8. नाग आख्यान (वनपर्व)
9. कपोत लुब्धकोपाख्यान (शान्तिपर्व) (पशु-पक्षी सम्बन्धित आख्यान)
10. अम्बोपाख्यान (उद्योगपर्व)

महाभारत का रचनाकाल -

वर्तमान महाभारत का निर्माण युद्ध के पूर्व युग से सम्बन्धित रहा है। निर्विवाद रूप से महाभारत की रचना ई० पू० पंचम या षष्ठ शती में हुई है।

महाभारत के टीकाग्रन्थ -

महाभारत पर 36 टीकाग्रन्थ प्राप्त होते है। महाभारत के सर्वप्राचीन टीकाकार देवबोध/देवस्वामी है इनकी टीका ज्ञानदीपिका है। सर्वाधिक लोकप्रिय टीकाकार नीलकण्ठ है जिनकी टीका सम्पूर्ण महाभारत पर 'भारतभावदीप' के नाम से प्रकाशित है।

उपजीव्य काव्य के रूप में महाभारत -

महाभारत को आधार मानकर जिन परवर्ती कवियों ने अपनी रचनाओं का प्रणयन किया है। उनका संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है-

(क) महाकाव्य -

कवि	रचनाएं
1. महाकवि भारवि	किरातार्जुनीयम्
2. महाकवि माघ	शिशुपालवधम्
3. महाकवि श्रीहर्ष	नैषधीयचरितम्
4. क्षेमेन्द्र	भारतमंजरी
5. वामनभट्ट बाण	नलाभ्युदय
6. अमरचन्द्रसुरि	बालभारत महाकाव्य (18 पर्व, 44 सर्ग तथा 7000 श्लोक)
7. वस्तुपाल	नरनारायणानन्द

(ख) आंलकारिक काव्य -

कवि	रचनाएं
1. नीतिवर्मन	कींचकवध
2. वासुदेव	युधिष्ठिरविजय

(ग) नाटकग्रन्थ -

कवि	रचनाएं
1. महाकवि भास	दूतघटोत्कच, मध्यमव्यायोग, बालचरितम्, उरुभंग, पंचरात्र, दूतवाक्यम् तथा कर्णभार।
2. महाकवि कालिदास	अभिज्ञानशाकुन्तलम्।
3. भट्टनारायण	वेणीसंहार।
4. राजशेखर	बालभारतम् (प्रचण्डपाण्डव)।
5. कुलशेखर वर्मा	तपतीसंवरणं, सुभद्रा धनञ्जय।
6. वत्सराज	किरातार्जुनीय व्यायोग।

(घ) चम्पूकाव्य -

कवि	रचनाएं
1. त्रिविक्रम भट्ट	नलचम्पू।
2. अनन्त भट्ट	भारतचम्पू।
3. नारयण भट्ट	राजसूयप्रबन्धचम्पू तथा पांचालीस्वयंवरचम्पू।
3. चक्रकवि	द्रौपदीपरिणयचम्पू।

महत्वपूर्ण प्रश्न

प्र. 1 धर्मेचाऽर्थे च कामे च मोक्षे–उपयुक्त श्लोक महाभारत के किस पर्व से सम्बन्धित है ?

उत्तर महाभारत के आदिपर्व से।

प्र. 2 'यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्' उक्ति है ?

उत्तर महाभारत के आदिपर्व से।

प्र. 3 'यन्न भारते तन्न भारते....' कहा गया है ?

उत्तर महाभारत में।

प्र. 4 महाभारत के प्रणेता है ?
उत्तर वेदव्यास।
प्र. 5 वेदव्यास के माता-पिता का नाम बताइए ?
उत्तर माता-सत्यवती, पिता–पाराशर।
प्र. 6 वेदव्यास ने कितने वर्षों में महाभारत की रचना की ?
उत्तर तीन वर्षों में।
प्र. 7 शतसाहस्त्रीसंहिता है ?
उत्तर महाभारत।
प्र. 8 महाभारत में कितने पर्व है ?
उत्तर 18 पर्व।
प्र. 9 महाभारत का सबसे बड़ा व सबसे छोटा पर्व कौनसा है ?
उत्तर बड़ा–शान्तिपर्व, छोटा–महाप्रस्थानिकपर्व।
प्र. 10 महाभारत के कितने संस्करण प्राप्त होते है ?
उत्तर तीन संस्करण।
प्र. 11 गीताप्रेस गोरखपुर से महाभारत का कौनसा संस्करण प्रकाशित है ?
उत्तर मुम्बई संस्करण।
प्र. 12 मुम्बई संस्करण कब प्रकाशित हुआ था ?
उत्तर 1862 में।
प्र. 13 महाभारत का आधुनिक संस्करण है ?
उत्तर पूना संस्करण।
प्र. 14 महाभारत की रचना कितने सोपानों में हुई थी ?
उत्तर तीन सोपानों में।
प्र. 15 महाभारत का मूल किस नाम से प्रसिद्ध है ?
उत्तर जय काव्य।
प्र. 16 महाभारत का वह भाग जिसमें ऐतिहासिक कथावस्तु प्राप्त होती है ?
उत्तर जय में।
प्र. 17 जय में कितने श्लोक है ?
उत्तर 8800 श्लोक है।
प्र. 18 वेदव्यास ने सर्वप्रथम जय ग्रंथ को किसे सुनाया था ?
उत्तर वैशम्पायन को।
प्र. 19 नागयज्ञ किसके द्वारा किया गया था ?
उत्तर जनमेजय के द्वारा।
प्र. 20 वेदव्यास के कितने शिष्य थे ?
उत्तर पांच शिष्य थे।
प्र. 21 महाभारत की द्वितीयवस्था को कहते है ?
उत्तर भारत।

प्र. 22 महाभारत की इस अवस्था में कितने श्लोक प्राप्त होते है ?
उत्तर 24000।
प्र. 23 महाभारत की अन्तिम अवस्था किस आरण्यक में प्राप्त हुई थी ?
उत्तर नैमिषारण्यक में।
प्र. 24 शौनकादि ऋषियों ने महाभारत को किससे ग्रहण किया था ?
उत्तर सौति ऋषि।
प्र. 25 आर्षकाव्य है ?
उत्तर रामायण व महाभारत।
प्र. 26 महाभारत में कितने अध्याय है ?
उत्तर 2109 अध्याय।
प्र. 27 महाकवि कालिदास कृत अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक का आधार कौनसा पर्व है ?
उत्तर आदिपर्व।
प्र. 28 पाण्डव और कौरव जन्मवृतान्त की घटना किस पर्व की है ?
उत्तर आदिपर्व की।
प्र. 29 युधिष्ठिर द्वारा राजसूय यज्ञ का अनुष्ठान महाभारत के किस पर्व में प्राप्त होता है ?
उत्तर सभापर्व में।
प्र. 30 महाकवि माघ कृत 'शिशुपालवधम्' का आधार पर्व है ?
उत्तर सभापर्व।
प्र. 31 महाभारत के किस पर्व में सावित्री उपाख्यान मिलता है ?
उत्तर वनपर्व में।
प्र. 32 इन्द्र द्वारा कर्ण से कवच-कुण्डल लेने का वृतान्त किस पर्व में प्राप्त होता है ?
उत्तर वनपर्व में।
प्र. 33 नलोपाख्यान व रामोपाख्यान किस पर्व से सम्बन्धित है ?
उत्तर वन पर्व से।
प्र. 34 श्री हर्ष द्वारा रचित नैषधीयचरितम् महाकाव्य का आधार पर्व है ?
उत्तर वन पर्व में।
प्र. 35 रामोपाख्यान युधिष्ठिर को सान्त्वना देने के लिए किस मुनि द्वारा सुनाया गया था ?
उत्तर मार्कण्डेय मुनि द्वारा।
प्र. 36 पाण्डवों के अज्ञातवास की घटना का वर्णन किस पर्व में है ?
उत्तर विराट् पर्व में।
प्र. 37 विराट् की पुत्री उत्तरा का विवाह किसके साथ हुआ था ?
उत्तर अभिमन्यु के साथ।
प्र. 38 कींचक वध किसके द्वारा किया गया ?
उत्तर भीष्म के द्वारा।
प्र. 39 कृष्ण द्वारा पाण्डवों के लिए दूत बनकर जाने का वर्णन किस पर्व से प्राप्त होता है ?
उत्तर उद्योग पर्व में।

प्र. 40 काँशीराज की पुत्री अम्बा का हरण किसने किया था ?
उत्तर भीष्म ने।
प्र. 41 अम्बा दूसरे जन्म में किस रूप मे आती है ?
उत्तर शिखण्डी।
प्र. 42 श्रीमद्भगवत्गीता का आधार कौनसा पर्व है ?
उत्तर भीष्म पर्व।
प्र. 43 भीष्म पर्व में कितने दिनों के युद्ध का वर्णन है ?
उत्तर 10 दिन के।
प्र. 44 अभिमन्यु के वध का वृतान्त किस पर्व में प्राप्त होता है ?
उत्तर द्रोणपर्व में।
प्र. 45 वह पर्व जो उपपर्वों में विभाजित नहीं है ?
उत्तर कर्णपर्व।
प्र. 46 कर्ण का सारथी कौन था ?
उत्तर शल्य।
प्र. 47 महाभारत का युद्ध कितने दिन चला था ?
उत्तर 18।
प्र. 48 श्री कृष्ण को वंश के विनाश का शाप किस पर्व में मिलता है ?
उत्तर स्त्रीपर्व में।
प्र. 49 स्त्रियों के विलाप का वर्णन किस पर्व में है ?
उत्तर स्त्रीपर्व में।
प्र. 50 वैष्णवधर्म का वर्णन किस पर्व में प्राप्त होता है ?
उत्तर आश्वमेधिक पर्व में।
प्र. 51 यदुवंश का विनाश किस पर्व में प्राप्त होता है ?
उत्तर मौसलपर्व में।
प्र. 52 महाभारत का सार किस पर्व को कहते है ?
उत्तर स्वर्गारोहणपर्व में।
प्र. 53 महाभारत में कौनसा रस है ?
उत्तर शान्तरस।
प्र. 54 महाभारत का रचनाकाल माना गया है ?
उत्तर 600 ई.पू. से 500 ई.पू.
प्र. 55 महाभारत के रचनाकाल की पुष्टि किस शिलालेख से होती है ?
उत्तर गुप्तकालीन शिलालेख से।
प्र. 56 महाभारत पर आश्रित महाकाव्यों के नाम लिखिए ?
उत्तर कुमारसंभवम्–कालिदास, नैषधीयचरितम्–श्रीहर्ष, किरातार्जुनीयम्–भारवि।

प्र. 57 महाभारत पर आधारित नाटकों के नाम लिखिए ?
उत्तर दूतघटोत्कच, दूतवाक्यम्, कर्णभार, पंचरात्रम्, मध्यमव्यायोग, उरुभंग-भास, बालचरितम्-राजशेखर अभिज्ञानशाकुन्तलम्-कालिदास, वेणीसंहार-भट्टनारायण।
प्र. 58 महाभारत पर आधारित चम्पू ग्रंथ कौनसा है ?
उत्तर नलचम्पू (त्रिविक्रमभट्ट)।
प्र. 59 सर्वप्राचीन चम्पूकाव्य है ?
उत्तर नलचम्पू (त्रिविक्रमभट्ट)।
प्र. 60 महाभारत में किस वंश के इतिहास का वर्णन है?
उत्तर चन्द्रवंश।
प्र. 61 जयाख्यान को कहते हैं?
उत्तर महाभारत।
प्र. 62 श्रीकृष्ण द्वारा कर्ण वृतान्त सुनाया गया था?
उत्तर उद्योगपर्व में।
प्र. 63 शिवसहस्त्रनामस्तोत्र तथा विष्णुसहस्त्रस्तोत्र किस पर्व में मिलता है?
उत्तर अनुशासन पर्व।
प्र. 64 कलियुग का आरम्भ किस राजा से माना गया है?
उत्तर परीक्षित।
प्र. 65 'अहिंसा परमो धर्मः' यह उक्ति है?
उत्तर महाभारत के शान्तिपर्व।
प्र. 66 महाभारत में भीष्म का प्राण त्याग वर्णन किस पर्व में है?
उत्तर अनुशासन पर्व।
प्र. 67 काम्पक वन में वनवास के समय किसने प्रवेश किया था?
उत्तर पाण्डवों ने।
प्र. 68 परीक्षित के पितामह कौन थे?
उत्तर अर्जुन।
प्र. 69 महाभारत में 'पञ्चरत्न' की संज्ञा है?
उत्तर 1. श्रीमद्भगद्गीता, 2. विष्णु सहस्त्रनाम, 3. अनुगीता, 4. भीष्मस्तवराज, 5. गजेन्द्र मोक्ष।
प्र. 70 महाभारत में वर्णित कथाएं प्राप्त होती हैं?
उत्तर
(i) अश्वत्थामा द्वारा द्रौपदी के पुत्रों का वध कथा – सौप्तिक पर्व
(ii) दमयन्ती कथा – वन पर्व
(iii) सावित्री कथा – वन पर्व
(iv) भीष्मनिर्वाण कथा – अनुशासन पर्व
(v) श्रीकृष्ण द्वारा दूतकर्म – उद्योग पर्व

श्रीमद्भगवद्गीता

महाभारत के भीष्मपर्व को आत्मसात् करके भगवान् श्री कृष्ण ने अर्जुन के माध्यम से मानव को कर्तव्याकर्तव्य का नैतिक उपदेश दिया है, वही श्रीमद्भगवद्गीता है। यह 18 अध्यायों एवं 700 श्लोकों में समन्वित है। गीता की महत्ता बतलाते हुए स्वयं भगवान् ने कहा है- **गीता में हृदयं पार्थ**। प्रस्थानत्रयी में गीता का प्रमुख स्थान है। भगवान् के मुख कमल से उक्त होने के कारण इसे श्रीमद्भगवद्गीता कहते है–**या स्वयं पद्मनाभस्य मुख पद्माद्विनिःसृता** (भीष्म पर्व)। गीता का रचनाकाल महाभारत का प्रारम्भिक दिवस है, मार्ग शीर्ष शुक्ला एकादशी को गीता जयन्ती मनाई जाती है। गीता उपनिषदों का सार है–**सर्वोपनिषदा गावो दोग्धा गोपालनन्दनः। पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत्**।। गीता की शैली संवाद तथा प्रश्नोत्तर शैली है। महाभारत के भीष्म पर्व के 25वें अध्याय से 42वें अध्याय तक गीता का उपदेश निहित है। इन अठारह अध्यायों को निम्न नाम से जाना जाता है -

अध्याय का नाम	श्लोक संख्या	अध्याय का नाम	श्लोक संख्या
(1) अर्जुन विषाद योग	47	(2) सांख्ययोग	72
(3) कर्मयोग	43	(4) ज्ञानकर्म सन्यासयोग	42
(5) कर्म सन्यास योग	29	(6) आत्मसंयम योग	47
(7) ज्ञानविज्ञान योग	30	(8) अक्षर ब्रह्म योग	28
(9) राजविद्या राजगुरु योग	34	(10) विभूतियोग	42
(11) विश्वरूप दर्शन योग	55	(12) भक्ति योग	20
(13) क्षेत्र क्षेत्रज्ञ विभाग योग	34	(14) गुणत्रय विभाग योग	27
(15) पुरुषोत्तम योग	20	(16) देवासुर सपद् विभाग योग	24
(17) श्रद्धात्रय विभाग योग	28	(18) मोक्ष सन्यास योग	78

कुल 700 श्लोक।

द्वितीय अध्याय (सांख्ययोग)

श्रीमद्भगवद्गीता के प्रकृत अध्याय में अर्जुन के मोह को सुनकर श्रीकृष्ण के उद्गार वर्णित है। जिसमें क्रमशः सांख्य योग, निष्कामकर्म योग, ज्ञान योग आदि का व्याख्यान वर्णित है। यह अध्याय हमें भौतिक शरीर तथा आत्मा के वैश्लेषिक अध्ययन द्वारा आत्मसाक्षात्कार का उपदेश देता है। श्रीमद्भगवद्गीता के द्वितीय अध्याय का प्रारम्भ संजय के निम्न कथन से होता है- **तं तथा कृपयाविष्टमश्रुपूर्णाकुलेक्षणम्। विषीदन्तमिदं वाक्यमुवाच मधुसूदनः**।। आत्मतत्व के विवेचन में निम्न श्लोकों का सारगर्भित वर्णन मिलता है -

–न जायते म्रियते वा कदाचित्, नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो, न हन्यते हन्यमाने शरीरे।।
–वासांसि जीर्णानि यथा विहाय, नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा, न्यन्यानि संयाति नवानि देही।।
–नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनदहति पावकः।
च चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः।।

अन्त में ब्राह्मी स्थिति से अध्याय के प्रयोजन को बताया है -

एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ नैनाप्राप्य विमुह्यति।
स्थित्वास्यामन्तकालेऽपि ब्रह्म निर्वाणमृच्छति।।

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्र. 1 श्रीमद्भगवद्गीता महाभारत के किस पर्व से उद्धृत है ?
उत्तर भीष्मपर्व से।
प्र. 2 श्रीमद्भगवद्गीता में कितने अध्याय है ?
उत्तर 18 अध्याय।
प्र. 3 श्रीमद्भगवद्गीता का उपजीव्य है ?
उत्तर महाभारत।
प्र. 4 वेदव्यास का पूरा नाम क्या है ?
उत्तर महर्षि कृष्णद्वैपायन बादरायण वेदव्यास।
प्र. 5 श्रीमद्भगवद्गीता में कितने श्लोक है ?
उत्तर 700 श्लोक।
प्र. 6 श्रीमद्भगवद्गीता के द्वितीय अध्याय का अपर नाम है ?
उत्तर सांख्ययोग।
प्र. 7 सांख्ययोग में कितने श्लोक है ?
उत्तर 72 श्लोक।
प्र. 8 भगवान श्रीकृष्ण द्वारा श्रीमद्भगवद्गीता में किसको उपदेश दिया ?
उत्तर अर्जुन को।
प्र. 9 श्रीमद्भगवद्गीता में धृतराष्ट्र को महाभारत के युद्ध का यथार्थ समाचार बताने वाले है ?
उत्तर संजय।
प्र. 10 सांख्य का अभिप्राय है ?
उत्तर शरीर और आत्मा से सम्बन्धित ज्ञान।
प्र. 11 गीता का मुख्य प्रतिपाद्य विषय क्या है ?
उत्तर कर्मयोग।
प्र. 12 गीता में किस कर्म की प्रस्तावना है ?
उत्तर निष्काम कर्म की।
प्र. 13 कर्तव्य से रहित होने वाला श्रीमद्भगवद्गीता का पात्र है ?
उत्तर अर्जुन।
प्र. 14 अर्जुन को युद्ध से मोह भंग क्यों हुआ ?
उत्तर अज्ञान के कारण।
प्र. 15 श्रीमद्भगवद्गीता के द्वितीय अध्याय में किसका उपदेश है ?
उत्तर सांख्य, कर्म और स्थितप्रज्ञ का।
प्र. 16 मधुसूदन गीता में किसके लिए प्रयोग किया है ?
उत्तर भगवान श्री कृष्ण के लिए।
प्र. 17 श्रीमद्भगवद्गीता में कौनसा छन्द है ?
उत्तर अनुष्टुप् छन्द।
प्र. 18 'परमतपः' शब्द का प्रयोग गीता में किसके लिए हुआ है ?
उत्तर अर्जुन के लिए।

प्र. 19 पुरुषार्थ कौन कौन से है ?
उत्तर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष।
प्र. 20 इहलौकिक पुरुषार्थ कौन-2 से है ?
उत्तर धर्म, अर्थ और काम।
प्र. 21 श्रीमद्भगवद्गीता में कायरता रूपी दोष से युक्त पात्र है ?
उत्तर अर्जुन।
प्र. 22 मृत्यु के होने पर या नहीं होने पर कौन शोक नहीं करते है ?
उत्तर पण्डित लोग, विद्वान् लोग।
प्र. 23 कौन अजर-अमर है ?
उत्तर आत्मा।
प्र. 24 सुख-दुःख, लाभ-हानि किसके धर्म है ?
उत्तर शरीर के।
प्र. 25 अर्जुन के लिए भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कौनसा शब्द प्रयुक्त किया है ?
उत्तर पुरुषर्षभ/पार्थ/गुडाकेश।
प्र. 26 श्रीमद्भगवद्गीता पर कौनसे दर्शन का प्रभाव है ?
उत्तर सांख्य दर्शन का।
प्र. 27 'न हन्यते हन्यमाने शरीरे' यहाँ 'न हन्यते' से अभिप्राय है ?
उत्तर आत्मा से।
प्र. 28 'अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो' यह विशेषण है ?
उत्तर आत्मा का।
प्र. 29 'देही' है ?
उत्तर आत्मा।
प्र. 30 सभी सांसारिक शस्त्र कहां निष्प्राय हो जाते है ?
उत्तर आत्मा पर।
प्र. 31 'जिसने जन्म लिया है उसकी मृत्यु निश्चित है और जो मर गया है उसका जन्म होना भी निश्चित है' यह विचार है ?
उत्तर श्रीमद्भगवद्गीता में।
प्र. 32 श्रीमद्भगवद्गीता में धर्म का अभिप्राय है ?
उत्तर कर्त्तव्य।
प्र. 33 पार्थ में प्रत्यय है ?
उत्तर अण् प्रत्यय।
प्र. 34 मृत्यु से भी बढ़कर है ?
उत्तर अपयश।
प्र. 35 'हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्' उक्ति है ?
उत्तर भगवान श्री कृष्ण की।
प्र. 36 बुद्धियोग से अभिप्राय है ?
उत्तर सांख्ययोग, ज्ञानयोग।

प्र. 37 व्यवसायात्मिका बुद्धि से अभिप्राय है ?
उत्तर निश्चयात्मिका बुद्धि।
प्र. 38 'समाधि' शब्द से अभिप्राय है ?
उत्तर परमात्मा, मन की एकात्मकता/एकाग्रता।
प्र. 39 'समत्वयोग' को कौन प्राप्त करता है ?
उत्तर आत्मवान्।
प्र. 40 अप्राप्य वस्तु की प्राप्ति है ?
उत्तर योग।
प्र. 41 'कर्मण्येवाधिकारस्ते..........................' का उपदेश किसने दिया ?
उत्तर श्रीकृष्ण ने।
प्र. 42 प्राप्त वस्तु की रक्षा करना कहलाता है ?
उत्तर क्षेम।
प्र. 43 'समत्वम्' को कहते है ?
उत्तर योग।
प्र. 44 'धनंजय' है ?
उत्तर अर्जुन।
प्र. 45 कर्मों में कुशलता है ?
उत्तर योग।
प्र. 46 जिसकी बुद्धि स्थिर हो जाती है, वह कहलाता है ?
उत्तर स्थितप्रज्ञ।
प्र. 47 स्थितप्रज्ञ का दृष्टांत गीता में किससे दिया गया है ?
उत्तर कूर्म।
प्र. 48 काम से कौन उत्पन्न होता है ?
उत्तर क्रोध।
प्र. 49 क्रोध से कौन उत्पन्न होता है ?
उत्तर मोह।
प्र. 50 मोह से क्या होता है ?
उत्तर यादगार शक्ति का नाश।
प्र. 51 स्मरण शक्ति के विनाश होने से क्या होगा ?
उत्तर सर्वविनाश।
प्र. 52 स्थितप्रज्ञ व्यक्ति के लिए दिन किसके समान है ?
उत्तर रात्रि के समान।
प्र. 53 'ब्राह्मीस्थिति' है ?
उत्तर मोक्षप्राप्ति।
प्र. 54. हृषीकेश कौन है ?
उत्तर श्रीकृष्ण।
प्र. 55. श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार योग की क्या परिभाषा है ?
उत्तर समत्वं योगः उच्यते, योगः कर्मसु कौशलम्।

प्र. 56. गीता पर किसका भाष्य लिखा गया है ?
उत्तर आचार्य शंकर कृत शांकरभाष्य।
प्र. 57. किस योग में जीव की आत्मा से एकता हो जाती है ?
उत्तर ज्ञानयोग।
प्र. 58. गीता में कितने यज्ञों का वर्णन है ?
उत्तर 14 (चौदह)।
प्र. 59. गीता के अध्याय के अन्त में किस शब्द का प्रयोग हुआ है ?
उत्तर योगशास्त्र।
प्र. 60. यस्यां जाग्रति भूतानि या निशा पश्यतो..........? रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए?
उत्तर मुनेः।
प्र. 61. आत्मन्येवात्माना तुष्टः..........तदोच्यते, रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए ?
उत्तर स्थितप्रज्ञः।
प्र. 62. एषा तेऽभिहिता सांख्ये बुद्धियोगात्विमां श्रृणु रेखांकित पद का क्या अर्थ है ?
उत्तर आत्मा तथा शरीर से सम्बन्धित ज्ञान।
प्र. 63. 'जातस्य हि ध्रुवो मृत्यु ध्रुवं जन्ममृतस्य च' से किस दृष्टान्त की अभिव्यक्ति हुई है ?
उत्तर पुनर्जन्म।
प्र. 64. 'नासतोविद्यतेभावोनाभावोविद्यतेसतः' पंक्ति में किस सिद्धान्त की अभिव्यक्ति है ?
उत्तर सांख्यदर्शन के सत्कार्यवाद की ।
प्र. 65. मन की एकाग्रता के लिए किस शब्द का प्रयोग हुआ है ?
उत्तर समाधि।
प्र. 66. इषुभिः प्रतियोतस्या पूजार्हावरिसूदन। यहाँ पूजार्हों से क्या अभिप्राय है ?
उत्तर भीष्म व गुरु द्रोणाचार्य।
प्र. 67. न चैतद् विदमः करन्नो गरीयो पंक्ति है ?
उत्तर श्रीमद्भगवद्गीता।
प्र. 68. यं हि न व्यथयन्त्येते पुरुषं पुरुषर्षभः। समदुःखसुखं धीरं सः कस्मै कल्पते।। यहाँ रेखांकित पद से निर्देश है ?
उत्तर अमृत्वाय।
प्र. 69. हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं, जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्। तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृत निश्चय।। यह कथन किसका है ?
उत्तर श्रीकृष्ण।
प्र. 70. एषा तेऽभिहिता सांख्ये बुद्धि योगेत्विमां श्रृणु। बुद्धया युक्तो यया पार्थ कर्मबन्धं प्रहास्यसि।। यहां सांख्य का क्या अभिप्राय है ?
उत्तर आत्मा व शरीर।
प्र. 71. प्रस्थानत्रयी में गणनीय है ?
उत्तर उपनिषद् / ब्रह्मसूत्र/गीता।
प्र. 72. दार्शनिक चिन्तन के तीन प्रस्थान कौन-कौन है ?
उत्तर श्रौत, सौत्र तथा स्मार्त।

प्र. 73 स्मार्त परम्परा में स्वीकृत ग्रन्थ है ?
उत्तर श्रीमद्भगवद्गीता।
प्र. 74. किस ज्ञान के प्रारम्भ में बीज का नाश नहीं है ?
उत्तर निष्कामकर्मयोग।
प्र. 75. किस कर्म में व्यक्ति लिप्त नहीं होता है ?
उत्तर अनासक्त कर्म।
प्र. 76. श्रीमद्भगवद् गीता के द्वितीय अध्याय में किसका उपदेश है ?
उत्तर सांख्य, कर्म तथा ज्ञान योग।
प्र. 77. गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रसंग्रहैः। या स्वयं सांख्य, कर्म मुखपद्माद्विनिसृताः।। यह कथन है ?
उत्तर महर्षि वेदव्यास ।
प्र. 78. निष्कामकर्मयोग का दूसरा नाम है ?
उत्तर अनासक्ति योग (निष्काम)।
प्र. 79. गीता एक अर्थ है ?
उत्तर दार्शनिक।
प्र. 80. दुःखेषु अनुद्विग्नमनाः सुखेषु स्पृहः। वीतरागभय क्रोधः।। यह किसका लक्षण है ?
उत्तर स्थिति धीः।
प्र. 81. 'इद्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यः' यह किसका लक्षण है ?
उत्तर स्थितप्रज्ञः।
प्र. 82. स्मृतिभ्रंशाद् कि भवति ?
उत्तर बुद्धिनाश।
प्र. 83. या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति............?
उत्तर संयमी।
प्र. 84. विहाय कामान् यः सर्वान् पुमांश्चरति निस्पृहः। निर्ममो निरहंकार स शान्तिमधिगच्छति।। प्रस्तुत श्लोक में किसका निर्देश है ?
उत्तर स्थितप्रज्ञ/ब्रह्मवेता।
प्र. 85. एषा....................स्थितिः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति। रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए ?
उत्तर ब्राह्मी।
प्र. 86. श्रीमद्भगवद्गीता का वक्ता कौन हे ?
उत्तर संजय।
प्र. 87. भगवान् श्रीकृष्ण ने मोहित अर्जुन को जो उपदेश दिया, वह किस नाम से प्रसिद्ध है ?
उत्तर श्रीमद्भगवद्गीता।
प्र. 88. ब्राह्मीस्थिति है ?
उत्तर मोक्षप्राप्ति।
प्र. 89. सुमेलित है -
उत्तर– आदि पर्व का प्रतिपाद्य विषय - चन्द्रोवंशोत्पत्ति। भीष्म पर्व का प्रतिपाद्य विषय - गीतोपदेश। शान्तिपर्व का प्रतिपाद्य विषय-मोक्षोपयोगी उपदेश।

महाकाव्यकवि–अश्वघोष, कालिदास, भारवि, माघ तथा श्रीहर्ष

महाकाव्य का उद्भव

श्रव्यकाव्य परम्परा के अन्तर्गत पद्यकाव्य की गणना की जाती है। इसमें महाकाव्य विधा का विवेचन प्राप्त होता है। **कवेः कर्मकाव्यम्** अर्थात् कवि के कर्म को काव्य कहते है। काव्य की उत्पति कु (धातु) से हुई है, जिसका अर्थ है–ध्वनि करना। अतः शब्दों के द्वारा किसी विषय का चित्रण करना काव्य हैं महाकाव्य का उद्भव ऋग्वेद के आख्यान सूक्तों, इन्द्रादि के स्तुतिमन्त्रों नाराशांसी की गाथाओं से हुआ है। भारतीय परम्परानुसार महर्षि पाणिनि संस्कृत के प्रथम काव्यकार है। उनके महाकाव्य है- (1) **जाम्बवती विजय**, (2) **पातालविजय**।

- संस्कृत साहित्य में वाल्मीकि को आदिकवि और उनकी रामायण को आदिकाव्य माना जाता है। क्रौञ्चवध की घटना से शोक श्लोक के रूप में उत्पन्न हुआ, तत्पश्चात् महाकाव्य की सृष्टि हुई-

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतः समाः।
यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्।। (बालकाण्ड)

-महर्षि वेदव्यास कृत महाभारत की रचना हुई, जिसका महत्व अन्यतम है।
-रामायण एवं महाभारत दोनों ग्रन्थ परवर्ती काव्यों के लिए उपजीव्य रहे हैं।
-वररुचि कृत स्वर्गारोहण या कण्ठाभरण महाकाव्य है।
-पतंजलि द्वारा रचित महाकाव्य महानन्दकाव्य है।

इसके पश्चात् विकासकाल अलंकृत महाकाव्य के अन्तर्गत -

(1) महाकवि अश्वघोष कृत–बुद्धचरितं, सौन्दरनन्दम् महाकाव्य।
(2) महाकवि कालिदास कृत–कुमारसम्भवं, रघुवंशम् महाकाव्य।
(3) महाकवि भारवि प्रणीत–किरातार्जुनीयं महाकाव्य।
(4) महाकवि भट्टि कृत–रावणवधं महाकाव्य।
(5) महाकवि कुमारदास कृत–जानकीहरणं।
(6) महाकवि माघ कृत–शिशुपालवधं महाकाव्य।

तदुपरान्त अपकर्षकाल के महाकाव्य तथा ऐतिहासिक महाकाव्य आते है तदन्नतर आधुनिक महाकाव्यों की महत्ता गणनीय होती है।

महाकाव्य के लक्षण

आचार्य भामह ने काव्यालंकार में, दण्डी ने काव्यादर्श में, अग्निपुराणकार ने अग्निपुराण में, रुद्रट ने काव्यालंकार में तथा विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण में महाकाव्य के वर्णनात्मक लक्षण दिये है। विश्वनाथ कृत साहित्य दर्पण में वर्णित महाकाव्य के शास्त्रीय लक्षण इस प्रकार है।

(1) **सर्गबन्धो महाकाव्यम्** अर्थात् जिसमें परिच्छेद रूप सर्गों का निबन्धन रहता है, उसे महाकाव्य कहते है।
(2) **तत्रैको नायकः सुरः। सद्वंशः क्षत्रियोंवापि धीरोदात्त गुणान्वितः। एकवंशभवा भूपाः कुलजा बहवोऽपि वा।।** अर्थात् महाकाव्य में धीरोदात्त गुणों से युक्त देवता विशेष नायक होता है। यथा–शिशुपालवधम् में कृष्ण, कुमारसम्भव में शिव, रघुवंश में श्रीराम। अथवा धीरोदात्त गुणों से युक्त (नैषध में नल) सत्कुलीन एक क्षत्रिय नायक होता है। अपि से यह ध्वनि होता है कि क्षत्रिय से भिन्न अन्य जातीय भी नायक हो सकते है परन्तु धीरोदात्त गुणों से युक्त होना आवश्यक है।
(3) **श्रृंगार वीर शान्तानामेकोऽङ्गी रसेश्यते। अङ्गानि सर्वेऽपि रसाः।।** अर्थात् श्रृंगार, वीर और शान्तरस में से कोई एक रस होता है। यथा- नैषध में श्रृंगार, शिशुपालवध में वीर तथा महाभारत में शान्त। **श्रृंगार वीर शान्तानाम्** यह बहुवचन उपलक्षण मात्र है, अतः करुण रस का भी ग्रहण हो जाता है। जैसे- रामायण में करुणरस।

(4) **सर्वेनाट्यसन्धयः** अर्थात् नाटकीय पंचसन्धियों से युक्त इसकी कथावस्तु रहती है।
(5) **इतिहासोद्भर्ववृत्तमन्यद्वासज्जनाश्रयम्। चत्वारस्तस्य वर्गाः स्युः तेष्वेकं च फलं भवेत्।** इसमें ऐतिहासिक जीवन चरित्र रहता है। पुरुषार्थ चतुष्ट्य में से एक वर्ग की फल प्राप्ति होती है।
(6) **आदौ नमस्क्रियाशीर्वा वस्तुनिर्देश एव वा अर्थात् महाकाव्य के प्रारम्भ में नमस्कारात्मक, आशीर्वादात्मक या वस्तुनिर्देशात्मक** मंगलाचरण होता है।
(7) **क्वचिद् निन्दा खलादीनां सतां च गुण कीर्तनम्।** अर्थात् दुर्जनादि की निन्दा एवं सज्जनों की प्रशंसा रहती है।
(8) महाकाव्य में सर्ग एक ही छन्द में निबद्ध रहते है किन्तु सर्ग समाप्ति में भिन्न छन्द का प्रयोग होता है।
(9) महाकाव्य में सर्गो की न्यूनतम संख्या आठ होती है। महाकाव्य में सर्ग की कथावस्तु न तो अल्प होती है और न हि दीर्घ।
(10) सर्गान्त में भावि कथा का वर्णन मिलता है।
(11) महाकाव्य में निम्नलिखित विषयों का यथासाध्य वर्णन रहता है- सन्ध्या, सूर्य, चन्द्र, रात्रि, अन्धकार, दिन, प्रभात, मृगया, पर्वत, ऋतु वनादि। संयोग श्रृंगार और वियोग श्रृंगार, मुनि, स्वर्ग, नगर, यज्ञ, युद्ध आदि का चित्रण।
(12) सर्गों का नाम कथानक के आधार पर होना चाहिए। जैसे- शिशुपालवधम् का प्रथम सर्ग कृष्णनारद संवाद।
(13) (क) ऋषि प्रणीत महाकाव्य में सर्ग का नाम आख्यान। जैसे–महाभारत ।
(ख) प्राकृत में सर्ग को आश्वास। जैसे–सेतुबन्ध।
(ग) अपभ्रंश भाषा में सर्ग को कुडवक। जैसे -कर्णपराक्रम।
प्रकृत लक्षण सामान्यतः महाकाव्यों में प्राप्त होते है।

(1) महाकवि अश्वघोष

(1) बुद्धचरितं महाकाव्य, (2) सौन्दरनन्दमहाकाव्य, (3) शारिपुत्रप्रकरण तथा (4) राष्ट्रपालनाटक।

कवि परिचय

अश्वघोष महान धर्म प्रचारक दार्शनिक तथा उच्चकोटी के विद्वान् थे। ये मूलरूप से साकेत के निवासी थे परन्तु सम्राट कनिष्क से सम्पर्कता के कारण पेशावर में रहने लगे थे। इनकी माता का नाम सुवर्णाक्षी था परन्तु पिता का नाम ज्ञात नहीं है। अश्वघोष सर्वास्तिवादी आचार्य पार्श्व के शिष्य थे। इनका समय ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी रहा है।

(1) बुद्धिचरितं महाकाव्य

यह अश्वघोष कृत 28 सर्गों का एक महाकाव्य है किन्तु **संस्कृत में 14वें सर्ग के 32वें श्लोक** तक का भाग मिलता है। चीनी और तिब्बती भाषा में सम्पूर्ण महाकाव्य का अनुवाद सुरक्षित है। जिनके आधार पर ई.एच. जॉनस्टन ने इसका अंग्रेजी में अनुवाद कर प्रकाशित करवाया। इस अनुवाद पर आश्रित हिन्दी रूपान्तर को आधार बनाकर जबलपुर के पं. रामचन्द्रदास शास्त्री ने सम्पूर्ण बुद्धचरितं को संस्कृत में रूपान्तरित किया है।

बुद्धचरितम् का चीनी अनुवाद (फो-शो-हिंग-त्सन-किंग) धर्मक्षेत्र नामक भारतीय भिक्षु ने 414 ई. से 421 ई. के मध्य किया था। यह अनुवाद चीनी त्रिपिटक के एक संस्करण (ताई-सो-इसाइक्यों) में प्राप्त है। इसका तिब्बती अनुवाद क्षितीन्द्रभद्र एवं मतिराज ने सातवीं-आठवीं शताब्दी में किया था। **संस्कृत में प्राप्त बुद्धचरित बुद्ध के जन्म से लेकर बुद्धत्व की प्राप्ति** तक का ही वर्णन करता है। शेष भाग धर्मचक्रप्रवर्तन से लेकर बुद्ध के महापरिनिर्वाण एवं अशोक के द्वारा स्तूप तक का वर्णन है।

महाकाव्य की सर्गानुसार संक्षिप्त कथावस्तु निम्न प्रकार से है -

प्रथम सर्ग - सिद्धार्थ का जन्म।
द्वितीय सर्ग - अन्तःपुर विहार।
तृतीय सर्ग - रोगी तथा बुद्ध आदि को देखकर संवेग की उत्पत्ति।
चतुर्थ सर्ग - स्त्रियों द्वारा सिद्धार्थ को मोहने की चेष्टा तथा सिद्धार्थ द्वारा उनकी उपेक्षा।
पंचम सर्ग - सिद्धार्थ का घर से अभिनिष्क्रमण।
षष्ठ सर्ग - सिद्धार्थ को छोड़कर सारथी छन्दक का नगर आना।
सप्तम सर्ग - गौतम का तपोवन प्रवेश।
अष्टम सर्ग - अन्तः पुर की नारियों का विलाप।
नवं सर्ग - कुमार का अन्वेषण।
दशं सर्ग - बिम्वसार का आगमन।
एकादश सर्ग - काम की निन्दा।
द्वादश सर्ग - सिद्धार्थ का अराड ऋषि के आश्रम में जाना तथा धर्मोपदेश ग्रहण करना।
त्रयोदश सर्ग - मार (कामदेव) का बुद्ध की तपस्या में विघ्नोत्पादन, दोनों का युद्ध तथा मार की पराजय।
चतुर्दश सर्ग- बुद्धत्व की प्राप्ति।

नोट–चौदहवें सर्ग के प्रथम 32 पद्य तक ही संस्कृत में बुद्धचरित मिला है, जबकि इस सर्ग के अनुवादों में 108 श्लोक है।

अनुवाद मात्र में प्राप्त सर्गों का कथानक इस प्रकार है -

पंचदश सर्ग- धर्मचक्र परिवर्तन।
षोडश सर्ग - अनेक शिष्यों की दीक्षा।
सप्तदश सर्ग - महाशिष्यों की प्रव्रज्या।
अष्टादश सर्ग- अनाथ पिण्डद की दीक्षा।
एकोनविंशति सर्ग- पिता पुत्र समागम।
विंशति सर्ग - जेतवनस्वीकार
एकविंशति सर्ग - प्रव्रज्यास्त्रोत वर्णन।
द्वा विंशति सर्ग- गौतम का आम्रपाली के उपवन में जाना।
त्रयोविंशति सर्ग- आयु पर अधिकार करने के प्रकार का वर्णन।
चतुर्विंशति सर्ग- लिच्छिवियों पर गौतम की अनुकम्पा।
पंचविंशति सर्ग- निर्वाण पथ पर गौतम का अभियान।
षट्विंशति सर्ग- महापरिनिर्वाण।
सप्तविंशति सर्ग- निर्वाण की प्रशंसाा।
अष्टविंशति सर्ग- धातु विभाजन एवं स्तूपों का निर्माण।

(2.) सौन्दरनन्द महाकाव्य

यह अश्वघोष रचित पूर्णतः संस्कृत भाषा में उपलब्ध महाकाव्य है। इस महाकाव्य पर श्रीमद्भगवद्गीता का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। शान्तरस प्रधान इस महाकाव्य का नायक नन्द तथा नायिका सुन्दरी है। इसमें 18 सर्ग है। जिनमें बुद्ध द्वारा अपने सौतेले भाई नन्द को उनकी पत्नी सुन्दरी के प्रेमपाश से मुक्त करके विलासमय जीवन से धर्म में दीक्षित किये जाने का वर्णन है। इसके 16वें सर्ग में चार आर्य सत्यों का वर्णन किया गया है। महाकाव्य में उपमालंकार की प्रचुरता है। भगवान् बुद्ध का जन्म 'कपिलवस्तु' है, जो नेपाल में है। सूर्यनारायण चौधरी ने 1948 में इसे हिन्दी अनुवाद के साथ प्रकाशित किया था।

प्रश्नोतर

प्र. 1. बुद्धचरितम् महाकाव्य का सम्पूर्ण अनुवाद किस भाषा में प्राप्त होता है ?
उत्तर - चीनी तथा तिब्बती।
प्र. 2. बुद्धचरितम् महाकाव्य के कितने सर्ग संस्कृत भाषा में प्राप्त हुए है ?
उत्तर - 14वाँ सर्ग के 32वें श्लोक तक।
प्र. 3. महाकवि के नाम से प्रसिद्ध कवि है ?
उत्तर - अश्वघोष।
प्र. 4. भगवान् बुद्ध किस श्रेणी के नायक है ?
उत्तर - धीरप्रशान्त।
प्र. 5. ललितविस्तर किस धर्म से सम्बन्धित ग्रन्थ है ?
उत्तर - बौद्धधर्म।
प्र. 6. बुद्धचरितम् महाकाव्य का उपजीव्य ग्रन्थ है ?
उत्तर - ललितविस्तर।
प्र. 7. बुद्धचरितम् का प्रमुख रस है ?
उत्तर - शान्त।
प्र. 8. छन्दक पात्र से युक्त रचना है ?
उत्तर - बुद्धचरितम्।
प्र. 9. बुद्धचरितम् में कितने सर्ग है ?
उत्तर - 28।
प्र. 10. लिच्छिविवंश का वर्णन किस महाकाव्य में है ?
उत्तर - बुद्धचरितम्।
प्र. 11. राष्ट्रपालनाटक के प्रणेता कौन है ?
उत्तर - महाकवि अश्वघोष
प्र. 12. अश्वघोष बौद्धधर्म की किस शाखा को मानने वाले है ?
उत्तर - महायान शाखा।
प्र. 13. पाश्चात्य विद्वानों ने बुद्धचरितम् महाकाव्य का उपजीव्य किसे स्वीकार किया ?
उत्तर - महापरिनिर्वाण सूत्र।
प्र. 14. बुद्ध के बचपन का क्या नाम था ?
उत्तर - सिद्धार्थ।

प्र. 15. अश्वघोष की शैली किस महाकाव्य से प्रेरित रही है ?
उत्तर - रामायण एवं महाभारत।
प्र. 16. सिद्धार्थ का पारिवारिक परिचय क्या है ?
उत्तर - माता-गौतमी, पिता-शुद्धोधन, मौसी-मायादेवी (पालनकत्री), पत्नी-यशोधरा, पुत्र-रोहसेन।

महाकवि कालिदास

(1) कुमारसम्भव महाकाव्य (2) रघुवंश महाकाव्य

कुमारसम्भव महाकाव्य

प्रस्तुत महाकाव्य महाकवि कालिदास का प्रथम महाकाव्य है। इसका उपजीव्य महाभारत है। शिवपुराण में भी इसकी कथावस्तु का भाव मिलता है। कुमारसंभव महाकाव्य में कवि ने शिव पार्वती का विवाह, कुमारकार्तिकेय का जन्म एवं उनके द्वारा तारकासुर वध की कथा को चित्रित किया है। महाकाव्य में यद्यपि 17 सर्ग है परन्तु प्रथम 8 सर्गों को ही कालिदास की रचना माना जाता है। मल्लिनाथ की संजीवनी टीका वस्तुतः सप्तम सर्गों तक ही प्राप्त होती है, अष्टम सर्ग पर उनकी टीका दोष युक्त है।

कुमारसम्भव महाकाव्य का नायक कार्तिकेय है क्योंकि तारकासुर के संहार का मूल प्रयोजन उसे ही प्राप्त होता है। भगवान् शिव-पार्वती को प्रकृत महाकाव्य का नायक-नायिका के रूप में भी स्वीकार किया जाता है। महाकाव्य का प्रतिनायक तारकासुर है। कुमारसम्भव का अंगीरस शृंगार है। इसमें वैदर्भीरीति, प्रसादगुण, अर्थालंकार (उपमा, उत्प्रेक्षा, अर्थान्तरन्यास) का प्रयोग हुआ है। इसकी भाषा परिष्कृत एवं मुहावरेदार है।

प्रकृत महाकाव्य का प्रारम्भ हिमालय के वर्णन से तथा अन्त तारकासुर का वध एवं इन्द्र की स्वर्ग राज्य प्राप्ति से हुआ है। तपःफलोदय नामक पंचम सर्ग में तपस्या द्वारा पार्वती की मनोरथ सिद्धि का वर्णन करके महाकवि ने तपोवन एवं तपस्या में अपना विश्वास प्रकट किया है। धर्म, अर्थ एवं काम में कवि ने धर्म (कर्मफल) को महाकाव्य में प्रस्तुत किया है क्योंकि असुरवृत्ति का विनाश ही जनकल्याणकारी है।

सूक्तिवचन

(1) **अनन्तपुष्पस्य मधोर्हि चूते द्विरेफ माला सविशेषसंग।**
विभिन प्रकार के पुष्पों के होते हुए भी वसन्त ऋतु की भ्रमर पंक्ति आम्र कुसुम में ही विशेष रूचि रखती है।

(2) **प्रियेषु सौभाग्यफला हि चारुता।**
सुन्दरता वही है, जिसके द्वारा प्रियतम को सुख मिले।

(3) **न धर्मवृद्धेषु वयः समीक्ष्यते।**
धर्म में बढ़े हुए व्यक्तियों की आयु नहीं देखी जाती है।

(4) **शरीरमद्यं खलु धर्मसाधनम्।**
शरीर वास्तव में धार्मिक कार्यों को करने में मुख्यतः सहायक है।

(5) **न रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत्।**
रत्न खोज नहीं करता वह तो खोजा जाता है।

(6) **मनोरथानामगतिः न विद्यते।**
इच्छाओं की विफलता नहीं होती है।

(7) **न कामवृत्तिर्वचनीयमीक्षते।**
इच्छा के अनुसार कार्य करने वाला व्यक्ति बदनामी की परवाह नहीं करता है।

(8) **कः करं प्रसारयेत् पन्नगरत्न सूचये।**
कौन साँप की मणि की नोक को लेने के लिए हाथ प्रसारित करेगा।

(9) **द्विशन्ति मन्दाश्चरितं महात्मनाम्।**
मूर्ख व्यक्ति महात्माओं के चरित्र से शत्रुता करते है।

(10) **हि पुनर्नवता क्लेशः फलेन विधत्ते।**
फल मिल जाने से परिश्रम नवीनता उत्पन्न करता है।

प्रश्नोत्तर

प्र. 1. शिव-पार्वती से सम्बन्धित महाकाव्य है ?
उत्तर– कुमारसम्भव महाकाव्य।
प्र. 2. कुमारसम्भव महाकाव्य में कितने सर्ग है ?
उत्तर– सत्रह।
प्र. 3. अष्ट सर्गात्मक महाकाव्य है ?
उत्तर– कुमारसम्भव महाकाव्य।
प्र. 4. मदनदाह से सम्बन्धित महाकाव्य है ?
उत्तर– कुमारसम्भव महाकाव्य।
प्र. 5. कुमारसम्भव के पंचम सर्ग में किसकी तपस्या का वर्णन है ?
उत्तर– पार्वती।
प्र. 6. पंचम सर्ग में महाकवि ने किस छन्द का प्रयोग किया है ?
उत्तर– वंशस्थ।
प्र. 7. अपर्णा कौन है ?
उत्तर– पार्वती।
प्र. 8. तपः फलोदय सर्ग है ?
उत्तर– पंचम सर्ग।
प्र. 9. लघुत्रयी में गणनीय है ?
उत्तर– कुमारसम्भव, रघुवंश तथा मेघदूत।
प्र. 10. अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा, हिमालयो नाम नगाधिराजः।
पूर्वापरौ तयोनिधीवगाह्य, स्थितः पृथिव्या इव मानदण्ड।। कुमारसम्भव के इस मंगलाचरण में कौनसी श्रेणी है ?
उत्तर - वस्तुनिर्देशात्मक।
प्र. 11. नारद द्वारा शिव-पार्वती विवाह का वर्णन किस सर्ग में है ?
उत्तर– प्रथमसर्ग।
प्र. 12. पार्वती ने जिस शिखर पर तपस्या की थी, उसका नाम था ?
उत्तर– गौरी शिखर।

प्र. 13. पौराणिक महाकाव्य है ?
उत्तर - कुमारसम्भव महाकाव्य।
प्र. 14. कुमारसम्भव का उपजीव्य है ?
उत्तर - महाभारत, शिवपुराण।
प्र. 15. पंचाग्नि तप किस ऋतु में होता है ?
उत्तर - ग्रीष्म ऋतु।
प्र. 16. पौराणिक युग का नायक है ?
उत्तर - शिव।
प्र. 17. कार्तिकेय का जन्म किस सर्ग में मिलता है ?
उत्तर - गर्भ में आना दसवें सर्ग में तथा जन्म एकादश सर्ग में।
प्र. 18. कुमारसम्भव का अंगीरस है ?
उत्तर - शृंगार।
प्र. 19. कुमारसम्भव का प्रतिनायक कौन है ?
उत्तर - तारकासुर।
प्र. 20. रति-विलाप कुमारसम्भव महाकाव्य के किस सर्ग में प्राप्त होता है ?
उत्तर - चतुर्थ सर्ग।
प्र. 21. भगवान शिव किस श्रेणी के नायक है ?
उत्तर– धीरोदात्त नायक।
प्र. 22. 'स्कन्द' कौन है ?
उत्तर - कार्तिकेय।
प्र. 23. पार्वती के माता-पिता कौन है ?
उत्तर - माता-मेना, पिता-हिमालय, (भाई-मैनाक)।
प्र. 24. पार्वती की तपश्चर्या व शिव द्वारा परीक्षा किस महाकाव्य में प्राप्त होती है ?
उत्तर- कुमारसम्भव के पंचमसर्ग में।
प्र. 25. प्रेम के कारण होने वाली 'अनंगदशा' कितनी है ?
उत्तर - दस।
प्र. 26. कुमारसम्भव का शाब्दिक अर्थ है ?
उत्तर - कुमार (कार्तिकेय) की संभव (उत्पत्ति)।
प्र. 27. कुमारसम्भव के किस सर्ग में शिवपार्वती के विवाह का वर्णन है ?
उत्तर - सप्तम सर्ग।
प्र. 28. कुमारसम्भव पर मल्लिनाथ की कौनसी टीका मिलती है ?
उत्तर - संजीवनी टीका।
प्र. 29. कुमारसम्भव महाकाव्य में वर्णित किन्हीं पाँच सूक्तियों को लिखिए -
उत्तर - (1) **कठिनाः खलु स्त्रियः।**
(2) **नववैधव्यमसह्यवेदनम्।**
(3) **पुत्रोत्सवोमायति का न हर्षात्।**
(4) **शशिना सह याति कौमुदी।**
(5) **विकार हेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि तम् एव धीराः।**

रघुवंश महाकाव्य

महाकवि कालिदास प्रणीत रघुवंश महाकाव्य द्वितीय महाकाव्य है। वीररस प्रधान प्रकृत महाकाव्य का उपजीव्य रामायण तथा पद्मपुराण है। महाकाव्य में 19 सर्ग तथा 1569 पद्य है। रघुवंश महाकाव्य का प्रारम्भ सृष्टि उत्पत्ति से मनुवंश में उत्पन्न हुए राजा दिलीप की कथा से तथा अन्त अग्निवर्ण नामक राजा की मृत्यु से होता है। इसमें 31 सूर्यवंशी राजाओं का वर्णन है। इस महाकाव्य में यद्यपि विस्तार की दृष्टि से श्रीराम का वर्णन अधिक सर्गों में है तथापि प्रारम्भिक राजाओं में अनन्य राज्य विस्तार करने वाले रघु के नाम पर कवि ने इसे रघुवंश का शीर्षक दिया है। रघुवंश महाकाव्य के नायक श्रीराम तथा नायिका सीता है। रघुवंश का षष्ठ सर्ग उत्कृष्ट सर्ग है क्योंकि 'इन्दुमती स्वयंवर' का वर्णन है, यथा -

सञ्चारिणी दिपशिखेव रात्रौ, यं यं व्यतीयाय पतिंवरा सा।
नरेन्द्र मार्गाट्ट इव प्रपेदे, विवर्णभावं स स भूमिपालः।।

इसी आधार पर 'दीपशिखा कालिदास' की उपाधि से महाकवि अलंकृत हुए है।

महाकाव्य में रघुवंशियों की प्रशंसा, दिलीप के द्वारा नन्दिनी की सेवा, रघु का जन्म, रघु की दिग्विजय, रघु द्वारा विश्वजित् यज्ञ, कौत्स को चौदह करोड़ स्वर्ण मुद्राएं दान, इन्दुमती स्वयंवर, अज और इन्दुमती का विवाह, अज विलाप, श्रवणकुमार का वध, दशरथ द्वारा पुत्रेष्टि यज्ञ, सीता स्वयंवर रामादि का विवाह, राम वनवास, सीता हरण, रावणवध तक की कथा 12 वें सर्ग तक पूर्ण होती है। तत्पश्चात् कवि ने गंगा-यमुना का संगम वर्णन, सीता परित्याग, सीता की स्वर्णमूर्ति, अश्वमेध यज्ञ, लवणासुर का वध, कुश-लव का जन्म, शम्बूकवध, अग्निवर्ण की कामुकता एवं मृत्यु का चित्रण किया है।

सूक्तिवचन

(1) **स्ववीर्यगुप्ता हि मनोः प्रसूतिः।**
मनु से उत्पन्न सन्तान अपने पराक्रम से रक्षा करने में समर्थ होती है।
(2) **तेजसां हि न वयः समीक्षते।**
तेजस्वियों की आयु नहीं देखी जाती है।
(3) **प्रसाद चिह्नाह्मानि पुरः फलानि।**
प्रसन्नता के लक्षण फल प्राप्ति के सूचक है।
(4) **अल्पस्यहेतोर्बहुहातुमिच्छन् विचारमूढः प्रतिभासि में त्वम्।**
किंचित् वस्तु के कारण अधिक छोड़ने की इच्छा वाले आप मुझे मूर्ख प्रतीत होते हो।
(5) **न पादपोन्मूलन शक्ति रहः शिलोच्चये मूर्च्छति मारुतस्य।**
वृक्षों को उखाडने की शक्ति वाला वायु पर्वत की शिला नहीं हिला सकता है।

प्रश्नोत्तर

प्र. 1. लक्षित महाकाव्य है ?
उत्तर - रघुवंश ।
प्र. 2. रघुवंश में कितने सर्ग है ?
उत्तर - 19।
प्र. 3. रघुवंश में कितने पद्य है ?
उत्तर - 1569 पद्य।
नोटः- सर्वाधिक 12वें सर्ग में 104 पद्य तथा न्यूनतम 18वें सर्ग में 53 पद्य।

प्र. 4. रघुवंश में किस छन्द का सर्वाधिक प्रयोग हुआ है ?

उत्तर - उपजाति 578 पद्य।

प्र. 5. रघुवंश महाकाव्य का उपजीव्य है ?

उत्तर - रामायण व पद्मपुराण।

प्र. 6. तीन तकारों का चित्रण किस महाकाव्य में मिलता है?

उत्तर - रघुवंश महाकाव्य।

प्र. 7. रघुवंश महाकाव्य का समय है ?

उत्तर - 150 वि.स. से 475 वि.स.।

प्र. 8. रघुवंश के किस सर्ग में गो-सेवा का वर्णन मिलता है ?

उत्तर– द्वितीय सर्ग ।

प्र. 9. रघुवंश में कौनसा मंगलाचरण है ?

उत्तर - नमस्कारात्मक। वागर्थाविव संपृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये। जगतः पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ।।

प्र. 10. रघुवंश महाकाव्य का अंगीरस है ?

उत्तर - वीररस।

प्र. 11. राजा दिलीप ने नन्दिनी की कितने दिनों तक सेवा की थी ?

उत्तर - 21 दिनों तक।

प्र. 12. रघुवंश के द्वितीय सर्ग में कौनसा छन्द है ?

उत्तर - उपजाति।

प्र. 13. कौत्स किसका शिष्य था ?

उत्तर - वरतन्तु।

प्र. 14. इन्दुमती-स्वयंवर महाकाव्य के किस सर्ग में है ?

उत्तर - षष्ठ सर्ग।

प्र. 15. रघुवंश महाकाव्य के किस सर्ग में राष्ट्रियता का परिचय मिलता है ?

उत्तर - त्रयोदश सर्ग।

प्र. 16. अज विलाप महाकाव्य के किस सर्ग में उपलब्ध होता है ?

उत्तर - अष्टम सर्ग।

प्र. 17. रघुवंश महाकाव्य का वह सर्ग जिसमें ब्रह्मचारी कौत्स का वृतान्त मिलता है ?

उत्तर - पंच ा सर्ग।

प्र. 18. राजा दिलीप की पत्नी का क्या नाम है ?

उत्तर - सुदक्षिणा।

प्र. 19. राजा दिलीप के पुत्र का क्या नाम था ?

उत्तर - रघु।

प्र. 20. रघु को पुत्र प्राप्ति का वरदान किसने दिया था ?

उत्तर - ब्रह्मचारी कौत्स।

प्र. 21. रघु के पुत्र का क्या नाम था ?

उत्तर - अज।

प्र. 22. अज के पुत्र का क्या नाम था ?

उत्तर - दशरथ।

प्र. 23. वसन्त ऋतु का वर्णन रघुवंश महाकाव्य के किस सर्ग में मिलता है ?

उत्तर - नवं सर्ग।

प्र. 24. रघुवंश के किस सर्ग में गंगा-यमुना संगम का वर्णन है ?

उत्तर - त्रयोदश सर्ग में।

प्र. 25. अतिथि किस महाकाव्य का पात्र है?

उत्तर - रघुवंश।

प्र. 26. रघुवंश में किस गुण का अभाव है ?

उत्तर - ओज गुण।

प्र. 27. रघुवंशी राजा मूलतः किस वंश के माने जाते है ?

उत्तर - मनुवंशी।

प्र. 28. सुनन्दा कौन थी ?

उत्तर - इन्दुमती की सखी।

प्र. 29. वागर्थाविव में कौनसा अलंकार है ?

उत्तर - उपमा अलंकार।

प्र. 30. रघुवंश महाकाव्य के द्वितीय सर्ग में कितने श्लोक है ?

उत्तर - 76।

प्र. 31. कुम्भोदर कौन था ?

उत्तर - शिव सेवक।

प्र. 32. रघुवंश महाकाव्य पर कितने टीकाग्रन्थ लिखे गये है ?

उत्तर - 40।

प्र. 33. रघुवंश के किस सर्ग में प्रभात-गीत का वर्णन है ?

उत्तर - पंचम सर्ग।

प्र. 34. क्व सूर्य प्रभवो वंशः क्व चाल्प विषया मतिः। तितीर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम्॥ श्लोक किस महाकाव्य से है

उत्तर - रघुवंश महाकाव्य।

प्र. 35. 'श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत्' पंक्ति किस ग्रन्थ से है ?

उत्तर - रघुवंश महाकाव्य।

महाकवि भारवि

कवि परिचय

विचित्र मार्ग या कलावादी महाकवि भारवि धारानगर के निवासी थे। इनका समय 550 ई. से 620 ई. के मध्य माना गया है। इनकी माता का नाम सुशीला तथा पिता का नाम श्रीधर था। भारवि दण्डी के प्रपितामह थे और उनका वास्तविक नाम दामोदर था। अवन्तीसुन्दरीकथा के अनुसार भारवि के पिता का नाम नारायण स्वामी था। इनकी पत्नी का नाम रसिका या रसिकवती है। इनके पुत्र का नाम 'मनोरथ' है। इनका जन्म कुशिक गौत्र में हुआ था। चालुक्य वंश के राजा विष्णुवर्धन से इनकी मित्रता हो गई और यह उन्हीं के सभा पण्डित बन गये है। भारवि शिवोपासक थे, इसलिए इन्हें महाशैव भी कहा जाता है।

किरातार्जुनीयम् महाकाव्य

महाकवि भारवि कृत किरातार्जुनीयम् महाकाव्य उनकी एकमात्र रचना है। इसका कथानक महाभारत के वन पर्व पर आधारित है। वीर रस प्रधान इस महाकाव्य में अठारह सर्ग है। इसका नायक अर्जुन तथा प्रतिनायक किरातवेशधारी शिव है। वनवासकाल में अर्जुन द्वारा कौरवों पर विजय प्राप्ति के लिए हिमालय पर्वत पर जाकर तपस्या करने, किरात वेश में आये हुए शिव से युद्ध करने एवं प्रसन्न हुए शिव से पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति की मुख्य कथा इसमें निरूपित है। इसीलिए इसका शीर्षक 'किरातार्जुनीय' है। महाकाव्य में कवि ने वस्तुनिर्देशात्मक मंगलाचरण किया है–

श्रियः कुरुणामधिपस्य पालनीं, प्रजासु कुरुणामयुङ्क्तवेदितुम्।
स वर्णिलिंगी विदितः समाययौ, युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः।।

महाकाव्य का प्रारम्भ 'श्री' शब्द से हुआ है तथा प्रत्येक सर्ग का अन्त 'लक्ष्मी' शब्द से हुआ है।

सूक्तिवचन

(1) **हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः।**
हित करने वाले मन को अच्छे लगने वाले वचन दुर्लभ होते है।

(2) **सतां हि वाणी गुणमेव भाषते।**
सज्जनों की वाणी निश्चय ही गुण युक्त होती है।

(3) **न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः।**
हित चाहने वाला मिथ्या प्रिय बोलने की अभिलाषा नहीं रखता है।

(4) **वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः।**
सज्जनों के साथ किया गया विरोध भी श्रेष्ठ होता है।

(5) **अहो दुरन्ता बलवद् विरोधिता।**
बलवान व्यक्तियों से विरोध करने पर अन्त तो कष्टकर होगा ही।

(6) **विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः।**
निश्चय ही मनोवृत्ति विशेष स्वरूप वाली होती है।

(7) **गुणानुरोधेन विना न सत्क्रियाम्।**
अतिशय सत्कार बिना सत्क्रिया के नहीं होता।

(8) **प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः।**
मुझ जैसे लोगो की बातें तो केवल परिस्थिति की सूचना मात्र होती है।

(9) **अमर्षशून्येन जनस्य जन्तुना, न जात हार्देन न विद्विषादरः।**
क्रोध शून्य व्यक्ति का न मित्र हि आदर करता है, और न शत्रु ही उससे डरता है।

(10) **तेजो विहीनं विजहाति दर्पम्।**
तेज रहित व्यक्ति गर्व से युक्त कैसे होगा।

(11) **निराश्रया हन्त हता मनस्विता।**
स्वाभिमानिता आश्रय रहित होकर मर गई।

(12) **वसन्ति हि प्रेम्णि गुणा न वस्तुनि।**
प्रेम में गुण बसते है, किसी भौतिक पदार्थ में नहीं।

(13) **प्रकृतिः खलु सा महीयस सहते नान्य समुन्नतिं यया।**
बड़े राजाओं का यह स्वभाव है, जिसके कारण वे दूसरों के अभ्युदय को सह नहीं पाते।

(14) **आत्मवर्गहितमिच्छन्ति सर्वः।**
सभी लोग अपने वर्ग का हित चाहते है।

(15) **सहसा विदधीत न क्रियाम्।**
बिना विचारे कोई काम नहीं करना चाहिए।

(16) **व्रजन्ति ये मूढधियः पराभवं भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः।**
जो व्यक्ति दुष्टों के साथ दुष्टता का व्यवहार नहीं करते है। वे निश्चय ही अपमान को प्राप्त होते है।

प्रश्नोत्तर

प्र. 1. किरातार्जुनीयम् के प्रणेता कौन है ?
उत्तर - महाकवि भारवि।

प्र. 2. अलंकृत काव्य शैली के जनक कौन है ?
उत्तर - महाकवि भारवि।

प्र. 3. किरातार्जुनीयम् में कौनसा मंगलाचरण है ?
उत्तर - वस्तुनिर्देशात्मक।

प्र. 4. किराताजुीयम् का आरम्भ किस शब्द से होता है ?
उत्तर - श्रियः।

प्र. 5. किरातार्जुनीयम् में 'वर्णीलिंगी' किसके लिए प्रयुक्त हुआ है ?
उत्तर - वनेचर।

प्र. 6. वनेचर किस वन में आया था ?
उत्तर - द्वैतवन।

प्र. 7. किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में किस छन्द का प्रयोग हुआ है?
उत्तर - वंशस्थ।

प्र. 8. 'अर्थगौरव' के लिए प्रसिद्ध अलंकार प्रयुक्त होता है ?
उत्तर - अर्थान्तरन्यास।

प्र. 9. न विव्यथे तस्य मनो न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छति मृषा हितैषिणः।। यह कथन किसका है ?
उत्तर - वनेचर।

प्र. 10. 'चारेक्षण' है ?
उत्तर - राजा।

प्र. 11 न विव्यथे तस्य मनो न हि प्रियं, प्रवक्तुमिच्छति मृषा हितैषिणः।। में कौनसा अलंकार है ?
उत्तर - अर्थान्तरन्यास।

प्र. 12. स सौष्ठवौदार्य विशेषशालिनीं, विनिश्चितार्थामितिवाचमाददे।। पंक्ति में भारवि की कौनसी विशेषता प्रस्तुत हुई है ?
उत्तर - अर्थगौरव।

प्र. 13. सदानुकूलेषु हि कुर्वतेरतिं, नृपेष्वमात्येषु च ....? रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए?
उत्तर - सर्वसम्पदः।

प्र. 14. निसर्गदुर्बोध विक्लवा, क्व भूपतीनां चरितं क्व जन्तवः। यहाँ 'जन्तवः' शब्द का संकेतित अर्थ है ?

उत्तर - वनेचर।

प्र. 15. दुरोदरच्छद्मजितां समीहते, नयेन जेतुं जगतीं ....। रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए ?

उत्तर - सुयोधन।

प्र. 16. गुणनुरागादिव सख्यमीयिवान्, न बाधतेऽस्य त्रिगणः परस्परम्। यहाँ 'त्रिगण' शब्द से क्या अभिप्राय है?

उत्तर - धर्म-अर्थ-काम।

प्र. 17. किरातार्जुनीयम् महाकाव्य का अंगीरस है ?

उत्तर - वीररस।

प्र. 18. 'किरातार्जुनीयम्' शब्द में कौनसा समास है ?

उत्तर - द्वन्द्व।

प्र. 19. 'किरातार्जुनीयम्' में प्रत्यय है ?

उत्तर - छ।

प्र. 20. 'कृष्णासदनं' का वर्णन किस काव्य में है ?

उत्तर - किरातार्जुनीयम्।

प्र. 21. व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं, भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः। प्रस्तुत पंक्ति में द्रौपदी का कथन युधिष्ठिर को किस ओर प्रेरित करता है ?

उत्तर - युद्ध हेतु।

प्र. 22. 'विचित्ररूपाः खलु चित्तवृतयः' यह कथन किसका है ?

उत्तर - द्रौपदी।

प्र. 23. किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में कितने पद्य है ?

उत्तर - 46।

प्र. 24. 'नारिकेल फल सम्मित वचोभारवेः' यह कथन किसका है ?

उत्तर - मल्लिनाथ।

प्र. 25. ननोननुन्नो नुन्नोनो नानानानानना ननु।
नुन्नोऽनुन्नो ननुन्नेनो नानेनानुन्नन्ननुत्।। प्रस्तुत श्लोक किस ग्रन्थ से है ?

उत्तर - किरातार्जुनीयम्।

प्र. 26. किरातार्जुनीयम् महाकाव्य में कितने सर्ग है ?

उत्तर - 18।

प्र. 27. कलावादी कवि है ?

उत्तर - भारवि।

प्र. 28. किरात कौन है ?

उत्तर - शिव।

प्र. 29. किरातार्जुनीयम् में कितने पद्य है ?

उत्तर - 1030।

प्र. 30. किरातार्जुनीयम् महाकाव्य का उपजीव्य है ?

उत्तर - महाभारत वनपर्व।

प्र. 31 स्फुटता न पदैरपाकृता न च न स्वीकृतमर्थगौरवम्।
रचिता पृथगर्थता गिरां न च सामर्थ्यमपोहितं क्वचित्।।
प्रस्तुत पद्य में कवि ने अपनी किस विशेषता को अभिव्यक्त किया है ?

उत्तर - अर्थगौरव।

प्र. 32. किरातार्जुनीयम् का नायक कौन है ?

उत्तर - अर्जुन।

प्र. 33. लक्ष्म्यन्त महाकाव्य है ?

उत्तर - किरातार्जुनीयम्।

प्र. 34. अर्जुन किस श्रेणी का नायक है ?

उत्तर- धीरोदात्त।

प्र. 35. किरातार्जुनीयम् का अंगीरस है ?

उत्तर - वीररस।

प्र. 36. घण्टापथ टीका मल्लिनाथ कृत किस काव्य पर प्राप्त होती है ?

उत्तर - किरातार्जुनीयम्।

प्र. 37. पाषाणत्रय के नाम से प्रसिद्ध महाकाव्य है ?

उत्तर - किरातार्जुनीयम्।

प्र. 38. उत्फुल्लस्थलनलिनी वनादपुष्पमुद्धृतः सरसिजसम्भवः परागः।
वात्याभिर्वियतिविर्तितः समन्तादाधते कनकमातपत्र लक्ष्मीम्।। महाकवि को यहाँ उपाधि प्राप्त हुयी है ?

उत्तर - आतपत्र।

प्र. 39. महाकवि भारवि का समय माना गया है ?

उत्तर - 550 ई. से 620 ई. के मध्य।

प्र. 40. पाशुपत अस्त्र प्राप्ति की कथा किस काव्य में प्राप्त होती है ?

उत्तर - किरातार्जुनीयम्।

प्र. 41. अर्जुन ने तपस्या किस पर्वत पर की थी ?

उत्तर - इन्द्रकील (हिमालय)।

प्र. 42. बृहत्त्रयी में आद्य गणनीय हे ?

उत्तर - किरातार्जुनीयम्।

नोटः- किरातार्जुनीयम्, शिशुपालवधम्, नैषधीयचरितम्।

प्र. 43. चार उपाय कौन-2 से है ?

उत्तर - साम-दान-दण्ड-भेद।

प्र. 44. दुर्योधन किसके पराक्रम का स्मरण करके दुःखी होता है ?

उत्तर - अर्जुन।

प्र. 45. अर्जुन को पाशुपत अस्त्र की प्रेरणा किसने दी है ?

उत्तर- वेदव्यास।

प्र. 46. द्रौपदी के अनुसार युधिष्ठिर का मार्ग कौनसा है ?

उत्तर - मनस्विगर्हित।

प्र. 47. सत्य कथन है ?

उत्तर- वृकोदर-भीमसेन, वासवोपम-इन्द्र, यमौ-नकुल/सहदेव।

प्र. 48. वनवास में पाण्डव कहाँ निवास करते थे ?
उत्तर - द्वैतवन।
प्र. 49. दुरोदरच्छद्मजितां पद में 'दुरोदर' किसे कहा गया है ?
उत्तर - द्यूतक्रीड़ा।
प्र. 50. वनेचर ने इद्धशासन शब्द का प्रयोग किसके लिए किया है ?
उत्तर - दुर्योधन।
प्र. 51. किरातार्जुनीयम् में दुर्योधन की तुलना किससे की गई है ?
उत्तर - उरग।
प्र. 52. किरातार्जुनीयम् के किस सर्ग में यमक अलंकार की प्रचुरता है ?
उत्तर– पंचमसर्ग।
प्र. 53. भारवि किस गुण के लिए प्रसिद्ध है ?
उत्तर - अर्थगौरव।
प्र. 54. किरातार्जुनीयम् का वह सर्ग जिसमें चित्रालंकारों की प्रचुरता है ?
उत्तर– पंचदश सर्ग।
प्र. 55. किरातार्जुनीयम् महाकाव्य का क्या उद्देश्य है ?
उत्तर - पाशुपतास्त्र की प्राप्ति।
प्र. 56. किरातार्जुनीयम् में एकाक्षर अलंकारों की संख्या है ?
उत्तर - सात।

(4) महाकवि माघ

कवि परिचय

शिशुपालवध महाकाव्य के अन्त में जो कविवंशवर्णन दिया गया है। उसके अनुसार माघ के पितामह सुप्रभदेव थे जो राजा वर्मलात या (श्रीवर्मल) के सर्वाधिकारी अर्थात् दीवान् थे। सुप्रभदेव के पुत्र का नाम 'दत्तक' था। इन्हें 'सर्वाश्रय' भी कहते है। इन्हीं के पुत्र महाकवि 'माघ' है। माघ की माता का नाम ब्राह्मी था। महाकवि माघ का निवास स्थान 'श्रीमाल' या भिन्नमाल नामक नगर था। यह नगर अभी माउन्ट आबू से 40 मील पूर्व जोधपुर मण्डल में स्थित है जो जालौर जिले के निकट स्थित है। माघ का समय 650 ई. से 700 ई. के मध्य माना गया है। महाकवि सूर्य-उपासक एवं वैष्णव सम्प्रदाय से सम्बन्ध रखते है।

शिशुपालवध महाकाव्य

यह महाकवि की एकमात्र जगत् प्रसिद्ध रचना है। इसमें 20 सर्ग है जिसमें 1650 पद्य है। अन्तिम पाँच पद्यों में कवि ने अपना परिचय दिया है। वीर रस प्रधान इस महाकाव्य के नायक श्रीकृष्ण तथा प्रतिनायक शिशुपाल है। महाभारत का सभापर्व अध्याय 35 से 43, भागवतपुराण का दशमस्कन्ध अध्याय 71 से 75 इसका उपजीव्य है। इस रचना का आरम्भ व अन्त 'श्री' शब्द से होता है।

इसकी कथावस्तु के अन्तर्गत संक्षेप में वर्णित है कि देवर्षि नारद द्वारा इन्द्र का संदेश द्वारकापुरी में श्रीकृष्ण को मिलता है। जिसमें शिशुपाल के अत्याचार से जगत् की रक्षा की प्रार्थना है। श्रीकृष्ण को इसी समय राजसूय-यज्ञ में आने का युधिष्ठिर प्रेषित पत्र मिलता है। इस कर्तव्य संकट की स्थिति में कृष्ण बलराम और उद्धव से मन्त्रणा करते है। बलराम तो शिशुपाल पर आक्रमण का प्रस्ताव देते है किन्तु उद्धव बडी विवेचना से

यह स्थापित करते हैं कि युधिष्ठिर के यज्ञ में सेना सहित जाना उचित होगा। वहीं दुष्टता करने पर शिशुपाल को मारा जाये।

तदनुसार कृष्ण इन्द्रप्रस्थ के लिए प्रस्थान करते है। मार्ग में विविध दृश्यों को देखते हुए वहाँ पहुंचते है। यज्ञ में भीष्म द्वारा श्रीकृष्ण का सम्मान होने पर शिशुपाल कुपित होता है और उनके प्रति अशिष्ट व्यवहार करता है। कृष्ण उसका वध कर देते है। महाकवि ने रैवतक पर्वत की उपमा हाथी से एवं उसके दोनों ओर लटकते हुए सूर्य-चन्द्रमा की उपमा घण्टों से दी है। इसी कारण इन्हें 'घण्टामाघ' की उपाधि से अलंकृत किया है। यथा-

उदयति विततोर्ध्व-रश्मि-रज्जा, वहिमरुचौ हिमधाम्नि याति चास्तम्।
वहति गिरिरयं विलम्बिघण्टा, द्वयपरिवारित वारणेन्द्रलोलाम्।। (4/22 शि.व.)

सूक्तिवचन

(1) **गृहानुपैतुं प्रणयादभीप्सवो भवन्ति नापुण्यकृतां मनीषिणः।**
महात्मा लोग अपुण्यात्माओं के घर पर प्रेम से आना नहीं चाहते है।

(2) **श्रेयसि केन तृप्यते।**
मंगलमय कार्य में कौन तृप्त हो सकता है।

(3) **सदाभिमानैकधना हि मानिनः।**
मनस्वी लोगों का एकमात्र धन स्वाभिमान होता है।

(4) **ज्ञातसारोऽपि खल्वेकः सन्दिग्धे कार्य वस्तुनि।**
सारभूत तत्व को जानने पर भी अकेला व्यक्ति अपने कर्तव्य के निर्धारण में संशय युक्त रहता है।

(5) **सर्वः स्वार्थं समीहते।**
सभी लोग अपना स्वार्थ देखते है।

(6) **महीयांसः प्रकृत्या मितभाषिणः।**
बडे लोग स्वभाव से ही कम बोलते है।

(7) **क्रियासमभिहारेण विराध्यन्तं क्षमेत कः।**
बार-बार विरोध करने वाले को कोई नहीं सह सकता है।

(8) **समय एव करोति बलाबलम्।**
समय के प्रभाव से ही व्यक्ति बलवान व निर्बल होता है।

(9) **परिभवोऽरिभवो हि सुदुःसहः।**
शत्रु से उत्पन्न पराजय अत्यधिक सुदुःसह होता है।

(10) **भवति महत्सु न निष्फलः प्रयासः।**
महापुरुषों की सेवा का कोई भी प्रयास व्यर्थ नहीं होता है।

(11) **क्षणे-क्षणे यन्नवतामुपैति तदेवरूपं रमणीयतायाः।**
जो प्रत्येक क्षण में नवीन हो वही सुन्दरता का स्वरूप है।

(12) **नैवात्मनीनमथवा क्रियते मदान्धैः।**
मद से अन्धे लोग अपना हित नहीं कर सकते।

(13) **शास्त्रं हि निश्चितधियां क्व न सिद्धिमेति।**
निश्चित बुद्धि वाले व्यक्तियों का शास्त्र सर्वत्र सफल होता है।

(14) **मन्दोऽपि नाम न महानवगृह्य साध्यः।**
बलवान व्यक्ति मूर्ख भी क्यों न हो, उसे बलपूर्वक वश में नहीं किया जा सकता है।
(15) **बृहत्सहाय कार्यान्तं क्षोदीयानपि गच्छन्ति।**
बड़े व्यक्तियों की सहायता से छोटे व्यक्ति भी कार्य को पूर्ण कर लेते है।

प्रश्नोत्तर

प्र. 1 शिशुपालवधम् महाकाव्य में मंगलाचरण किस श्रेणी का है ?
उत्तर - वस्तुनिर्देशात्मक। श्रियः पतिः श्रीमति शास्तुिं, जगज्जगन्निवासो वसुदेव सद्मनि। वसन्दर्शावतरन्तमम्बरात्, हिरण्यगर्भांग भुवं मुनिं हरिः।।
प्र. 2. शिशुपालवधम् महाकाव्य का मंगलाचरण किस शब्द से है ?
उत्तर - श्रियः।
प्र. 3. शिशुपालवधम् में मुख्य रस है ?
उत्तर - वीररस।
प्र. 4. शिशुपालवधम् महाकाव्य के नायक है ?
उत्तर - श्रीकृष्ण।
प्र. 5. युधिष्ठिर ने कौनसा यज्ञ किया था ?
उत्तर - राजसूय।
प्र. 6. श्रीकृष्ण के लिए इन्द्र के सन्देश का मूल भाग क्या है ?
उत्तर - शिशुपाल का वध।
प्र. 7. शिशुपाल पूर्वजन्म में क्या था ?
उत्तर - हिरण्यकश्यप और रावण।
प्र. 8. दाददो दुद्दुद्दी दादादो दूददीददोः।
दुद्दादं ददे दुद्दे ददाऽददोऽददः।। प्रस्तुत श्लोक किस महाकाव्य से है ?
उत्तर - शिशुपालवधम्।
प्र. 9. शिशुपाल कहाँ का राजा था ?
उत्तर - चेदि प्रदेश।
प्र. 10. रैवतक पर्वत का वर्णन कौनसे महाकाव्य में है ?
उत्तर - शिशुपालवधम् (पंचम सर्ग)।
प्र. 11. राजस्थान के प्रसिद्ध महाकवि है ?
उत्तर - महाकवि माघ।
प्र. 12. प्रभातवर्णन किस महाकाव्य में है ?
उत्तर - शिशुपालवधम् (एकादश सर्ग)।
प्र. 13. वह कृति जिसमें तीनों गुण विद्यमान है ?
उत्तर - शिशुपालवधम्।
प्र. 14. बृहत्त्रयी में गणनीय महाकाव्य है ?
उत्तर - किरातार्जुनीयम्, शिशुपालवधम्, नैषधीयचरितम्।

प्र. 15. शिशुपालवधम् महाकाव्य में कितने सर्ग है ?
उत्तर - 20।
प्र. 16. शिशुपालवधमहाकाव्य पर मल्लिनाथ की टीका है ?
उत्तर - सर्वकषा।
प्र. 17. शिशुपालवधमहाकाव्य पर संदेह विषौषधि टीका किसने लिखी थी ?
उत्तर - वल्लभदेव।
प्र. 18. श्रयन्त महाकाव्य है ?
उत्तर - शिशुपालवधमहाकाव्य।
प्र. 19. शिशुपालवधमहाकाव्य का इतिवृत्त है ?
उत्तर - ऐतिहासिक।
प्र. 20. शिशुपालवधमहाकाव्य का उपजीव्य है ?
उत्तर - महाभारत का सभापर्व।
प्र. 21. अलंकृत शब्दों के उद्भावक कवि है ?
उत्तर - महाकवि माघ।
प्र. 22. दकार युक्त पद्य किस कवि का है ?
उत्तर - महाकवि माघ।
प्र. 23. राजसूय यज्ञ में किसकी पूजा हुई थी ?
उत्तर - श्रीकृष्ण।
प्र. 24. शिशुपालवधमहाकाव्य के प्रथम व द्वितीय सर्ग में कितने श्लोक है ?
उत्तर - प्रथम–75, द्वितीय–113।
प्र. 25. माघकाव्य है ?
उत्तर - शिशुपालवधम्।
प्र. 26. नवपलाशपलाशवनं पुरः....... किस महाकाव्य से है ?
उत्तर - शिशुपालवधम्।
प्र. 27. 'बलावेपादधुनापि पूर्ववत् प्रबाध्यते' प्रस्तुत पद्य किस महाकाव्य से उद्धत है ?
उत्तर - शिशुपालवधम्।
प्र. 28. महाकवि माघ में विद्यमान तीन गुण कौन-कौन से है ?
उत्तर - उपमा, अर्थगौरव, पदलालित्य।
प्र. 29. श्रीकृष्ण किस प्रकृति के नायक है ?
उत्तर - धीरोदात्त
प्र. 30. शिशुपालवधमहाकाव्य का प्रतिनायक है ?
उत्तर - शिशुपाल।
प्र. 31. महाकवि माघ का अपर नाम है ?
उत्तर - घण्टामाघ।
प्र. 32. माघ का जन्मस्थान है ?
उत्तर - भीनमाल।

प्र. 33. शिशुपालवधमहाकाव्य में कितने श्लोक है ?
उत्तर - 1650।
प्र. 34. शिशुपालवधमहाकाव्य के प्रथम सर्ग में किसका वर्णन है ?
उत्तर - नारद के आगमन का।
प्र. 35. शिशुपालवधमहाकाव्य के मंगलाचरण में किसकी स्तुति है ?
उत्तर - श्रीकृष्ण।
प्र. 36. 'नवानधोऽधो बृहतः पयोधरान्' उद्धृत है ?
उत्तर - शिशुपालवधम्।
प्र. 37. अनुत्सूत्रपदन्यासा सद्वृत्तिः सन्निबन्धना।
शब्द विद्येव नो भाति राजनीतरपस्पशा।। किस महाकाव्य से उद्धृत है ?
उत्तर - शिशुपालवधम्।
प्र. 38. शिशुपाल का तेजपुंज विजयी कृष्ण में मिलने का वृतान्त किस सर्ग में है ?
उत्तर- 20 वें सर्ग में।
प्र. 39. **विभावि विभवी भावी विभाभावी विवो विभीः।**
भवाभिभावी भावावो भवाभावो भुवो विभुः।। प्रस्तुत श्लोक किस महाकाव्य से है ?
उत्तर - शिशुपालवधमहाकाव्य।
प्र. 40. बुद्धिशस्त्रः प्रकृत्यंगों धनसंवृत्तिकंचुकः।
चारेक्षणों दूतमुखः पुरुषः कोऽपि पार्थिवः।। पद्य किस महाकाव्य से उद्धृत है ?
उत्तर - शिशुपालवध महाकाव्य।
प्र. 41. माघ की न्यूनता है ?
उत्तर - शिशुपालवध का कथानक एक महाकाव्य की रचना के लिए पर्याप्त नहीं है।
प्र. 42. महाकवि माघ की कर्मस्थली है ?
उत्तर - भीनमाल।
प्र. 43. महाकवि माघ के विषय में वर्णित उपलब्ध प्रशस्तवचन लिखिए -
उत्तर - **क. नवसर्गगते माघे नव शब्दो न विद्यते**
ख. मेघे माघेगतं वयः।
ग. माघे सन्ति त्रयो गुणाः।
घ. काव्येषु माघः कवि कालिदासः।
ङ. तावद्भा भारवेर्भाति यावन्माघस्य नोदयः।
प्र. 44. पद्म पुराण के किस अध्याय में शिशुपालवध की कथा का उल्लेख है ?
उत्तर - 252वें अध्याय में।
प्र. 45. नारद की वीणा का क्या नाम था ?
उत्तर - महती।

शिशुपालवधमहाकाव्यम् (प्रथम सर्ग)

प्रश्न 1- श्रियः पतिः श्रीमति शासितुं जगत्जगन्निवासो वसुदेवसद्मनि पंक्ति में मङ्गलाचरण है ?
उत्तर- वस्तुनिर्देशात्मक।

प्रश्न 2- हिरण्यगर्भाङ्गभुव मुनि है ?
उत्तर- नारद।
प्रश्न 3- देवर्षि नारद का वर्ण है ?
उत्तर- पाण्डु वर्ण अर्थात् गौर वर्ण।
प्रश्न 4- चित्रल मृग के चर्म को धारण करने वाले है ?
उत्तर- नारद।
प्रश्न 5- स्फटिकाक्ष माला को धारणकर्ता है ?
उत्तर- नारद।
प्रश्न 6- नारद की वीणा का क्या नाम था ?
उत्तर- महती।
प्रश्न 7- पदं महेन्द्रालयचारुचक्रिणः पंक्ति में किसके राजभवन का संकेत है ?
उत्तर- भगवान् श्री कृष्ण।
प्रश्न 8- शिशुपालवध के अनुसार नारद का स्वागत किसने किया ?
उत्तर- भगवान् श्री कृष्ण।
प्रश्न 9- गृहानुपैतु प्रणयादभीप्सवो भवन्ति नापुण्यकृतां मनीषिणः सूक्तिवचन है ?
उत्तर- शिशुपालवधम्।
प्रश्न 10. रथाङ्गपाणेः विशेषण किसके लिए प्रयुक्त हुआ है ?
उत्तर- भगवान् श्री कृष्ण।
प्रश्न 11- पुण्डरीकाक्ष है ?
उत्तर- भगवान् श्री कृष्ण।
प्रश्न 12- शरीरभाजां भवदीय दर्शनं व्यनक्ति, कालत्रितयेऽपि योग्यताम्। पंक्ति में किसके दर्शन की महत्ता है ?
उत्तर- भगवान् श्री कृष्ण द्वारा नारद की।
प्रश्न 13- वैदिक अक्षय निधि है ?
उत्तर - नारद।
प्रश्न 14- 'श्रेयसि केन तृप्यते' सूक्तिवचन है ?
उत्तर - शिशुपालवधम्।
प्रश्न 15- पुरातनं त्वां पुरुषं पुराविदः रेखाङ्कित पद से अभिप्रेत है ?
उत्तर- भगवान् श्री कृष्ण।
प्रश्न 16- नारद द्वारा शिशुपालवध महाकाव्य के प्रथम सर्ग में किस अवतार का वर्णन किया गया ?
उत्तर- वराहावतार।
प्रश्न 17- ऋते रवेः क्षालयितुं क्षमेत कः, क्षपातमरकाण्डमलीमसं नभः पंक्ति में कौनसा छन्द है ?
उत्तर- वंशस्थ।
प्रश्न 18- शिशुपाल पूर्व जन्म में था ?
उत्तर- हिरण्यकशिपु।
प्रश्न 19- नारद किसका सन्देश लेकर भगवान् श्री कृष्ण के पास आये थे ?
उत्तर- इन्द्र का।

प्रश्न 20– यः सदाभिमानैक धना हि मानिनः सूक्ति वचन है ?

उत्तर– शिशुपालवधम्।

प्रश्न 21– बलावलेपादधुनापि पूर्ववत् प्रबाध्यते तेन जगज्जिगीषुणा। सतीव योषित्प्रकृतिः सुनिश्चला पुमांसमभ्येति भवान्तरेष्वपि।। पद्य किससे उद्धृत है ?

उत्तर– शिशुपालवधम्।

प्रश्न 22– 'कीनाश' शब्द का अर्थ है ?

उत्तर– रावण।

प्रश्न 23– शिशुपालवधम् महाकाव्य के प्रथम सर्ग में कितने पद्य हैं ?

उत्तर– 75।

प्रश्न 24– शिशुपालवधम् महाकाव्य के प्रथम सर्ग में किस छन्द का प्रयोग हुआ है ?

उत्तर– वंशस्थ, पुष्पिताग्रा (अन्तिम पद्य में शार्दूलविक्रीडितम्)

प्रश्न 25– 'सुरमुनाविन्दोः श्रियं बिभ्रति' पंक्ति किससे उद्घृत है ?

उत्तर– शिशुपालवधमहाकाव्य।

प्रश्न 26– शिशुपालवधमहाकाव्य के प्रथम सर्ग का नाम है ?

उत्तर– कृष्णनारदसम्भाषण।

प्रश्न 27– शिशुपालवधमहाकाव्य के प्रथम सर्ग में नारद जी का वर्णन कितने श्लोकों में मिलता है ?

उत्तर– 4 से 10 तक।

प्रश्न 28– मल्लिनाथ द्वारा शिशुपालवधमहाकाव्य पर जो टीका लिखी, वह है ?

उत्तर– सर्वङ्कषा।

प्रश्न 29– माघे सन्ति त्रयो गुणाः सम्बन्धित गुण है ?

उत्तर– उपमा, अर्थगौरवम्, पदलालित्यं।

प्रश्न 30– उदयति विततोर्ध्वरश्मिरज्जावहिमरुचौ हिमधाम्नियातिचास्तम्।
वहति गिरिरयं विलम्बि घण्टाद्वय परिवारित वारणेन्द्रलीलाम्।। पद्य किस महाकाव्य से उद्धृत है ?

उत्तर– शिशुपालवधम्।

प्रश्न 31– शिशुपाल की राजधानी थी ?

उत्तर– महिष्मती।

(5) श्री हर्ष महाकवि

कवि परिचय

श्री हर्षः कविराजराजिमुकुटालंकार हीरः सुतम्।
श्री हीरः सुषुवे जितेन्द्रियाचार्यं मामल्लदेवी च यम्।।

हर्ष के पिता का नाम श्री हीर और माता का नाम मामल्लदेवी था। कान्यकुब्ज (कन्नौज) नरेश जयचन्द्र इनके आश्रयदाता है। श्री हर्ष का समय 1150–1200 ई. के मध्य या 12वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध माना गया है।

श्रीहर्ष कृत रचनाएं

(1) स्थैर्यविचार प्रकरण।
(2) श्री विजय प्रशस्ति।
(3) खण्डनखण्डखाद्य महाकाव्य। (वेदान्त ग्रन्थ)
(4) अर्णवर्णन।

(5) छिन्द प्रशस्ति।
(6) शिवशक्ति सिद्धि।
(7) नवसाहसाङ्क चरितचम्पू।
(8) ईश्वराभिसन्धि।
(9) गौडोर्वीश कुल प्रशस्ति।
(10) नैषधीयचरितम्।

नैषधीयचरितं महाकाव्य

बृहत्त्रयी में अन्तिम महाकाव्य, महाभारत के वन पर्व (नलोपाख्यान) पर आधारित नैषध 22 सर्गों का शृंगार रस प्रधान है। इसका नायक निषध प्रदेश का राजा नल है जो धीरोदात्त प्रकृति का है। इसकी नायिका दमयन्ती है। प्रतिनायक इन्द्र, यम, अग्नि तथा वरुण है। इसका कथानक नल और दमयन्ती के परस्पर प्रणय एवं परिणय का है।

इसमें नल-दमयन्ती का अनुराग, नल का वन विहार, एक हंस को पकडना किन्तु दयावश छोड देना। हंस की कृतज्ञता तथा दमयन्ती का गुणवर्णन, नल के अनुरोध पर हंस का दमयन्ती के पास कुण्डिनपुरी जाना। हंस का दमयन्ती के समक्ष नल का गुणवर्णन, दमयन्ती की नल विषयक अनुरक्ति तथा हंस का नल के पास लौटना। दमयन्ती की व्याकुलता, चन्द्रोपालम्भ, उसके पिता भीमसेन द्वारा स्वयंवर का निर्णय। इन्द्र, अग्नि, यम और वरुण द्वारा नल को दूत बनाकर दमयन्ती के पास भेजना। अदृश्य रूप में नल का दमयन्ती के पास पहुँचना और उसके सौन्दर्य का निरीक्षण। दमयन्ती का नख-शिखवर्णन। नल का प्रकट होकर देवताओं का सन्देश दमयन्ती को सुनाना तथा उन चारों देवताओं में से किसी एक को वरण करने का आग्रह करना। नल-दमयन्ती संवाद, दमयन्ती का देवताओं को वरण न करने का निश्चय और नल को स्वयंवर में आने के लिए राजी करना। दमयन्ती के स्वयंवर का वर्णन। स्वयंवर में आये हुए राजाओं का सरस्वती द्वारा परिचय देना। इन्द्र, अग्नि, यम और वरुण के अतिरिक्त नल का श्लेषयुक्त पंच अर्थ प्रतिपादक श्लोकों में सरस्वती द्वारा वर्णन। दमयन्ती द्वारा देवताओं की स्तुति, देवताओं द्वारा दमयन्ती को श्लेष समझने की शक्ति देना। वास्तविक नल का वरण और देवताओं का आशीर्वाद। विवाह का उपक्रम। विवाह संस्कार, भोजन तथा नल का अपनी राजधानी लौटना। देवताओं का लौटना, मार्ग में कलि की सेना से भेंट। कलि द्वारा चार्वाक सिद्धान्त का वर्णन, देवताओं द्वारा खण्डन, नल के विवाह की बात सुनकर कलि का नल को राज्यच्युति और दमयन्ती वियोग का शाप देना। नल और दमयन्ती का वन विहार। प्रभातकाल में वैतालिक द्वारा नल को जगाना, सूर्योदय और चन्द्रास्त का वर्णन। नल और दमयन्ती का प्रेमालाप। नल द्वारा विष्णु, शिव, वामन आदि देवताओं की प्रार्थना। सन्ध्या और रात्रि का वर्णन, चन्द्रोदय एवं दमयन्ती के सौन्दर्य का वर्णन मिलता है।

प्रकृत महाकाव्य का नाम नैषधीयचरितम् है। जिसकी व्युत्पत्ति इस प्रकार है–

निषधानां देशविशेषाणां राजा नैषधः, तस्य इदं नैषधीयम्। नैषधीय-चरितम्, नैषधीय-चरितम् (कर्मधारय तत्पुरुष समास)। तदुपलक्ष्यकृतं महाकाव्यम्-नैषधीयचरितम्।

मंगलाचरण श्लोक

निपीय यस्य क्षितिरक्षिणः कथां, तथाद्रियन्ते न बुधाः सुधामपि।
नलः सितच्छत्रित कीर्तिमण्डलः, स राशिरासीन्महसां महोज्ज्वलः।।

सूक्तिवचन

(1) **क्व भोगमाप्नोति न भाग्य भाग्जनः।**
भाग्यवान् व्यक्ति को अपनी भोग सामग्री कहाँ नहीं मिलती।

(2) **आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः।**
क्योंकि कुटिलता में सरलता नीति नहीं है।

(3) **मितं च सारं च वचो हि वाग्मिता।**
बुद्धिमान् व्यक्ति सार युक्त वाणी कम शब्दों में अभिव्यक्त करते है।

(4) **चकास्ति योग्येन हि योग्यसंगमः।**
योग्य व्यक्ति से योग्य का मेल अच्छा लगता है।

(5) **कर्म कः स्वकृतमत्र न भुङ्क्ते।**
कौन व्यक्ति अपने किये कर्म का फल यहाँ नहीं भोगता।

(6) **प्रतीक्षते जातु कालमार्ति।**
दुःख समय की प्रतिक्षा नहीं करता।

(7) **कार्य निदानाद्धि गुणानधीते।**
अपने कारण से ही कार्य को गुण प्राप्त होते है।

(8) **ब्रुवते हि फलेन साधवो, न तु कण्ठेन निजोपयोगिताम्।**
सज्जन फल द्वारा अपनी उपयोगिता प्रकट करते है, कहकर नहीं।

(9) **पित्तेन दूने रसने सितापि तिक्तायते हंस-कुलावतंस।**
हे हंस श्रेष्ठ! पित्त से दूषित जीभ पर चीनी भी तिक्त लगती है।

(10) **नैषधं विद्वदौषधम्।**
नैषध विद्वानों की कसौटी है।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न–1. नैषधीयचरितम् में मंगलाचरण है ?
उत्तर - वस्तुनिर्देशात्मक।
प्रश्न–2. नैषध का उपजीव्य है ?
उत्तर - महाभारत के वनपर्व का नलोपाख्यान।
प्रश्न–3. नैषध का अन्त किस शब्द से होता है ?
उत्तर - आनन्द।
प्रश्न–4. आनन्दांक महाकाव्य है ?
उत्तर - नैषध।
प्रश्न–5. नल किस कोटि के नायक है ?
उत्तर - धीरललित।
प्रश्न–6. श्री हर्ष रचित ग्रन्थों की संख्या कितनी है ?
उत्तर - 10, (उपलब्ध ग्रन्थ-2)।
प्रश्न–7. नैषधीयचरितम् में कितने सर्ग है ?
उत्तर - 22 सर्ग।
प्रश्न–8. नैषधीयचरितम् के नायक-नायिका है ?
उत्तर - नायक-नल, नायिका-दमयन्ती।
प्रश्न–9. नैषधीयचरितम् के प्रथम सर्ग में कौनसा छन्द है ?
उत्तर - वंशस्थ।

प्रश्न–10. नल कहाँ का राजा था ?
उत्तर - निषध जनपद।
प्रश्न–11. पंचनली से सम्बन्धित महाकाव्य है ?
उत्तर - नैषधीयचरितम् (इन्द्र, अग्नि, यम, वरुण)।
प्रश्न–12. सामुन्द्रिकशास्त्र के साथ नैषध में किसका वर्णन है ?
उत्तर - तन्त्रशास्त्र।
प्रश्न–13. नैषधीयचरितम् में कवि ने शिल्प विज्ञान के किस विज्ञान का वर्णन किया है ?
उत्तर - प्राणी विज्ञान।
प्रश्न–14. नैषध महाकाव्य में कितने पद्य है ?
उत्तर - 2830।
प्रश्न–15. हंस पक्षी किस महाकाव्य में है ?
उत्तर - नैषध।
प्रश्न–16. नल का मन्त्री है ?
उत्तर - सालंकायन का पुत्र श्रुतशील।
प्रश्न–17. भैमी कौन है ?
उत्तर - दमयन्ती।
प्रश्न–18. अद्वैत वेदान्त से सम्बन्धित महाकाव्य है ?
उत्तर - नैषधीयचरितम्।
प्रश्न–19. नल कितनी विद्याओं का ज्ञाता था ?
उत्तर - 14।
प्रश्न–20. 18 द्विपों को जीत लेने वाला राजा है ?
उत्तर - नल।
प्रश्न–21. नैषध में किसकी की प्रचुरता है ?
उत्तर - श्लेष
प्रश्न–22. चार्वाक मत का उल्लेख नैषध के किस सर्ग में है ?
उत्तर - 17।
प्रश्न–23. नखशिख का वर्णन किस सर्ग में है ?
उत्तर - सप्तम।
प्रश्न–24. पर्वतमुनि तथा वैतालिक पात्र से युक्त रचना है ?
उत्तर - नैषध।
प्रश्न–25. नैषध में वर्णित तृण का नाम है ?
उत्तर - नल।
प्रश्न–26. दमयन्ती की नल विषयक अनुरक्ति किस सर्ग में मिलती है ?
उत्तर - तृतीय।
प्रश्न–27. नैषध के प्रथम सर्ग में कौनसी ऋतुएं मिलती है ?
उत्तर - हेमन्त, ग्रीष्म।
प्रश्न–28. नैषध का अपर नाम है ?
उत्तर - वैरसेनिचरित/नलीयचरित।

प्रश्न–29. नैषध में प्रतिनायक कौन है ?

उत्तर - इन्द्र।

प्रश्न–30. नैषध महाकाव्य पर मल्लिनाथ की टीका का क्या नाम है ?

उत्तर - जीवातु।

प्रश्न–31. 'श्रृंगारामृतशीतगुः' महाकाव्य के लिए किसने कहा है ?

उत्तर - श्री हर्ष।

प्रश्न–32. 'कवि पण्डित' की उपाधि से युक्त महाकवि है ?

उत्तर - श्री हर्ष।

प्रश्न–33. 'कृतमध्यबिलं विलोक्यते' यह कथन किसका है ?

उत्तर - दमयन्ती का।

प्रश्न–34. मदेकपुत्रा जननी जरातुरा नवप्रसूतिर्वरटा तपस्विनी ।यह सूक्ति किस महाकाव्य की है ?

उत्तर - नैषधीयचरितम्।

प्रश्न–35. राजा नल के राज्य में दरिद्र कौन था ?

उत्तर - दरिद्रता।

प्रश्न–36. हंस किस वर्ण का था ?

उत्तर - श्वेत।

प्रश्न–37. नल में कौनसा गुण नहीं था ?

उत्तर - याचना।

प्रश्न–38. भीम किस प्रदेश का राजा था ?

उत्तर - विदर्भ।

प्रश्न–39. नल के गुणों को जो केवल आंखों से सुन सकती थी, देख नहीं सकती थी ?

उत्तर - नाग पत्नियाँ।

प्रश्न–40. बृहत्त्रयी में वर्णित छन्द योजना बताइये ?

उत्तर - किरातार्जुनीयम्–25, नैषधीयचरितम्–19, शिशुपालवधम्–22।

(ख.) नाट्यकवि–भास, कालिदास, भवभूति, शूद्रक और विशाखदत्त

रूपक की उत्पत्ति एवं परिभाषा–

सन्दर्भेषु दशरूपकं श्रेयः। (काव्यालंकारसूत्र 1/3/30) रूप् धातु से ण्वुल् (प्रत्यय) करने पर "रूपकम्" शब्द निष्पन्न होता है। आचार्य विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण में लिखा है कि -**दृश्यश्रव्यत्वभेदेन पुनः काव्यं द्विधामतम्। दृश्यं तत्राभिनेयं** ।। अर्थात् अभिनेय के योग्य काव्य दृश्यकाव्य कहलाता है। दर्शनात्मक नेत्रों से गोचर योग्य होने के कारण ही इसका नाम दृश्य है। **तद्रूपारोपान्तु रूपकम्** अर्थात् अभिनेता, पात्ररूप में आचरण एवं वाणी का मंच पर काव्य की भावना अनुसार अभिनय करता है, जिसे सहृदय सामाजिक देखकर आनन्दित होता है। इन्हें काव्य की भाषा में 'रूपक' भी कहते है। दशरूपक में वर्णित है-**रूपकं तत्समारोपाद्**। विविध पात्रों की अवस्थाओं का चतुर्विध अभिनय (आङ्गिक-वाचिक-सात्विक तथा आहार्य) के द्वारा जब नट अनुकरण करता है तो इसे 'नाट्य' कहते है–**अवस्थानुकृतिर्नाट्यम्**। नाट्य को देखा जाता है, इसलिए इसे रूप भी कहते है–**रूपं दृश्यतयोच्यते**।

अभिनेता पर पात्रों की अवस्थाओं का आरोप होने से उसे नाट्य या रूप को शास्त्रीय दृष्टि से रूपक कहते है, आरोप ही रूपक है। **रूपकं तत्समारोपाद्** अर्थात् ये रूपक रसाश्रय होते है, इनकी संख्या 10 है। दशधैवरसाश्रयम् रूपकों के जो दस भेद कहे गये हैं, उनके मुख्य भेदक उपादान कारण तीन है–**वस्तुनेतारसस्तेषां भेदकः** अर्थात् कथानक, नायक तथा रस। साहित्य के सभी प्रकारों में रूपक या नाट्य श्रेष्ठ माना गया है। इसकी रचना को कवित्व की अन्तिम सीमा कहा जाता है–**नाटकान्तं कवित्वम्**।

रूपक उद्भव एवं विकास -

संस्कृत दृश्यकाव्य का उद्भव कब और किस प्रकार से हुआ है। इस विषय पर निम्नलिखित मत प्रचलित है-

1. **देवी-उत्पत्ति का सिद्धान्त**–नाट्य विज्ञान पर सर्वप्रथम ग्रन्थ नाट्यशास्त्र ही है जिसका काल 100 ई.पू. से 300 ई.पू. के मध्य माना जाता है। भरतमुनि का मत नाट्यशास्त्र में है कि सभी देवताओं ने मिलकर ब्रह्मा जी से प्रार्थना की कि हमें ऐसे मनोरंजन का साधन प्रदान करें जो दृश्य और श्रव्य दोनों ही हो और जिसे सभी वर्णों के लोग ग्रहण करें। ब्रह्मा ने इस प्रार्थना पर चारों वेदों से सार भाग लेकर 'नाट्यवेद' के रूप में पंचमवेद का निर्माण किया। उन्होंनें ऋग्वेद से पाठ्य (संवाद, कथोपकथन) यजुर्वेद से अभिनय, सामवेद से संगीत और अर्थवेद से रसतत्व लेकर 'नाट्यवेद' की रचना की है। यथा–**जग्राह पाठ्यमृग्वेदात्सामभ्यो गीतमेव च। यजुर्वेदादभिनयान् रसानाथर्वणादपि**।। शिव से ताण्डव और पार्वती से लास्य लेकर नृत्य तत्व की भी योजना की गयी। ब्रह्मा रचित अमृतमन्थन और त्रिपुरदाह नामक रूपक सर्वप्रथम अभिमंचित हुए।
2. **संवाद-सूक्तों से नाट्य की उत्पत्ति**–इस सिद्धान्त को मानने वालों में प्रायः पाश्चात्य विद्वान आते है। इसे विकासवाद का सिद्धान्त भी कहते है। मैक्समूलर आदि विद्वानों ने यह सिद्धान्त दिया कि ऋग्वेद के कतिपय संवाद-सूक्त ही नाटकों के प्राचीनतम रूप है।
3. **प्रो. रिजवे प्रणीत मृतात्मश्राद्धवाद (वीर पूजावाद)**।
4. **डॉ. पिशेल कृत पुत्तलिका नृत्यवाद**।
5. **उत्सव सिद्धान्त**।
6. **छाया नाटक सिद्धान्त**।
7. **प्रकृतिवाद**।
8. **आधुनिक सिद्धान्त (वैदिक अनुसरण)**।
9. **स्वाँगवाद का सिद्धान्त**।
10. **यवनिकावाद**।

संस्कृत नाटकों का विकास -

भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों की दृष्टि में यह निर्विवाद सत्य है कि संस्कृत नाटकों का प्रारम्भ सबसे पहले भारत में हुआ है। अतः संस्कृत नाटकों के विकास का अध्ययन करने के लिए वैदिककाल से लेकर वर्तमानकाल तक के लम्बे समय को हम छः भागों में विभाजित कर सकते है- 1. प्राचीन युग, 2. विकासोन्मुख युग, 3. पूर्ण विकास का युग, 4. ह्रासोन्मुख युग, 5. ह्रास का युग एवं 6. आधुनिक युग।

प्राचीन युग–यजुर्वेद की वाजसनेयी संहिता में शैलूष जाति के व्यक्ति द्वारा व्यावसायिक दृष्टि से नाटकों के अभिनय का उल्लेख किया गया है। ये लोग अपनी आजीविका चलाने हेतु यज्ञादि के अवसरों पर लय तथा तालबद्ध नर्तन द्वारा एवं गीत आदि के गायन द्वारा दर्शकों का मनोरंजन करते थे। इनमें सूत्र, नर्तन एवं शैलूष जिसे नट भी कहा जाता था, गीत प्रस्तुत करता था। इसे प्राचीन युग की संज्ञा दी जा सकती है।

विकासोन्मुख युग–इसके अन्तर्गत रामायण महाभारत से लेकर महाकवि भास तक के काल को स्वीकार किया जा सकता है। ईसा पूर्व चतुर्थ शताब्दी में स्थित आचार्य पाणिनि ने अष्टाध्यायी में दो नाट्याचार्यों कृशाश्व एवं शिलालिन् का उल्लेख किया है–**पाराशर्यशिलालिभ्यां भिक्षुनटसूत्रयोः** (4/3/110)। **कर्मन्दकृशाश्वादीनि** (4/3/111)।

- आचार्य पाणिनि द्वारा जाम्बवतीविजय अथवा पातालविजय नामक दो नाटकों की रचना की गई थी, जो आज अनुपलब्ध है।
- पतंजलि ने भी कंसवध एवं बलिबन्ध नामक दो नाटकों के अभिनय का उल्लेख किया है।
- भरतमुनि ने 36 अध्यायों में निबद्ध नाट्यशास्त्र नामक (नाटक विषय सिद्धान्तों से युक्त) ग्रन्थ का निर्माण किया है। आचार्य ने त्रिपुरदाह, असुरपराजय एवं समुन्द्रमन्थन नामक नाटकों के अभिनय का भी उल्लेख किया है।
- इस युग में महाकवि भास प्रणीत त्रयोदश नाटकों की गणना भी की जाती है।
- शूद्रक विरचित मृच्छकटिकम् प्रकरण ग्रन्थ भी इसी के अन्तर्गत आता है।

पूर्ण विकास का युग

1. महाकवि कालिदास	(क) अभिज्ञानशाकुन्तलम्, (ख) मालविकाग्निमित्रम्, (ग) विक्रमोर्वशीयम्।
2. अश्वघोष	शारिपुत्रप्रकरण।
3. दिगंनाग	कुन्दमाला।
4. विशाखदत्त	मुद्राराक्षस।
5. हर्षवर्धन	(क) प्रियदर्शिका (ख) रत्नावली (ग) नागानन्द।
6. भवभूति	(क) उत्तररामचरितम् (ख) मालतीमाधवम्, (ग) महावीरचरितम्।

ह्रासोन्मुख युग -

1. भट्टनारायण	वेणीसंहार।
2. मुरारि	अनर्घराघव।
3. राजशेखर	(क) बालरामायण (ख) बालभारत (ग) कर्पूरमंजरी (घ) विद्धशालभंजिका।
4. क्षमीश्वर	(क) नैषधानन्द (ख) चण्डकौशिक।
5. कृष्ण मिश्र	प्रबोधचन्द्रोदय।
6. यशपाल	मोहपराजय।
7. जयदेव	प्रसन्नराघव।
8. कर्णपूर	चैतन्य चन्द्रोदय।

ह्रास युग -

1. विग्रहराजदेव	हरिकेलि
2. सुभट्ट	दूतांगद
3. मदन	पारिजातमंजरी
4. जयसिंह सूरी	हम्मीरमदमर्दनम्
5. भास्कर	उन्मत्तराघव
6. रामदेव व्यास	रामाभ्युदय, पाण्डवाभ्युदय, सुभद्रा परिणय।
7. रामचन्द्र दीक्षित	जानकी परिणय।

आधुनिक युग -

19 वीं सदी के रूपक -

1. अम्बिकादत्तव्यास	सामवतं नाटक।
2. रामचन्द्र	शृंगार सुधार्णव।
3. वाचस्पति भट्टाचार्य	चैत्रयज्ञ।

20 वीं सदी के रूपक -

1. शंकरलाल	सावित्रीचरित,
2. श्री निवासाचारी	ध्रुवचरित।
3. पंचानन	अमरमंगल।
4. मूलशंकरमणिकलाल	छत्रपतिसाम्राज्य, प्रतापविजय, संयोगितास्वयंवर।
5. वाईमहालिङ्ग	काली प्रार्दुभाव।
6. भीमभट्ट	काश्मीरसन्धानसमुद्यम।
7. मथुराप्रसाद	दीक्षितप्रतापविजय, पृथ्वीराजविजय, गाँधीविजय, भारतविजय।

रूपक का वर्गीकरण -

दशरूपकम्

1. नाटक :- **नाटकंख्यातवृत्तं स्यात् पंचसन्धिसमन्वितम्।** नाटक की कथावस्तु पुराण-इतिहास आदि से प्रसिद्ध होती है। नाटक में मुख-प्रतिमुख-गर्भ-विमर्श और निर्वहण पंचसन्धियाँ होती है। प्रसिद्धवंश में उत्पन्न धीरोदात्त प्रतापी गुणों से युक्त रामादि नाटक का नायक होता है। धीरोद्धत, धीरललित एवं धीरप्रशान्त भी नाटक के नायक हो सकते है। इसमें शृंगार अथवा वीर रसों में से किसी एक की प्रधानता होती है। कथावस्तु का विकास गाय की पूँछ के आकार वाला आरम्भ में छोटा, मध्य में विस्तार वाला और अन्त में एक स्थान पर समन्वित होकर समाप्त होने वाला होता है। नाटक में पाँच से लेकर दस अंक तक होते हैं। जिस नाटक में इन सब के उपयोग के साथ दस अंक हो, उसे महानाटक कहते हैं। नाटक में युद्ध, वध, भोजन, शाप, मलत्याग, रतिक्रिया, शयन, अधरपान, स्नान, लेपन आदि क्रियाओं के प्रदर्शन का निषेध किया गया है।

2. **प्रकरण** :- इसकी कथावस्तु कविकल्पित एवं लौकिक सन्देश को देने वाली होती है। इसमें 10 अंक होते है। इसमें शृंगार रस होता है अन्य अनुकूल रसों का प्रयोग अंग के रूप में होता है। प्रकरण का नामकरण नायक-नायिका के नाम पर होता है। प्रकरण का नायक धीरप्रशान्त कोटि का मन्त्री, ब्राह्मण या वणिक में से कोई एक होता है। मृच्छकटिकम् में ब्राह्मण, मालतीमाधव में अमात्य, पुष्पदूतिका में वैश्य। नायिका दो प्रकार की होती है–कुलीन या वैश्या। नाट्यदर्पण में नायिका के आधार पर इसके 21 भेद मिलते हैं।

3. **भाण** :- इसमें कोई अत्यन्त चतुर तथा बुद्धिमान् विट अपने या दूसरे के अनुभव के आधार पर धूर्त के चरित का वर्णन करता है। इसकी कथावस्तु कवि कल्पित होती है। इसमें एक अंक होता है। इसमें एकमात्र पात्र विट ही रहता है, जो आकाशभाषित के रूप में स्वयं प्रश्न उत्तर का प्रयोग करता है। रस स्पष्ट नहीं होता किन्तु सौभाग्य और शौर्य के वर्ण से इसमें क्रमशः शृंगार और वीर रसों की केवल सूचना दी जाती है। इसमें मुख एवं निर्वहण सन्धियां रहती है अन्य नहीं। इसमें दस लास्याङ्गों का प्रयोग होता है। गुप्तकाल के चार भाण बहुत प्रसिद्ध है–पद्मप्राभृतक, धुर्तविटसंवाद, उभयाभिसारिका, पादताडितक। उदाहरण–लीलामधुकरम्।

4. समवकार - इसका इतिवृत्त इतिहास-पुराण में प्रसिद्ध होता है। जिसमें देवताओं एवं दैत्यों की कथा होती है। इसमें तीन अंक होते हैं। इसका मुख्य रस वीर है। इसके पात्र देवता और दानव होते हैं, जिनकी संख्या 12 होती है। कैशिकी के अतिरिक्त अन्य वृत्तियाँ एवं विमर्श को छोडकर अन्य सन्धियाँ होती है। बिन्दु नामक अर्थप्रकृति एवं प्रवेशक नामक अर्थोपक्षेपक का इसमें प्रयोग नहीं किया जाता। उदाहरण—**समुद्रमन्थनम्। भासकृत पंचरात्रम्।**

5. डिम - इसकी कथावस्तु पौराणिक एवं प्रसिद्ध होती है। इसमें नायक देवता, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस आदि होते है जो मानवेतर है। भूत-प्रेत-पिशाच आदि पात्रों का इसमें समावेश रहता है। इसमें उद्धत कोटि के 16 पात्र रहते हैं। इसमें चार अंक होते है। इसका प्रधान रस रौद्र होता है। भारती-सात्त्वती, आरभटी वृत्ति प्रयुक्त होती है। इसमें सूर्यग्रहण एवं चन्द्रग्रहण के दृश्य दिखाये जाते है। उदाहरण—त्रिपुरदाह।

6. व्यायोग - इसका कथानक इतिहास प्रसिद्ध होता है, जो किसी विख्यात व्यक्ति पर आश्रित रहता है। इसकी कथावस्तु एक दिन की घटना से युक्त होती है। इसमें एक ही अंक रहता है। पुरुष पात्रों की संख्या अधिक होती है। इसमें गर्भ एवं विमर्श नामक सन्धियाँ नहीं होती। रसों की दीप्ति डिम के समान होती है अर्थात् हास्य और शृंगार रस को छोडकर अन्य रसों का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण—सौगान्धिकाहरणम्। मध्यम व्यायोग।

7. अंक - इसे 'उत्सृष्टिकांक' भी कहते है। इसमें एक अंक होता है। इसका कथानक इतिहास प्रसिद्ध होता है। इसमें नायक और अन्य साधारण पात्र होते हैं। इसमें करुण रस की प्रधानता होती है। स्त्री विलाप की अधिकता होती है। सन्धि (मुख-निर्वहण) तथा वृत्ति भारती होती है। उदाहरण—शर्मिष्ठाययाति।

8. ईहामृग - इसका कथानक प्रख्यात एवं कवि कल्पित मिश्रित रूप में होता है। इसमें चार अंक तथा तीन सन्धियाँ होती है। इसमें नर या देवता के रूप में नायक एवं प्रतिनायक भी होते है। वे धीरोदत्त कोटी के रहते है। इसका प्रधान रस शृंगार होता है। उदाहरण—कुसुमशेखर।

9. प्रहसन - इसका कथानक कवि कल्पित होता है। यह हास्य रस प्रधान रूपक होता है। इसमें पाखण्डी धूर्तों आदि पात्रों का चरित्र दिखलाया जाता है। इसमें एक अंक होता है। (विश्वनाथ ने 2 अंक माने है) इसमें मुख एवं निर्वहण दो सन्धियाँ होती है। प्रहसन के शुद्ध, विकृत एवं संकीर्ण तीन भेद होते हैं। उदाहरण—कन्दर्पकेलि।

10. वीथी - इसकी कथावस्तु कविकल्पित होती है। इसमें एक अंक होता है। इसका प्रमुख रस शृंगार रस होता है। इसमें मुख एवं निर्वहण सन्धि होती है। इसका नायक साधारण पुरुष होता है। उदाहरण—बकुलवीथी, इन्दुलेखा, मालविका।

प्रकृत भेदों में नाटक तथा प्रकरण ही मुख्य है क्योंकि कथानक का विकास इनमें पंचसन्धियों के द्वारा होता है।

उपरूपक -

उपरूपकों में रस की प्रधानता न होकर भाव, ताल या लय की प्रधानता होने से इन्हें नृत्य एवं नृत्त की श्रेणी में रखा गया है परन्तु नाटिका, सट्टक तथा त्रोटक प्रमुख भेद है।

1. नाटिका—इसकी कथावस्तु कविकल्पित होती है। इसमें चार अंक होते है। नाटक तथा प्रकरण के लक्षण इसमें प्राप्त होते हैं। इसका नायक धीरललित श्रेणी का कोई प्रसिद्ध राजा होता है। इसमें शृंगार रस है। इसमें दो नायिकाएं होती है—देवी (बडी रानी) तथा मुग्धा कन्या। देवी के भय से नायक नयी नायिका से छिप-छिप कर मिलता है। उदाहरण—हर्ष विरचित—प्रियदर्शिका, रत्नावली।

2. सट्टक—इसमें सम्पूर्ण पाठ प्राकृत होता है। इसमें अद्भूत रस का प्राचुर्य है। अंकों को 'जवनिकान्तर' कहते है। शेष लक्षण नाटिका के समान मिलते है। उदाहरण—**राजशेखर कृत कर्पूरमंजरी।**

3. त्रोटक—इसका प्रधान रस शृंगार होता है। इसके प्रत्येक अंक में विदूषक रहता है। इसमें देवता एवं मनुष्यों दोंनों का वर्णन रहता है। इसमें सात, आठ नौ या पाँच अंक रहते है। उदाहरण—**विक्रमोर्वशीयम्।**

उपरूपक	**उपरूपक/उदाहरण**
1. नाटिका	रत्नावली, प्रियदर्शिका, विद्धशालभञ्जिका
2. त्रोटक	स्तम्भितरम्भम्, विक्रमोर्वशीयम्
3. गोष्ठी	रैवतमदनिका
4. सट्टक	कर्पूरमंजरी
5. नाट्य रासक	नर्मवती, विलासवती
6. प्रस्थानक	शृंगारतिलक
7. उल्लाप्य	देवीमहोदव
8. काव्य	यादवोदयम्
9. प्रेङ्खणम्	बालिवध
10. त्रासक	मेनकाहितम्
11. संलापकम्	मायाकापालिकम्
12. श्रीगदितम्	क्रीडारसातलम्
13. शिल्पक	कनकावतीमाधव
14. विलासिका/विनायिका	(अनुपलब्ध)
15. दुर्मल्लिका	बिन्दुमती
16. प्रकरणिका	(अनुपलब्ध)
17. हल्लीश	केलिरैवतकम्
18. भणिका	कामदत्ता

रूपक की कथावस्तु एवं विशेषताएँ -

रूपक की कथावस्तु -

- रूपक की कथावस्तु दो प्रकार की होती है—आधिकारिक (प्रधान), प्रासंगिक (सहायक)।
- प्रासंगिक कथावस्तु के दो भेद है—पताका तथा प्रकरी।
- स्त्रोत के आधार पर कथानक के तीन भेद होते है—प्रख्यात, उत्पाद्य तथा मिश्र।
- अभिव्यक्ति के आधार पर इसके दो वर्ग होते है -सूच्य और दृश्य-श्रृव्य।

अर्थोपक्षेपक—ये पांच है—विषकम्भक, प्रवेशक, चूलिका, अङ्कास्य तथा अंकावतार।

पंचावस्थाएं—ये पांच है—आरम्भ, यत्न, प्राप्त्याशा, नियताप्ति तथा फलागम।

पंच अर्थप्रकृतियाँ -ये पांच है—बीज-बिन्दु-पताका-प्रकरी-कार्यलक्षणा।

पंचसन्धि -ये पांच है—मुख-प्रतिमुख-गर्म-विमर्श-निर्वहण।

संवाद—ये तीन प्रकार के होते है—सर्वश्राव्य, नियतश्राव्य तथा अश्राव्य।

रूपकों के पात्र—

नायक :- धीरोदात्त, धीरोद्धत, धीरप्रशान्त, धीरललित। प्रत्येक के अनुकूल, दक्षिण, शठ तथा धृष्ट ये चार-चार भेद होते हैं।

नायिका :- मुग्धा, मध्या, स्वकीया। कुल भेद 384/1152।

विदूषक :- हास्य उत्पन्न करने वाले पात्र।

नाट्यवृत्तियाँ:- भारतीवृत्ति, कैशिकीवृत्ति, सात्त्वतीवृत्ति, आरभटीवृत्ति।

नाट्यविद्या सम्बन्धित पारिभाषिक शब्द–

नान्दीः- **नन्दन्ति देवता अस्याम् अनया वा** अर्थात् जिसमें अथवा जिसके द्वारा देवता प्रसन्न होते है, उसे नान्दी कहते है। संस्कृत साहित्य की सांस्कृतिक परम्परा रही है कि कवि अपने ग्रन्थ की निर्विघ्न समाप्ति के लिए मगंलाचरण या नान्दी पाठ करता है। साहित्यदर्पण के अनुसार–**आशीर्वचनसंयुक्ता स्तुतिर्यस्मात्प्रयुज्यते। देवद्विजनृपादीनां तस्मान्नान्दीति संज्ञिता।।** आचार्य दण्डि के अनुसार नान्दी के तीन भेद है- **आशीर्वादात्मक, नमस्कारात्मक, वस्तुनिर्देशात्मक।**

सूत्रधारः- **सूत्रं धारयतीति सूत्रधारः** अर्थात् जो सूत्र को धारण करता है, सूत्रधार कहलाता है।

प्रस्तावनाः-स्थाप्यते प्रस्तूयते वा कथावस्तु अस्याम् अर्थात् जिसमें कथावस्तु स्थापित या प्रस्तुत की जाती है, उसे प्रस्तावना/आमुख कहते है।

भरतवाक्य–नाटक के अन्त में नाटकीय पात्रों की ओर से जो आशीर्वादात्मक श्लोक प्रस्तुत किया जाता है, उसे भरतवाक्य कहते है। भरतवाक्य को प्रशस्ति भी कहते है। प्रशस्ति का अर्थ है–**प्रशस्तिः शुभशंसनम्।**

रस–शृंगार (रति), हास्य (हास), करुण (शोक), अद्भुत (विस्मय), रौद्र (क्रोध), भयानक (भय), वीभत्स (जुगुप्सा) वीर (उत्साह) शान्त (शाम/निर्वेद)।

संस्कृत नाटकों की विशेषताएँ -

1. सुखान्त होना (उरुभंग-दुःखान्त)।
2. रस की प्रधानता (शृंगार, वीर)।
3. विदूषक की परिकल्पना।
4. अन्वितित्रय का अभाव।
5. पात्रों की संख्या अनिश्चित।
6. आदर्शवाद की प्रधानता।
7. ऐतिहासिक एवं कथाग्रन्थों पर आधारित कथावस्तु।
8. प्राकृत भाषा का प्रयोग।
9. गद्य एवं पद्य का प्रयोग।
10. विशिष्ट रचना पद्धति।
11. प्रकृति के साथ धनिष्ठता।
12. वर्ग विशेष के प्रतिनिधि पात्र।
13. अशिष्ट प्रदर्शनों पर प्रतिबन्ध।
14. स्वाभाविकता पर विशेष वल।

(1) नाट्यकार भास

जीवन परिचय -

कविताकामिनी के हास नाटककार भास का समय 300 ई. पू. से 400 ई.पू. के मध्य माना गया है। स्वप्नवासवदत्तम् के भरतवाक्यम् के अनुसार इनका जन्मस्थान उत्तर भारत हो सकता है-

इमां सागरपर्यन्ताम्, हिमवद्विन्ध्य कुण्डलाम्।
महीमेकातपपत्रांका, राजसिंहः प्रशास्तु नः।।

भास ब्राह्मण थे तथा गौ के परम उपासक थे। उनका जीवन अति शांतिपूर्ण एवं सुखी था। इनकी उपाधि धावक थी। कालिदास ने मालविकाग्निमित्र की प्रस्तावना में सूत्रधार के मुख से कहलवाया है **भाससौमिल्लक कवि पुत्रादीनां..।**

रचना परिचय-

साहित्य के पुनरूद्धार के समय सन् 1900 ई. में महामहोपाध्याय पं. तिरुमल गणपति शास्त्री को पद्मनाभपुरम् के समीपवर्ती मनल्लिकारमठम् में मलयालमलिपि में 105 पृष्ठों की गठरी मिली, जिसमें भास के निम्नलिखित दशरूपक के हस्तलेख मिले–1 स्वप्नवासवदत्तम् 2. प्रतिज्ञायौगन्धरायण 3. पंचरात्र 4. चारुदत्त 5. दूतघटोत्कच 6. अविमारक 7. बालचरित 8. मध्यमव्यायोग 9. कर्णभार तथा 10. उरुभंग। इनके अतिरिक्त दूतवाक्य की भी ताड़पत्र पर हस्तलिखित प्रति मिली जो खंडित अवस्था में थी। कैलासपुरम् के ज्योतिषी के पास से अभिषेकनाटक तथा प्रतिमानाटक की हस्तलिखित प्रतियां प्राप्त की थी। मैसूर के पंडित अनंताचार्य ने केरल से प्राप्त स्वप्नवासवदत्तम् तथा प्रतिज्ञायौगन्धरायण की दो प्रतियां गणपति शास्त्री को दी थी। श्री शास्त्री ने 1912 ई. में भास के तेरह नाटकों को प्रकाशित किया। इसे **"भासनाटकचक्रम्"** का नाम दिया गया है।

भासनाटकचक्रम्

2. रामकथाश्रित रूपक–(2)

1. प्रतिमानाटक 2. अभिषेकनाटक।

9. महाभारत पर आश्रित रूपक–(7)

1. उरुभंग 2. दूतवाक्य 3. पंचरात्र 4. कर्णभार 5. दूतघटोत्कच 6. मध्यमव्यायोग 7. बालचरित।

नोट–बालचरित नाटक को श्रीमद्भागवद् पुराण पर आश्रित माना गया है।

11. लोककथाश्रित रूपक–(2) 1. अविमारक 2. चारुदत्त

13. उदयनकथाश्रित रूपक (2)

1. प्रतिज्ञायौगन्धरायण, 2. स्वप्नवासवदत्तम्।

भास से सम्बन्धित उल्लेख -

- भास के नाटकों में नांदी का सर्वथा अभाव है। इन रूपकों में प्रस्तावना को स्थापना कहा गया है। प्ररोचना का अभाव है।
- इन रूपकों में भरतवाक्य प्रायः समान हैं, जिसमें राजसिंह के द्वारा शासन की कामना है–**इमामपि महीं कृत्स्नां राजसिंहः प्रशास्तु नः।**
- वाक्पतिराज ने अपने गउडवहो नामक प्राकृत महाकाव्य में भास को **जलणमित्ते–ज्वलनमित्रम्**, अग्नि का मित्र कहा गया है।
- जयदेव ने भास को कविता कामिनी का हास कहा है- **भासोहासः कविकुलगुरुःकालिदासोविलासः।**
- राजशेखर ने भी भास के नाटकों की अग्निपरीक्षा तथा स्वप्नवासवदत्तम् के न जलने की बात लिखी है- **भासनाटक चक्रेऽस्मिंश्छेकैः क्षिप्तेपरीक्षितुम्। स्वप्नवासवदत्तस्य दाहकोऽभून्न पावकः।।**

नोट–महाभारत पर आश्रित रूपक एकांकी है। पंचरात्र समवकार है। बालचरित्र नाटक में पांच अंक हैं। चारुदत्त को प्रकरण कहा गया है, इसमें 4 अंक है।

भास की रचनाओं का संक्षिप्त परिचय -

(1) प्रतिमानाटक -

- यह सात अंकों का नाटक है।
- इस नाटक में राम का वनवास सीताहरण आदि अयोध्याकांड से लेकर रावणवध तक की घटनाओं का वर्णन किया है।
- इसका नामकरण तृतीय अंक की घटना पर आधारित है। प्रतिमा की मुख्य भूमिका होने के कारण इसका नाम प्रतिमानाटक पड़ा है।
- कैकयदेश से आते समय अयोध्या के समीप देवकुल में स्थित दशरथ की प्रतिमा को देखकर ही भरत ने उनकी मृत्यु का अनुमान कर लिया था।
- इसका कथानक रामकथा पर आश्रित है।
- राम का वन में ही राज्याभिषेक नाटक में कवि की मौलिक कल्पना है।
- यह करुण रस प्रधान नाटक है। इसमें वैदर्भी रीति का प्रयोग हुआ है।

(2) अभिषेकनाटक-

- यह नाटक रामकथा पर आश्रित है।
- इसमें 6 अंक हैं।
- इसमें राम के राज्याभिषेक का तथा किष्किन्धा, सुन्दर और लंकाकांड के कथानक का वर्णन किया गया है।
- इसका नामकरण "रामराज्याभिषेक" की घटना के आधार पर किया गया है।
- इसके नायक मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम हैं।
- इसका प्रधान रस वीर है।

(3) उरुभंग -

- इसका कथानक द्रौपदी के अपमान के प्रतिकार के रूप में भीम द्वारा दुर्योधन की जंघा को तोड़कर उसे मारने का है।
- यह महाभारत की घटना पर आधारित एकांकी रूपक व्यायोग है।
- इसका नायक दुर्योधन है।
- यह संस्कृत साहित्य का दुःखांत नाटक (रूपक) है।
- इसमें वीर तथा करुण रस परस्पर अनुस्युत हैं।

(4) दूतवाक्य-

- इसमें महाभारत के युद्ध से पूर्व श्री कृष्ण का पांडवों की ओर से संधि प्रस्ताव लेकर जाने तथा असफल लौटने का वर्णन है।
- यह एकांकी रूपक है, इसमें व्यायोग के लक्षण घटित होते हैं।
- इसमें नायक श्री कृष्ण हैं।
- इसमें वीर रस का प्रधान रूप से प्रयोग हुआ है।
- दूतकर्म किये जाने के कारण ही इसका नाम दूतवाक्यम् पड़ा है।

(5) पंचरात्र -

- महाभारत के विराट पर्व से इस रूपक की कथा ली गई है।
- इसमें तीन अंक हैं। (यह समवकार है)
- **पन्चानां रात्रीणां समाहारः** विग्रह के अनुसार इसमें पांच रात्रि की घटनाओं का वर्णन है।
- इसका प्रधान पात्र दुर्योधन है।
- इसका प्रमुख रस शृंगार है।
- इसमें दुर्योधन के यज्ञ की समाप्ति पर द्रोणाचार्य दक्षिणा मांगते हैं कि पांडवों को आधा राज्य दे दो।
- दुर्योधन उपबंध रखता है कि यदि पांच रात्रियों के अंदर पांडव मिल जायें तो वह उन्हें अपना राज्य दे देगा। द्रोण के सत्प्रयास से पांडव मिल जाते हैं तथा उन्हें आधा राज्य देने की बात स्वीकार कर लेता है।

(6) कर्णभार -

- इसमें ब्राह्मणवेशधारी इन्द्र को कर्ण द्वारा अपने कवच कुंडल को दान में देने का कथानक है।
- यह एक अंक का कथानक वाला महाभारत की कथा वस्तु से सम्बन्ध व्यायोग है। इसे अंक की संज्ञा दी गई है।
- इसका नाम कर्ण है।
- इसका प्रमुख रस करुण है।
- इसमें आश्चर्यजनक घटना यह है कि विप्रवेश इन्द्र प्राकृत भाषा का प्रयोग करता है।

(7) दूतघटोत्कच -

- यह नाटक महाभारत की कथा पर आश्रित है।
- इसमें अभिमन्यु की मृत्यु के बाद श्री कृष्ण घटोत्कच को दूत बनाकर धृतराष्ट्र के पास भेजते हैं तथा दुर्योधन धृतराष्ट्र का अपमान करता है।
- इसमें एक अंक है। इसे उत्सृष्टिकांक रूपक कहा है।
- इस नाटक का प्रधान पात्र घटोत्कच है।
- नाटक में वीर तथा करुण रस का प्रयोग हुआ है।
- इसमें भरतवाक्य का अभाव है।

(8) मध्यमव्यायोग -

- यह एक अंक का व्यायोग है।
- इसमें मध्यम पांडव भीम के द्वारा घटोत्कच के हाथ से एक ब्राह्मण पुत्र की घटना का वर्णन है।
- इसकी कथावस्तु का मूल स्रोत महाभारत के प्रथम अध्याय के 151 से 155 तक का सर्ग है।

(9) बालचरितम् -

- यह महाभारत के परिशिष्ट "हरिवंशपर्व" पर आधारित है। इसमें श्रीकृष्ण के जन्म से लेकर कंस तक के मारे जाने की घटना का वर्णन है।
- इसमें पांच अंक हैं।
- श्रीमद्भागवद्पुराण को भी बालचरित का उपजीव्य माना गया है।

- इसके नायक श्री कृष्ण (धीरोदात्त) हैं।
- इसका प्रमुख रस वीर है।
- प्रकृत नाटक का निम्न श्लोक अनेक अलंकार ग्रंथों में मिलता है-

लिम्पतीव तमोऽगांनि वर्षतीवाञ्जनं नभः। असत्पुरुषसेवेव दृष्टिर्निष्फलतां गता।।

(10) **अविमारकनाटक -**

- इसमें राजकुमार अविमारक तथा कुन्तिभोज की पुत्री कुरंगी के प्रेम और विवाह का सरस वर्णन है। अविमारक का वास्तविक नाम विष्णुसेन है।
- इसमें छः अंक हैं।
- नायक के नाम के आधार पर इसका नामकरण हुआ।
- इसका नायक अविमारक तथा नायिका कुरंगी है।
- यह धीरललित नायक है।
- इस नाटक का प्रधान रस श्रृंगार है।

(11) **चारुदत्त नाटक**

- इसमें उज्जयिनी की गणिका वसंतसेना और ब्राह्मण चारुदत्त की प्रणयकथा का वर्णन है।
- यह महाकवि भास का प्रथम नाटक है।
- इसका नायक चारुदत्त, नायिका वसंतसेना तथा प्रतिनायक शकार है।
- इसमें चार अंक हैं, इसे प्रकरण रूपक माना गया है।
- इसका प्रमुख रस श्रृंगार है।
- शूद्रक विरचित मृच्छकटिकम् का आधार ग्रन्थ है।

(12) **प्रतिज्ञायौगन्धरायण नाटक**

- यह चार अंकों का उदयनकथा पर आधारित नाटक है, इसमें स्वप्नवासवदत्तम् की पूर्व कथा निबद्ध है।
- इसका नामकरण अमात्य यौगन्धरायण की प्रतिज्ञाओं पर आधारित है।
- इसका नायक उदयन तथा नायिका वासवदत्ता है।
- इसका प्रमुख रस श्रृंगार है।

(13) **स्वप्नवासवदत्तम्**

- यह महाकवि भास के तेरह नाटकों में अंतिम नाटक है।
- इसका नायक वत्सप्रदेश का राजा उदयन तथा नायिका वासवदत्ता है।
- इसकी प्रतिनायिका पद्मावती है।
- इसमें छः अंक हैं।
- इसका प्रमुख रस श्रृंगार है।
- इसका विदूषक वसन्तक है।
- यौगन्धरायण तथा रुमण्वान् इसके मंत्री हैं।
- नाटक का नामकरण पंचम अंक के आधार पर हुआ है।
- **स्वप्ने दृष्टा वासवदत्ता इति स्वप्नवासवदत्ता, तामधिकृत्य कृतं नाटकं स्वप्नवासवदत्तम्।**

सूक्तिवचन

1. **कालक्रमेण जगतः परिवर्तमाना चक्रार पंक्तिरिवगच्छति भाग्यपंक्ति।**
   समय की परिवर्तनशीलता के कारण जगत् की भाग्यदशा, पहिये में लगी आरे के समान ऊपर-नीचे जाने वाली होती है।
2. **दुःखं न्यासस्यरक्षणम्।**
   धरोहर की रक्षा करना कठिन है।
3. **स्त्री स्वभावस्तु कातरः।**
   स्त्री स्वभाव से कातर होती है।
4. **प्रायेण हि नरेन्द्र श्रीः सोत्साहरेवभुज्यतेः।**
   निश्चय ही राज्यलक्ष्मी उत्साही युवकों के द्वारा भोगी जाती है।
5. **प्रद्वेषो बहुमानों वा संकल्पादुपजायते।**
   अत्यधिक द्वेष या आदर मन की भावनाओं से उत्पन्न होता है।
6. **अनतिक्रमणियों हि विधिः।**
   विधि का विधान उलंघन के योग्य नहीं है।

महत्वपूर्ण प्रश्न

प्र. 1 स्वप्नवासवदत्तम् में मंगलाचरण है ?
उत्तर आशीर्वादात्मक।
प्र. 2 स्वप्नवासवदत्तम् में कवि द्वारा किसकी स्तुति की गई है ?
उत्तर बलराम जी की।
प्र. 3 स्वप्नवासवदत्तम् के मंगलचारण में कौनसा अलंकार है ?
उत्तर मुद्रा अलंकार।
प्र. 4 स्वप्नवासवदत्तम् का नायक कौन है, वह किस वंश का है ?
उत्तर नायक उदयन है, वह पौरववंश में उत्पन्न 26 वाँ राजा है।
प्र. 5 उदयन किस श्रेणी का नायक है ?
उत्तर धीरललित।
प्र. 6 वासवदत्ता और पदमावती स्वप्नवासवदत्तम् की है ?
उत्तर वासवदत्ता-नायिका, पदमावती-प्रतिनायिका।
प्र. 7 प्रद्योत के किस मंत्री ने उदयन को कैद किया था ?
उत्तर शालंकायन।
प्र. 8 स्वप्नवासवदत्तम् का केन्द्र बिन्दु उदयन है तो इसका संचालक कौन है ?
उत्तर यौगन्धरायण।
प्र. 9 दर्शक कौन है ?
उत्तर पदमावती का भाई।
प्र. 10 कालक्रमेण जगतः परिवर्तमाना चक्रार पंक्तिरिवगच्छति भाग्यपंक्ति' सूक्ति है ?
उत्तर स्वप्नवासवदत्ता की।

प्र. 11 कवि का यहां कौनसा दृष्टिकोण है ?
उत्तर भाग्यवादी दृष्टिकोण।
प्र. 12 स्वप्नवासवदत्तम् का विदूषक है ?
उत्तर वसन्तक।
प्र. 13 स्वप्नवासवदत्तम् में प्रमुख रस है ?
उत्तर शृंगार रस।
प्र. 14 मगधराज की पुत्री का क्या नाम था ?
उत्तर पद्मावती।
प्र. 15 पुष्पक और भद्रक कौन है ?
उत्तर ज्योतिषी।
प्र. 16 'दुःखं न्यासस्यरक्षणम्' सूक्ति है ?
उत्तर स्वप्नवासवतम् ।
प्र. 17 यौगन्धरायण ने वासवदत्ता को धरोहर के रूप में किसके पास रखा था ?
उत्तर पद्मावती को।
प्र. 18 नान्दी पाठ के अभाव से युक्त नाटक है ?
उत्तर स्वप्नवासवदत्तम्।
प्र. 19 वह महान नाटक जो अग्नि परीक्षा में नहीं जला ?
उत्तर स्वप्नवासवदत्तम्।
प्र. 20 राजा उदयन किस प्रदेश का शासक था ?
उत्तर वत्सप्रदेश का।
प्र. 21 यौगन्धरायण के पिता का क्या नाम है ?
उत्तर युगन्धर।
प्र. 22 उदयन के पिता का क्या नाम है ?
उत्तर सहस्त्रनिक।
प्र. 23 अवन्तिका कौन है ?
उत्तर वासवदत्ता।
प्र. 24 अवन्तिप्रदेश की राजधानी है ?
उत्तर उज्जयिनी।
प्र. 25 दाहकोऽभुन्नःपावकः आभाणक है तथा यह उक्ति है ?
उत्तर स्वप्नवासवदत्तम्, उक्ति-राजशेखर की।
प्र. 26 मगध की राजधानी है ?
उत्तर गिरीव्रज राजगृह।
प्र. 27 मगध का अन्य नाम है ?
उत्तर कीकट।
प्र. 28 धर्मप्रिया के सम्बोधन से युक्त है ?
उत्तर पद्मावती।
प्र. 29 दुःखं न्यासस्य रक्षणम् में कौनसा अलंकार है ?
उत्तर परिकर।

प्र. 30 वत्सप्रदेश के किस ग्राम में आग लगी थी ?
उत्तर लावाणक।
प्र. 31 रुमण्वान् मंत्री है ?
उत्तर उदयन का।
प्र. 32 वासवदत्ता की उपमाता का क्या नाम है ?
उत्तर वसुन्धरा।
प्र. 33 स्वप्नवासवदत्तम् नाटक में कौतुकमाला किसे कहा है ?
उत्तर विवाहमाला।
प्र. 34 विवाहमाला में वासवदत्ता द्वारा किसे नहीं गुथा गया है ?
उत्तर सपत्नीमर्दनमूंगा।
प्र. 35 मणिभूम्यां का अर्थ है ?
उत्तर स्नानागार।
प्र. 36 स्वप्नवासवदत्तम् में भास ने उदयन के लिए छठाबाण किसे बताया है ?
उत्तर पदमावती को।
प्र. 37 घोषवती वीणा किसकी है ?
उत्तर उदयन की।
प्र. 38 स्वप्नवासवदत्तम् के चतुर्थ अंक में कौनसी ऋतु का वर्णन है ?
उत्तर शरद् ऋतु का।
प्र. 39 स्वप्नवासवदत्तम् में त्याग की प्रतिमूर्ति किसे कहा गया है ?
उत्तर वासवदत्ता को।
प्र. 40 अनतिक्रमणियों हि विधिः यह उक्ति है ?
उत्तर स्वप्नवासवदत्तम् की।
प्र. 41 'दुःखत्यक्तुंबद्धमूलोऽनुरागःस्मृत्वांदुखंनवत्वंयाति' उक्ति है ?
उत्तर उदयन की।
प्र. 42 'स्त्री स्वभावस्तु कातरः' सूक्ति है तथा उक्ति है ?
उत्तर स्वप्नवासवदत्तम्, उक्ति-उदयन की।
प्र. 43 समुद्रगृह से सम्बन्धित नाटक है ?
उत्तर स्वप्नवासवदत्तम्।
प्र. 44 पदमावती किस वेदना से पीड़ित है ?
उत्तर शिरोवेदना से।
प्र. 45 स्वप्नवासवदत्तम् का स्वप्न अंक कौनसा है ?
उत्तर पंचम अंक।
प्र. 46 समुद्रगृह मे राजा के स्वप्न में कौन आयी थी ?
उत्तर वासवदत्ता।
प्र. 47 आरुणी कौन था ?
उत्तर उदयन का शत्रु राजा।
प्र. 48 स्वप्नवासवदत्तम् नाटक में किस नदी का वर्णन है ?
उत्तर गंगा व नर्मदा।

प्र. 49 भास का सूर्यामुख महल से सम्बन्धित नाटक है ?
उत्तर स्वप्नवासवदत्तम्।
प्र. 50 वासवदत्ता की माता का क्या नाम था ?
उत्तर अंगारवती।
प्र. 51 राजा प्रद्योत के कितनी रानियाँ थी ?
उत्तर सोलह रानियाँ।
प्र. 52 'प्रायेण हि नरेन्द्र श्रीः सोत्साहरेवभुज्यतेः' सूक्ति है ?
उत्तर स्वप्नवासवदत्तम्।
प्र. 53 उदयन तथा वासवदता का विवाह प्रद्योत के द्वारा किसके माध्यम से करवाया गया ?
उत्तर चित्रफलक के माध्यम से।
प्र. 54 महाराज उदयन ने स्वप्न से जागकर कौनसी खुशखबरी सुनाई ?
उत्तर वासवदत्ता के जीवित होने का।
प्र. 55 प्रमदवन के शीलाखण्ड का नाम है ?
उत्तर पर्वततिलक।
प्र. 56 'कः कं शक्तो रक्षितुं मृत्युकाले रज्जुच्छेदे के घटं धारयति' यह सूक्ति है ?
उत्तर स्वप्नवासवदत्तम् की।
प्र. 57 यहां पर कौनसा भाव प्रकट हुआ है ?
उत्तर मनोवैज्ञानिक।
प्र. 58 घोषवती वीणा किसे प्रिय थी ?
उत्तर वासवदत्ता।
प्र. 59 कविताकामिनी के हास है ?
उत्तर भास।

(2) महाकवि कालिदास

जीवन परिचय

संस्कृत साहित्य में महाकवि कालिदास का अद्वितीय स्थान है। नाट्य, महाकाव्य तथा गीतिकाव्य विद्या को महाकवि ने सुदृढ किया है। कालिदास के निवास स्थल के रूप में काशी (विद्योत्तमा के स्वयंवर की दन्तकथा के आधार) विदर्भ (पीटर्सन का मत) बंगाल (दास उपाधि के कारण) काश्मीर, मिथिला, विदिशा तथा मालवाप्रदेश में स्थित उज्जयिनी (महाकाल के प्रति विशेष सम्मान वक्रपन्थाः) का विवेचन किया गया है।

महाकवि कालिदास के नाम से सिद्ध होता है कि इन्होंने कालीदेवी की उपासना कर देवी का आशीर्वाद प्राप्त किया था। इसलिए इन्हें कालिदास कहते हैं। काली देवी की उपासना बंगाल में सर्वाधिक होती है इसलिए इन्हें बंगाल का निवासी बताया जाता है। इसके अतिरिक्त मेघदूत में **'आषाढस्य प्रथमदिवसे'** द्वारा कालगणना हेतु सौरमास का प्रयोग किया गया है। सौरसंवत् का प्रयोग बंगाल में होता है। इसलिए इन्हें बंगाल का निवासी मानना अधिक उपयुक्त होगा। इस मत के समर्थक विद्वान् बंगाल स्थित मुर्शीदाबाद में गड्डासिगरू नामक स्थान को इनका जन्मस्थान कहते है। इसी कारण बंगाल में कालिदास के नाम से स्मारक का निर्माण किया गया है। इनके बचपन का नाम बगरू था किन्तु बाद में कालिदास हुआ। इनकी पत्नी का नाम विद्योतमा था। इनका विवाह

काश्मीर में हुआ था। ये राजा विक्रमादित्य के सभा रत्नों में से एक थे। इन्होंने 95 वर्ष की आयु में विक्रम संवत के आरम्भ में कार्तिक शुक्ला एकादशी रविवार को अपने पार्थिव शरीर का परित्याग किया।

महाकवि कालिदास का समय ई. पू. प्रथम शताब्दी माना गया है। यह गुप्तकाल के कवि है अतः चतुर्थ शताब्दी माना गया है।

एक किंवदन्ती के अनुसारः- कालिदास बाल्यावस्था में अत्यन्त मूर्ख थे। पण्डितों ने षडयन्त्र करके उस समय की श्रेष्ठ विदुषी थी किन्तु ज्ञान गर्विता विद्योतमा का विवाह उनसे करा दिया। मौन शास्त्रार्थ में कालिदास से विद्योत्तमा का पराजय दिखायी गयी, किन्तु विवाह के पश्चात् पत्नी अपमानित कालिदास काली का आशीर्वाद प्राप्त कर जब पुनः घर आते है तब अनावृत कपाटं द्वारं देहि कहते है तो अन्दर से पत्नी के द्वारा कहा जाता है कि–**अस्ति कश्चित् वाग्विशेषः**। इस वाक्य में प्रयुक्त शब्दों पर यह तीन ग्रंथों की रचना करते है। **अस्ति–कुमारसंभवम्, कश्चित्- मेघदूतम् तथा वाक्- रघुवंशम्।**

महाकवि कालिदास द्वारा प्रणीत रचनाएं–(7)

महाकाव्य–**कुमारसंभवम् तथा रघुवंशम्।**

खण्डकाव्य–**मेघदूत तथा ऋतुसंहार।**

नाटक–**मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम् तथा अभिज्ञानशाकुन्तलम्।**

1. मालविकाग्निमित्रम् नाटक

- महाकवि कालिदास द्वारा प्रणीत मालविकाग्निमित्रम् पांच अंको में समन्वित ऐतिहासिक नाटक है।
- इसमें शुंगवंशीय राजा अग्निमित्र तथा विदर्भ की राजकुमारी मालविका के विवाह की कथा का वर्णन है।
- अग्निमित्र के पिता पुष्यमित्र के द्वारा निर्विघ्न अश्वमेध अनुष्ठान एवं पुत्र वसुमित्र द्वारा यवनों पर विजय प्राप्ति की ऐतिहासिक घटनाओं का निरूपण है।
- शृंगार रस प्रधान नाटक है।
- नाटक का नायक धीरोदात्त गुणों से युक्त अग्निमित्र है, जो विवाहित पुरुष हैं। इसके दो रानियां धारिणी (ज्येष्ठा) और इरावती है, फिर भी मालविका के चित्र को देखकर अग्निमित्र उसके सौन्दर्य पर मुग्ध हो जाता है, जो कन्या है।
- इसकी नायिका मालविका है जो सौन्दर्य की निधि, त्याग और तपस्या की मूर्ति इत्यादि लक्षणों से युक्त मुग्धा नायिका है।

महत्वपूर्ण प्रश्न

प्र. 1 मालविकाग्निमित्र नाटक में मंगलाचरण किस कोटि का है ?
उत्तर आशीर्वादात्मक तथा वस्तुनिर्देशात्मक।
प्र. 2 मालविकाग्निमित्र नाटक में किसकी स्तुति है ?
उत्तर भगवान शंकर की।
प्र. 3 मालविकाग्निमित्र नाटक के मंगलचारण में कौनसा अलंकार है ?
उत्तर विरोधाभास व मुद्रण।
प्र. 4 पुराणमित्येव न साधु सर्वम्...............नाटक से उद्धृत पंक्ति है ?
उत्तर मालविकाग्निमित्र नाटक।

प्र. 5 मालविकाग्निमित्र नाटक में प्रस्तावना है ?

उत्तर प्रयोगातिशय प्रस्तावना।

प्र. 6 बकुला-वलिका और कुमुदिनी नाम की दो सखियों के वार्तालाप से कौनसा नाटक प्रारम्भ होता है ?

उत्तर मालविकाग्निमित्र नाटक ।

प्र. 7 सर्पांकित मुद्रा (अंगुठी) का उल्लेख किस नाटक में है ?

उत्तर मालविकाग्निमित्र नाटक।

प्र. 8 मालविका है ?

उत्तर नाटक की नायिका और सीमान्तवर्ती दुर्ग के रक्षक वीरसेन की बहिन।

प्र. 9 सर्पांकित अंगुठी का प्रयोग नाटक के किस अंक में हुआ है ?

उत्तर चतुर्थ अंक में।

प्र. 10 अग्निमित्र ने मालविका को सर्वप्रथम कहाँ देखा ?

उत्तर चित्रशाला में।

प्र. 11 अग्निमित्र का पिता कौन है ?

उत्तर पुष्यमित्र।

प्र. 12 मालविकाग्निमित्रम् का 'विदूषक' कौन है ?

उत्तर गौतम।

प्र. 13 पात्रविशेषे न्यस्तं गुणान्तर व्रजति शिल्पमाधातु। जलमिव समुद्रशुक्तौ मुक्ताफलतां पयोदस्य।। (योग्य शिष्य में प्रदत्त शिक्षक की कला उसी प्रकार विकसित हो जाती है जिस प्रकार मेघ का जल समुद्र के 'सीपी' में गिरकर मोती बन जाता है।) यह पद है ?

उत्तर मालविकाग्निमित्रं नाटक।

प्र. 14 हरदास और गणदास किस नाटक के पात्र है ?

उत्तर मालविकाग्निमित्रम्।

प्र. 15 मालविका ने कौनसा नृत्य प्रस्तुत किया था ?

उत्तर ललित नृत्य।

प्र. 16 'व्यवसितमेव' में अलंकार है ?

उत्तर उत्प्रेक्षा अलंकार।

प्र. 17 मालविका के प्रति राजा की आसक्ति किस अंक में अत्यधिक है ?

उत्तर द्वितीय अंक।

प्र. 18 हरदास और गणदास के परस्पर युद्ध में कौन विजयी रहा ?

उत्तर गणदास।

प्र. 19 सर्पांकित अंगुठी किस रानी की है ?

उत्तर धारिणी की।

प्र. 20 मालविकाग्निमित्रं नाटक में कौनसी ऋतु का वर्णन किस अंक में है ?

उत्तर वसन्त ऋतु का तृतीय अंक में।

प्र. 21 मालविकाग्निमित्र नाटक में मालविका की तुलना किस लता से की है ?

उत्तर कुन्दलता से।

प्र. 22 अशोक वृक्ष किसका अनुकरण कर रहा है ?

उत्तर मालविका का।

प्र. 23 'स्थाने प्राणः कामिनाम् दूति अधिमाम्' सूक्ति है ?

उत्तर मालविकाग्निमित्र नाटक की।

प्र. 24 अहो! अविश्वसनीयाः पुरुषाः यह किसने कहा है ?

उत्तर इरावती ने।

प्र. 25 मालविका को किसके कहने पर कारागार में डाला ?

उत्तर धारिणी ने इरावती के कहने पर।

प्र. 26 कारागार पर नियुक्त धारिणी की परिचायिका का क्या नाम है ?

उत्तर माधविका।

प्र. 27 विषवैद्य का क्या नाम है ?

उत्तर ध्रुवसिद्धि।

प्र. 28 अग्निमित्र का पुत्र है ?

उत्तर वसुमित्र।

प्र. 29 मालविकाग्निमित्र नाटक में युद्ध का वर्णन किस अंक में है ?

उत्तर पंचम अंक में।

प्र. 30 नाटक का समापन किस वाक्य के साथ होता है ?

उत्तर भरत वाक्य से।

प्र. 31 किस रानी की अनुमति से मालविका का विवाह राजा के साथ होता है ?

उत्तर धारिणी की अनुमति से।

प्र. 32 परिणय की पूर्ति में अग्निमित्र का सहायक कौन रहा है ?

उत्तर विदूषक।

प्र. 33 अग्निमित्र किस कोटि का नायक है ?

उत्तर धीरोदात्त।

प्र. 34 मालविकाग्निमित्र नाटक का अंगी रस है ?

उत्तर शृंगार।

प्र. 35 मालविकाग्निमित्र नाटक की प्रस्तावना में कालिदास ने किस नाट्यकार का स्मरण किया था ?

उत्तर भास।

प्र. 36 गणदास की शिष्या कौन है ?

उत्तर मालविका।

2. विक्रमोर्वशीयम् नाटक

कालिदास कृत विक्रमोर्वशीयम् नाटक पांच अंको का त्रोटक है। त्रोटक एक प्रकार का उपरूपक होता है। इसमें देव तथा मनुष्य दोनों का वर्णन है। शृंगार की प्रधानता एवं विदूषक की प्रत्येक अंक में उपस्थिति रहती है। शेष लक्षण नाटकवत् होते है। विक्रमोर्वशीयम् में राजा पुरुरवा (विक्रम) तथा दिव्य पात्रा उर्वशी की प्रेमकथा का वर्णन है। इसका मूल स्त्रोत ऋग्वेद तथा शतपथ ब्राह्मण में प्रस्तुत उर्वशी कथा है। मत्स्यपुराण में दी गई उर्वशी कथा से इस नाटक की कथावस्तु का अधिक साम्य है। राजा पुरुरवा केशी राक्षस से आक्रान्त अप्सरा उर्वशी की सहायता करता है। राजा और उर्वशी एक-दूसरे पर मोहित हो जाते है। उर्वशी का प्रेमपत्र विदूषक की अकुशलता से देवी ओसीनरी को मिल जाता है। राजा किसी प्रकार उसके क्रोध को शान्त करता है। स्वर्ग में भरतमुनि द्वारा प्रदर्शित एक नाटक में अभिनय करती हुई उर्वशी पुरुषोत्तम विष्णु के स्थान पर पुरुरवा का नाम ले लेती है।

जिससे क्रोधित होकर भरतमुनि उसे शाप दे देते है कि वह मृत्युलोक में पुत्र दर्शन तक रहे। तत्पश्चात् वह राजा पुरुरवा के पास रहने लगती है। राजा एक विद्याधर कुमारी पर मुग्ध हो जाता है। इससे क्रोधित होकर वह गन्धमादन उपवन में भाग जाती है जहाँ शापवश वह लता बन जाती है। राजा के शोकाकुल होने पर आकाशवाणी होती है कि यदि वह संगमणि लेकर के उर्वशी का आलिंगन करें तो वह पूर्वरूप में आ जाएगी। राजा ऐसा करके उसे पुनः पूर्वरूप में ले आता है। राजा की मणि को एक गिद्ध चुरा लेता है किन्तु वह अचानक बाण से मारा जाता है। बाण पर पुरुरवा का पुत्र आयुष् अंकित है। यह उर्वशी का पुत्र ऋषि के आश्रम में छिपाकर रखा गया था जिससे की उर्वशी न देख पाए। इसी समय नारद देवलोक से आकर सूचना देते है कि इन्द्र को युद्ध में पुरुरवा की सहायता चाहिए। अतः उन्होंने उर्वशी को हमेशा पुरुरवा के साथ रहने का निर्देश दिया है। इसका नायक पुरुरवा नायिका उर्वशी है। इसका मंगलाचरण आशीर्वादात्मक है। इसका प्रमुख रस श्रृंगार है। इसके चतुर्थ अंक में अपभ्रंश भाषा का प्रयोग हुआ है।

महत्वपूर्ण प्रश्न

प्र. 1 विक्रमोर्वशीय नाटक है ?
उत्तर महाकवि कालिदास का।
प्र. 2 विक्रमोर्वशीय नाटक में नायक और नायिका कौन है ?
उत्तर पुरुरवा नायक और उर्वशी नायिका।
प्र. 3 विक्रमोर्वशीय नाटक को रूपक के किस भाग में जाना जाता है ?
उत्तर त्रोटक।
प्र. 4 ईहलोक और पारलौकिक पात्रों से समन्वित नाटक है ?
उत्तर विक्रमोर्वशीय नाटक।
प्र. 5 विक्रमोर्वशीय नाटक के कथानक का मूल स्त्रोत है ?
उत्तर ऋग्वेद के पुरुरवा उर्वशी संवाद सूक्त का 10/165 वां सूक्त तथा शतपथब्राह्मण में प्रस्तुत उर्वशी कथा।
प्र. 6 राजा पुरुरवा ने ऊर्वशी की रक्षा किससे की है ?
उत्तर केशी राक्षस से।
प्र. 7 उर्वशी ने स्वर्ग में भरत द्वारा निर्दिष्ट नाटकाभिनय में किसके स्थान पर किस व्यक्ति का नाम लिया ?
उत्तर मर्यादा पुरुषोत्तम विष्णु के स्थान पर पुरुरवा का।
प्र. 8 उर्वशी को किसने शाप दिया था ?
उत्तर भरतमुनि ने।
प्र. 9 गन्धमाधन उपवन से सम्बन्धित रचना है ?
उत्तर विक्रमोर्वशीय नाटक ।
प्र. 10 उस मणि का नाम बताइए जिसके स्पर्श मात्र से लता रूपी उर्वशी पुनः शरीर धारण करने वाली बनती है?
उत्तर संगमणि।
प्र. 11 राजा द्वारा मारे गए गिद्ध के बाण पर क्या अंकित है ?
उत्तर पुरुरवा के पुत्र आयुष् का नाम।
प्र. 12 पुरुरवा, उर्वशी और आयुष् का अर्थ स्पष्ट किजिए ?
उत्तर पुरुरवा-घोर गर्जनकारी मेघ, उर्वशी–विद्युत, आयुष्–अन्न।
प्र. 13 कवि ने अपभ्रश भाषा का प्रयोग किस अंक में किया है ?
उत्तर चतुर्थ अंक में।

प्र. 14 विक्रमोर्वशीय नाटक में कौनसा रस है ?
उत्तर श्रृंगार रस।
प्र. 15 संयोग श्रृंगार तथा वियोग श्रृंगार का चित्रण नाटक के किस अंक में मिलता है ?
उत्तर तृतीय तथा चतुर्थ अंक में।
प्र. 16 विक्रमोर्वशीय नाटक भरत वाक्य के साथ किस छन्द से समाप्त होता है ?
उत्तर अनुष्टुप छन्द के दो पद्यों से।
प्र. 17 विक्रमोर्वशीयम् नाटक का 'मंगलाचरण' है ?
उत्तर आशीर्वादात्मक।
प्र. 18 विक्रमोर्वशीयम् नाटक का 'विदूषक' कौन है ?
उत्तर माणवक।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक

अभिज्ञानशाकुन्तलम् का नामकरण

- अभिज्ञायतेऽनेनेति अभिज्ञानम्। अभि उपसर्गपूर्वक ज्ञा धातु से करणाधिकरणयोश्च सूत्र से ल्युट् प्रत्यय, अभि + ज्ञा + ल्युट् = अभिज्ञानम्। शाकुन्तल–शकुन्तलामधिकृत्य कृतं नाटकं शाकुन्तलम्। यहां पर अधिकृत्यकृतेग्रन्थे सूत्र से अण् प्रत्यय हुआ है। अभिज्ञानप्रधानं शाकुन्तलम् अभिज्ञानशाकुन्तलम्। **शाकपार्थिवादीनांसिद्धये उत्तर पदलोपस्योपसंख्यानम्**–इस वार्तिक से उतर पद प्रधान का लोप करने पर अभिज्ञानशाकुन्तलम् निष्पन्न होता है। जिसका तात्पर्य है–शकुन्तला विषयक नाटक जिसमें अंगुलीयक रूपी अभिज्ञान प्रधान है।

- अभिज्ञान सहितं शाकुन्तलम् इति अभिज्ञानशाकुन्तलम्। यहां उतर पद का लोप हो जाता है।
- अभिज्ञानेनस्मृतम् अभिज्ञानस्मृतम्। शकुन्तलायाः इदमिति शाकुन्तलम्। अभिज्ञानंस्मृतञ्च तत् शाकुन्तलञ्च इति अभिज्ञानशाकुन्तलम् अर्थात् अभिज्ञान से स्मरण किया हुआ शकुन्तला का पाणिग्रहण। औपचारिक अभिन्नता के कारण नाटक को अभिज्ञानशाकुन्तलम् कहा जाता है।
- अभिज्ञान से स्मरण की गई शकुन्तला इस अर्थ में व्युत्पत्ति इस प्रकार करेंगे- शकुन्तलायाः इदं शाकुन्तलम्। शाकुन्तलम् चेति अभिज्ञानशाकुन्तलम्। अभि + ज्ञा + ल्युट् (भावार्थ में) तथा मयुराव्यंसकादयः सूत्र से समास।
- शकुन्तेःलातिातापालितेति शकुन्तला–शकुन्त (उपपद) + ला (धातु) + क, टाप् (प्रत्यय)।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक का परिचय

अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक महाकवि का सर्वोत्कृष्ट नाटक है। नाटक में शिव की अष्टमूर्तियों की वंदना आशीर्वाद मंगलाचरण का स्वरूप है। पत्रावली संज्ञक नांदी है। नाटक का प्रारंभ ग्रीष्म ऋतु से होता है। इसमें सात अंक हैं। इसका नायक हस्तिनापुर का पौरववंशी राजा दुष्यंत है, जो धीरोदात्त श्रेणी का है। इसकी नायिका शकुन्तला है, जो मुग्धा श्रेणी की है। इसमें दुष्यंत एवं शकुन्तला के प्रेम एवं परिणय का चित्रण है। इसका प्रधान रस शृंगार है। नाटक का नामकरण षष्ठ अंक के आधार पर हुआ है। महर्षि कण्व कुलपति हैं तथा गौतमी आश्रम की वृद्धा तापसी है, ये शकुन्तला के पालित माता-पिता हैं। जन्मदाता माता-पिता महर्षि विश्वामित्र एवं मेनका अप्सरा है। अनुसूया एवं प्रियंवदा शकुन्तला की सखियां हैं, जो कण्व आश्रम की तापस कन्या हैं। शार्ङ्गरव एवं शारद्वत कण्व शिष्य हैं। महर्षि कण्व, दुर्वासा एवं मारीच का वर्णन नाटक में मिलता है। इसका विदूषक माढव्य है।

- अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक का उपजीव्य महाभारत का आदिपर्व (अध्याय 68 से 74) एवं पद्मपुराण है। नाटक की कथावस्तु सात अंकों में विभाजित है। महाकवि ने नाटक को व्यापक रोचकता प्रदान की है- कण्व ऋषि की सोमतीर्थ यात्रा, शकुन्तला का जन्मवृतांत, भ्रमरबाधा, अंगूठी का वृत्त, दुर्वासा का शाप, शकुन्तला का परित्याग तथा अनुवृत्ति घटनाएं। इन परिवर्तनों से नाटक का कथानक हृदयावर्जक हो गया है तथा नायक-नायिका के चरित्र उत्कर्ष युक्त हुए हैं। अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के प्रथम अंक में हस्तिनापुर का राजा दुष्यंत आखेट करने के लिए वन में जाता है और संयोगवश महर्षि कण्व के आश्रम में शकुन्तला से साक्षात्कार करता है। द्वितीय अंक में आश्रम की रक्षा कार्य में प्रवृत्ति, तृतीय अंक में राजा और शकुन्तला का समागम, चतुर्थ अंक में महर्षि कण्व का सोमतीर्थ से लौटना, आसन्नप्रसवा शकुन्तला का विवाह एवं विदाई, पंचम अंक में शकुन्तला का शारद्वत, शार्ङ्गरव एवं गौतमी सहित हस्तिनापुर भेजना परन्तु दुर्वासा के शाप के कारण राजा की पहचानने में असहमति। इस प्रत्याखान के पश्चात ऋषियों के चले जाने पर शकुन्तला को कोई दिव्य ज्योति आकाश में उठा ले जाती है और मारीच के आश्रम में वह निवास करती है। षष्ठ अंक में राजा की नामांकित अंगुठी मछुए के पास से राजा को मिलती है, जिसे देखते ही शकुन्तला की स्मृति हो जाती है। वह अपनी प्रियतमा के प्रत्याखान से व्याकुल हो जाता है। अंत में इन्द्र की सहायता करने के लिए वह स्वर्गलोक में जाता है। सप्तम अंक में दुष्यंत विजय प्राप्त कर स्वर्ग से लौटता है और मारीच के आश्रम में अपने पुत्र तथा प्रियतमा का साक्षात्कार करता है। इसी मिलन तथा महर्षि मारीच के आशीर्वाद के एवं भरतवाक्य साथ नाटक समाप्त होता है।

सुभाषितानि–

प्रथम अंक

(1) **बलवदपि शिक्षितानामात्मन्य प्रत्ययं चेतः।**
अत्यधिक शिक्षित जनों का भी चित्त अपने विषय में अविश्वास युक्त ही होता है।

(2) **भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वतः।**
होने वाली घटनाओं के द्वार सब कहीं होते हैं।

(3) **दूरीकृताः खलु गुणैरुद्यान लता वन-लताभिः।**
वन लताओं द्वारा गुणों से उद्यान लताएं भी तिरस्कृत कर दी गई हैं।

(4) **ध्रुवं स नीलोत्पलं पत्रधारया, शमीलतां छेत्तुमृषिर्व्यवस्यति।**
महर्षि कण्व निश्चय ही नीलकमल के पत्ते की धार से शमीलता को काटने का प्रयत्न कर रहे हैं।

(5) **किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम् ।**
मधुर आकृतियों के लिए कौन सी वस्तु अलंकार नहीं होती।

(6) **सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणवृत्तयः।**
सन्देहास्पद वस्तुओं के विषय में सज्जनों के अन्तःकरण की प्रवृत्तियां ही प्रमाण होती है।

(7) **न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात्।**
कान्ति से समुज्जवल तेज की उत्पत्ति भूतल से नहीं हो सकती।

द्वितीय ंक य(1)**गलतोगण्डस्योपरि पिटकः संवृत्तः।** ए्आपत्ति
र आपत्ति का आना।

(2) **अहो कामी स्वतां पश्यति।**
अरे कामी सर्वत्र अपने को ही देखता है।

(3) **सर्वः खलु कान्तमात्मीयं पश्यति।**
सभी अपने को ही सुन्दर समझते है।

तृतीय अंक

(1) **लभेत् वा प्रार्थयित्वा न वा श्रियं, श्रियादुरापः कथमीप्सितों भवेत्।**
लक्ष्मी को चाहने वाला लक्ष्मी को प्राप्त करें या न करें परन्तु जिसे लक्ष्मी चाहे वह कैसे दुर्लभ हो सकता है।

(2) **स्निग्धजन संविभक्तं हि दुःखं सह्यवेदनम्।**
स्नेहीजनों में विभक्त हुआ दुःख सहन करने योग्य वेदना वाला होता है।

(3) **सागरमुझित्वा कुत्र वा महानद्यवतरति।**
सागर को छोडकर महानदी कहाँ उतरती है।

चतुर्थ अंक

(1) **सुशिष्यपरिदत्ताविद्येवाशोचनीयासिसंवृता।**
योग्य शिष्य को दी गई विद्या के समान तुम अशोचनीया हो गई हों।

(2) **गुर्वरपिविरहदुःखमाशाबन्धःसाह्यति।**
पुनर्मिलन की आशा का बन्धन असहनीय विरह दुःख को भी सहन करने की शक्ति प्रदान करता है।

(3) **न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम।**
बुद्धिमानों के लिए कोई भी विषय अज्ञात नहीं होता।

(4) **को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति।**
नवमालिका को कौन गरम जल से सींचेगा अर्थात् कोई नहीं।

(5) **अतिस्नेह पापशंकी।**
अत्यधिक प्रेम पाप की शंका का कारण होता है।

(6) **अर्थो हि कन्या परकीय एव।**
कन्या निश्चय ही पराया धन होता है।

पंचम अंक

(1) **भावस्थिराणि जननान्तर सोहृदानि।**
संस्कार के रूप में दृढ रूप से स्थित जन्मों के प्रेम व्यवहारों को अज्ञात पूर्वक प्रेम से स्मरण करता है।

(2) **अवर्णनीय परकलत्रम्।**
पर स्त्री की ओर देखना अनुचित है।

(3) **स्वाधीनकुशलाःसिद्धिमन्तः।**
सिद्धियों से सम्पन्न जनों के लिए सकुशल होना उनके अधीन होता है।

(4) **मूर्च्छत्यमीविकाराः प्रायेणैश्वर्यमत्तेषु।**
ऐश्वर्य से मत्त हुए लोगों में ये विकार प्रायः बढ ही जाते है।

(5) **अज्ञातहृदयेष्वेवं वैरी भवति सौहृदम्।**
अज्ञात हृदय वाले व्यक्तियों से किया गया प्रेम इसी प्रकार शत्रुता का कारण बन जाता हैं।

षष्ठ अंक

(1) **भवितव्यतां खलु बलवती।**
होनहार कभी टलती नहीं होकर ही रहती है।

(2) **हंसो हि क्षीरमादत्ते तन्मिश्रा वर्जयत्यपः।**
हंस दुध को ग्रहण करता है तथा उसमें मिले हुए जल को छोड देता है।

सप्तम अंक

(1) **अनार्यःपरदारव्यवहारः।**
पर स्त्री के विषय में चर्चा करना अनुचित है।

(2) **सिध्यन्ति कर्मसु महत्वस्वपि यन्नियोज्या।**
सेवक की महान् कार्यों में सफलता उनके स्वामियों के प्रभाव में निहित है।

(3) **स्त्रजमपि शिरस्यन्धः क्षिप्तां धुनोत्यहिशंकया।**
अन्धा व्यक्ति सिर पर डाली गई पुष्पमाला को सर्प की आशंका से दूर फेंक देता है।

(4) **सरस्वती श्रुतमहतां महीयताम्।**
ज्ञानवरिष्ठ लोगों की वाणी गौरव मण्डित हो।

महत्वपूर्ण प्रश्न

प्र. 1 कालिदास की वह कृति जिस पर चढ़कर वे विश्व महाकवि परिषद् के सर्वोच्च शिखर पर है ?
उत्तर अभिज्ञानशाकुन्तलम्।
प्र. 2 अभिज्ञानशाकुन्तलम् का उपजीव्य है ?
उत्तर महाभारत का आदिपर्व अध्याय 64 से 74 तक।
प्र. 3 महाभारत का शकुन्तलोपाख्यान किस नाटक की कथा का मूल स्त्रोत है ?
उत्तर अभिज्ञानशाकुन्तलम्।
प्र. 4 वह कौनसा नाटक है जो सभी भाषाओं में अनुवादित है ?
उत्तर अभिज्ञानशाकुन्तलम्।
प्र. 5 अभिज्ञान का अर्थ है ?
उत्तर अंगुलीयक/अंगुठी।
प्र. 6 अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक का नाकरण किस अंक के आधार पर हुआ ?
उत्तर षष्ठम् अंक के आधार पर।
प्र. 7 शकुन्तला शब्द में कौनसा प्रत्यय है जो शाकुन्तलम् शब्द को निष्पन्न करता है ?
उत्तर अण् प्रत्यय।
प्र. 8 अभिज्ञान की व्युत्पत्ति है ?
उत्तर अभि (उपसर्ग) + ज्ञा (धातु) + ल्युट् (प्रत्यय)
प्र. 9 आद्या शब्द से कौन अभिप्रेत है ?
उत्तर शकुन्तला।
प्र. 10 अभिज्ञानशाकुन्तलम् में मंगलाचरण है ?
उत्तर आशीर्वादात्मक।
प्र. 11 मंगलाचरण कितने प्रकार के होते है ?
उत्तर– तीन/ आशीर्वादात्मक, नमस्कारात्मक, वस्तुनिर्देशात्मक।
प्र. 12 अभिज्ञानशाकुन्तलम् में किसकी उपासना की गई है ?
उत्तर शिव की।

प्र. 13 'वस्ताभिरष्टाभिरीशः' में 'वः' शब्द से अभिप्रेत है ?
उत्तर दर्शक।
प्र. 14 'ये द्वे कालं विधत्तः' यहां 'द्वे' का अर्थ है ?
उत्तर अनसूया व प्रियम्वदा।
प्र. 15 'यामाहुः सर्वबीज प्रकृतिः' यहां सर्व शब्द का अभिप्राय है ?
उत्तर सर्वदमन/भरत।
प्र. 16 अभिज्ञानशाकुन्तलम् में नान्दी है ?
उत्तर पत्रावली संज्ञक नान्दी।
प्र. 17 अभिज्ञानशाकुन्तलम् में 'तनुभिः' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया है ?
उत्तर अणु के लिए।
प्र. 18 'स्त्रग्धरा छन्द' का प्रयोग कवि ने मंगलाचरण के लिए क्यों किया ?
उत्तर सप्तम् अंक की सूचना हेतु।
प्र. 19 अभिज्ञानशाकुन्तलम् के मंगलाचरण के पद्य में 'स्त्रग्धरा छन्द' के प्रथम गण (मगण) से कवि का अभिप्रेत है ?
उत्तर मंगलपद्य व नान्दी होने की सूचना।
प्र. 20 कथावस्तु के बीज सहित नाट्य का अनुष्ठान क्या कहलाता है ?
उत्तर सूत्र।
प्र. 21 सूत्र का संचालन करने एवं रंगमंच के देवता की पूजा करने वाला कहा जाता है ?
उत्तर सूत्रधार।
प्र. 22 नेपथ्य का अर्थ है ?
उत्तर जवनिका/ग्रीन हाऊस/वेशभूषा धारण करने का स्थान।
प्र. 23 नाटक में पुरुष और स्त्री पात्र के लिए किस शब्द का प्रयोग किया जाता है ?
उत्तर स्त्री-आर्या/आर्ये, पुरुष-आर्यपुत्र।
प्र. 24 प्रयोगविज्ञान से अभिज्ञानशाकुन्तलम् में क्या व्यक्त किया है ?
उत्तर नाट्यकौशल।
प्र. 25 'बलवदपि शिक्षितानामात्मन्य प्रत्ययं चेतः' सूक्ति से कवि का कौनसा तथ्य उद्घाटित है ?
उत्तर मनोवैज्ञानिक तथ्य।
प्र. 26 नाट्यशास्त्र के नियमानुसार मध्यम, निम्न और स्त्री पात्र किस भाषा का प्रयोग करते है ?
उत्तर प्राकृत भाषा का।
प्र. 27 अभिज्ञानशाकुन्तलम् की रचना किस ऋतु में हुई थी ?
उत्तर ग्रीष्म ऋतु में।
प्र. 28 दिवसाः परिणाम रमणीयाः पंक्ति से क्या दृष्टिगोचर होता है ?
उत्तर नाटक का का सुखान्त होना।
प्र. 29 'ईषदीषद् चुम्बितानी भ्रमरैः सुकुमार केसर शिखानि। अवंत सपन्ति दयमानाः प्रमदाः शिरीश कुसुमानि।।
प्रस्तुत श्लोक से क्या अभिव्यंजा हो रही है ?
उत्तर शकुन्तला के प्रकृति प्रेम और शृंगार प्रियता की।

प्र. 30 'ईषदीषच्चुम्बितानी' पद से कालिदास के किस ज्ञान की अभिव्यक्ति हो रही है ?
उत्तर कामकलाविषयक ज्ञान की।
प्र. 31 कालिदास का अतीव प्रिय पुष्प है ?
उत्तर शिरीष पुष्प।
प्र. 32 नाटक की कथावस्तु किसका विशेष महत्व रखती है ?
उत्तर भूल (विस्मरणम्) का।
प्र. 33 तवास्मि गीत रागेण हारिणा प्रसभं हृतः। एष राजेव दुष्यन्तः सारंगेणातिरहंसा।। यहाँ पर श्लिष्ट पद है ?
उत्तर हरिणा एवं ह्वतः।
प्र. 34 प्रस्तावना शब्द का प्रयोग अभिज्ञानशाकुन्तलम् में करके कवि ने किसका संकेत दिया है ?
उत्तर प्रस्तावना समाप्ति का।
प्र. 35 प्रस्तावना को यह भी कहते है ?
उत्तर आमुख।
प्र. 36 नाटक का परिचय देने के लिए नाटक के प्रारम्भ में किसका प्रयोग किया जाता है ?
उत्तर प्रस्तावना का।
प्र. 37 प्रस्तावना कितने प्रकार की होती है ?
उत्तर पाँच (1) उद्घात्य, (2) कथाद्धात्य, (3) प्रयोगातिशय, (4) प्रवर्तक तथा (5) अवगलित।
प्र. 38 अभिज्ञानशाकुन्तलम् में प्रयोगातिशय प्रस्तावना कैसे स्पष्ट होती है ?
उत्तर 'एष राजा दुष्यतः' कहकर नाटक के नायक दुष्यन्त का प्रवेश कराया गया है।
प्र. 39 धनुषधारी दुष्यन्त की उपमा किससे की गई है ?
उत्तर पिनाकी से।
प्र. 40 पिनाकी शब्द का शाब्दिक अर्थ है ?
उत्तर पिनाक नामक अपने धनुष को धारण करने वाले भगवान शिव।
प्र. 41 स्मृति काल में क्षत्रिय द्वारा ब्राह्मण कन्या से उत्पन्न संतान कहलाती है ?
उत्तर सारथी।
प्र. 42 'पश्योदग्रप्लुत्वाद्' यहां पश्य शब्द किस रस की अनुभूति का बोधक है ?
उत्तर भयानक रस की।
प्र. 43 निरूपय तथा रूपयति का नाटक में किस अर्थ के लिए प्रयोग होता है ?
उत्तर अभिनय करने के अर्थ में।
प्र. 44 'मृगजवाक्षमयेव रथ्याः' यहाँ अलंकार है ?
उत्तर उत्प्रेक्षा अलंकार।
प्र. 45 'कृतसन्धामिव' में अलंकार है ?
उत्तर उत्प्रेक्षा अलंकार।
प्र. 46 आर्तत्राणाय वः शस्त्रं न प्रहर्तुमनागसि में वः किसका परिचायक है ?
उत्तर पुरूवंशी राजाओं की प्रतिष्ठा एवं गरिमा का/दुष्यन्त का।
प्र. 47 धनुष की डोरी को किससे बनाया जाता है, इसलिये इसे कहते है ?
उत्तर मुर्वा नामक लता से बना है, इसलिए इसे मोर्वी कहते है।

प्र. 48 मणिबंध पर धनुष की डोरी के आघात से जिस चिन्ह की प्रतीति होती है, उसे कहते है ?
उत्तर मोर्वी कीणांक।
प्र. 49 मोर्वी कीणांक से दुष्यन्त का कौनसा लक्षण प्रकट होता है ?
उत्तर महाप्रतापी/जनत्राणपरायण।
प्र. 50 तापसतरु कौनसा तरु है ?
उत्तर इंगुदी तरु।
प्र. 51 अथवा भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्रः यह सूक्ति है ?
उत्तर अभिज्ञानशाकुन्तलम्।
प्र. 52 प्रस्तुत सूक्ति में कवि की कौनसी विशेषता प्रकट होती है ?
उत्तर भाग्यवादी होने की।
प्र. 53 'बाहुः कुतः फलमिहास्य' यहाँ फल का अर्थ है ?
उत्तर प्रेम।
प्र. 54 'अहो मधुरमासां दर्शनम्' यह किसने किसके लिए कहा है ?
उत्तर दुष्यन्त ने शकुन्तला के लिए कहा है।
प्र. 55 अभिज्ञानशाकुन्तलम् में 'नवमालिका' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है ?
उत्तर शकुन्तला के लिए।
प्र. 56 असाधुदर्शी का प्रयोग किसने किसके लिए किया है ?
उत्तर दुष्यन्त ने कण्व के लिए!
प्र. 57 अव्याज का अर्थ है ?
उत्तर प्राकृतिक सुन्दरता।
प्र. 58 'किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्' सूक्ति है ?
उत्तर अभिज्ञानशाकुन्तलम्।
प्र. 59 'अनुविद्धम्' में धातु है ?
उत्तर व्यध् धातु।
प्र. 60 वनज्योत्सना तथा केसर वृक्ष का प्रयोग कवि ने किसके लिए किया है ?
उत्तर वनज्योत्सना–शकुन्तला, केसरवृक्ष–दुष्यन्त।
प्र. 61 'असंशयक्षत्रपरिग्रहक्षमा' यहां पर 'क्षत्र' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है ?
उत्तर दुष्यन्त (अप्रस्तुतप्रशंसा अलंकार)।
प्र. 62 दुष्यन्त किस कोटि का नायक है ?
उत्तर धीरोदात्त।
प्र. 63 'सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरण वृत्तयः' सूक्ति है ?
उत्तर अभिज्ञानशाकुन्तलम्।
प्र. 64 भ्रमर को देखकर उसके प्रति ईर्ष्यातिरेक की प्रतीति किसे हुई ?
उत्तर दुष्यन्त को।
प्र. 65 किस पद्य से महाकवि शकुन्तला के पास दुष्यन्त के जाने की भूमिका निर्मित की है ?
उत्तर चलापांगा दृष्टि ....।

प्र. 66 'शासितरि' में कौनसा प्रत्यय है ?
उत्तर तृच् प्रत्यय।
प्र. 67 'न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात्' सूक्ति है ?
उत्तर अभिज्ञानशाकुन्तलम्।
प्र. 68 शकुन्तला किसकी पुत्री है ?
उत्तर विश्वामित्र व मेनका की।
प्र. 69 दुष्यन्त किस वंश का राजा है ?
उत्तर पुरुवंश का।
प्र. 70 ''आशंकसे यदग्नि तदिदं स्पर्शं रत्नम्'' यहां रत्न कौन है तथा किसका प्रर्याय है ?
उत्तर शकुन्तला तथा तेजस्विता का प्रर्याय है।
प्र. 71 'अहोचेष्टाप्रतिरूपिका कामिजन मनोवृत्तिः' सूक्ति किस नाटक की है ?
उत्तर अभिज्ञानशाकुन्तलम्।
प्र. 72 शकुन्तला पर प्रियंका का कितने वृक्ष सींचने का ऋण है ?
उत्तर दो वृक्ष सींचने का।
प्र. 73 'वयं तत्वान्वेषाम् मधुकरः हतास्तवं खलुकृती' यहाँ हता शब्द किसका सूचक है ?
उत्तर असफल मनोरथ का।
प्र. 74 दुष्यन्त ने तापस कन्याओं के समक्ष किस रूप में अपना परिचय दिया है ?
उत्तर धर्माधिकारी।
प्र. 75 'मूर्तोविघ्नस्तपसः' यहाँ 'विघ्न' कौन है ?
उत्तर हाथी।
प्र. 76 ''गच्छति पुरः शरीरं धावति पश्चाद् संस्तुत चेताः। चीनाशुंकमिव केतोः प्रतिवातं नीयमानस्य।।'' यहाँ 'ध्वज -दण्ड' और 'केतोः' शब्द की उपमा किस अर्थ का द्योतक है ?
उत्तर ध्वजदण्ड–स्थूलशरीर, केतो–चंचल मन।

द्वितीय अंक

प्र. 1 'ततोगण्डस्योपरि पिटक संवृतः' सूक्ति है ?
उत्तर अभिज्ञानशाकुन्तलम्।
प्र. 2 'कामी स्वतां पश्यति' सूक्ति है ?
उत्तर अभिज्ञानशाकुन्तलम्।
प्र. 3 पशुओं द्वारा खाए हुए भोजन का चर्वण करना कहलाता है ?
उत्तर रोमन्थन/जुगाली।
प्र. 4 कालिदास ने तपस्वी की उपमा किससे की है ?
उत्तर सूर्यकान्त मणि से।
प्र. 5 अभिज्ञानशाकुन्तलम् में विदूषक का नाम है ?
उत्तर माढव्य/माधव्य।
प्र. 6 स्वनियोगमशून्यं कुरु अर्थात् आप जाइए अपना काम कीजिए, यह क्या है ?
उत्तर मुहावरा।

प्र. 7 'कृत भवता निर्मक्षिकम्' सूक्ति है ?
उत्तर अभिज्ञानशाकुन्तलम्।
प्र. 8 'सर्वः कान्तमात्मीयं पश्यति' सूक्ति है ?
उत्तर अभिज्ञानशाकुन्तलम्।
प्र. 9 सुरयुवतिसम्भवंकिलमुनेरपत्यंतदुज्झिताधिगम्। अर्कस्योपरिशिथिलच्युतमिवनवमालिकाकुसुमम्। यहाँ लता, डण्ठल तथा अर्क से अभिप्राय है ?
उत्तर लता–मेनका, डण्ठल–विश्वामित्र, अर्क–कण्व।
प्र. 10 ब्रह्मा की मानसिक रचना कौन है ?
उत्तर शकुन्तला।
प्र. 11 'रूपोच्चयेन मनसा कृता नु' पद से प्रतीति होती है ?
उत्तर सन्देह।
प्र. 12 'अनाघ्रातं पुष्पम्' शब्द से क्या अभिप्राय है ?
उत्तर कन्या/घ्राण।
प्र. 13 'कररुहैः अलूनम् किसलयम्' से अभिप्राय है ?
उत्तर शकुन्तला/मुख।
प्र. 14 'अनाविद्धं रत्नं' से अभिप्राय है ?
उत्तर निर्दोष/चक्षु।
प्र. 15 'अनास्वादितरसम्' से अभिप्राय है ?
उत्तर मनोहर/रसम्।
प्र. 16 'अखण्ड पुण्यानां' शब्द से क्या अभिप्राय है ?
उत्तर अभिलाषा/श्रवणेन्द्रिय।
प्र. 17 शकुन्तला की प्रेमसूचक वस्तुएँ कौन-2 सी है ?
उत्तर दर्भांकुरेण, वल्कलवस्त्र।
प्र. 18 'असक्तमपि विमोचयन्ती' में अलंकार है ?
उत्तर विरोधाभास अलंकार।
प्र. 19 प्राचीन राजव्यवस्था के अनुसार रक्षा के बदले प्रजा राजा को अपनी आय का कितना भाग प्रदान करती थी?
उत्तर छठा भाग।
प्र. 20 'आश्रमसर्वभोग्ये' में आश्रम का अर्थ है ?
उत्तर गृहस्थाश्रम।
प्र. 21 करभक किस ग्रंथ का पात्र है ?
उत्तर अभिज्ञानशाकुन्तलम् का।
प्र. 22 शकुन्तला किस व्याधि से पीड़ित थी ?
उत्तर 'लू' से।
प्र. 23 कामदेव के कितने बाण है ?
उत्तर पाँच–अरविन्द, अशोक, आम्रमंजरी, नवमालिका, नीलोत्पल।

तृतीय अंक

प्र. 1 महर्षि कण्व का आश्रम किस नदी के किनारे था ?
उत्तर मालिनी नदी के किनारे।
प्र. 2 'क्षामं-क्षामं' कपोलम्' इसमें अलंकार है ?
उत्तर समुच्चय अलंकार।
प्र. 3 शकुन्तला वेतसलता मण्डप में प्रवेश की सूचना देने के लिए किस शब्द का प्रयोग किया है ?
उत्तर 'द्वारे' शब्द का।
प्र. 4 महर्षि कण्व की आश्रमलता का क्या नाम है ?
उत्तर माधवी।
प्र. 5 'स्निग्धजनसंविभक्तं हि सुखं सह्यवेदनम्' सूक्ति है ?
उत्तर अभिज्ञानशाकुन्तलम्।

चतुर्थ अंक

प्र. 1 अभिज्ञानशाकुन्तलम् में मदन लेख किसका नाम है ?
उत्तर प्रेम पात्र का।
प्र. 2 'सागरमुझित्वा कुत्र वा महानद्यवतरति' सूक्ति है ?
उत्तर अभिज्ञानशाकुन्तलम्।
प्र. 3 अभिज्ञानशाकुन्तलम् में मदिरेक्षणा किसे लिए कहा गया है ?
उत्तर शकुन्तला के लिए।
प्र. 4 'द्वे प्रतिष्ठे कुलस्य' में यहाँ 'द्वे' शब्द का अभिप्राय किसके लिए है ?
उत्तर पृथिवी/शकुन्तला।
प्र. 5 'तपोधनम् मां वेत्सि' यहाँ 'मां' शब्द किस अर्थ का द्योतक है ?
उत्तर अहंकार का।
प्र. 6 शकुन्तला की मनः स्थिति और उसके निरपराध होने की सूचना किस शब्द से द्योतित होती है ?
उत्तर अनन्यमानसा का।
प्र. 7 सूर्य का सारथी है ?
उत्तर अरुण, अनुरु।
प्र. 8 कवि ने सुख-दुःख, अवनति-उन्नति की शिक्षा किस प्रतीक से दी है ?
उत्तर सुख : दुःख सूर्य, उन्नति-अवनति–चन्द्रमा।
प्र. 9 शशिनि और कुमुद्वती शब्द का प्रयोग कवि ने किस अर्थ में किया है ?
उत्तर शशिनि–चन्द्रमां (दुष्यन्त), कुमुद्वती–(शकुन्तला)।
प्र. 10 'सुशिष्य परिदत्ता विद्येवाशोचनीयासि संवृता।' यह सूक्ति है ?
उत्तर अभिज्ञानशाकुन्तलम्।
प्र. 11 'दुष्यन्तेनाहितं तेजो दधानां भूतये भुवः। 'अपेहि तनयां ब्रह्मन्नग्निगर्भां शमीमिव।।' के माध्यम से महर्षि कण्व को किसकी सूचना दी है ?
उत्तर शकुन्तला के विवाह की।

प्र. 12 'किसलियोद्भेदप्रतिद्वन्द्विभिः' शब्द से किसकी सूचना दी गई है ?
उत्तर शकुन्तला के सौभाग्यशाली होने की।
प्र. 13 'यास्यत्यद्य शकुन्तलेति' पद्य में कौन-सा रस है?
उत्तर करुण रस।
प्र. 14 'चिन्ता जडं दर्शनम्' यहाँ 'दर्शन' से अभिप्राय है ?
उत्तर इन्द्रियाँ।
प्र. 15 कौरववंश का जनक है ?
उत्तर शर्मिष्ठा-ययाति।
प्र. 16 शकुन्तला किसकी औरस पुत्री है ?
उत्तर विश्वामित्र व मेनका।
प्र. 17 'पातुं न प्रथमं व्यवस्यति.............' पद्य में कवि ने किसकी शिक्षा दी है ?
उत्तर पर्यावरण।
प्र. 18 शकुन्तला के प्रस्थान की अनुमति किनके द्वारा दी गई है ?
उत्तर कोयल (परभृत)।
प्र. 19 अभिज्ञानशाकुन्तलम् में परभृत शब्द का प्रयोग किसके लिये किया गया है ?
उत्तर शकुन्तला के लिए।
प्र. 20 शकुन्तला की विदाई का प्रभाव सबसे अधिक किस जाति पर हुआ ?
उत्तर स्त्री जाति पर।
प्र. 21 'छायाद्रुमैर्नियमितार्कमयूखतापः' पंक्ति से क्या सूचित हो रहा है ?
उत्तर मध्याह्नकाल।
प्र. 22 शकुन्तला की दयालुता तथा मृग शिशुओं के प्रति उसका मातृत्व व वात्सल्य किस शब्द से अभिप्रेत हुआ है?
उत्तर पुत्रकृतक।
प्र. 23 'मार्गेपदानि खलु ते विषमी भवन्ति' यहाँ मार्ग शब्द का अर्थ है ?
उत्तर गृहस्थधर्म।
प्र. 24 भविष्य में होने वाले शकुन्तला के अनिवार्य पतिवियोग की सूचना किस पक्षी से दी है ?
उत्तर चकवा-चकवी।
प्र. 25 'गुर्वरपिविरह दुःखमाशाबन्धनम्' सूक्ति है ?
उत्तर अभिज्ञानशाकुन्तलम्।
प्र. 26 'विवाद दीर्घतराम्' यहां 'तरप्' प्रत्यय का प्रयोग क्यों किया है ?
उत्तर वियोग के कारण अपेक्षाकृत रात्रि का अधिक लम्बा होने के कारण।
प्र. 27 'अबान्धवकृतां' पद से कवि ने क्या सूचना दी है ?
उत्तर गान्धर्व विवाह की।
प्र. 28 भारतीय संस्कृति में कितने आश्रम बताए गए है ?
उत्तर चार आश्रम।
प्र. 29 पति के क्रोधित होने पर भी पत्नी को क्या शिक्षा प्रदान की गई है ?
उत्तर विनम्रता की।

प्र. 30 शकुन्तला को पृथ्वी की सपत्नी क्यों कहा गया है ?
उत्तर राजा को पृथ्वीपति कहने के कारण।
प्र. 31 'अर्थो हि कन्या परकीय एव' सूक्ति है ?
उत्तर अभिज्ञानशाकुन्तलम् की।
प्र. 32 'शुश्रूषस्व गुरून् कुरु' किसने कहा है ?
उत्तर महर्षि कण्व ने।
प्र. 33 महर्षि कण्व ने शकुन्तला के वियोग दूर न होने का क्या कारण बताया है ?
उत्तर निवारवली/सांवा (एक प्रकार की घास के बीज)।
प्र. 34 'प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा' में कौनसा अलंकार है ?
उत्तर उत्प्रेक्षा अलंकार।
प्र. 35 'काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला। तत्रापि च चतुर्थोङ्क तत्र श्लोक चतुष्टयम्।।' उपर्युक्त पद्य कवि के कौनसे कौशल का परिचायक है ?
उत्तर नाट्य कौशल का।
प्र. 36 अभिज्ञानशाकुन्तलम् के कौनसे अंक में शकुन्तला की विदाई का मार्मिक दर्शन है ?
उत्तर चतुर्थ अंक में।
प्र. 37 कौनसा अंक अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक का हृदय है ?
उत्तर चतुर्थ अंक।

पंचम अंक

प्र. 1 महारानी पद को प्राप्त दुष्यन्त की पत्नी कौन है ?
उत्तर वसुमति।
प्र. 2 संगीताशाला में किस रानी ने गीति के माध्यम से व्यंग्य किया गया था?
उत्तर हंसपदिका।
प्र. 3 'अभिनवमधुलोलुपो भवान् तथाः परिचुम्ब्य चुतमञ्जरीम्।' कवि ने इस श्लोक का प्रयोग क्यों किया है?
उत्तर शकुन्तला की स्मृति हेतु।
प्र. 4 'रम्याणि वीक्ष्य मधुरांश्चनिशम्य शब्दान्' इसमें कवि का कौनसा दृष्टिकोण है ?
उत्तर मनोवैज्ञानिक।
प्र. 5 अभिज्ञानशाकुन्तलम् में 'कञ्चुकी' का क्या नाम है ?
उत्तर वातायन।
प्र. 6 'अवरोधगृह' किसे कहते है ?
उत्तर अन्तःपुर।
प्र. 7 शान्तचित होकर राजा कहाँ निवास करता है ?
उत्तर शान्तप्रदेश में।
प्र. 8 'प्रजाः प्रजाः स्वा इव तन्त्रयित्वा' में अलंकार है ?
उत्तर यमक/उपमा।
प्र. 9 'शीतं दिवा स्थानमिव द्विपेन्द्रः' यहां 'द्विपेन्द्र' है ?
उत्तर दुष्यन्त।

प्र. 10 राजा अपने सुख की इच्छा किसके लिए नहीं करता है ?
उत्तर प्रजाजन के हित के लिए।
प्र. 11 'मुर्च्छत्यमी विकाराः प्रायेणैश्वर्यमतेषु' यह कथन है ?
उत्तर शारद्वत का।
प्र. 12 'पादैः पिबति इति पादपः' में वृक्ष को पादप क्यों कहा है ?
उत्तर पैरों से पानी पीने के कारण।
प्र. 13 'अवगुण्ठनवती' का अर्थ क्या है ? यह शब्द किसने किसके लिए प्रयुक्त किया है?
उत्तर घूँघट। दुष्यन्त ने शकुन्तला के लिए।
प्र. 14 'किसलयमिव पाण्डुपत्राणाम्' में किसलय तथा पाण्डुपत्र शब्द का प्रयोग किसके लिए किया है ?
उत्तर किसलय–शकुन्तला, पाण्डुपत्र–तपस्वी के लिए।
प्र. 15 'त्वामर्हता प्रागसरः स्मृतो नः शकुन्तला मूर्तिमतिं च सत्क्रिया' यहाँ 'अर्हता' व 'मूर्तिमति' से क्या अभिप्राय है ?
उत्तर दुष्यन्त, शकुन्तला।
प्र. 16 'स्वाधीनकुशलाःसिद्धिमन्तः' उक्ति है ?
उत्तर शार्ङ्गरवः।
प्र. 17 'तितिण्यामभिलाषो भवेत तिन्तिणी' में 'तिन्तिणी' का अर्थ है ?
उत्तर इमली।
प्र. 18 'मा भेषी' का कर्त्ता कौन है ?
उत्त त्वम्।
प्र. 19 इन्द्र के सारथी का क्या नाम है ?
उत्तर मातलि।
प्र. 20 'श्यालः/आवुत्तः' का क्या अर्थ है ?
उत्तर साला/जीजा।
प्र. 21 राजा के सिपाहियों का क्या नाम है ?
उत्तर सूचक/जानुक।
प्र. 22 वसन्तोत्सव कौनसा उत्सव है ?
उत्तर होली का उत्सव।
प्र. 23 दुष्यन्त के साले का क्या नाम है ?
उत्तर मित्रावसु।
प्र. 24 दुष्यन्त की वियोग अवस्था किस प्रकार की प्रतीत हो रही है ?
उत्तर उन्माद की।

षष्ठम् अंक

प्र. 1 'भवितव्यतां खलु बलवती' अथवा 'ननु प्रवातेऽपि निष्कम्पा गिरयः' यह सूक्ति है ?
उत्तर अभिज्ञानशाकुन्तलम्।
प्र. 2 शकुन्तला का चित्र किसने बनाया था ?
उत्तर चतुरिका ने।

प्र. 3 मृगतृष्णिका दुष्यन्त के लिए कौन है ?
उत्तर चित्रलिखित शकुन्तला।
प्र. 4 विदुषक ने शकुन्तला के चित्रफलक को वसुमति के डर से राजा के कहने पर कहाँ रखा ?
उत्तर मेघप्रतिच्छद महल में।
प्र. 5 धनमित्र की वह पत्नी जिसका 'पुंसवन संस्कार' हुआ है, वह कहाँ की रहने वाली है ?
उत्तर अयोध्या नगर की।
प्र. 6 धार्मिक कार्यों में सहयोग प्रदान करने के कारण स्त्री को कहा जाता है ?
उत्तर धर्मपत्नी।
प्र. 7 पित्रों को दिये जाने वाले जलपिण्डादि तर्पण को कहते है ?
उत्तर निवाप।
प्र. 8 उद्भ्रान्तक क्या है ?
उत्तर नृत्य।
प्र. 9 'हंसो हि क्षिरमादत्ते तन्मिश्रा वर्जयति अपः' सूक्ति है ?
उत्तर अभिज्ञानशाकुन्तलम्।
प्र. 10 पिशुन कौन है
उत्तर राजा का मंत्री।
प्र. 11 स्त्रियाँ अंगों पर मेंहदी अथवा लक्षारस आदि से जो चित्र अंकित करती है, उसे कहते है ?
उत्तर विच्छित।
प्र. 12 इन्द्र के पुत्र का क्या नाम है ?
उत्तर जयन्त।
प्र. 13 इन्द्र द्वारा दुष्यन्त को पहनायी गई माला का क्या नाम है ?
उत्तर मंदारमाला।
प्र. 14 अनुरु कौन हैं ?
उत्तर अरुण।
प्र. 15 गंगा की तीन धाराएँ कौन-2 सी हैं ?
उत्तर मंदाकिनी, भोगवती, आकाशगंगा।
प्र. 16 वायु के कितने मार्ग है ?
उत्तर सात–आवह, प्रवह, उद्वह, संवह, परिवह, परावह, विवह।
प्र. 17 अभिज्ञानशाकुन्तलम् में महाकवि ने वायु के किस मार्ग का वर्णन किया है ?
उत्तर परिवह मार्ग का।
प्र. 18 हेमकूट पर्वत का वर्णन किस ग्रंथ में है ?
उत्तर अभिज्ञानशाकुन्तलम् में।
प्र. 19 अभिज्ञानशाकुन्तलम् का नामकरण किस अंक के आधार पर किया है ?
उत्तर छठे अंक के आधार पर।
प्र. 20 नाटक के सप्तम् अंक में किस ऋषि का वर्णन है ?
उत्तर मारीच ऋषि का।

सप्तम अंक

प्र. 1 'अनतिक्रमणीयानि श्रेयांसि.........' में अनतिक्रम है ?
उत्तर मारीच ऋषि।
प्र. 2 'अर्धपीतस्तनं मातुरामर्दक्लिष्ट केसरम्। प्रक्रीडितुं सिंहशिशुं बलात्कारेण कर्षति।।' यहाँ अलंकार है ?
उत्तर स्वभावोक्ति अलंकार।
प्र. 3 'धन्यास्तदंगरजसामलिनी भवन्ति' में दुष्यन्त किस अन्तर्वेदना से दुःखी है ?
उत्तर निःसंतान होने के कारण।
प्र. 4 धर्मदारपरित्यागी है ?
उत्तर दुष्यन्त।
प्र. 5 'अनार्यःपरदारव्यवहारः' सूक्ति है ?
उत्तर अभिज्ञानशाकुन्तलम्।
प्र. 6 'शकुन्तलावण्यं प्रेक्षस्व' में शकुन्तलावण्य किसका सूचक है ?
उत्तर पक्षीसौन्दर्य का।
प्र. 7 रक्षाकरण्डक है ?
उत्तर अपराजिता औषधि।
प्र. 8 "उपरागान्ते शशिनः समुपगतारोहिणी योगम्।" यहां 'उपरागान्ते, रोहिणी तथा शशिन' का अर्थ है ?
उत्तर उपरागान्ते–शाप, शशिन–दुष्यन्त, रोहिणी–शकुन्तला।
प्र. 9 व्यलीक से अभिप्राय है ?
उत्तर वेदना।
प्र. 10 'तेन हि ऋतुसमवायचिह्नं प्रतिपद्यतां लताकुसुमम्' में ऋतु, लता और कुसुम का क्या अर्थ है ?
उत्तर ऋतु-दुष्यन्त, लता-शकुन्तला, कुसुम-अंगूठी।
प्र. 11 'अदिति' का दूसरा नाम है ?
उत्तर दाक्षायणी।
प्र. 12 'उदेति पूर्व कुसुमं ततः फलं प्रस्तुत पद्य...' में अलंकार है ?
उत्तर काव्यलिंग अलंकार।
प्र. 13 दुष्यन्त को शाप के विषय में किसने बताया था ?
उत्तर महर्षि मारीच ने।
प्र. 14 दुष्यन्त द्वारा शकुन्तला को स्वीकार करने का समाचार महर्षि मारीच ने किसके द्वारा महर्षि कण्व के पास भेजा ?
उत्तर ऋर्षि गालव के द्वारा।
प्र. 15 नाटक का अन्त किस वाक्य से होता है ?
उत्तर भरतवाक्य से।
प्र. 16 अभिज्ञानशाकुन्तलम् में आए हुए तीन महर्षियों के नाम लिखिए ?
उत्तर महर्षि कण्व, महर्षि दुर्वासा, महर्षि मारीच।
प्र. 17 दुष्यन्त और शकुन्तला का पुनर्मिलन कहां हुआ था ?
उत्तर महर्षि मारीच के आश्रम में।

प्र. 18 मेनका की प्रिय सखियों के नाम लिखिए ?
उत्तर सानुमति व मिश्रकेशी।
प्र. 19 अभिज्ञानशाकुन्तलम् के प्रथम अंक में कौनसी संधि है ?
उत्तर मुख।
प्र. 20 कालनेमी किसके पुत्र थे ?
उत्तर हिरण्यकश्यप के।
प्र. 21 अभिज्ञानशाकुन्तलम् में कितने श्लोक है ?
उत्तर 194 श्लोक।
प्र. 22 शकुन्तला के साथ आने वालों में स्त्री पात्र का नाम बताइए ?
उत्तर गौतमी।
प्र. 23 अभिज्ञानशाकुन्तलम् में कितने अलंकार व छन्दों का प्रयोग किया है ?
उत्तर 46 अलंकारों व 24 छन्दों का।
प्र. 24 अभिज्ञान शाकुन्तलम् में वर्णित ऋतु का नाम बताइए?
उत्तर वसन्त ऋतु।
प्र. 25 उस मछली का नाम बताइएं जिसने शकुन्तला की अंगूठी को ग्रहण किया था ?
उत्तर रोहित मछली।
प्र. 26 उस तीर्थ का नाम बताइएं जहाँ शकुन्तला ने स्नान किया था ?
उत्तर शचीतीर्थ/शक्रावतार तीर्थ (इन्द्राणी तीर्थ)।
प्र. 27 अप्सरा तीर्थ से सम्बन्धित नाटक है ?
उत्तर अभिज्ञानशाकुन्तलम्।
प्र. 28 महर्षि कण्व का दूसरा नाम है ?
उत्तर काश्यप ऋषि।

3. नाट्यकार भवभूति

जीवन परिचय

मालतीमाधव प्रकरण की भूमिका से ज्ञात होता है कि भवभूति विदर्भदेश (आजकल बरार) पद्मपुर के रहने वाले थे। भवभूति के पूर्वज कृष्ण यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा के अध्येता थे। इनका गोत्र काश्यप था। इन्हें चरणगुरु पंक्तिपावन ब्राह्मण माना जाता है। भवभूति के पिता का नाम नीलकण्ठ, माता का नाम जतुकर्णी, गुरु का नाम ज्ञाननिधि था। इनके पितामह भट्टगोपाल थे।

भवभूति का पूर्ण नाम- **'भट्टश्रीकण्ठपदलांछनोभवभूतिर्नाम'** है। इनका नाम श्रीकण्ठ, उपाधि भवभूति है। भवभूति का समय 680 ई. से 750 ई. के मध्य माना गया है। भवभूति का जीवन अन्तिमकाल में कान्यकुब्ज के राजा यशोवर्मा के आश्रय में रहा है। दार्शनिकों की गोष्ठी में भवभूति उम्बेक नाम से प्रसिद्ध थे।

कृतित्व

1. मालतीमाधवम् 2. महावीरचरितम् 3. उत्तररामचरितम्। (इनके रूपकों में प्रकरण का अभाव है)

1. मालतीमाधवम्

- इसका कथानक बृहत्कथा पर आधारित है।
- यह प्रकरण ग्रन्थ है।
- इसमें 10 अंक है।
- इसमें शृंगार रस है।
- इसमें विदर्भराज के मन्त्री तथा पद्मावती नरेश के मन्त्री की पुत्री मालती की प्रणयकथा का नाटकीय निरूपण है। इसके साथ माधव के मित्र मकरन्द और पद्मावती नरेश के नर्मसचिव नन्दन की बहन मदयन्तिका की भी प्रणयकथा चलती है।
- इसमें विदूषक का अभाव है।
- इसमें नायिका मालति तथा नायक माधव है।
- इस नाटक की शैली गौडी है।

2. महावीरचरितम्

- यह रामायण के छः काण्डों (बालकाण्ड से युद्धकाण्ड) पर आश्रित है।
- इसमें सात अंक है।
- इसमें श्रीराम को महावीर कहा है।
- इसका प्रमुख रस वीर है।
- इसमें गौडी रीति का प्रयोग हुआ है।
- इसके नायक श्रीराम तथा नायिका सीता है।
- इसमें विदूषक का अभाव है।

3. उत्तररामचरितम्

उत्तररामचरितम् में रामायण का उत्तरार्द्ध भाग वर्णित है इसमें सात अंक है। इसका प्रमुख रस शृंगार है। इसके नायक श्रीराम तथा नायिका सीता है। श्रीराम धीरोदात्त श्रेणी के नायक है। इसमें राम के वन प्रत्यागमन के पश्चात् राजगद्दी की प्राप्ति से लेकर सीता मिलन तक की सम्पूर्ण कथाएँ दिखाई गयी है। इसमें विदूषक का अभाव है। पद्मपुराण से भी इसकी कथावस्तु का साम्य मिलता है। इसलिए पद्मपुराण को भी इसका उपजीव्य माना जा सकता है।

उत्तररामचरितं का नामकरण

रामस्यचरितं रामचरितम्, उत्तरं च तत् रामचरितम् इति उत्तररामचरितम्। उत्तररामचरितम् अधिकृत्य कृतं नाटकम् इति उत्तररामचरितम्।

कथावस्तु का संक्षिप्त परिचय

प्रथम अंक- (चित्रदर्शन)

सर्वप्रथम महाकवि ने नमस्कारात्मक मंगलाचरण किया है–**इदं कविभ्यः पूर्वभ्यों नमोवाकं प्रशास्महे। विन्देम**

देवता वाचममृतामात्मनः कलाम् ।। इसमें श्रीराम राज्याभिषेक के बाद जनक के चले जाने से सीताजी उदास हो जाती है। अतः उसके मनोविनोद के लिए श्रीराम सीता को उस चित्रविथिका में ले जाते है। जिसमें इनके जीवन की पूर्व घटनाएं चित्रित है। इस चित्रदर्शन से सीता के मन में वन विहार एवं गंगा दर्शन की अत्यधिक अभिलाषा उत्पन्न होती है। इसी समय दुर्मुख नामक गुप्तचर सीता चरित्र विषयक लोकापवाद की सूचना श्रीराम को देता है। प्रजानुरञ्जक श्रीराम कर्तव्यपालन के निमित्त वनविहार के बहाने आसन्नप्रसवा सीता का परित्याग करते हुए लक्ष्मण के द्वारा सीता को गहन वीथिका में विसर्जित कर देते है।

द्वितीय अंक-(पञ्चवटी प्रवेश)

इसमें जो घटनाएं उपस्थापित है वे प्रथम अंक के बारह वर्षों के बाद की है। सीता के दो पुत्रों को वाल्मीकि के आश्रम में शिक्षा मिलती है। इसी बीच श्रीराम ने अश्वमेघ यज्ञ आरम्भ किया जिसमें सीता की स्वर्णप्रतिमा बनाकर सहधर्मिणी के रूप में रखी थी। राम शम्बूक नामक शूद्र मुनि के वध के लिए दण्डक वन में जाते है, शूद्र मुनि शम्बूक के मरने पर दिव्य पुरुष का रूप मिलता है। दोनों दण्डक वन की भयावह प्रकृति का काव्यात्मक वर्णन करते हैं।

तृतीय अंक-(छायांक)

प्रकृत अंक नाटक का श्रेष्ठ स्थल है। इसमें श्रीराम पञ्चवटी में प्रवेश करते है। तमसा तथा मुरला नामक दो नदी देवताओं के संवाद द्वारा तथा वासन्ती नामक वनदेवता से लव-कुश व सीताविषयक वार्ता को सुनकर राम मूर्च्छित हो उठते हैं। सीता का स्पर्श ही उन्हें पुनर्जीवन देता है। छाया रूप सीता की उपस्थिति के कारण इस अंक को छायाङ्क कहा जाता है। राम और सीता के मनोभावों की सूक्ष्म अभिव्यक्ति यहाँ हुई है।

चतुर्थ अंक (कौशल्या जनकयोग)

इसमें वाल्मीकि आश्रम का दृश्य है जहाँ वसिष्ठ, अरुन्धती, कौसल्या, जनक आदि का आगमन होता है। लव को कौसल्या विस्मयपूर्वक देखती है, वह वाल्मीकि कृत रामायण कथा का परिचय देता है। वह राम के अश्वमेघ यज्ञ में छोड़ गये अश्व को पकड़ने के लिए शीघ्र ही प्रस्थान करता है।

पंचम अंक (कुमारविक्रम)

इसमें लव और चन्द्रकेतु का युद्ध होता है। इसमें वीर रस का संवाद हृदयावर्जक है। अन्त में लव कुश के द्वारा राम के अश्वमेधीय घोड़े को पकड़ने का वृतान्त वर्णित है।

षष्ठ अंक (कुमारप्रत्यभिज्ञान)

इसके विष्कम्भक में दोनों वीरों (लव और चन्द्रकेतु) के युद्ध का रोमांचक वर्णन है। राम का आगमन होता है। जिससे दोनों युद्ध बन्द कर देते हैं। कुश भी इसी बीच आता है। राम का अनुमान है कि ये दोनों सीता के ही पुत्र है किन्तु वे दोनों राम के प्रश्नों का उत्तर उदासीन होकर देते हैं।

सप्तम अंक-(गर्भाङ्क/ सम्मेलन)

नाटक को सुखान्त बनाने के लिए कवि ने वाल्मीकि रचित राम विषयक नाटक के अभिनय की कथा कल्पित की है। गंगा तीर पर इस नाटक का अभिनय अप्सराओं के द्वारा होता है। राम और उनकी समस्त प्रजा आमन्त्रित

है। इस गर्भनाटक में सीता निर्वासन से लेकर लव-कुश के जन्म की कथा का अभिनय होता है। इन शिशुओं को स्तन त्याग के बाद गंगा वाल्मीकि के आश्रम में देने का वचन देती है और पृथ्वी सीता से तब तक के लिए उनके पालन का अनुरोध करती है। गर्भनाटक के बाद राम मूर्च्छित हो जाते हैं। सीता पुनः आकर राम की मूर्छा दूर करती है। राम का सीता एवं लव कुश से समागम हो जाता है। भरतवाक्य के साथ नाटक का समापन होता है।

सुभाषित वचन

1. **अपि ग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्यहृदयम् ।**
   राम के विलाप से पत्थर भी रो पड़ा था और व्रज का हृदय भी फट गया था।
2. **गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिंग न च वयः ।**
   गुणवानों में गुण ही पूजा के स्थान होते है, न तो लिंग और न आयु ही।
3. **तेजस्तेजसि शाम्यतु ।**
   तेज तेज में शान्त होता है।
4. **पुटपाकपतीकाशो रामस्य करुणो रसः ।**
   राम का करुण रस पुटपाक के समान है।
5. **पुरन्ध्रीणां चित्त कुसुमसुकुमारं हि भवति ।**
   कुलीन स्त्रियों का हृदय फूल की तरह कोमल होता है।
6. **सतां केनापि कार्येण लोकस्याराधनं व्रतम् ।**
   किसी भी कार्य से जनता को प्रसन्न रखना सज्जनों का व्रत है।
7. **सतां सद्भिः सङ्गः कथमपि हि पुण्येन भवति ।**
   सज्जनों का सज्जनों के साथ मिलन किसी-किसी तरह पुण्य से होता है।
8. **सर्वमतिमात्रं दोषाय ।**
   अधिक मात्रा में होने पर सारी चीजें बुरी होती है।
9. **दुर्जनोऽसुखमुत्पादयति ।**
   दुर्जन दुःख ही उत्पन्न करता है।
10. **इयं गेहे लक्ष्मीरियममृतवर्तिः नयनयोः ।**
    यह घर में लक्ष्मी है, यह नेत्रों के लिए अमृतशलाका है।

महत्वपूर्ण प्रश्न

प्र. 1 उत्तररामचरित किस कवि का नाटक है ?
उत्तर भवभूति।
प्र. 2 करुण रस का सर्वश्रेष्ठ नाटक है ?
उत्तर उत्तररामचरितम्।
प्र. 3 भवभूति का जन्म कब हुआ था ?
उत्तर 680-750 ई.।
प्र. 4 भवभूति के गुरु का क्या नाम था ?
उत्तर ज्ञाननिधि।
प्र. 5 उदुम्बर, उम्बेक, भवभूति की उपाधि से युक्त कवि है ?
उत्तर श्रीकण्ठ ।

प्र. 6 उत्तररामचरितम् में कितने अंक है ?
उत्तर सात अंक।
प्र. 7 भवभूति किस गौत्र से सम्बन्ध रखते है ?
उत्तर काश्यप गौत्र से।
प्र. 8 उत्तररामचरितम् के मंगलाचरण में कवि ने किस देवी की उपासना की है ?
उत्तर वाक् देवी।
प्र. 9 उत्तररामचरितम् में कौनसा मंगलाचरण है ?
उत्तर आशीर्वादात्मक।
प्र. 10 उत्तररामचरितम् का आरम्भ किस उत्सव के अवसर पर होता है ?
उत्तर कलाप्रियनाथ उत्सव।
प्र. 11 राम के राज्याभिषेक के पश्चात् गुरु तथा माता किस ऋषि के यज्ञ में गए थे ?
उत्तर श्रृंगऋषि के द्वादशवर्षीय यज्ञ में।
प्र. 12 दशरथ की पुत्री का क्या नाम था ?
उत्तर शान्ता।
प्र. 13 शान्ता को दत्तक पुत्री के रूप में किसे प्रदान किया ?
उत्तर रोमपाद।
प्र. 14 रोमपाद ने शान्ता का विवाह किसके साथ किया ?
उत्तर विभाण्ड ऋषि के पुत्र ऋषि शृंग के साथ।
प्र. 15 ऋषि शृंग ने कौनसा यज्ञ किया था ?
उत्तर द्वादशवर्षीय।
प्र. 16 इदं कविभ्यः पूर्वेभ्योः नमोवाकं प्रशास्महे। विन्देम देवतां वाचममृतामात्मनः कलाम्।। प्रस्तुत पद्य में पूर्वेभ्योःकविभ्यः से कवि का क्या अभिप्राय है तथा आत्मनः शब्द से कवि को क्या अभिप्रेत है ?
उत्तर पूर्वेभ्यो कविभ्यः–वाल्मीकि तथा आत्मनः–आत्मा और परमात्मा।
प्र. 17 सीता विषयक लोक अपवाद की सूचना देने वाला सेवक है ?
उत्तर दुर्मुख।
प्र. 18 उत्तररामचरितम् का उपजीव्य है ?
उत्तर रामायण और पद्मपुराण।
प्र. 19 जनक की राजधानी है ?
उत्तर मिथिला।
प्र. 20 सीता के लिए उत्तरामचरितम् में किस शब्द का प्रयोग हुआ ?
उत्तर वैदेही।
प्र. 21 भगवान राम का कौनसा वंश है ?
उत्तर सूर्यवंश।
प्र. 22 सूर्यवंश के कुलगुरु है ?
उत्तर गुरु वशिष्ठ।
प्र. 23 सूर्यवंश का अविर्भाव किससे हुआ था ?
उत्तर सूर्य पुत्र मनु से।

प्र. 24 उत्तररामचरितम् का मुख्य कथानक क्या है ?
उत्तर राम द्वारा सीता का परित्याग।
प्र. 25 चित्रदर्शन में जो चित्र बनाए गए थे, उस चित्रकार का क्या नाम है ?
उत्तर अर्जुन।
प्र. 26 यथा स्त्रीणां तथा वाचां साधुत्वे दुजनोः जनः में दुर्जन जन से कवि को क्या अभिप्रेत है ?
उत्तर सीता विषयक अपवाद।
प्र. 27 उर्मिला, माण्डवी और श्रुतिकीर्ति किस-2 की पत्नियां है ?
उत्तर उर्मिला–लक्ष्मण, माण्डवी–भरत, श्रुतिकीर्ति–शत्रुघ्न।
प्र. 28 स्नेहं दयां च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि। आराधनाय लोकस्य मुंचतो नास्ति में व्यथा।। प्रस्तुत पद्य में भवभूति ने किस घटना का चित्रण किया है ?
उत्तर सीता त्याग का।
प्र. 29 राजा सगर के 60,000 पुत्र किस मुनि के तेज से भस्म हुए थे ?
उत्तर कपिल मुनि।
प्र. 30 राजा सगर की दो रानियां कौन-2 सी थी ?
उत्तर सुमति और केशीनी।
प्र. 31 प्रस्तवर्ण नामक पर्वत के सम्बन्धित रचना है ?
उत्तर उत्तररामचरितम्।
प्र. 32 दण्डक आरण्यक में कौनसा पर्वत है?
उत्तर कुंजवान पर्वत।
प्र. 33 कुंजवान पर्वत के समीप किस ऋषि का आश्रम है ?
उत्तर मतंग ऋषि का।
प्र. 34 श्रमणा कौन थी ?
उत्तर शबरी।
प्र. 35 अपि ग्रावारोदित्यपिदलतिव्रजस्यहृदयम् सूक्ति है ?
उत्तर उत्तररामचरितम् की।
प्र. 36 पम्पा सरोवर में किसका स्थान है ?
उत्तर सुग्रीव का।
प्र. 37 रघुवंशियों का श्रेष्ठ कर्तव्य क्या है ?
उत्तर प्रजानुरंजन।
प्र. 38 श्री राम द्वारा सीता परित्याग के समय सीता किस अवस्था में थी ?
उत्तर आसन्नप्रसवा।
प्र. 39 उत्तररामचरितम् के द्वितीय अंक का आरम्भ किसके आश्रम से होता है ?
उत्तर अगस्त्य ऋषि के आश्रम से।
प्र. 40 आत्रेयी किसका नाम है ?
उत्तर तापसी का।
प्र. 41 आत्रेयी को वाल्मीकि आश्रम में वेद के अध्ययन करने पर किस बाधा का अनुभव करना पड़ता है ?
उत्तर लव और कुश के ज्ञान की प्रगाढ़ता का।

प्र. 42 'वितरति गुरुः प्राज्ञे विद्यां यथैव तथा जड़े। न तु खलु तथाज्ञाने शक्तिं करोत्यपहन्ति वा।।' सूक्ति है ?
उत्तर उत्तररामचरितम्।
प्र. 43 तमसा नदी का वर्णन है ?
उत्तर उत्तररामचरितम्।
प्र. 44 मा निषाद! प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः। यत्क्रौंच मिथुनादेकमवधीः काममोहितम्।। यहाँ किस रस की उत्पत्ति हुई है ?
उत्तर करुण रस।
प्र. 45 यह श्लोक किसके द्वारा कहा गया तथा इसमें किस नवीन छन्द की उत्पत्ति हुई ?
उत्तर वाल्मीकि द्वारा तथा अनुष्टुप् छन्द की।
प्र. 46 उत्तररामचरितम् में वासन्ती किसका नाम है ?
उत्तर वनदेवता का।
प्र. 47 ऋषि शृंग के यज्ञ की समाप्ति पर गुरु वशिष्ठ आदि कहां गए थे ?
उत्तर महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में।
प्र. 48 अश्वमेघ यज्ञ के समय राम ने वाम भाग में किसे रखा था ?
उत्तर सीता की स्वर्णमूर्ति को।
प्र. 49 श्री राम द्वारा छोड़े गए अश्वमेघ यज्ञ के घोड़े का अधिष्ठाता कौन है ?
उत्तर लक्ष्मण पुत्र चन्द्रकेतु।
प्र. 50 शम्बूक कौन था ?
उत्तर शुद्र तपस्वी।
प्र. 51 उत्तररामचरितम् में प्रधान रस है ?
उत्तर करुणरस।
प्र. 52 गिद्धराज 'जटायु' का निवास स्थान किस पर्वत पर था ?
उत्तर प्रस्तवर्ण पर्वत पर।
प्र. 53 श्रीराम का शोक पुनः किस स्थान को देखकर उत्पन्न हो उठता है ?
उत्तर पंचवटी।
प्र. 54 कौञ्च पर्वत का वर्णन भावभूति के किस नाटक में है ?
उत्तर उत्तररामचरितम्।
प्र. 55 तमसा व मूरला कौन है ?
उत्तर देवनदियां।
प्र. 56 सीता को छाया के रूप में श्री राम के साथ रहने का वरदान किसने दिया था ?
उत्तर गंगा नदी।
प्र. 57 उत्तररामचरितम् में छाया अंक कौनसा है ?
उत्तर तृतीय अंक।
प्र. 58 दण्डक आरण्यक में राम का वार्तालाप किसके साथ होता है ?
उत्तर वासन्ती के साथ।
प्र. 59 एको रसः करुण एव.....पंक्ति से क्या अभिप्राय है ?
उत्तर नाटक में करुण रस की प्रधानता हैं।

प्र. 60 विवर्तवादी आचार्य है ?
उत्तर भवभूति।
प्र. 61 उत्तररामचरितम् का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंक कौनसा है ?
उत्तर तृतीय अंक।
प्र. 62 राजा जनक के वानप्रस्थ का निर्वाह किस तपोवन में किया गया था ?
उत्तर चन्द्रदीप तपोवन से।
प्र. 63 आत्महत्या के विरूद्ध तथ्य को प्रदर्शित करने वाला नाटक है ?
उत्तर उत्तररामचरितम्।
प्र. 64 लव और कुश को जन्म से कौनसे शास्त्र सिद्ध थे ?
उत्तर जृम्भक।
प्र. 65 सुमन्तु तथा लवण पात्र से युक्त नाटक है ?
उत्तर उत्तररामचरितम्।
प्र. 66 गुणाः पूजा स्थानं गुणिषु न च लिंग न च वयः सूक्ति है ?
उत्तर उत्तररामचरितम् की।
प्र. 67 व्रजादपि कठोतराणि मृदुनि कुसुमादपि। लोकोत्तराणां हि चेतांसि को विज्ञातुमर्हति।। पद्य है ?
उत्तर उत्तररामचरितम् का।
प्र. 68 उत्तररामचरितम् नाटक का आरम्भ किससे होता है ?
उत्तर नान्दीपाठ से।
प्र. 69 उत्तररामचरितम् के प्रथम व द्वितीय अंकों के मध्य अन्तर है ?
उत्तर 12 वर्षो का।
प्र. 70 इयं गेहे लक्ष्मी यह कथन किसका है और यहां 'लक्ष्मी' कौन है ?
उत्तर कथन–श्रीराम का, लक्ष्मी–जानकी (सीता)।
प्र. 71 चन्द्रकेतु कौन है ?
उत्तर लक्ष्मण का पुत्र।
प्र. 72 दोहद का अभिप्राय है ?
उत्तर गर्भकाल में इच्छा का होना।
प्र. 73 सुखान्त नाटक में करुणा से हृदय की शुद्धि होती है, कथन है ?
उत्तर अरस्तु का।
प्र. 74 सप्तम अंक को कहा जाता है ?
उत्तर गर्भाङ्क/सम्मेलन।
प्र. 75 भवभूतिर्विशिष्यते कथन किस ग्रंथ के सन्दर्भ में है ?
उत्तर उत्तररामचरितम्।

(4) नाट्यकार शूद्रक

जीवन परिचय

महाकवि शूद्रक हस्तिशास्त्र में परम प्रवीण विद्वान् थे, भगवान् शिव के अनुग्रह से उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ था। इनका निवास स्थान उज्जैन, दक्षिण महाराष्ट्र माना जाता है। शूद्रक का स्थिति काल 200 ई. से 300 ई. के मध्य स्वीकार किया गया है। महाकवि के विषय में प्रसिद्ध है

समरव्यसनी प्रमादशून्यः, ककुदं वेदविदां तपोधनश्च।
परवारणबाहुयुद्धलुब्धः, क्षितिपालः किल शूद्रकोबभूव।। (1/5)

महाकवि शूद्रक की एकमात्र रचना मृच्छकटिकम् (प्रकरण) प्राप्त होती है।

कृतित्व

मृच्छकटिकम्

कथावस्तु का संक्षिप्त परिचय

मृच्छकटिकम् ग्रन्थ प्रकरण रूपक है। इसका मूलस्त्रोत भासकृत चारुदत्त नाटक है। इसका प्रारम्भ नान्दी पाठ के बाद प्रस्तावना से होता है। इसमें दस अंक है। श्रृंगार रस प्रधान इस प्रकरण में चारुदत्त तथा वसन्तसेना की प्रेमकथा मुख्य रूप से और मदनिका शर्विलक की प्रेमकथा को गौण रूप से दिखाया गया है। इसका नायक वाणिज्यजीवी उज्जयिनी ब्राह्मण चारुदत्त है तथा नायिका वारवनिता वसन्तसेना है। चारुदत्त धीरप्रशान्त श्रेणी का नायक है। इसका विदूषक मैत्रेय है तथा शकार प्रतिनायक है। धूता चारुदत्त की पत्नी है, जो कुलजा नायिका है। इनका पुत्र रोहसेन है। इसका नामकरण छठे अंक की एक घटना के आधार पर रखा गया है। चारुदत्त पुत्र रोहसेन के पड़ौसी बालक की सोने की गाड़ी तथा रोहसेन की मिट्टी की गाड़ी इस प्रकरण की कथावस्तु में एक विशेष मोड़ दे देती है।

मृच्छकटिकम् शब्द की व्युत्पत्ति- मृदःशकटिका (मिट्टी की छोटी सी गाड़ी) अस्ति यस्मिन् तत् प्रकरणम् मृच्छकटिकम्। (मृद्+शकटिकम्) मृदःशकटम् = मृच्छकटम् तद् वर्णितमस्ति अस्मिन् इस अर्थ में मृच्छकट शब्द से मत्वर्थीय ठन् प्रत्यय करने पर मृच्छकटिकम् शब्द निष्पन्न होता है।

प्रथम अंक–(अलंकारन्यास)

इसमें उज्जयिनी की गणिका वसन्तसेना को राजा पालक का श्यालक शकार हस्तगत करना चाहता है। इसलिए वह विट-चेट के साथ वसन्तसेना का पीछा करता है। वसन्तसेना चारुदत्त के घर छिप जाती है। शकार से बचने हेतु अपने गहने को चारुदत्त के घर पर रख देती है।

द्वितीय अंक-(द्यूतकर संवाहक)

इसमें वसन्तसेना द्वारा स्वर्णमुद्रा देकर जुवारियों के चंगुल से बचाया गया संवाहक बौद्ध भिक्षु बन जाता है। इसी दिन वसन्तसेना का हाथी बौद्धभिक्षु को पकड़ लेता है तथा वसन्तसेना का सेवक कर्णपूरक हाथी से संवाहक को छुड़ाता है। फलतः चारुदत्त, कर्णपूरक को एक दुशाला इनाम देता है।

तृतीय अंक–(सन्धिच्छेद)

इसमें चारुदत्त के घर में संध लगाकर वसन्तसेना के न्यास रूप रखे आभूषणों को चौर्यकलाविशारद शर्विलक

चुरा लेता है। चोरी से प्राप्त धन द्वारा वह अपनी प्रेमिका मदनिका को दासी भाव से मुक्त करायेगा। मदनिका वसन्तसेना की दासी है। चारुदत्त की पत्नी धूता उन आभूषणों के बदले में अपनी बहुमूल्य रत्नमाला देती है जिसे लेकर विदूषक वसन्तसेना को देने जाता है।

चतुर्थ अंक–(मदनिकाशर्विलक)

इसमें शर्विलक वसन्तसेना के ही चुराये गये आभूषणों को देकर अपनी प्रेयसी मदनिका को स्वामिनी से मुक्त कराता है। मदनिका वसन्तसेना की ही दासी है। वह उसे वधू बनाता है। शर्विलक को अपने मित्र आर्यक के बन्दी होने की सूचना मिलती है। वह उसे बचाने के लिए चल पड़ता है। इधर विदूषक रत्नमाला लेकर वसन्तसेना के घर आकर उसके विशाल भवन का अवलोकन करता है। रत्नमाला लेकर वसन्तसेना सन्देश भेजती है कि वह सन्ध्या के समय चारुदत्त से मिलने आ रही है।

पञ्चम अंक–(दुर्दिन)

इसमें वसन्तसेना चारुदत्त के घर पर रात बिताती है। इसमें वर्षाकाल का भव्य वर्णन है। वसन्तसेना चारुदत्त से स्वार्णाभूषण की चोरी और उसकी प्राप्ति का शर्विलक विषयक सम्पूर्ण वृतान्त कहती है।

षष्ठ अंक–(प्रवहणविपर्यय)

इस अंक में अगले दिन वसन्तसेना चारुदत्त की पत्नी को उसकी रत्नमाला लौटाना चाहती है किन्तु वह स्वीकार नहीं करती है।

नामकरण घटना

चारुदत्त का पुत्र रोहसेन खेलने के लिए स्वर्ण की शकटिका माँगता है। जबकि दासी रदनिका उसे मिट्टी की गाड़ी देती है। इस मार्मिक दृश्य से प्रभावित होकर वसन्तसेना उसकी गाड़ी को आभूषणों से भर देती है और कहती है कि इनसे सोनें की गाड़ी बनवा लें। इस दृश्य से प्रभावित होकर नाट्यकार ने अपनी रचना का शीर्षक 'मृच्छकटिकम्' निर्धारित किया है। इस अंक में पुष्पकरण्डक उद्यान में वसन्तसेना चारुदत्त से मिलने गाड़ी से जाती है परन्तु शकटविपर्यय हो जाता है। वह शकार की गाड़ी को भ्रमवंश चारुदत्त की समझकर उसमें बैठ जाती है। इधर चारुदत्त की गाड़ी में आर्यक (पूर्व राजा) बैठ जाता है। मार्ग में चन्दनक नामक एक सिपाही आर्यक को अभयदान देता है।

सप्तम अंक–(आर्यकापहरण)

इसमें आर्यक चारुदत्त के पास पुष्पकरण्डक उद्यान में पहुँच जाता है, वसन्तसेना की प्रतीक्षा में चारुदत्त उसे देखकर अभय देता है तथा बन्धन मुक्त कर उसी गाड़ी में विदा कर देता है। चारुदत्त को वसन्तसेना की चिन्ता सताती है।

अष्टम अंक–(वसन्तसेना मोटन)

इसमें शकार द्वारा प्रणय निवेदन अस्वीकार करने पर वसन्तसेना का बलात् गला दबाना, मृत समझकर सुखे पत्तों में दबाकर जाना, चारुदत्त के विरुद्ध न्यायालय में अभियोग दायर करना तथा संवाहक (बौद्धभिक्षु) द्वारा वसन्तसेना को बचाना इस की अंक प्रमुख की घटना है।

नवम अंक–(व्यवहार)

इसमें दुर्भाग्यवंशात् न्यायालय में चारुदत्त के विरुद्ध अभियोग सिद्ध हो जाता है। चारुदत्त की सजा 'मृत्युदण्ड' होती है।

दशम अंक–(संहार)

इसमें पालक को मारकर आर्यक राजा बनता है, वह चारुदत्त को मृत्युदण्ड से बचाता है। वसन्तसेना को चारुदत्त की वधू का पद मिलता है, वह गणिकावृत्ति से मुक्त हो जाती है। चारुदत्त शकार को क्षमा कर देता है। इस प्रकार वसन्तसेना तथा चारुदत्त के वैवाहिक प्रेम-मिलन के साथ भरत-वाक्य से प्रकृत ग्रन्थ का सुखान्त समापन होता है।

सुभाषितानी

1. **न युक्तं परकलत्रदर्शनम्।**
   दूसरे की स्त्री को देखना ठीक नहीं है।
2. **दुर्लभागुणा विभवाश्च।**
   सद्गुणों और धन का मिलना कठिन है।
3. **न पुष्पमोषमर्हत्युद्यान लता।**
   उद्यान की लता पुष्प तोड़ने योग्य नहीं होती है।
4. **रत्नं रत्नेन संगच्छते।**
   रत्न रत्न से ही मिलता है।
5. **न कालमपेक्षते स्नेहः।**
   प्रेम समय का विलम्ब नहीं चाहता है।
6. **स्त्रियो हि नाम खल्वेता निसर्गादेव पण्डिताः।**
   स्त्रियाँ स्वभाव से ही चतुर होती है।
7. **लोके कोऽप्युत्थितः पतति कोऽपि पतितोऽप्युत्तिष्ठते।**
   संसार में कोई उठा हुआ गिरता है कोई गिरा हुआ उठता है।
8. **सर्वत्रार्जव हि शोभते।**
   सरलता सर्वत्र शोभायुक्त होती है।
9. **साहसे श्री प्रतिवसति।**
   साहस में लक्ष्मी का निवास होता है।
10. **चारित्रेण विहीन आढ्योऽपि च दुर्गतो भवति।**
    धनवान भी चरित्र से रहित होने से निर्धन ही होता है।
11. **छिद्रेष्वनर्था वहुली भवन्ति।**
    अल्पदोष भी दीर्घ अनिष्ट का कारण बन जाते है।
12. **निर्धनतासर्वापदामास्पदम्।**
    निर्धनता समस्त आपत्तियों का मूल कारण है।
13. **सर्वं शून्यं दरिद्रस्य।**
    दरिद्र व्यक्ति के लिए सभी दिशाएं शून्य होती है।

14. **बहुदोषा हि शर्वरी।**
    रात में ही अनेक अपराध होते है।
15. **शङ्कनीया हि लोकेऽस्मिन् निष्प्रतापा दरिद्रता।**
    इस संसार में तेज रहित निर्धनता शंका का घर होती है।
16. **शिरोमुण्डितं तुण्डं मुण्डितं चित्तं न मुण्डितं किमर्थमुण्डितम्।**
    चित्त की शुद्धि ही शिर एवं दाढ़ी मूँछ के मूण्डन का परिणाम है।
17. **सत्यं न मे विभवनाशकृतास्ति चिन्ता। भाग्यक्रमेण हि धनानि भवन्ति यान्ति।**
    धन के नष्ट होने की मुझे चिन्ता नहीं क्योकि भाग्यक्रम से ही धन प्राप्त होता है और चला भी जात हैं।
18. **स्त्रीषु रागो न कार्यो रक्तं पुरुषं स्त्रियः परिभवन्ति।**
    स्त्रियों पर (अनपेक्षित) अनुराग नहीं रखना चाहिए, क्योंकि स्त्रियाँ प्रेमी पुरुष को अपमानित कर देती है।
19. **सत्कारधनः खलु सज्जनः।**
    निश्चय ही सज्जन व्यक्ति का धन सत्कार होता है।
20. **वीणा कि नामासमुद्रोत्थितंरत्नम्।**
    वीणा नामक रत्न ऐसा रत्न है, जो समुद्र से नहीं निकला।
21. **बलवता सह को विरोधः।**
    बलवान् के साथ क्या विरोध।
22. **हंसी हंस परित्यज्य वायसं समुपस्थिता।**
    हंसी हंस को छोड़कर कौए के समीप आ गई है।
23. **अल्पक्लेशं मरणं दारिद्रयमनन्तकं दुःखम्।**
    मरना अल्प समय कष्ट देने वाला होता है परन्तु दरिद्रता तो ऐसा कष्ट है जो कभी भी समाप्त नहीं होता।
24. **मुमूर्षयो भवति न स खलु जीवति।**
    मृत्यु जब साक्षात् उपस्थित हो तो जीवन असम्भव हो जाता है।
25. **स्वके गेहे कुक्कुरोऽपि तावत् चण्डो भवति।**
    अपने घर में तो कुत्ता भी शेर होता है।
26. **पुरुषेषु न्यासा निक्षिप्यन्ते न पुनर्गेहेषु।**
    धरोहर उचित पुरुषों के पास रखी जाती है न कि घरों में।
27. **अपेयेषु तडागेषु बहुतरमुदकं भवति।**
    जिनका पानी पीने योग्य नहीं होता है, उन्हीं तालाबों में अधिक जल रहता है।
28. **गगनतले प्रतिवसन्तौ चन्द्रसूर्यावपि विपत्तिं लभेते।**
    आकाश में रहने वाले सूर्य और चन्द्र भी विपत्ति को प्राप्त करते हैं।
29. **मूले छिन्ने कुतः पादपस्य पालनम्।**
    वृक्ष की जड़ कट जाने पर उसका पालन किस प्रकार हो सकेगा।
30. **मूर्खैर्भाराक्रान्ता वसुन्धरा।**
    पृथ्वी मूर्खों के भार से दबी हुई है।
31. **विषमा इन्द्रिय चौरा हरन्ति चिरसंचितं धर्मम्।**
    कष्टकारक इन्द्रियरूपी चोर बहुत समय से संचित धर्म को चुरा लेते हैं।

महत्वपूर्ण प्रश्न

प्र. 1 'मृच्छकटिकम्' नाटक में मंगलाचरण किस विधि का है ?
उत्तर आशीर्वादात्मक।
प्र. 2 मृच्छकटिकम में कितने अंक व श्लोक है ?
उत्तर 10 अंक और 300 श्लोक।
प्र. 3 प्राकृत भाषा का सर्वाधिक प्रयोग किस रूपक में हुआ है ?
उत्तर मृच्छकटिकम्।
प्र. 4 मृच्छकटिकम् में कवि द्वारा किस देव की स्तुति की गई है ?
उत्तर भगवान शंकर की।
प्र. 5 मृच्छकटिकम् में नान्दी है ?
उत्तर पत्रावली संज्ञक।
प्र. 6 मृच्छकटिकम् प्रकरण के नायक-नायिका है ?
उत्तर नायक-चारुदत्त, नायिका-वसन्तसेना।
प्र. 7 शुदक किस धर्म को मानते है ?
उत्तर वैदिक धर्म को।
प्र. 8 इस प्रकरण की नायिका कौन होती है ?
उत्तर वैश्या या कुलीन स्त्री।
प्र. 9 मृच्छकटिकम् की कथावस्तु है ?
उत्तर कवि कल्पित एवं यथार्थवादी।
प्र. 10 शुद्रक की कितनी रचनाएं प्राप्त होती है ?
उत्तर मृच्छकटिकम्।
प्र. 11 मृच्छकटिकम् प्रकरण का नामकरण 'स्वर्ण शकटिकम्' न करके 'मृच्छकटिकम्' ही क्यों किया ?
उत्तर उत्कण्ठाजनक होने के कारण।
प्र. 12 मृच्छकटिकम् का मुख्य रस है ?
उत्तर श्रृंगार रस।
प्र. 13 चारुदत्त की पत्नी का क्या नाम है ?
उत्तर धूता।
प्र. 14 धूता द्वारा कौनसा व्रत किया गया था ?
उत्तर अभिरूपपति।
प्र. 15 'ककुदोवेदविदाम' की उपाधि से अलंकृत कवि है ?
उत्तर महाकवि शुद्रक।
प्र. 16 शुद्रक का निवास स्थान कहां था ?
उत्तर उज्जयिनी।
प्र. 17 मृच्छकटिकम् में विदूषक का क्या नाम है ?
उत्तर मैत्रेय।
प्र. 18 चारुदत्त के पुत्र का क्या नाम है ?
उत्तर रोहसेन।

प्र. 19 'वसन्तशौभेव' की उपमा से युक्त पात्र है ?
उत्तर वसन्तसेना।
प्र. 20 चारुदत्त के प्रिय मित्र का क्या नाम है ?
उत्तर जूर्णवृद्ध।
प्र. 21 मृच्छकटिकम् के सूत्रधार का क्या नाम है ?
उत्तर क्षुधार्त।
प्र. 22 वसन्तसेना के सुवर्णभाण्ड की रक्षा का भार चारुदत्त द्वारा किसे दिया गया ?
उत्तर दिन में–वर्धमानक और रात में–मैत्रेय।
प्र. 23 किस नाटक में रथ परिवर्तन से कथानक आगे बढ़ता है ?
उत्तर मृच्छकटिकम् में।
प्र. 24 'लिम्पतीव तमोऽगांनि.................' पद्य है ?
उत्तर मृच्छकटिकम् का।
प्र. 25 चारुदत्त का कौनसा सेवक जुआरी बन जाता है ?
उत्तर संवाहक।
प्र. 26 मृच्छकटिकम् प्रकरण के मंगलाचारण में कौनसा अलंकार है ?
उत्तर पर्यायमुक्त अलंकार।
प्र. 27 मृच्छकटिकम् की प्रस्तावना है ?
उत्तर प्ररोचना।
प्र. 28 मृच्छकटिकम् में चारुदत्त के घर से गहने की चोरी कौन करता है ?
उत्तर शर्विलक।
प्र. 29 वसन्तसेना किस नगर की गणिका थी ?
उत्तर अवन्तिपुरी (उज्जयिनी)।
प्र. 30 वसन्तसेना की दासी मदनिका का प्रेमी कौन था ?
उत्तर शर्विलक।
प्र. 31 वसन्तसेना को मृत्यमुख से किसने बचाया था ?
उत्तर संवाहक ने।
प्र. 32 चारुदत्त द्वारा वसन्तसेना की हत्या करने का मिथ्या आरोप कौन लगाता है ?
उत्तर शकार ने।
प्र. 33 मृच्छकटिकम् में राजा के रूप में कौन अधिष्ठित होता है ?
उत्तर आर्यक।
प्र. 34 मृच्छकटिकम् प्रकरण में किस राजा की हत्या होती है ?
उत्तर पालक की।
प्र. 35 मिट्टी की गाडी में आभूषण कौन रखती है ?
उत्तर वसन्तसेना।
प्र. 36 पुष्पकरण्डक उद्यान से युक्त रचना है ?
उत्तर मृच्छकटिकम्।
प्र. 37 शुद्रक ने छठा महापाप किसे बताया है ?
उत्तर निर्धनता को।

प्र. 38 सभी आपदाओं का निवास स्थान है ?
उत्तर निर्धनता।
प्र. 39 मृच्छकटिकम् नाटक का प्रतिनायक कौन है ?
उत्तर शकार।
प्र. 40 मृच्छकटिकम् प्रकरण में कितनी प्राकृत भाषाओं का प्रयोग हुआ है ?
उत्तर सात प्राकृत भाषाओं का।
प्र. 41 मृच्छकटिकम् के प्रथम अंक में किस ऋतु का वर्णन है ?
उत्तर ग्रीष्म ऋतु का।
प्र. 42 मृच्छकटिकम् में गरुड़ और नागिन की अभिवृद्धि किसके लिए हुई है ?
उत्तर गरुड़–शकार, नागिन–वसन्तसेना।
प्र. 43 वैश्यालय, मदिरापान, द्यूतक्रीड़ा आदि का वर्णन किस रचना में प्राप्त होता है ?
उत्तर मृच्छकटिकम् में।
प्र. 44 मृच्छकटिकम् में शकार द्वारा वसन्तसेना की उपमा दी गई है ?
उत्तर शृंगाली की।
प्र. 45 अपनी पत्नी की रत्नमाला को वैश्या के पास भेजने वाला पात्र है ?
उत्तर चारुदत्त।
प्र. 46 राजा पालक की हत्या किसने की थी ?
उत्तर आर्यक ने।
प्र. 47 सामाजिक रूपक है ?
उत्तर मृच्छकटिकम्।
प्र. 48 आर्यक ने चारूदत्त को किस नगर का राज्य दान में दिया था ?
उत्तर कुशावती।
प्र. 49 निर्धनता को प्रेम में बाधक कौन मानता है ?
उत्तर मदनिका।
प्र. 50 मृच्छकटिकम् में सेंध लगाने का वृतान्त किस अंक में मिलता है ?
उत्तर तृतीय अंक में।
प्र. 51 रेभिल कौन था ?
उत्तर संगीतकार/चारुदत्त का मित्र।
प्र. 52 मृच्छकटिकम् में वधू शब्द से अभिप्रेत है ?
उत्तर वसन्तसेना।
प्र. 53 'रत्नं रत्नेन संगच्छते' सूक्ति है ?
उत्तर मृच्छकटिकम् की।
प्र. 54 'सर्वतःर्जवं शोभते' सूक्ति है ?
उत्तर मृच्छकटिकम् की।
प्र. 55 'साहसे श्री प्रतिवसति' सूक्ति है ?
उत्तर मृच्छकटिकम् की।
प्र. 56 मृच्छकटिकम् में वर्षा ऋतु का वर्णन है ?
उत्तर पंचम अंक में।

प्र. 57 दर्दुरक (जुआरी) पात्र से युक्त रचना है ?
उत्तर मृच्छकटिकम्।
प्र. 58 रदनिका कौन थी ?
उत्तर चारुदत्त की सेविका।
प्र. 59 क्षीरिण्यःसन्तु गावो भवतु वसुमती.....। मंगला चरण है?
उत्तर मृच्छकटिकम्।
प्र. 60 मृच्छकरिकम् में कितने पात्र संस्कृत भाषा बोलते हैं?
उत्तर 6।

(5) नाट्यकार विशाखदत्त

जीवन परिचय

नाट्यकार विशाखदत्त के विषय में उनकी नाट्य रचना मुद्राराक्षस में प्रस्तावना से ज्ञात होता है कि-विशाखदत्त का जन्म राजपरिवार में हुआ था। इनके पिता महाराज पृथु एवं पितामह सामन्त वटेश्वरदत्त थे कुछ संस्करणों में इनके पिता का नाम भास्करदत्त भी मिलता है। विशाखदत्त की उपाधि दत्त थी। विशाखदत्त अपने मुद्राराक्षस में मगध के प्रति अत्यधिक आकर्षण दिखाते है। शोणनद, पाटलिपुत्र तथा उसके निकटवर्ती क्षेत्र की प्रकृति का यथार्थ चित्रण करने के कारण अनेक विद्वानों का अभिमत है कि ये मगध के निवासी थे। यह ब्राह्मण धर्म को मानने वाले एवं गृहस्थ जीवन का उपभोग करने वाले थे। इनका जन्म मगध के प्रमुख सामन्त परिवार में ही हुआ था। इनका समय (400) चतुर्थ शताब्दी (चन्द्रगुप्त द्वितीय, विक्रमादित्य) के समकालीन माना गया है।

कृतित्व

(क) देवी चन्द्रगुप्तम्

इसमें चन्द्रगुप्त द्वितीय द्वारा शकों की पराजय एवं सौराष्ट्र की विजय का वर्णन है। नाट्यदर्पण में इसका पाँच बार उल्लेख हुआ है।

(ख) अभिसारितवञ्चितकम्

इसमें वत्सराज उदयन के चरित्र का वर्णन है।

(ग) मुद्राराक्षस नाटक

नामकरण–**मुद्रया गृहीतः राक्षसः यस्मिन् तत् मुद्राराक्षसं नाटकम्**। अर्थात् मुद्रा के द्वारा राक्षस को वश में करने का मुख्य कथानक होने से इसे मुद्राराक्षस कहते है। इस नाटक के कथानक से यह स्पष्ट ही है कि इसमें राक्षस मुद्रा के द्वारा ही जीता गया है और इसका नामकरण भी प्रारम्भ में इस तथ्य को पुष्ट करता है– **मुद्रया जितः राक्षसः यस्मिन् इति मुद्राराक्षसः। तदधिकृत्य कृतो ग्रन्थः इति मुद्राराक्षसम्।**। यहाँ मध्यमपदलोपी बहुव्रीहि समास है।

कथावस्तु का संक्षिप्त परिचय

मुद्राराक्षस सात अंकों का राजनैतिक नाटक है। नायिका एवं विदूषक रहित प्रकृत रूपक वीर रस प्रधान है। इसका नायक धीरोद्धत ब्राह्मण चाणक्य तथा प्रतिनायक अमात्यराक्षस है। चन्द्रगुप्त उपनायक तथा मलयकेतु उपप्रतिनायक है। यह नाटक चाणक्य व अमात्यराक्षस की बुद्धि कौशल का अनुपम निदर्शन है। इस नाटक में अंकों के मध्य दृश्यों की योजना है। इसमें स्त्री पात्र का वर्णन नहीं है, केवल चन्दनदास की पत्नी का प्रवेश

दिखाया गया है। इसका द्वितीय अंक राक्षस की कुटनीति की प्रारम्भिक पराजय का अनुपम उदाहरण है। इस नाटक की कथावस्तु का आधार विष्णुपुराण व श्रीमद्भागवतपुराण है।

प्रथम अंक (मुद्रालाभ)

इसमें चाणक्य को राक्षस तीन विश्वासपात्र सम्बन्धियों क्षपणक जीवसिद्धि, कायस्थ शकटदास तथा मणिकार श्रेष्ठी चन्दनदास के सम्बन्ध में गुप्तचरों से सूचना मिलती है तथा राक्षस की एक मुद्रा भी उपलब्ध होती है, जो राक्षस की पराजय का प्रमुख कारण बनती है।

द्वितीय अंक (भूषणविक्रय)

इसमें राक्षस की कुटनीतिक पराजय का प्रथम निदर्शन है। चाणक्य की जागरुकता के चलते चन्द्रगुप्त की हत्या की राक्षस की योजना नाकाम हो जाती है।

तृतीय अंक (कृतककलह)

इसमें कौमुदी महोत्सव निषेध की ललित कथा वर्णित है, जिसमें शारदीपूर्णिमा को कौमुदीमहोत्सव मनाने की राजाज्ञा का अनुकूल समय पर चाणक्य जान-बुझकर निषेध कर देता है, जिसमें चन्द्रगुप्त चाणक्य से कपट विग्रह खड़ा करता है।

चतुर्थ अंक (प्रलोभन)

इसमें राक्षस का गुप्तचर सूचना देता है कि चन्द्रगुप्त चाणक्य में वैमनस्य हो गया है और चाणक्य को मन्त्रिपद से हटा दिया है। राक्षस और मलयकेतु चन्द्रगुप्त पर आक्रमण करने का निश्चय करते हैं।

पंचम अंक (कूटलेख)

यह अंक नाटक की गर्भसन्धि है तथा अंग्रेजी आलोचना के अनुसार इसमें कथावस्तु सातिशय संघर्ष (क्लाइमैक्स) है। इसमें चाणक्य की कुटनीतिक सफलता के कारण मुद्रित लेख एवं आभूषणों की पेटिका के साथ सिद्धार्यक पकड़ा जाता है। मलयकेतु राक्षस का विरोधी बन जाता है। अपने सेनापति शिखर सेन को आदेश देता है कि राक्षस के पाँचों मित्रों की हत्या कर दी जाये तथा राक्षस को चन्द्रगुप्त का आश्रय लेने के लिए यहाँ से निष्कासित कर दिया जाये।

षष्ठ अंक (कपटपाश)

इसमें मलयकेतु को चाणक्य द्वारा बन्दी बना लिया जाता है तथा राक्षस के विश्वास पात्र मित्र चन्दनदास को राजद्रोह के आरोप में मृत्युदण्ड की सजा सुनायी जाती है। इसी समय चन्दनदास विषयक समाचार को जानने के लिए राक्षस कुसुमपुर में लौट आता है।

सप्तम अंक (संग्रहण)

इसमें चन्दनदास को फाँसी हेतु वध स्थान पर ले जाया जाता है। जहाँ उसकी पत्नी व पुत्र करुण क्रन्दन कर रहे है। अपने को इस विपत्ति से बचाने हेतु उसका मित्र राक्षस स्वयं उपस्थित होता है तथा चाणक्य की दोस्ती स्वीकार करते हुए चन्द्रगुप्त का अमात्य बनना स्वीकार कर लेता है। भरत-वाक्य से प्रकृत ग्रन्थ का समापन होता है।

सुभाषितानि

1. **अत्यादरः शङ्कनीयः।**
   अत्यधिक आदर शंका का कारण होता है।
2. **न हि सर्वः सर्वं जानाति।**
   सभी प्रत्येक विषय में निपुण नहीं होते है।
3. **अनुचितः उपचारो हृदयस्य परिभवादपिदुःखमुत्पादयति।**
   अनुपयुक्त सम्मान तो अपमान से भी अधिक हृदय में पीडा को ही उत्पन्न करता है।
4. **न युक्तं प्रकृतमपि रिपुमवज्ञातुम्।**
   छोटे शत्रु की भी उपेक्षा नहीं करना चाहिए।
5. **भव्यं रक्षति भवितव्यता।**
   सौभाग्यशाली की भाग्य सदैव रक्षा करता है।
6. **पुरन्ध्रीणां प्रज्ञापुरुषगुणविज्ञानविमुखी।**
   स्त्रियों की काश से उत्पन्न होने वाले पुष्प के अग्रभाग के समान चंचल बुद्धि स्वभाव के कारण पुरुषों के गुणों को पहचानने में विमुख होती है।
7. **नन्वयुक्ततरः सुहृद् द्रोहः।**
   मित्रद्रोह तो पूर्णतः अनुचित होता है।
8. **दैवम् अविद्वांसः प्रमाणयन्ति।**
   मूर्ख लोग ही भाग्य को प्रमाण मानते है।
9. **दुराराध्या हि राजलक्ष्मीरात्मवद्भिरपि।**
   समाहितचित्त वाले लोगों के लिए राज्यलक्ष्मी कठिनता से आराधना की जाने वाली है।
10. **परायत्तः प्रीतेः कथमिव रसं वेत्ति पुरुषः।**
    पराधीन मनुष्य सुख के आनन्द को किस प्रकार जान सकता है।
11. **सेवालाघवकारिणी कृतधियः स्थाने श्ववृत्तिं विदुः।**
    सेवा को विद्वान् उचित ही श्ववृत्ति कहते हैं।
12. **अयमपरो गण्डस्योपरि स्फोटः।**
    यह तो मर्म स्थान के वर्ण के ऊपर दूसरा व्रण है।
13. **मुण्डितमुण्डोनक्षत्राणि पृच्छसि।**
    मुण्डित सिर वाले तुम नक्षत्रों को पूछते हो।
14. **अभूमिः खल्वेषोऽविनयस्य।**
    इस भूमि पर अविनय का कोई स्थान नहीं है।

महत्वपूर्ण प्रश्न

प्र. 1 मुद्राराक्षस किसके द्वारा प्रणीत है ?
उत्तर विशाखदत्त द्वारा।
प्र. 2 विशाखदत्त का समय है ?
उत्तर चतुर्थ शताब्दी।

प्र. 3 मुद्राराक्षस नाटक का नामकरण किस अंक के आधार पर हुआ है ?

उत्तर पंचम अंक के आधार पर।

प्र. 4 मुद्राराक्षस नाटक में मुद्रा है ?

उत्तर राक्षस की।

प्र. 5 मुद्राराक्षस नाटक के कितने अंक है ?

उत्तर सात अंक।

प्र. 6 ऐतिहासिक राजनैतिक घटनाओं पर आधारित नाटक है ?

उत्तर मुद्राराक्षस नाटक ।

प्र. 7 परिणय कथा का अभाव किस नाटक में है ?

उत्तर मुद्राराक्षस नाटक।

प्र. 8 नायिका और विदूषक रहित नाटक है ?

उत्तर मुद्राराक्षस नाटक।

प्र. 9 मुद्राराक्षस नाटक में कितनी प्राकृत भाषाओं का प्रयोग हुआ है ?

उत्तर तीन।

प्र. 10 मुद्राराक्षस नाटक का उपजीव्य है ?

उत्तर विष्णुपुराण तथा श्रीमद्भागवतपुराण।

प्र. 11 पाटलिपुत्र/कुसुमपुर किसकी राजधानी है ?

उत्तर मगध की।

प्र. 12 नंद कहां का राजा है ?

उत्तर पाटलिपुत्र का।

प्र. 13 नंद का विश्वासपात्र मंत्री कौन है ?

उत्तर राक्षस।

प्र. 14 मुद्राराक्षस नाटक में मंगलाचरण किस श्रेणी का है ?

उत्तर आशीर्वादात्मक।

प्र. 15 वक्रोक्ति अलंकार से युक्त नाटक का मंगलाचरण है ?

उत्तर मुद्राराक्षस नाटक।

प्र. 16 मूरा पात्र से युक्त रचना है ?

उत्तर मुद्राराक्षस नाटक (नद की अवैध शुद्र पत्नी) जिसका पुत्र चन्द्रगुप्त था।

प्र. 17 मुद्राराक्षस नाटक का आरम्भ कब हुआ ?

उत्तर चैत्रमास की पूर्णिमा के दिन।

प्र. 18 मुद्राराक्षस नाटक कथा की अवधि है ?

उत्तर एक वर्ष।

प्र. 19 मूरा से उत्पन्न पुत्र का क्या नाम है ?

उत्तर चन्द्रगुप्त।

प्र. 20 चाणक्य का अपमान किसने किया ?

उत्तर घनानन्द।

प्र. 21 चाणक्य ने अपने कार्यसिद्धि का साधन किसे बनाया ?

उत्तर चन्द्रगुप्त को।

प्र. 22 पर्वतक पात्र से युक्त रचना है ?

उत्तर मुद्राराक्षस नाटक।

प्र. 23 पर्वतक कौन था ?

उत्तर मलयकेतु के पिता।

प्र. 24 सर्वार्थसिद्धि कौन था ?

उत्तर नन्द का भाई।

प्र. 25 राक्षस का मित्र है ?

उत्तर शटकदास तथा चन्दनदास।

प्र. 26 राक्षस के गुप्तचर है ?

उत्तर विराधगुप्त व करभक।

प्र. 27 वैरोचक कौन था ?

उत्तर पर्वतक का भाई।

प्र. 28 वह कौनसा नाटक है जिसमें अंको के मध्य दृश्यों की योजना है ?

उत्तर मुद्राराक्षस नाटक।

प्र. 29 कौमुदी महोत्सव का निषेध किसने करवाया था ?

उत्तर चाणक्य ने।

प्र. 30 वीररस प्रधान नाटक है ?

उत्तर मुद्राराक्षस नाटक।

प्र. 31 रस की अपेक्षा घटना पर बल देने वाला नाटक है ?

उत्तर मुद्राराक्षस नाटक।

प्र. 32 मुद्राराक्षस नाटक का नायक और प्रतिनायक कौन है ?

उत्तर नायक–चाणक्य, प्रतिनायक–राक्षस।

प्र. 33 मुद्राराक्षस नाटक का हिन्दी रूपान्तरण किसने किया ?

उत्तर भारतेन्दू बाबू ने।

प्र. 34 राक्षस का वास्तविक नाम क्या था ?

उत्तर सुबुद्धि शर्मा।

प्र. 35 नन्दवंश का अन्तिम सम्राट कौन था ?

उत्तर महानन्द।

प्र. 36 विष कन्या द्वारा पर्वतक की हत्या कौन करवाता है ?

उत्तर चाणक्य।

प्र. 37 चाणक्य किस कोटि का नायक है ?

उत्तर धीरोदत्त।

प्र. 38 पाषाणहृदय मुद्राराक्षसम् में पात्र है ?

उत्तर चाणक्य।

प्र. 39 मुद्राराक्षसम् के तृतीय अंक में किस ऋतु का वर्णन है ?

उत्तर शरद् ऋतु में।

प्र. 40 चन्दनदास कौन था ?
उत्तर नगरसेठ/राक्षस का परममित्र।
प्र. 41 सुगांगमहल से सम्बन्धित रचना है ?
उत्तर मुद्राराक्षस नाटक।
प्र. 42 चाणक्य ने चन्द्रगुप्त के लिए किस शब्द का प्रयोग किया ?
उत्तर मौर्य, वृषल।
प्र. 43 चाणक्य का शिष्य कौन था ?
उत्तर शार्ङ्गरव।
प्र. 44 चाणक्य ने कपटलेख किसके द्वारा लिखवाया था ?
उत्तर शटकदास के द्वारा।
प्र. 45 मलयकेतु का सेनापति कौन है ?
उत्तर शिखरसेन।
प्र. 46 मलयकेतु का कंचुकी कौन है ?
उत्तर आर्य जांजलि।
प्र. 47 पुरुष पात्र से युक्त नाटक है ?
उत्तर मुद्राराक्षस नाटक।
प्र. 48 मलयकेतु का सेवक कौन है ?
उत्तर भासुरक।
प्र. 49 मलयकेतु का गुल्माध्यक्ष (सेनापति) कौन है ?
उत्तर दीर्घरक्ष।
प्र. 50 चन्दनदास की पत्नी का क्या नाम है ?
उत्तर कुटूम्बिनी।
प्र. 51 चन्द्रग्रहण में कौनसा अलंकार है ?
उत्तर श्लेष अलंकार।
प्र. 52 'दिष्ट्या मित्रर्येण में विनाशे न पुरुष दोषेण' सूक्ति है ?
उत्तर मुद्राराक्षस नाटक।
प्र. 53 अत्यादरो शंकनीयः सूक्ति है ?
उत्तर मुद्राराक्षस नाटक।
प्र. 54 न हि सर्वः सर्वं जानाति सूक्ति है ?
उत्तर मुद्राराक्षस नाटक।
प्र. 55 भव्य रक्षति भवितव्यता सूक्ति है ?
उत्तर मुद्राराक्षस नाटक।
प्र. 56 देवमविद्वांस प्रमाणयन्ति सूक्ति है ?
उत्तर मुद्राराक्षस नाटक।
प्र. 57 मुण्डित मुण्डो नक्षत्राणि सूक्ति है ?
उत्तर मुद्राराक्षस नाटक।

प्र. 58 अभूमिः खल्वेषाऽ विनयस्य सूक्ति है ?
उत्तर मुद्राराक्षस नाटक।
प्र. 59 गुढ़पत्ररहस्य किस नाटक के किस अंक से सम्बन्धित है ?
उत्तर मुद्राराक्षस नाटक के पंचम अंक से।

(ग.) गद्यकाव्यकवि– सुबन्धु, दण्डी और बाणभट्ट।

गद्यकाव्य

मानव अभिव्यक्ति का मौलिक स्वरूप गद्य है। निरन्तर विकासात्मक रूप में रहने से दण्डी ने काव्यादर्श में गद्यकाव्य की परिभाषा देकर इसे आख्यायिका और कथा के रूप में विभाजित किया है। **''गद्य कवीनां निकषं वदन्ति''** अर्थात् गद्य काव्य लिखना कवियों की कड़ी परीक्षा है। 8 वीं शताब्दी में यह उक्ति प्रसिद्ध हुई किन्तु गद्य का प्रथम रूप यजुर्वेद संहिता में देखने को मिलता है। यजुर्वेद में यजुस् की परिभाषा दी गई है कि **''गद्यात्मको यजुः** तथा **अनियताक्षरावसानो यजुः''** अर्थात् वाक्य मे आने वाले शब्दों की सीमा जहां नहीं हो वे वैदिक मंत्र यजुस् (गद्य) कहे जाते है। साहित्य गद्य के प्रयोग का अनुमान कात्यायन और पतंजलि के द्वारा दी गई सूचनाओं से प्राप्त होता है। दोनों वैयाकरणों ने गद्यकाव्य के रूप में आख्यायिकाओं की सूचना दी है। पतंजलि ने तीन आख्यायिकाओं के नाम दिये है जो निम्न है- (1) वासवदत्ता (2) सुमनोत्तरा (3) भैमीरथी। गद्यकाव्य के उदाहरण अभिलेखों से भी प्राप्त होते है। इन अभिलेखों में प्रयागस्तम्भलेख तथा जूनागढ़ (गुजरात) का गिरनार शिलालेख गणनीय है। गद्य साहित्य का विकासशील रूप दण्डी, सुबन्धु तथा बाण की रचनाओं में प्राप्त होता है। अमरकोश में **आख्यायिकोपलब्धार्था** (आख्यायिका) तथा **प्रबन्धकल्पनाकथा** (कथा) कहकर इनकी परिभाषा दी गई है। साहित्यदपर्णकार ने कथा और आख्यायिका को इस प्रकार स्पष्ट किया है -

कथा में कथावस्तु कविकल्पित होती है जबकि आख्यायिका में कथावस्तु ऐतिहासिक होती है। कथा के प्रारम्भ में गद्यों के द्वारा सज्जनों की प्रशंसा और कवि के वंश का वर्णन होता है। कथा का विभाजन नहीं होता किन्तु आख्यायिका उच्छवासों या निःश्वासों में विभक्त होती है। गद्य शैली में कथा और भाव का समान रूप से प्रयोग होता है। प्राचीन गद्य काव्य कथा तथा आख्यायिका है।

गद्य के प्रकार समास के प्रयोग तथा वृत भाग के निवेश की दृष्टि से गद्य के चार प्रकार माने गए है -

(1) **मुक्तक गद्य** :–समास से रहित रचना को मुक्तक गद्य कहते है।
(2) **वृत्तगन्धि गद्य**:–जहाँ गद्य में छन्द के अंश आ जाए उसे वृत्तग्रन्धि गद्य कहते है।
(3) **उत्कलिकाप्राय गद्य** :–लम्बे समास से युक्त गद्य उत्कलिकाप्राय गद्य कहलाता है।
(4) **चूर्णक गद्य** :–अल्प समासों से युक्त चूर्णक गद्य कहा जाता है।

1. आचार्य सुबन्धु

वासवदत्ता गद्यकाव्य

वासवदत्ता नामक गद्य काव्य के लेखक सुबन्धु है, जो बाणभट्ट के पूर्ववर्ती थे। सुबन्धु का समय 550 से 600 ई. के मध्य माना जाता है। वासवदत्ता का कथानक पूर्णतः कल्पित है। वासवदत्ता को गद्यकथा विधा के अन्तर्गत रखा जाता है। इसमें राजकुमार कन्दर्पकेतु तथा राजकुमारी वासवदत्ता के प्रति प्रेम का चित्रण है। नायक-नायिका आपस में एक-दूसरे को स्वप्न में देखते है और परस्पर अनुरक्त हो जाते है। नायक अपनी प्रियतमा को विन्ध्याचल पर्वत पर मित्र मकरन्द के साथ खोजता है। वहां शुक-सारिका के संवाद से ज्ञात होता है कि वासवदत्ता

की सारिका कन्दर्पकेतु की खोज में निकली है। पक्षी दम्पती की सहायता से नायक नायिका का मिलन होता है, संकट आने पर पुनः दोनों में वियोग हो जाता है। वासवदत्ता को एकान्त में देखकर दो किरातों के दल उसे अपनाने के लिए लड़ते है। वासवदत्ता वहाँ से निकलकर भाग जाती है किन्तु एक ऋषि के आश्रम में अनाधिकृत प्रवेश के कारण शापवश पाषाणशीला बन जाती है। कन्दर्पकेतु आत्महत्या करना चाहता है किन्तु आकाशवाणी के आश्वासन से रुक जाता है। एक दिन कन्दर्पकेतु के स्पर्श से पाषाणशीला वासवदत्ता बन जाती है। उसे लेकर कन्दर्पकेतु राजधानी लौट आता है और नियमपूर्वक विवाह करता है। कन्दर्पकेतु के पिता का नाम चिन्तामणि है। आचार्य सुबन्धु गौड़ी रीति के कवि है।

2. आचार्य दण्डी

(1) **काव्यादर्श** (2) **अवन्तिसुन्दरी** (3) **दशकुमारचरितम्**

संस्कृत गद्यकाव्य के इतिहास में दण्डी का नाम अमर है। वाल्मीकि और व्यास के बाद तृतीय स्थान दण्डी को ही प्राप्त है। वाल्मीकि के आने पर 'कविः', व्यास के आने पर 'कवी' और दण्डी के आने पर 'कवयः' रूप सिद्ध हुए है। दण्डी का काल 6 वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध एवं 7 वीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध है। दण्डी को भारवि का प्रपौत्र एवं कांची नरेश नरसिंह वर्मा का समकालीन माना जाता है। इनकी तीन रचनाएँ प्राप्त होती है।

(1) **काव्यादर्श** : यह तीन परिच्छेदों का पद्यात्मक काव्य शास्त्रीय ग्रंथ है। प्रथम परिच्छेद में 105 पद्य, द्वितीय परिच्छेद में 368 पद्य तथा तृतीय परिच्छेद में 187 पद्य है। द्वितीय परिच्छेद में उपमा, रूपक, दीपक अलंकारों के भेद-प्रभेद का विस्तृत वर्णन है।

(2) **अवन्तिसुन्दरीकथा** : दशकुमारचरितम् की पूर्वपीठिका में मालव नरेश की पुत्री अवन्ति का प्रेम विवाह संक्षेप में वर्णित है। उसी का विस्तार पूर्वक निरूपण इस अवन्तिसुन्दरीकथा में किया गया है। इस ग्रंथ का आंशिक प्रकाशन 1924 ई. में दक्षिण भारतीय ग्रंथमाला में श्री एम.आर. कवि के सम्पादन में हुआ था। प्राचीन साहित्य में अवन्ति सुन्दरी कथा को बहुत प्रसिद्धि मिली है। इसके आधार पर ही दण्डी का समय 7 वीं शताब्दी के आस-पास माना जाता है। आचार्य बलदेव शास्त्री का मानना है कि अवन्तिसुन्दरी कथा के शैली सौन्दर्य के आधार पर ही यह प्रशस्ति प्रसिद्ध रही हैं–**दण्डिनः पदलालित्यम्**।

(3) **दशकुमारचरितम्** : यह दण्डी रचित गद्यकाव्य है इसमें कथा और आख्यायिका के लक्षण प्राप्त होते है। दशकुमारचरितम् वर्तमान में तीन भागों में उपलब्ध है–(1) पूर्वपीठिका (2) दशकुमारचरितम् (3) उत्तरपीठिका। सम्पूर्ण ग्रंथ दशकुमारचरितम् शीर्षक से प्रसिद्ध रहा है। कुछ विद्वानों का मानना है कि इसका मूल भाग दशकुमारचरितम् ही है अन्य दोनों भाग तो बाद में जोड़े गए प्रतीत होते है। दशकुमारचरितम् पर तीन टीकाएं प्रसिद्ध है, जो इस प्रकार है–(1) शिवराम पण्डित कृत भूषणटीका, (2) कवीन्द्राचार्य कृत पदचन्द्रिकाटीका, (3) भानुचन्द्र कृत लघुदीपिकाटीका।

यह सभी केवल दशकुमारचरितम् के मध्यभाग पर ही है पूर्व और उत्तरपीठिका पर नहीं। इसकी कथा में दशकुमारों के देशाटन का वर्णन है। इसका नायक राजवाहन है। मूलभाग में राजवाहन की कथा प्राप्त होती है किन्तु यह पूर्ण नहीं है। इसकी पूर्वपीठिका का प्रथम उच्छवास ग्रंथ की भूमिका देता है। मगधनरेश राजहंस को मालव नरेश मानसार ने पराजित करके विन्ध्याटवी में रहने को विवश कर दिया, वहीं वसुमति ने राजवाहन नामक पुत्र को जन्म दिया। राजवाहन के संरक्षण में नौ अन्य राजकुमार भी आए उनमें सात तो मंत्रियों के पुत्र थे और दो मिथिला नरेश प्रहारवर्मा के पुत्र थे। सभी राजकुमारों की शिक्षा साथ-साथ हुई तथा वह बड़े होने पर दिग्विजय के लिए निकल पड़े। अभियान के क्रम में ही वे पृथक् हो गए और क्रमशः वे इस कथा के नायक राजवाहन से मिलते गए और अपनी अद्भुत कथाएँ सुनाते गए। यह कथा मूल दशकुमारचरितम् के प्रथम उच्छवास तक चली

गई। जहां नायक राजवाहन को बन्धन में डालकर चम्पा पर आक्रमण के लिए अवन्ति सुन्दरी का भाई प्रचंड वर्मा ले जाता है। चम्पा विजय के उत्सव में राजवाहन के मित्र उपहार वर्मा ने ऐसा आक्रमण किया कि प्रचंड वर्मा मारा गया और राजवाहन छूट गया और अब चम्पा में ही बिछुड़े हुए मित्रों की एक-एक करके भेंट होती है तथा वे सब राजवाहन को अपनी-अपनी रोमांचक कथाएं सुनाते है। सबकी कथाओं में किसी न किसी राज्य की प्राप्ति और राजकुमारी का प्रणय भी रहता है। इन राजकुमारों में–(1) अपहारवर्मा, (2) प्रहारवर्मा, (3) अर्थपाल, (4) प्रमति, (5) मित्रगुप्त, (6) मन्त्रगुप्त, (7) विश्रुत, (8) राजवाहन, (9) राजहंस तथा (10) पुष्पदत्त है।

महत्वपूर्ण प्रश्न

प्र. 1 दशकुमारचरित के प्रणेता है ?
उत्तर आचार्य दण्डी।
प्र. 2 दण्डी के माता-पिता है ?
उत्तर माता-गौरी, पिता–वीरदत्त।
प्र. 3 भारवि के प्रपौत्र है ?
उत्तर दण्डी।
प्र. 4 दण्डी का समय है ?
उत्तर 600-700 ईसा पूर्व।
प्र. 5 कथा और आख्यायिका के लक्षण मिलते है ?
उत्तर दशकुमारचरितम् में।
प्र. 6 दशकुमारचरितम् कितने भागों मे विभक्त है ?
उत्तर तीन भागों में।
प्र. 7 दशकुमारचरितम् में कितने उच्छवास है ?
उत्तर आठ उच्छवास।
प्र. 8 दशकुमारचरितम् के नायक नायिका है ?
उत्तर राजवाहन व अवन्ति सुन्दरी।
प्र. 9 दशकुमारचरितम् का प्रधान रस है ?
उत्तर शृंगार रस।
प्र. 10 जादू-टोने का ग्रंथ है ?
उत्तर दशकुमारचरितम्।
प्र. 11 किस रचना का द्वितीय खंड मूल है ?
उत्तर दशकुमारचरितम् का।
प्र. 12 दशकुमारचरित का प्रारम्भ किस राजा से होता है ?
उत्तर राजहंस से।
प्र. 13 राजहंस कहां का राजा था ?
उत्तर मगध का।
प्र. 14 मगध की राजधानी है ?
उत्तर पुष्पपुर।

प्र. 15 राजहंस की पत्नी थी ?
उत्तर वसुमति।
प्र. 16 मानसार से सम्बन्धित रचना है ?
उत्तर दशकुमारचरितम्।
प्र. 17 राजहंस के पुत्र का क्या नाम था ?
उत्तर राजवाहन।
प्र. 18 दशकुमारचरितम् का अन्तिम राजकुमार है ?
उत्तर सोमदत्त।
प्र. 19 वामलोचना कौन थी ?
उत्तर वीरकेतु की पुत्री / सोमदत्त की पत्नी।
प्र. 20 सोमदत्त व राजवाहन की भेंट कहां हुई ?
उत्तर महाकाल शिव मंदिर में।
प्र. 21 राजवाहन और अवन्तिसुन्दरी का विवाह किस उच्छवास में है ?
उत्तर पंचम उच्छवास में।
प्र. 22 दशकुमारचरितम् के किस उच्छवास में 'प' वर्ण का प्रयोग नहीं हुआ है ?
उत्तर सप्तम् उच्छवास में।
प्र. 23 वह ग्रंथ जिसमें अभिसारिकाओं का बाहुल्य है ?
उत्तर दशकुमारचरितम्।
प्र. 24 दण्डी ने किस गद्य शैली का प्रयोग किया है ?
उत्तर चूर्णक शैली।
प्र. 25 दण्डी को कौनसे अलंकार प्रिय है ?
उत्तर उपमा, उत्प्रेक्षा और रूपक।
प्र. 26 अनुलोम विवाह का वर्णन दण्डी की किस रचना में अधिक मात्रा में हुआ है ?
उत्तर दशकुमारचरितम् में।
प्र. 27 मरीचि ऋषि की तपस्या को नष्ट करने वाली वैश्या थी ?
उत्तर काममंजरी।
प्र. 28 काव्यादर्श की किस टीका में अवन्तिसुन्दरी नामक कथां का उल्लेख मिलता है ?
उत्तर जलांधकृत टीका।
प्र. 29 दण्डी के विषय में कौनसा आभाणक प्रसिद्ध है ?
उत्तर दण्डिनः पदलालित्यम्।
प्र. 30 अष्टम् उच्छवास में किसके चरित्र का वर्णन है ?
उत्तर विश्रुत के चरित्र का।

3. महाकवि बाणभट्ट

(1) कादम्बरी–कथा (2) हर्षचरितम्–आख्यायिका (3) चण्डीशतक–स्त्रोतकाव्य (4) पार्वतीपरिणय नाटक तथा (5) मुकुटताड़ितक नाटक।

कवि परिचय

काव्य तथा नाटक के क्षेत्र में जो कीर्ति कालिदास को प्राप्त है वही गद्यकाव्य के क्षेत्र में बाणभट्ट को उपलब्ध है। बाण के विषय में **'बाणोच्छिष्टम् जगत् सर्वम्'** सर्वथा प्रचलित है। बाणभट्ट का पैतृक निवास प्रीतिकूट है जो आज पीरू गांव के रूप में औरंगाबाद जिले में स्थित है। यह शोण नदी के पूर्व में कुछ दूरी पर स्थित है। बाण का समय 7 वीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध माना गया है। बाणभट्ट के जीवन चरित्र का वर्णन हर्षचरित के प्रारम्भ में और कादम्बरी के मंगल पद्यों में प्राप्त होता है। बाणभट्ट के पूर्वज वत्स, सरस्वती पुत्र सारस्वत के चचेरे भाई थे। वत्स से ही वात्स्यायन वंश चला जिसमें कुबेर नामक विद्वान् व्यक्ति का जन्म हुआ। उनके अच्युत, ईशान, हर और पाशुपत नामक चार पुत्र हुए। पाशुपत के पुत्र अर्थपति और अर्थपति के पुत्र भृगु थे। भृगु के ग्यारह पुत्रों में चित्रभानु आठवें पुत्र थे, जो बाणभट्ट के पिता थे। बाणभट्ट के पुत्र भूषणभट्ट हुए जिन्हें पुलीन्दभट्ट भी कहा जाता है। इन्होंने बाण की अपूर्ण कृति कादम्बरी पूर्ण की थी। इनकी माता का देहान्त शैशवकाल में ही हो चुका था। इन्हें पिता द्वारा पाला गया किन्तु इनकी मृत्यु भी बाणभट्ट की चौदह वर्ष की आयु में हो चुकी थी। मित्रों के साथ बाणभट्ट देश-देशान्तर में घूमते रहें जिससे इनकी निन्दा होने लगी। राजा हर्ष की राजसभा में इनके चचेरे भाई कृष्ण ने बुलाकर राजा से मिलने की व्यवस्था की। इन्होंने पर्याप्त समय हर्ष के सान्निध्य मे बिताया तथा कालान्तर में अपने घर लौट आने पर इन्होंने बन्धुजनों के अनुरोध पर हर्ष के जीवन का कुछ अंश सुनाया जो हर्षचरित नामक गद्यकाव्य के रूप में प्रसिद्ध है। बाणभट्ट के गुरु का नाम भत्सु था।

(1) हर्षचरितम्

हर्षचरित आठ उच्छवासों में विभक्त बाण का प्रथम आख्यायिका ग्रंथ है, जिसका कथानक दो भागों में विभक्त है। (1) बाण की आत्मकथा तथा (2) हर्ष का चरित्र। हर्षचरित के प्रारम्भ के 2 पद्यों में मंगलाचरण तथा पूर्व कवियों एवं उनकी कृतियों की प्रशंसा करके प्रथम तीन उच्छवासों में बाण के जीवन वृतान्त का वर्णन किया है। महाराज हर्ष के यहां से सम्मानित होकर बाणभट्ट अपने घर लौटते है तथा बन्धुजनों से उनकें समाचार पूछते है और उनकें आग्रह पर हर्षचरित का अंश सुनाना स्वीकार करते है तब चतुर्थ उच्छवास से हर्षचरित का द्वितीय भाग प्रारम्भ होता है जो अष्टम् उच्छवास में प्रतीकात्मक सन्ध्यावर्णन के साथ समाप्त होता है। इस पर आचार्य शंकर ने 11 वीं शताब्दी में संकेत नामक टीका लिखी है।

महत्वपूर्ण प्रश्न

प्र. 1 हर्षचरितम् है ?
उत्तर आख्यायिका।
प्र. 2 बाण की सर्वप्रथम रचना है ?
उत्तर हर्षचरितम्।
प्र. 3 हर्षचरितम् में मुख्य रस है ?
उत्तर वीर रस।
प्र. 4 बाणभट्ट का जन्म कब हुआ था ?
उत्तर 606 ई. से 649 ई. के मध्य या 7 वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध।
प्र. 5 वात्स्यायन गोत्रिय ब्राह्मण गद्य रचनाकार कौन है ?
उत्तर बाणभट्ट।

प्र. 6 'भूतो न भविष्यति' की उक्ति किसके लिए प्रसिद्ध है ?

उत्तर बाणभट्ट।

प्र. 7 बाणभट्ट के आदि पूर्वज है ?

उत्तर वत्स।

प्र. 8 सरस्वती से किस वंश की उत्पत्ति हुई है ?

उत्तर वात्स्यायन।

प्र. 9 बाण के माता पिता का क्या नाम है ?

उत्तर माता–राजदेवी, पिता–चित्रभानु।

प्र. 10 बाण के पुत्र का क्या नाम है ?

उत्तर भूषणभट्ट या पुलीन्दभट्ट।

प्र. 11 'महानय भुजंग' की उक्ति किसने किससे कही है ?

उत्तर सम्राट हर्ष ने बाणभट्ट से।

प्र. 12 अजीरवती नदी तथा मणितारा ग्राम का वर्णन किस रचना में प्राप्त होता है ?

उत्तर हर्षचरितम्।

प्र. 13 स्थानेश्वर किसकी राजधानी है ?

उत्तर श्रीकण्ठ जनपद की।

प्र. 14 हर्षवर्धन के माता-पिता है ?

उत्तर माता–यशोमती, पिता–प्रभाकर वर्धन।

प्र. 15 प्रभाकर वर्धन के कितने पुत्र और पुत्री थे ?

उत्तर दो पुत्र–राज्यवर्धन और हर्षवर्धन, पुत्री–राज्यश्री।

प्र. 16 राज्यश्री का विवाह किसके साथ हुआ था ?

उत्तर मौखरी नरेश गृहवर्मा के साथ।

प्र. 17 ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशी कार्तिक नक्षत्र में किसका जन्म हुआ था ?

उत्तर हर्षवर्धन का।

प्र. 18 हुणों के नाश के लिए कौन जाते है ?

उत्तर राज्यवर्धन।

प्र. 19 प्रभाकर वर्धन और यशोमती की मृत्यु का वर्णन/चित्रण किस उच्छवास में है ?

उत्तर पंचम उच्छवास में।

प्र. 20 मालवराज द्वारा गृहवर्मा के मारे जाने तथा राज्यश्री के बन्दी बनाए जाने का वृतान्त किस उच्छवास में है ?

उत्तर षष्ठम् उच्छवास में।

प्र. 21 राज्यश्री को बन्दी कहां बनाया गया ?

उत्तर कान्यकुब्ज दुर्ग में।

प्र. 22 भण्डी कौन था ?

उत्तर राज्यवर्धन का ममेरा भाई।

प्र. 23 गृहवर्मा का बाल मित्र बौद्ध सन्यासी है ?

उत्तर दिवाकर मित्र।

प्र. 24 प्रतीकात्मक संध्या वर्णन के साथ कौनसी रचना समाप्त होती है ?

उत्तर हर्षचरितम्।

प्र. 25 हर्षचरितम् में हुणहरिणकेसरी किसे कहा गया है ?

उत्तर प्रभाकरवर्धन।

(2) कादम्बरी

बाणभट्ट की दूसरी गद्य कृति कादम्बरी है जो अत्यधित लोकप्रिय हुई। दुर्भाग्यवश इसे बाण स्वयं पूर्ण नहीं कर सकें। उनके पुत्र भूषणभट्ट ने इसे पूर्ण किया। इसका कथानक वृहत्कथा पर आधारित है। इसमें तीन जन्मों की कथा प्राप्त होती है। इसका विभाजन कथामुख, पूर्वभाग तथा उत्तरभाग में है। जो इस प्रकार से है -

कथामुख : इसके कथामुख में विदिशा के राजा शूद्रक की राजसभा में आकर एक चाण्डाल कन्या ने मेधावी और मनुष्यवाणी में बोलने वाले शुक को प्रदान किया। शुक ने अपनी कथा राजसभा में सुनाई कि विन्ध्याटवी में शबरसेनापति के आखेट क्रम में उनके पिता मारे गये, उसने किसी प्रकार अपने प्राणों की रक्षा की और ऋषि जाबालि के आश्रम में हारित आदि शिष्यों द्वारा ले जाने पर जाबालि ने उसके पूर्व जन्म का वर्णन किया, जो कथा के पूर्व भाग में इस प्रकार है–

पूर्वभाग : उज्जयिनी के राजा तारापीड़ एवं रानी विलासवती को तपस्या से चन्द्रापीड़ नामक पुत्र हुआ। राजा के मंत्री शुकनास को भी वैशम्पायन नामक पुत्र हुआ। दोनों के पुत्रों में घनिष्ठ मित्रता थी। दोनों ने समान रूप से गुरूकुल में शिक्षा ली और शास्त्रों में पारंगत हुए उस समय मंत्री शुकनास ने चन्द्रापीड़ को जो उपदेश दिया वह संस्कृत में शुकनासोपदेश के नाम से प्रसिद्ध है। युवराज होने पर चन्द्रापीड़ अपने मित्र के साथ दिग्विजय पर निकला। एक किन्नर युगल का पीछा करते हुए इन्द्रायुध नामक अश्व पर सवार चन्द्रापीड अच्छोद सरोवर पर पहुंचा। वहाँ उसकी युवती तपस्विनी महाश्वेता से भेंट हुई। महाश्वेता ने अपनी कथा बताई कि पुण्डरीक नामक ऋषि कुमार से उसका प्रेम हो गया था किन्तु मिलन से पूर्व ही पुण्डरीक कामपीडा से दिवंगत हो गए। अतः तब से ही वह इस सरोवर पर तपस्या में रत है। महाश्वेता चन्द्रापीड को अपनी सखी कादम्बरी से मिलाने के लिए अपनी सेविका तरलिका को भेजती है। कादम्बरी भी सखी के दुःख से कौमार्यावस्था व्रत लिए हुए थी। चन्द्रापीड़ और कादम्बरी परस्पर अनुरक्त हो जाते है किन्तु इसी समय पिता के बुलाने पर नायक चन्द्रापीड को लौटना पड़ता है। वह वैशम्पायन को सेना के साथ छोड जाता है।

उत्तर भाग : बाण के द्वारा अधूरी छोडी गई कथा को उनके पुत्र द्वारा आगे बढ़ाया गया है जिसमें वैशम्पायन लम्बे समय तक उज्जयिनी नहीं लौटा तो चन्द्रापीड़ उसकी खोज में वहां गया। महाश्वेता ने उसे बताया कि वैशम्पायन मुझ पर आसक्त हो गया था अतः मैने उसे शुक बनने का शाप दे दिया। मित्र के विपन्न होने से चन्द्रापीड भी मर गया। उसी समय वहां कादम्बरी आती है और प्रियतम को मृत पाकर प्राण त्यागने के लिए उद्धत होती है किन्तु तभी आकशवाणी होती है कि दोनों का अपने प्रेमियों से पुनः मिलन होगा। उधर राजा तारापीड पत्नी सहित अच्छोद सरोवर पर आते है। जहाँ चन्द्रापीड़ अचेत अवस्था में था। उसके शरीर पर कोई भी विकृति नहीं आई थी। कादम्बरी उसकी सेवा में लगी हुई थी। राजा-रानी वहीं आश्रम में रहने लगे। जाबालि ने यहीं अपनी कथा रोक दी तथा सुनने वाले शिष्यों से कहा कि अन्तःकरण को खींचने वाली कथा, इसकी शक्ति आपने देखी है। मैं कहां से कहां चला गया था, मेरा तथ्य यहीं था कि कामवेदना से व्याकुल अपने ही अशिष्ट आचरण से व्यक्ति देवलोक से मृत्युलोक में आकर वैशम्पायन बना था वहीं इस समय शुक योनि में आया है। शुक ने शूद्रक की राजसभा में कहा कि उसी समय मेरी सभी विद्याएं उपस्थित हो गई। मैं अपनी प्रियतमा महाश्वेता से मिलने के लिए उड़ गया। चाण्डाल कन्या ने मुझे पकड़ लिया और मैं आपके पास आ गया। चाण्डाल

कन्या ने भी बताया कि वह वस्तुतः पुण्डरीक की माता लक्ष्मी है और आप भी पूर्वजन्म में चन्द्रापीड़ है। यह सुनते ही राजा शुद्रक को कादम्बरी का स्मरण हो आता है और वह अपने प्राण त्याग देता है उधर चन्द्रापीड़ पुनः जीवित हो जाता है। शुक की कथा समाप्त होते ही शापावधि भी बीत चुकी है और वह शुक भी पुण्डरीक बन गया। चन्द्रापीड–कादम्बरी एवं पुण्डरीक–महाश्वेता का पुनर्मिलन होता है और वे परमानन्द का अनुभव करने लगते है।

महत्वपूर्ण प्रश्न

प्र. 1 कादम्बरी है ?
उत्तर कथा, नायिका।
प्र. 2 कादम्बरी की उपजीव्यता का श्रेय है ?
उत्तर गुणाढ्य की वृहत्कथा (पैशाची भाषा में रचित है)।
प्र. 3 कादम्बरी की वृहत्कथा किससे सम्बन्ध रखती है ?
उत्तर चन्द्रमां तथा पुण्डरीक के तीन जन्मों से।
प्र. 4 कादम्बरी के नायक-नायिका है ?
उत्तर चन्दापीड़ और कादम्बरी।
प्र. 5 तुरंगबाण की उपाधि से युक्त कवि है ?
उत्तर बाणभट्ट।
प्र. 6 तुरंगबाण की उपाधि कवि को कैसे मिली ?
उत्तर इन्द्रायुद्ध अश्व के विशिश्ट वर्णन से।
प्र. 7 कादम्बरी में रस है ?
उत्तर शृंगार रस।
प्र. 8 कादम्बरी कितने भागों में विभक्त है ?
उत्तर दो भागों में।
प्र. 9 कादम्बरी के उत्तरार्द्ध भाग को किसने लिखा ?
उत्तर पुलिन्दभट्ट ने।
प्र. 10 शुद्रक कहां का राजा था ?
उत्तर विदिशा का (म.प्र.)।
प्र. 11 विदिशा राजधानी है ?
उत्तर दशार्ण देश/मालव देश।
प्र. 12 विदिशा का आधुनिक नाम है ?
उत्तर भीलसा।
प्र. 13 शाल्मली वृक्ष का वर्णन है ?
उत्तर कादम्बरी में।
प्र. 14 शबरों का सेनापति है ?
उत्तर मातंग।
प्र. 15 महर्षि जाबालि का वर्णन है ?
उत्तर कादम्बरी में।

प्र. 16 जाबालि के शिष्य का क्या नाम है ?
उत्तर हारित ऋषि।
प्र. 17 तारापीड़ की पत्नी का क्या नाम है ?
उत्तर विलासवती।
प्र. 18 तारापीड़ का पुत्र है ?
उत्तर चन्द्रापीड़।
प्र. 19 शुकनास का पुत्र है ?
उत्तर वैशम्पायन।
प्र. 20 शुकनास कौन है ?
उत्तर तारापीड़ का मंत्री।
प्र. 21 विद्याध्ययन पश्चात् चन्द्रापीड़ ने उपहार में क्या प्राप्त किया ?
उत्तर इन्द्रायुध अश्व व पत्रलेखा सेविका।
प्र. 22 पत्रलेखा कौन थी ?
उत्तर पुलुतेश्वर की सुपुत्री तथा चन्द्रापीड़ की विश्वासपात्र सहायिका।
प्र. 23 हेमकूट व अच्छोद सरोवर का वर्णन किसमें है ?
उत्तर कादम्बरी में।
प्र. 24 वैशम्पायन को किसने शाप दिया ?
उत्तर महाश्वेता ने।
प्र. 25 कल्पित गद्यकाव्य है ?
उत्तर कादम्बरी।
प्र. 26 दो नायकों वाली रचना है ?
उत्तर कादम्बरी।
प्र. 27 पुनर्जन्म को बताने वाली रचना है ?
उत्तर कादम्बरी।
प्र. 28 महाकवि ने मुख्य कथा को किसके माध्यम से कहलवाया ?
उत्तर जाबालि ऋषि।
प्र. 29 कादम्बरी में किसके तीन जन्मों की कथा है ?
उत्तर चन्द्रपीड़ और वैशम्पायन के।
प्र. 30 शुकनास का उपदेश किसको मिला ?
उत्तर चन्द्रापीड़ को।
प्र. 31 वह कौनसा अन्धकार है जो सूर्य के प्रकाश से भी नष्ट नहीं होता ?
उत्तर यौवन का अन्धकार।
प्र. 32 वह कौनसा मद है जो वृद्धावस्था में भी शान्त नहीं होता है ?
उत्तर लक्ष्मी का मद।
प्र. 33 घोर अनर्थ को उत्पन्न करने वाले साधन है ?
उत्तर (1) अविवेकता, (2) युवावस्था, (3) धन-सम्पति, (4) प्रभुता।

प्र. 34 'भवादृशा एवं भवन्ति भाजनानि किसने कहा है ?
उत्तर शुकनास ने।
प्र. 35 कादम्बरी किस श्रेणी की नायिका है ?
उत्तर मुग्धा नायिका।
प्र. 36 'चन्दन प्रभवो न दहति किं अनलः' सूक्ति है ?
उत्तर कादम्बरी।
प्र. 37 बाणभट्ट ने लक्ष्मी के लिए किस शब्द का प्रयोग किया है ?
उत्तर अनार्या।
प्र. 38 अमृत की सहोदरा किसे बताया है ?
उत्तर लक्ष्मी को।
प्र. 39 मदिरा की पुत्री है ?
उत्तर कादम्बरी।
प्र. 40 लक्ष्मी का स्वाभाविक स्वरूप किस गद्यकाव्य में प्राप्त होता है ?
उत्तर कादम्बरी में।
प्र. 41 शुकनास की पत्नी कौन थी ?
उत्तर मनोरमा।
प्र. 42 शुकनास किस वर्ण से सम्बन्धित है ?
उत्तर ब्राह्मण से।
प्र. 43 बाणभट्ट किस शैली के कवि है ?
उत्तर पाञ्चाली।
प्र. 44 तारापीड़ कहां का राजा था ?
उत्तर उज्जयिनी का।
प्र. 45 शुकनास ने जीवन के व्यावहारिक पक्षों को विस्तारपूर्वक किसे समझाया ?
उत्तर चन्द्रापीड़ को।
प्र. 46 महाश्वेता के माता-पिता कौन थे ?
उत्तर माता–गौरी, पिता–हंस।
प्र. 47 मदीरा का विवाह किसके साथ हुआ था ?
उत्तर चित्ररथ के साथ।
प्र. 48 तरलिका कौन थी ?
उत्तर महाश्वेता की सेविका।
प्र. 49 बाण के काव्य में मुख्यतः गुण मिलता है ?
उत्तर ओजगुण।
प्र. 50 चन्द्रापीड़ किस कोटि का नायक है ?
उत्तर धीरोदात्त।

(घ.) मुक्तक काव्य कवि-नीतिकाव्य महाकवि भर्तृहरि

मुक्तक काव्यलक्षण

छन्दोबद्धपदं पद्यं तेन मुक्तेन मुक्तकम्। (साहित्य दर्पण 6/314) छन्दोबद्ध पद वाले काव्य को पद्य कहते है। पद्य से मुक्त अर्थात् दूसरे पद्य से निरपेक्ष काव्य 'मुक्तक' काव्य कहलाता है।

1. आचार्य अभिनवगुप्त ने लिखा है कि–**पूर्वापरनिरपेक्षया येन रस चर्वणा क्रियते तन्मुक्तम्** अर्थात् पूर्वापर प्रसंग से निरपेक्ष होने से जिससे रस की चर्वणा की जाती है, उसे मुक्तक काव्य कहते है।
2. अग्निपुराणकार ने लिखा है कि–**मुक्तकं श्लोक एवैकश्चमत्कारक्षमः सताम्** अर्थात् मुक्तक रचना उस श्लोक को कहते है, जो सहृदयों को अपना अर्थ व्यक्त करने में समर्थ हो। अभिप्राय यह है कि इस मुक्तक काव्य में प्रत्येक छन्दोबद्ध पद्य अपने आप में पूर्ण और स्वतन्त्र रूप से रस का उद्रेक करने में समर्थ होता है। महाकवि भर्तृहरि द्वारा विरचित शृंगारशतक, नीतिशतक तथा वैराग्यशतक मुक्तक काव्य के सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है।

1. महाकवि भर्तृहरि

जीवन परिचय

महाकवि भर्तृहरि विक्रमादित्य के अग्रज थे। विद्वानों का मत है कि महाराज गन्धर्वसेन की दो पत्नियों में प्रथम पत्नी से भर्तृहरि और दूसरी पत्नी के विक्रम थे। विक्रमादित्य को राज्य सौंपकर भर्तृहरि ने सन्यासी जीवन धारण किया इसके पीछे पारिवारिक घटनाक्रम रहा। इनकी जन्मभूमि उज्जयिनी एवं समय 400 ई. से 600 ई. के मध्य माना गया है।

कृतित्व

भर्तृहरि की शतकत्रय (नीतिशतक, शृंगारशतक तथा वैराग्यशतक) के अतिरिक्त वाक्यपदीय व्याकरणरचना भी प्राप्त होती है। भर्तृहरि का नीतिशतक व्यावहारिक जीवन की सम-विषम परिस्थितियों का सुन्दर चित्रण करता है। शृंगार शतक में स्त्री-पुरूष पर प्रभावशाली शृंगार एवं स्त्रियों के हावभाव का विस्तृत वर्णन किया गया है। वैराग्यशतक में भर्तृहरि तृष्णा रूपादि विषय, याचना, गर्व, आदि की निन्दा करते हुए वृद्धावस्था, सन्तोष और शान्तिकाल की महिमा, इन्द्रियदमन, विरक्तता, संसार की अनित्यता, योगी आदि विषयों का वर्णन करते है।

नीतिशतक में वर्णित पद्धति–**1. मूर्खपद्धति 2. विद्वत्पद्धति 3. मानशौर्यपद्धति 4.अर्थपद्धति 5. दुर्जनपद्धति 6. सज्जन पद्धति 7.परोपकारपद्धति 8. धैर्यपद्धति 9. दैवपद्धति 10. कर्मपद्धति।**

नीतिशतक में वर्णित सूक्तिवचन

1. **विभूषणं मौनमपण्डितानाम्।**
   मूर्खों का आभूषण मौन है। विशेष रूप से विद्वानों की सभा में उनके लिए चुप रहना अलंकार है।
2. **ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्माऽपि च तं नरं न रंजयति।**
   ज्ञान का लेशमात्र कर स्वयं को विद्वान् मानने वाले उस व्यक्ति को तो ब्रह्मा भी प्रसन्न नहीं कर सकता है।

3. **न तु प्रतिनिविष्ट मूर्खजन चित्तमाराधयेत्।**
दुराग्राही मूर्ख व्यक्ति के मन को कोई प्रसन्न नहीं कर सकता है।
4. **विवेक भ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः।**
विवेक से भ्रष्ट हुए लोगों का पतन सैकडों प्रकार से होता है।
5. **मूर्खस्य नास्त्यौषधम्।**
मूर्ख की मूढता को दूर करने की शास्त्र में कोई औषधि नहीं है।
6. **क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम्।**
निश्चय ही अन्य प्रकार के आभूषण नष्ट हो जाते है, वाणी रूपी आभूषण ही सदैव रहने वाला आभूषण है।
7. **विद्या विहीनः पशुः।**
विद्या से रहित व्यक्ति पशुसदृश होता है।
8. **सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम्।**
सत्संगति मनुष्य का क्या नहीं करती अर्थात् सब कुछ करती है।
9. **न खलु वयस्तेजसो हेतुः।**
निश्चय ही आयु तेज का कारण नहीं होती है।
10. **सर्वे गुणाः कांचनमाश्रयन्ते।**
सभी गुण स्वर्ण में निवास करते है।
11. **नाना फलं फलति कल्पलतेव भूमिः।**
सम्यक् प्रकार से परिपुष्ट होने पर यह भूमि कल्पलता के समान अनेक फलों को निष्पादित करती है।
12. **वारांगनैव नृपनीतिरनेकरूपा।**
राजाओं की नीति वेश्या के समान अनेक रूपों वाली होती है।
13. **सेवाधर्मः परमगहनो योगिनाप्यगम्यः।**
सेवाधर्म योगियों के लिए भी अगम्य और अत्यन्त दुर्गम होता है।
14. **ये निघ्नन्ति निरर्थकं परहितं ते के न जानीमहे।**
जे निरर्थक परहित का हनन करते है, वे कौन है, यह हम नहीं जानते है।
15. **न निश्चितार्थाद्विरमन्ति धीराः।**
धैर्यशाली व्यक्ति निश्चित विषय से रुकते नहीं है।
16. **मनस्वीकार्यार्थी न गणयति दुःखं न च सुखम्।**
कार्य करने का इच्छुक मनस्वी व्यक्ति सुख और दुःख को नहीं गिनता है।
17. **न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।**
धैर्यवान जन न्याय के मार्ग से विचलित नहीं होते है।
18. **विधिरहो बलवान् इति में मतिः।**
अहो! भाग्य ही बलवान् है।
19. **भाव्यस्य नाशः कुतः।**
होनी का नाश कैसे सम्भव है।
20. **शीलं परं भूषणम्।**
सदाचार श्रेष्ठ आभूषण है।

नोटः- प्रस्तुत पद्य महाकवि भर्तृहरि की स्वयं की जिन्दगी से सम्बन्धित है।
या चिन्तयामि सततं मयि सा विरक्ता, साऽप्यन्यमिच्छति जनं स जनोऽन्यसक्तः।
अस्मत्कृते च परितुष्यति काचिदन्या, धिक् तां च तं च मदनं च इमां च मां च।।

प्रश्नोत्तर

प्र.1. नीतिशतक में मंगलाचरण है ?
उत्तर - नमस्कारात्मक।
प्र.2. नीतिशतक के मंगलाचरण में किस देवता की स्तुति है ?
उत्तर - परसत्तान्तर्गत ब्रह्म।
प्र.3. यां चिन्तयामि सततं मयि सा विरक्ता। कथन किसका है ?
उत्तर - भर्तृहरि।
प्र.4. अज्ञः सुखमाराध्यसुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः। ज्ञानलवदुर्विग्धं ब्रह्माऽपि च तं नरं न रंजयति।। प्रस्तुत श्लोक में ज्ञानप्राप्ति में सर्वाधिक बाधक कवि ने किसे माना है ?
उत्तर - अहंकार।
प्र.5. न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजन चित्तमाराधयेत्। प्रस्तुत पंक्ति में कवि मूर्ख व्यक्ति की प्रशंसा किसके लिए भी असम्भव बता रहा है ?
उत्तर - ब्रह्मा।
प्र.6. विशेषतः सर्वविदां समाजे, विभूषणं मौनमपण्डितानाम्।। मौन रहना किसके लिए अलंकार स्वरूप है ?
उत्तर - मूर्ख जन के लिए।
प्र.7. शास्त्र में किसको दूर करने के लिए औषधि नहीं है ?
उत्तर - मूर्खता।
प्र.8. नीतिशतक रचना का क्या उद्देश्य है ?
उत्तर - दुराग्राही लोगों को ज्ञान देना।
प्र.9. साहित्य-संगीत-कलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छ विषाणहीनः। तृणं न खादन्नपि जीवमानः तद् भागधेयं परमं...उचित शब्द है?
उत्तर - पशूनाम्।
प्र.10. येषां न विद्या न तपो न दानं, ज्ञानं न शीलं न गुणों न धर्मः। ते मर्त्यलोके भुवि भारभूताः, मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति।। प्रस्तुत पद्य में कवि ने किसकी सर्वाधिक महत्ता प्रस्तुत की है ?
उत्तर - विद्या।
प्र.11. नीतिशतक में सर्वप्रथम किस पद्धति का वर्णन है ?
उत्तर - मूर्ख।
प्र.12. विद्वानों के पास कौनसा धन है ?
उत्तर - विद्या।
प्र.13. हर्तुर्याति न गोचरं किमपि शं पुष्णाति यत्सर्वदा। ऽप्यर्थिभ्यः प्रतिपाद्यमानमनिशं प्राप्नोति वृद्धिं परम्।। कवि यहाँ किसकी और संकेत कर रहा है ?
उत्तर - विद्या।
प्र.14. क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं...........भूषणम्। उपर्युक्त शब्द है ?
उत्तर - वाग्भूषणं।
प्र.15. विद्या राजसु पूजिता न हि धनं विद्याविहीनः.............। रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए ?
उत्तर - पशुः।

प्र.16. 'विष्टप कष्ट हारिणि' में विष्टप का क्या अर्थ है ?
उत्तर - सत्संगति।
प्र.17. 'निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु' अंश किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है ?
उत्तर - नीतिशतक।
प्र.18. किस विद्वान् ने भर्तृहरि को बौद्ध कहा है ?
उत्तर - ईत्सिंग।
प्र.19. जाड्यं धियो हरति सिंचति वाचि सत्यं, मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति।। यहाँ कवि ने किसकी ओर संकेत किया है ?
उत्तर - सत्संगति।
प्र.20. कुसुम स्तम्बकस्येव द्वयी वृत्ति........... ? रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए ?
उत्तर - मनस्विनः।
प्र.21. जातिर्यातु रसातलं गुणगणैस्तस्याप्यधो गच्छतु। यहाँ किसकी महिमा का वर्णन है ?
उत्तर - धनम्।
प्र.22. धन की कितनी गतियाँ होती है ?
उत्तर - 3, दान, भोग तथा नाश।
प्र.23. विद्या से अलंकृत कौन व्यक्ति त्यागने योग्य हे ?
उत्तर - दुर्जन।
प्र.24. तानीन्द्रियाणि अविकलानि तदेव कर्म, सा बुद्धिरप्रतिहता वचनं तदेव। प्रस्तुत कथन किस भाव को व्यक्त कर रहा है ?
उत्तर - अर्थ।
प्र.25. अकरुणत्वमकारण विग्रहः.........प्रस्तुत पद्य में किसके स्वभाव का वर्णन है ?
उत्तर - दुर्जन।
प्र.26. ....परमगहनो योगिनामप्यगमः। उपयुक्त शब्द है ?
उत्तर - सेवाधर्म।
प्र.27. नीतिशतक के अनुसार दिन की परार्ध छाया के समान किसकी मित्रता होती है ?
उत्तर - सज्जन।
प्र.28. परं भूषणं किम् ?
उत्तर - सदाचारः (शील)।
प्र.29. जीवन में सफलता के लिए क्या आवश्यक है ?
उत्तर - सत्संगति।
प्र.30. शतकत्रयी है ?
उत्तर - नीतिशतक, शृंगारशतक, वैराग्य शतक।
प्र.31. वाक्यपदीय रचना है ?
उत्तर - भर्तृहरि (व्याकरण)।
प्र.32. भर्तृहरि का समय माना गया है ?
उत्तर - सप्तमशती का पूर्वार्द्ध (700 ई. का पूर्वार्द्ध)।
प्र.33. मनस्वी शब्द का क्या अर्थ है?
उत्तर - विचारशील।

प्र.34. विद्वान् लोग किससे ग्रसित रहते है ?
उत्तर - ईर्ष्या।
प्र.35. नीतिशतक काव्य विद्या है ?
उत्तर - मुक्तक।
प्र.36. नीतिशास्त्र में किन-किन पुरुषार्थों की सिद्धि का मार्ग बताया गया है ?
उत्तर - धर्म-अर्थ।
प्र.37. नीतिशतक खण्डकाव्य में कितने भेद है ?
उत्तर - 10।
प्र.38. जिनके विपरीत विधाता का भी वश नहीं चलता है, वह है ?
उत्तर - कर्म।
प्र.39. कौनसा आभूषण नित्य रहने वाला अलंकार है ?
उत्तर - संस्कृत वाणी।
प्र.40. अल्पज्ञ का अहंकार रूपी ज्वर कब समाप्त होता है ?
उत्तर - विद्वानों की संगति।
प्र.41. विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा....प्रस्तुत पंक्ति में किसका वर्णन है ?
उत्तर - महात्माओं के चरित्र का।
प्र.42. प्रदाने प्रच्छन्नं गृहमुपगते सम्भ्रमविधिः प्रियं कृत्वा मौनं सदसि कथनं चाप्युपकृते। प्रस्तुत पद्य में किसके आचरण की ओर संकेत है ?
उत्तर - सज्जन प्रशंसा।
प्र.43. भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमैः, नवाम्बुभि र्भूमि विलम्बिनोघनाः। प्रस्तुत पंक्तियों में किसके स्वभाव का वर्णन है ?
उत्तर - परोपकारियों का।
प्र.44. ये निघ्नति निरर्थकं परहितं ते के न जानीमहे।।सूक्ति है ?
उत्तर - नीतिशतक।
प्र.45. व्यक्ति की वास्तविक परीक्षा कब होती है ?
उत्तर - विपत्ति आने पर।
प्र.46. मनस्वी पुरुष कितनी गतियों से युक्त होता है ?
उत्तर - 2।
प्र.47. मनुष्य का सर्वोत्तम कवच है ?
उत्तर - क्षमा।
प्र.48. मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु कौन है ?
उत्तर - क्रोध।
प्र.49. अधोमुखस्यापि कृतस्यवहने नधिः शिखायाति कदाचिदेव। प्रस्तुत पद्य में किस प्रकार के पुरुषों की चित वृत्ति का उल्लेख है ?
उत्तर - धैर्यशाली।
प्र.50. जो व्यक्ति प्रतिदिन नीति शास्त्र का श्रवण-पठन करता है, वह किससे पराजित नहीं होता?
उत्तर - शक से (इन्द्र से)।

महाकवि कालिदासकृत मेघूदत खण्डकाव्य और ऋतुसंहारगीतिकाव्य

मेघदूत खण्डकाव्य

महाकवि कालिदास कृत मेघदूत प्रसिद्ध गीति रचना है। जिसे प्रबन्धात्मकता के कारण परम्परा से खण्डकाव्य कहा जाता है। आधुनिक समीक्षक इसे गीतिकाव्य का प्रथम ग्रन्थ कहते है। मन्दाक्रान्ता छन्द में प्रणीत मेघदूत में 115 पद्य है। मेघदूत पूर्वमेघ (63) उत्तरमेघ (52) दो भागों में विभक्त है। मल्लिनाथ ने 121 पद्यों पर अपनी टीका लिखी है किन्तु उन्होंनें छः पद्यों को प्रक्षिप्त मानकर 115 पद्यों को ही प्रामाणिक माना है। मेघदूत पर 50 प्राचीन टीकाएँ मिलती है। **मेघे माघे गतं वयः** यह आभाणक मेघदूत के प्रसंग में प्रसिद्ध है। मेघदूत का कथानक कवि कल्पित है। इसका उद्देश्य प्रेम की महिमा को बताना है। इसका नायक अलकापुरी का नागरिक यक्ष हेममाली (देवयोनि-विशेष) धीरप्रशान्त तथा एक ही नायिका में आसक्त होने के कारण अनुकूल नायक है। यक्ष की पत्नी विनय, सरलता आदि गुणों से युक्त धर के कार्यों में तत्पर तथा पतिव्रता होने से स्वकीया नायिका (पद्माक्षी) है। प्रवासात्मक विप्रलम्भश्रृंगार ही अङ्गीरस है। विरहवर्णन के लिए अत्यन्त अनुकूल प्रवृत्तिवाला छन्द मन्दाक्रान्ता है। मेघदूत का उपजीव्य रामायण तथा ब्रह्मवैवर्त पुराण है। मेघदूत के पूर्व मेघ में स्पष्ट है कि अलकापुरी का निवासी कोई यक्ष अपनी प्रियतमा का परम अनुरागी था। उसके स्वामी कुबेर ने उसे एक वर्ष के लिए शाप देकर रामगिरि में भेज दिया। अपनी प्रिया के विरह में यक्ष ने रामगिरि के विभिन्न आश्रमों में रहकर आठ मास व्यतीत कर दिये थे। वर्षाकाल के प्रारम्भ में वप्रक्रीडा में तिरछा दन्त प्रहार करने वाले मेघ को देखकर वह अपनी उत्कण्ठा नहीं रोक सका तथा उसी के द्वारा अपनी प्रियतमा के पास अपना विरहसन्देश भेजने का उपक्रम करने लगा। यथा -

जातं वंशे भुवनविदिते पुष्करावर्तकानाम्।
जानामि त्वां प्रकृति पुरुषं कामरूपं मघोनः धोनः।
तेनार्थित्वं त्वयि विधिवशात् दूरबन्धुर्गतोऽहम्।
याञ्चा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा।।6।।

सन्तप्तानां त्वमसि शरणं तत्पयोद ! प्रियायाः,
सन्देशं में हर धनपति-क्रोध-विश्लेषितस्य।
गन्तव्या ते वसतिरलका नाम यक्षेश्वराणां,
वाह्योद्यानस्थित हरशिरचन्द्रिकाधौतहर्म्या।।7।।

यक्ष ने रामगिरि से अलकापुरी तक का मार्ग बताया जिसमें मालप्रदेश, आम्रकूट, नर्मदा नदी, विदिशा-नगरी, नीचगिरि, निर्विन्ध्या-नदी, उज्जयिनी, महाकालमन्दिर, शिप्रा नदी, देवगिरि, चर्मण्वती नदी, कुरुक्षेत्र, सरस्वती नदी, कनखल, गंगानदी, हिमालय, क्रौञ्चरन्ध्र, कैलास और मानसरोवर का वर्णन रोचकता एवं भव्यता के साथ किया है। उत्तरमेघ में अलकापुरी के वैभव का वर्णन करते हुए यक्ष ने कुबेर के राजप्रसाद के उत्तर में अवस्थित अपने घर की पहचान बतलायी है। अपनी प्राणेश्वरी को पहचानने के लिए उसके लक्षणों को बताकर अन्त में **शापान्तो में भुजगशयनादुत्थिते शार्ङ्गपाणौ, शेषान्मासान् गमय चतुरो लोचने मीलयित्वा। पश्चादावां विरहगणितं तं तमात्माभिलाषां, निर्वेक्ष्यावः परिणतशरच्चन्द्रिकासु क्षपासु।।50।।** अर्थात् वियोग के अवशिष्ट चार मासों को वह यक्ष प्रिया आँखें बन्द करके धैर्यपूर्वक व्यतीत कर लें, हमारा शीघ्र समागम होगा।

सुभाषितानि

पूर्वमेघ-

1. **मेघालोके भवति सुखिनोऽप्यन्यथावृत्ति चेतः, कण्ठाश्लेष प्रणयिनि जने किं पुनर्दूरसंस्थे।**
अनुवाद-मेघ के दर्शन होने पर सुखी व्यक्ति का भी चित्त दूसरे प्रकार की वृत्ति वाला हो जाता है। फिर कण्ठ के आलिंगन के इच्छुकजन के दूर स्थित होने पर तो कहना ही क्या ?

2. **कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाश्चेतनेषु।**
अनुवाद-काम पीडित व्यक्ति चेतन और जड़ के विषय में स्वभाव से विवेक शून्य होते है।

3. **याञ्चा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा।**
अनुवाद-अधिक गुण वाले से की गई याचना निष्फल (भी) अच्छी है परन्तु निर्गुण से की गयी याचना सफल कामना वाली भी अच्छी नहीं है।

4. **आशाबन्धः कुसुमसदृशं प्रायशो ह्यङ्गनानां, सद्यः पाति प्रणयि हृदयं विप्रयोगे रूणद्धि।।**
अनुवाद-आशारूपी बन्ध स्त्रियों के फूल के समान (कोमल), वियोग में शीघ्र नष्ट हो जाने वाले प्रेमी हृदय को प्रायः रोके रहता है।

5. **न क्षुद्रोऽपि प्रथम सुकृतापेक्षया संश्रयाय, प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः किं पुनर्यस्तयोच्चैः।।**
अनुवाद-अधम व्यक्ति भी मित्र के आश्रय के लिए आने पर पूर्व के उपकारों को विचार कर विमुख नहीं होता, (फिर) जो उतना ऊँचा महान् है, उसका तो कहना ही क्या ?

6. **रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय।**
अनुवाद-खाली हुए सब हल्के होते हैं, भरा हुआ होना भारीपन का कारण होता है।

7. **स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु।**
अनुवाद-स्त्रियों की प्रेमियों के प्रति श्रृंगार-चेष्टा ही प्रथम प्रणय वचन होता है।

8. **मन्दायन्ते न खलु सुहृदामभ्युपेतार्थ कृत्याः।**
अनुवाद-मित्र के प्रयोजन का कार्य स्वीकार कर लेने वाले व्यक्ति विलम्ब नहीं करते।

9. **आपन्नार्ति प्रशमनफलाः सम्पदो ह्युत्तमानाम्।**
अनुवाद-श्रेष्ठ लोगों की सम्पत्तियाँ दुःखी लोगों के कष्टों को शान्त करने रूपी फल वाली होती है।

10. **के वा न स्युः परिभवपदं निष्फलारम्भयत्नाः।**
अनुवाद-व्यर्थ काम करने वाले कौन तिरस्कार के विषय नहीं होते।

उत्तरमेघ-

1. **वित्तेशानां न च खलु वयो यौवनादिन्यदस्ति।**
अनुवाद-धनपतियों की सदैव यौवनावस्था ही रहती है, कोई अन्य अवस्था होती ही नहीं।

2. **सूर्यापाये न खलु कमलं पुष्यति स्वामभिख्याम्।**
अनुवाद-सूर्य के अस्त हो जाने पर कमल अपनी शोभा को धारण नहीं करता है।

3. **प्रायः सर्वो भवति करुणावृत्तिरार्द्रान्तरात्मा।**
अनुवाद-प्रायः कोमल हृदय वाले सभी दयालु स्वभाव के होते है।

4. **कान्तोदन्तः सुहृदुपनतः सङ्गमात्किञ्चिदूनः।**
अनुवाद-स्त्रियों को पति के मित्र द्वारा लाया गया पति का सन्देश मिलन से कुछ हि कम होता है।

5. **कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो वा, नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण।**

अनुवाद–अत्यन्त सुख या निरन्तर दुःख किसे प्राप्त होता है ? लोगों की दशा पहिये के आरे के क्रम से नीचे और ऊपर जाती रहती है।

6. **स्नेहानाहुः किमपिविरहे ध्वंसिनस्ते त्व भोगा दिष्टे वस्तुन्युपचितरसाः प्रेमराशीः भवन्ति।।**

अनुवाद–लोग विरह में स्नेह भाव नष्ट हो जाते है, ऐसा व्यर्थ ही कहते है। वे स्नेहभाव तो भोगे न जाने के कारण प्रिय वस्तु के प्रति प्रेम रस के बढ़ जाने पर प्रेम पुञ्ज बन जाते है।

7. **प्रयुक्तं हि प्रणयिषु सतामीप्सितार्थ क्रियैव।**

अनुवाद–सज्जनों का अभिलषित कार्य को पूर्ण करना ही याचकों के लिए उत्तर होता है।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 सन्देश काव्य है ?

उत्तर– मेघदूत।

प्रश्न 2 मेघदूत के प्रणेता कौन है ?

उत्तर - कालिदास।

प्रश्न 3 मेघदूत में मङ्गलाचरण है ?

उत्तर– वस्तुनिर्देशात्मक।

प्रश्न 4 मेघदूत का प्रारम्भ किस पंक्ति से होता है ?

उत्तर - कश्चित् कान्ता विरह गुरुणा।

प्रश्न 5 मेघदूत का उपजीव्य है ?

उत्तर– रामायण तथा ब्रह्मवैवर्त पुराण।

प्रश्न 6 स्वाधिकारात्प्रमत्तः था ?

उत्तर– यक्ष।

प्रश्न 7 यक्ष की शापावधि थी ?

उत्तर - एक वर्ष (वर्ष भोग्येण भर्तुः)।

प्रश्न 8 यक्ष किस पर्वत पर निवास करता था ?

उत्तर - रामगिरि पर्वत।

प्रश्न 9 कश्चित् पद के 'कः' पद से अभिप्रेत देव है ?

उत्तर– ब्रह्मा-विष्णु-अग्नि-वायु तथा सूर्य।

प्रश्न 10 'मेघदूतः' शब्द की व्युत्पत्ति क्या है ?

उत्तर - **मेघः दूतः यस्मिन् काव्ये तत् मेघदूतम्।**
मेघः दूतः मेघदूतः तमधिकृत्य कृतं काव्यं मेघदूतम्।
मेघः दूतः इति मेघदूतः।
मेघश्चासौ दूतः इति मेघदूतः।

प्रश्न 11 यक्ष का शापान्त कब होगा ?

उत्तर– देवोत्थान एकादशी।

प्रश्न 12 'कनकवलयभ्रंशरिक्त प्रकोष्ठः' पद से क्या संकेत है ?

उत्तर - यक्ष।

प्रश्न 13 कतिचित् मासान् नीत्वा से अभिप्राय है ?

उत्तर - आठ मास।

प्रश्न 14 प्रत्यासन्ने नभसि से अभिप्राय है ?

उत्तर - श्रावणमास की समीपता।

प्रश्न 15 वप्रक्रीडा का अपर नाम है ?

उत्तर - उत्खातकेली।

प्रश्न 16 यक्षों की नगरी अलका का समीप्य किस नदी और पर्वत से है ?

उत्तर - नदी गंगा और कैलास पर्वत।

प्रश्न 17 यक्ष ने वप्रक्रीडा करते हुए किसे देखा ?

उत्तर - मेघ को।

प्रश्न 18 मेघ में समष्टि तत्व है ?

उत्तर - धूम-अग्नि-जल तथा वायु।

प्रश्न 19 मेघ में समष्टि तत्व नहीं है ?

उत्तर - आकाश।

प्रश्न 20 कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु। यहाँ कामार्त कौन है ?

उत्तर– यक्ष

प्रश्न 21 प्रकृति पुरुष है ?

उत्तर– मेघ

प्रश्न 22 प्रलयकालीन मेघ के सूचक है ?

उत्तर - पुष्कर तथा आवर्तक जल को घुमाने वाले बादल।

प्रश्न 23 यक्षों की वसति (नगरी) है ?

उत्तर - अलकापुरी।

प्रश्न 24 संतप्तानां शरणं है ?

उत्तर– मेघ।

प्रश्न 25 मेघदूत पर मल्लिनाथ की प्रचलित टीका का क्या नाम है ?

उत्तर - संजीवनी।

प्रश्न 26 मन्दं-मन्दं नुदति पवनश्चानुकूला........पंक्ति है ?

उत्तर - मेघदूत।

प्रश्न 27 मानसरोवर कहाँ पर है ?

उत्तर - हिमालय के ऊपर कैलास पर्वत पर (नेपाल)।

प्रश्न 28 'क्षीणः क्षीणः परिलघुः' यहाँ रेखांकित पद से अभिप्राय है ?

उत्तर - जल।

प्रश्न 29 यक्ष ने मेघ को किस दिशा की ओर मुख करके उड़ने को कहा ?

उत्तर– उत्तर दिशा की ओर। कुछ पश्चिम की ओर फिर पुनः उत्तर की ओर।

प्रश्न 30 ''मध्येश्यामः स्तन इव भुवः शेष विस्तार पाण्डुः'' रेखाङ्कित पद से अभिप्राय है ?

उत्तर– आम्रकूट पर्वत।

प्रश्न 31 मेघ के सहयात्री कौन होंगें ?
उत्तर - राजहंस।
प्रश्न 32 वक्रः पन्था यदपि भवतः प्रस्थितस्योत्तराशां यहाँ रेखाङ्कित पद से कवि प्रेम अभिव्यक्त हुआ है ?
उत्तर– उज्जयिनी।
प्रश्न 33 पूर्वमेघ में किस नगरी का वर्णन है ?
उत्तर - उज्जयिनी।
प्रश्न 34 उज्जयिनी का अपर नाम है ?
उत्तर– विशालाम् (गा-श्री विशालां विशालां पूर्वोदिदृष्टां पुरीमुपसर)।
प्रश्न 35 उज्जयिनी नगरी में किसका मन्दिर है ?
उत्तर - महाकाल भगवान् का ।
प्रश्न 36 देवगिरि पर्वत पर किस देव का स्थान है ?
उत्तर - कार्तिकेय।
प्रश्न 37 चम्बल नदी पर जल ग्रहण करने के समय मेघ की शोभा किस प्रकार की होगी ?
उत्तर - इन्द्रनील मणि।
प्रश्न 38 मेघदूत में कितने पद्य है ?
उत्तर– 121 (छः) प्रक्षिप्त, 115 प्रामाणिक।
प्रश्न 39 विरह भावनाओं का सजीव चित्रण किस काव्य से है ?
उत्तर– मेघदूत।
प्रश्न 40 मेघदूत के नायक-नायिका है ?
उत्तर - यक्ष (हेममाली) यक्षिणी (विशालाक्षी)
प्रश्न 41 'मेघे माघे गतं वयः' आभाणक है ?
उत्तर– मल्लिनाथ
प्रश्न 42 यक्ष कब शापित हुआ ?
उत्तर - देवोत्थान एकादशी
प्रश्न 43 "कण्ठाश्लेष प्रणयिनी जने किं पुनर्दुरसंस्थे" यहाँ 'जने' शब्द का क्या अभिप्राय है ?
उत्तर– यक्ष।
प्रश्न 44 अलका नगरी में यक्ष का निवास स्थान है ?
उत्तर - कुबेर के प्रासाद के उत्तर में
प्रश्न 45 पूर्वमेघ में कितने पद्य है ?
उत्तर– 63 पद्य।
प्रश्न 46 अलकापुरी की स्त्रियों का शृंगार क्या है ?
उत्तर– हाथ में कमल। बालों में कुन्दपुष्प। मुख में लोध्रपुष्प। जूडे में कुरबक। कानों में शिरीष पुष्प। सीमन्त में कदम्ब पुष्प।
प्रश्न 47 अलकापुरी की कन्याओं का खेल कौनसा है ?
उत्तर– कनकसिकता मुष्टि (गुप्तमणि) (गूढमणि)।
प्रश्न 48 वैभ्राज उद्यान का उल्लेख किस काव्य में है ?
उत्तर– मेघदूत।

प्रश्न 49 अलकापुरी की स्त्रियों के समस्त प्रसाधनों को कौन पूर्ण करता है ?
उत्तर– कल्पवृक्ष।
प्रश्न 50 यक्ष के घर के बाहर कौनसा वृक्ष था ?
उत्तर– मन्दार वृक्ष।

ऋतुसंहारम गीतिकाव्य

ऋतुसंहार में ऋतुओं के केवल बाह्यरूप का ही वर्णन नहीं है अपितु आन्तरिक सहानुभुति भी प्राप्त होती है। सम्पूर्ण कविता में वे युवक और युवती के प्रेम के साथ ऋतुओं के विभिन्न परिवर्तनों के सम्बन्ध में बल देते है। यद्यपि ग्रीष्म के दिवस भारस्वरूप होते है तथापि रात्रि अधिक आनन्दप्रद होती है। जबकि चन्द्रमा चमकता है और शीतलता पृथ्वी में नवीनता का संचार करती है। अर्धरात्रि में युवक लोग गीत, नृत्य तथा सुरा में आनन्द का अनुभव करते है। युवकों के प्रेम की ईर्ष्या से शोकाकुल चन्द्रमा छिप जाता है।

वर्षाकाल राजा के रूप में आता हे, बादल ही उसके हाथी है जिन पर वह आरुढ है, बिजली उसकी पताका और गर्जन उसकी दुन्दुभि है। पर्वत शिखरों का चुम्बन करने के लिए झुकते हुए बादलों के दृश्य से प्रेम का भाव जागरित हो उठता है। गन्नों के वस्त्रों को धारण किए पकते हुए धानों की करधनी पहने और कमल पुष्पों के मुख वाली शरद् एक युवति वधू की भाँति आती है।

हेमन्त की शीतलता प्रेमियों के आलिंगनों को और भी अधिक अभिमत, प्रगाढ़ तथा प्रेममय बना देती है। शिशिर में रातें ठंडी हो जाती है, चन्द्रमा की शीतलता सिहरन पैदा करती है। प्रेमीजन अपने कमरें की खिड़की बन्द कर देते है। अपने को वस्त्रों में लपेटकर उष्णता का अनुभव करते है और सूर्य की अभी तक क्षीण किरणों का प्रत्येक क्षण आनन्द लेते हैं अथवा अग्नि के समीप आराम से बैठते हैं।

परन्तु वसन्तकाल उनके तथा सम्पूर्ण प्रकृति के लिए नवजीवन एवं आनन्द लाता है। अब हम समझ सकते है कि कवि ने कविता को ग्रीष्म से क्यों आरम्भ किया है। जिसमें नववर्ष आरम्भ के सामञ्जस्य में युवकों का प्रेम पूर्णता को प्राप्त करता है।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 ऋतुसंहार में मंलाचरण है?
उत्तर– वस्तुनिर्देशात्मक।
प्रश्न 2 सुवासिंत हर्म्यतलं मनोहरं प्रियामुखोच्छ्वास विकम्पितं मधु किस प्रकार से सम्बन्धित है?
उत्तर– ऋतुसंहार ग्रीष्म ऋतु।
प्रश्न 3 'स्त्रियों निदाद्यं शमयन्ति कामिनाम्' पक्ति किस ऋतु से है?
उत्तर– ग्रीष्म ऋतु।
प्रश्न 4 ऋतुसंहार का अंगीरस है?
उत्तर– शृंगार।
प्रश्न 5 स्तनेषु तन्वं शुकमुन्नतस्तना निवेशयन्ति प्रमदाः सयौवनाः किस ग्रन्थ से है?
उत्तर– ऋतुसंहार ग्रीष्म ऋतु।
प्रश्न 6 गीष्म ऋतु का वर्णन किस छन्द में किया है?
उत्तर– वंशस्थ।

प्रश्न 7 सितेषु हर्म्येषु निशासु योषितां, सुख प्रसुप्तानिमुखानि चन्द्रमाः पंक्ति किस ऋतु से है?

उत्तर– ग्रीष्म ऋतु।

प्रश्न 8 मृगाः प्रचण्डातपतापिता भृशं तृषा महत्या परिशुशुष्कतालवः पंक्ति किस काव्य से उद्धृत है?

उत्तर– ऋतुसंहार।

प्रश्न 9 सितेषु हर्म्येषु निशासु योषितां सुख प्रसुप्तानिमुखानि चन्द्रमाः पंक्ति किस काव्य से है?

उत्तर– ऋतुसंहार ।

प्रश्न 10 हुताग्निकल्पैः सवितुर्गभस्तिभिः कलापिनः क्लान्तशरीर पंक्ति में किस ऋतु का वर्णन है?

उत्तर– ग्रीष्म।

प्रश्न 11 व्रजतु तव निदाघः कामिनीभिः, समेतो निशि सुललित गीतेहर्म्यपृष्ठे सुखेन। पंक्ति किस काव्य से उद्धृत है।

उत्तर– ऋतुसंहार।

प्रश्न 12 आत्माभिव्यञ्जन प्रधान काव्य है?

उत्तर– गीतिकाव्य।

प्रश्न 13 पाश्चात्य विद्वान् गीतिकाव्य का नाम क्या कहते है?

उत्तर– लिरिक।

प्रश्न 14 गीतिकाव्य का उद्गम क्षेत्र है?

उत्तर– ऋग्वेद।

प्रश्न 15 'खण्डकाव्यं भवेत्काव्यस्यैक देशानुसारि च' परिभाषा है?

उत्तर– विश्वनाथ कृत साहित्य दर्पण।

प्रश्न 16 गीतिकाव्य के प्रमुख तत्व है?

उत्तर– भावातिरेक, कल्पना, संगीत।

प्रश्न 17 लघुत्रयी में गणीनय है?

उत्तर– मेघदूत, रघुवंश, कुमारसमभ्व।

प्रश्न 18 ग्रीष्म ऋतु का वर्णन कवि ने कितने श्लोकों में किया है

उत्तर– 28 श्लोकों में।

प्रश्न 19 वर्षाकाल के आगमन की स्थिति को कवि ने किसके समान बताया है?

उत्तर– राजा के समान।

प्रश्न 20 'सदामनोज्ञं स्वनदुत्सवोत्सुकं विकीर्ण विस्तीर्ण कलापशोभितम्' पंक्ति किस काव्य से है?

उत्तर– ऋतुसंहार।

प्रश्न 21 वह कौनसी ऋतु है, जिसमें प्रवासकाल के दौरान युवतियाँ आभुषण रहित होकर निराश हो जाती है?

उत्तर– वर्षा ऋतु।

प्रश्न 22 वर्षा ऋतु के वर्णन में कवि ने किन-2 छन्दों का प्रयोग किया है?

उत्तर– वसन्ततिलका, मालिनी।

प्रश्न 23 वधू सदृश आगमन कवि के अनुसार किस ऋतु को बताया है?

उत्तर– शरद् ऋतु।

प्रश्न 24 सोन्माद हंस मिथुनैरूपशोभितानि स्वच्छ प्रफुल्लकमलोत्पलभूषितानि। पंक्ति किससे उद्धृत है?

उत्तर– ऋतुसंहार।

प्रश्न 25 श्यामलताः कुसुमभारनतप्रवालाः स्त्रीणां हरन्ति धृत भूषणबाहुकान्तिम्। पंक्ति में किस ऋतु का वर्णन है?

उत्तर– वसन्त ऋतु।

प्रश्न 26 गुरुणि वासांसि विहायतूर्णं तनूनि लाक्षारस रञ्जितानि। पंक्ति किस ऋतु से सम्बन्धित है?

उत्तर– वसन्त ऋतु।

प्रश्न 27 ऋतुसंहार में कुल कितने पद्य है?

उत्तर– 144।

प्रश्न 28 ऋतुसंहार का आरम्भ व अन्त किस ऋतु से होता है ?

उत्तर– ग्रीष्म- आरम्भ। वसन्त- अन्त।

प्रश्न 29 लौकिक संस्कृत साहित्य का प्रथम गीतिकाव्य है?

उत्तर– ऋतुसंहार।

प्रश्न 30 राइडर के अनुसार प्रेम का तिथि पत्र (Loverscal) कहा है ?

उत्तर– ऋतुसंहार।

प्रश्न 31 'शृंगार ललितोद्गारे कालिदासत्रयी किमु' कथन किसका है

उत्तर– राजशेखर।

प्रश्न 32 उपमाकालिदासस्य, भारवेऽर्थगौरवम् कथन किसका है?

उत्तर– उद्भट्ट का।

प्रश्न 33 'कालिदासगिरां सारं कालिदासः' सरस्वती कथन किसका है ?

उत्तर– मल्लिनाथ।

प्रश्न 34 'कालिदास कविता नवं वयः' कथन किसका है?

उत्तर– उद्भट्ट।

प्रश्न 35 कालिदासमिव यशः कथन किसका है?

उत्तर– मम्मट।

प्रश्न 36 'न कालिदासादपरस्यवाणी' कथन किसका है?

उत्तर– श्रीकृष्ण कवि का।

(ङ) चम्पूकाव्य

चम्पूकाव्य (नल चम्पू)

चम्पू शब्द की उत्पत्ति :

चुरादि गण की 'चपि' धातु से उणादि 'उन्' प्रत्यय से चम्पू शब्द की उत्पत्ति हुई है। अतः चम्पयति अर्थात् सहैव गमयति प्रयोजन यति गद्य-पद्ये इति चम्पूः अर्थात् जिस रचना में गद्य-पद्य का समान प्रयोग किया जाता है, उसे चम्पू काव्य कहा जाता है। चम्पू काव्य में गद्य का प्रयोग वर्णन हेतु तथा पद्य का प्रयोग अर्थ गौरव या भाव गांभीर्य के लिए किया जाता है।

चम्पूकाव्य का उद्भव :

वेदों में चम्पूकाव्य की परंपरा का सर्वश्रेष्ठ निदर्शन प्राप्त होता है। कृष्ण यजुर्वेद, अथर्ववेद, ब्राहमण ग्रंथ तथा उपनिषद् ग्रंथों में गद्य-पद्य की मिश्रित शैली का प्रयोग हुआ है। चम्पू काव्यों में मूल स्त्रोत के रूप रामायण,

महाभारत, श्रीमदभागवत, पुराण, कथा सरित्सागर आदि दिखाई देते हैं। इसमें भी रामायण और महाभारत पर आधारित चम्पूकाव्यों में से कतिपय अपने उपजीव्य की समग्र कथा का स्पर्श करते है तो कतिपय विशेष उपाख्यानों पर आधारित है एवं कुछ ने तो पात्र विशेष के आधार पर इसका उपजीव्य बनाया है। इनके अतिरिक्त कुछ चम्पूकाव्य दार्शनिक दृष्टिकोण पर आधारित है। वहीं कुछ किम्वदन्तियों पर आधारित हैं। इस प्रकार समग्र रूप से हम पाते हैं कि चम्पू काव्यों के उपजीव्य का क्षेत्र अत्यंत विस्तार लिए हुए है। वर्ण्य-वस्तु को आधार बनाकर प्रकाशित- अप्रकाशित समस्त चम्पूकाव्यों का वर्गीकरण निम्न रूप से किया जा सकता है।

1. रामायण पर आधारित चम्पूकाव्य।
2. महाभारत पर आधारित चम्पूकाव्य।
3. पुराणों पर आधारित चम्पूकाव्य।
4. जैन ग्रंथों पर आधारित चम्पूकाव्य।
5. प्रख्यात पुरुषों के जीवन चरित पर आधारित चम्पूकाव्य।
6. यात्रा प्रबंधों पर आधारित चम्पूकाव्य।
7. देवताओं के चरित्र एवं महोत्सव पर आधारित चम्पूकाव्य।
8. दार्शनिक दृष्टिकोण पर आधारित चम्पूकाव्य।
9. किम्वदन्तियों पर आधारित चम्पूकाव्य।

चम्पूकाव्य का लक्षण :

गद्य पद्यमयं काव्यं चम्पूरितमिधीयतें अर्थात् गद्य तथा पद्य उभयात्मक काव्य चम्पूकाव्य है। (साहित्य-दर्पण)

गद्य पद्यमयी काचिच्चम्पूरित्यभिधीयते अर्थात् गद्य पद्य से युक्त रचना चम्पूकाव्य कहलाती है। (काव्यादर्श) हरिदास भट्टाचार्य में इसकी कृत्रिम निरूक्ति दी है–चमत्कृत्य पुनाति सहृदयान् विस्मयीकृत्य प्रसादयति। प्राचीन आचार्यों द्वारा गद्य तथा पद्य शैलियों के विशिष्ट कोटिक मिश्रण के कारण जिसे मिश्रकाव्य कहा गया है। उसी काव्यभेद को चम्पूकाव्य कहा जाता है। यह उच्छवासों में विभक्त होता है।

चम्पूकाव्य के दो भेद है–

1. मुक्तककाव्य
2. प्रबंधकाव्य

चम्पूकाव्य में शब्द चमत्कार युक्त तथा अर्थ प्रसाद गुण युक्त होना चाहिए। मुक्तक चम्पूकाव्य के उदाहरण–

1. करम्भक
2. विरुद
3. जयघोषणादि।

प्रबन्ध चम्पूकाव्य के उदाहरण :

1. नलचम्पू
2. मदालसाचम्पू
3. यशस्तिलकचम्पू
4. भारतचम्पू
5. नृसिंह चम्पू।

नलचम्पूकाव्य प्रणेता त्रिविक्रम भट्ट

जीवन परिचय :

महाकवि त्रिविकम भट्ट का जन्म शाण्डिल्यगोत्रीय कर्मनिष्ठ ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम नेमादित्य और पितामह का नाम श्रीधर था। श्री त्रिविकमभट्ट हैदराबाद के अंतर्गत मान्यखेट नरेश राष्ट्रकूट कुलोत्पन्न इन्द्रराज तृतीय की राजसभा के प्रमुख पंडित थे। इनका समय दशम शताब्दी पूर्वार्द्ध माना गया है। यथा :

"श्री त्रिविक्रमभट्टेन नेमादित्य सुनूना। कृताशस्ता प्रशस्तेयमिनद्र राजाङ्घ्रि सेविना।।"

कृतित्व :

1. नलचम्पू
2. मदालसा चम्पू
3. इन्द्रराज प्रशस्ति

नल चम्पू की संक्षिप्त कथा वस्तु :

महाकवि त्रिविक्रम भट्ट कृत नल चम्पू सर्वप्राचीन चम्पू काव्य है। इसमें सात उच्छवास है। जिसमें नल दमयंती की प्रणय कथा वर्णित है। परम ग्रंथ अपूर्ण है, इसमें दोनों के विवाह का वर्णन नहीं मिलता अपितु देवताओं के संदेश को पहुंचाने दमयंती के महल जाने और प्रेमासक्त होने तक का ही वर्णन प्राप्त होता है।

इसका नायक नल तथा नायिका दमयंती है। यह श्रृंगार रस प्रधान रचना है। इसका उपजीव्य महाभारत का वन पर्व है। नल चम्पू के प्रत्येक उच्छवास के अंतिम पद्य में हरिचरण सरोजाङ् पद का प्रयोग किया गया है। अतः इस काव्य को हरिचरण सरोजाङ् काव्य भी कहा जाता है।

इस चम्पू काव्य में समङ्गश्लेष के सुंदर प्रयोग है। जो सुबन्धु की वासवदत्ता की अपेक्षा अधिक सरस तथा मंजुल है। मंगलाचरण के चतुर्थ पद्य में वाणी की तुलना गृहस्थ स्त्रियों से करते हुए श्लेष का सुमधुर प्रयोग किया है–

प्रसन्नाः कान्तिहारिण्यो नाना श्लेष विचक्षणाः।
भवन्ति कस्यचित्पुण्यैर्मुखे वाचो गृहे स्त्रियः।।

नलचम्पू 1/4।।

रामायण की कथा की प्रशंसा में विरोधाभास का श्लेषानु प्राणित प्रयोग श्लाध्य रूप से इन्होंने किया है :

सदूषणापि निर्दोषा सखरापि सुकोमला
नमस्तस्मै कृता येन रम्या रामायणी कथा।।

नलचम्पू 1/11

इस रमणीय पद्य में कवि वाल्मीकि जी की प्रशंसा कर रहा है। उस मुनि को नमस्कार है, जिसने रम्या रामायली कथा का निर्माण किया। इस कथा में खर और दूषण राक्षस तो है किन्तु कथा में प्रखरता तथा दूषण नहीं है। त्रिविक्रम ने बड़ी सुंदरता से श्लेष द्वारा कुकवियों की तुलना बालकों से कर दी है–

अप्रगल्भाः पदन्यासे जननी राग हेतवः।
सन्त्येके बहुलालापाः कवयो बालका इव।।

नलचम्पू (1/6)

इस संसार में कुछ कवि लोग बालकों की तरह है, जिस प्रकार बालक पदन्यास में अप्रगल्भ होते है, उसी प्रकार ये कविजन भी कविता के पद जोड़ने में नितांत असमर्थ है। कवि ने एक स्थल पर प्रातः काल का वर्णन

करते हुए रात्रि के काले अंधकार और प्रातः काल के प्रकाश की तुलना क्रमशः यमुना और गंगा के जल से की है। उदयगिरि दोनों का संगम स्थल है। इस उपमा के सौंदर्य पर मुग्ध होकर समीक्षकों ने त्रिविक्रम को यामुन त्रिविक्रम की उपाधि दी थी। यथा :

उदयगिरिगतायां प्राक्प्रभाण्डुताया,
मनुसरति निशीथे श्रृङ्गमस्ताचलस्य।
जयति किमपि तेजः साम्प्रतं व्योममध्ये
सलिलमिव विभिन्नं जाह्नवं यामुनं च।।

नल चम्पू 6/1

भवन्ति फाल्गुने मासि वृक्षशाखा विपल्लवाः।
जायन्ते न तु लोकस्य कदापि च विपल्लवा।।

(नल चम्पू 1/17)

यहां आर्यावर्त का वर्णन है। वहां फाल्गुन महीने में वृक्षों की शाखाएं (वि+पल्लव) पल्लव रहित होती है। परंतु रहने वालों को कदापि (विपद लवाः) छोटी सी विपत्ति भी नहीं होती। विपल्लवाः में श्लिष्टार्थ सचमुच साफ सुथरा है।

नल चम्पू पौराणिक उपाख्यानों पर चम्पूकाव्य के निर्माण एवं गद्य-पद्य दोनों में समान रूप से कवि कौशल प्रदर्शन का अन्यतम उदाहरण है। प्रबंध पटुता के साथ सारा वर्णन विस्तार का समन्वय रचयिता के प्रगाढ़-पांडित्य शब्द भंडार की समृद्धि एवं प्रवाहशील भाषा की निर्माण क्षमता क्रियापदों से निर्मित शब्दावली आदि दृष्टियों से त्रिविक्रम भट्ट कृत 'नलचम्पू' एक सर्वातिशायी वैशिष्ट्य से समान चमत्कार प्रधान चम्पूकाव्य ही सिद्ध होता है।

नलचम्पू के प्रमुख पात्र :

1. **नल** : इसका नायक निषध नरेश नल है। जो धीर ललित नायक की श्रेणी में आता है।
2. **दमयंती** : इसकी नायिका कुंडिन पुराधीश्वर भीम की अनुपम लावण्यसंपन्ना पुत्री दमयंती है। दमयंती मुग्धा नायिका वह कुशल वीणावादक एवं सभी विद्याओं में निपुण है–
   नैपुण्यं पुण्यकर्मारम्भेषु जाता प्रवीणा वीणा निराकुला कुलाचारेषु।
3. **वीरसेन** : नल के पिता वीरसेन अपनी थवल कीर्ति से विनम्र तथा शरणागत रक्षक है। इनकी पत्नी का नाम रूपवती है।
4. **भीम** : प्रकृत चम्पूकाव्य की नायिका दमयंती के पिता भीम विदर्भ देश के सम्राट ंहै। प्रियंगुमज्जरी नाम की अत्यंत रूपवती, सदगुण संपन्न उनकी रानी है।
5. **श्रुतिशील** : निषधराज वीरसेन के प्रधान अमात्य सालङकायन का पुत्र श्रुतिशील नल का अभिन्न मित्र और मंत्री है।
6. **प्रियंमज्जरी** : यह विदर्भ नरेश महाराजभीम की राजमहिषी तथा दमयंती की जनपित्री है। असंतुष्ट प्रियंगुमज्जरी अपनी श्लेषमयी उक्तियों से मुनि के लिए बहुविध उलाहनापूर्ण वचन बोलती हुई कह उठती है अलमलमनेन कन्यावर प्रदानेन।
7. **प्रियंवदिका** : नल के लिए श्रुतिशील के समान ही प्रियंवदिका दमयंती के लिए सुख-दुःख में सदा उसका साथ देने वाली अत्यंत शिष्ट और मृदुभाषिणी उसकी प्रिय सखी है। कवि इसके लिए 'प्रस्तावपंडिता' अनेक विधोपाख्याननिपुणा' जैसे विशेषणों का प्रयोग किया है।

8. **हंस** : नलचम्पू काव्य में हंस की उपस्थिति दूत के रूप में दृष्टिगोचर होती है। दमयंती के अनुसार वह निष्कारण वत्सल, निरपेक्षपक्षपाली, स्वभावतः सज्जन और कृत्रिमता रहित स्नेह संपन्न है।

नलचम्पू भौगोलिक वर्णन

1. आर्यावर्त
2. विदर्भ
3. मध्यदेश
4. कुंडिनपुर विदर्भ देश की राजधानी।
5. निषधा नगरी
6. कुरुक्षेत्र
7. त्रिपुष्कर
8. नासिक्य
9. प्रभासतीर्थ
10. नर्मदा
11. वरदा
12. गोदावरी
13. पयोष्णी
14. कावेरी
15. विदर्भा
16. गन्दमादन
17. श्री शैल
18. विन्ध्य
19. महाराष्ट्र

पात्र-परिचय

नल : नायक, निषध नरेश वीरसेन के पुत्र।
वीरसेन : निषधराज, नायक नल के पिता।
सालङ्कायन : वीरसेन के मंत्री।
श्रुतशील : नलमंत्री, सालङ्कायन पुत्र।
मौहूर्तिक : राजा वीर सेन के ज्योतिषी।
पथिक : उत्तर तथा दक्षिण दिशाओं से आए हुए पथिक।
पर्वतक : नल का सेवक।
प्रतीहार : नल का सेवक।
प्रस्तावपाठक
मृगयावनपालक :
वैतालिक

बाहुक : नल का सेनापति।
भद्रभूति : राजा नल का दौवारिक।
भीम : कुण्डिनपुर के राजा दमयंती के पिता।
पुरोध : राजा भीम के पुरोहित।
पुष्कराक्ष : दमयंती के दूत।
सुन्दरक : दमयंती का किन्नर।
सोमशर्मा : स्वयंवर निमंत्रण को ले जाने वाला ब्राह्मण।
हंस : दमयंती को लुभाने वाला नल का दूत।
इन्द्र, कुबेर, यम, वरुण : दमयन्ती वरण के इच्छुक।
पुरूष : लोकपालों का अनुचर।
ब्रह्मर्षि : नल का अभिषेक करने के लिए आए ऋषि।
मुनि : पयोष्णी तट के तपस्वी।
अवसरपाठक : भीम तथा नल के सेवक।

स्त्री-पात्र

दमयंती : नायिका कुण्डिनपुर नरेश की पुत्री
प्रियंगुमञ्जरी : दमयंती की माता-कुंडिनपुर की राजधानी
रूपवती : नल की माता राजा वीरसेन की पत्नी
कक्कोलिका/कलिका : दमयंती की चेटियां।

चकोरी, चंगी, चंद्रमा, चंद्रप्रभा, चंद्रवंदना, चंद्री, चंपा, मालती, नंदनी, परिहासशीला, प्रियवादिका, लवंगी, गौरी, सुंदरी।

(दमयंती की सखियां)

विहंगवागुरिका : दमयंती की किन्नरी।
मज्जन कामिनियां : राजा भीम की सेविकाएं।
किरात-कामिनियां : नर्मदातट वासिनी।
गोपी : विदर्मातीरचारिणी।
लवङ्गिका : नल की सरोवर रक्षिका।
सारसिका : नल की अनुपालिका।
हंसी : हंस की पत्नी।

सूक्तिवचन :

1. रम्या रामायणी कथा। नल चम्पू 1/11।
   रमणीय रामायण कथा।
2. कथा कान्तेव भारती। नल चम्पू 1/13।
   कान्ता समान महाभारत की कथा।

3. सर्वसहाः सूरयः। नल. 1/15
   विद्वान लोग सब कुछ सहन करने में समर्थ होते हैं।
4. जायन्ते न तु लोकस्य कदापि च विपल्लवा।
5. हारा इव विहाराः।
6. निरूपमा नवा यौवन सीः।
7. सा नगरी नगतनया गौरीव मनोहरा भाति।
8. नीरं नीरज निर्मुक्तं नीरज स्कंभुवस्तलम्।
9. कुरूते नाम्नैव निम्नं मनः।
10. सः महतामेकोगुणानां निधिः।
11. यन्मध्यपतितो नीचः काचोऽप्युच्चैर्मणीयते।

मदालसाचम्पूकाव्य :

इसमें चार उल्लास हैं। शृंगार रस प्रधान इस चम्पूकाव्य में कुवलयाश्व एवं मदालसा की प्रेमकथा है। इसका उपजीव्य मार्कण्डेय पुराण (18 से 12 अध्याय) है। इस चम्पूकाव्य में कुवलयाश्वचरित पातालकेतुवध मदालसा परिणय, मदालसा वियोग, कुवलयाश्व का नागराज के घर जाना और अंततः मदालसा की पुनः प्राप्ति मुख्य घटनाएं हैं।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न. 1 चम्पूकाव्य किसे कहते हैं?
उत्तर गद्य एवं पद्य से मिश्रित रचना।
प्रश्न. 2 नल चम्पू के प्रणेता कौन है?
उत्तर त्रिविक्रम भट्ट।
प्रश्न. 3 त्रिविक्रम भट्ट के पिता का क्या नाम है?
उत्तर नेमादित्य या देवादित्य।
प्रश्न. 4 त्रिविक्रम भट्ट का समय है?
उत्तर 915 ई. या 10 वीं शताब्दी।
प्रश्न. 5 त्रिविक्रम भट्ट को संज्ञा दी गई है?
उत्तर इन्द्राजाङ्घिसेवी।
प्रश्न. 6 त्रिविक्रम भट्ट किस उपाधि से अलंकृत थे?
उत्तर यमुनात्रिविक्रम।
प्रश्न. 7 नलचम्पू में कितने उच्छवास है?
उत्तर सात।
प्रश्न. 8 नल चम्पू का वर्ण्य विषय क्या है?
उत्तर नल-दमयंती।
प्रश्न. 9 नलचम्पू किसमें विभक्त है?
उत्तर उच्छवासों में।

प्रश्न. 10 त्रिविक्रम भट्ट की रचनाएं है?
उत्तर नलचम्पू तथा मदालसाचम्पू।
प्रश्न. 11 नल चम्पू की नायिका कौन है?
उत्तर दमयंती।
प्रश्न. 12 नल किस श्रेणी का नायक है?
उत्तर धीरललित।
प्रश्न. 13 दमयंती किस श्रेणी की नायिका है?
उत्तर मुग्धा।
प्रश्न. 14 दमयंती किसकी पुत्री थी?
उत्तर विदर्भ नरेश भीम।
प्रश्न. 15 नल के माता-पिता कौन थे?
उत्तर माता रूपवती, पिता वीरसेन।
प्रश्न. 16 दमयंती की माता का क्या नाम था?
उत्तर प्रियंगुमञ्जरी।
प्रश्न. 17 दमयंती की सखी का क्या नाम था
उत्तर प्रियंवदिका।
प्रश्न. 18 श्रुतशील के पिता का नाम क्या था?
उत्तर सालङ्कायन।
प्रश्न. 19 नल चम्पू काव्य में दूत के रूप में कौनसा पक्षी चित्रित हुआ है?
उत्तर हंस।
प्रश्न. 20 राजा नल के महामंत्री का क्या नाम था?
उत्तर श्रुतिशील।
प्रश्न. 21 समंगश्लेष का सर्वाधिक प्रयोग किस ग्रंथ में हुआ है?
उत्तर नल चम्पू।
प्रश्न. 22 'करोति कस्य नाहलादं कथा कान्तेव भारती' सूक्ति किस ग्रंथ से है?
उत्तर नलचम्पू।
प्रश्न. 23 नल चम्पू के आर्यावर्त वर्णनम् में मुख्य रूप से किन अलंकारों का प्रयोग हुआ है?
उत्तर श्लेष-उपमा-परिसंख्या।
प्रश्न. 24 अनूचानः कः?
उत्तर सांङ्गवेदाध्येता।
प्रश्न. 25 दृश्यते न च यत्र स्त्री नवापीनयोधरा श्लोकांश किस ग्रंथ से है?
उत्तर नलचम्पूः।
प्रश्न. 26 सर्वसहाः सूरयः सूक्ति वचन किस ग्रंथ से उदधृत है?
उत्तर नल चम्पू।
प्रश्न. 27 परस्य हृदये लानं न घूर्णयति यच्छिरः पंक्ति ग्रहण की गई है।
उत्तर नलचम्पू।

प्रश्न. 28 त्रिविक्रम भट्ट किस राजा के अधीनस्थ कवि थे?
उत्तर इंद्रराज तृतीय।
प्रश्न. 29 नल चम्पू का उपजीव्य है?
उत्तर महाभारत का वनपर्व।
प्रश्न. 30 नलचम्पू का अंगीरस है?
उत्तर शृंगार रस।
प्रश्न. 31 नलचम्पू काव्य है?
उत्तर सुखांत।
प्रश्न. 32 नलचम्पू काव्य में कौनसा मंगलाचरण है?
उत्तर वस्तुनिर्देशात्मक।
प्रश्न. 33 आर्यावर्त प्रदेश का वर्णन किस काव्य में मिलता है?
उत्तर नलचम्पू।
प्रश्न. 34 निषध प्रदेश कहां था?
उत्तर आर्यावर्त प्रदेश।
प्रश्न. 35 युग्मक काव्य है?
उत्तर चम्पूकाव्य।
प्रश्न. 36 युवजनोन्मादिनी यौवन श्रीः सूक्ति ग्रहण की है?
उत्तर नलचम्पू।
प्रश्न. 37 नलचम्पू के मंगलाचरण में किस देवता की स्तुति है?
उत्तर शिव-पार्वती की।

परावर्ती चम्पू काव्यकार एवं चम्पूकाव्य

1. सोमवदेव सूरि : प्रणीत यशस्तिलक चम्पू काव्य

–सोमदेव जैन कवि थे।
–तार्किक चक्रवर्ती, वादीभंपंचानन, कवि कुल राजकुंजर आदि अनेक उपाधियां प्राप्त थी।
–इनका समय नवम शताब्दी में माना गया है।
–**यशस्तिलक चम्पू** का कथानक जैन पुराणों में प्रसिद्ध यशोधर के जीवन चरित पर अवलंबित है।
–इसमें आठ आश्वास है।
–प्रथम पांच आश्वासों में यशोधर के आठ जन्मों का वृतांत वर्णित हुआ है।
–अंतिम तीन आश्वासों में जैन धर्म के सिद्धांतों का वर्णन है।
ये तीन आश्वासज्ञावकाध्ययन के नाम से प्रसिद्ध रहे हैं।
–इस चम्पूकाव्य में अवन्ति के राजा यशोधर का शुभ्र चरित, उनकी पत्नी की कपट धूर्तता, राजा की मृत्यु तथा आठ जन्म में नाना योनियों में जन्म तथा अंत में जैन धर्म में दीक्षित होने का आख्यान बड़ी ही उदात्त तथा अलंकार, प्रचुर शैली में विस्तार से वर्णित है।
–कथा गुणभद्र के उत्तर पुराण पर आश्रित है।

2. हरिचंद्र कृत : जीवन्धर चम्पूकाव्य :

–इस चम्पूकाव्य में जैन धर्म के सिद्धांतों का वर्णन हुआ है।

–गुणभद्र रचित उत्तर पुराण में वर्णित जीवन्धर कथा को हरिशचंद्र चम्पू के रूप में लिखा है।

3. सोडढल विरचित उदय सुंदरी कथा काव्य :

–कवि सोड्ढल गुजरात के रहने वाले थे।

–इनका समय 11 वीं शताब्दी है।

–उदय सुंदरी कथा चम्पू काव्य में आठ उच्छवास है। इसके प्रथम उच्छवास में कवि अपना परिचय देता है।

–वर्ण्य विषय के रूप में प्रतिष्ठानपुर के राजा मलयावाहन एवं नागराज शिखण्ड तिलक की कन्या उदय सुंदरी की कथा प्रस्तुत है।

4. भोजकृत रामायण चम्पू काव्य :

–भोजदेव धारा नगरी के राजा थे।

–इनका समय 1005-1054 ई. के मध्य माना गया है।

–रामायण चम्पू का उपजीव्य रामायण है।

–इसके आरंभ में वाल्मीकि की प्रशंसा की गई है। यथा मधुमय भणितीनां मार्गदर्शीमहर्षि।

5. अनंत भट्ट कृत भारत चम्पूकाव्य :

–अनंत भट्ट द्रविड़ प्रदेश के निवासी थे। ये ब्राह्मण थे।

–इनका समय 15 वीं शताब्दी माना गया है।

–भारत चम्पू महाभारत पर आश्रित चम्पूकाव्य है।

–इसमें 12 स्तबंक, 1041 पद्य तथा 200 से अधिक गद्य खंड है।

–इसका प्रधान रस वीर है।

–इसमें नमस्कारात्मक मंगलाचरण है।

6. तिरुमलाम्बा विरचित वरदाम्बिकापरिचय चम्पूकाव्य :

–डॉ. लक्ष्मणस्वरूप ने तंजौर लायब्रेरी से सर्वप्रथम इस चम्पूकाव्य की पांडुलिपि उपलब्ध की तथा उसे 1932 ई. में संपादित एवं प्रकाशित किया। डॉ. लक्ष्मणस्वरूप के अनुसार इस चम्पूकाव्य का रचनाकाल 16 वीं शताब्दी है।

–प्रकृत चम्पूकाव्य में लेखिका ने विजयनगर नरेश अच्युतराय की रानी तिरुमलांबा ने अपने पति अच्युतराय तथा वरदाम्बिका के प्रणय तथा परिणय की कथा वर्णित की है।

7. कर्णपूर कृत आनंदवृंदावनचम्पू :

–कवि कर्णपूर के पिता शिवानंद चैतन्य महाप्रभु के शिष्य थे।

–इनका बचपन का नाम परमानंददास था।

–इनका जन्म 1524 ई. में बंगाल के नदिया जिले में हुआ।

–इनकी रचनाओं में चैतन्य चन्द्रोदयनाटक, अलंकार कौस्तुभ भी गणनीय है।

–आनंदवृंदावन चम्पू काव्य में भगवान श्री कृष्ण की कथा का वर्णन 22 स्तबकों में हुआ है।

8. वेंकटाध्वरीकृत चम्पूकाव्य :

–ये कांची (तमिलनाडु) के निवासी थे।

–इनके विषय में जनश्रुति है कि 1000 पद्यों का लक्ष्मीस्रोत एक ही रात में लिखा था।

–इनकी माता सीताम्बरा पिता रघुनाथ थे।

–इनका समय 1650 ई. के आसपास माना गया है।

–इनके चार चम्पूकाव्य मिलते हैं।

(i) विश्वगुणादर्श चम्पूकाव्य

(ii) वरदाभ्युदय चम्पूकाव्य

(iii) उत्तर चम्पूकाव्य तथा

(iv) श्री निवास विलास चम्पूकाव्य।

विश्वगुणादर्श चम्पू : इसमें दो गंधर्वों (विश्वावसु कृशानु) की विमान यात्रा का वर्णन है।

वरदाभ्युदयचम्पू : कांची के देवता लक्ष्मी और नारायण के विवाह का वर्णन है।

उत्तर चम्पू : रामायण के उत्तर कांड के विषयों का वर्णन है।

श्री निवास विलासचम्पू : तिरूपति के बालाजी की प्रश्न।

(परवर्ती प्रमुख चम्पू) काव्य

चम्पूकार	चम्पूकाव्य
*तेरहवीं शताब्दी	
1. आशाधर सूरि	भारतेश्वराभ्युदय।
2. अर्हद्दास	पुरूदेव चम्पू।
3. दिवाकर	अमोघराघवचम्पू।
*चौदहवी शताब्दी	
1. अहोबल सूरि	यतिराज विजय, विरूपाक्षवसन्तोत्सव।
2. शेषकृष्ण	परिजातहरण।
3. बल्लीसहाय	शंकर दिग्विजय।
*पंद्रहवी शताब्दी	
1. पद्मनाभ	वीरभद्र देव चम्पू
*सोलहवीं शताब्दी	
1. नारायण भट्ट	मत्स्यावतार, पांचाली स्वयंवर।
*सत्रहवीं शताब्दी	
1. मित्र मिश्र	आनंदकचम्पू
2. नीलकंठ दीक्षित	नीलकंठ विजय चम्पू।
3. चक्र कवि	द्रौपदी परिणय चम्पू।
*अठारहवीं शताब्दी	
1. शंकर कवि	शंकर चेतोविलाचम्पू, गंगावतरण।
2. विश्वनाथ	रामचंद्र चम्पू।
3. श्री निवास	आनंद चम्पू।
उन्नीसवीं शताब्दी	
1. कृष्णानंद	सुदर्शन चम्पू
2. सदाशिव शास्त्री	सिंदे विजय विलास
3. रघुनंदन त्रिपाठी	हरिहरचरित चम्पू

कथा एवं आख्यान साहित्य

भारत में वैदिक युग के भारतीयों के जीवन के प्रारंभिक काल से ही अनेक प्रकार की कहानियां लोगों में प्रचलित थी। उनके विकास प्रारंभिक अवस्थाओं में–

(i) अद्‌भुत कथा,

(ii) लोककथा,

(iii) कल्पित कथा तथा

(iv) पशु कथा के अनेक रूप प्राप्त हुए है।

लोककथा : जो कथाएं शुद्ध मनोरंजक के लिए विकसित हुई है, लोक कथा कही जाती है।

पशुकथा : पशु-पक्षी की बुद्धिमत्ता का ज्ञान जिन कथाओं में मिला, उन्हें पशुकथा कहा जाता है।

उद्देश्य : इन कथाओं का उद्देश्य मानव को श्रेष्ठ आचरण की स्थिति प्रदान करता रहा है।

लोककथाएं :

'बृहत्कथा : (प्राकृतनामा बड्डकहा)

प्रणेता-गुणाढ्य।

*यह कथा पैशाची-प्राकृत भाषा में लिखी गई है। इसका रचनाकाल प्रथम या द्वितीय शताब्दी है।

बृहत्कथा की मुख्यकथा :

बृहत्कथा में एक मुख्य कथा कौशांबी नरेश उदयन के पुत्र नरवाहनदत्त की थी जिसने विद्याधर राजकुमारी मदन मञ्चुका से विवाह किया। नायिका के अपहरण करने के बाद नायक ने कई फन दिखाएं।

कथा सरितसागर के अनुसार सातवाहन नरेश की राजसभा में गुणाढ्य एक बार संस्कृत बोलना सिखाने की बाजी में हार गए। इस कारण उन्होंने संस्कृत बोलना छोड़ दिया तथा खिन्न होकर वन से चले गए। वन में पशु पक्षियों को पैशाची भाषा में कथाएं सुनाने लगे। उन्हीं कथाओं में अवशिष्ट कथाएं एक लाख पद्यों की बृहत्कथा कहलायी। परवर्ती कवियों ने बृहत्कथा को उपजीव्य बनाकर ग्रंथों का प्रणयन किया है।

बृहत्कथा की तीन वाचनाएं इस समय उपलब्ध हैं, जो पृथक-पृथक चार ग्रंथों के रूप में है।

1. नेपालीवाचना बुधस्वामी कृत 'बृहत्कथाश्लोक संग्रहः।'
2. प्राकृत वाचना संघदासगणिकृत 'वसुदेव हिंदी'।
3. कश्मीरीवाचना क्षेमेंद्र कृत बृहत्कथा मञ्जरी।
4. सोमदेव कृत कथा सरित्सागर।

1. बृहत्कथा श्लोक संग्रह : इसके प्रणेता बुधस्वामी है। कवि नेपाल से संबंध रखते हैं। कविकृत प्रकृत वाचना को नेपालीवाचना कहा जाता है। जर्नल आफ एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल खंड 62 के अनुसार इसे नेपाल से 1893 में हरप्रसाद शास्त्री ने प्राप्त किया था। इसमें 28 सर्ग तथा 4539 पद्य है।

2. बृहत्कथा मञ्जरी : इसके प्रणेता कवि क्षेमेंद्र है। इसमें 18 लंबक तथा 750 श्लोक है। इसे कश्मीरी संस्करण या वाचना के नाम से जाना जाता है। वाचना का समय 1037 ई. के आसपास माना गया है। इसके 9 वें श्लोक की 25 वेताल कथाएं ही स्वतंत्र रूप से 'वेतालपंच विंशति' के नाम से प्रसिद्ध है।

3. कथा सरित्सागर : बृहत्कथा का यह अर्वाचीनतम और विशाल संस्करण है। इसकी रचना कश्मीरी पंडित सोमदेव ने की। अनंत की पत्नी सूर्यवती के मनोविनोदार्थ 1064 और 1081 ई. के बीच में हुई थी। इसमें 18 लंबक 124 तरंग तथा श्लोक है।

अन्यलोक कथाएं

1. वेतालपञ्चविंशति : इसमें विक्रम और बेताल से संबद्ध 25 शिक्षा एवं रोचक कहानियों का संकलन है।

इसके दो संस्करण प्राप्त हैं : प्रथम–गद्यपद्यात्मक–शिवदासकृत।

द्वितीय–पद्यात्मक–जंभलदत्तकृत।

*मंगोल भाषा में सिद्धिकूर के रूप में इसका रूपांतरण है।

2. सिंहासनद्वात्रिंशिका : इसे द्वात्रिशतपुत्तलिका या विक्रमचरित भी कहा गया है। राजा भोज को भूमि में गड़ा हुआ विक्रमादित्य का सिंहासन प्राप्त हुआ। उसमें बत्तीस पुतलियां लगी हुई थी। जब सिंहासन स्वच्छ करने के बाद भोज ने उस पर बैठने का प्रयास किया उन पुतलियों ने उन्हें रोका ओर विक्रमादित्य के न्याय से संबंध कथाएं सुनाई। इन बत्तीस कथाओं में विक्रमादित्य के साथ न्याय-पराक्रम और उदारता का वर्णन है। सिंहासन बत्तीसी इसका हिंदी नाम प्रसिद्ध है। इसका रचनाकाल 1017-1663 ई. के बाद स्वीकार किया जाता है।

यह तीन रूपों में प्राप्त है : गद्यात्मक, पद्यात्मक तथा गद्यपद्यात्मक।

2. शुक सप्तति प्रणेता-अज्ञात

4. भोज प्रबंध प्रणेता-वल्लालसेन

5. ललितविस्तर बौद्ध त्रिपिटकों का अंतिम भाग।

अवदानशतक बौद्धग्रंथ।

6. जातकमाला आर्यशूर।

पारमिता प्रकाश आर्यशूर।

7. प्रबंधचिंतामणि मेरूतुङागचार्य।

नीतिकथाएं

नीति कथाओं का प्रयोजन होता है–नैतिक उपदेश देना। मनुष्य के व्यक्तित्व को सुधारने तथा समाज में अभ्यर्हित होने के लिए रोचक कथाएं प्रचलित हुई है। इन कथाओं में कवियों ने पशु-पक्षियों को पात्र बनाया है। उनकी बुद्धिमत्ता, दयालुता, दानवीरता मानव के लिए ग्रहण करने योग्य रही है। नीतिकथाओं में जीवन के सत्-असत् दोनों पक्षों का चित्रण करके असत् से बचने और सत् के अनुष्ठान का उपदेश दिया है। नीति और धर्म से इनका संबंध है। इनका लक्ष्य मनुष्य को आदर्शवादी तथा लोक व्यवहार में कुशल बनाना है। सदाचार और राजनीति दोनों की इसमें शिक्षा दी गई है।

1. पंचतंत्र

पञ्चतन्त्र

जीवन परिचय

सर्वशास्त्रों में निष्णात पं. विष्णु शर्मा पञ्चतन्त्र के रचनाकार है। इनका समय 300 ई. पू. माना गया है। विष्णु शर्मा 'महिला रोप्य' नगर के राजा अमरशक्ति के सभा पंडित थे। यह नगर वर्तमान में चेन्नई का 'माइलापुर'

कृतित्व

पंचतंत्र

पंचतंत्र पं. विष्णु शर्मा कृत पांच तंत्रों में निबद्ध ग्रंथ है। ये पांच तंत्र इस प्रकार है–

1. मित्र भेद – 22 कथाएं
2. मित्र संप्राति – 6 कथाएं
3. काकोलूकीय – 16 कथाएं
4. लब्ध प्रणाश एवं – 11 कथाएं
5. अपरीक्षित कारक – 14 कथाएं

इसमें 6 मुख्य कथाएं सहित कुल 75 कथाएं है। इसी प्रकार पद्यों की संख्या प्रायः 1100 है। पंचतंत्र का मुख्य भाग गद्यात्मक है परंतु पद्यात्मक भाग भी महत्वपूर्ण है। जिसमें सूक्ति वचनों के माध्यम से मानव को व्यावहारिक नीतिपूर्ण शिक्षा दी है।

कथामुख : मित्रभेद की प्रधान कथा के पूर्व शास्त्रज्ञान, शून्य विवेकहीन एवं दुर्व्यसनों से युक्त अपने मूर्ख पुत्रों से दुःखी राजा अमरशक्ति की कथा है। वह उन्हें पं. विष्णु शर्मा को उनकी इस प्रतिज्ञा पर सौंप देते है कि वह उन्हें छः मास में राजनीति एवं नीतिशास्त्र में पारंगत बना देंगे।

मित्र भेद : इस तंत्र में एक मुख्य कथा तथा इस कथा के अंतर्गत 22 उपकथाएं हैं। मुख्य कथा में पिंगलक नामक वन का राजा सिंह आपत्तिकाल में अपने मालिक द्वारा परित्यक्त संजीवक नामक बैल को संरक्षण प्रदान करता है। अपने विश्वास भाजन मंत्रियों करटक एवं दमनक नामक सियारों की इच्छा के विरुद्ध उस बैल को अपना प्रिय मित्र बना लेता है। बाद में दोनों सियार मंत्री द्वारा छल प्रपंच से भरे अनेक उपाख्यानों से सिंह का उस बैल पर अविश्वास करा दिया जाता है। तत्पश्चात् सिंह द्वारा उस बैल की हत्या करवा दी जाती है। मित्रों मध्य भेद कर देना ही इस तंत्र का उद्देश्य है।

2. मित्र संप्राप्ति : इस तंत्र में एक मुख्य कथा और 6 उपकथाएं है। इसमें कबूतर, चूहा, कछुआ, कौआ और हिरण ने परस्पर एक-दूसरे को मित्र बनाकर स्वयं पर आई हुई विपत्तियों से एक दूसरे की सहायता कर छुटकारा पाया। अतः इस तंत्र की मित्र संप्राति नाम अन्वर्थ संज्ञा है।

3. ककोलूकीय : इस तंत्र में एक मुख्य कथा तथा 16 उपकथाएं हैं। इसमें कौओं के राजा मेघवर्ण एवं उल्लूओं के राजा अरिमर्दन की कथा है। स्वार्थ सिद्धि के लिए शत्रु से मिलकर उसे अंततः नष्ट कर देने की शिक्षा ककोलूकीय में दी गई है। इसका दूसरा नाम संधि-विग्रह है।

4. लब्ध प्रणाश : इसमें एक मुख्य कथा तथा ग्यारह उपकथाएं है। इस तंत्र में मुख्य कथा के रूप में कराल मुख नामक मगर एवं रक्त मुख नामक वानर की कथा है। लब्ध प्रणाश नामक तंत्र में शिक्षा है कि बुद्धिमान बुद्धिबल से जीत जाता है तथा मूर्ख अपने हाथ में आई वस्तु भी खो देता है। अंत में पुरुषार्थजन्य लक्ष्मी का माहात्म्य बतलाकर तंत्र समाप्त हो जाता है।

5. अपरीक्षित कारक : इस पांचवें तंत्र के अन्तर्गत एक मुख्य तथा कुल 14 उपकथाएं हैं। इसमें मुख्य रूप से भली-भांति सुपरीक्षित कार्य करने की नीति पर बल दिया गया है। सम्यक् प्रकार से विचार किए बिना एवं बिना भली-भांति देखे या सुने गए कार्य को करने वाले मनुष्य को उस कार्य में सफलता प्राप्त नहीं होती। जीवन में अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। अपरीक्षितकारक में बिना विचार करने का दुष्परिणाम दिखाया गया है।

पंचतंत्र का उद्देश्य : पंचतंत्र का प्रमुख उद्देश्य बालकों को नैतिक, धार्मिक एवं व्यावहारिक शिक्षा प्रदान करना है। इसमें नैतिक एवं उपदेशात्मक शिक्षा का वर्णन पद्यों में किया गया है तथा कथाभाग का वर्णन गद्य में किया गया है। विष्णु शर्मा ने कथा रूप में पशु पक्षियों को माध्यम बन है। इन कथाओं में दैनिक वाग्व्यवहार,

करणीय-अकरणीय उपयोग, कर्तव्यपालन, मित्र रक्षा, वचनपालन इत्यादि गुणों का वर्णन है। छल-कपट, अहंकार, अंतःपुर के छल-छद्मपूर्ण व्यवहार एवं स्त्रियों की चरित्रहीनता आदि दोषों का भी वर्णन है।

पंचतंत्र का नामकरण :

पंचतंत्र के उपलब्ध संस्करण :

(क) तंत्राख्यायिका (समय 300 ई.) प्रकाशन 1910 ई.।
(ख) सरलपंचतंत्र (समय 1100 ई.)।
(ग) पूर्णभद्र का पंचतंत्र (समय 1199 ई.)।
(पंचाख्यानक, अलंकृतवाचना)।
(घ) दक्षिणभारतीय पंचतंत्र।
(ड) नेपाली पंचतंत्र।
(च) हितोपदेश (लोकप्रिय संस्कार)।
(छ) उत्तर पश्चिमी पंचतंत्र।

पहलवी संस्करण :

विदेशी भाषाओं में पंचतंत्र का पहला रूपांतरण पहलवी भाषा में ही हुआ था। खुसरों अनोशेखां के शासनकाल में हकीम बुजोई ने इसका पहलवी रूपांतर किया था। यह अनुवाद नष्ट हो चुका है किंतु इसी के अनुवाद सीरियाई और अरबी भाषाओं में हुए थे। डॉ. सूर्यकांत ने अपने ग्रंथ (सं. वा. वि. इतिहास पृ. 301 में लिखा है कि सीरियाई अनुवाद को 'कलियुग तथा दमनग' एवं अरबी अनुवाद को 'कलीलह तथा दिमनग' कहा गया है। इसमें अनुमान होता है कि पहलवी संस्करण संस्करण में करटक-दमनक रहा होगा क्योंकि इन दो शृंगारो कथा वर्तमान पंचतंत्र के प्रथम तंत्र में आयी है।

इस प्रकार पंचतंत्र की कुल आठ वाचनाएं प्राप्त होती है। मूल पंचतंत्र वर्तमान में उपलब्ध नहीं है। पंचतंत्र के 50 से अधिक भाषाओं में लगभग 200 संस्करण प्राप्त हो चुके है।

सूक्ति वचन :

1. न स्वल्पस्य कृते भूरि नाशयेन्मति मान्नरः।
एतदेवाऽत्र पाण्डित्यं यत्स्वल्पाद् भूरिरक्षणम्।।
2. अरक्षितं तिष्ठति दैवरक्षितं, सुरक्षित दैवहतं विनश्यति।
3. बुद्धिर्यस्य बलं तस्य।
4. उद्योगिनं पुरूषसिंहमुपैति लक्ष्मीः।
5. आत्मवत् सर्वभूतानि यो पश्यति सः पण्डितः।
6. पुत्रीति जाता महतीह चिंता।
7. त्येजेदेकं कुलस्यार्थे।
8. यस्मिनन्कुले यः पुरुषः प्रधानः स सर्वयत्नैः परिरक्षणीयः।
9. त्याज्यं न धैर्यं विधुरेऽपि काले।
10. उपायं चिन्तसेत्प्राज्ञस्तथापायं च चिन्तयेत्।

पंचतंत्र के प्रमुख अनुवाद :

1. संस्कृत से 'पहलवी' में–
   खुसरो अनोशेर के शासनकाल (531-579 ई.) में हकीम बुर्जोई नामक विद्वान के द्वारा किया गया था।
2. पहलवी भाषा से सीरियन भाषा में–
   बूद ने 570 ई. में।
3. संस्कृत से 'अरबी' भाषा में
   अब्दुल्ला इब्रल मोकफ्फा ने 750 ई. में कलिलहदिमनह नाम से अनुवाद किया।
4. ग्रीक भाषा में–
   सिमियन ने 11वीं शताब्दी में।
5. इटालियन भाषा में–
   गियोलियो नूति ने 1583 ई. में।
6. अरबी से हिब्रू में–
   रब्बी जोइल ने 1100 ई. में।
7. लैटिन भाषा में–
   जॉन आफ केपुआ ने 1270 ई. में।
8. जर्मनभाषा में–
   एन्थानियस फॉन फरने 1483 ई. में।
9. अंग्रेजी भाषा में–
   टामसनार्थ ने 1570 ई. में।
10. अरबी में अन्य अनुवाद–
    अबुलनसरल्ला ने 1142 ई. में।

विशेष तथ्य :

1. पंचतंत्र रचना पर चाणक्य द्वारा रचित 'अर्थशास्त्र रचना का व्यापक प्रभाव देखा जाता है। इसलिए पंचतंत्र संपूर्ण अर्थशास्त्र का सार भी कहा गया है–
   सकलाऽर्थशास्त्रसारं जगति समालोक्य विष्णुशर्मेदम्।
   तन्त्रैः पर्च्चभिरेतञ्चकार सुमनोहरं शास्त्रम्॥1/11
2. कथामुख की समाप्ति पर पंचतंत्र का फल बताया है :–
   अधीते य इदं नित्यं नीतिशास्त्रं शृणोति च।
   न पराभवमाप्नोति शक्रादपि कदाचन॥
3. पंचतंत्र में रोमदेश की मुद्रा 'दीनार' का उल्लेख होता है।
4. पंचतंत्र में प्रयुक्त तंत्र शब्द नीतियुक्तशासन विधि भी बतलाता है।
5. काकोलूकीय तंत्र का अपर नाम संधि विग्रह भी है।
6. पंचतंत्र की भाषा शैली सरल, सुबोध तथा प्रसाद व माधुर्य गुणों से युक्त है।
7. काव्यानुशासन ग्रंथ में हेमचंद्राचार्य ने पंचतंत्र की शैली को निदर्शना शैली कहा है।
8. पूर्व में पंचतंत्र के 12 खंड होने का अनुमान है। वर्तमान पंचतंत्र 5 खंडों में ही प्राप्त होता है।

प्रश्नोत्तर :

प्रश्न. 1 पंचतंत्र के लेखक है?
उत्तर– विष्णु शर्मा।
प्रश्न. 2 अमर शक्ति कहां का राजा था?
उत्तर– महिलारोप्य नगर।
प्रश्न. 3 अमरशक्ति के कितने पुत्र थे?
उत्तर– अनंत शक्ति, उग्र शक्ति तथा बाहुशक्ति।
प्रश्न. 4 पंचतंत्र में किस देवता की स्तुति प्राप्त होती है?
उत्तर– ब्रह्मारुद्रः कुमारो हरिवरुणयमा वहिनरिन्द्रः कुबेर, श्चन्द्रादित्यो सरस्वत्युदधि युग-न्नगा वायुकर्वीभुजङ्गः। सिद्धा नद्योऽश्विनौ श्रीर्दितिरदितिसुता मातरचण्डिका वेदास्तीर्थानि यज्ञागण वसु मुनयः पान्तु नित्यं ग्रहाश्च।
प्रश्न. 5 पंचतंत्र का सर्वप्रथम किस भाषा में अनुवाद हुआ था?
उत्तर– पहलवी भाषा।
प्रश्न. 6 पंचतंत्र में करटक एवं दमनक पात्र है?
उत्तर– शृंगाल (सियार)।
प्रश्न. 7 विष्णु शर्मा का समय माना गया है?
उत्तर– 300 ई. पू.।
प्रश्न. 8 पंचतंत्र को आधार मानकर किस कवि ने अपनी रचना का प्रणयन किया था?
उत्तर– नारायण पं. ने हितोपदेश का।
प्रश्न. 9 पशु आख्यायिका परंपरा में विश्व को भारत की महान देन क्या है?
उत्तर– पंचतंत्र।

2. हितोपदेश

लेखक : नारायण पंडित।

जीवन परिचय–

नारायण पण्डित कि जन्मकाल के विषय में विशेष जानकारी उपलब्ध नहीं हैं। स्थितिकाल चौदहवीं शताब्दी (लगभग) है। डॉ. कीथ ने इनका समय 900 ई. से 1373 ई. के मध्य निर्धारित किया है। नारायण पंडित बंगाल के राजा धवलचंद्र के आश्रय में थे। राजा के अनुरोध पर इन्होंने हितोपदेश की रचना की थी।

कृतित्व : हितोपदेश

हितोपदेश अर्थात् वह ग्रंथ, जिसमें भलाई का उपदेश हो। यह ग्रंथ पंचतंत्र से निकला हुआ है–
पंचतंत्रात् तथाऽन्यस्माद् ग्रंथादाकृष्य लिख्यते। हितोपदेश चार परिच्छेदों में विभक्त है। मित्रलाभ, सुहृद्भेद में
विग्रह तथा संधि। इसमें चार मुख्य कथाओं सहित 43 कथाएं एवं 726 कुल पद्य है। पंचतंत्र से 25 कथाएं ली
गई है। इसकी प्रस्ताविका में पाटलिपुत्र के राजा सुदर्शन के चार मूर्ख, पुत्रों को विष्णु शर्मा के द्वारा नीतिशास्त्र
की शिक्षा देने की कथा है। मित्र लाभ में काक-कूर्म-मृग-मूषिक, सुहृदभेद में सिंह और वृष की मैत्री शृंगाल द्वारा
तोड़े जाने की, विग्रह में हंसो और मयूरों के युद्ध की तथा संधि में हंसों तथा मयूरों के बीच गृघ और चकवे के
द्वारा मैत्री कराने की मुख्य कथा है। इस ग्रंथ में पंचतंत्र का 2/5 गद्य भाग और दो तिहाई 2/3 पद्यभाग समाविष्ट

है। मुख्य कथा के अतिरिक्त इसमें 17 नवीन कहानियां है। जिनमें सात पशुकथाएं, 3 लोककथाएं, 2 शिक्षाप्रद कथाएं एवं 5 षड्यंत्र कथाएं हैं। नारायण पंडित ने प्रकृत का उद्देश्य बताते हुए लिखा है कि :

श्रुतो हितोपदेशोऽयं पाटवं संस्कृतोक्तिषु।
वाचां सर्वत्र वैचित्र्यं नीतिविद्याददाति च॥

*वर्तमान में संस्कृत शिक्षण का भारतवर्ष में प्रारंभ हितोपदेश से होता है।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न. 1 नारायण पंडित ने पंचतंत्र के अतिरिक्त जिस ग्रंथ का प्रमुखतः आश्रय लिया, वह है?
उत्तर– कामन्दकीय नीतिसार।
प्रश्न. 2 हितोपदेश किसमें विभक्त है?
उत्तर– परिच्छेद।
प्रश्न. 3 नारायण पंडित किस राजा के आश्रित कवि थे?
उत्तर– धवलचंद्र।
प्रश्न. 4 हितोपदेश की लोकप्रियता का प्रमुख कारण है?
उत्तर– सरल भाषा।
प्रश्न. 5 वर्तमानकाल में भारत में संस्कृत शिक्षण का आरंभ किस पुस्तक से होता है?
उत्तर– हितोपदेश।
प्रश्न. 6 हितोपदेश के प्रथम परिच्छेद का क्या नाम है?
उत्तर– मित्रलाभ।
प्रश्न. 7 हितोपदेश के मित्रलाभ परिच्छेद में कितने पद्य है?
उत्तर– 247 (लगभग 250)।
प्रश्न. 8 हितोपदेश के मित्रलाभ परिच्छेद में कितने मित्रों का वर्णन है :
उत्तर– चार।
1. लघुपन–काग,
2. हिरण्यक–चूहा,
3. मन्थर–कछुआ तथा
4. चित्राङ्ग–हिरण।
प्रश्न. 9 हितोपदेश में रविवार के लिए किस शब्द का प्रयोग हुआ है?
उत्तर– भट्टाकवार।
प्रश्न. 10 हितोपदेश की कथाओं के पात्र कौन है?
उत्तर– पशु-पक्षी।
प्रश्न. 11 नारायण पंडित की रचना है?
उत्तर– हितोपदेश।
प्रश्न. 12 मनुष्य का सर्वाधिक विश्वास किस पर होता है?
उत्तर– मित्र।
प्रश्न. 13 'हितोपदेश' शब्द में कौन सा समास है?
उत्तर– तत्पुरुष।

प्रश्न. 14 हितोपदेश की हस्तलिखित लिपि कब प्राप्त हुई थी?
उत्तर– सन 1373 ई.।
प्रश्न. 15 मित्रलाभ परिच्छेद किस ग्रंथ से सम्बन्ध रखता है।
उत्तर– हितोपदेश।
प्रश्न. 16 विद्वानों द्वारा हितोपदेश को किस ग्रंथ का लघु संस्करण माना गया है?
उत्तर– पंचतंत्र।
प्रश्न. 17 राजा सुदर्शन के मूर्ख पुत्रों को किसने शिक्षाप्रद कहानियां प्रस्तुत की थी?
उत्तर– विष्णु शर्मा।
प्रश्न. 18 गोदावरी नदी के किनारे किसका वृक्ष था?
उत्तर– सैमल।
प्रश्न. 19 जरदगव कौन था
उत्तर– वृद्ध गिद्ध।
प्रश्न. 20 मृग और काग कहां रहते थे?
उत्तर– मगध प्रांत के चंपक वन।
प्रश्न. 21 भैरव व्याध का निवास कहा था?
उत्तर– कल्याण कटक प्रदेश।
प्रश्न. 22 हितोपदेश में किस देव की स्तुति मिलती है?
उत्तर– शिव।
प्रश्न. 23 स्वाभाविक हित करने वाले कौन है?
उत्तर– माता-पिता-मित्र।
प्रश्न. 24 चित्रग्रीव किस स्वभाव का है?
उत्तर– परोपकारी।
प्रश्न. 25 धन के नष्ट होने पर किसकी परीक्षा करना चाहिए?
उत्तर– पत्नी की।
प्रश्न. 26 दुखों के समय किसकी परीक्षा की जाती है?
उत्तर– बंधु बांधवों की।
प्रश्न. 27 दीर्घराव कौन था?
उत्तर– गीदड़।
प्रश्न. 28 स्त्री से संपूर्ण देवता प्रसन्न हो जाते है?
उत्तर– पति के संतुष्ट होने पर।
प्रश्न. 29 दरिद्रता का मुख्य कारण है?
उत्तर– तृष्णा।
प्रश्न. 30 परदारा किसके समान होती है?
उत्तर– मां व बहिन के समान।
प्रश्न. 31 लक्ष्मी किसके यहां निवास करती है
उत्तर– वीर एवं कृतज्ञ के यहां।

प्रश्न. 32 धन की कितनी गतियां होती है?
उत्तर– तीन।
प्रश्न. 33 हितोपदेश का उद्देश्य क्या है?
उत्तर– नीतिविद्या।
प्रश्न. 34 हितोपदेश की कितनी कथाएं पंचतंत्र से उदधृत है?
उत्तर– 25।
प्रश्न. 35 विद्या विष सदृश कब होती है?
उत्तर– अनभ्यास की स्थिति में।
प्रश्न. 36 हितोपदेश में सांसारिक छः सुख कौन-कौन से बताए है?
उत्तर– अर्थागम, निरोगता, पत्नी, मधुरभाषिणी, आज्ञाकारी पुत्र तथा धन देने वाली विद्या।
प्रश्न. 37 काव्य शास्त्र विनोदेन कालो गच्छति? रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए?
उत्तर– धीमताम्
प्रश्न. 38 निन्द्रा व कलह से किसका समय व्यतीत होता है?
उत्तर– मूर्खों।
प्रश्न. 39 पाप का कारण है?
उत्तर– लोभ।
प्रश्न. 40 दीर्घकर्ण कौन था?
उत्तर– मार्जार।
प्रश्न. 41 धर्म के कितने मार्ग बताए गए हैं?
उत्तर– 8।
प्रश्न. 42 गज-शृंगाल कथा में हाथी का क्या नाम था?
उत्तर– कर्पूरतिलक।
प्रश्न. 43 लोभी जंबुक कथा में शिकारी का क्या नाम था?
उत्तर– भैरव।
प्रश्न. 44 लोभी-जंबुक कथा का वक्ता पात्र कौन है?
उत्तर– मन्थर।
प्रश्न. 45 स्वाभिमानी पुरूष की कितनी वृतियां होती है?
उत्तर– 2।
प्रश्न. 46 सन्यासी मूषक कथा में आए नागदंतक शब्द का क्या अर्थ है?
उत्तर– खूंटी।
प्रश्न. 47 चूड़ाकर्ण-वीणाकर्ण कौन थे?
उत्तर– सन्यासी।
प्रश्न. 48 वह कौन मित्र है जो प्राणी के मरने पर भी साथ जाता है?
उत्तर– धर्म।
प्रश्न. 49 सर्वशून्या कौन है?
उत्तर– दरिद्रता।

प्रश्न. 50 सन्यासी-मूषक कथा में अतिथि सन्यासी कौन था?
उत्तर– वीणाकर्ण।
प्रश्न. 51 हितोपदेश का मंगलाचरण है?
उत्तर– सिद्धिः साध्ये सतामस्तु प्रसादात्तस्य धूर्जटेः।
जाह्नवी फेन-लेखेव यन्मूर्ध्नि शशिनः कला॥

(च) अर्वाचीन संस्कृत साहित्य का इतिहास

राजस्थान के प्रमुख संस्कृत मनीषी

सत्रहवीं शती से बीसवीं शती तक का कालखण्ड संस्कृत वाङ्मय के इतिहास में आधुनिक कालखण्ड के नाम से जाना जाता है। यह कालखण्ड अनेक कारणों से महत्वपूर्ण है। इस समयावधि में संस्कृत काव्य साहित्य के विविध रूपों से सम्बन्धित अनेक काव्यग्रन्थों का निर्माण हुआ है। आधुनिक संस्कृत रचनाकारों ने अपनी पूर्ववर्ती परम्परा एवं प्राचीन उपजीव्य काव्यों के आदर्शो का संरक्षण अपने काव्यों में पूर्णरूप से किया है। आधुनिक संस्कृत साहित्यकार जीवन के बदलते सन्दर्भो और आवश्यकताओं के अनुरूप स्वयं को परिवर्तित कर नवसाहित्य का सर्जन कर रहे है। इन साहित्यकारों ने समाज में प्रतिदिन उत्पन्न होने वाली सामाजिक कुरुतियों को हास्य व्यंग्यात्मक रीति से स्पष्ट कर उन्हें दूर करने का प्रयास किया है। भट्ट मथुरानाथ शास्त्री का मंजु कविता निकुंज काव्यसंग्रह है, जिसमें उन्होंने पाश्चात्य रंग में रंगे हमारे वर्तमान सामाजिक जीवन पर व्यंग्य किया है।

इस अर्वाचीनकाल में जहाँ एक ओर परम्परा से हटकर कुछ आगे बढने की प्रवृत्ति कवियों में परिलक्षित होती है, वहीं दुसरी ओर पुरातन के प्राते मोह भी। अब काव्यसर्जन के पम्परागत उद्देश्यों में भिन्नता के साथ-साथ उनमें कुछ व्यापकता भी लक्षित होने लगी। आधुनिक कवियों ने लक्षणग्रन्थकारोक्त काव्यसर्जन के उद्देश्यों, यशोलाभ, अर्थलाभ इत्यादि के अतिरिक्त अन्य नवीन उद्देश्यों- संस्कृत भाषा की सेवा, अन्य भाषा साहित्य का संस्कृतज्ञों को परिचय कराना, छात्रों का हित आदि को अपने सम्मुख रखकर साहित्य निर्मित किया है। प्रस्तुत अध्याय में RPSC निम्न विद्वानों के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला है।

1. पं. अम्बिकादत्त व्यास 2. पं. पद्म शास्त्री 3. भट्ट मथुरानाथ शास्त्री 4. देवर्षि कलानाथ शास्त्री 5. डॉ. प्रभाकर शास्त्री 6. प्रो. हरिराम आचार्य 7. डॉ. शिवसागर त्रिपाठी 8. पं. मोहनलाल पाण्डेय।

1. पं. अम्बिकादत्त व्यास

संक्षिप्त परिचय

जन्मस्थान	-	जयपुर, राजस्थान सिलावटी मुहल्ला, ग्राम–रावत जी का धूला।
गोत्र	-	पराशरगोत्रीय यजुर्वेदी / त्रिपवर / भीडावंश।
जन्मसमय	-	चैत्र शुक्लपक्ष अष्टमी सं. 1915 (1858 ई.)
पिता का नाम	-	पं. दुर्गादत्त व्यास
कर्मस्थली	-	काशी में अध्ययन-अध्यापन
कुल रचनाएं	-	78
संस्कृत रचनाएं	-	शिवराजविजयम् (उपन्यास) सामवतम् (नाटक) 22 वर्ष की अवस्था में।
खण्डकाय	-	सहस्त्रनाम रामायणमु, गणेशशतकमु, अवतारमीमांसाकारिका।

गद्यकाव्य - शिवराजविजयम्, सांख्यसागरसुधा, पातञ्जलप्रतिबिम्बम् दुःखद्रुमकुठार, गुप्ताशुद्धिप्रदर्शनम्, संस्कृतसंजीवन, संस्कृत अभ्यास पुस्तक आदि।

रूपक - सामवतम्, मित्रालापः, धर्माधर्मकलकम्।

हिन्दीरचनाएं - बिहारीविहार (कुण्डलिनी छन्द में)

पत्रिका - 'पीयूषप्रवाह' का सम्पादन।

उपाधियाँ

1. **सुकवि**, भारतेन्दु हरिशचन्द्र, काशी कवितावर्धिनी सभा।
2. **घटिकाशतक**- ब्रह्मामृतवर्षिणी सभा।
3. **शतावधान**
4. **भारतरत्न** (काशी महासभा)
5. **अभिनवबाण, आधुनिकबाण**
6. **भारतभूषण**
7. **महाकवि**

- बिहार में संस्कृत सञ्जिवनी समाज की स्थापना।
- व्यास जी ने शिवराजविजयम् 1870 ई. में लिखा जो काशी से 1901 ई. मे इनकी मृत्यु के बाद प्रकाशित हुआ था।
- राजकीय संस्कृत कॉलेज पटना में प्राध्यापक।
- हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, बंगला भाषा के ज्ञाता।
- न्याय, व्याकरण, वेदान्त और दर्शन में विशेष रूचि।
- एक घड़ी (24 मिनट) में 100 श्लोकों की रचना करने से इनको घटिकाशतक की उपाधि प्रदान।
- सौ प्रश्नों को एक साथ सुनकर उन सभी प्रश्नों का उत्तर उसी क्रम में देने की अद्भुत क्षमता होने से उन्हें 'शतावधान' की उपाधि दी गई थी।
- इनका देहान्त 15 नवम्बर 1900 ई. को अल्पायु में ही हो चुका था मृत्यु के समय यह राजकीय संस्कृत कॉलेज पटना में प्रोफेसर थे।

नोट- राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर द्वारा राज्यस्तरीय पं. अम्बिकादत्त व्यास गद्य पुरस्कार दिया जाता है।

पं. अम्विकादत्त व्यास जीवन परिचय

गद्य सम्राट पं. अम्बिकादत्त व्यास का जन्म चैत्र शुक्ला अष्टमी संवत् 1915 के दिन सन् 1858 में जयपुर के सिलावटों के मोहल्ले में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री दुर्गादत्त व्यास था। पिताश्री ने इनका नामकरण अम्बिकादत्त किया था क्योंकि उस समय नवरात्र थे। इनका परिवार पाराशर गोत्रीय था। इनका ननिहाल जयपुर स्थित सिलावटों का मौहल्ला था जिसे वर्तमान में 'खजाने वालों का रास्ता' इस नाम से जाना जाता है। व्यास जी के पूर्वज जयपुर के धूला नामक गाँव को छोड़कर काशी चले गये। राजाराम के दुर्गादत्त व देवीदत्त दो पुत्र हुए। अम्बिकादत्त व्यास दुर्गादत्त के पुत्र थे।

शिक्षा-दीक्षा

अम्बिकादत्त व्यास की प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही सम्पन्न हुई। सन् 1880 में आपने काशी के राजकीय संस्कृत कॉलेज से साहित्याचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् बिहार की मधुवनी भागलपुर छपरा के स्कूलों

में अध्यापन कार्य किया। सन् 1899 में श्री व्यास ने पटना कॉलेज में प्रोफेसर के पद को अंलकृत किया। अम्बिकादत्त जी 'कुशलकथावक्ता' होने से व्यास कहलाये। भारतेन्दु मण्डली ने आपको 'सुकवि' की उपाधि से अंलकृत किया। आप एक घटिका अर्थात् 24 मिनट में सौ श्लोकों की रचना कर लेते थे। अतः आप को 'घटिकाशतक' या 'शतावधानी' की पदवी प्रदान की गई। 19 नवम्बर 1900 ई. तक अर्थात् 41 वर्ष की आयु तक इस आदर्श मनीषी ने अपनी सशक्त लेखनी के प्रभाव से इस भारत भू-भाग को आलोकित करते हुए अपने प्रखर वैदुष्य का परिचय दिया। इन्होंने शिव के समान सम्पूर्ण अशिव आसव का पान करके भी समाज को 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' का मिश्रित अमृत पिलाया।

रचना परिचय

अभिनव- बाण के रूप ख्यातनाम पं. अम्बिकादत्त व्यास अपने मौलिक सृजन नैपुण्य के कारण संस्कृत एवं हिन्दी जगत् के सशक्त हस्ताक्षर है- श्री व्यास की रचनाओं में संस्कृत की 27, हिन्दी और ब्रजभाषा की 64 विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उनकी रचनाओं का वर्णन अधोलिखित है -

1. **गणेश शतकम्**	2. **कथाकुसुमम्**	3. **सांख्य सागर सुधा**
4. **संस्कृताभ्यास पुस्तकम्**	5. **पातञ्जल प्रतिबिम्बम्**	6. **प्राकृत प्रवेशिका**
7. **सामवतनाटकम्**	8. **प्राकृतगूढशब्दकोश**	9. **रेखागणित**
10. **अनुष्टुप् लक्षणोद्धार**	11. **रत्नपुराणम्**	12. **शिवराजविजय**
13. **गुप्ताशुद्धि प्रदर्शनम्**	14. **बालव्याकरणम्**	15. **समस्यापूर्तिसर्वस्वम्**
16. **सहस्त्रनाम रामायणम्**	17. **द्रव्यस्त्रोतम्**	18. **गद्यकाव्य मीमांसा**
19. **दुःखद्रुम कुठारः**	20. **कुण्डली दर्पणम्**	21. **आर्यभाषासूत्रकार**
22. **इतिहासङ्क्षेपः**	23. **रत्नाष्टकम्**	24. **पुष्पोपहार**
25. **अवतार मीमांसाकारिका**	26. **धर्माधर्म कलकम्**	27. **मित्रालाप।**

कुछ प्रसिद्ध रचनाओं का वर्णन निम्न है-

1. **शिवराजविजय :** आधुनिक शैली में प्रणीत ऐतिहासिक उपन्यास शिवराजविजय प्रशंसनीय कृति है मौलिक सर्जनात्मक इसकी कथावस्तु वीर रस से युक्त तथा नायक धीरोदत्त श्रेणी के छत्रपति शिवाजी है। उनकी विजय गाथा का सुन्दर चित्रण है। उपन्यास की कथावस्तु तीन विरामों में विभक्त है। प्रत्येक विराम में चार निःश्वास है।

2. **सामवतम् नाटक :** स्कन्द पुराण के पौराणिक आख्यान पर आधारित इस नाटक में छः अंक है। नायक सुमेधा धीरप्रशान्त श्रेणी का है। शृंगार रस प्रधान इस नाटक में ऋषि पुत्र सामवान् का दुर्वासामुनि के शाप से स्त्रीरूप में पविर्तित हो जाने पर अपने मित्र सुमेधा से विवाह होने का वर्णन है। कवि ने स्कन्दपुराण के ब्रह्मोत्तर खण्ड की एक कथा को अपने कथानक का लक्ष्य बनाकर सामवतम् नाटक की सर्जना की। इसका मुख्य उद्देश्य है- सोमवार व्रतवर्ण ने सीमन्तिनी कथावर्णनम् कथा के अनुसार सीमन्तिनी के पति के नदी में डूब जाना तथा सोमवार व्रत के प्रभाव से पुनः प्राप्त हो जाना। यह नाटक सुखान्त है।

3. **सहस्त्रनाम रामायणम् :** यह स्त्रोत काव्य है, इसमें कुल 195 पद्य है। इसका वैशिष्ट्य यह है कि भगवान् श्री राम के विशेषण रूप 1000 नामों द्वारा 7 खण्डों में रामकथा को प्रस्तुत किया गया है। इसकी कथावस्तु तुलसीकृत विनयपत्रिका पर आधारित है।

4. **अवतारमीमांसाकारिका :** इस ग्रन्थ में 261 अनुष्टुप छन्दों में 8 प्रश्न प्रस्तुत किये गये है, जिनका समाधान करते हुए अवतारवाद को प्रतिपादित किया गया है।

5. **सांख्यसागरसुधा** : इस ग्रन्थ में सांख्यदर्शन के प्रारम्भिक ज्ञान का वर्णन है जैसे– जड़ व चेतन की कल्पना, 25 तत्वों का विवेचन कैवल्य आदि।

6. **पातञ्जलप्रतिबिम्बम्** : इस ग्रन्थ में योग दर्शन के सूत्रों की परिभाषा और सिद्धान्तों को कारिका रूप में निरूपित किया गया है। यहाँ समाधि, साधन, विभूति तथा कैवल्य नामक चार पाद है।

7. **दुःख द्रुम कुठार** : विचारात्मक निबन्धरूप में प्रस्तुत यह ग्रन्थ दो भागों में विभक्त है। प्रथम भाग में जीव की लौकिक दुःखानुभूतियों का वर्णन और द्वितीय भाग में इनको दूर करने के उपाय वर्णित है।

8. **कथाकुसुमम्** : यह 25 शिक्षाप्रदलघुकथाओं का संकलन है। कथा सार शिक्षा रूप में श्लोकबद्ध किया गया है।

10. **मित्रालाप नाटक** : इसका प्रयोजन श्री व्यास ने धर्मरक्षार्थ सनातन धर्म सभाओं का आयोजन बताया है।

11. **धर्माधर्मकलकलम्** : भगवान् के नाम का संकीर्तन करने से अधर्म का विनाश होता है।

12. **संस्कृतसंजीवन** : इस ग्रन्थ में संस्कृत भाषा की आवश्यकता और उपयोगिता के लिए दिये गये व्याख्यान संकलित है।

13. **संस्कृताभ्यास पुस्तक** : यह पुस्तक दो भागों में विभक्त है- प्राकृतप्रवेशिका तथा बालव्याकरण। यहाँ संस्कृत का प्रारम्भिक ज्ञान करवाया गया है।

14. **गुप्ताशुद्धि दर्शनम्** : इस ग्रन्थ में संस्कृत व्याकरण के ज्ञान की प्रौढता का निदर्शन है। यह दो भागों में विभक्त है- प्रथम भाग में 10 श्लोक और 111 साधारण वाक्य है। जिनमें विविध प्रकार की अशुद्धियाँ है, द्वितीय भाग में व्युत्पत्तिप्रदर्शन नामक कुछ कूट श्लोकों को उद्धृत कर संस्कृत भाषा की उत्पत्ति प्रदर्शित की गयी है।

अतः संक्षेप में वर्णित है कि पं. अम्बिकादत्त व्यास की कुल 91 रचनाओं का उल्लेख मिलता है जिनमें 27 कृतियां संस्कृत में लिखी गई परन्तु 14 रचनाएँ ही समुपलब्ध है। हिन्दी भाषा की 64 रचनाओं में 38 उपलब्ध है। हिन्दी भाषा में रचित शिवविवाह, घनश्याम विनोद, कंसवध, सुकवि सतसई आदि उल्लेखनीय है। सुकवि सतसई में 7 विभाग है प्रत्येक विभाग में 100-100 पद्य है। इस प्रकार 700 पद्यों में श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं का वर्णन है। श्री व्यास ने सरस कविताओं की रचना भी की जिनमें हिन्दी भाषा में आनन्दमञ्जरी, रसीलीकजरी, धर्म की धूम तथा पावस पचासा प्रसिद्ध है। 'धर्म की धूम' धर्म प्रचार हेतु लिखा गया कविता संग्रह है। इसमें 25 गीत होली पर्व के है। 'पावस पचासा' वर्षा ऋतु विषयक कविता संग्रह है। इनके द्वारा एक बार रेल यात्रा के दौरान 50 कवित्त ब्रज भाषा में लिखे थे।

महत्वपूर्ण प्रश्न

प्र. 1 'शिवराजविजयम्' उपन्यास के प्रणेता है ?
उत्तर अम्बिकादत्तव्यास।
प्र. 2 उपन्यास परम्परा को संस्कृत गद्य के क्षेत्र में प्रणयन करने वाले सफल कवि है ?
उत्तर अम्बिकादत्तव्यास।
प्र. 3 'शिवराजविजयम्' में मुख्य रस है ?
उत्तर वीर रस।
प्र. 4 'शिवराज विजयम्' किसमें विभक्त है ?
उत्तर विरामों में।
प्र. 5 ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक विशेषताओं से पूर्ण उपन्यास है ?
उत्तर शिवराजविजयम्।

प्र. 6 मुगलकालीन समाज का किस रचना में सर्वाधिक चित्रण मिलता है ?
उत्तर शिवराजविजयम् में।
प्र. 7 रघुवीर का विवाह किसके साथ हुआ ?
उत्तर सौवर्णी से।
प्र. 8 हनुमान मंदिर का विशेष वर्णन जिस रचना में मिलता है, वह है ?
उत्तर शिवराजविजयम्।
प्र. 9 उपन्यास के छः तत्व कौन-2 से है ?
उत्तर कथानक, संवाद, रचनाशैली, चरित्र-चित्रण, देशकाल, उद्देश्य।
प्र. 10 ऐतिहासिक व काल्पनिक पात्रों से युक्त रचना है ?
उत्तर शिवराजविजयम्।
प्र. 11 अम्बिकादत्त व्यास ने कितने ग्रंथों का प्रणयन किया है ?
उत्तर 78 ग्रंथों का प्रणयन।
प्र. 12 अलंकृत शैली के गद्य लेखकों में सर्वप्रथम लेखक है ?
उत्तर सुबन्धु।
प्र. 13 'कार्यं वा साधयेयम् देहं वा पातयेयम्' यह कथन किसका है ?
उत्तर शिवाजी।
प्र. 14 योगीराज से सम्बन्धित रचना है ?
उत्तर शिवराजविजयम्।
प्र. 15 भीमा नदी के किनारे शिवाजी की किससे भेंट हुई ?
उत्तर गौरसिंह से।
प्र. 16 'शिवराजविजयम्' में किस देव की स्तुति प्राप्त होती है ?
उत्तर विष्णु की।
प्र. 17 'शिवराजविजयम्' उपन्यास का आरम्भ किस मंगल शब्द से होता है ?
उत्तर अरुण शब्द से।
प्र. 18 समय का विभाजन करने वाला सर्वप्रमुख देव है ?
उत्तर सूर्य देव।
प्र. 19 'अकारो वासुदेवः' यह शब्द किस रचना में मंगलाचरण के रूप में प्राप्त होता है ?
उत्तर शिवराजविजयम्।
प्र. 20 'शिवराजविजयम्' में मंगलाचरण है ?
उत्तर वस्तुनिर्देशात्मक।
प्र. 21 महमूद गजनवी ने भारत को कितनी बार लुटा ?
उत्तर 17 बार।
प्र. 22 'सकल कलापः कलनः सकल कालनः कलापः' इसमें अलंकार है ?
उत्तर यमक।
प्र. 23 शिवाजी के गुप्तचर का क्या नाम है ?
उत्तर रघुवीर।
प्र. 24 आलमगिर की उपाधि से युक्त मुगल शासक है ?
उत्तर औरंगजेब।

प्र. 25 कलिंग का वर्तमान में क्या नाम है ?
उत्तर उड़ीसा।
प्र. 26 गौरसिंह की उपमा किससे दी गई है ?
उत्तर अर्जुन से।
प्र. 27 'रात्रिः गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातं.....।' पंक्ति है ?
उत्तर शिवराजविजयम्।
प्र. 28 संस्कृत में वह कौनसी रचना है, जिसमें प्रथम, मध्य और अन्त में मंगलाचरण किया गया है ?
उत्तर शिवराजविजयम्।
प्र. 29 गण्डक नदी का वर्णन मिलता है ?
उत्तर शिवराजविजयम्।
प्र. 30 'तानरंग पात्र' से युक्त रचना है ?
उत्तर शिवराजविजयम्।
प्र. 31 तात्कालीन समाज पर होने वाले अत्याचारों का वर्णन किस कृति में है ?
उत्तर शिवराजविजयम् में।
प्र. 32 गोरसिंह की बहिन का क्या नाम था ?
उत्तर सौवर्णी।
प्र. 33 गौरसिंह के पिता का क्या नाम था ?
उत्तर खड्गसिंह।
प्र. 34 खड्गसिंह किस प्रदेश के राजा था ?
उत्तर उदयपुर का।
प्र. 35 गौरसिंह के भाई का क्या नाम था ?
उत्तर श्यामसिंह।
प्र. 36 'अमृतोद सरोवर' से सम्बन्धित रचना है ?
उत्तर शिवराजविजयम्।
प्र. 37 'शिवराजविजयम्' में किस जप का वृतान्त है ?
उत्तर गायत्री जप का।
प्र. 38 'कार्यं वा साधयेयम् देहं वा पातयेयम्' सूक्ति है ?
उत्तर शिवराजविजयम्।

2. डा. पद्मशास्त्री

व्यक्तित्व

जन्म	-	17 दिसम्बर 1935
जन्म स्थान	-	उत्तरप्रदेश में स्थित पिथौरागढ़ जिले का सिंगाली ग्राम।(उत्तराखण्ड)
पिता का नाम	-	श्री हरिदत्त ओझा
माता का नाम	-	श्रीमती इन्द्रा देवी
विवाह	-	4 जून 1959 ई.
पत्नी का नाम	-	गोविन्दी देवी
शिक्षा	-	साहित्याचार्य, आयुर्वेदाचार्य, रूसी भाषा में डिप्लोमा।
मृत्यु	-	2 मार्च 2015।

सम्मान

(1) राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयुपर द्वारा 2000-01 में शास्त्री जी को 'वेदविज्ञानामृतम्' की रचना पर **नवल किशोर कांकर वेद वेदांग** पुरस्कार प्रदान किया।
(2) राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर द्वारा 2004 में राजस्थान विशिष्ट विद्वत् सम्मान प्रदान किया है।
(3) 1975 ई. में शास्त्री जी को लेनिनामृतम् महाकाव्य के लिए उत्तर प्रदेश शासन द्वारा साहित्य का विशिष्ट पुरस्कार प्रदान किया।
(4) 1976 ई. में शास्त्री जी को लेनिनामृतम् के लिये भारत के महामहिम राष्ट्रपति महोदय द्वारा सोवियत भूमि नेहरू पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

उपाधि–विद्याभूषण

कृतित्व

(1) लेनिनामृतम् महाकाव्य
(2) महावीरचरितामृतम् महाकाव्य
(3) स्वराज्यम् (खण्डकाव्य)
(4) सिनेमाशतकम् (शतककाव्य)
(5) चायशतकम् (शतककाव्य)
(6) बाग्लादेशविजय (रूपक) व्यायोग
(7) लोकतन्त्रविजय (व्यायोग)
(8) मदिया सोवियत यात्रा (गद्य काव्य)
(9) विश्वकथाशतकम् (कथा संग्रह)
(10) वेदविज्ञानामृतम् (शास्त्रीय ग्रन्थ)
(11) राष्ट्रालोक (भाष्यानुवादटीका)

दर्शन (12) न्यायसिद्धान्तता (दर्शनग्रन्थ)

अनूदित ग्रन्थ (13) अनुदितग्रन्थ- पद्यपञ्चतन्त्रम्, मनाचेश्लोका, मनोबोधः।

पद्म शास्त्री जीवन परिचय

श्री पद्मशास्त्री का जन्म 17 दिसम्बर 1935 ई. को उत्तराखण्ड के पिथौरागढ़ जिले में स्थित सिंगाली नामक ग्राम में हुआ था। इनके पूर्वज पिथौरागढ़ के ही कव्तुर नामक ग्राम से 16 वीं शताब्दी में यहाँ आकर निवास करने लगे थे। श्री पद्म शास्त्री के पिता का नाम बदरीदत्त ओझा तथा माता का नाम इन्द्रा देवी था। इनके पिता पौरोहित्य एवं कर्मकाण्ड के लब्धप्रतिष्ठित विद्वान् थे। श्री पद्म शास्त्री के 3 बहिने एवं चार भाई थे। शास्त्री जी की बहिनों में श्रीमती रेवती देवी, श्रीमती गंगादेवी तथा तुलसी देवी है। शास्त्री जी के कनिष्ठ भाई श्री गिरीश ओझा, वैदिक शोध संस्थान होशियारपुर में संस्कृत के प्राध्यापक थे। यह लब्धप्रतिष्ठित विद्वान् रहे है। इनके द्वारा रचित नानकसन्देश महाकाव्य भी प्राप्त होता है। दूसरे भाई रमेशदत्त ओझा भारतीय सेना में उच्च पद पर अपनी सेवाएं दे चुके है। बसन्त भाई ओझा भिवानी डिग्री कॉलेज में संस्कृत के प्राध्यापक है तथा सबसे छोटे भाई नन्दकिशोर लुधियाना में रहते है। श्री पद्म शास्त्री का विवाह 4 जून 1959 को 24 वर्ष की अवस्था में गोविन्दी देवी के साथ हुआ था। इनके तीन पुत्र है- त्रिलोचन, नरेन्द्रदत्त तथा गणेशदत्त ओझा एक पुत्री निर्मला ओझा है। श्री पद्म शास्त्री का निधन 2 मार्च 2015 को जयपुर में हुआ। इनका आवास जयपुर स्थित मुक्तानन्द नगर है।

शिक्षा-दीक्षा

श्री पद्मशास्त्री ने जगाधरी स्थित सनातन धर्म संस्कृत महाविद्यालय से 1949 ई. में प्रथमा परीक्षा उत्तीर्ण की तत्पश्चात् शास्त्री जी किसी अपरिहार्य कारणवंश जगाधरी से हरिद्वार, ऋषिकेश चले गये। श्री शास्त्री का 1950 ई. में राजस्थान के ब्यावर में आगमन हुआ। ब्यावर में ही रहकर श्री शास्त्री जी ने पूर्व मध्यमा, मध्यमा, शास्त्री तथा आचार्य की परीक्षाएं उत्तीर्ण की थी। उन्होंने साहित्यरत्न, आयुर्वेदाचार्य की उपाधि तथा रूसी भाषा में भी डिप्लोमा प्राप्त किया। ब्यावर में ही 1959 ई. में इनकी नियुक्ति राजकीय सेवा में हुई। 1961 में पुष्कर, 1970 में मांडलगढ (भीलवाड़ा) में व्याख्याता पद पर सेवा में दी। तत्पश्चात् 1987 से जयपुर में व्याख्याता, प्रधानाध्यापक, प्रधानाचार्य पद पर कार्य करते हुए 1993 ई. में सेवानिवृत्त हुए थे।

सम्मान एवं पुरस्कार

श्री पद्म शास्त्री की साहित्य साधना प्रारम्भ से ही अत्यन्त विकसित एवं समृद्ध रही है। साहित्य सृजन के परिणाम स्वरूप श्री शास्त्री जी ने अब तक राज्यस्तरीय, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किये है, जिनका विवरण अधोलिखित है-

1. 1960 ई. में अखिल भारतीय विद्वत् परिषद् ने शास्त्री जी को साहित्य सृजन के लिए पुरस्कृत कर विद्याभूषण की उपाधि प्रदान की थी।
2. 1966 ई. में राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर ने स्वराज्यम् खण्डकाव्य के लिए शास्त्री जी को स्वर्णपदक एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया।
3. 1975 ई. में लेलिनामृतम् महाकाव्य के लिए उत्तर प्रदेश शासन द्वारा साहित्य के विशिष्ट पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
4. 1976 ई. में श्री शास्त्री जी को भारत के महामहिम राष्ट्रपति द्वारा लेनिनामृतम् महाकाव्य पर **सोवियत भूमि नेहरू पुरस्कार** से सम्मानित किया गया।
5. 1985 से 95 के बीच संस्कृत अकादमी दिल्ली द्वारा आयेजित अनेक अखिल भारतीय सम्मेलनों में शास्त्री जी को पुरस्कृत किया गया।
6. सन् 2000-2001 ई. में राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर द्वारा शास्त्री जी को वेदविज्ञानमृतम् की रचना पर नवलकिशोर काङ्कर वेद वेदाङ्ग पुरस्कार प्रदान किया गया।
7. 5 जनवरी 2004 को राजस्थान संस्कृत आकदमी द्वारा शास्त्री जी को विशिष्ट विद्वत् सम्मान से सम्मानित किया गया।
8. सन् 2013 में श्री पद्मशास्त्री को राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

कृतित्व

श्री पद्म शास्त्री द्वारा संस्कृत की विविध विधाओं पर लेखन कार्य किया गया। इनके द्वारा रचित रचनाओं में लनिनामृतम् तथा महावीरचरितामृतम् महाकाव्य, खण्डकाव्य-स्वराज्यम्, शतककाव्यों में सिनेमाशतक, चायशतकम्, दृश्यकाव्यों में बाँगलादेशविजय, लोकतन्त्रविजय, गद्यकाव्यों में मदीयासोवियत यात्रा, विश्वकथाशतकम्, शास्त्रीयग्रन्थों में वेदविज्ञानामृतम्, राष्ट्रलोक (भाष्यानुवादटीका) न्यायसिद्धान्तता (दर्शनग्रन्थ) तथा अनुदित ग्रन्थों में पद्यपञ्चतन्त्रम्, मनाचेश्लोका (मनोबोध) आदि महत्वपूर्ण है।

1. **लेनिनामृतम् महाकाव्य :** श्री पदम् शास्त्री द्वारा विरचित संस्कृत भाषा में यह प्रथम साम्यवाद विचार वाहिक रचना है। पञ्चदश सर्गात्मक इस महाकाव्य में रुस की बोल्शेविक क्रान्ति के जनक लेनिन का जीवन चरित वर्णित है। इस महाकाव्य में लेलिन का जन्म, छात्र जीवन साइबेरिया-कारावास, रूस का प्राकृतिक वर्णन, रूस भारत मैत्री इत्यादि 15 विषयों को 15 सर्गों में दर्शाया गया है। वीर रस प्रधान इस महाकाव्य में प्रसाद गुण और वैदर्भी रीति है। 1975 में पद्म शास्त्री को इस महाकाव्य के लिए **'सोवियत भूमि नेहरू'** पुरस्कार और उत्तर प्रदेश के **विशिष्ट पुरस्कार** से सम्मानित किया गया।

2. **महावीरचरितामृतम् (हिन्दी महाकाव्य) :** जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर भगवान् महावीर के जीवन दर्शन पर आधारित यह 15 सर्गों का प्राञ्जल हिन्दी महाकाव्य है। इसमें शान्त रस है।

3. **चायशतकम् :** शतककाव्यम् हास्य व्यङ्ग्य युक्त इस शतककाव्य में वर्तमान में प्रचलित चाय की महिमा का मण्डन किया गया है। यह रचना हास्य व्यंग्य प्रधान नवीन शैली में रचित है।

4. **सिनेमाशतकम् :** शतककाव्यम् इस शतककाव्य में चलचित्र में होने वाली दुर्दशा को हास्य और व्यंग्य द्वारा प्रदर्शित किया गया है। कवि ने इसकी रचना 1960 ई. में की थी।

5. **स्वराज्यम् खण्डकाव्य :** पञ्चसर्गात्मक इस खण्डकाव्य में भारत से अंग्रेजों का निर्गमन, चीन का भारत पर आक्रमण इत्यादि विषयों का वर्णन है। आशु कवि पद्मशास्त्री को इस रचना के लिए 1966 में राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा सर्वोच्च पुरस्कार व स्वर्णपदक से सम्मानित किया गया तथा इसका प्रकाशन भी किया गया।

6. **बांग्लादेशविजय व्यायोग :** इस व्यायोग में बाग्लादेश में पाक के द्वारा किये गये विनाश का, बंगबन्धु मुजीब की भूमिका का, भारत में आये हुए शरणार्थियों की इन्दिरागांधी ने क्या सहायता की ? इत्यादि विषयों का सुललित 43 श्लोकों एवं गद्यखण्डों में निरूपण किया है।

7. **लोकतन्त्रविजयः व्यायोग :** लोकतन्त्र के गौरव को प्रदर्शित करने वाला यह भी बांग्लादेशविजय की तरह संस्कृत का व्यायोग है। इसमें भी 45 श्लोक एवं गद्यखण्ड है।

9. **विश्वकथाशतकम् :** यह दो भागों में प्रकाशित विश्व के विभिन्न देशों की कथाओं का संकलन है। शास्त्री जी ने 380 कथाएं लिखी है। इनमें से अधिकांश कथाएं भारती संस्कृत पत्रिका में प्रकाशित हो चुकी है।

10. **मदीया सोवियत यात्रा :** पद्मशास्त्री ने इस ग्रन्थ में अपनी सोवियत संघ की यात्रा को संस्मरण रूप में प्रस्तुत किया है, इसमें सोवियत संघ के नगरों, दर्शनीय स्थलों और वहाँ के लोक जीवन का चित्रण है। विद्वान् महामहिम राष्ट्रपति सम्मानित श्री कलानाथ शास्त्री ने इलाहाबाद से प्रकाशित होने वाली नूतन संस्कृत समीक्षा पत्रिका दृक् में इस यात्रा संस्मरण को **'संस्कृत के अभिनव देवलोग'** के रूप में मान्यता दी है। **'मास्कोनगरवर्णनम्'** राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड में संकलित है।

11. **पद्यपंचतन्त्रम् :** इस काव्य में पञ्चतन्त्र की 108 कथाओं को पद्यरूप में प्रस्तुत किया गया है।

12. **मनाचेश्लोका–(मनोबोधः)** पद्मशास्त्री ने समर्थगुरुरामदास के भक्तिकाव्य का 306 पद्यों में समच्छन्दोनुवाद किया है।

13. **न्यायसिद्धान्तता :** इस कृति में शास्त्री जी ने यत्र तत्र प्रकीर्ण न्यायों का चयन कर उनकी संस्कृत व्याख्या और हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया है।

14. **राष्ट्रालोक :** सुप्रसिद्ध काश्मीरी तान्त्रिक सन्त श्रीमदमृतवाग्भवाचार्य की भारतीय राष्ट्र की संकल्पना पर विरचित मूल कारिकाओं पर संस्कृत में संजीव भाष्य जो ब्रह्मसूत्र के भाष्य की तरह भारतीय मनीषा का सारगर्भित दस्तावेज है।

15. **वेदविज्ञानामृतम् :** वेद के विज्ञानपक्ष पर 1050 श्लोकों में विरचित प्रकाशित वेदकाव्य हिन्दी अनुवाद सहित। इसमें यज्ञ, वाक्, सूर्य, सोम, प्राण, अन्न शब्दोत्पत्ति आदि 36 विषयों पर वेद विज्ञान के आधार पर प्रकाश डाला गया है। इस कृति पर रचनाकार को **श्री नवलकिशोरकांकर वेद विज्ञान पुरस्कार** भी प्राप्त हुआ है। इस कृति को संस्कृत शिक्षा, निदेशालय ने श्री पद्म शास्त्री से इसके संस्कृत श्लोकों की संस्कृत व्याख्या लिखवाकर 18-18 विषयों को प्रवेशिका तथा वरिष्ठ उपाध्याय के पाठ्यक्रम में रखा गया है।

कतिपय रचनाओं का अनुवाद

जैन आगम ज्ञात कथासूत्र, परिशिष्ट पर्व का हिन्दी अनुवाद। **वेदस्य सर्वविद्या निधानत्वम्** का हिन्दी अनुवाद (जो क्रमशः राजस्थान पत्रिका में श्री पद्‌म शास्त्री के नाम से प्रकाशित हुआ) वैदिकोपाख्यानम् वेदवाचस्पति मधुसूदन ओझा के इन वैदिक उपाख्यानों का हिन्दी में अनुवाद। ज्योतिर्मय महावीर, स्वामी विवेकानन्द आदि विशेषाङ्कों का कुशल सम्पादन।

3. भट्टमथुरानाथ शास्त्री-(मंजुनाथ)

व्यक्तित्व

जन्म	-	23 मार्च 1889ई. (आषाढ़ कृष्णा सप्तमी वि.सं. 1946)
जन्म स्थान	-	जयपुर (राजस्थान)
पिता का नाम	-	श्री द्वारका नाथ
माता का नाम	-	श्रीमती जानकी देवी
दत्तक पुत्र के रूप में आश्रय	-	श्री सुन्दर लाल भट्ट
राज्य सेवा	-	26 जनवरी 1924 ई. से
पत्नी	-	रमा देवी
पुत्र	-	देवर्षिकलानाथ शास्त्री (जेष्ठ), श्री कमलनाथ शर्मा (कनिष्ठ)
सम्मान	-	कविशिरोमणि, साहित्यवारिधि, सार्वभौम आदि

राजस्थान संस्कृत अकादमी द्वारा प्रकाशित स्वरमंगला पत्रिका में **'भट्ट मथुरानाथ स्मृत्यङ्ग'** में आपके जन्म का उल्लेख इस प्रकार है-

अङ्गाब्ध्यङ्क महेश्वरैः परिमिते सम्वत्सरे वैक्रमे।
ह्याषाढे गुरुवासरे रवितिथौ कृष्णे च पक्षे शुभे।।
तैलाङ्गाब्ज-दिवाकरो जयपुरे श्री जानकी गर्भतो।
ह्ययुत्पन्नः प्रतिभाजुषो गुणनिधिः श्रीमञ्जुनाथः कविः।।

देवर्षि शब्द के विषय में मान्यता है कि कृष्ण यजुर्वेदान्तर्गत तैत्तिरीय शाखाध्यायी, तैलङ्ग ब्राह्मण जिनका एक वंश मुगल शासन काल में आन्ध्र प्रदेश से उत्तर भारत आया। देवपल्ली देवकोड नामक प्रदेश विशेष से निर्गत होने के कारण 'देवर्षि' नाम से प्रसिद्ध हुए।

शिक्षा-दीक्षा

महाराजा संस्कृत कॉलेज से-
i.) 1899 ई. में प्रवेशिका
ii.) 1901 ई. में साहित्योपाध्याय
iii.) 1903 ई. में व्याकरणोपाध्याय
iv.) 1906 ई. में शास्त्री परीक्षा (पंजाब विश्वविद्यालय से)
v.) 1907 ई. में व्याकरण शास्त्री। तत्पश्चात् साहित्याचार्य परीक्षा मर्मज्ञ श्रीकृष्णशास्त्री के प्रशिक्षण में उत्तीर्ण की थी।

पारिवारिक परिवेश—जयपुर के समीप 'महापुरा' ग्राम में श्री गोपीकृष्ण की सुपुत्री रमादेवी से भट्टमथुरानाथ का 'पाणिग्रहण' 1922 ई. में हुआ था। आपकी सन्तति है

पुत्र-	i.) देवर्षि कलानाथ शास्त्री	ii.) श्रीकमलनाथ शर्मा
पुत्रियां	i.) जया	ii.) विजया

राज्य-सेवा

- प्रारम्भ 26 जनवरी 1924 ई. महाराजा संस्कृत कॉलेज में अध्यापक।
- 1926 ई. में महाराजा डिग्री कॉलेज में हिन्दी एवं संस्कृत अध्यापक संस्कृत सुबोधिनी पुस्तक का प्रणयन।
- 1931 ई. में संस्कृत पाठशालाओं के निरीक्षक।
- 15 फरवरी 1934 ई. से 1942 ई. पर्यन्त महाराजा संस्कृत कॉलेज जयपुर में साहित्य विभाग के अध्यक्ष सेवानिवृत्ति- 1942 ई.।

मानद उपाधियां एवं सम्मान

1. अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन के 25 वें अधिवेशन के अवसर पर सन् 1936 में जयपुर नगर में भी भट्ट द्वारा रचित शिखरिणीमाला पर साहित्य सम्मेलन की ओर से इन्हें 'कविशिरोमणि' की उपाधि से अलंकृत किया गया।
2. 1943 ई. में भारत धर्म मण्डल वाराणसी से इन्हें साहित्यवारिधि की उपाधि से अलंकृत किया गया।
3. वैल्लनाट्टीय तैलंग सभा बम्बई की ओर से सन् 1935 ई. में इन्हें कवि सार्वभौम की उपाधि दी गई।
4. संस्कृत शिक्षा निदेशालय के अनुरोध पर राजस्थान सरकार ने 31 मार्च 1961 को सर्वश्रेष्ठ साहित्यकार का सम्मान देकर अलंकृत किया गया।

कृतित्व

(1) पद्य साहित्य

(क) खण्ड काव्य

1.- मनोलहरी 2.- सुरभारती 3.- वियोगिनोविप्रलापाः।

(ख) मुक्तक काव्य

1.- जयपुरवैभवम् 2.- साहित्यवैभवम 3.- गोविन्दवैभवम्।

(2) गद्य साहित्य

(क) कथा साहित्य

आदर्शरमणी (उपन्यास) इसमें 10 परिच्छेद है। नायक–जगदिन्दु, नायिका–रमणी। इसका कथानक समस्या प्रधान है। कथानक प्रणरक्षा नामक गद्य रचना पर आधारित है।

(ख) निबन्ध

प्रबन्धपारिजात।

(ग) ऐतिहासिक ग्रन्थ

विल्हणचरितम्, भारतवैभवम्।

(घ) भाषा शास्त्रीय ग्रन्थ

गीर्वाणगिरागौरवम्।

(3) छन्दः शास्त्रम्

(क.) संस्कृत साहित्य के अन्तर्गत प्रचलित एवं अप्रचलित छन्दों का प्रयोग
(ख.) हिन्दी व ब्रजभाषा में व्यवहत छन्दों का संस्कृत में प्रयोग।

(ग.) उर्दूभाषा में प्रचलित छन्दों का संस्कृत में प्रयोग।

(घ.) समस्त छन्दों की सूची।

(4) व्याकरण

(क) धातुप्रयोगपारिजात (ख) संस्कृतसुबोधिनी(ग) द्रुतंसंस्कृतंशिक्ष्यताम् भारतीतः (घ) व्युत्पत्तिविलास

(ङ) सुलभसंस्कृतम् (च) संस्कृतसुधा।

(5) टीका ग्रन्थ

क. कादम्बरी–चषकटीका, ख. रसगंगाधर–सरला, ग. पद्यमुक्तावली घ. ईश्वरविलासमहाकाव्य

ङ. गाथा सप्तशती तथा गाथारत्नसमुच्चय, च. गीतगोविन्द (सम्पादन व टिप्पणी)।

(6) पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन

क. संस्कृत रत्नाकर, ख. संस्कृत भारती, ग. संस्कृत रत्नाकर के विशेषांक वेदांक, आयुर्वेदांक, शिक्षांक, दर्शनांक।

(7) कहानियाँ (भारती एवं अन्यान्य संस्कृत भाषात्मक पत्रिकाओं में प्रकाशित एवं अप्रकाशित)

(क.) **निबन्ध साहित्य**–प्रबन्धपारिजात।

(ख.) **ऐतिहासिक गद्यकाव्य**–बिल्हणचरितम्, भारतवैभवम्।

(ग.) **भाषा शास्त्रीय ग्रन्थ**–गीर्वाणगिरागौरवम्।

श्री शास्त्री के नाम पर प्रतिवर्ष 'भट्ट मथुरानाथशास्त्री साहित्य सम्मान' दिया जाता है। सर्वप्रथम यह पुरस्कार पद्मिनी उपन्यास के प्रणेता राष्ट्रपति सम्मानित पं. मोहनलाल पाण्डेय को दिया गया।

भट्ट मथुरानाथ शास्त्री का कृतित्व विशाल है। वैभवत्रयी के अन्तर्गत जयपुरवैभवम्, साहित्यवैभवम्, गोविन्दवैभवम् तथा मनोलहरी मुक्तककाव्य है। सात स्तोत्र मुक्तक, एक उपन्यास, 33 लघुकथाएं, 80 निबन्ध, 5 व्याकरण शास्त्रीय ग्रन्थ, 6 टीका ग्रन्थ तथा 15 अप्रकाशित रचनाएं है।

मुक्तक काव्य (वैभवत्रयी)

1. जयपुरवैभवम् : जयपुर नगर से सम्बन्धित यह एक काव्यात्मक रचना है। जयपुर की सांस्कृतिक परम्पराओं, उल्लेखनीय स्थानों तथा तत्कालीन वर्तमान महाराजा श्री मानसिंह के यश का वर्णन इस मुक्तककाव्य में निहित है। वर्ण्यविषय की दृष्टि से रचना को आठ विथियों में विभक्त किया गया है-

i) आमुखवीथी ii) नगरवीथी iii) राजवीथी iv) उत्सववीथी v) नागरिकवीथी vi) उद्यानवीथी vii) अभिन्दनवीथी viii) व्रजकविता वीथी। इसका प्रकाशन मंजु कविता निकुंज, जयपुर से 1947 ई. में हुआ था।

2. साहित्य वैभवम् : इस काव्य में कवि की काव्य कला विलास का उद्घाटन है इसमें षड् ऋतुओं, नवरसो का विभिन्न छन्दों में प्रतिपादन किया गया है। इसकी विषयवस्तु को 10 विथियों में विभक्त किया गया है-

i) आमुखवीथी ii) षड्ऋतुवीथी iii) नवरसवीथी iv) नीतिवीथी v) विनोदवीथी vi) छन्दोंवीथी vii) गीतिवीथी viii) नवयुगवीथी तथा ix) संहति वंशवीथी x) वंशवीथी

निर्णयसागर प्रेस मुम्बई इसका प्रकाशन 1930 ई. में हुआ था।

3. गोविन्द वैभवम् : इसका प्रकाशन सन् 1947 में गीता प्रेस, गोरखपुर से हुआ था। इसमें भगवान गोविन्द श्रीकृष्ण के यशोगान के साथ-साथ उन्हीं के अन्य रूप नारायण हयग्रीव, धन्वन्तरि, शंकर, गणेश, महालक्ष्मी आदि देवियां गंगा-यमुना-शिला माता आदि से प्रार्थना पूर्वक भवसागर तारण की बात कही गई है। इसके साथ ही भगवान् श्रीकृष्ण की रूप माधुरी, मुरलीवादन, भवसागर, तारण की क्षमता, नवधा भक्ति, वैराग्य, शान्तरस, काल की कुटिलता, रासलीला, रूपमुग्धागोपियां, गजेन्द्र मोक्ष आदि कथानकों का संक्षिप्त रूप प्रस्तुत करते हुए भक्ति रस का पोशण करने वाले विषयों का आधिक्य रूप में चित्रण किया है। सामयिक चर्चा करते हुए शिक्षा परीपाटी,

वर्तमान स्त्री शिक्षा, संस्कृत भाषा, दर्शनशास्त्र की परिभाषा काशी नगरी की महिमा आदि पर भी अपनी विचार व्यक्त किये है। इनमें से कुछ निम्न है- i) कारुण्यम् ii) नाम संकीर्तनम् iii) कालस्यकुटिलता iv) शिक्षापरिपाटी v) अश्वघाटी vi) कुण्डलियाखण्ड। 49 प्रकरणों में विभक्त इस काव्य में भगवान् गोविन्द की भावपूर्ण स्तुति तथा नवधा भक्ति का वर्णन है।

खण्डकाव्य

i.) **मनोलहरी-** इस खण्डकाव्य में 20 पद्य है, जिनमें संस्कृत भाषा की महिमा का मण्डन किया है।

ii.) **सुरभारती-** इसमें सुरभारति (संस्कृत-भाषा) की महिमा की गान 14 गद्यों में किया गया है। कवि शिरोमणि की उपाधि।

iii.) **समस्यासन्दोह-** इस काव्य में समस्या पूर्तिपरक पद्यों का संकलन है। इस काव्य का संकलन एवं सम्पादन देवर्षि कलानाथ शास्त्री ने किया है।

4. देवर्षि कलानाथ शास्त्री

व्यक्तित्व

देवर्षि कलानाथ शास्त्री का जन्म 15 जुलाई, 1936 (श्रावणकृष्णद्वादश्यां 1993 विक्रमसंवत्सरे) जयपुर में हुआ, इनके पिता का नाम भट्टमथुरानाथ शास्त्री एवं माता का नाम श्रीमती रमा देवी है। इनकी शिक्षा साहित्याचार्य महाराज संस्कृत कॉलेज जयपुर से हुयी तथा इन्होंने एम.ए. अंग्रेजी में एवं पी एच.डी. संस्कृत में की। इनका विवाह सन् 1952 में माधुरी देवी के साथ हुआ, सन् 1957 ई. में संस्कृत शिक्षा विभाग, जयपुर में निदेशक के पद पर कार्यरत रहे।

अध्यक्ष–पं.नित्यानन्द शास्त्री, आधुनिक संस्कृतपीठ जगद्गुरू रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर।

सम्मान :- राष्ट्रपति सम्मान (1998ई.) महामहिम राष्ट्रपति श्री के.आर. नारायणन् के कर कमलों से।

कुल सम्मान-50।

उपाधि :- महामहोपाध्याय सहित 9 उपाधियाँ।

शिक्षा- महाराजा संस्कृत कॉलेज से साहित्याचार्य, अंग्रेजी विषय में एम. ए. और पी. एच. डी. संस्कृत विषय में।

राजकीय सेवा में

1. मात्र 21 वर्ष में आप अंग्रेजी विषय के प्राध्यापक।
2. भाषाविज्ञान में उपनिदेशक।
3. राजकीय कॉलेज में प्राचार्य।
4. **निदेशक**–संस्कृत शिक्षा निदेशालय, जयपुर।
5. **निदेशक**–भाषा विज्ञान सेवानिवृत्त-1994 ई.
6. **मानद् अध्यक्ष**–राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर।
7. **पीठाअध्यक्ष**–आधुनिक संस्कृत पीठ जगद्गुरुरामनन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)

आकाशवाणी

आकाशवाणी जयपुर केन्द्र की स्थापना से लेकर आज तक आकाशवाणी केन्द्र से संस्कृत नाटकों वार्ताओं के प्रसारण द्वारा संस्कृत के प्रसार में इनके प्रयत्न सुविदित है।

पत्रकारिता

संस्कृत में भारती, स्वरमंगला, वैजयन्ती, आदि पत्रिकाओं के तथा हिन्दी में आलोक, भाषापरिचय, शिक्षासंवाद, दृक् आदि पत्रिकाओं के सम्पादन द्वारा साहित्यिक पत्रकारिता को योगदान।

प्रमुख सम्मान एवं उपाधियां

1. भारत सरकार द्वारा उत्कृष्ट लेखन पर सम्मान (1988)।
2. भारती मन्दिर, जयपुर द्वारा साहित्य महोदधि उपाधि (1993)।
3. राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन, जयपुर द्वारा सम्मानित (1994)।
4. वैदिक संस्कृति प्रचार संघ, जयपुर द्वारा सम्मानित (1994)।
5. भारत सेवक समाज, जयपुर द्वारा सम्मानित (1993)।
6. ज्योतिष परिषद् शोध संस्थान, जयपुर (1995 एवं 1997)।
7. मानव संसाधन विकास मन्त्रालय नई, दिल्ली द्वारा (1995 एवं 1998)।
8. गुजरात संस्कृत साहित्य अकादमी द्वारा (1997)।
9. राजस्थान सरकार द्वारा संस्कृत दिवस पर सम्मानित (1997)।
10. दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा सम्मान (1997)।
11. राजस्थान मैथिल परिषद् जयपुर (1998)।
12. राजस्थान सरकार के भाषा विज्ञान विभाग द्वारा (1998)।
13. संजय संग्रहालय जयपुर (1999)।
14. व्यास बालाबक्श शोध संस्थान जयपुर द्वारा साहित्य शिरोमणि उपाधि (1999)।
15. महामहिम राष्ट्पति द्वारा संस्कृत वैदुष्य के लिए सम्मानित (1998)।
16. वाणी परिषद् एवं तुलसी मानस संस्थान, जयपुर (1999)।
17. रामानन्द सप्तशती समिति, जयपुर (2000)।
18. सर्वब्राह्मण महासभा द्वारा 'सरस्वती पुत्र सम्मान' (2000)।
19. राजस्थान संस्कृत अकादमी द्वारा 'नाट्यवल्लरी' पर हरिजीवन मिश्र संस्कृत नाट्य पुरस्कार (2002)।
20. काशी के रामानन्द पीठ द्वारा रामानन्द पुरस्कार, (2004)।
21. केन्द्रिय साहित्य अकादमी 'आख्यानवल्लरी' पुरस्कार (2004)।
22. LBS विश्वविद्यालय द्वारा महामहोपाध्याय उपाधि से अलंकृत।

इनके अतिरिक्त विविध संस्थाओं से सम्मानित।

कृतित्व–

(1) **विद्वज्जनचरितामृतम्–जीवनीसंग्रह।**
(2) **सुधीजनवृत्तम्–जीवनी संग्रह।**
(3) **कथानकवल्लरी–कथा संग्रह।**

(4) **आख्यानवल्लरी–उपन्यास कथा संग्रह।**
(5) **संस्कृतनाट्यवल्लरी–नाट्य संग्रह।**
(6) **आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास ।**
(7) **कवितावल्लरी–काव्यसंग्रह।**
(8) **जीवनस्यपृष्ठद्वयम् (उपन्यास) भारती धारावाहिक कथानक रूप में प्रकाशित।**

रूपक–

(1) महाभिनिष्क्रमणम् (रूपक) (2) प्रतापसिंहीयम् (रूपक) (3) चित्तौड़सिहम् (रूपक)।

विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित कथाग्रन्थ आदि

(1) धर्म क्षेत्रे (2) कुरुक्षेत्रे (3) विनाशकाले विपरीत बुद्धि (4) शत्रू मित्रे वा (5) मोहभंग (6) मर्यादासदाचारणम् (7) दम्भज्वरः (8) अस्पृश्यतायारहस्यम् (9) शून्या असन्दी (10) पृथ्वीराज विजय।

कविता–

(1) वसन्तःसोऽयम्(2) वसन्तः सेनापतिः (3) वर्षाःसमुपागताः (4) फेनाष्टकम् (5) जनगणमनसोनेतुर्वाणी (6) मनः स्थितिः (7) समस्या संगमनि।

सम्पादित पत्रिकाएँ -

(1) स्वर मंगला पत्रिका (2) भारती पत्रिका।

संस्कृत में सम्पादित ग्रन्थ-

i) संस्कृतकल्पतरुः (शोधसंग्रह, जयपुर 1972)।
ii) गीर्वाणगिरागौरवम् (भट्ट श्री मथुरानाथ शास्त्री का भाषा शास्त्रीय ग्रन्थ, जयपुर 1987)।
iii) प्रबन्धपारिजातः (भट्ट श्री मथुरानाथ शास्त्री के निबन्धों का संकलन जयपुर (1988)।
iv) पञ्चलहर्यः- (जगन्नाथपण्डितराज का स्तोतसंग्रह, संस्कृत टीका हिन्दी अनुवाद समीक्षा सहित जयपुर 1967)।
v) वीरेश्वरप्रत्यभिज्ञानं (पं. जगदीश शर्मा लिखित जीवनी, जयपुर 1995 ई.)।
vi) इन्द्रविजयः (पं. मधुसुदन ओझा कृत वेदेतिहास ग्रन्थ, जोधपुर 1996)।
vii) नवरत्न नीतिः रचनावली (गिरिधर शर्मा नवरत्न की कविता, जयपुर 1985)।
viii) रामचरिताब्धिरत्नम् (पं. नित्यानन्द शास्त्री का महाकाव्य, कलकत्ता 2003)।
ix) विशिष्टाद्वैत सिद्धान्तः (स्वामी भगवदाचार्य रचित वेदान्तग्रन्थ, रेवासा-2003)।

इनके अतिरिक्त देवर्षि कलानाथ शास्त्री की हिन्दी, अंग्रेजी सहित अन्य भाषाओं में विविध रचनाएं है एवं विविध ग्रन्थों का सम्पादन किया है। देवर्षि कलानाथ शास्त्री जी की सुदीर्घ लेखन परम्परा रही है। आपने विद्वत् जन चरितामृतम् (जीवनीसंग्रह), सुधीजनवृत्तम् (जीवनी संग्रह) कथानकवल्ली (कथासंग्रह) आख्यानवल्लरी (उपन्यास कथा संग्रह) संस्कृत नाट्यवल्लरी (नाट्यसंग्रह) कवितावल्लरी (काव्यसंग्रह) तथा आधुनिक संस्कृतसाहित्य का इतिहास लिखकर संस्कृत साहित्य सेवा में अपना अमूल्य योगदान दिया है। आपकी दो अनुदित रचनाएं भी है जिसका आपने आंग्लभाषा से संस्कृत में अनुवाद किया है। अर्वाचीन संस्कृत साहित्य का भी आंग्लभाषा से संस्कृत में अनुवाद किया।

1. विद्वज्जनचरितामृतम् : शास्त्री ने इस ग्रन्थ में संस्कृत वाङ्मय की सेवा करने वाले आधुनिक विद्वानों का तथ्य सम्मत जीवनवृत्त प्रस्तुत किया है।

2. सुधीजनवृत्तम् : यह ग्रन्थ विद्वज्जनचरितामृतम् का ही परिवर्धित रूप है। इसमें राजस्थान के 13 विद्वानों का व्यक्तित्व व कृतित्व प्रस्तुत किया गया है।

3. कथानकवल्ली : इस ग्रन्थ में 'संस्कृतोपासिकाया आत्मकथा' शीर्षक से लघूपन्यास के साथ पञ्चलघुकथाओं का संकलन प्रस्तुत किया गया है। उपन्यास स्मृत्यालोक शैली में लिखा गया है। इसके अतिरिक्त शूत्रमित्रे वा, दिग्भ्रान्ति, अस्पृश्यतायारहस्यम्, दम्भज्वरः तथा मर्यादा नामक पांच आधुनिक शैली की मौलिक रचनाएं संकलित है।

4. आख्यानवल्लरी : इस रचना में उपन्यास लघुकथा, ललित निबन्धों का संग्रह है। अतएव इस रचना में कथाशैली का एक उपन्यास, दशकथा तथा छः ललित निबन्ध है। संस्कृततोपासिका आत्मकथा नामक लघूपन्यास ही यहाँ जीवनस्यपाथेयम् नाम से प्रस्तुत किया गया है। उपन्यास की नायिका कल्पना अधिक अंक पाने के प्रलोभन से संस्कृत विषय के रूप में लेती है किन्तु वही संस्कृत उसके जीवन का पाथेय बन जाती है। संस्कृत मात्र विषय ही नहीं अपितु वह हमारी संस्कृति के शाश्वत मूल्यों की वाहिका है अतः इस उपन्यास के नायक व नायिका दोनों ही भारतीय संस्कृति के जीवन्त मूल्यों के प्रतीक है।

दश कथाओं में से कथानकवल्ली में प्रस्तुत पञ्च कथाओं के अतिरिक्त शून्या आसन्दी, आवाहनम्, शरणार्थी, आकृष्णेनस्जसा, निर्णयन्तु भवन्त एव नामक पञ्चमौलिक कथाओं की रचना की गई है। इसके अतिरिक्त छः ललित निबन्ध भी लिखे गये है।

5. संस्कृतनाट्यवल्लरी–यह श्री शास्त्री का मौलिक नाट्यसंग्रह है। इसमें आठ ध्वनिरूपकों का संकलन है-

i) नाट्यशास्त्रावतार	ii) महाभिनिष्क्रमणम्
iii) प्रणयसन्देशः	iv) पृथ्वीराजविजयः
v) प्रतापसिंहीयम्	vi) धर्मस्य तत्वं निहितं गुहायाम्
vii) कवितायामूल्यम्	viii) प्रियदर्शिका।

6. संस्कृतकवितावल्लरी–यह कविता संकलन वर्ण्यविषयानुसार नवखण्डों में विभक्त है-

i) मङ्गलधोरणी	ii) अर्ध्यपथिकृतां स्मृतौ
iii) विधाविविधाप	v) विनोदवाटी
v) गीतयः	vi) प्रत्युत्तरम्
vii) अभ्युक्तयः	viii) समस्या सङ्गमनी
ix) गजलगोपुरम्	

7. आधुनिकसंस्कृतसाहित्येतिहासः:- इस ग्रन्थ में 20 वीं शताब्दी के लब्धप्रतिष्ठी आधुनिक विद्वान् साहित्यकारों का तथ्यात्मक विवरण प्रस्तुत किया है।

अनुदित रचना-

शरणार्थी : कलानाथ जी ने अंग्रेजी भाषा की 'रिफ्यूजी' नामक कथा का शरणार्थी के नाम से संस्कृत में अनुवाद किया है। मूल कथा 'रिफ्यूजी' की लेखिका नोबेल पुरस्कार से सम्मानित पर्ल एस. बक है।

अर्वाचीनसंस्कृतसाहित्यम्–यह शास्त्री जी का अनूदित ग्रन्थ है। कृष्ण आचारियर ने आंग्लभाषा में हिस्ट्री ऑफ संस्कृत लिटेचर नामक ग्रन्थ लिखा, जिसमें संस्कृत साहित्यकारों का परिचय प्रस्तुत किया गया है। कलानाथ जी ने इसी ग्रन्थ का अर्वाचीनसंस्कृतसाहित्यम् के नाम से संस्कृत में अनुवाद किया है।

5. डॉ. प्रभाकर शास्त्री

व्यक्तित्व

जन्म	-	13 अप्रैल 1939 ई.
जन्म स्थान	-	जयपुर (राजस्थान)
पिता का नाम	-	पं. वृद्धिचन्द्र शास्त्री
माता का नाम	-	श्रीमति भंवरी देवी (सागर देवी)
शिक्षा	-	**डी. लिट् (पीएचडी) विषयः जयपुर की संस्कृत साहित्य को देन** (1699 ई. **से 1834 ई. तक)**
विशेष	-	राजस्थान के प्रथम संस्कृत डी.लिट् विद्वान्।
	-	राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर के संस्थापक। आप 1991 ई. से 1999 ई. तक राजस्थान संस्कृत अकादमी के निदेशक रहे है।
पुरस्कार	-	राष्ट्रपति पुरस्कार 2002 ई.
	-	हारीत ऋषि पुरस्कार 1993 ई.
	-	विज्ञान पुरस्कार 2003 ई.
	-	माघ पुरस्कार 2006 ई.
	-	ज्योतिष पुरस्कार (मानद उपाधि) लगभग 25 पुरस्कार।

कृतित्व

1. रेडियोरूपक

(1) बिल्हणचरितम् (2) महाकवि माघ (3) जगद्गुरु श्री शंकराचार्य।

2. कथा साहित्य (पंचामृतम् में प्रकाशित)

(1) जीवनज्योति (2) आत्मवेदना (3) त्वं तु साक्षान्महेश्वरः (4) निश्चलं भुक्तवानस्मि।

3. जयपुर की संस्कृत साहित्य को देन

4. सम्पादित ग्रन्थ

(1) श्रमणशतकम् (2) चिमनीचरितम् (3) राजस्थानस्य आधुनिका संस्कृत निबन्धलेखकाः (4) सूर्यादि नवग्रहतत्वदर्शनम् (5) माधवस्वातन्त्र्यम् (6) दुर्गासप्तशतीरहस्यम् (7) रसालोचनम् (8) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (9) नैषधीयचरितम् (10) सौन्दर्यलहरी (11) इन्दुमतीस्वयंवरवर्णन (रघुवंश का षष्ठ सर्ग) (12) मध्यमव्यायोग (13) श्रमणशतकम् (14) नैषधीयचरितम् (तृ.स.) (15) किरातार्जुनीयम् (द्वि.स.) (16) प्रतिज्ञायौगन्धरायण (17) राजस्थानस्य आधुनिकनिबन्धकाराः (18.) कवि शिरोमणि भट्ट श्री मथुरानाथशास्त्रिणः कृतित्व समीक्षणम् (19.) राजस्थानलहरी लीलायितम् (20.) वर्णसमीक्षा (21.) राजस्थान की सारस्वत साधना।

डॉ. प्रभाकर शास्त्री व्यक्तित्व

स्वनामधन्य प्रो. प्रभाकर शास्त्री राजस्थान प्रान्त में ही नहीं अपितु अखिल भारतीय संस्कृत जगत् में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते है। डॉ. प्रभाकर शास्त्री का जन्म वैशाख कृष्णा अष्टमी संवत् 1996 तदनुसार 13 अप्रैल 1939 को जयपुर में हुआ था। आपके पिता वृद्धिचन्द्र जी शास्त्री महाराज संस्कृत कॉलेज, जयपुर में धर्मशास्त्र के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष थे प्रभाकर शास्त्री का विवाह 8 जून 1969 ई. को हुआ था। इनके दो पुत्र–डॉ. आलोक तथा डॉ. विकास है।

शिक्षा-दीक्षा

प्रभाकर शास्त्री की शिक्षा महाराजा संस्कृत कॉलेज जयपुर में ही सम्पन्न हुई। आप 1960 में धर्मशास्त्र की आचार्य परीक्षा में तथा सन् 1961 में एम. ए. संस्कृत की परीक्षा में स्वर्णपदक प्राप्त करने वाले सर्वप्रथम छात्र थे। सन् 1964 में आपने दरभंगा विश्वविद्यालय, बिहार से साहित्याचार्य और 1967 में हिन्दी से एम. ए. किया है।

डॉ. शास्त्री ने सन् 1965 में पी.एच.डी की उपाधि और सन् 1970 में सर्वोच्च शोध उपाधि डी. लिट् प्राप्त की। राजस्थान विश्वविद्यालय से इस सर्वोच्च उपाधि डी. लिट् को प्राप्त करने वाले आप सर्वप्रथम विद्वान् है। आपने 13 जुलाई सन् 1961 गें संस्कृत प्राध्यापक पद पर अध्यापन कार्य प्रारम्भ कर दिया था। आपकी स्थायी नियुक्ति राजस्थान लोकसेवा आयोग द्वारा 1964 में हुई तदनन्तर कोटा, गंगानगर, बीकानेर, सीकर आदि जिलों के राजकीय महाविद्यालयों में अध्यापन कार्य करते हुए आपने 1978 में राजस्थान विश्वविद्यालय में नियुक्ति प्राप्त कर प्रवाचक पद को अलंकृत किया। तत्पश्चात् पदोन्नति प्राप्त कर प्रोफेसर पद से 1999 में सेवानिवृत हुए। आप संस्कृत अकादमी, जयपुर और मानवीकि पीठ के निदेशक भी रहे।

संस्कृत सेवा में उत्कृष्ट योगदान हेतु आपको निम्न संस्थाओं से सम्मानित किया गया।

1. **महामहिम राष्ट्रपति महोदय** द्वारा संस्कृत के विद्वानों का सर्वोच्च सम्मान सन् 2002 ई.।
2. **हारीत ऋषि पुरस्कार**–महाराणा मेवाड़ फाऊन्डेशन, उदयपुर 11/4/1993।
3. **निम्बार्क भूषण**–निम्बार्क पीठाधीश्वर श्री श्री जी श्री राधा सर्वेश्वरशरण देवाचार्य जी के कर कमलों से प्रदत्त सन् 1996 ई.।
4. **प्रतिभासम्मान**–जयपुर समारोह जयपुर सन् 1996 ई.।
5. **ब्राह्मणरत्नसम्मान**–अखिल राजस्थान सर्वब्राह्मण सभा, जयपुर।
6. **योग्यता पुरस्कार**–राजस्थान राज्यपाल सन् 1972 ई.।
7. **संस्कृतविद्वत् सम्मान**- राजस्थान सरकार, सन् 1999 ई.।
8. **प्रतिभा सम्मान**–अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्, दिल्ली सन् 1996 ई.।
9. **श्रीमाली जातिभूषण सम्मान**–ताम्रपत्र, अखिल भारतीय श्रीमाली ब्राह्मण समाज संस्थान, पुष्कर द्वारा कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा संवत् 2050।
10. **अतिविशिष्टविद्वत् सम्मान**–राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर।
11. **अग्रदेव पीठाधीश्वर विद्वत् सम्मान**–अग्रदेवाचार्य पीठ, रैवासा धाम, सीकर राजस्थान।
12. **धर्मशास्त्र सम्मान**–राज्यस्तरीय, राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर 1/4/2003।
13. **वींसवी शताब्दी का उत्तम नागरिक सम्मान**–महाराष्ट्र दलित साहित्य अकादमी, भुसावल 28/05/2000 ई.।
14. **विद्वत् सम्मान**–भौरीलालरावत चेरीटेबल ट्रस्ट, जयपुर 13/07/1990।
15. **विज्ञान पुरस्कार**–राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर 2/1/2003।
16. **अभिनन्दन**–(शोधरजत जयन्ती पर) समस्त शोध छात्रों द्वारा सन् 1996 ई.।
17. **प्रशस्तिका**–उच्चस्तरीय अनुसंधान संस्थान, जयपुर सन् 1997 ई.।
18. **अभिनन्दन**–राजस्थान विश्वविद्यालय, अध्यापक संघ सन् 1999।
19. **संस्कृत एवं कर्मकण्ड विशेषज्ञ प्रमाणपत्र**–मोरीशस धर्म संस्थान टेम्पल फेडरेशन लुईसपोर्ट सन् 2003।
21. **संस्कृत विद्वत् सम्मान**–श्री शिवमय जीवनधारा पावटा, जयपुर राज. 16 जुलाई 2004।
22. **माघ पुरस्कार**–अखिल भारतीय श्री माली ब्राह्मण समाज संस्था पुष्कर (3 नवम्बर 2006)।
23. **सम्मान पत्र**–श्री अञ्जनीनन्दन महायज्ञ श्री अञ्जनीहनुमान धाम हाडौता, चौमू, जयपुर 20 जून 2007।

रचना परिचय

पञ्चामृतम्- इस ग्रन्थ में श्री शास्त्री की समस्त रचनाओं का संकलन है-
पञ्चामृतम् में पांच विभाग है, जिन्हें अमृत नाम दिया गया है।

1. पञ्चामृतम् में पांच विभाग है, जिन्हें अमृत नाम दिया गया है।
   (क) प्रथमामृतम्–आत्मवेदना, जीवनज्योति, साक्षान्महेश्वरः आदि कथाओं का संग्रह है।
   (ख) द्वितीयामृतम्–बिल्हणचरितम्, महाकविमाघः, जगद्गुरु श्री शंकराचार्य इत्यादि रेडियों रूपकों को प्रस्तुत किया है।
   (ग) तृतीयामृतम्–विद्वज्जनों का जीवनचरित वर्णित।
   (घ) चतुर्थामृतम्–शोधलेखों का संकलन।
   (ङ) पञ्चामृतम्–सम्पादन और समीक्षात्मक कार्य।

आत्मवेदना–इस कहानी में हरिजनों पर जमीदारों द्वारा किये गये अत्याचारों का वर्णन किया गया है। इस कहानी का प्रकाशन राजस्थानस्याधुनिक कथालेखकाः नामक संग्रह में किया गया था। जीवन ज्योति कहानी स्वरमंगला में प्रकाशित।

डॉ. प्रभाकर शास्त्री को पञ्चामृतम् के लिए राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर ने वर्ष 2000-2001 में विज्ञान पुरस्कार दिया।

संस्कृत गद्य प्रभा–यह ग्रन्थ गद्य साहित्य पर आधारित है।

जयपुर की संस्कृत साहित्य को देन–इस ग्रन्थ में संस्कृत के क्षेत्र में योगदान करने वाले जयपुर के विद्वानों का परिचय प्रस्तुत किया गया है जिसमें प्राचीनकाल से लेकर समसामयिक विद्वानों का लेखन है–भट्ट मथुरानाथ शास्त्री, गिरिधरशर्मा चतुर्वेदी आदि प्रमुख है। इस ग्रन्थ पर आपने डी. लिट् की उपाधि प्राप्त की थी।

इसके अतिरिक्त आपने याज्ञवल्क्यस्मृतिः के आचाराध्यान तथा रघुवंश के षष्ठ सर्ग का 'इन्दुमतीस्वयंवरवर्णन' नाम से सव्याख्या अनुवाद किया हैं।

6. प्रो. हरिराम आचार्य-

व्यक्तित्व

जन्म	-	21 जून 1936।
जन्म स्थान	-	जैसलमेर (राजस्थान)।
पिता का नाम	-	श्री गणेशदत्त।
माता का नाम	-	सीतादेवी।
शिक्षा	-	पी.एच.डी. (महाकवि हाल की गाथा सप्तशती)
सेवाकार्य	-	14 अगस्त 1958 से प्रारम्भ 30 जून 1996 सेवानिवृत्ति।

शिक्षक एवं श्रेष्ठ गीतकार–के रूप में प्रसिद्ध डॉ. हरिराम आचार्य ने राजस्थान विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग के आचार्य व विभागाध्यक्ष पद को अलंकृत किया। आपकी साहित्य समाराधना के लिए आपको अनेक पुरस्कार व सम्मान प्रदान किये गये, जिनका विवरण इस प्रकार है-

i) 1972 में राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर द्वारा आपकी प्रथम कृति 'खुलेकिरणपाल' पर मीरा पुरस्कार।
ii) 1979 में कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जैन द्वारा विशिष्ट संस्कृत कवि सम्मान।
iii) 1997 में राजस्थान सरकार द्वारा संस्कृत दिवस पर विद्वत् सम्मान।

iv) 1999 में भारत सरकार द्वारा अखिल भारतीय विद्वत् सम्मान।
v) 2001 में राजस्थान संस्कृत अकादमी द्वारा मधुच्छन्दा काव्य पर माघ पुरस्कार।
vi) 2003 में मॉरीशस सरकार द्वारा संस्कृत एवं कर्मकाण्डविषयक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में विशिष्ट सम्मान।
vii) 2005 में आकाशवाणी जयपुर द्वारा स्वर्णजयन्ती कलाकार सम्मान।
viii) 2005 में महामहिम राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम आजाद द्वारा सर्वोच्च राष्ट्रपति सम्मान।
ix) 2006 में राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, जोधपुर कला पुरोधा सम्मान।
x) 2011 व्यास बालाबख्श शोध संस्थान जयपुर द्वारा सर्वोच्च महर्षि पुरस्कार।
xi) पूर्वशाकुन्तलम् (संस्कृतनाट्यसंकलन) पर राजस्थान संस्कृत अकादमी द्वारा पं. हरिजीवनमिश्र नाट्य पुरस्कार।

श्री आचार्य प्रणीत रचनाएं

1. पूर्वशाकुन्तलम्	**2. गंगालहरी**	**3. मधुच्छन्दा**
4. नाचिकेतकाव्यम्	**5. संस्कृतरूपक रत्नालोक**	**6. संस्कृत गद्य गरिमा**
7. नेत्रदानम्	**8. कनिष्ठकाधिष्ठितम्**	**9. सत्यमेव जयते**
10. वेतालकथा	**11. न हि भोज समो नृपः**	**12. आषाढस्य प्रथमदिवसे**
13. संगीत दामोदर।		

आपके द्वारा 80 नाटकों 30 संगीतरूपकों, 5 वृत्तरूपको एवं 160 से अधिक वार्ताएं आकाशवाणी केन्द्र से प्रसारित हो चुकी है। अखिल भारतीय नाटक कार्यक्रमों में विक्रमोर्वशीयम् (1960) वन्यजीवन (1970), मृच्छकटिकम् (1985), अशान्तदेवा (1962) एवं मुद्राराक्षस नाटकों का प्रसारण हो चुका है।

संस्कृत पत्रकारिता के क्षेत्र में भी आपका महनीय योगदान है। आपके विभिन्न शोधलेख गीत एवं लेख आदि का प्रकाशन भारती स्वरमंगला, रचनाविमर्श एवं देश की शीर्षस्थ पत्रिकाओं में होता रहा है। आप राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर से प्रकाशित त्रैमासिक स्वरमंगला पत्रिका के प्रधान सम्पादक भी रहे है। दूरदर्शन एवं बड़े परदे के लिए भी आपने गीत लिखे है। यथा- भूल न जाना (1963), मेहन्दी रंग लायेगी (1981) एवं एच. एम. वी द्वारा शिशुगीतों का ध्वन्यांकन अंकनीय है।

आपकी रचनाओं का विस्तृत परिचय निम्न प्रकार है–

1. पूर्वशाकुन्तलम्–(सात रेडियों रूपकों का संकलन) : संकलित कृति का नामकरण विश्वामित्र और मेनका के प्रसंग विशेष कण्वपालिता सुता शकुन्तला पर आधारित है। यह रूपक मूलत महाभारत के शकुन्तलोपाख्यान पर्व पर आधारित है। शेक्सपीयर की तुलना में उपमित एवं कविकुलगुरु कालिदास द्वारा विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के प्रथमांक में वर्णित शकुन्तला जनित वृतान्त को लक्ष्य कर रूपककार ने बताया कि कुशिकवंशीय राजर्षि विश्वामित्र की तपस्या से भयभीत देवराज इन्द्र ने मेनका नामक अप्सरा को तप भंग करने के लिए भेजा तत्पश्चात् विश्वामित्र और मेनका के संयोग से शकुन्तला का जन्म हुआ।

2. गंगालहरी : पण्डितराज जगन्नाथ ने राजनर्तकी लंवगी के प्रसंग में सुप्रसिद्ध स्तोत्रकाव्य गंगालहरी की रचना की उसी वृतान्त को आधार बनाकर यह रूपक लिखा गया है। भगवती देवनदी स्वयं जगन्नाथ के निकट आकर लंवगी के मृतदेह को स्वीकार कर लेती है।

3. न हि भोज समो नृपः : यह ध्वनिरूपक राजा भोज और महाकवि कालिदास के मध्य घटित घटनाक्रम पर आधारित है। सुप्रसिद्ध है कि कालिदास राजा भोज के सभारत्न और मित्र थे।

4. आषाढस्य प्रथम दिवसे : इस ध्वनिरूपक में मेघदूत खण्डकाव्य में यक्ष अपनी नवोढा कान्ता की चहल पहल में लग जाता है। कुबेर के पास न आने से उन्हें पत्नी वियोग का असहनीय शाप मिल जाता है। आठ मास बीत जाने के पश्चात् जब आषाढ़ का प्रथम दिन आता है तो वे प्रणय व्याकुल हो जाते है एवं सन्देश वाहक मेघ से निवेदन करते है। अन्ततः कुबेर क्षमादान कर उनका पुनर्मिलन करवा देते है।

5. सत्यमेव जयते : कवि ने रावणवध महाकाव्य को ध्वनिनाटक में रूपान्तरित किया है। दशानन रावण छद्म से सीता का अपहरण कर लेता है किन्तु असत्य की प्रतिमूर्ति रावण मर्यादा पुरुषोतम के बाणों से मारा जाता है। तदनन्तर राम विभीषण को लंकापुरी का राज्यसिंहासन देकर अयोध्या लौट आते है। कवि ने इस रूपक में असत्य पर सत्य की विजय गाथा प्रस्तुत की है।

6. वेताल कथा : यह ध्वनिरूपक सोमदेव विरचित कथासरित्सागर की वेताल कथाओं पर आधारित है। इसमें वीरवर न केवल अपने पुत्र की बल्कि अपने सम्पूर्ण परिवार को राजा की रक्षार्थ बलिदान कर देता है।

7. नेत्रदान महादान : इस ध्वनिरूपक की नायिका बौद्धधर्म में दीक्षित शुभा है उपगुप्त के साथ भिक्षाटन करने के पश्चात् वह पीपल की छांव में विश्राम करती है। तभी ब्रह्मपुर नरेश उसके रूपलावण्य पर मुग्ध होकर उसके नेत्रों की प्रशंसा करता है। शुभा अपने दोनों नेत्रकमलों को निकालकर उन्हें समर्पित कर देती है। अन्ततः पश्चाताप् किया जाता है। नेत्रदान महादान है। उक्त ग्रन्थ पर रूपककार को राजस्थान संस्कृत अकादमी से सर्वोच्च नाटक पुरस्कार 1998 में प्राप्त हो चुका है।

संस्कृत काव्य

1. नाचिकेतम् प्रबन्धकाव्य : आचार्य जी का प्रथम प्रबन्धकाव्य नाचिकेतकाव्य है। यह प्रबन्धकाव्य कठोपनिषद् की कथा शुक्ल यजुर्वेद के 40 वें अध्याय पर आधारित है। नाचिकेत काव्य में अग्निचयन विद्या और मरणोपरान्त आत्मा के अस्तित्व के जटिल दार्शनिक प्रसंग को कवि ने काव्यमयी सुललित वाणी में प्रस्तुत किया है। काव्यशास्त्रीय दृष्टि से यदि नाचिकेतम् काव्य की समीक्षा की जाये तो स्वयं कवि ने इसे प्रबन्धकाव्य स्वीकार किया है। इस प्रबन्धकाव्य में भारतीय संस्कृति के शाश्वत मूल्यों का चित्रण है। प्राचीन विषय या कथासूत्र पर आधारित इस काव्य कृति के पीछे कवि एक महत् उद्देश्य को लेकर चला है। कवि का उद्देश्य स्पष्ट है कि भौतिक संस्कृति की चकाचौंध से प्रभावित युवाशक्ति इस काव्य को पढकर यदि अंश मात्र भी भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों से प्रभावित होती है तो कवि अपने उद्देश्य में सफल है। कठोपनिषद् के प्राचीन कथासूत्र में सुमेधा पात्र की कल्पना कवि की मानसी सृष्टि है। जिसके माध्यम से बाल जिज्ञासाओं के शमन, उसे संस्कार देने और लालन पालन के द्वारा मां की भूमिका व आश्रम कार्यों में सहभागिता के द्वारा समाज में नारी के महत्व की ओर संकेत किया है।

2. मधुच्छन्दा गीतिकाव्य : माघ पुरस्कार से पुरस्कृत राष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसनीय मधुच्छन्दा आठ भागों में विभाजित गीतिकाव्य है। इनमें मांगल्यम्, राष्ट्रियम्, नवोन्मेषीयम्, ऋतुचक्रीयम्, वैदिकीयम्, पर्यावरणीयम्, प्राशस्तिकीयम्, प्राकीर्णकीयम् गणनीय है। इस रचना में श्री आचार्य ने सरल सरस और प्रवाहमयी भाषा में विभिन्न विषयों से सम्बद्ध संस्कृत गीत प्रस्तुत किये है गीतों के भाव सामाजिक जनजागरण, राष्ट्रीय एकता, पर्यावरण तथा आधुनिक समस्याओं के चिन्तन से युक्त है।

डॉ. हरिराम आचार्य ने हिन्दी में भी अनेक ग्रन्थ लिखे है- खुले किरणपाल (काव्य संग्रह) आदिम राग (काव्यसंग्रह) अकालसन्ध्या (नाटक) ये तुफान के पत्ते (एंकाकी संग्रह) रेत का आंचल (रेडियो नाट्य संकलन) आदिम संस्कार, स्रष्टा की हार, भद्रपुरुष, रेत का दर्द, एक भिखारी की वसीयत, रामायण के तीन नारी पात्र, विजयपर्व, कविकुलगुरुकालिदास आदि प्रमुख है।

अनुदित रचनाओं में–आगमतीर्थ, गाथासतसई, गीतगोविन्दम्, आंसू और मुस्कान।

- आपने 'फार दी सेविंग साल्स' नामक आंग्ल भाषा के नाटक की भी रचना की।
- आपने राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर के 'कुलगीत' की रचना की।

- आपने सन् 1968 में राजस्थान में अकाल के समय गीत लिखा जो उस समय गांव की हर चौपाल पर गाया जाता था–**भूखे अंगना, लुटी मढैया, उजड़ी हर चौपाल है। कैसे में मुसकाऊँ मितवा, मेरे गांव अकाल है।**

आपकी अभिनय में भी रुचि रही है डॉ. श्रीधर भास्कर वर्णेकर रचित विवेकानन्दविजयम् का मञ्चन 1975 में आपके निर्देशन में हुआ। जिसमें स्वयं आपने स्वामी विवेकानन्द का अभिनय किया। राजस्थान विश्वविद्यालय में संस्कृत के मृच्छकटिकम् नाटक के हिन्दी मञ्चन में आचार्य जी ने निर्देशन के साथ ही नायक चारुदत्त की भूमिका भी अदा की। उस समय आप छात्र जीवन में थे आपके सहपाठी प्रसिद्ध हास्य अभिनेता असरानी ने मैत्रेय का अभिनय किया था।

7. डॉ. शिवसागर त्रिपाठी

व्यक्तित्व

जन्म	-	2 जुलाई 1934।
जन्म स्थान	-	उत्तरप्रदेश के हरदोई जिले में 'सण्डीला' नामक स्थान।
पिता	-	श्री शिव गोविन्द त्रिपाठी।
शिक्षा-दीक्षा	-	1954 में B.A. तथा साहित्य रत्न परीक्षा उत्तीर्ण।
		1956 में M.A. संस्कृत आगरा विश्वविद्यालय, (प्रथम श्रेणी)।
		1959 में M.A. हिन्दी।
		1961 में आचार्य प्रथम श्रेणी।
		1966 में राजस्थान विश्वविद्यालय से Ph.D की उपाधि।

अध्यापन कार्य-

1. 1955 में कानपुर के ए. एन. कॉलेज में अध्यापन कार्य।
2. 1956 से 1962 तक राजकीय महाविद्यालय, ब्यावर में प्राध्यापक।
3. 1962 में राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।
4. 1994 में राजस्थान विश्वविद्यालय में संस्कृत विभागाध्यक्ष पद से सेवानिवृत्ति।

पुरस्कार/सम्मान

1956 में आगरा विश्वविद्यालय से स्वर्णपदक।
1961 में सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय से (स्वर्णपदक)।
1999-2000 में अम्बिकादत्तपुरस्कार राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर द्वारा।
1977 में विद्वत् सम्मान।
2013 में भ्रष्टायनम् काव्य पर कालिदास पुरस्कार।
2013 में महर्षि व्यास पुरस्कार।
2018 में राष्ट्रपति सम्मान।

डॉ. शिवसागर त्रिपाठी के लिखित एंव सम्पादित ग्रन्थों का नामोल्लेख निम्नलिखित है-

1. श्री गान्धि गौरवम् (1973)
2. प्राणाहुतिः (1977)

3. श्रीमद् भगवद्गीता (1977,81-95)
4. छन्दशाकुन्तलम् (1978)
5. मेघदूतम् (1982)
6. मुद्राराक्षसम् (1983)
7. कादम्बरी (1984)
8. शिशुपालवधम् (1985)
9. रामायण एवं महाभारत का शाब्दिक विवेचन (1986)
10. निर्वचन कोश (1988)
11. नवोन्मेष (1990)
12. राष्ट्रालोकः 1 (1991) 2 (1998)
13. वेदान्तसार (1992)
14. गीताविज्ञानभाष्यम् (1994)
15. सन्दर्भ -3 (1995)
16. संस्कृतकाव्यकल्लोलिनी (1998)
17. आचार्यविद्यासागर ग्रन्थावली परिशीलनम् (2000)
18. कथाकल्प (2001-2002)
19. कथाकृतिः (2001)
20. श्री रामचन्द्रायणम् (सुन्दरकाण्डम्) 2002
21. सन्दर्भ- 4 (2002)
22. आचार्यप्रज्ञा (2002)
23. पूजा पद्धति (2003)
24. भ्रष्टाचारसप्तशती (2003)
25. भ्रष्टायनम् (2003)
26. नाट्यकल्पः (2003)
27. नाट्यकृति (2003)

प्रकाशनाधीन

1. निर्वचनशास्त्र एवं पौराणिक निर्वचन।
2. आधुनिकालापः
3. भ्रष्टोपनिषत्
4. द्रुतपाठावलिः
5. निर्वचनात्मक निबन्धः
6. शब्दधुनी
7. यौग्मकम्
8. त्रिभाषाकोशः
9. दयोदय उदयिनी टीकान्वित
10. स्वातन्त्र्य स्वर्णजयन्ति शतकम्
11. रूपान्तराशतकम्।

डॉ. शिवसागर त्रिपाठी

जीवन परिचय

डॉ. शिवसागर त्रिपाठी संस्कृत के उद्भट्ट विद्वान् तो है ही सरल हृदय एवं मृदुभाषी मानव भी है। इनका जन्म 2 जुलाई 1934 ई. को उत्तर प्रदेश प्रान्त के अन्तर्गत हरदोई नामक जिले के सण्डीला नामक ग्राँम में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री शिवगोविन्द त्रिपाठी तथा माता का नाम श्रीमती हरिप्यारी त्रिपाठी है। डॉ. शिवसागर का विवाह सुरौली ग्राम जिला उन्नाव (यू.पी) में संस्कृत-व्याकरण एवं दर्शन साहित्य के प्रकाण्ड विद्वान् श्री शोभाराम अग्निहोत्री की सुपुत्री अन्नपूर्णा से 1954 ई. में हुआ था। श्री त्रिपाठी के 5 सन्तानें है जिनमें 3 पुत्र द 2 पुत्रियां है। श्री वाचस्पति त्रिपाठी, उषस्पति त्रिपाठी, श्री रमेश त्रिपाठी, श्रीमती रञ्जना व श्रीमती शोभना है।

शिक्षा-दीक्षा

श्री त्रिपाठी की प्रारम्भिक शिक्षा मूल निवास स्थान हरदोई में सण्डीला स्कूल व कॉलेज में सम्पन्न हुई थी। त्रिपाठी ने सन् 1954 में बी. ए. तथा साहित्यरत्न परीक्षा उत्तीर्ण की सन् 1956 में आगरा विश्वविद्यालय से एम. ए. (संस्कृत) परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की तत्पश्चात् 1959 में आपने हिन्दी M.A. से परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया। 1961 में वाराणसी के सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय से आचार्य की परीक्षा भी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। आपने 1966 में राजस्थान विश्वविद्यालय से Ph.D की उपाधि प्राप्त की थी।

सन् 1955 में आपने कानपुर के ए. एन. कॉलेज में अध्यापन कार्य प्रारम्भ किया था। इसके पश्चात् 1956 से 1962 तक राजकीय महाविद्यालय, ब्यावर (राज.) में प्राध्यापक रहे। 1962 में आपकी नियुक्ति राजस्थान विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में हुयी, यहाँ आचार्य, विभागाध्यक्ष के पद को अलंकृत करते हुए यथा समय सन् 1994 में सेवानिवृत्ति प्राप्त की।

डॉ. त्रिपाठी ने 1956 में आगरा विश्वविद्यालय से और 1961 में सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वधिालय से स्वर्णपदक प्राप्त किया। 1999-2000 में राजस्थान संस्कृत अकादमी ने आपको अम्बिकादत्त व्यास पुरस्कार प्रदान किया। आपको राजस्थान सरकार द्वारा 1977 में संस्कृत दिवस पर विद्वत् सम्मान प्रदान किया। उतरप्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ से आपको सम्मान **भ्रष्टायनम्** काव्य पर वर्ष 2013 में कालिदास पुरस्कार तथा 2013 में ही एक लाख रूपये का महर्षि व्यास पुरस्कार मिला था।

कृति परिचय

डॉ. शिवसागर त्रिपाठी के दो नाटक–प्राणाहुति तथा शरणरक्षणम् है। सम्भूतिः (काव्यसंग्रह), निर्वचनकोश, कथाषड्कम् रामायण और महाभारत का शाब्दिक विवेचन, छन्दोलङ्कार विवेचन इत्यादि रचनाएं उल्लेखनीय है।

1. प्राणाहुतिःनाटक : यह नाटक कश्मीर के लिए भारत और पाकिस्तान के विवाद पर आधारित है। त्रिपाठी जी ने यहाँ पकिस्तान की दुर्नीतियों का वर्णन किया है। नाटक का नायक 'मीरमकबूल' शेखानी नामक नवयुवक है। जो कि कर्त्तव्यपरायण एवं देशभक्त है। यथा– **एकोमृगाङ्को हरते महातमः, सूर्यः सदैकस्तपतीह भूतले।
अल्लोऽद्वितीय सकलं सुरक्षति, तथैव वीरों न समीहते परम्।।**

डॉ. त्रिपाठी ने इस नाटक में प्रसाद गुण युक्त 28 पद्यों की रचना की है। राजस्थान सरकार द्वारा नाटक को पुरस्कृत किया गया है।

2. शरणरक्षणम् : यह रचना सुप्रसिद्ध दानी राजा शिवि के त्यागात्मक कथानक पर आश्रित एंकाकी रूपक है।

3. सम्भूतिः- यह काव्यसंग्रह है। इसमें संकलित रचनाएं विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकशित हुई है।

4. नाट्यकल्प–इस नाट्यसंग्रह में डॉ. त्रिपाठी के चार संस्कृत एकांकी है–
i) पद्मिनीरत्नम् ii) इदं न मम iii) शरणशरणम् iv) हुतात्मसौहार्दम्।

5. कथापञ्चकम् : यह ग्रन्थ हुतात्मा, पुस्तक कृमिः, सुकन्या, अशिक्षित तथा वन्ध्या नामक पञ्चकथाओं का संकलन है।

6. छन्दोलङ्कार शाकुन्तलम् : इस ग्रन्थ में त्रिपाठी जी ने छन्दशास्त्र के सामान्य ज्ञान को प्रस्तुत करते हुए 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' में प्रयुक्त समस्त छन्दों एवं अलंकारों का शोधपूर्ण विवेचन किया है।

7. निर्वचनकोश : इस ग्रन्थ में रामायण, महाभारत, पुराणादि को शब्दों का सन्दर्भ सहित उद्धरण प्रस्तुत किया है। राजस्थान सरकार से पुरस्कृत यह ग्रन्थ प्रकाशित है।

8. रामायण और महाभारत का शाब्दिक विवेचन : निरुक्त परम्परा पर अवलम्बित उक्त कृति में रामायण और महाभारत के शब्दों का निर्वचन प्रस्तुत किया गया है।

8. पं. मोहनलालशर्मा 'पाण्डेय'

(राष्ट्रपति सम्मानित, वाचस्पति पुरस्कार सम्मानित, श्रीवाणी अलङ्करण विभूषित)

पिता का नाम	-	श्री दुर्गालाल शर्मा 'पाण्डेय'
माता का नाम	-	श्रीमती सूरजदेवी
जन्मतिथि	-	13 सितम्बर 1934
जन्मस्थान	-	जयपुर

शिक्षा-दीक्षा-1964 ई. **में महाराज संस्कृत कॉलेज, जयपुर से साहित्याचार्य।**

- 1957 ई. से 1967 ई. तक आपने जयपुर के गौड़ विप्र हायर सैकण्डरी विद्यालय में अध्यापन कार्य किया।
- 1967 ई. में आपकी संस्कृत शिक्षा विभाग, राजस्थान सरकार में व्याख्याता पद पर नियुक्ति।
- सेवानिवृत्ति- 30 सितम्बर 1992 ई. राजकीय संस्कृत कालेज अजमेर से।

पुरस्कार/सम्मान

पं. मोहनलाल शर्मा पाण्डेय को साहित्य सर्जन हेतु अनेक पुरस्कार व सम्मान प्राप्त हुए। कतिपय प्रमुख पुरस्कारों व सम्मानों का विवरण इस प्रकार है-

(1) **राष्ट्रपति सम्मानित- सन् 2000** में राष्ट्रपति के आर. नारायणन् द्वारा संस्कृत में पाण्डित्य निपुणता के लिए।
(2) **श्री वाणी अलंकरण- सन् 2009** में पद्मिनी उपन्यास पर रामकृष्ण जयदयाल डालमिया श्री वाणी अलंकरण न्यास नई दिल्ली।
(3) **सम्मान पत्र नवम्बर 1992** द्वारा कुलपति वेद वेदाङ्ग आयुर्वेद विद्यापीठ, इन्दौर एवं अखिल भारतीय वेद महोत्सव, इन्दौर म.प्र.।
(4) **माघ पुरस्कार सन् 1993** पत्रदूत खण्डकाव्य पर राजस्थान संस्कृत अकादमी का सर्वोच्च पुरस्कार।
(5) **श्री रामजीलाल शास्त्री स्मृति सम्मान** मई 1995 राजस्थान संस्कृत संसद् जयपुर।
(6) **राज्यस्तरीय विद्वत्सम्मान एवं पुरस्कार-** संस्कृत दिवस पर सन् 1995 राजस्थान सरकार द्वारा संस्कृत शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट सेवा एवं योगदान के उपलक्ष्य में।

(7) **वाचस्पति पुरस्कार-** सन् 2002 पद्मिनी उपन्यास पर बिड़ला फाउन्डेशन, बिड़ला नई दिल्ली द्वारा।
(8) **हारितऋषि सम्मान-** 2000-2001 में महाराणा फाउण्डेशन उदयपुर द्वारा।
(9) **अखिल भारत स्तरीय विद्वत् सम्मान-** 1999-2000 में मानव संसाधन विकास मन्त्रालय राष्ट्रीय संस्थान नई दिल्ली द्वारा।
(10) **प्रथम पुरस्कार अखिल भारतीय समस्यापूर्तिस्पर्धा**–2001 में राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन जयपुर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलन के अवसर पर।
(11) **संस्कृत साधना शिखर पुरस्कार**–2013 संस्कृत दिवस पर राजस्थान सरकार द्वारा सर्वोच्च सम्मान।
(12) **राज्यस्तरीय विद्वत्सम्मान एवं पुरस्कार** -1995 संस्कृत दिवस पर राजस्थान सरकार द्वारा।
(13) **भट्टमथुरानाथ शास्त्री साहित्य सम्मान-** 2004-05 राजस्थान संस्कृत अकादमी द्वारा।
(14) **योग्यतापारितोषिक** -1998-99 में पद्मिनी उपन्यास पर संस्कृत शिक्षा विभाग, राजस्थान सरकार द्वारा।
(15) **योग्यता पारितोषिक–**2009 में 'नतितति' एक वर्ण प्रधान चित्र काव्य हेतु संस्कृत शिक्षा विभाग, राजस्थान सरकार द्वारा।
(16) **विशिष्ट विद्वत् सम्मान**–2004-05 में राजगङ्गा चेरिटेबल ट्रस्ट जयपुर।
(17) **पं. नित्यानन्द शास्त्री स्मृति सम्मान-** 2008 में अखिल भारतीय साहित्य परिषद् एवं संस्कृत विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर द्वारा।

शास्त्रमहोदधि उपाधि

सन् 1995 में श्री वैदिक संस्कृत प्रचारक संघ जयपुर द्वारा प्रौढ़ पाण्डित्य के लिए महामहोपाध्याय पं. श्री गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी की स्मृति में यह उपाधि प्रधान की गई।

विद्यासागर उपाधि

2006 में बदरिकाश्रमस्थ ज्योतिर्मठ एवं द्वारकास्थ शारदापीठ के जगद्गुरु शंकराचार्य स्वरूपानन्द सरस्वती द्वारा इस उपाधि से अंलकृत किया गया।

साहित्य अकादमी अनुवाद पुरस्कार (2015)–**अहमेवराधा-अहमेव कृष्णः**।

रचना परिचय

पं. मोहनलाल पाण्डेय द्वारा विरचित ग्रन्थों का विवरण इस प्रकार है–

पद्मिनी, रसकपूरम्, पत्रदूतम्, नतितति, समस्यासौहित्यम्, संस्कृतकाव्यकौमुदी, संस्कृतसोपानम्, श्रीरामचरिताब्धिरत्नम्। इनके अतिरिक्त आपने पौरोहित्य कर्म से सम्बद्ध चतुर्वेदोक्त ग्रह शान्ति पद्धति एवं विशिष्ट व्रतोद्यापनविधिः तथा विभिन्न देवताओं के पूजा पद्धति ग्रन्थ भी लिखे है। श्रीहनुमत्पूजापद्धति, श्रीरामपूजापद्धति, श्रीगणेशपूजापद्धति, श्रीकृष्णपूजा पद्धति, श्रीदुर्गापूजापद्धति, श्रीभैरवपूजापद्धति, सप्तर्षिपूजापद्धति।

1. **रसकपूरम्-** (**प्रकाशित-** 1993) अनूदित ऐतिहासिक संस्कृत गद्यकाव्य।
- पं. मोहनलाल पाण्डेय ने आचार्य उमेश शास्त्री के हिन्दी उपन्यास रसकपूर का संस्कृत में अनुवाद इसी शीर्षक से किया है।
- इस उपन्यास की कथावस्तु रसकपूर के नाम से विख्यात नृत्यागंना जिसने जयपुर के राजा जगत्सिंह की प्रेयसी बनकर महारानियों में प्रमुख स्थान प्राप्त किया तथा इतिहास प्रसिद्ध नूरजहाँ के समान शासन की बागडोर संभाली। अन्त में षडयन्त्र का शिकार होकर आजीवन कारावास को प्राप्त हुई।

- इसमें 13 विराम है।
- उर्दूनिष्ठ शब्दों को संस्कृत में प्रस्तुत करना इस काव्य की प्रमुख विशेषता है।

2. **पद्मिनी उपन्यास-** (**प्रकाशित-** 1999)

पद्मिनी नामक रचना शिवराजविजयम् की शैली में विरचित ऐतिहासिक उपन्यास गद्यकाव्य है। इसकी कथावस्तु 12 विकासों में विभक्त है। जिनमें चित्तौड़ की महारानी पद्मिनी की ऐतिहासिक कथा को कल्पना मिश्रण द्वारा मौलिक स्वरूप प्रदान कर नूतन शैली में प्रस्तुत किया गया है। दिल्ली के मुगल सम्राट अल्लाउद्दीन खिलजी ने पद्मिनी के सौन्दर्य से आकृष्ट हो उसे प्राप्त करने के उद्देश्य से आक्रमण कर चित्तौड़ दुर्ग को घेर लिया। रत्न सिंह के वीरगति प्राप्त करने पर पद्मिनी ने जौहरव्रत किया।
- डॉ. रेवा प्रसाद द्विवेदी ने पद्मिनी उपन्यास को पढ़कर श्री पाण्डेय को 'प्रतिनवबाणभट्' कहा है।
- डॉ. हरिराम आचार्य ने पद्मिनी उपन्यास को मारवाणी शैली की संज्ञा दी है।
- डॉ. शिवसागर त्रिपाठी ने पद्मिनी उपन्यास का सक्षिप्त नाट्य रूपान्तरण '**पद्मिनीरत्नम्**' शीर्षक से किया है, जो उनकी नाट्य कल्प रचना में संकलित है।

3. **पत्रदूतम्-**
- यह खण्डकाव्य विश्व प्रसिद्ध ईराक के खाड़ी युद्ध की घटना को आधार बनाकर लिखा गया है।
- इसमें खाड़ी युद्ध की घटनाओं की जानकारी सेनाध्यक्ष अपनी पत्नी को पत्र के माध्यम से देता है।
- अतः यह खण्डकाव्य दूतकाव्य के नाम से अभिहित है। सन् 1999 में प्रकाशित इस खण्डकाव्य में 121 श्लोक है।

4. **नतितति-**
- एक वर्ण प्रधान मुक्तक चित्र काव्य है।
- इसमें विभिन्न देवताओं की स्तुति की गई है।
- इसमें वर्णमाला के एक-एक वर्ण को नायक बनाकर पद्य रचना की गई है।
- पद्य का प्रत्येक शब्द उस वर्ण से ही आरम्भ होता है
- इस तरह एक पद्य एक ही वर्ण में गुम्फित होने से इसे एकाक्षर चित्रम् भी कहा जाता है।
- यह चित्रकाव्य, स्त्रोतकाव्य, मुक्तककाव्य तीनों ही श्रेणी में परिगणित होता है।
- ढुण्ढि राज गणेश जी की स्तुति में श्री आचार्य लिखते है -

ढौकिता ढौकते ढुण्ढिं, ढक्का ढौलक ढौकने।
ढक्काभि ढौंकतो ढौकं, ढौकको ढालि ढुण्ढिना।।

5. **समस्या सौहित्यम्-** (**प्रकाशित-** 2012)
- यह समस्यापूर्तिपरक मुक्तककाव्य है।
- इसका उपनाम मुक्तक मौक्तिक भी है।
- इस काव्य में आध्यात्मिक, दैवीय, राष्ट्रीय, सामाजिक इत्यादि विषयों पर आधारित समस्यापूर्ति के पद्यों को प्रस्तुत किया गया है।
- इसमें 233 शीर्षकों में समस्या पूर्तिकारक लगभग 500 पद्य है।

6. **संस्कृतकाव्यकौमुदी** (**प्रकाशित**-2010)
- यह काव्य श्री पाण्डेय द्वारा समय-समय पर रचित विभिन्न पद्यों का संकलन है।
- वर्ण्य विषय की दृष्टि से यह ग्रन्थ प्रणतितयः, प्रशस्तिका, समस्या सौहित्यम्, राष्ट्रीयम्, वैदुषीवैभवम्, लोकनायकाः शीर्षकों से छः भागों में विभक्त है।
- इस काव्य में विभिन्न छन्दों में रचित लगभग 500 पद्य है।

7. **संस्कारसोपानम्**—इस ग्रन्थ में भारतीय संस्कृति में प्रचलित 16 संस्कारों का वैज्ञानिक विवेचन हिन्दी भाषा में प्रस्तुत किया गया है।

8. **श्रीरामचरिताब्धिरत्नम्**—श्री नित्यानन्द शास्त्री विरचित इस महाचित्र काव्य पर पं. मोहनलाल शर्मा ने हिन्दी टीका 'रत्न प्रभा' लिखी है।

श्री पाण्डेय ने राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर द्वारा प्रकाशित स्वातन्त्र्य सहयोगिनः, राजस्थान गौरवम् नाम दो ग्रन्थ तथा स्वरमंगला नामक संस्कृत पत्रिका का सम्पादन किया है।

प्रश्नोत्तर

प्र.1 जीवनस्यपृष्ठद्वयम् के प्रणेता कौन है ?
उत्तर देवर्षि कलानाथ शास्त्री।
प्र.2 जीवनीसंग्रह है ?
उत्तर विद्वत्जनचरितामृतम्, सुधीजनवृतम्।
प्र.3 संस्कृत नाट्यवल्लरी के प्रणेता कौन है ?
उत्तर देवर्षि कलानाथ शास्त्री।
प्र.4 देवर्षि कलानाथ शास्त्री प्रणीत वल्लरी ग्रन्थ है ?
उत्तर कथानक, आख्यान, नाट्य तथा कविता वल्लरी।
प्र.5 जीवनस्यपृष्ठद्वयम् के नायक नायिका कौन है ?
उत्तर राकेश-कल्पना।
प्र.6 जीवनस्यपृष्ठद्वयम् उपन्यास किस पत्रिका में प्रकाशित हुआ है ?
उत्तर भारती पत्रिका।
प्र.7 देवर्षि कलानाथ शास्त्री प्रणीत रूपक है ?
उत्तर महाभिनिष्क्रमणम्, प्रतापसिंहीयम् तथा चितौड सिंहीयम्।
प्र.8 मिर्जागालिब की गजलों का संस्कृत काव्यानुवाद किसने किया था ?
उत्तर देवर्षि कलानाथ शास्त्री।
प्र.9 कविशिरोमणि की उपाधि से अलंकृत कवि है ?
उत्तर भट्ट मथुरानाथ शास्त्री ।
प्र.10 वैभवत्रयी के अन्तर्गत है ?
उत्तर जयपुरवैभवम्, साहित्यवैभवम्, गोविन्दवैभवम्।
प्र.11 वैभवत्रयी के प्रणेता है ?
उत्तर भट्ट मथुरानाथ शास्त्री।
प्र.12 आदर्शरमणी उपन्यास के प्रणेता है ?
उत्तर भट्ट मथुरानाथ शास्त्री।
प्र.13 पं. हरिजीवन मिश्र नाट्य पुरस्कार किसे प्राप्त हुआ था ?
उत्तर देवर्षि कलानाथ शास्त्री।
प्र.14 शरणार्थी रचना के प्रणेता कौन है ?
उत्तर देवर्षि कलानाथ शास्त्री।

प्र.15 भट्ट मथुरानाथ शास्त्री का निबन्धसंग्रह है ?
उत्तर प्रबन्धपारिजात।
प्र.16 वेदवेदांग पुरस्कार से सम्मानित कवि है ?
उत्तर देवर्षि कलानाथ शास्त्री।
प्र.17 लेनिनामृतम् महाकाव्य के प्रणेता कौन है ?
उत्तर पद्म शास्त्री।
प्र.18 राष्ट्रालोक के प्रणेता कौन है ?
उत्तर पद्म शास्त्री।
प्र.19 वेदविज्ञानामृतम् शास्त्रीय काव्य के प्रणेता कौन है ?
उत्तर पद्म शास्त्री।
प्र.20 भारत सोवियत मैत्री पर आधारित काव्य है ?
उत्तर लेनिनामृतम् महाकाव्य।
प्र.21 लेनिनामृतम् महाकाव्य का अंगीरस है ?
उत्तर वीर रस।
प्र.22 स्वराज्य खण्डकाव्य के प्रणेता कौन है ?
उत्तर पद्म शास्त्री।
प्र.23 नवलकिशोरकांकरवेदवेदांगपुरस्कार राजस्थान संस्कृत अकादमी द्वारा किसे प्रदान किया गया ?
उत्तर पद्मशास्त्री।
प्र.24 सोवियतभूमि नेहरु पुरस्कार उत्तरप्रदेश संस्कृत अकादमी द्वारा किसे प्रदान किया गया ?
उत्तर पद्म शास्त्री।
प्र.25 न्यायसिद्धान्तता (दर्शनग्रन्थ) के प्रणेता कौन है ?
उत्तर पद्म शास्त्री।
प्र.26 राजस्थान के प्रथम संस्कृत डी.लिट् विद्वान् कौन है ?
उत्तर डॉ. प्रभाकर शास्त्री
प्र.27 डॉ. प्रभाकर शास्त्री को प्राप्त किन्हीं तीन पुरस्कारों के नाम लिखिए ?
उत्तर हारीत ऋषि पुरस्कार 1993 ई., विज्ञान पुरस्कार 2003 ई., माघ पुरस्कार 2006 ई.।
प्र.28 आत्म वेदना कहानी के प्रणेता कौन है ?
उत्तर डॉ. प्रभाकर शास्त्री।
प्र.29 हरिजनों पर जमीदारों द्वारा किये गये अत्याचारों का वर्णन प्रभाकर जी की किस कहानी मे मिलता है ?
उत्तर आत्मवेदना।
प्र.30 राजस्थान संस्कृत अकादमी की स्थापना किसने की थी ?
उत्तर डॉ. प्रभाकर शास्त्री।
प्र.31 मानवंश महाकाव्य के प्रणेता कौन है ?
उत्तर पं. सूर्यनारायण शास्त्री।
प्र.32 मानवंश महाकाव्य में कितने सर्ग है ?
उत्तर 17 सर्ग ।

प्र.33 मानवंश महाकाव्य का अंगीरस है ?

उत्तर वीर रस।

प्र.34 पं. सूर्यनारायण शास्त्री कृत खण्डकाव्य है ?

उत्तर उद्योगलहरी, संस्कृतदूतम्।

प्र.35 समस्यासन्दोह काव्य के प्रणेता कौन है ?

उत्तर भट्ट मथुरानाथ शास्त्री।

प्रश्नोत्तराणि

लौकिक साहित्यः
भाग–क

प्रश्नः-1 उदयनस्य वीणायाः नाम किम् ?
(क) प्रेमवती (ख) रागवती (ग) घोषवती (घ) आलापवती (ग)

प्रश्नः-2 अभिज्ञानशाकुन्तले शकुन्तलायाः मातुः नाम किम् ?
(क) सानुमती (ख) गौतमी (ग) अदितिः (घ) मेनका (घ)

प्रश्नः-3 किरातार्जुनीयस्यमल्लिनाथसूरिकृतटीकायाः नाम किम् ?
(क) सञ्जीवनी (ख) घण्टापथः (ग) छाया (घ) लोचनम् (ख)

प्रश्नः-4 शुकनासोपदेशानुसारेणाहङ्कारस्य एकं प्रबलं कारणं वर्तते ?
(क) बुद्धिमत्ता (ख) ज्ञानराहित्यम् (ग) गर्भेश्वरत्वम् (घ) सौजन्यम् (ग)

प्रश्नः-5 नीतिशतके भर्तृहरेः भार्यायाः नाम किम् ?
(क) मनोवती (ख) रागिनी (ग) अवन्तिका (घ) पिङ्गला (घ)

प्रश्नः-6 स्वप्नवासवदत्तम् नाटके विदूषकस्य नाम किम् ?
(क) वसन्तकः (ख) कामन्दकः (ग) मकरन्दः (घ) माढव्यः (क)

प्रश्नः-7 महाभारतस्य चतुर्थपर्वणः नाम किम् ?
(क) सभापर्वम् (ख) भीष्मपर्वम् (ग) विराट्पर्वम् (घ) उद्योगपर्वम् (ग)

प्रश्नः-8 नैषधीयचरितस्य नायिका का ?
(क) पद्मावती (ख) दमयन्ती (ग) मदनिका (घ) तारावती (ख)

प्रश्नः-9 सुबन्धोःवासवदत्तायाः नायकः कः ?
(क) मित्रगुप्तः (ख) चन्द्रगुप्तः (ग) उदयनः (घ) कन्दर्पकेतुः (घ)

प्रश्नः-10 मेघदूतकाव्ये प्रयुक्तस्य छन्दसः नाम वर्तते ?
(क) स्त्रग्धरा (ख) भुजङ्गप्रयातम् (ग) मन्दाक्रान्ता (घ) मालिनी (ग)

प्रश्नः-11 भवभूतिरचितस्य प्रकरण नाट्यस्य नाम किम् ?
(क) दरिद्रचारुदत्तम् (ख) मालतीमाधवम् (ग) मधुमालतीयम् (घ) नागानन्दम् (ख)

प्रश्नः-12 जयपुरवैभवम् काव्यं केन विरचितम् -
(क) भट्टमथुरानाथशास्त्रिणः (ख) पद्यशास्त्रिणा (क)
(ग) शिवसागरत्रिपाठिना (घ) कलानाथशास्त्रिणा

प्रश्नः-13 भर्तृहरिमतेः मनुष्यस्य परं भूषणं किम् ?
(क) सुजनता (ख) विनयः (ग) क्षमा (घ) शीलम् (घ)

प्रश्नः-14 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' इति केन उक्तम् ?
(क) भर्तृहरिणा (ख) भारविना (ग) बाणभट्टेन (घ) भासेन (ख)

प्रश्नः-15 अभिज्ञानशाकुन्तले नाटके दुष्यन्तशकुन्तलयोः पुत्रस्य नाम किं वर्तते ?
(क) अरिदमनः (ख) पुरुदमनः (ग) सर्वदमनः (घ) इन्द्रदमनः (ग)

प्रश्नः-16 अभिज्ञानशाकुन्तले परित्यागानन्तरं शकुन्तला कुत्र न्यवसत् ?
(क) कण्वाश्रमे (ख) अत्रयाश्रमे (ग) वसिष्ठाश्रमे (घ) मारीचाश्रमे (घ)

प्रश्नः-17 शुकनासोपदेशानुसारेण लक्ष्मीः सरस्वती परिगृहीतं जनं कस्यात् नालिङ्गति ?
(क) ईर्ष्याकारणात् (ख) अपवित्रमिव मन्यमाना
(ग) अनियमित्त मन्यमाना (घ) पातकिनमिव मन्यमाना (क)

प्रश्नः-18 सुबन्धुः अग्रणी कविरस्ति ?
(क) श्लेष रचनायाम् (ख) अनुप्रास रचनायाम्
(ग) विरोधाभास रचनायाम् (घ) उत्प्रेक्षा रचनायाम् (क)

प्रश्नः-19 'मृच्छकटिकम्' प्रकरण ग्रन्थस्य विदुषकः किं नाम वर्तते ?
(क) माढव्यः (ख) मैत्रेयः (ग) वसन्तकः (घ) मित्रावसुः (ख)

प्रश्नः-20 संस्कृतनाटकानां प्रारम्भिक रूपं दृश्यते ?
(क) कादम्बर्याम् (ख) ऋग्वेदे (ग) पञ्चतन्त्रे (घ) हितोपदेशे (ख)

प्रश्नः-21 चित्रकूटं कुत्रास्ति ?
(क) मेदपाटे (ख) अवन्त्याम् (ग) मगधदेशे (घ) दिल्याम् (क)

प्रश्नः-22 वीरभूमिकाव्यस्य मङ्गलाचरणे स्तुतिः अस्ति ?
(क) एकनाथस्य (ख) गणेशस्य
(ग) एकलिङ्गस्य (घ) शैलराजतनयायाः (ख)

प्रश्नः-23 कादम्बरी कथायां पुण्डरीकस्यानुरागः कं प्रति आसीत् ?
(क) कादम्बरीम् (ख) महाश्वेताम् (ग) शाकुन्तलाम् (घ) तापसीम् (ख)

प्रश्नः-24 पञ्चतन्त्रस्य रचयिता कः ?
(क) नारायणपण्डितः (ख) भर्तृहरिः (ग) विष्णुशर्मणः (घ) उर्ध्वङ्गः (ग)

प्रश्नः-25 किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम् इति कस्य पंक्तिः ?
(क) विक्रमोर्वशीयस्य (ख) नैषधीयचरितस्य
(ग) अभिज्ञानशाकुन्तलस्य (घ) महाभारतस्य (ग)

प्रश्नः-26 भर्तृहरेः गुहा कुत्र अस्ति ?
(क) पुष्करसमीपे (ख) प्रयागसमीपे (ग) काश्मीरसमीपे (घ) द्वारिकासमीपे (क)

प्रश्नः-27 महाकाव्यस्य लक्षणमस्ति -
(क) खण्डबन्धः (ख) अंकबन्धः (ग) अर्वाचीन (घ) सर्गबन्धः (घ)

प्रश्नः-28 वैराग्यशतकस्य रचयितास्ति -
(क) वररूचिः (ख) भर्तृहरिः (ग) माघः (घ) सदानन्दः (ख)

प्रश्नः-29 प्रीतः प्रीति प्रमुखवचनं स्वागतं व्याजहार कुत्रेयमुक्तिः ?
(क) मेघदूते (ख) कुमारसम्भवे (ग) रघुवंशे (घ) ऋतुसंहारे (क)

प्रश्नः-30 वज्रादपिकठोराणि मृदूनि कुसुमादपि, लोकोत्तराणाचेत्तांसिको विज्ञातुमर्हति पद्योऽयं कस्मिन् नाटके आयाति ?
(क) मालतीमाधवे (ख) महावीरचरिते
(ग) उत्तररामचरिते (घ) अभिज्ञानशाकुन्तले (ग)

प्रश्नः-31 आर्त्तत्राणाय वः शस्त्रं न प्रहर्त्तुमनागसि, अभिज्ञानशाकुन्तले कस्य वचनं इदम् ?
(क) वैखानसस्य (ख) दुष्यन्तस्य (ग) कण्वस्य (घ) अनसूयायाः (क)

प्रश्नः-32 महाभारते शिशुपालवधः वृतान्तः कस्मिन् पर्वणि वर्तते ?
(क) सभापर्वणि (ख) भीष्मपर्वणि (ग) वनपर्वणि (घ) विराटपर्वणि (क)

प्रश्नः-33 यस्य कथा रामायणाश्रिता नास्ति ?
(क) महावीरचरितम् (ख) अभिषेकनाटकम् (ग) मृच्छकटिकम् (घ) उत्तररामचरितम् (ग)

प्रश्नः-34 भासस्य नाटकानां संख्या मन्यते–
(क) त्रीणि (ख) त्रयोदशः (ग) त्रिंशत् (घ) दश (ख)

प्रश्नः-35 मानववंश महाकाव्यस्य कविः अस्ति ?
(क) प. सूर्यनारायण शास्त्री (ख) डॉ. प्रभाकर शास्त्री
(ग) जगन्नाथः (घ) मण्डनमिश्रः (क)

प्रश्नः-36 अर्वाचीन कवि अस्ति ?
(क) श्री हर्षः (ख) कालिदासः (ग) कलानाथ शास्त्री (घ) जयदेवः (ग)

प्रश्नः-37 यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतः मा ब्रूहि दीनं वचः इति कविः कं कथयति ?
(क) मयूरम् (ख) मानवम् (ग) चातकम् (घ) मण्डूकम् (ग)

प्रश्नः-38 पद्मशास्त्री विरचिता रचनास्ति ?
(क) वेणुवादकः (ख) राजपुत्रः
(ग) राजतरङ्गिणी (घ) वेणुधारकः राजपुत्रः (घ)

प्रश्नः-39 कुमारसम्भवे महाकाव्ये कुमारस्य प्रयोगः कस्य कृतेऽस्ति ?
(क) गणेशस्य (ख) कार्तिकेयस्य (ग) भरतस्य (घ) सर्वदमनस्य (ख)

प्रश्नः-40 आर्य चारुदत्तस्य पुत्रस्य नाम किमासीत् ?
(क) रोहिताश्वः (ख) रोहितः (ग) रोहतकः (घ) रोहसेनः (घ)

प्रश्नः-41 क्लेशः फलेन किं पुनर्नवतां विद्यते इयं पंक्तिः अस्ति ?
(क) कादम्बर्याः (ख) कुमारसम्भवस्य (ग) नीतिशतकस्य (घ) हितोपदेशस्य (ख)

प्रश्नः-42 काव्यादर्श रचनास्ति ?
(क) भवभूतेः (ख) मम्मटस्य (ग) दण्डिनः (घ) भासस्य (ग)

प्रश्नः-43 समास बहुलता विशेषताकस्याः विधायाः ?
(क) गद्यस्य (ख) नाकटस्य (ग) व्याकरणस्य (घ) पद्यस्य (क)

प्रश्नः-44 वाल्मीकिं रामायणं कीदृशं ग्रन्थमस्ति ?
(क) चम्पूकाव्यम् (ख) महाकाव्यम् (ग) खण्डकाव्यम् (घ) गीतिकाव्यम् (ख)

प्रश्नः-45 किरातार्जुनीयम् महाकाव्यस्य रचयितास्ति ?
(क) श्री हर्षः (ख) भारविः (ग) दण्डी (घ) भासः (ख)

प्रश्नः-46 अभिज्ञानशाकुन्तलस्य चतुर्थाङ्कस्य कतिश्लोकाः प्रसिद्धाः ?
(क) पञ्च (ख) त्रयः (ग) सप्तम् (घ) चत्वारः (घ)

प्रश्नः-47 इक्ष्वाकुवंशे जातः ?
(क) कृष्णः (ख) बाणभट्टः (ग) रामः (घ) वेदव्यासः (ग)

प्रश्नः-48 आख्यायिकास्ति ?
(क) पञ्चतन्त्रम् (ख) मृच्छकटिकम् (ग) स्वप्नवासवदत्तम् (घ) हर्षचरितम् (घ)

प्रश्नः-49 शिवराजविजयम् इत्युभिधामुपन्यासात्मकं गद्यकाव्यं विरचितम् -
(क) बाणभट्टेन (ख) अम्बिकादत्तेन (ग) दण्डिना (घ) विष्णुदत्तं (ख)

प्रश्नः-50 जातककथाः मूलतः विरचिता -
(क) संस्कृतभाषायाम् (ख) प्राकृतभाषायाम् (ग) हिन्दीभाषायाम् (घ) पालिभाषायाम् (घ)

प्रश्नः-51 कस्मिन् ऋतौ मत्तगजाः नदन्ति स्म ?
(क) वसन्तऋतौ (ख) वर्षाऋतौ (ग) ग्रीष्म ऋतौ (घ) शरद ऋतौ (ख)

प्रश्नः-52 मित्रं पापात् निवारयति योजयते -
(क) धनाय (ख) युद्धाय (ग) हिताय (घ) यज्ञाय (ग)

प्रश्नः-53 चन्द्रालोकस्य रचयितास्ति -
(क) गीतगोविन्द रचयिता जयदेवः (ख) धनंजयः
(ग) पीयूषवर्षो जयदेवः (घ) तत्त्वचिन्तामण्यालोकस्यप्रणेताजयदेवः (घ)

प्रश्नः-54 'ऋतुसंहारम्' कस्य रचनास्ति ?
(क) कालिदासस्य (ख) भवभूतेः (ग) अश्वघोषस्य (घ) दण्डिनः (क)

प्रश्नः-55 महाभारते यक्ष प्रश्नानाम् उपयुक्तानि उत्तराणि कः दत्तवान् ?
(क) कृष्णः (ख) विदुरः (ग) कुबेरः (घ) युधिष्ठिरः (घ)

प्रश्नः-56 वैदर्भी इति का अस्ति ?
(क) भाषा शैली (ख) महाकाव्यम् (ग) नाटकम् (घ) अलंकारः (क)

प्रश्नः-57 मेघदूते कस्याः नगर्याः वर्णनमस्ति ?
(क) द्वारिकायाः (ख) पुष्पपुर्याः (ग) विदिशायाः (घ) उज्जयिन्याः (घ)

प्रश्नः-58 वेणीभूतप्रतनुसलिलातामतीतस्यसिंधुः इयं पंक्तिः अस्ति ?
(क) कादम्बर्याः (ख) अभिज्ञानशाकुन्तलस्य
(ग) मेघदूतस्य (घ) वेणीसंहारस्य (ग)

प्रश्नः-59 कालिदासस्य गीतिकाव्ये विरह व्यथा वर्णिता -
(क) दक्षस्य (ख) यक्षस्य (ग) कुबेरस्य (घ) विषयस्य (ख)

प्रश्नः-60 धर्मो रक्षति रक्षितः इयं पंक्ति अस्ति ?
(क) मनुस्मतेः (ख) महाभारतस्य (ग) नीतिशतकस्य (घ) हितोपदेशस्य (ख)

प्रश्नः-61 वक्रोक्ति निपुणः इति प्रसिद्धोऽस्ति ?
(क) कालिदासः (ख) शूद्रकः (ग) सुबन्धुः (घ) वाल्मीकिः (ख)

प्रश्नः-62 श्रुतीनामर्थानुगामिग्रन्थाः उच्यन्ते ?
(क) पुराणानि (ख) कालिदासस्य नाटकानि
(ग) भासस्य नाटकानि (घ) स्मृतयः (घ)

प्रश्नः-63 संस्कृतसाहित्यमस्ति -
(क) पञ्चविधम् (ख) द्विविधम् (ग) त्रिविधम् (घ) सप्तविधम् (ख)

प्रश्नः-64 किम् एति याति च -
(क) विनायकः (ख) लोकः (ग) वित्तम् (घ) वृत्तम् (ग)

प्रश्नः-65 कौटिल्यनाम्ना व्यवह्रियते ?
(क) चन्द्रगुप्तः (ख) नन्दराजः (ग) चणकः (घ) चाणक्यः (घ)

प्रश्नः-66 गृहिणी किमुच्यते ?
(क) वनम् (ख) गृहम् (ग) धनम् (घ) उद्यानम् (ख)

प्रश्नः-67 अपरीक्षितकारकस्य कस्य पुस्तकस्य भागः ?
(क) मृच्छकटिकस्य (ख) गीतगोविन्दस्य (ग) पञ्चतन्त्रस्य (घ) विक्रमोर्वशीयस्य (ग)

प्रश्नः-68 शुकनासोपदेशः वर्तते ?
(क) दशकुमारचरिते (ख) कादम्बर्याम्
(ग) हर्षचरिते (घ) अभिज्ञानशाकुन्तले (ख)

प्रश्नः-69 पण्डितविद्याधर शास्त्री किं रचितवान् ?
(क) मेरू सौन्दर्यम् (ख) मयूर सौन्दर्यम्
(ग) मरु सौन्दर्यम् (घ) मगधसौन्दर्यम् (ग)

प्रश्नः-70 श्रीपदम् शास्त्रिण रचनास्ति ?
(क) कल्पतरुः (ख) स्वर्णकाकः (ग) लौहतुला (घ) प्रत्यभिज्ञानम् (ख)

प्रश्नः-71 मदेक पुत्रा जननी जरातुरा.......................कस्येयमुक्तिः ?
(क) दमयन्त्या (ख) हंसस्य (ग) भीमस्य (घ) नलस्य (ख)

प्रश्नः-72 अधस्तन युग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत -
(क) चीयते बालिशस्यापि सत्क्षेत्र पतिता कृशिः (1) मृच्छकटिकम्
(ख) आसीत् स दोलाचल चित्तवृत्तिः (2) कर्णभारम्
(ग) हृदये गृह्यते नारी यदीदं नास्ति गम्यताम् (3) रघुवंशम्
(घ) हुतं च दत्तं तथैव तिष्ठति (4) मुद्राराक्षसम्

	(1)	(2)	(3)	(4)
(क)	4	1	2	3
(ख)	3	2	1	4
(ग)	2	3	4	1
(घ)	4	3	1	2

(घ)

प्रश्नः-73 कुरङ्गकेन हर्षचरिते किं कर्म कृतम् ?
(क) चिकित्साकर्म (ख) पूजाकर्म (ग) वार्ताप्रदानम् (घ) भाग्यगणनम् (ग)

प्रश्नः-74 कस्य काव्यं विद्वदौषधं कथ्यते -
(क) माघस्य (ख) श्री हर्षस्य (ग) कालिदासस्य (घ) अश्वघोषस्य (ख)

प्रश्नः-75 सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशोमन्वन्तराणि च। इत्याद्युक्तिः केन सम्बद्धा -
(क) वेदलक्षणेन (ख) ज्योतिषलक्षणेन (ग) महाकाव्यलक्षणेन (घ) पुराण लक्षणेन (ग)

प्रश्नः-76 यस्य कथा रामायणाश्रितानास्ति ?
(क) रघुवंशस्य (ख) भट्टिकाव्यस्य (ग) जानकी हरणस्य (घ) किरातार्जुनीयस्य (घ)

प्रश्नः-77 जय इति कस्य महाकाव्यस्य नामान्तरम् ?
(क) रामायणस्य (ख) महाभारतस्य (ग) रघुवंशस्य (घ) शिशुपालवधस्य (ख)

प्रश्नः-78 दशरूपकमते नाटकस्य अङ्क संख्या भवति ?
(क) 5-7 (ख) 5-8 (ग) 5-10 (घ) 7-10 (ग)

प्रश्नः-79 रत्नावल्यां उदयनस्य कञ्चुकी कः ?
(क) माढव्यः (ख) बाभ्रव्य (ग) यौगन्धरायणः (घ) वसन्तकः (ख)

प्रश्नः-80 अकारणाविष्कृतवैरदारूणादसज्जानात् कस्य भयं न जायते—इति केन कविनोक्तम् ?
(क) कालिदासेन (ख) भारविणा (ग) श्री हर्षेण (घ) बाणभट्टेन (घ)

प्रश्नः-81 अधस्तन युग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत -
(क) हर्षः (1) मुद्राराक्षसः
(ख) भवभूतिः (2) स्वप्नवासवदत्तम्
(ग) विशाखदत्तः (3) उत्तररामचरितम्
(घ) भासः (4) रत्नावली

	(1)	(2)	(3)	(4)
(क)	3	2	4	1
(ख)	4	3	1	2
(ग)	2	1	3	4
(घ)	1	4	2	3

(ख)

प्रश्नः-82 अधस्तनेषु एकाङ्कि रूपकमस्ति -
(क) प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् (ख) कर्णभारम्
(ग) चारुदत्तम् (घ) अविभारकम् (ख)

प्रश्नः-83 श्रुतेरिवार्थस्मृतिरन्वगच्छत् इत्यस्ति ?
(क) रामायणे (ख) महाभारते (ग) रघुवंशे (घ) वेणीसंहारे (ग)

प्रश्नः-84 शाल्मलीवृक्षवर्णनं कस्मिन् काव्ये दृश्यते ?
(क) नलचम्पूः (ख) कादम्बरी (ग) हर्षचरितम् (घ) वासवदत्ता (ख)

प्रश्नः-85 संस्कृतवाङ्मये करुणरसस्य वर्णने कः विशिष्यते ?
(क) कालिदासस्य (ख) बाणभट्टः (ग) अश्वघोषः (घ) भवभूतिः (घ)

प्रश्नः-86 बृहस्त्रय्यामस्य ग्रन्थस्य गणना न भवति ?
(क) किरातार्जुनीयस्य (ख) शिशुपालवधस्य (ग) कुमारसम्भवस्य (घ) नैषधीयचरितस्य (ग)

प्रश्नः-87 अधारिपद्मेशुतदङ्घ्रिणां, क्व तच्छयच्छायलवोऽपि पल्लवे अस्मिन् पद्यांशे कस्य सौन्दर्यं वर्णितम् -
(क) दमयन्त्याः (ख) नलस्य (ग) रामस्य (घ) सीतायाः (ख)

प्रश्नः-88 श्वामास्वङगं चकित हरिणीप्रेक्षणे दृष्टिपातं..................। इति पद्यांशः कस्मिन् ग्रन्थे उपलभ्यते -
(क) रघुवंशे (ख) नैषधीय-चरिते (ग) मेघदूते (घ) बुद्धचरिते (ग)

प्रश्नः-89 शिशुपालवधस्य प्रथम सर्गस्य नाम किम् ?
(क) कृष्णनारदसम्भाषणम् (ख) नारदावतरणम्
(ग) नारदगुणकीर्तनम् (घ) कृष्णगुण कीर्त्तनम्

प्रश्नः-90 दुष्यन्त पुत्रस्य प्रथमं नाम किम् आसीत् ? (क)
(क) भरतः (ख) दौष्यन्तिः (ग) सर्वदमनः (घ) गौतमः

प्रश्नः-91 कृतककोपवृतान्तः कस्मिन् दृश्य काव्ये वर्तते - (ग)
(क) मुद्राराक्षसे (ख) मृच्छकटिके (ग) उत्तररामचरिते (घ) वेणीसंहारे

प्रश्नः-92 अधस्तनयुग्मानां समीचीन तालिकां चिनुतः ? (क)
(क) उत्तरामचरितम् (1) भासः
(ख) बुद्धचरितम् (2) भवभूतिः
(ग) वेणीसंहारम् (3) भट्टनारायणः
(घ) स्वप्नवासवदत्तम् (4) अश्वघोषः

	(1)	(2)	(3)	(4)
(क)	2	4	3	1
(ख)	1	2	3	4
(ग)	4	3	2	1
(घ)	2	3	4	1

(क)

प्रश्नः-93 मृच्छकटिकम् इति कस्य रूपकस्योदाहरणं भवति ?
(क) समवकारस्य (ख) नाटकस्य (ग) प्रकरणस्य (घ) भाणस्य (ग)

प्रश्नः-94 निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु। प्रीतिर्मधुर सान्द्रासु मञ्जरीष्विव जायते।। कस्मिन् ग्रन्थे उपलभ्यतेऽयं श्लोकः ?
(क) हर्षचरिते (ख) अभिज्ञान शाकुन्तले (ग) रघुवंशे (घ) कादम्बर्याम् (क)

प्रश्नः-95 वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः इत्युक्तिः कुत्रत्या ?
(क) शिशुपालवधे (ख) किरातार्जुनीयमहाकाव्ये
(ग) नैषधीयचरित महाकाव्ये (घ) उत्तरराम चरिते (ख)

प्रश्नः-96 शिशुपालवध महाकाव्यस्यानुसारम् इन्द्रस्य सन्देशमादाय कृष्ण सभायां कः आगतः ? (ग)
(क) जरासन्धः (ख) दुर्योधनः (ग) नारदर्षिः (घ) युधिष्ठिरः

प्रश्नः-97 कर्णभाररूपकं कत्यकांत्मकम् ?
(क) एकाङ्कात्मकम् (ख) चतुरङ्कात्मकम् (क)
(ग) दशाङ्कात्मकम् (घ) पञ्चाङ्कात्मकम्

प्रश्नः-98 धीवरेण शकुन्तलाया अंगुलीयक प्राप्तिः कस्मिन्नङ्के वर्णिता ? (क)
(क) पञ्चमाङ्के (ख) सप्तमाङ्के (ग) षष्ठाङ्के (घ) द्वितीयाङ्के

प्रश्नः-99 महाश्वेतायाः प्रेम्णि कः स्वप्राणान् त्यक्तवान् ? (घ)
(क) चन्द्रापीडः (ख) हारीतः (ग) इन्द्रायुधः (घ) पुण्डरीकः

प्रश्नः-100 कस्मिन् रूपके नायिका नास्ति ? (ख)
(क) अभिज्ञानशाकुन्तले (ख) मुद्राराक्षसे (ग) उत्तररामचरिते (घ) रत्नावल्याम्

लौकिक साहित्यः
भाग–ख

प्रश्नः-1 संस्कृतमहाकाव्यकारेषु 'आतपत्र' उपाधेन कः भूषितः ?
(क) कालिदासः (ख) भारविः (ग) अश्वघोषः (घ) भर्त मेण्ठः (ख)

प्रश्नः-2 संस्कृतसाहित्ये कविताकामिन्याः हासः कः कथ्यते -
(क) भासः (ख) कालिदासः (ग) वत्सराजः (घ) जगन्नाथः (क)

प्रश्नः-3 संस्कृतसाहित्ये प्रतीकात्मकस्य नाटकस्य नामास्ति ?
(क) विद्धशालभंजिका (ख) प्रसन्नराघवम्
(ग) प्रबोधचन्द्रोदयम् (घ) आश्चर्यचूडामणिः (ग)

प्रश्नः-4 हर्षचरितस्य संस्कृत नाटकस्य नामास्ति ?
(क) नागानन्दम् (ख) दिङ्नागम् (ग) हरविजयम् (घ) हनुमन्नाटकम् (क)

प्रश्नः-5 संस्कृतसाहित्ये वासवदत्ता कथा केन रचिता ?
(क) भासेन (ख) शूद्रकेण (ग) सुबन्धुना (घ) धनपालेन (ग)

प्रश्नः-6 'भामिनी-विलास' गीति-काव्यस्य रचयिता अस्ति ?
(क) जयदेवः (ख) पण्डितराज जगन्नाथः
(ग) गोवर्धनाचार्यः (घ) अमरुकः (ख)

प्रश्नः-7 कथासरित्सागरस्य रचयितास्ति ?
(क) सोमदेवः (ख) क्षेमेन्द्रः (ग) शिवदासः (घ) जम्भलदत्तः (क)

प्रश्नः-8 'श्रेयसी केन तृप्यते' सूक्ति वचनमुदधृतोऽस्ति ?
(क) शिशुपालवधमहाकाव्यात् (ख) किरातार्जुनीयमहाकाव्यात्
(ग) नैषधीयचरितमहाकाव्यात् (घ) मृच्छकटिकंनाटकात् (क)

प्रश्नः-9 खण्डकाव्यस्य लक्षणमस्ति -
(क) सर्गबद्धो (ख) खण्डेशु विभक्तः
(ग) खण्डिता नायिक (घ) काव्यस्यैकदेशस्य.......... (घ)

प्रश्नः-10 चारुदत्तः नायकमस्ति ?
(क) शिशुपालवधे (ख) रघुवंश महाकाव्ये
(ग) मृच्छकटिकं प्रकरणे (घ) कादम्बर्याम् (ग)

प्रश्नः-11 बाणभट्टस्य प्रसिद्धरीतिः वर्तते ? (क)
(क) पाञ्चाली (ख) गौडी (ग) वैदर्मी (घ) लाटी

प्रश्नः-12 किमिव हि दुष्करमकरुणानाम् सूक्तिः उद्धृतोऽस्ति -
(क) कादम्बरी (ख) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (क)
(ग) नलचम्पूः (घ) शिशुपालवधम्

प्रश्नः-13 शिशुपालवधमहाकाव्यस्यानुसारेण शिशुपालः कः ?
(क) हिरण्यकशिपोः जन्मान्तरम् (ख) कंसस्य जन्मान्तरः (ग)
(ग) रावणस्य जन्मान्तरः (घ) जलन्धरस्य जन्मान्तरः

प्रश्नः-14 बाणभट्टस्य कालः स्वीक्रियते ? (घ)
(क) 200 ई.पू. (ख) 606 ई.पू. (ग) 303 ई.पू. (घ) 606 ई.

प्रश्नः-15 हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः सूक्तिवचनमस्ति ?

(क) नीतिशतकम् (ख) किरातार्जुनीयम् (ग) उत्तररामचरितम् (घ) कुमारसम्भवम् (ख)

प्रश्नः-16 नाटके मङ्गलाचरणं किं कथ्यते ?

(क) मंगलाशासनम् (ख) नन्दिताकरणम् (ग) नान्दी (घ) वेदस्तवत (ग)

प्रश्नः-17 बाणभट्टस्य गुरोः किं नाम् ?

(क) भत्सु (ख) मौखरि (ग) सदानन्दः (घ) वात्स्यायनः (क)

प्रश्नः-18 विन्ध्याटवेः वर्णनं कस्मिन् ग्रन्थे प्राप्तः भवति ?

(क) अभिज्ञानशाकुन्तले (ख) कादम्बर्याम् (ग) नीतिशतके (घ) हर्षचरिते (ख)

प्रश्नः-19 अभिज्ञानशाकुन्तले शकुन्तलां शापः केन अददत् ?

(क) कण्वः (ख) विश्वामित्रः (ग) दुर्वासा (घ) वसिष्ठः (ग)

प्रश्नः-20 वेश्याः श्मशानसुमना इव वर्जनीयाः कस्मात् ग्रन्थात् सम्बन्धितः रचनास्ति -

(क) अभिज्ञानशाकुन्तले (ख) मृच्छकटिके (ग) स्वप्नवासवदत्ते (घ) नलचम्पोः (ख)

प्रश्नः-21 प्रत्यक्षरश्लेषघना कथास्ति ?

(क) अवन्तिसुन्दरी कथा (ख) कादम्बरी कथा (ग) वासवदत्ताकथा (घ) शिवराजविजयम् (ग)

प्रश्नः-22 सन्ततिः शुद्धवंश्या हि परत्रेह च शर्मणे सूक्तिः कस्मात् ग्रन्थात् उद्धृतोऽस्ति ?

(क) रघुवंशम् (ख) नलचम्पूः (ग) किरातार्जुनीयम् (घ) कुमारसम्भवम् (क)

प्रश्नः-23 नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण इतीयं पंक्तिः कस्मिन् काव्ये वर्तते ?

(क) रघुवंशे (ख) बुद्धचरिते (ग) शिशुपालवधे (घ) मेघदूते (घ)

प्रश्नः-24 अधोनिर्दिष्टेषु युग्मपर्यायेषु समीचीनं विचिनुत -

(क) घण्टा (1) नैषधम्

(ख) दीपशिखा (2) कालिदासः

(ग) विद्वदौषधम् (3) भासः

(घ) हासः (4) माघः

	(1)	(2)	(3)	(4)
(क)	4	2	3	1
(ख)	2	3	4	1
(ग)	4	2	1	3
(घ)	1	2	4	3

(घ)

प्रश्नः-25 महाकाव्यस्य लक्षणं किम् ?

(क) सर्गबन्धो महाकाव्यम् (ख) अङ्कयुक्तं महाकाव्यम् (क)

(ग) गद्यपद्यात्मकं महाकाव्यम् (घ) गद्य रूपं महाकाव्यम्

प्रश्नः-26 नाटकं नाम किम् ?

(क) पञ्चसन्धि चतुर्वति चतुः षष्ट शङ्गसंयुतम् (ख) कितवद्यूतकरादि विट चेत सकुलम् (क)

(ग) कैशिकीवृत्ति रहितम् (घ) अङ्गी रौद्ररसस्तस्य

प्रश्नः-27 अधोनिर्दिष्टेषु युग्मपर्यायेषु समीचीनं विचिनुतः ?

(क) मारविजयः (1) नैषधीयचरितम्

(ख) दमयन्ती (2) रघुवंशम्

(ग) अलकानगरी (3) मेघदूतम्

(घ) दिलीपः (4) बुद्धचरितम्

	(1)	(2)	(3)	(4)
(क)	1	2	3	4
(ख)	2	1	3	4
(ग)	3	4	2	1
(घ)	4	1	3	2

(घ)

प्रश्नः-28 'प्रसादचिह्नानि पुरः फलानि' इतीयं पङ्क्तिः कस्मिन् काव्ये वर्तते -

(क) कुमारसम्भवे (ख) रघुवंशे (ग) किरातार्जुनीये (घ) शिशुपालवधे (ख)

प्रश्नः-29 अधोनिर्दिष्टानां ग्रन्थानां कालानुक्रमेण समीचीनं पर्यायं विचिनुत -

(क) स्वप्नवासवदत्तम्

(ख) मुद्राराक्षसम्

(ग) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

(घ) उत्तररामचरितम्

A	क	ख	ग	घ
B	घ	ग	ख	क
C	क	घ	ख	ग
D	क	ग	घ	ख

(D)

प्रश्नः-30 न भीतो मरणादस्मि–कस्येदं वचनम् ?

(क) श्रीरामस्य (ख) अमात्यराक्षस्य (ग) दुष्यन्तस्य (घ) चारुदत्तस्य (घ)

प्रश्नः-31 नैषधीयचरिते कति सर्गाः सन्ति ?

(क) एकोनविंशतिः (ख) द्वाविंशतिः (ग) अष्टादश (घ) पञ्चदश (ख)

प्रश्नः-32 हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः इत्येतन्मतं कस्य विद्यते -

(क) किरातस्य (ख) वनेचरस्य (ग) भीमस्य (घ) द्रौपद्या (ख)

प्रश्नः-33 मुद्राराक्षसे वृषलः कः ?

(क) पर्वतः (ख) चाणक्यः (ग) चन्द्रगुप्तः (घ) राक्षसः (ग)

प्रश्नः-34 बाणभट्टस्य पितुः नाम किम् ?

(क) चित्रभानुः (ख) विश्वरूपः (ग) महिदत्तः (घ) अहिदत्तः (क)

प्रश्नः-35 शूद्रकः कस्मिन् विषये पारङ्गतः नासीत् ?

(क) सामवेदे (ख) गणिते (ख)

(ग) धनुर्विद्यायाम् (घ) हस्तिशिक्षायाम्

प्रश्नः-36 एतेषु भास विरचितं नाटकं नास्ति ?

(क) चारुदत्तम् (ख) बालचरितम् (ग) उरुभङ्गम् (घ) महावीरचरितम् (घ)

प्रश्नः-37 मृच्छकटिकानुसारेण प्रासङ्गिकवृत्तयः कः नायकः ?

(क) शर्विलकः (ख) रोहसेनः (ग) विटः (घ) चन्द्रगुप्तः (क)

प्रश्नः-38 मुद्रया कः जितः ?

(क) पर्वतः (ख) मलयकेतुः (ग) राक्षसः (घ) चाणक्यः (ग)

प्रश्नः-39 रामायणस्य मुख्यः रसः कः ?

(क) वीरः (ख) शान्तः (ग) करुणः (घ) अद्भुतः (ग)

प्रश्नः-40 अमुष्यविद्यारसनाग्रवति। इति कस्य वर्णनम् ?

(क) नारद मुनेः (ख) नलस्य (ग) भीमस्य (घ) शिशुपालस्य (ख)

प्रश्नः-41 विश्रुतः कया सह विवाहमकरोत् ?
(क) कन्दुकवत्या (ख) मणिकर्णिक्रिया (ग) सौदामिन्या (घ) मञ्जुवादिनी (घ)

प्रश्नः-42 कस्य रूपकस्य नायिका द्विधा कुलस्त्री गणिका च ?
(क) नाटकस्य (ख) प्रहसनस्य (ग) प्रकरणस्य (घ) भाणस्य (ग)

प्रश्नः-43 मुद्राराक्षसस्य प्रथमाङ्कस्य का विद्या ?
(क) राक्षसविचारः (ख) कृतककलहः (ग) मुद्रालाभः (घ) राक्षस निर्वेदः (ग)

प्रश्नः-44 कर्णः कस्मै कवच कुण्डलानि यच्छति -
(क) ब्रह्मणे (ख) सूर्याय (ग) चन्द्राय (घ) इन्द्राय (घ)

प्रश्नः-45 उत्तररामचरिते कति अङ्काः सन्ति ?
(क) त्रयः (ख) पञ्च (ग) सप्त (घ) षट् (ग)

प्रश्नः-46 निधिः श्रुतीनां धनसम्पदामिव। कस्येदं वर्णनम् ?
(क) नारदमुनेः (ख) श्रीहरेः (ग) युधिष्ठिरस्य (घ) अर्जुनस्य (क)

प्रश्नः-47 अंशुमयीमिव तनुच्छायानुलिप्तभूतलाम्। इयं पंक्तिः का वर्णयति ?
(क) शकुन्लाम् (ख) महाश्वेताम् (ग) कादम्बरी (घ) सीताम् (ग)

प्रश्नः-48 याञ्चा मोघावरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा इत्यस्ति ?
(क) रघुवंशे (ख) शिशुपालवधे (ग) कादम्बर्याम् (घ) मेघदूते (घ)

प्रश्नः-49 मुद्राराक्षसे नान्दीश्लोके कस्य स्तुतिः विद्यते -
(क) विष्णोः (ख) शिवस्य (ग) ब्रह्मवेदस्य (घ) लक्ष्म्याः (ख)

प्रश्नः-50 प्रचण्डवर्मणं कः हतवान् -
(क) सुश्रुतः (ख) विश्रुतः (ग) अपहारवर्मा (घ) उपहारवर्मा (ख)

प्रश्नः-51 सदाभिमानैकधना हि मानिनः। अयं श्लोकार्थः कस्मिन् काव्ये वर्तते ?
(क) रघुवंशे (ख) किरातार्जुनीये (ग) शिशुपालवधे (घ) नैषधीयचरिते (ग)

प्रश्नः-52 बौद्ध बुद्धिमिव निरालम्बनां वैदेहीमिव प्राप्त ज्योतिः। कस्याः इदं वर्णनम् ?
(क) कादम्बर्याः (ख) महाश्वेतायाः (ग) शकुन्तलायाः (घ) सीतायाः (ख)

प्रश्नः-53 अधस्तेषु विरूपं विचिनुत -
(क) कर्णः (ख) माढव्यः (ग) रामः (घ) चाणक्य (ख)

प्रश्नः-54 श्री हर्षस्य भ्राता कः ?
(क) राज्यवर्धनः (ख) आनन्दवर्धनः (ग) कीर्तिवर्धनः (घ) प्रभाकरवर्धनः (क)

प्रश्नः-55 त्यजन्त्यसूत्रशर्म च मानिनो वरं त्यजन्ति, न त्वेकमयाचितव्रत्तम्। कस्मिन् काव्ये इयं पंक्तिः ?
(क) रघुवंशे (ख) शिशुपालवधे (ग) नैषधीयचरिते (घ) किरातार्जुनीये (ग)

प्रश्नः-56 वागर्थाविव सम्पृक्तौ इति काव्यांश कुत्र वर्तते ?
(क) मेघदूते (ख) रघुवंशे (ग) किरातार्जुनीये (घ) कुमारसम्भवे (ख)

प्रश्नः-57 रोहसेनः इति पात्रं कस्मिन् नाटके वर्तते ?
(क) मृच्छकटिके (ख) स्वप्नवासवदत्तायाम् (क)
(ग) शाकुन्तले (घ) रत्नावल्याम्

प्रश्नः-58 उत्तररामचरिते कः रसः ?
(क) करुणः (ख) विप्रलम्भः (ग) वीरः (घ) शृंगारः (क)

प्रश्नः-59 रघुवंशे कति सर्गाः ?
(क) पञ्चदशः (ख) षोडशः (ग) अष्टादशः (घ) ऊनविंशतिः (घ)

प्रश्नः-60 रत्नावली नाटकस्य कर्ता कः ?
(क) श्रीहर्षः (ख) भासः (ग) विशाखदत्तः (घ) शूद्रकः (क)

प्रश्नः-61 'दशकुमारचरितम्' इति कः वाङ्मय प्रकारः ?
(क) नाटकम् (ख) प्रकरणम् (ग) कादम्बरी (घ) आख्यायिका (घ)

प्रश्नः-62 चाणक्यस्य गोत्रनाम किम् ?
(क) कुटिलः (ख) काश्यपः (ग) कृष्णः (घ) भारद्वाजः (क)

प्रश्नः-63 विद्यासु चतुर्दशत्वं केन कृतम् ?
(क) नलेन (ख) भीमेन (ग) दमयन्त्या (घ) इन्द्रेण (क)

प्रश्नः-64 एतेषु रामायणाधारितं नाटकमस्ति ?
(क) महावीरचरितम् (ख) स्वप्नवासवदत्तम् (ग) वेणीसंहारम् (घ) मुद्राराक्षसम् (क)

प्रश्नः-65 राजवाहनस्य पिता कः ?
(क) इन्द्रः (ख) राजहंसः (ग) मानसारः (घ) शक्तिभद्रः (ख)

प्रश्नः-66 नलस्यदास्येऽपि योग्यः कः न ?
(क) इन्द्रः (ख) शर्वरीश्वरः (ग) सूर्य (घ) वसन्तः (क)

प्रश्नः-67 अभिज्ञानशाकुन्तले कालिदासः नूतन तत्वमाविष्करोति -
(क) शकुन्तलासौन्दर्यवर्णनम् (ख) अभिशापवृतान्तः (ख)
(ग) हंसपदिकागायनम् (घ) मेनकावतरणम्

प्रश्नः-68 रामायणे कति काण्डानि सन्ति ?
(क) पञ्च (ख) षट् (ग) अष्ट (घ) सप्त (घ)

प्रश्नः-69 यावत्स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले, इत्येतत् वाक्यं कमनुसरति ?
(क) रामायणम् (ख) भगवद्गीता (ग) महाभारतम् (घ) पुराणम् (क)

प्रश्नः-70 रामलक्ष्मणयोः अध्ययनं कुत्र जातम् ?
(क) पितुगृहे (ख) तक्षशिलाविश्वविद्यालये (घ)
(ग) दण्डकारण्ये (घ) वशिष्ठाश्रमे

प्रश्नः-71 रत्नावल्याः नायकः कः ?
(क) चारुदत्तः (ख) दुष्यन्तः (ग) दुर्योधनः (घ) उदयनः (घ)

प्रश्नः-72 शुचिःबिम्बग्राहे मणिः न मृदाञ्चयः। उत्तररामचरितस्य वाक्यमिदं किं सूचयति ?
(क) राम लक्ष्मणयोः वैमत्यम् (ख) आत्रेयी वासन्ती कथोपकथनम् (घ)
(ग) रामसीताविलापम् (घ) प्राज्ञ जड क्षत्र प्रभेदम्

प्रश्नः-73 चाणक्यस्य शिष्यः कः आसीत् ?
(क) राक्षसः (ख) पर्वतकः (ग) चन्द्रगुप्तः (घ) चन्दनदासः (ग)

प्रश्नः-74 नारदवीणायाः नाम किम् ?
(क) बृहती (ख) महती (ग) विपञ्ची (घ) रूद्रवीणा (ख)

प्रश्नः-75 कस्यगृहे वसताकृष्णेन नारदः दृष्टः ?
(क) युधिष्ठिरस्य (ख) वसुदेवस्य (ग) शिशुपालस्य (घ) बलरामस्य (ख)

प्रश्नः-76 'सहसाविदधीत न क्रियाम्' इत्ययमुपदेशः केन प्रदत्तः ?
(क) भीमेन (ख) द्रौपद्या (ग) युधिष्ठिरेण (घ) वनेचरेण (ग)

प्रश्नः-77 'अहोदुरन्ताबलवद्विरोधिता' कस्यवचनमिदम् ?
(क) माघस्य (ख) श्रीहर्षस्य (ग) भारवेः (घ) भवभूतेः (ग)

प्रश्नः-78 रथाङ्गपाणेः पटलेन रोचिषामृषित्विषः संवलिता विरेजिरे-इत्यत्र रथाङ्गपाणिः कः ?
(क) नारदः (ख) रावणः (ग) कृष्ण (घ) शिशुपालः (ग)

प्रश्नः-79 फलेन मूलेन च वारि भूरुहां, मुनेरिवेत्थं मम यस्य वृत्तयः। कम्प्रति कस्येय मुक्तिः–
(क) हंसं प्रति नलस्य (ख) नलं प्रति हंसस्य
(ग) दमयन्तीं प्रति नलस्य (घ) नलं प्रति दमयन्त्याः (ख)

प्रश्नः-80 अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत–
(क) विचित्र रुपा खलु चित्तवृत्तयः (1) उत्तररामचरितम्
(ख) पतत्यधो धाम विसारिसर्वतः (2) हर्षचरितम्
(ग) तीर्थोदकं च वह्निश्च। (3) किरातार्जुनीयम्
(घ) लोके हि लोकेभ्यः कठिनतराखलु (4) शिशुपालवधम्

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(क)	4	2	3	1
(ख)	1	3	4	2
(ग)	2	1	3	4
(घ)	3	4	1	2

(घ)

प्रश्नः-81 हर्षचरिते रसायनः कः ?
(क) व्याधिः (ख) औषधिः (ग) वैद्यकुमारकः (घ) राजसुनुः (ग)

प्रश्नः-82 रावणभयात् हेमाद्रिगुहा गृहान्तरं कः दिवसानि निनाय ?
(क) कृष्णः (ख) कौशिकः (ग) नारदः (घ) वसुदेवः (ख)

प्रश्नः-83 विबुधसद्मनि अप्सरसां कति कुलानि कादम्बर्याम् उक्तानि ?
(क) द्वादशः (ख) त्रयोदेशः (ग) चतुर्दशः (घ) पञ्चदशः (ग)

प्रश्नः-84 कथं न मन्युर्ज्वलयत्युदीरितः, शमीतरूं शुष्कमिवाग्निरूच्छिखः। इत्युक्ता कः प्रेरितः ?
(क) अर्जुनः (ख) युधिष्ठिरः (ग) वनेचरः (घ) सुयोधनः (ख)

प्रश्नः-85 स्त्रीणामशिक्षितपटुत्वं मानुषीषु सन्दृश्यते इति उक्तिः कुत्र ?
(क) उत्तररामचरिते (ख) माधवे
(ग) मुद्राराक्षसे (घ) अभिज्ञानशाकुन्तले (घ)

प्रश्नः-86 रत्नावल्यां प्रधान रसः कः ?
(क) वीर रसः (ख) शान्त रसः (ग) रौद्र रसः (घ) शृंगार रसः (घ)

प्रश्नः-87 कादम्बरी इतिशब्दस्य कोऽर्थः ?
(क) भीरूत्री (ख) अप्सरा (ग) मदिरा (घ) परिचारिका (ग)

प्रश्नः-88 रामायणे कस्मिन् काण्डे अहल्याशाप विमोचन वृतान्तोऽस्ति ?
(क) अयोध्याकाण्डे (ख) बालकाण्डे (ग) अरण्यकाण्डे (घ) सुन्दरकाण्डे (ख)

प्रश्नः-89 शतसाहस्त्री इति कस्याभिधानमस्ति ?
(क) शब्दकल्पद्रुमस्य (ख) रामायणस्य (ग) महाभारतस्य (घ) वराहपुराणस्य (ग)

प्रश्नः-90 'जय' इति कस्य नामान्तरम् ?
(क) रामायणस्य (ख) महाभारतस्य (ग) रघुवंशस्य (घ) किरातार्जुनीयम् (ख)

प्रश्नः-91 मनुमतेः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणं कतिविधम् ?
(क) एकविधम् (ख) द्विविधम् (ग) त्रिविधम् (घ) चतुर्विधम् (घ)

प्रश्नः-92 धर्मशास्त्रीय व्यवहारस्य को विषयः ?
(क) स्मृत्याचार निन्दा (ख) स्मृत्याचार विरूद्ध पर पीडा
(ग) स्मृत्याचार प्रयुक्ता रूग्णता (घ) स्मृत्याचार प्रयुक्ता निर्धनता (क)

प्रश्नः-93 यत्र उत्पाद्यं लोक संश्रयञ्च वृत्तं भवति तदस्ति रूपकम् ?
(क) प्रकरणम् (ख) नाटकम् (ग) डिमः (घ) व्यायोगः (क)

प्रश्नः-94 याञ्चामोघावरमधिगुणे नाऽधमे लब्धकामा, इत्यत्र 'अधिगुणे' इति पदेन बोध्यः अस्ति ?
(क) यक्षः (ख) राजहंसः (ग) शिवः (घ) मेघ (घ)

प्रश्नः-95 हरशिरश्चन्द्रिकाधौतहर्म्या रूपेणवर्णिता नगरी अस्ति–
(क) विदिशा (ख) उज्जयिनी (ग) अलका (घ) दशपुरम् (ग)

प्रश्नः-96 शिवराजविजयस्य वस्तु विभाजनं वर्तते ?
(क) उल्लासेशु (ख) उच्छ्वासेशु (ग) निःश्वासेषु (घ) परिच्छेदेशु (ग)

प्रश्नः-97 एको रसः करुण एवं निमित्तभेदात् उक्तिरियुमुत्तररामचरितेऽस्ति ?
(क) मुरलायाः (ख) सीतायाः (ग) तमसायाः (घ) वासन्त्याः (घ)

प्रश्नः-98 सन्धिच्छेदकर्मणः वर्णनं प्राप्यते ?
(क) अभिज्ञान शाकुन्तले (ख) उत्तर रामचरिते
(ग) शिशुपालवध (घ) मृच्छकटिके (घ)

प्रश्नः-99 आर्तत्राणाय वः शस्त्रं न प्रहर्तुं अनागसि। कथमिदमस्ति अभिज्ञानशाकुन्तले–
(क) शार्ङ्गरवस्य (ख) वैखानसस्य (ग) गालवस्य (घ) गौतमस्य (ख)

प्रश्नः-100 नाट्यवेद निर्माणे भरतेन अभिनयो गृहीत ?
(क) यजुर्वेदात् (ख) ऋग्वेदात् (ग) अथर्ववेदात् (घ) गान्धर्ववेदात् (क)

लौकिक साहित्यः

भाग–ग

प्रश्नः-1 मेघदूतम् इति काव्ये प्रयुक्तं छन्दः अस्ति ?
(क) वंशस्थम् (ख) स्त्रग्धरा (ग) मालिनी (घ) मन्दाक्रान्ता (घ)

प्रश्नः-2 लघुत्रयीति संज्ञया प्रथितस्य काव्यत्रयस्य प्रणेता कविर्वर्तते ?
(क) क्षेमेन्द्रः (ख) जयदेवः (ग) बिल्हणः (घ) कालिदासः (घ)

प्रश्नः-3 मेघदूते वक्रः पन्था यदपि भवतः इत्यादिभिर्वचोभिः मेघं प्रार्थयति यक्षः गन्तुम् -
(क) अलकाम् (ख) उज्जयिनीम् (ग) विदिशाम् (घ) रामगिरिम् (ख)

प्रश्नः-4 मेघदूते राजराजस्य दध्यौ इति पद्ये राजराजस्य इति पदेन अभिहितोऽस्ति -
(क) यक्षः (ख) कुबेरः (ग) महाकालः (घ) इन्द्रः (ख)

प्रश्नः-5 शिशुपालवधस्य प्रथम सर्ग प्रयुक्तं कः छन्दः
(क) वंशस्थम् (ख) शार्दूलविक्रीडितम् (ग) मालिनी (घ) भुजङ्गप्रयातम् (क)

प्रश्नः-6 आख्यानोपाख्यानैः उपबृहितं काव्यम् अस्ति।
(क) रामयणम् (ख) नैषधीयचरितम् (ग) महाभारतम् (घ) श्रीमद्भागवतम् (ग)

प्रश्नः-7 पिशङ्ग मौञ्जीयुजमर्जुनच्छवि इति विशेषणेन माघकाव्ये सूच्यते?
(क) श्री कृष्णः (ख) बलरामः (ग) अर्जुनः (घ) नारदः (ख)

प्रश्नः-8 निषध देशेन सम्बन्धितस्य पात्रस्य नामास्ति ?
(क) दमयन्ती (ख) नलः (ग) पथिकः (घ) हंसः (ख)

प्रश्नः-9 'मदेक पुत्रा जननी जरातुरा' इति कथनमस्ति ?
(क) हंसस्य (ख) नलस्य (ग) पथिकस्य (घ) भीमस्य (क)

प्रश्नः-10 नैषधीयचरिते प्रयुक्तोऽङ्गीरसः अस्ति ?
(क) अद्भुतः (ख) करुणः (ग) शृंगारः (घ) वीरः (ग)

प्रश्नः-11 न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलाद् इत्युक्तिः वर्तते -
(क) उत्तरराम चरिते (ख) अभिज्ञानशाकुन्तले
(ग) मृच्छकटिके (घ) नैषधीयचरिते (ख)

प्रश्नः-12 अधोलिखितेषु पद्येषु शाकुन्तलस्य प्रसिद्धश्लोकः चतुष्ट्ययां न गण्यते -
(क) पातुं न प्रथमं व्यवस्यति। (ख) शुश्रूषस्वगुरून् कुरू।
(ग) यास्यत्यद्य शकुन्तलेति (घ) अभिजनवतो भर्तुः श्लाघ्य। (घ)

प्रश्नः-13 लोकोनियम्यत इवात्मदशान्तरेशु श्लोकाऽशोऽयं तिष्ठति -
(क) मृच्छकटिके (ख) मेघदूते
(ग) रघुवंशे (घ) अभिज्ञानशाकुन्तले (घ)

प्रश्नः-14 छायाङ्कस्य योजना वर्तते -
(क) महावीरचरिते (ख) मालतीमाधवे (ग) उत्तररामचरिते (घ) मृच्छकटिके (ग)

प्रश्नः-15 रत्नावलीति नाटिकायाः स्वरूपं वर्तते -
(क) नाटक प्रकरणयोः मिश्रितं स्वरूपम् (ख) भाणडिमयोः मिश्रितं स्वरूपम्
(ग) प्रकरण समवकारयोः मिश्रितं स्वरूपम् (घ) सट्टकहल्लीशकयोः मिश्रितं स्वरूपम् (क)

प्रश्नः-16 रत्नावलीनाटिकायाः नायको वर्तते -
(क) धीरप्रशान्तः (ख) धीरोद्धतः (ग) धीरललितः (घ) धीरोदात्तः (ग)

प्रश्नः-17 दिष्ट्या अपरिहीनधर्मः खलु स राजा उक्तिरियम् उत्तररामचरिते वर्तते ?
(क) आत्रेय्याः (ख) तमसायाः (ग) वासन्त्या (घ) सीतायाः (घ)

प्रश्नः-18 मृच्छकटिके प्रथमाङ्कस्य नाम अस्ति -
(क) अलङ्कारन्यासः (ख) सन्धिच्छेदः (ग) मदनिकाशर्विलकः (घ) द्यूतकरसंवाहक (क)

प्रश्नः-19 मृच्छकटिके राजश्यालकस्य भाषाऽस्ति ?
(क) मागधी (ख) शौरसेनी (ग) शकारी (घ) महाराष्ट्री (ग)

प्रश्नः-20 आनीयझटितिघटयति विधिरमिमतमभिमुखी भूतः उक्तिरियं रत्नावल्यां वर्तते -
(क) यौगन्धरायणस्य (ख) उदयनस्य (ग) सूत्रधारस्य (घ) रत्नावल्य (ख)

प्रश्नः-21 रदनिका इति स्त्रीपात्रं तिष्ठति -
(क) उत्तररामचरिते (ख) मृच्छकटिके (ग) रत्नावल्याम् (घ) कादम्बर्यां (ख)

प्रश्नः-22 कादम्बर्यां विन्ध्याटवी वर्णने अचेतन पदार्थानां चेतनदेवताभिः उपमाकरणस्य मूले चमत्कारोऽस्ति -
(क) वक्रोक्तेः (ख) यमकस्य (ग) श्लेषस्य (घ) अनुप्रासस्य (ख)

प्रश्नः-23 'स्फुरत्कलालपविलासकोमलावाक्यांशोऽयं वैशिष्ट्यं प्रकटयति -
(क) कादम्बर्याः (ख) वासवदन्तायाः (ग) रत्नावल्या (घ) कथाकाव्य (घ)

प्रश्नः-24 कादम्बरी कथा काव्यस्य नायकोऽस्ति -
(क) पुण्डरीकः (ख) तारापीडः (ग) चन्द्रापीडः (घ) शुकनासः (ग)

प्रश्नः-25 एको रसः करुण एवं निमित्त भेदात् उक्तिरियं उत्तररामचरितेऽस्ति -
(क) मुरलायाः (ख) सीतायाः (ग) तमसाया (घ) वासन्त्याः (घ)

प्रश्नः-26 कुथेन नागेन्द्रमिवेन्द्र वाहनम् इति उपमा सूचक वाक्येन शिशुपालवधे लक्षितः -
(क) नारदः (ख) श्रीकृष्णः (ग) शिशुपालः (घ) हिरण्यकशिशु (ग)

प्रश्नः-27 शिवराजविजये युग व्यापि निद्रातः जागर्ति -
(क) महाराजः (ख) महागुरूः (ग) महामात्यः (घ) योगिराजः (घ)

प्रश्नः-28 रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातं, भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पंकजश्रीः। इत्थं विचिन्तयति कोशगते द्विरेफे, हा हन्त, नलिनीं गज उज्जहारः।। श्लोकेऽस्मिन् 'कोशगतद्विरेफ' पदेन कवेः अभिप्रायोऽस्ति -
(क) भ्रमरः (ख) अफजलखानः (ग) अवरङ्गजीव (घ) गौरसिंह (ग)

प्रश्नः-29 शिवराजविजयं काव्यस्य समारम्भोः भवति -
(क) गौरसिंहवर्णनात् (ख) सूर्योदयवर्णनात्
(ग) अफजलखानवर्णनात् (घ) शिववीरस्यशौर्यवर्णनात् (ख)

प्रश्नः-30 महाभारतस्य विषयवस्तु विभाजनं वर्तते -
(क) काण्डेषु (ख) अध्यायेषु (ग) सर्गेषु (घ) पर्वेषु (घ)

प्रश्नः-31 यदिहास्ति तदिहास्ति यन्नेहास्ति न तत् क्वचित् इयमुद्घोषण स्वरचना विषये केन कृता?
(क) वाल्मीकिना (ख) श्रीमद् भागवतकृता व्यासेन
(ग) महाभारत कृता व्यासेन (घ) श्रीहर्षेण (ग)

प्रश्नः-32 रामायणे श्रीरामस्य ऋष्यमूक पर्वतं निवासो वर्णितः ?
(क) किष्किन्धाकाडे (ख) बालकाण्डे (ग) अयोध्याकाण्डे (घ) लंकाकाण्डे (क)

प्रश्नः-33 अधस्तनेषु उपजीव्य महाकाव्याश्रितं नास्ति -
(क) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (ख) मृच्छकटिकम् (ग) उत्तररामचरितम् (घ) नैषधीयचरितम् (ख)

प्रश्नः-34 अधस्तेषु महाभारताश्रितम् अस्ति ?
(क) शिशुपालवधम् (ख) मेघदूतम् (ग) रत्नावली (घ) कादम्बरी (क)

प्रश्नः-35 भासस्य उपलब्ध नाटकानां संख्या अस्ति -
(क) नव (ख) दश (ग) द्वादश (घ) त्रयोदश (घ)

प्रश्नः-36 कालिदास कृत नाटकानि सन्ति -
(क) त्रीणि (ख) चत्वारि (ग) पञ्च (घ) षट् (क)

प्रश्नः-37 अशुद्धं युग्मं चिनुत -
(क) मालविकाग्निमित्रम्-कालिदासः (ख) उत्तरराम चरितम्-भवभूतिः
(ग) चारुदत्तम्-शूद्रकः (घ) स्वप्नवासवदत्तम्-भासः (ग)

प्रश्नः-38 महावीरचरितस्य कस्य रचनामस्ति -
(क) भासस्य (ख) श्रीहर्षस्य (ग) भट्टनारायणस्य (घ) भवभूतेः (घ)

प्रश्नः-39 दूतवाक्यं रचनामस्ति ?
(क) शूद्रकस्य (ख) भासस्य (ग) भट्टनारायणस्य (घ) विशाखदत्तस्य (ख)

प्रश्नः-40 मृच्छकटिक नाटकस्य नायिका अस्ति ?
(क) वासवदत्ता (ख) वसन्तसेना (ग) मधुसेना (घ) मालती (ख)

प्रश्नः-41 पञ्चतन्त्रस्य लेखकोऽस्ति ?
(क) नारायणपण्डितः (ख) विष्णुशर्मणः (ग) चाणक्यः (घ) अमर कीर्तिः (ख)

प्रश्नः-42 शुद्धं युग्मं चिनुत -
(क) कुमारसम्भवम्-रघुवंशम् (ख) रघुवंशम्-अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(ग) कुमारसम्भवम्-मेघदूतम् (घ) मेघदूतम्-विक्रमोर्वशीयम् (क)

प्रश्नः-43 सौन्दरानन्द महाकाव्यस्य कर्ता कविरस्ति -
(क) शूद्रकः (ख) भासः (ग) बुद्धघोषः (घ) अश्वघोषः (घ)

प्रश्नः-44 भट्टिकाव्ये वर्णिता कथा अस्ति ?
(क) कंसवधकथा (ख) रामकथा (ग) कृष्णकथा (घ) दमयन्तीकथा (ख)

प्रश्नः-45 कवीनामंगलद्दर्पो नूनं वासवदत्तायाः इति कथनमस्ति ?
(क) दण्डिन (ख) वामनभट्टस्य
(ग) बाणभट्टस्य (घ) अम्बिकादत्तव्यास (ग)

प्रश्नः-46 वासवदत्ता कथायाः नायकोऽस्ति -
(क) दण्डिनः (ख) कन्दर्पकेतुः (ग) मकरन्दः (घ) विद्याधरः (ख)

प्रश्नः-47 'ताम्बूल द्वय मासनं च लभते यः कुब्जेश्वरात्' अस्मिन् कथने यः इति पदेन कस्य महाकवेः निर्देशः?
(क) माघस्य (ख) सुबन्धोः (ग) श्री हर्षस्य (घ) वादीभसिंहस्य (ग)

प्रश्नः-48 शुद्धं चिनुत -
(क) रघुवंशम्–मेघदूतम्–शिशुपालवधम्
(ख) किरातार्जुनीयम्–नैषधम्–रघुवंशम्
(ग) शिशुपालवधम्–मेघदूतम्–नैषधम्
(घ) किरातार्जुनीयम्–शिशुपालवधम्–नैषधीचरितम् (घ)

प्रश्नः-49 प्रत्यक्षरश्लेषमय प्रबन्धविन्यास वैदग्ध्य निधि निर्बन्धम् इति कथनमस्ति -
(क) बाणभट्टस्य (ख) सुबन्धोः (ग) दण्डिनः (घ) धनपालः (ख)

प्रश्नः-50 केन कविता बौद्धधर्मस्य प्रचारार्थं व ाव्यानि लिखितानि ?
(क) कालिदासेन (ख) माधेन (ग) अश्वघोषेण (घ) भवभूतिना (ग)

प्रश्नः-5 नैषधीयचरिते कति सर्गाः सन्ति
(क) एकोनविंशति (ख) द्वाविंशति (ग) अष्टाविंशति (घ) चतुर्विंशति (ख)

प्रश्नः-52 बृहत्त्रय्यां न गण्यते -
(क) नैषधीयचरितम् (ख) रघुवंशम् (ग) किरातार्जुनीयम् (घ) शिशुपालवधम् (ख)

प्रश्नः-53 अधस्तनयुग्मानां समीचीनतालिकां चिनुत -
(क) श्रीहर्षः (1) हर्षचरितम्
(ख) दण्डी (2) मुद्राराक्षसम्
(ग) बाणभट्टः (3) नैषधीयचरितम्
(घ) विशाखदत्तः (4) दशकुमारचरितम्

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(क)	1	2	3	4
(ख)	4	3	2	1
(ग)	3	4	1	2
(घ)	4	3	1	2

(ग)

प्रश्नः-54 किरातार्जुनीयं महाकाव्यस्य कथावस्तु कुतः गृहीतम् ?
(क) महाभारतस्य आदि पर्वः (ख) महाभारतस्य भीष्मपर्वः
(ग) महाभारतस्य वन पर्वः (घ) रामायण महाकाव्यात् (ग)

प्रश्नः-55 कविराजराजि मुकुटालङ्कार हीरः मामल्लदेवी च कस्य पितरौ ?
(क) भासस्य (ख) श्रीहर्षस्य (ग) दण्डिनः (घ) भारवेः (ख)

प्रश्नः-56 दशकुमारचरितस्य नायकः कः ?
(क) राजहंसः (ख) उपहार वर्मा (ग) राजवाहनः (घ) अपहारवर्मा (ग)

प्रश्नः-57 वाल्मीकिरामायणानुसारं शम्बूकः केन हतः।
(क) दशरथेन (ख) रामेण (ग) परशुरामेण (घ) भरतेन (ख)

प्रश्नः-58 रघुवंशस्य चतुर्दशः सर्गस्य नाम किम् ?
(क) सीतापवादः (ख) सीतापरित्यागः
(ग) श्रीराममनस्तापः (घ) सीतावनवासः (ख)

प्रश्नः-59 प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचै, प्रारभ्य विघ्नविहिताः विरमन्ति मध्याः। मुद्राराक्षसे कस्येयमुक्तिः ?
(क) विराधगुप्तस्य (ख) चाणकस्य (ग) राक्षसस्य (घ) चन्द्रगुप्तः (क)

प्रश्नः-60 वाल्मीकिरामायणानुसारं दशरथस्य पुत्रेष्टि यज्ञे पुरोहित आसीत्
(क) वसिष्ठः (ख) ऋष्यश्रृङ्गः (ग) भारद्वाजः (घ) विश्वामित्रः (ख)

प्रश्नः-61 किरातार्जुनीये प्रतिसर्गस्यान्तिमं पदमस्ति ?
(क) श्रीः (ख) लक्ष्मीः (ग) शिवः (घ) कश्चित् (ख)

प्रश्नः-62 बाणः कवीनामिह चक्रवर्ती इत्युक्तम् ?
(क) कालिदासेन (ख) माघेन (ग) सोड्ढलेन (घ) श्री हर्षेण (ग)

प्रश्नः-63 ज्ञातसारो खल्वेकः सन्दिग्धे कार्यवस्तुनि, इत्युक्तिः कुत्रास्ति ?
(क) नैषधीयचरिते (ख) रघुवंशे (ग) माघकाव्ये (घ) भट्टिकाव्ये (ग)

प्रश्नः-64 वैशम्पायनः वृत्तान्तः कुत्रोपवर्णितः ?
(क) दशकुमारचरिते (ख) मृच्छकटिके (ग) कादम्बर्याम् (घ) हर्षचरिते (ग)

प्रश्नः-65 मेघदूते यक्षः कुत्र वसतिं चक्रे ?
(क) रामगिरौ (ख) हिमालये (ग) अलकायाम् (घ) मानसरोवरे (क)

प्रश्नः-66 जतुकर्णीपुत्रः भवति -
(क) कालिदासः (ख) भवभूतिः (ग) सोड्ढलः (घ) श्री हर्षेण (ख)

प्रश्नः-67 किरातार्जुनीये किरातः कः ?
(क) युधिष्ठिरः (ख) वनेचरः (ग) अर्जुनः (घ) शिवः (घ)

प्रश्नः-68 'गच्छतिपुरः शरीरं धावति पश्चाद् संस्थितं चेतः' कस्य उक्तिरियम् ?
(क) कण्वस्य (ख) गौतम्याः (ग) दुष्यन्तस्य (घ) शार्ङ्गरवस्य (ग)

प्रश्नः-69 'मग्नस्य दुःखे जगतो हिताय' इति कस्य वर्णनम् -
(क) पाटलिपुत्रस्य (ख) शुद्धोदनपुत्रस्य (ग) उद्यानस्य (घ) देवदत्तस्य (ख)

प्रश्नः-70 रत्नावली भवति ?
(क) नाटकम् (ख) प्रकरणम् (ग) नाटिका (घ) प्रकरणिका (ग)

प्रश्नः-71 हर्षचरितस्य कर्ता अस्ति ?
(क) अश्वघोषः (ख) श्रीहर्षः (ग) बाणः (घ) दण्डी (ख)

प्रश्नः-72 श्रिया दुरापः कथमीप्सितो भवेत् इदं वाक्यमस्ति ?
(क) स्वप्नवासवदत्ते (ख) मुद्राराक्षसे
(ग) अभिज्ञानशाकुन्तले (घ) मृच्छकटिके (ग)

प्रश्नः-73 गन्धर्वनगर लेखेव पश्यतैव एव नश्यति' इदं वाक्यमस्ति -
(क) दशकुमारचरिते (ख) हर्षचरिते (ग) मुद्राराक्षसे (घ) कादम्बर्याम् (घ)

प्रश्नः-74 'मृगयाऽधाय न भूभृतां हनताम्' इदं वाक्यमस्ति -
(क) नैषधीयचरिते (ख) बुद्धचरिते (ग) किरातार्जुनीये (घ) रघुवंशे (क)

प्रश्नः-75 न तितिक्षासममस्ति साधनम् इदं वाक्यमस्ति ?
(क) शिशुपालवधे (ख) किरातार्जुनीये (ग) मेघदूते (घ) बुद्धचरिते (घ)

प्रश्नः-76 अहिणव महुलोलुवो भवं तह परिचुम्बिअ इत्यादि सङ्गीतः भवति -
(क) हंसपदिकायाः (ख) शकुन्तलायाः (ग) अनुसूयायाः (घ) प्रियंवदायाः (क)

प्रश्नः-77 सतीमपिज्ञातिकुलैकसंश्रयां जनोऽन्यथा भर्तृमतीं विशङ्कते कस्येमुक्तिः ?
(क) दुष्यन्तस्य (ख) शारद्वतस्य (ग) शार्ङ्गरवस्य (घ) कण्वस्य (ग)

प्रश्नः-78 विप्रलम्भश्रृंगारः अङ्गीरसः भवति अस्मिन् काव्ये -
(क) रघुवंशे (ख) मेघदूते (ग) शिशुपालवधे (घ) नैषधीयचरिते (ख)

प्रश्नः-79 कुमुदवनमपश्रि श्रीमदम्भोजखण्डम् इत्यादि पद्यं केन सम्बद्धम् ?
(क) माघेन (ख) कालिदासेन (ग) श्रीहर्षेण (घ) भासेन (क)

प्रश्नः-80 व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः इत्याद्युक्ति ?
(क) अर्जुनस्य (ख) युधिष्ठिरस्य (ग) द्रौपद्याः (घ) वनेचरस्य (ग)

प्रश्नः-81 श्रीकण्ठपदलाञ्छनः पदवाक्यप्रमाणतत्वज्ञः इति केन सम्बधः ?
(क) भासेन (ख) भवभूतिना (ग) श्रीहर्षेण (घ) अश्वघोषेण (ख)

प्रश्नः-82 अमृतेनेवसंसिक्ता, चन्दनेनेवचर्चिताः इत्युक्तिः कं लक्षयति -
(क) भासम् (ख) बाणभट्टम् (ग) शूद्रकम् (घ) कालिदासम् (घ)

प्रश्नः-83 लौकिकानां हि साधूनामर्थं वागनुवर्तते। ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति।। उत्तररामचरिते कस्येयमुक्ति ?
(क) अष्टावक्रस्य (ख) लक्ष्मणस्य (ग) शम्बूकस्य (घ) रामस्य (घ)

प्रश्नः-84 रामायणस्य श्लोकसंख्यास्ति ?
(क) 31000-40000 (ख) 22000-25000 (ग) 11000-15000 (घ) 5000-10000 (ख)

प्रश्नः-85 श्री हीरः सुषुवे जितेन्द्रिय चयं मामल्ल देवीं च यम् इतिवार्ता केन सम्बद्धा?
(क) माघेन (ख) भारविणा (ग) श्री हर्षेण (घ) भासेन (ग)

प्रश्नः-86 नन्दोन्मूलनदृष्टवीर्य महिमा बुद्धिस्तु मा गान्मम। मुद्राराक्षसे कस्येयमुक्तिः ?
(क) चन्द्रगुप्तस्य (ख) चाणक्यस्य (ग) राक्षसस्य (घ) चन्दनदास (ख)

प्रश्नः-87 अभिज्ञानशाकुन्तले षष्ठाङ्कगतः धीवरवृतान्तः कस्योदाहरणमस्ति ?
(क) प्रवेशकस्य (ख) विष्कम्भकस्य (ग) अङ्कावतारस्य (घ) प्रस्तावनायाः (क)

प्रश्नः-88 शरीरभाजां भवदीय दर्शनं व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम् शिशुपालवधे कस्येमुक्तेः ?
(क) नारदस्य (ख) श्रीकृष्णस्य (ग) वसुदेवस्य (घ) बलरामस्य (क)

प्रश्नः-89 ज्ञाने मौनं क्षमा शक्तौ त्यागेश्लाघ्याविपर्ययः। गुणा गुणानुबन्धिवात् तस्य सप्रसवा।।
इयं कस्य गुणाश्लोकेऽस्याम् उल्लिखिता ?
(क) रघोः (ख) रामस्य (ग) अजस्य (घ) दिलीपस्य (घ)

प्रश्नः-90 पुटपाक प्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः–उत्तररामचरिते उक्तिरियं भवति ?
(क) सीतायाः (ख) मुरलायाः (ग) तमसायाः (घ) वासन्त्याः (ख)

प्रश्नः-91 दशकुमारचरिते पुण्यवर्मा कस्य देशस्य राजा आसीत् ?
(क) विदर्भस्य (ख) वाराणस्याः (ग) गौडस्य (घ) मगधस्य (क)

प्रश्नः-92 रत्नावल्याः मङ्गलाचरणस्य प्रथमे श्लोके कस्य स्तुतिः प्राप्यते ?
(क) विष्णोः (ख) ब्राह्मणः (ग) शिवस्य (घ) गणेशस्य (ग)

प्रश्नः-93 हितोपदेशस्य लेखकः वर्तते ?
(क) विष्णुशर्मणः (ख) जयन्धरः (ग) नारायणपंण्डितः (घ) मानसारः (ग)

प्रश्नः-94 पशुपक्षिविषयकाभिः कथाभिः के मुदिताः भवन्ति ?
(क) गर्दभाः (ख) वानराः (ग) बालाः (घ) मत्स्याः (ग)

प्रश्नः-95 निपीय यस्य क्षितिरक्षिणः कथां, तथाद्रियन्ते न बुधाः सुधामपि। इति कस्य कथा अत्र उल्लिखिता ?
(क) दुष्यन्तस्य (ख) रघोः (ग) नलस्य (घ) रामचन्द्रस्य (ग)

प्रश्नः-96 वेणीसंहारे दुर्योधनस्य कञ्चुकी कः ?
(क) विनयन्धरः (ख) जयन्धरः (ग) रूधिरप्रियः (घ) सुन्दरकः (क)

प्रश्नः-97 'मनोरथा नाम तटप्रपाताः इयम् उक्तिः उपलभ्यते -
(क) रत्नावल्याम् (ख) वेणीसंहारे
(ग) अभिज्ञानशाकुन्तले (घ) मृच्छकटिके (ग)

प्रश्नः-98 लक्ष्मीचाञ्चल्यम् उपवर्णितमस्ति -
(क) नैषधे (ख) रघुवंशे (ग) दशकुमारचरिते (घ) कादम्बर्याम् (घ)

प्रश्नः-99 दशकुमारचरितेऽयं प्रतिनायको भवति -
(क) राजहंसः (ख) मानसारः (ग) राजवाहनः (घ) पुष्पोद्‌भवः (ख)

प्रश्नः-100 रत्नावल्यां द्वितीयाङ्कस्य नाम -
(क) मदनमहोत्सवस्य (ख) कदलीगृहम् (ग) संकेतः (घ) अध्येतय (ख)

लौकिक साहित्यः

भाग–घ

प्रश्नः-1 कस्य काव्यं नारिकेल फलं सम्मितम् ?
(क) भारवेः (ख) कालिदासस्य (ग) माघस्य (घ) बाणस्य (क)

प्रश्नः-2 सतीव योषित प्रकृतिः निश्चला, पुमांसमभ्येति भवान्तरेष्वपि। कुत्रास्ति अयं पद्यांशः ?
(क) नैषघ (ख) रघुवंशे (ग) शिशुपालवधे (घ) मेघदूते (ग)

प्रश्नः-3 रघुवंशस्य कस्मिन् सर्गे दिलीपस्य गो सेवा वर्णिता -
(क) प्रथमे (ख) द्वितीये (ग) तृतीये (घ) चतुर्थे (ख)

प्रश्नः-4 रघुः किन्नामकं यज्ञं चकारः ?
(क) राजसूयम् (ख) विश्वजित् (ग) अश्वमेघः (घ) पुत्रेष्टिः (ख)

प्रश्नः-5 खण्डकाव्यमस्ति ?
(क) गीतगोविन्दम् (ख) मेघदूतम् (ग) ऋतुसंहारः (घ) सर्वे (ख)

प्रश्नः-6 क्षणे-क्षणे यन्नवतामुपैति तदेवरूपं रमणीयताया इयमुक्तिः वर्तते ?
(क) किरातार्जुनीये (ख) शिशुपालवधे (ग) नैषधीयचरिते (घ) कुमारसम्भवे (ख)

प्रश्नः-7 सत्यं किमस्ति ?
(क) हर्षचरितं कथां वर्तते (ख) हर्षचरितम् आख्यायिका वर्तते
(ग) हर्षचरितं चम्पू वर्तते (घ) हर्षचरितं महाकाव्यं वर्तते (ख)

प्रश्नः-8 अभिज्ञानशाकुन्तले विदूषकः कः ?
(क) वसन्तकः (ख) माढव्यः (ग) मैत्रेयः (घ) माणवकः (ख)

प्रश्नः-9 स्वप्नवासवदत्तानाटके 'भर्तृ स्नेहात् सा हि दग्धाप्यदग्धा' कस्य वचनमिदम् ?
(क) ब्रह्मचरिणः (ख) यौगन्धरायणस्य (ग) विदूषकस्य (घ) उदयनस्य (क)

प्रश्नः-10 नाटिकाऽस्ति ?
(क) रत्नावली (ख) मृच्छकटिकम् (ग) वेणीसंहारः (घ) मुद्राराक्षसम् (क)

प्रश्नः-11 अधोविनस्यतानां कालानुसारिक्रमं चिनुत -
(क) कालिदासः/भासः/बाणभट्टः/भवभूतिः (ख) भासः/कालिदासः/बाणभट्टः/भवभूतिः
(ग) भवभूति/कालिदासः/भासः/बाणभट्टः (घ) बाणभट्टः/भासः/भवभूति/कालिदासः (ख)

प्रश्नः-12 अधस्तन युग्मानां समीचीनां तालिकां विचिनुत -
(क) नाटकम् (1) निन्दनीयः पुरूषः
(ख) प्रकरणम् (2) विटः
(ग) भाणः (3) धीरप्रशान्तः
(घ) प्रहसनम् (4) धीरोदात्तः

	(1)	(2)	(3)	(4)
(क)	4	3	2	1
(ख)	1	2	4	3
(ग)	3	4	2	1
(घ)	1	2	4	3

(क)

प्रश्नः-13 अधस्तन युग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत -
(क) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1) भाणः
(ख) त्रिपुरदाहः (2) प्रहसनम्
(ग) कन्दर्पकेलिः (3) डिमः
(घ) लीलामधुकरम् (4) नाटकम्

	(1)	(2)	(3)	(4)
(क)	1	2	3	4
(ख)	4	3	2	1
(ग)	3	4	2	1
(घ)	1	2	4	3

(ख)

प्रश्नः-14 कस्यरूपकेषु आमुखं स्थापनेषु उच्यते ?
(क) शूद्रकस्य (ख) श्रीहर्षस्य (ग) विशाखदत्तस्य (घ) भासस्य (घ)

प्रश्नः-15 रैवतक पर्वतस्य वर्णनं कस्मिन् काव्ये वर्तते ?
(क) उत्तररामचरिते (ख) कुमार सम्भवे (ग) शिशुपालवधे (घ) कादम्बर्याम् (ग)

प्रश्नः-16 आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः—इयमुक्तिः कस्य ग्रन्थस्य ?
(क) नैषधीयचरितस्य (ख) शिशुपालवधस्य (ग) किरातार्जुनीयस्य (घ) कुमारसम्भवस्य (क)

प्रश्नः-17 दशकुमारचरिते कत्युच्छवासाः सन्ति ?
(क) पञ्च (ख) षट् (ग) सप्त (घ) अष्ट (घ)

प्रश्नः-18 मेघदूते यक्षाणां वसतिः कुत्र वर्तते ?
(क) मानसरोवरे (ख) हिमालये (ग) मालवभूमौ (घ) अलकायाम् (घ)

प्रश्नः-19 सञ्चारिणी दीपशिखेव रात्रौ......'इयमुक्तिः रघुवंशस्याधोलिखिते कथा प्रसंगे वर्णितास्ति -
(क) सीतापरित्यागे (ख) इन्दुमतीस्वयंवरे (ग) विश्वजितयज्ञे (घ) राज्याभिशेकः (ख)

प्रश्नः-20 रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय' इयमुक्ति' केन सम्बद्धा ?
(क) कुबेरेण (ख) मेघेन (ग) यक्षेण (घ) यक्षिण्या (ग)

प्रश्नः-21 तस्य अशेषत्रिभुवन सुन्दरं अतिशयितनलकूबरं रूपमासीत् कः ?
(क) पुण्डरीकस्य (ख) कपिञ्जलस्य (ग) श्वेतकेतोः (घ) चन्द्रापीडस्य (ख)

प्रश्नः-22 आपरितोषां विदुषां न साधुमन्ये प्रयोगविज्ञानम् इति वाक्यं वर्तते ?
(क) मासस्य (ख) भवभूतेः (ग) भारवेः (घ) कालिदासस्य (घ)

प्रश्नः-23 प्रबोधचन्द्रोदयः नाटकमस्ति -
(क) चम्पूकाव्यम् (ख) गद्यकाव्यम् (ग) प्रतिकात्मकरूपकं (घ) दुःखान्तरूपकम् (ग)

प्रश्नः-24 कस्मिन् काव्ये सन्ति त्रयो गुणाः ?
(क) मेघे (ख) रघुवंशे (ग) नैषधीये (घ) शिशुपालवधे (घ)

प्रश्नः-25 स्वप्नवासवदत्ते कति अङ्काः सन्ति ?
(क) पञ्च (ख) षट् (ग) सप्त (घ) अष्ट (ख)

प्रश्नः-26 का कृतिः भासविरचिता नास्ति ?
(क) प्रतिमानाटकम् (ख) उरुभङ्गम् (ग) स्वप्नवासवदत्तम् (घ) वासवदत्ता (घ)

प्रश्नः-27 महीयांसः प्रकृत्यामितभाषिणः इदं वाक्यमस्ति ?
(क) रघुवंशे (ख) शिशुपालवधे (ग) नैषधीयचरिते (घ) किरातार्जुनीये (ख)

प्रश्नः-28 वज्रायुधस्य वर्णनमस्ति ?
(क) कादम्बर्याम् (ख) वासवदत्तायाम् (क)
(ग) हर्षचरिते (घ) दशकुमार चरिते

प्रश्नः-29 वेश्याः श्मशान सुमना इव वर्जनीयाः इदं वाक्यमस्ति ?
(क) उत्तररामचरिते (ख) मुद्राराक्षसे (ग) स्वप्नवासवदत्ते (घ) मृच्छकटिके (घ)

प्रश्नः-30 मृच्छकटिकं भवति ?
(क) नाटकम् (ख) प्रकरणम् (ग) नाटिका (घ) प्रकरणिका (ख)

प्रश्नः-31 स्वप्नवासवदत्तस्य रचयिता कः ?
(क) कालिदासः (ख) शूद्रकः (ग) भासः (घ) श्रीहर्षः (ग)

प्रश्नः-32 अभिज्ञानशाकुन्तले अङ्गीरसः कः ?
(क) शृंगारः (ख) वीररसः (ग) शान्तरसः (घ) करुणरसः (क)

प्रश्नः-33 प्रकरणेऽंक संख्या भवति ?
(क) सप्त (ख) पञ्च (ग) चत्वारः (घ) दश (घ)

प्रश्नः-34 श्रेयसि केन तृप्यते इत्यस्ति ?
(क) बुद्धचरिते (ख) शिशुपालवधे (ग) किरातार्जुनीये (घ) नैषधे (ख)

प्रश्नः-35 ....लोकस्याराघनाय मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा' इत्यस्ति ?
(क) अर्जुनः (ख) शिवः (ग) रामः (घ) कृष्णः (ग)

प्रश्नः-36 हर्षचरितम् -
(क) कथा (ख) आख्यायिका (ग) कथामिका (घ) परिकथा (ख)

प्रश्नः-37 ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमऽर्थोऽनुधावति इत्यस्ति -
(क) अभिज्ञानशाकुन्तले (ख) मृच्छकटिके (ग) उत्तररामचरिते (घ) मुद्राराक्षसे (ग)

प्रश्नः-38 नाटके न्यूनतः कति अङ्का सन्ति ?
(क) पञ्च (ख) षट् (ग) दश (घ) सप्त (क)

प्रश्नः-39 अच्छोदवर्णने कुत्र प्राप्यते ?
(क) हर्षचरिते (ख) कादम्बर्याम् (ग) मेघदूते (घ) रघुवंशे (ख)

प्रश्नः-40 महाकाव्ये न्यूनतः कति सर्गाः भवन्ति ?
(क) पञ्च (ख) षट् (ग) अष्ट (घ) सप्त (ग)

प्रश्नः-41 अश्वघोष विरचितमस्ति ?
(क) रघुवंशमहाकाव्यम् (ख) दशकुमारचरितम् (ग) बुद्धचरितम् (घ) हर्षचरितम् (ग)

प्रश्नः-42 नाटिकाऽस्ति -
(क) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (ख) मृच्छकटिकम् (ग) रत्नावली (घ) वेणीसंहारः (ग)

प्रश्नः-43 पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं इत्यस्ति ?
(क) स्वप्नवासवदत्तम् (ख) उत्तररामचरिते
(ग) अभिज्ञानशाकुन्तले (घ) मृच्छकटिके (ग)

प्रश्नः-44 वेणीसंहारस्य रचयिता कः ?
(क) भासः (ख) कालिदासः (ग) शूद्रकः (घ) भट्टनारायणः (घ)

प्रश्नः-45 कादम्बरी अस्ति ?
(क) आख्यायिका (ख) कथा (ग) उपकथा (घ) पटकथा (ख)

प्रश्नः-46 हर्षचरितस्य प्रणेता कः ?
(क) दण्डी (ख) बाणभट्टः (ग) दण्डी (घ) हर्षः (ख)

प्रश्नः-47 वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः इत्यस्ति ?
(क) शिशुपालवधे (ख) बुद्धचरिते (ग) किरातार्जुनीये (घ) नैषधी (ग)

प्रश्नः-48 अर्थो हि कन्या परकीय एव–इति वाक्यस्य कर्त्ता वर्तते ?
(क) कालिदासः (ख) माघः (ग) श्रीहर्षः (घ) भारविः (क)

प्रश्नः-49 पदलालित्याय सुप्रसिद्धः वर्तते ?
(क) भारविः (ख) कालिदासः (ग) दण्डी (घ) भवभूतिः (ग)

प्रश्नः-50 सौन्दरनन्दमहाकाव्यस्य रचयिता वर्तते ?
(क) शङ्कराचार्यः (ख) कालिदासः (ग) अश्वघोषः (घ) हर्षदेवः (ग)

प्रश्नः-51 'डिम' इति रूपके कति अङ्का भवन्ति ?
(क) 5 (ख) 6 (ग) 10 (घ) 4 (घ)

प्रश्नः-52 श्रुतेरिवार्थः स्मृतिरन्वगच्छत् इत्यस्ति ?
(क) रामायणे (ख) महाभारते (ग) रघुवंशे (घ) वेणीसंहारे (ग)

प्रश्नः-53 अनिर्वर्णनीयं परकलत्रम् इति वाक्यं भवति ?
(क) भरतस्य (ख) दुष्यन्तस्य (ग) युधिष्ठिरस्य (घ) रघोः (ख)

प्रश्नः-54 वरतन्तुशिष्यस्य कुत्सस्य वृतान्तमस्मिन् काव्ये निबद्धं वर्तते -
(क) कुमा संभवे (ख) रघुवंशे (ग) माघे (घ) किरातार्जुनीये (ख)

प्रश्नः-55 मुद्राराक्षस नाटकस्य कथावस्तु भवति -
(क) प्रसिद्धम् (ख) उत्पाद्यम् (ग) कविकल्पितम् (घ) चारित्रकम् (क)

प्रश्नः-56 तत्राऽपि च चतुर्थोऽङ्कस्तत्र श्लोक चतुष्टयम् इत्युक्तिः सङ्गच्छते -
(क) मृच्छकटिके (ख) वेणीसंहारे
(ग) अभिज्ञानशाकुन्तले (घ) उत्तररामचरिते (ग)

प्रश्नः-57 शुकनासोपदेशः वर्तते -
(क) दशकुमार चरिते (ख) कादम्बर्याम् (ग) हर्षचरिते (घ) शाकुन्तले (ख)

प्रश्नः-58 शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् इति कुत्र वर्तते ?
(क) रघुवंशे (ख) कुमारसम्भवे (ग) मेघदूते (घ) शाकुन्तले (ख)

प्रश्नः-59 कविकुल गुरुः कः ?
(क) माघः (ख) कालिदासः (ग) अश्वघोषः (घ) भारविः (ख)

प्रश्नः-60 उरुभङ्गे नायकः कः ?
(क) दुर्योधनः (ख) भीमः (ग) धृतराष्ट्रः (घ) श्रीकृष्णः (ख)

प्रश्नः-61 सन्देशकाव्यं प्रस्थानं केन समारब्धम् ?
(क) अश्वघोषेण (ख) कालिदासेन (ग) कुन्तकेन (घ) वामनेन (ख)

प्रश्नः-62 का कृतिः भास विरचिता नास्ति ?
(क) प्रतिमानाटकम् (ख) उरुभङ्गम् (ग) स्वप्नवासवदत्तम् (घ) वासवदत्ता (घ)

प्रश्नः-63 अधस्तन युग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुतः ?
(क) नागानन्दम् (1) विष्णु शर्मा
(ख) गीतगोविन्दम् (2) बाणभट्टः
(ग) पञ्चतन्त्रम् (3) जयेदव
(घ) हर्षचरितम् (4) श्री हर्षः

	(1)	(2)	(3)	(4)
(क)	3	2	4	1
(ख)	4	3	1	2
(ग)	1	2	3	4
(घ)	1	3	2	4

प्रश्नः-64 नाटकेऽर्थ प्रकृतयः कति - (ख)
(क) ५ (ख) ६ (ग) ४ (घ) ७

प्रश्नः-65 श्रियः पतिः श्रीमति.....कस्य ग्रन्थस्य मङ्गलाचरणमस्ति ? (क)
(क) आदिकाव्यम् (ख) शिशुपालवधम् (ग) किरातार्जुनीयम् (घ) सौन्दरनन्दम्

प्रश्नः-66 उपमा, अर्थगौरव, पदलालित्यश्च कस्मिन् काव्ये प्राप्नोति ? (ख)
(क) माघकाव्ये (ख) भारविकाव्ये (ग) मेघदूते (घ) ब्रहत्रयाम्

प्रश्नः-67 आतपत्र भारवेः उपाधिः प्रददतुं सः श्लोकः प्रसिद्धमासीत् ? (क)
(क) न नोनन्नुनो नुन्नोनो ....। (ख) उत्फुलस्थनलिनी वनादुष्मा...........।
(ग) दाददो दुद्ददुद्दी.........। (घ) सञ्चारिणी दीपशिखेव...........। (ख)

प्रश्नः-68 'किरातार्जुनीयम्' महाकाव्यस्य प्रत्येक सर्गस्यान्ते प्रयुक्त शब्दः ?
(क) लक्ष्मीः (ख) श्रीः (ग) कश्चित् (घ) आद्या (क)

प्रश्नः-69 रघुवंशे कौत्सरघुसंवादो वर्तते ?
(क) प्रथमसर्गे (ख) तृतीयसर्गे (ग) पञ्चमसर्गे (घ) सप्तमसर्गे (ग)

प्रश्नः-70 रघुवंशे वर्णितोऽन्तिमों नृपोऽस्ति ?
(क) पुष्कलः (ख) निषधः (ग) अग्निवर्णः (घ) सुदर्शनः (ग)

प्रश्नः-71 रत्नं रत्नमन्विश्यति मृग्यते हि तत् इत्युक्तिरस्ति ?
(क) हिमालयस्य (ख) मेनायाः (ग) पार्वत्याः (घ) ब्रह्मचारिणः (घ)

प्रश्नः-72 भारवेः कस्य छन्दसः प्रशंसा क्षेमेन्द्रेण कृता -
(क) शिखरिणीछन्दसः (ख) मालिनीछन्दसः
(ग) वंशस्थछन्दसः (घ) मन्दक्रान्ताछन्दसः (ग)

प्रश्नः-73 चित्रभानुमतानुसारं किरातार्जुनीयस्य नायको वर्तते ?
(क) किरातः (ख) अर्जुनः (ग) भीमः (घ) युधिष्ठिरः (घ)

प्रश्नः-74 निराश्रया हन्त हता मनस्विता इत्युक्तिरस्ति ?
(क) वनेचरस्य (ख) द्रौपद्याः (ग) युधिष्ठिरस्य (घ) किरातस्य (ख)

प्रश्नः-75 आदर्शरमणी वर्तते ?
(क) कथा (ख) आख्यायिका (ग) उपन्यासः (घ) नाटकम् (ग)

प्रश्नः-76 भट्टमथुरानाथशास्त्रिणा सन् 1904 तः 1949 पर्यन्तं संस्कृत पत्रिकायाः सम्पादनं कृतम् ?
(क) स्वरमङ्गलायाः (ख) संस्कृत रत्नाकरस्य (ग) सागरिकाया (घ) संस्कृत सौरभम् (ख)

प्रश्नः-77 मनोरथानामगतिः न विद्यते इति सूक्तिरस्ति ?
(क) रघुवंशे (ख) शिशुपालवधे (ग) कुमारसम्भवे (घ) उत्तररामचरिते (ग)

प्रश्नः-78 शिशुपालः पूर्वजन्मनि कः आसीत् ?
(क) हिरण्याक्षः (ख) रावणः (ग) भस्मासुर (घ) महिषासुरः (ख)

प्रश्नः-79 किरातेन कस्य शासन व्यवस्थायाः प्रशंसा कृता ?
(क) श्रीकृष्णस्य (ख) युधिष्ठिरस्य (ग) सुयोधनस्य (घ) कर्णस्य (ग)

प्रश्नः-80 अधोलिखितेषु भारवेः कथनं न वर्तते ?
(क) निरत्ययसाम न दान वर्जितम् (ख) गुणानुरोधेन न सक्रियाम्
(ग) परिभवोऽरिभवो हि सुदुस्सह (घ) हितं मनोहरि च दुर्लभं वचः (ग)

प्रश्नः-81 शिशुपालवधस्य मल्लिनाथ कृता टीका अस्ति ?
(क) घण्टापथ-टीका (ख) संजीवनी-टीका (ग) सर्वकषा-टीका (घ) जीवातु-टीका (ग)

प्रश्नः-82 शिशुपालवधस्य कथा महाभारते प्राप्यते ?
(क) शान्तिपर्वणि (ख) सभापर्वणि (ग) भीष्मपर्वणि (घ) आदिपर्वणि (ख)

प्रश्नः-83 पञ्चनली प्रसङ्गो विद्यते ?
(क) शिशुपालवधे (ख) दशकुमारचरिते (ग) नैषधीयचरिते (घ) किरातार्जुनीये (ग)

प्रश्नः-84 श्रीहर्षस्य मुख्यतया कविरस्ति ?
(क) वीररसस्य (ख) शृंगाररसस्य (ग) शान्तरसस्य (घ) करुणरस (ख)

प्रश्नः-85 दशकुमारचरितस्य मुख्यनायको वर्तते ?
(क) राजहंसः (ख) विश्रुतः (ग) राजवाहनः (घ) राजवर्मा (ग)

प्रश्नः-86 बाणभट्टो "वात्स्यायनवंशोत्पन्नः इत्युल्लेखो विद्यते -
(क) कादम्बरीमध्ये (ख) चण्डीशतकमध्ये (ग) हर्षचरितमध्ये (घ) देवीशतकमध्ये (ग)

प्रश्नः-87 चन्द्रापीडः द्वितीय जन्मनि भवति -
(क) पुण्डरीकः (ख) वैशम्पायनः (ग) शूद्रकः (घ) शुकनासः (ग)

प्रश्नः-88 पञ्चनानः इति विशेषेणं कवेरस्ति ?
(क) दण्डिनः (ख) बाणभट्टः (ग) श्रीहर्षः (घ) भारवेः (ख)

प्रश्नः-89 भासस्य नाटकानामन्वेषणं कृतम् -
(क) डा.ए.डी. पुसाल करेण (ख) पंडित तरुमल गणपति शास्त्रिणः
(ग) डा. कीथ महोदयेन (घ) विण्टरनिट्स महोदयेन (ख)

प्रश्नः-90 स्वप्नवासवदत्तम् इति नामकरणस्याधारः स्वप्नः कस्मिन् अङ्के वर्णितो वर्तते ?
(क) तृतीयाङ्के (ख) चतुर्थाङ्के (ग) पञ्चमाङ्के (घ) षष्ठाङ्के (ग)

प्रश्नः-91 मेघस्य गन्तव्यास्ति ?
(क) अयोध्या (ख) अलंका (ग) उज्जयिनी (घ) विदिशा (ख)

प्रश्नः-92 शाकुन्तलस्यनायको दुष्यन्तो वर्तते ?
(क) धीरोदात्तः (ख) धीरोद्धत्तः (ग) धीरललितः (घ) धीरप्रशान्त (क)

प्रश्नः-93 अभिज्ञानशाकुन्तले नान्दी वर्तते ?
(क) चतुष्पदा (ख) अष्टपदा (ग) द्वादशपदा (घ) षोडशपदा (ख)

प्रश्नः-94 तात काश्यपं प्रति शकुन्तलावृतान्तः केन सूचितः ?
(क) अनुसूयया (ख) प्रियंवदया (ग) छन्दोमय्या वाण्या (घ) शकुन्तलया (ग)

प्रश्नः-95 वनौकसौऽपि सन्तो लौकिकज्ञावयम् ? इति वदति -
(क) काश्यपः (ख) शार्ङ्गरवः (ग) गौतमी (घ) प्रियंवदा (क)

प्रश्नः-96 मृच्छकटिकस्य कुलजा नायिका वर्तते ?
(क) मदनिका (ख) धूता (ग) वसन्तसेना (घ) चारू सेना (ख)

प्रश्नः-97 'ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति' इत्युक्तिरस्ति ?
(क) मृच्छकटिके (ख) मुद्राराक्षसे (ग) वेणीसंहारे (घ) उत्तररामचरित (घ)

प्रश्नः-98 अधोलिखित नाटकेषु नायिकानास्ति ?
(क) वेणीसंहारे (ख) मृच्छकटिके (ग) मुद्राराक्षसे (घ) उत्तररामचरिते (ग)

प्रश्नः-99 ते प्रजा न भविष्यति इति दिलीपं शशाप -
(क) नन्दिनी (ख) सुरभिः (ग) वशिष्ठः (घ) दुर्वासा (ख)

प्रश्नः-100 शबर सेनापतिरासीत् ?
(क) वैशम्पायनः (ख) मातङ्गः (ग) शुकनासः (घ) शूद्रकः (ख)

लौकिक साहित्यः
भाग—ङ

प्रश्नः-1. रामायणं केन विरचितं भारतीय साहित्यस्य आद्यं महाकाव्यमास्ते ?
(क) वाल्मीकिना (ख) वेदव्यासेन (ग) कालिदासेन (घ) भर्तृहरिणा (क)

प्रश्नः-2. भारतीय राष्ट्रीयैकताया अपि कः आदर्शग्रन्थः अस्ति ?
(क) रामायणम् (ख) महाभारतम्
(ग) श्रीमद्भागवद्गीता (घ) शाकुन्तलम् (क)

प्रश्नः- 3. रामायणं कथ्यते ?
(क) काव्यम् (ख) महाकाव्यम् (ग) आदिकाव्यम् (घ) प्रबन्धकाव्यम् (ग)

प्रश्नः-4. ब्रह्मणा कः कविः 'आद्य कविरसि' इति सम्बोधित आसीत् ?
(क) भरतमुनिः (ख) वाल्मीकिः (ग) व्यासमुनिः (घ) एतेषु न कोऽपि (ख)

प्रश्नः-5. "सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रैको नायकः सुरः" केन लक्षणेन सम्बद्धम् अस्ति ?
(क) गद्यकाव्येन (ख) महाकाव्येन (ग) नाटकेन (घ) चम्पूकाव्येन (ख)

प्रश्नः-6. रामायणम् वर्णितमस्तिः ?
(क) सर्गेषु (ख) पर्वसु (ग) काण्डेषु (घ) अंकेशु (ग)

प्रश्नः-7. रामायणे अंगीरसोऽस्ति ?
(क) करुणः (ख) शृंगारः (ग) वीरः (घ) शान्तः (क)

प्रश्नः-8. रामायणे श्लोक-संख्या अस्ति ?
(क) 25,000 (ख) 24,000 (ग) 20,000 (घ) 23,000 (ख)

प्रश्नः-9. रामायणाश्रितं किं काव्यं नास्ति ?
(क) रघुवंशम् (ख) सेतुबन्धम् (ग) भट्टिकाव्यम् (घ) बुद्धचरितम् (घ)

प्रश्नः-10. रामायणाश्रितम् अस्ति ?
(क) भट्टिकाव्यम् (ख) शिशुपालवधम् (ग) कुमारसम्भवम् (घ) किरातार्जुनीयम् (क)

प्रश्नः-11. रामायणसम्बद्धं नाटकं नास्ति ?
(क) प्रतिमानाटकम् (ख) अभिषेकनाटकम् (ग) यज्ञफलम् (घ) वेणीसंहारम् (घ)

प्रश्नः-12. महाकाव्ये न्यूनातिन्यूनं सर्गाणि भवन्ति ?
(क) 7 (ख) 5 (ग) 8 (घ) 10 (ग)

प्रश्नः-13. कतिपय विदुषाम् मतानुसारेण मूलरामायणे कति काण्डानि आसन् ?
(क) शड् (ख) पंचः (ग) सप्तः (घ) अष्टः (ख)

प्रश्नः-14. रामायणस्य लोकप्रियत्वं वर्द्धिते सति कति काण्डे समायोज्येताम् ?
(क) द्वयः (ख) त्रयः (ग) चत्वारः (घ) पंचः (घ)

प्रश्नः-15. गंगावतरणाख्यानम् कुतः उद्धृतम् ?
(क) बालकाण्डस्य (ख) सुन्दरकाण्डस्य (ग) लंकाकाण्डस्य (घ) उत्तरकाण्डस्य (क)

प्रश्नः-16. भगवान् रामः शापग्रस्तां महर्षि गौतमस्य पत्नीम् अहल्याम् उद्धरति इति कुत्र वर्णितम् ?
(क) बालकाण्डस्य (ख) सुन्दरकाण्डस्य (ग) लंकाकाण्डस्य (घ) उत्तरकाण्डस्य (क)

प्रश्नः-17. शुनःशेपाख्यानकम् इति केन अपर नाम्ना ज्ञायतेः ?
(क) हरिश्चन्द्रोपाख्यानम् (ख) अहिल्योद्धाराख्यानकम्
(ग) गंगावतरणाख्यानकम् (घ) ऋष्यश्रृंगाख्यानकम् (क)

प्रश्नः-18. रामायणे आश्रमाः कति संख्यायाम् अभिहिता ?
(क) त्रयः (ख) द्वयः (ग) चत्वारः (घ) पंचः (क)

प्रश्नः-19. रामायणाश्रितं नाटकम् नास्ति ?
(क) प्रतिमानाटकम् (ख) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(ग) अभिषेक नाटकम् (घ) उत्तररामचरितम् (ख)

प्रश्नः-20. रामायणाश्रितं महाकाव्यं नास्ति ?
(क) रघुवंशम् (ख) सेतुबन्ध (ग) जानकीहरण (घ) शिशुपालवधम् (घ)

प्रश्नः-21. वाल्मीकेः प्रियं छन्दम् अस्ति ?
(क) मन्दाक्रान्ता (ख) आर्या (ग) अनुष्टुप् (घ) शिखरिणी (ग)

प्रश्नः-22. रामायणस्य माध्यमेन कां वर्णयित्वा जनमानस्य मनोरंजनं कृतमस्ति ?
(क) शिवकथां (ख) रावणसंवादं (ग) रामकथां (घ) शवरीप्रसंगम् (ग)

प्रश्नः-23. महाभारते अंगीरसोऽस्तिः
(क) वीरः (ख) अद्भुतः (ग) शान्तः (घ) श्रृंगारः (ग)

प्रश्नः-24. महाभारतस्य कथा विभाजितास्तिः
(क) 19 पर्वसु (ख) 18 पर्वसु (ग) 7 पर्वसु (घ) 15 पर्वसु (ख)

प्रश्नः-25. मौसलपर्वणः उल्लेखोऽस्तिः
(क) रामायणे (ख) महाभारते (ग) भगवद्गीतायाम् (घ) रघुवंशे (ख)

प्रश्नः-26. 'गीता' महाभारतस्य केन पर्वणा सम्बद्धा अस्तिः
(क) भीष्मपर्वणा (ख) शान्तिपर्वणा (ग) वनपर्वणा (घ) सभापर्वणा (क)

प्रश्नः-27. महाभारतं मूलरूपेण किम् आसीत् ?
(क) जयकाव्यम् (ख) विजयकाव्यम् (ग) महाकाव्यम् (घ) महाभारतम् (क)

प्रश्नः-28. नैमिषारण्ये शौनकादयः ऋषयः किं कृतवन्तः ?
(क) द्वादशवर्षीयं यज्ञं (ख) एकादशवर्षीयं यज्ञं
(ग) त्रयोदशवर्षीय यज्ञं (घ) पठनपाठनम् (क)

प्रश्नः-29. नलोपाख्यानं महाभारतस्य कस्य पर्वणः अन्तर्गतम् आगच्छति ?
(क) मौसलपर्वणः (ख) वनपर्वणः
(ग) आदिपर्वणः (घ) न कोऽपि एतेषु (ख)

प्रश्नः-30. शकुन्तलोपाख्यानम् महाभारतस्य कस्मिन् पर्वणि सम्प्राप्यते ?
(क) भीष्म पर्वणि (ख) वन पर्वणि (ग) आदि पर्वणि (घ) न कोऽपि एतेषु (ग)

प्रश्नः-31. महाकविः कालिदासः कम् उपाख्यानम् आधृत्य 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटकस्य रचनां कृतवान् ?
(क) नलोपख्यानम् (ख) शिवि उपाख्यानम्
(ग) शकुन्तलोपाख्यानम् (घ) मत्स्योपायानम् (ग)

प्रश्नः-32. मत्स्यावतारस्य कथा कुत्र उपलभ्यते ?
(क) रामायणस्य बालकाण्डे (ख) महाभारतस्य आदि पर्वणि
(ग) महाभारतस्य मौसल पर्वणि (घ) महाभारतस्य वन पर्वणि (ख)

प्रश्नः-33. शिवि उपाख्यानस्य कथा कुत्र प्राप्यते?
(क) महाभारतस्य वन पर्वणि (ख) महाभारतस्य आदि पर्वणि
(ग) महाभारतस्य मौसल पर्वणि (घ) रामायणस्य अयोध्याकाण्डे (क)

प्रश्नः-34. माहभारतकाले के विवाहाः अधिकं प्रचलिताः आसन् ?
(क) प्राजापत्यः, दैव, गान्धर्वः विवाहाः (ख) गान्धर्व-राक्षस-आसुरविवाहाः
(ग) दैवः-गान्धर्व-आसुरविवाहाः (घ) आसुर-प्राजापत्य दैव-विवाहाः (ख)

प्रश्नः-35. महाभारतस्य शैली अस्ति ?
(क) पांचाली (ख) गौड़ी (ग) लाटी (घ) रीतिः (क)

प्रश्नः-36. विषयव्यापकत्व कारणात् कः पंचमो वेदः इत्यभिधीयते ?
(क) रामायणः (ख) मनुस्मृतिः (ग) महाभारतम् (घ) भगवद्गीता (ग)

प्रश्नः-37. रामायणकाले समाजस्य व्यक्तिषु कस्य कामनायाः साम्राज्यम् आसीत् ?
(क) सर्वसुखस्य (ख) परोपकारस्य (ग) सर्वदुःखस्य (घ) स्वहितस्य (ख)

प्रश्नः-38. रामायणमाश्रित्य यस्य कथास्तिः
(क) कुन्दमाला (ख) रत्नावली
(ग) मालविकाग्निमित्रम् (घ) पंचरात्रम् (क)

प्रश्नः-39. जटायुरावणयुद्धं रामायणस्य कस्मिन् काण्डे ?
(क) अरण्यकाण्डे (ख) सुन्दरकाण्डे (ग) किष्किन्धाकाण्डे (घ) बालकाण्डे (ग)

प्रश्नः-40. रामायणे हनुमतः अंगुलीयकप्रदानवृत्तान्तः कस्मिन् काण्डे वर्तते ?
(क) सुन्दरकाण्डे (ख) युद्धकाण्डे (ग) किष्किन्धाकाण्डे (घ) उत्तरकाण्डे (क)

प्रश्नः-41 वाल्मीकि रामायणे कति काण्डाः सन्ति ?
(क) पंच (ख) नव (ग) सप्त (घ) षष्ठ (ग)

प्रश्नः-42 रामायणं केषां भाषायां लिखितम् ?
(क) प्राकृत (ख) संस्कृत (ग) वैदिकः (घ) अपभ्रंशः (ख)

प्रश्नः-43 महर्षि वाल्मीकिना रामायणं वर्णितम् ?
(क) सुन्रकाण्डं यावंत् (ख) सुन्दरकाण्डं यावत्
(ग) युद्धकाण्डं यावत् (घ) उतरकाण्डं यावत् (ग)

प्रश्नः-44 रामायणे हनुमतः अङ्गुलीयक प्रदान वृतान्तः कस्मिन् काण्डे वर्तते ?
(क) सुन्दरकाण्डे (ख) युद्धकाण्डें (ग) अरण्यकाण्डे (घ) अयोध्याकाण्डे (क)

प्रश्नः-45 रामयणे जटायुवृतान्तः कथा कुत्र वर्णिता ?
(क) किष्कन्धाकाण्डे (ख) बालकाण्डें (ग) अरण्यकाण्डे (घ) अयोध्याकाण्डे (ग)

प्रश्नः-46 ऋष्यशृङ्गमुनेः चरितं रामायणस्य कस्मिन् काण्डे वर्णितम् ?
(क) किष्कन्धाकाण्डे (ख) बालकाण्डे (ग) अरण्यकाण्डे (घ) अयोध्याकाण्डे (ख)

प्रश्नः-47 रामायणे श्रीरामस्य ऋष्यमुखपर्वत निवासो वर्णित ?
(क) किष्किन्धाकाण्डे (ख) बालकाण्डे (ग) अरण्यकाण्डे (घ) अयोध्याकाण्डे (क)

प्रश्नः-48 रामायणे शबरीवृतान्तः कस्मिन् काण्डें वर्णितः ?
(क) किष्कन्धाकाण्डे (ख) बालकाण्डे (ग) अरण्यकाण्डे (घ) अयोध्याकाण्डे (ग)

प्रश्नः-49 अश्वमेघ यज्ञ वर्णनं रामायणस्य कस्मिन् काण्डें ?
(क) किष्किन्धाकाण्डे (ख) उत्तरकाण्डे (ग) अरण्यकाण्डे (घ) अयोध्याकाण्डे (ख)

प्रश्नः-50 यावत्स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले, इत्येतत् वाक्यं कथमनुसरति ?
(क) रामायणम् (ख) भगवद्गीता
(ग) महाभारतम् (घ) ईशावास्योयनिषद् (क)

प्रश्नः-51 रामायणे सुग्रीववादि वृतम् अस्ति ?
(क) पताका (ख) प्रकरी (ग) कार्य (घ) बिन्दु (क)

प्रश्नः-52 रामायणे जटायु आख्यानमर्थप्रकृतिः का ?
(क) पताका (ख) प्रकरी (ग) कार्य (घ) बिन्दु (ख)

प्रश्नः-53 अनार्यजुष्टमस्वर्गं कुर्या पापमहं यदि। इक्ष्वाकुणामहं लोके भवेयं कुलपांसनः।। केन इदम् उच्ये ?
(क) रामेण (ख) भरतेन (ग) लक्ष्णेन (घ) दशरथेन (ख)

प्रश्नः-54 सुलभा पुरुषा राजन् सततं प्रियवादिनः। अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः।। केन इदम् उच्ये ?
(क) कुम्भकर्णः (ख) सुग्रीवः (ग) मारीचः (घ) विभिषणः (ग)

प्रश्नः-55 'तथा में माधवी देवी विवरं दातुमर्हति' उत्तरे वाल्मीकि रामायणस्यकाण्डे केनोक्तम् ?
(क) सीतया (ख) कैकयया (ग) कौशल्यया (घ) पृथिव्या (क)

प्रश्नः-56 धर्मसारमिदं जगत् वाक्यमस्ति ?
(क) गीता (ख) वाल्मीकिरामायणम् (ग) नीतिशतकम् (घ) उत्तरामचरित् (ख)

प्रश्नः-57 नांह जानामि केयूरे नाहं जानामि कुण्डले। नूपुरे त्वभिजानामि नित्यं पादाभिवन्दनम्।। अयं श्लोकः केन उक्तः ?
(क) सीतया (ख) कैकयया (ग) लक्ष्मणेन (घ) हनुमन्ता (ग)

प्रश्नः-58 इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत् इति उक्तिः कस्य वर्तते ?
(क) विष्णुपुराणस्य (ख) रामाणस्य (ग) ऋग्वेदस्य (घ) स्त्रीपर्वणि (क)

प्रश्नः-59 चातुर्वर्ण्यं मयासृष्टः गुणकर्मविभागशः इत्युक्तम् ?
(क) महाभारते (ख) रामायणस्य (ग) अर्थशास्त्रे (घ) मनुस्मृतेः (ख)

प्रश्नः-60 द्युतक्रीडावर्णनं कस्मिन् पर्वणि विद्यते ?
(क) सभापर्वणि (ख) कर्णपर्वणि (ग) आदिपर्वणि (घ) स्त्रीपर्वणि (ख)

प्रश्नः-61 महाभारतस्य मौलिक रूपम आसीत् ?
(क) जयनाम्ना (ख) भारतनाम्ना
(ग) विजयनाम्ना (घ) आशकाव्य नाम्ना (क)

प्रश्नः-62 शान्ति पर्वणि बलस्य अङ्गानि सन्ति ?
(क) षट् (ख) अष्ट् (ग) पंच (घ) एकादशः (क)

प्रश्नः-63 विष्णुस्त्रोत नाम स्त्रोत कुत्र वर्तते ?
(क) रामायणे (ख) महाभारते
(ग) श्रीमद्भागवत् पुराणे (घ) सर्वेः (ख)

प्रश्नः-64 महाभारतस्य प्रथम नाम आसीत् ?
(क) जयः (ख) भारतः (ग) महाभारतः (घ) सर्वे (क)

प्रश्नः-65 महाभारतस्य कथा कति पर्वसु विभक्ता अस्ति ?
(क) १५ (ख) १६ (ग) १४ (घ) १८ (घ)

प्रश्नः-66 प्रज्ञा प्रतिष्ठा भूतानां प्रज्ञा लाभः परमतः। प्रज्ञा निश्रेयसी लोके प्रज्ञा स्वर्गौ मतः सताम्।। इति..... वर्तते ?
(क) रामायणे (ख) विष्णु पुराणे (ग) हरवंशे (घ) महाभारते (घ)

प्रश्नः-67 सेवलोऽस्ति ?
(क) विदुरः (ख) कर्णः (ग) शकुनिः (घ) दुशासनः (ग)

प्रश्नः-68 भीष्मस्यनिर्वाणं कस्मिन् पर्वणि विद्यते ?
(क) अनुशासनपर्वणि (ख) उघोगपर्वणि (ग) भीष्मपर्वणि (घ) शान्तिपर्वणि (क)

प्रश्नः-69 शान्तनोः पुत्रस्य नाम किम् ?
(क) भीष्मः (ख) अद्वयः (ग) कविक्रतु (घ) भीष्मः (क)

प्रश्नः-70 महाभारतस्य सौप्तिकपर्वणः प्रमुखा घटनास्ति ?
(क) अश्वात्थामा द्रोपदीपुत्राणांवधः (ख) शल्यस्यवधः
(ग) द्रोणवधः (घ) जयद्रथवधः (क)

प्रश्नः-71 शान्तिपर्वे दुर्ग संख्यास्ति ?
(क) पंच (ख) नव (ग) षट् (घ) सप्त (ग)

प्रश्नः-72 परीक्षिततस्य पितामहः कः आसीत् ?
(क) भीम (ख) अर्जुनः (ग) शान्तनुः (घ) भरतः (ख)

प्रश्नः-73 आख्यानोपाख्यानैः उपबृहितं काव्यम् अस्ति ?
(क) रामायणम् (ख) महाभारतम् (ग) श्रीमद्भागवद् (घ) नैषधीयचरितम् (ख)

प्रश्नः-74 धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ। यदिहास्ति तदन्यत्र, यनेहास्ति न तत् क्वचित्।। कुत्र वर्तते ?
(क) अनुशासनपर्वणि (ख) द्रोणपर्वणि (ग) आदिपर्वणि (घ) विराट्पर्वणि (ग)

प्रश्नः-75 महाभारते अन्तिमंपर्व किम् ?
(क) स्वर्गारिहोणपर्वणि (ख) अनुशासनपर्वणि (ग) भीष्मपर्वणि (घ) शान्तिपर्वणि (क)

प्रश्नः-76 'अहिंसापरमोधर्मः' इदं वाक्यमस्ति ?
(क) उपनिषद (ख) कालिपुराणे (ग) अनुशासनपर्वणि (घ) शान्तिपर्वणि (घ)

प्रश्नः-77 अश्रु दान शीलांश्च सत्य शीलानास्तिकान्। कार्ष्णं वेदमिमं विद्वान् श्रावयित्वार्थमसुते।। इत्यास्मिन् श्लोके प्रस्तुतः कुतः कार्ष्णः वेदः कः ?
(क) भगवद्गीता (ख) जानकीहरणम (ग) महाभारतम (घ) रामायणम् (ग)

प्रश्नः-78 श्रीमद्भागवतस्य पश्नावली टीका केन प्रणीता ?
(क) वीरराघववाचार्येण (ख) शुकदेवाचार्येण (ग) विजयध्वजेन (घ) वल्लभाचार्येण (ग)

प्रश्नः-79 'योगक्षेमं वहाम्यहम्' पंक्तिः वर्तते ?
(क) महाभारतस्य (ख) रामायणस्य (ग) भगवद्गीतायाः (घ) सांख्यदर्शनस्य (ग)

प्रश्नः-80 कृष्णेन वर्णितः ऊर्ध्वमूलत्वादिलक्षणः अश्वत्थोवृक्षः केन शस्त्रेण छेदनीयो भवति ?
(क) अयोनिर्मितेन (ख) वैराग्यरूपेण
(ग) मूढभावेन (घ) विषयवैमुख्यरूपेण (ख)

प्रश्नः-81 गुडाकेशः कः अस्ति ?
(क) श्रीकृष्णः (ख) युद्धिष्ठिरः (ग) अर्जुनः (घ) भीमः (ग)

प्रश्नः-82 'स्वधर्मेनिधनं श्रेयः परधमो भयावहः इत्युक्तिः भगवद्गीतायाः कतमोऽध्याये वर्तते ?
(क) द्वितीये (ख) तृतीये (ग) पंचमेः (घ) प्रथमें (ख)

प्रश्नः-83 भागवतटीकायाः टीका अतीव प्रसिद्धास्ति ?
(क) कासांजन टीका (ख) श्रीधरी टिका (ग) शुकपक्षीया टीका (घ) चन्द्रिका टीका (ख)

प्रश्नः-84 'वेदानां सामवेदोऽस्मि' वाक्यमस्ति ?
(क) गीतायां (ख) रामायणें (ग) ऋग्वेदेः (घ) सामवेदे (क)

प्रश्नः-85 'एडम्सब्रिज्' इत्यस्य रामायणे केन नाम्ना प्रसिद्धासीत् ?
(क) रामसेतुनाम्ना (ख) पम्पापुरनाम्ना (ग) द्रोणाचलनाम्ना (घ) सागरसेतुनाम्ना (क)

प्रश्नः-86 अप्रियस्य च पथस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभाः स्त्रिया भर्ता हि दैवतम् सूक्तयोः वर्णनं कुत्र प्राप्नुवति ?
(क) रामायणे (ख) उतररामचरिते (ग) महाभारते (घ) सर्वे (क)

प्रश्नः-87 रामयणे काण्डानां समीचीनं क्रमं किमस्ति ?
(क) बालकाण्डः, अयोध्याकाण्डः, लंकाकाण्डः, अरण्यकाण्डः, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, उत्तरकाण्ड।
(ख) बालकाण्डः, अयोध्याकाण्डः, अरण्यकाण्डः, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, लंकाकाण्डः, उत्तरकाण्ड।
(ग) बालकाण्डः, लंकाकाण्डः, अयोध्याकाण्डः, अरण्यकाण्डः, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, उत्तरकाण्ड।
(घ) बालकाण्डः, अरण्यकाण्डः, अयोध्याकाण्डः, लंकाकाण्डः, सुन्दरकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, उत्तरकाण्ड। (ख)

प्रश्नः-88 अयोनिजा इति कस्याः प्रातः स्मरणीयाः विशेषणम् ?
(क) उर्मिलायाः (ख) कैकेय्याः (ग) सीतायाः (घ) त्रिजटायाः (ग)

प्रश्नः-89 सीताप्रतिकृतया रामः कं यज्ञं करोति ?
(क) अश्वमेघम् (ख) विश्वजितम् (ग) पुत्रेष्टियज्ञम् (घ) सर्वमेधसम् (क)

प्रश्नः-90 विराटराज्ये पाण्डवानां कानिनामानि, तेषु असत्यमस्ति ?
(क) युधिष्ठिरः–वैयाध्रपद्यम् (ख) भीमसेन -वल्भवः
(ग) अर्जुनः–बृहन्नलाः (घ) नकुलः -ग्रन्थिकः (छ)
(ङ) सहदेवः–अरिष्टनेमि (च) द्रौपदी–सैरन्ध्री (छ) कुन्ती–उलूपी

प्रश्नः-91 अवश्यमेव भोक्तव्यं कर्म शुभारम्भं कस्येयमुक्तिः ?
(क) संजयस्य (ख) श्रीकृष्णस्य (ग) युद्विष्ठिरस्य (घ) अर्जुनस्य (क)

प्रश्नः-92 महाभारते कस्य वंशस्य इतिहासस्य वर्णनमस्ति ?
(क) इक्ष्वाकुवंशस्य (ख) रघुवंशस्य (ग) चंद्रवंशस्य (घ) यादववंशस्य (ग)

प्रश्नः-93 भीष्म पितामहस्य युधिष्ठिरंप्रतिमोक्षधर्म राजधर्म विषयकोपदेशः कस्मिन् पर्वणि उपलभ्यते ?
(क) अनुशासनपर्वणि (ख) आदिपर्वणि (ग) भीष्मपर्वणि (घ) शान्तिपर्वणि (घ)

प्रश्नः-94 राजाकालस्यकारणम् कस्मिन् ग्रन्थे कथितमस्ति ?
(क) रामायणे (ख) महाभारते (ग) गीतायां (घ) पुराणे (ख)

प्रश्नः-95 परीक्षितस्य पिता कः ?
(क) सहदेवः (ख) भीमः (ग) अभिमन्युः (घ) नकुलः (ग)

प्रश्नः-96 ययाति-उर्वशी आख्यानं रामायणे कुत्रास्ति ?
(क) बालकाण्डे (ख) उत्तरकाण्डे (ग) सुन्दरकाण्डे (घ) किष्किन्धाकाण्डे (ख)

प्रश्नः-97 रामचरितज्ञानार्थं वाल्मीकये को वरमदात्?
(क) नारदः (ख) गौतमः (ग) ब्रह्मा (घ) गालवः (क)

प्रश्नः-98 श्रीरामचन्द्रः एनं व्याकरणशास्त्रज्ञ इति प्रशंसति?
(क) सुग्रीवम् (ख) भरतम् (ग) हनूमन्तम् (घ) लक्ष्णम् (ग)

प्रश्नः-99 सुलभाःपुरुषा राजन् सततं प्रियवादिनः। अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रौता च दुर्लभः॥
श्लोकममुं रावणासुरभप्रति कः उक्तवान्?
(क) कुम्भवर्णः (ख) सुग्रीवः (ग) बाली (घ) मारीचः (घ)

प्रश्नः-100 रामकथायां जटायु-आख्यानम् अर्थप्रकृतिः का?
(क) बीज (ख) पताका (ग) प्रकरीं (घ) कार्यं (ग)

अध्याय-3

भारतीय दर्शन

भारतीय दर्शन का संक्षिप्त परिचय

दर्शन शब्द की व्युत्पत्ति के सन्दर्भ में दार्शनिकों के मध्य अनेक मतभेद है। इस शब्द का प्रयोग कब, किसके द्वारा तथा किस रूप में हुआ। यह सब स्पष्ट करने के लिए विद्वानों ने ज्ञात परम्परा का आश्रय ग्रहण किया है। डॉ. राधाकृष्णन ने 'दर्शन' शब्द का प्रचलन ईसा की प्रथम शताब्दी के पूर्व माना है। दर्शन शब्द के प्रथम प्रयोग के विषय में डॉ. भगवानदास एवं डॉ. दासगुप्ता के मध्य एक मत नहीं है। जहाँ डॉ. भगवानदास ने इसका पारिभाषिक अर्थ में प्रयोग 'ईशावास्योपनिषद्' में माना है। वहीं दासगुप्ता के अनुसार 'दर्शन' शब्द प्रथम बार वैशेषिक सूत्र में परिभाषित हुआ है।

व्युत्पत्तिजन्य अर्थ के अनुसार दर्शन शब्द की उत्पत्ति देखना अर्थ में प्रयुक्त दृश् धातु से ल्युट् प्रत्यय के योग से हुई है। आचार्य पाणिनि मतानुसार 'ल्युट्' प्रत्यय का प्रयोग भाव, करण एवं अधिकरण इन तीन अर्थों में होता है। यहाँ 'भाव' से अभिप्राय शुद्ध धातु के अर्थ से है। इस प्रकार दर्शन शब्द का शाब्दिक अर्थ हुआ 'देखना' अर्थात् वह विद्या, ज्ञान तथा साधन जिसके द्वारा किसी विषय या वस्तु को देखा या जाना जाए।

इसी प्रकार दर्शन शब्द की व्युत्पत्ति **"दृश्यतेऽनेनेतिदर्शनम्"** अर्थात् जिसके द्वारा देखा जाये। यहाँ यह जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि किसके द्वारा देखा जाए और क्या देखा जाय? इसी जिज्ञासा की निवृत्ति हेतु महर्षि याज्ञवल्क्य ने कहा है- **"आत्मा वा अरे दृष्टव्य"** अर्थात् आत्मा को देखना चाहिए। यह आत्मा, एकमात्र आत्म या परमात्मप्रकाश से ही देखा जा सकता है, अतः आत्मज्योति से आत्मस्वरूप का साक्षात्कार करना ही 'दर्शन' है।

दर्शन शब्द को अंग्रेजी में "फिलासाँफी" कहते हैं। यह फिलासाँफी शब्द 'फिलास्' तथा 'सोफिया' इन दो ग्रीक पदों से बना है। जिसका क्रमशः अर्थ है- प्रेम व ज्ञान। अतः 'फिलासाँफी' शब्द का अर्थ हुआ- 'विद्या प्रेम या ज्ञान के प्रति अनुराग।'

इसी सन्दर्भ में 'दर्शन' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग दार्शनिक पारिभाषिक संज्ञा के रूप में कणाद ऋषि द्वारा रचित वैशेषिक सूत्र में होना पाया जाता है। कणाद प्रतिपादित वैशेषिक सूत्र नामक ग्रन्थ बौद्धकाल के पूर्व लिखा गया था। बौद्धपिटकों ने (400 ई.पू.) विरोधी विचारों को 'दिट्ठि' संज्ञा से पुकारा है। इसका संस्कृत अर्थ 'दृष्टि' है। दोनों की मूल धातु 'दृश्' है, इसी से 'दर्शन' शब्द बना है।

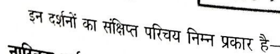
भारतीय मनीषा ने जिन आध्यात्मिक विधियों का अन्वेषण किया है। वे ही भिन्न-भिन्न दर्शनों के रूप में प्रसिद्ध हैं जो आस्तिक व नास्तिक विचारधारा से विभाजित है- **अस्तिनास्तिदिष्टं मतिः**। इस प्रकार इन दोनों शब्दों का विग्रह बनता है- **अस्ति परलोकः इत्येवं मतिर्यस्य सः आस्तिकः** तथा **नास्ति इति मतिर्यस्य सः नास्तिकः** अर्थात् परलोक में जो विश्वास रखता है वह 'आस्तिक' है तथा जो विश्वास नहीं रखता वह 'नास्तिक' है, किन्तु इस पाणिनीयविग्रह के कारण दार्शनिकों के मध्य अव्यवस्था फैल गयी क्योंकि इस अर्थ से बौद्ध तथा जैन दोनों को

ही आस्तिक मानना पड़ता। यहाँ जानने योग्य है कि बौद्ध आत्मा एवं पुनर्जन्म में विश्वास करता है। जिसका साक्षात् सम्बन्ध परलोक से है। लेकिन तत्कालीन वर्गविशेष को यह स्वीकार नहीं था कि बौद्ध एवं जैन आस्तिक कहलाए। उन दोनों को नास्तिक सिद्ध करने के लिए नवीन अर्थ बनाए गये।

इसके पश्चात् इसका नवीन अर्थ 'ईश्वर में आस्था रखने वाला' तथा 'अनास्था रखने वाला किया' जो अत्यन्त लोकप्रिय हुआ। बल्कि आज भी आस्तिक एवं नास्तिक का विभाजक ईश्वर ही माना जाता है किन्तु इसमें भी एक कठिनाई आ गई। सांख्य एवं मीमांसा ईश्वर की सत्ता को स्वीकार नहीं करते। इस प्रकार इन दोनों वर्ग विशेष से सम्बद्ध दर्शनसम्प्रदाय को भी 'नास्तिक' स्वीकार करना पड़ता, जो अत्यन्त कठिन था। अतः दार्शनिक पद्धतियों का 'आस्तिक' एवं 'नास्तिक' में वर्गीकरण करते समय इन शब्दों को विशिष्ट अर्थ प्रदान किया।

'आस्तिक' शब्द का यह अर्थ किया गया कि जो वेदों में आस्था रखे अथवा जो व्यक्ति वेदों की परम-प्रामाणिकता तथा अमोघता में विश्वास रखे। 'नास्तिक' का अर्थ ठीक विपरित है- **'वेद निन्दको नास्तिकः', नास्तिको वेद निन्दकः'**अर्थात् जो वेदों में आस्था न रखते हुए उसकी निन्दा करें। विद्वानों के मध्य आज भी यह अर्थ प्रचलित है। इस अर्थ के पीछे क्या प्रेरणा अथवा कारण रहे होगे, इसका कहीं स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता फिर भी इस सम्बन्ध में एस. एन. दासगुप्त का यह स्पष्ट कथन प्राप्त होता है किन्तु 'नास्तिक' की परिभाषा स्वयं मनु ने दी है–वेदनिदंक अर्थात् वह जो वेदों का प्रत्याख्यान करें। इसे सौभाग्य कहे या दुर्भाग्य, यह परम्परा मानो सदैव के लिए स्थिर हो गयी तथा स्मृतिकार के दिये हुए अर्थ को जैसे परम दार्शनिक महत्व मिल गया।

आस्तिक-नास्तिक विभाजन के आधार पर निम्नारेख से भारतीय दर्शन का वर्गीकरण किया जा सकता है–



इन दर्शनों का संक्षिप्त परिचय निम्न प्रकार है–

नास्तिक दर्शन

उक्त पारम्परिक दृष्टिकोण के आधार पर चार्वाक, जैन, बौद्ध इन तीन दर्शनों को नास्तिक कहा गया जो निःसन्देह प्रबल वेद विरोधी है। ये हैं–

चार्वाकदर्शन

आचार्य	-	बृहस्पति, चार्वाक।
उद्देश्य	-	शारीरिक सुख।
प्रमाण	-	प्रत्यक्ष।
पदार्थ	-	पृथिवी–जल–तेज–वायु।
सिद्धान्त	-	देहात्मवाद–मनसावाद–इन्द्रियावाद।
मोक्ष	-	नहीं।
ईश्वर/आत्मा	-	इस नाम की कोई वस्तु नहीं है, चैतन्य से युक्त शरीर "आत्मा" है।
पुरुषार्थ	-	स्त्री आलिंगन से उत्पन्न सुख स्वर्ग, पीड़ा से उत्पन्न दुःख नरक है।
विशेष	-	भौतिकवादीदर्शन, अवैदिक, लोकायत, बार्हस्पत्य नामों से प्रचलित।

चार्वाकदर्शन एक भौतिकवादी दर्शन है, जिसे 'लोकायत' या 'बार्हस्पत्य' के नाम से भी जाना जाता है। चार्वाकदर्शन का भारतीय दर्शन को सबसे विशिष्ट तथा उल्लेखनीय अवदान उसका यह सिद्धान्त है कि चेतना केवल पदार्थ से ही उत्पन्न होती है। इस सन्दर्भ में चार्वाक का मत है कि शरीर ही चेतना का स्थान है तथा इससे अलग कोई वस्तु नहीं है जिसे आत्मा कहा जा सके **'देह एवात्मा'**।

चार्वाक लगभग सभी रुढ़िवादी मतों का खण्डन करते है। उनके कठोर प्रहार के विषय वेद एवं वैदिक आचार विशेष रूप से रहे। उनके अनुसार तीनों वेद ठगों, धूर्तों एवं निशाचरों की रचनाएँ हैं-**'त्रयो वेदस्य कर्त्तारः धूर्त भाण्ड निशाचरः'** इसी प्रकार मन्द बुद्धि तथा कार्य करने में अक्षम लोग ही यज्ञ, त्रिदण्ड, भस्म इत्यादि के सहारे जीविकोपार्जन करते है। इस दर्शन सम्प्रदाय का कोई प्रामाणिक ग्रन्थ समुपलब्ध नहीं है। अतः इतस्ततः बिखरे हुए सिद्धान्तों के आधार पर ही इसकी समीक्षा की जाती है। फिर भी माधवाचार्य कृत 'सर्वदर्शनसंग्रह' में इसका कुछ दृष्टिकोण प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त हरिभद्र कृत 'षडदर्शनसमुच्चय' में आठ श्लोकों, नैषधीयचरितम् का सत्रहवाँ सर्ग, कृष्णमित्र विरचित प्रबोधचन्द्रोदय, विष्णुपुराण, कठोपनिषद्, रामायण, जयराशिभट्ट कृत तत्त्वोपप्लव सिंह में चार्वाकीय विचार यत्र-तत्र प्राप्त होते है।

बौद्धदर्शन

आचार्य	-	बुद्ध। आकाश के समान अनन्त ज्ञान सम्पन्न।
उद्देश्य	-	दुःखों का अन्त।
प्रमाण	-	प्रत्यक्ष, अनुमान।
पदार्थ	-	आलयविज्ञान, प्रवृत्तिविज्ञान।
सिद्धान्त	-	असत्कार्यवाद, चार आर्यसत्य, प्रतीत्यसमुत्पाद, क्षणिकत्ववाद, अनात्मवाद, शून्यवाद। मोक्ष-चार आर्य सत्यों के ज्ञान से निर्वाण प्राप्ति।
सम्प्रदाय	-	सौत्रान्तिक-वैभाषिक-योगाचार-माध्यमिक।
ईश्वर/आत्मा	-	दोनों का ही अभाव है। विज्ञान मात्र ही आत्मा है- नित्यविज्ञानमैवात्मा भगवान बुद्ध ने शरीर का उल्लेख नहीं किया है।
विशेष	-	चार आर्य सत्य–दुःख, दुःखसमुदाय, दुःख निरोध, दुःख निरोध मार्ग। त्रिरत्न–शील, समाधि, प्रज्ञा।

भगवान बुद्ध ने कहा था : अपनी उन्नति अपने ही प्रयत्न से होगी अन्य कोई तुम्हारा सहायक नहीं होगा, स्वयं अपनी मुक्ति प्राप्त करों। बौद्ध मत के प्रवर्तक 'गौतम बुद्ध' माने जाते है। गौतम बुद्ध मनुष्य के

रोग-जरा-मरण तथा अन्य दुःखों को देखकर अत्यन्त दुःखी हुए थे। जीव के दुःखो के कारण को समझने तथा उन्हें दूर करने के उपायों को जानने के लिए वर्षों तक तपस्या की। अन्त में 'बोधित्व' की प्राप्ति हुई, जिसका सार चार आर्य सत्यों में मिलता है।

महात्मा बुद्ध ने दार्शनिक प्रश्नों पर चर्चा नहीं की जिससे यह सम्प्रदाय मुख्य रूप से चार भागों में विभक्त हो गया सौत्रातिक–वैभाषिक–योगाचार–माध्यमिक। पालिभाषा में लिखित त्रिपिटक ग्रन्थों में इनके सिद्धान्तों का उल्लेख हुआ है। ईसा की द्वितीय शताब्दी में स्थित 'नागार्जुन' इस दर्शन के उल्लेखनीय प्राचीन आचार्य है। इसके अतिरिक्त वसुबन्धु, दिगनाग, धर्मकीर्ति, शान्तरक्षित आदि आचार्य भी प्रसिद्ध है। जिनके प्रमाणसमुच्चय, प्रमाणवार्तिक तत्वसंग्रह, तत्वसंग्रहपंजिका आदि बौद्धदर्शन के आधारभूत ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं। आचार्य केशवमिश्र रचित तर्क भाषा में बौद्ध सिद्धान्तों की अनेक स्थलों पर समीक्षा उपलब्ध होती है।

जैनदर्शन

आचार्य	-	भगवान महावीर।
उद्देश्य	-	आस्त्रव तथा संवर के मोक्षोपयोगी तत्वों का प्रतिपादन।
प्रमाण	-	प्रत्यक्ष, अनुमान।
प्रदार्थ	-	जीव, अजीव, आस्त्रवर, संवर, निर्झर, बन्ध, मोक्ष।
प्रमुख सिद्धान्त	-	अनेकान्तवाद, स्याद्वाद, सप्तभंगीनय ज्ञान के अभाव से कर्म के निर्मूल होने से मोक्ष होता है।
ईश्वर	-	ईश्वर का अभाव है।
आत्मा	-	आत्मा चेतन ज्ञान स्वरूप तथा शरीर परिणाम वाला है।
पुरुष	-	व्यक्ति विशेष (जीन) ही चत्वार पुरुषार्थ पर विजय प्राप्त कर पुरुष बन जाते है।
विशेष	-	जैनदर्शन में अहिंसा को धर्म का मूल या प्राण माना गया है, **अहिंसा परमोधर्म।**

बौद्धदर्शन की तरह जैनदर्शन भी धार्मिक विश्वास से जुड़ा सिद्धान्त है। इसका उद्भव बौद्ध से पूर्व ऋग्वैदिक काल में हो चुका था। इनके दो सम्प्रदाय हैं- 1. श्वेताम्बर 2. दिगम्बर। इन दोनों सम्प्रदायों का अन्तर मताग्रह का उतना नहीं है जितना आनुष्ठिक क्रियाकलाप का। आधारभूत दार्शनिक सिद्धान्त की दृष्टि से दोनों में सहमति है। अनेकान्तवाद-स्याद्वाद-पुद्गलवाद आदि सिद्धान्त इस दर्शन चिन्तन के प्रमुख सिद्धान्त है। कुकुन्दाचार्य, उमास्वामी, सिद्धसेन दिवाकर, अकलंक, प्रभाचन्द्र, हेमचन्द्र, हरिभद्र आदि इस दर्शन सम्प्रदाय के प्रमुख विचारक थे। तत्त्वार्थसूत्र, पंचास्तिकायसार, सम्मतितर्कशास्त्र, तत्त्वार्थराजवार्तिक, प्रमेयकमलमार्त्तण्ड, न्यायकुमुदचन्द्र, षड्दर्शनसमुच्चय, स्याद्वादरत्नाकर आदि इसके प्रमुख ग्रन्थ है।

आस्तिक दर्शन

आस्तिक सम्प्रदाय के दर्शनों का उनकी सैद्धान्तिक मतों की एकता के आधार पर युग्म सा बन गया है। जैसे-सांख्य-योग, मीमांसा-वेदान्त, न्याय-वैशेषिक। इनके सिद्धान्तों में मतैक्य के पीछे सामान्यतया यही तर्क देखने को मिलता है कि इन युग्मों ने परस्पर तत्वमीमांसा या प्रमाण मीमांसा को स्वीकार कर लिया है। यह कथन मीमांसा एवं वेदान्त के विषय में सत्य नहीं है। ये समस्त दर्शन स्वयं को वैदिक सिद्धान्त पर आधारित मानते है।

सांख्यदर्शन

आचार्य	-	कपिल मुनि।
उद्देश्य	-	सभी दुःखों से मुक्ति पाने के निमित्त तत्व ज्ञान की प्राप्ति।
प्रमाण	-	प्रत्यक्ष–अनुमान–शब्द।
पदार्थ	-	(25) 1. पुरुष 2. प्रकृति 3. महत्त 4. अहंकार 5. एकादश इन्द्रियाँ 6. पञ्चमहाभूत, 7. पञ्च तन्मात्रा।
प्रमुख सिद्धान्त	-	सत्कार्यवाद।
ईश्वर	-	ईश्वर का उल्लेख नहीं।
पुरुष	-	शरीर भेद से अनेक पुरुष, नित्य-चेतन निर्गुण-निर्विकार दृष्टा।
मोक्ष	-	प्रकृति पुरुष विवेक का ज्ञान होने से दुःखों की एकान्तिक व आत्यान्तिक निवृत्ति ही मोक्ष है।
विशेष विवरण	-	प्रकृति एवं पुरुष की परम सत्ता को मानता है। इसमें प्रकृति के सत्व-रजस्-तमस् का पूर्ण सन्तुलन होता है। प्रकृति एवं पुरुष की सत्ता को मानने के कारण इसे द्वैतवादी दर्शन भी कहते है।

सांख्यदर्शन सामान्यतः भारतीयदर्शन की समस्त प्रणालियों में सर्वाधिक प्राचीन है। सांख्यदर्शन के प्रणेता 'महर्षि कपिल' है। इस विषय के सन्दर्भ में सन्दर्भ में डॉ. उमेश मिश्र का कथन है- 'सांख्यदर्शन वास्तव में मनोवैज्ञानिक दर्शन है। इसके तत्व स्थूल न होकर सूक्ष्म है, जो हमारे बौद्धिक जगत् के तत्व है इस जगत् में केवल सूक्ष्म तत्व ही है। उनके सम्बन्ध में विचार भी सूक्ष्म है।'

इस दर्शन में बताया है कि इस संसार में मनुष्य दुःख से अत्यन्त त्रस्त है। जिससे हमेशा के लिए छुटकारा पाने के लिए उसका प्रयास निरन्तर चलता रहता है। इन प्रयासों में एक प्रयास ज्ञान प्राप्ति भी है अर्थात् व्यक्ति हमेशा के लिए दुःख से मुक्त हो सकता है, यदि उसे ज्ञान प्राप्त हो जाए। ज्ञान प्राप्ति का एक मात्र साधन प्रमाण है। प्रत्यक्ष-अनुमान-आप्त प्रमाणों द्वारा व्यक्ति जानने योग्य पदार्थों का तात्विक ज्ञान प्राप्त करके दुःखों की एकान्तिक एवं आत्यान्तिक निवृत्ति करने में सक्षम है।

सांख्यदर्शन के अनुसार पुरुष और प्रकृति ये दो तत्व मुख्य रूप से नित्य है। पुरुष का तेज जब प्रकृति पर पड़ता है तो सृष्टि की उत्पत्ति होती है। सबसे पहले महत् उससे अहंकार पुनः पञ्चतन्माएँ, ज्ञानेन्द्रियाँ, कर्मेन्द्रियाँ और मन आदि अठारह तत्वों की उत्पत्ति होती है। जिनमें पञ्चतन्मात्राओं से पञ्च महाभूतों की उत्पत्ति मानी गई है। इस प्रकार प्रकृति से कुल मिलाकर 23 तत्त्व की उत्पत्ति होती है। विवेक उत्पन्न होने की स्थिति में साधक को जब पुरुष और प्रकृति तथा इससे उत्पन्न सभी पदार्थों का ज्ञान हो जाता है तब उसके दुःखों की एकान्तिक तथा आत्यान्तिक निवृत्ति हो जाती है। जिसे सांख्य 'कैवल्य' कहते है।

इस दर्शन के प्रमुख आचार्य आसुरि, पञ्चशिख, सनक वार्षगण्य, गौड़पाद, वाचस्पति मिश्र आदि है। सांख्यकारिका पर 'तत्वकौमुदी' टीका अत्यन्त प्रसिद्ध है, जो वाचस्पति मिश्र द्वारा लिखी गई है।

योगदर्शन

प्रमुख सिद्धान्त	-	सत्कार्यवाद।
आचार्य	-	महर्षि पतञ्जलि।
उद्देश्य	-	आत्म शुद्धि का साधन।
पदार्थ	-	(26)–ईश्वर, 25 सांख्य सम्मत।

प्रमाण - प्रत्यक्ष-अनुमान-उपमान।
सिद्धान्त - सत्कार्यवाद।
ईश्वर - क्लेशकर्मपुरुषविपाकाशयैरपरामृष्टपुरुषविशेष ईश्वरः।
मोक्ष - विवेक ज्ञान से या अष्टांग योग से कर्मों के क्षय होने के उपरान्त या चित्तवृत्ति निरोध से केवलीभाव होना ही मोक्ष है।
विशेष वि. - योगश्चितवृत्तिनिरोधः। चित्त की पञ्चप्रवृत्तियाँ है- प्रमाण,विपर्यय,विकल्प,निद्रा व स्मृति।
अष्टांगयोग - यम-नियम-आसन-प्राणायाम-प्रत्याहार-धारणा-ध्यान-समाधि।

महर्षि पतञ्जलि प्रणीत योगदर्शन हिन्दू जाति का सर्वश्रेष्ठ दर्शन है। श्रीयुत् बलदेव उपाध्याय ने इस सन्दर्भ में लिखा है- योगदर्शन हिन्दू जाति की सर्वश्रेष्ठ आध्यात्मिक निधि है। योगदर्शन की विशिष्ट ख्याति का कारण इसका व्यावहारिक पक्ष है। यह पूर्ण ज्ञान एवं अन्तिम मुक्ति प्राप्त करने के लिए योग के अभ्यास पर बल देता है। सांख्य का घनिष्ठ रूप से दर्शन होते हुए भी योग दर्शन ने ईश्वर में आस्था व्यक्त की है– **क्लेशकर्मपुरुषविपाकाशयैरपरामृष्टपुरुषविशेषईश्वरः।'** इस कारण कुछ विद्वान इसे 'सेश्वरसांख्य' कहते है। (यो.सू.)

योगसूत्र के आरम्भ में ही योग का लक्षण- **'योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः'** बताया गया है चित्त की प्रवृत्तियाँ पाँच मानी गई है- प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा, स्मृति। योग के आठ अंग है- **'यमनियमासनप्राणायाम. प्रत्याहारधारणाध्यानसमाधयोष्टावङ्गानि'**। इन अंगों के निन्तर अभ्यास से चित्तवृत्तिया विलीन हो जाती है तदुपरान्त चित्त के एकाग्र होने पर कैवल्य की अनुभूति होती है।

योगसूत्र के ऊपर 'व्यासभाष्य' सर्वाधिक प्रामाणिक व्याख्या ग्रन्थ माना जाता है। 'व्यास भाष्य' के ऊपर आ. वाचस्पति मिश्र द्वारा 'तत्ववैशारदी' टिका लिखी है। आचार्य विज्ञानभिक्षु के उपलब्ध दो ग्रन्थों में -'योगवार्तिक' तथा 'योगसारसंग्रह' है। विज्ञानभिक्षु ने इस दर्शन की व्याख्या औपनिषदिक पूर्वाग्रह से युक्त होकर की है।

मीमांसा दर्शन–(पूर्वमीमांसा)

आचार्य - जैमिनी।
उद्देश्य - वैदिक कर्मकाण्ड से पुष्टि करना।
प्रमाण - प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द अर्थापत्ति तथा अनुपलब्धि।
सम्प्रदाय - भाट्ट और प्रभाकर।
पदार्थ - वैशेषिक के सात और शक्ति।
ईश्वर - ईश्वर का स्थान गौण है।
आत्मा - आत्मा को आत्म ज्योति कहा है।
मोक्ष - सुख दुःख से परे अवस्था 'मोक्ष' है।
विशेष विवरण - कर्मकाण्ड विषयक होने के कारण मीमांसा को कर्ममीमांसा भी कहते है।

मीमांसा का अर्थ है–समस्या या विचारणीय विषय की युक्तियों की समीक्षा के द्वारा निर्णय। सार्वजनिक वाद-विवाद की कला और पद्धति के अध्ययन से इसकी उत्पत्ति हुई है। वेदों में अत्यधिक आस्था से युक्त मीमांसा दर्शन का भारतीय दार्शनिक विचारधारा में महत्वपूर्ण स्थान है। आचार्य जैमिनी इसके प्रणेता है। इनके द्वारा 'मीमांसा सूत्र' लिखा गया है। यह सम्प्रदाय कर्त्ता के रूप में ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करता है। कर्म एवं कर्मफल के मध्य सम्बन्ध स्थापित करने के लिए इसने एक 'अपूर्व' की कल्पना की है। आत्मा के अस्तित्व

के विषय में इसका अन्य आस्तिक दर्शनों के साथ पर्याप्त साम्य मिलता है। 'कुमारिलमिश्र' एवं 'प्रभाकरमिश्र' इस सम्प्रदाय के महान दार्शनिक हुए है। इनके अतिरिक्त शालिकनाथ, पार्थसारथिमिश्र, मण्डनमिश्र, लौगाक्षिभास्कर आदि इस सम्प्रदाय के आचार्य हुए थे।

उत्तरमीमांसा या वेदान्तदर्शन

आचार्य - बादरायण।
उद्देश्य - परमार्थ सत्ता रूप ब्रह्म की एकता तथा अनेकात्मक जगत् की मायिकता।
पदार्थ - 1. ब्रह्म 2. अविद्या। इसे अज्ञान, माया, भ्रान्ति, अभ्यास भी कहते है।
प्रमाण - प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, आगम, अर्थापत्ति तथा अनुपलब्धि।
प्रमुख सिद्धान्त - 'सर्वखल्विदं ब्रह्म'।
ईश्वर - सगुण एवं निर्गुण।
मोक्ष - अहम् ब्रह्मस्मि की अनुभूति ही मोक्ष है।
विशेष विवरण - विज्ञानमय कोश पञ्च ज्ञानेन्द्रियाँ + बुद्धि।
मनोमय कोश - पञ्च ज्ञानेन्द्रिया + मन।
प्राणमय कोश - पञ्च कर्मेन्द्रियाँ + पञ्चवायु। ये तीनों कोश ही सूक्ष्मशरीर या लिंगशरीर के नाम से जाने जाते है।

'वेदों का अन्त' वेदान्त शब्द का मुख्य अर्थ है। इसका प्रमुख आधार 'उपनिषद्' है। आचार्य बादरायण रचित 'ब्रह्मसूत्र' इसका प्रमुख ग्रन्थ है इसे 'वेदान्त-सूत्र' भी कहते है। उपनिषदों के आधारभूत सिद्धान्तों का व्यवस्थित प्रतिपादन करने से भारतीय दर्शन प्रणाली में इस दर्शन का महत् योगदान है। इसे उत्तर मीमांसा भी कहा जाता है, क्योंकि यह दर्शन वेदों के बाद वाले भाग का विवेचन करता है। आ. बादरायण ने 'ब्रह्मसूत्र' में उपनिषदों में उपलब्ध सामग्री से एक सुसंगत दर्शन विकसित करने का सर्वप्रथम प्रयास किया है। ब्रह्म, जीव, जगत् और माया इस दर्शन के विषय है। जीव और ब्रह्म का ऐक्य प्रतिपादन करना इसका मुख्य उद्देश्य है जिसका प्रतिपादन 'अहं ब्रह्मास्मि' इत्यादि महावाक्यों द्वारा किया जाता है। इस दर्शन के द्वैत, अद्वैत, विशिष्टाद्वैत, द्वैताद्वैत और शुद्धाद्वैत आदि सम्प्रदाय है। प्रस्थानत्रयी के नाम से प्रसिद्ध उपनिषद्, गीता और ब्रह्मसूत्र सभी वेदान्त सम्प्रदाय के प्रमुख आधार है। शंकराचार्य का 'शारीरिक भाष्य' इस ग्रन्थ (ब्रह्मसूत्र) का एक प्रसिद्ध भाष्य है। जिसमें ब्रह्मसूत्रों की अद्वैतवादी व्याख्या प्रस्तुत की गयी है। इस भाष्य पर पुनः विविध टीकाएं लिखी गई, जिसमें वाचस्पति मिश्र की 'भामती' टीका उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त श्रीहर्ष का 'खण्डनखण्डखाद्य' चित्सुखाचार्य की 'तत्वदीपिका', विद्यारण्यस्वामी की 'पंचदशी', 'विवरणप्रमेयसंग्रह' इस दर्शन के प्रमुख ग्रन्थ है।

1. निम्नलिखित दर्शनग्रन्थानां सामान्याध्ययनम्–
तर्कभाषा-प्रामाण्यवादपर्यन्तम् (केशवमिश्रः), चार्वाकदर्शनम्, सांख्यकारिका (ईश्वरकृष्णः)

प्रश्नोत्तर

(क) आस्तिक दर्शन

प्र.1 दर्शन शब्द में प्रकृति-प्रत्यय है ?
उत्तर- दृश् (धातु) + ल्युट् (प्रत्यय)
प्र.2 दर्शन शब्द का व्युत्पत्तिजन्य अर्थ है ?
उत्तर- दृश्यतेऽनेनेति दर्शनम्।

प्र.3 वह विद्या ज्ञान तथा साधन जिसके द्वारा किसी विषय या वस्तु को देखा या जाना जाएं उसे कहते है?
उत्तर– दर्शन।
प्र.4 आत्मा वाऽरे मैत्रेय द्रष्टव्यः श्रोतव्यः मन्तव्यः निदिध्यासितव्यः । यह कथन किसका है ?
उत्तर - महर्षि याज्ञवल्क्य।
प्र.5 पाश्चात्य जगत् में दर्शन शब्द के लिए अथवा विचार या चिन्तन शास्त्र के लिए किस शब्द का प्रयोग हुआ है ?
उत्तर - फिलासॉफी।
प्र.6 दर्शन शब्द की उत्पति किससे हुई ?
उत्तर– ऋग्वेद।
प्र.7 डॉ. राधाकृष्णन् ने दर्शन का प्रचलन माना है ?
उत्तर– ईसा की प्रथम शताब्दी।
प्र.8 दर्शनशास्त्र का प्रयोजन क्या है ?
उत्तर– दुःख की निवृति व सुख की प्राप्ति।
प्र.9 'वेदःनिन्दको नास्तिकः' कथन किसका है ?
उत्तर– महर्षि मनु।
प्र.10 भारतीय दर्शन को किस नाम से जाना जाता है ?
उत्तर– अध्यात्मवादी।
प्र.11 मानव की अनादि जिज्ञासा के समाधान में प्रवृतशास्त्र का क्या नाम है ?
उत्तर - दर्शनशास्त्र।
प्र.12 भारतीय दर्शन को कितने भागों में बाँटा गया है ?
उत्तर - दो भागों में।
प्र13 भारतीय दर्शन में कितने सम्प्रदाय है ?
उत्तर - नौ सम्प्रदाय।
प्र.14 आस्तिक दर्शन कितने है, नाम लिखिए ?
उत्तर - छः। न्याय-वैशेषिक, सांख्य-योग, मीमांसा-वेदान्त।
प्र.15 नास्ति वेदोदितो लोक इति येषांमतिस्थिराः।
नास्तिकास्ते तथास्तीती मतिर्येषां ते............।।
उत्तर - आस्तिकाः

महर्षि गौतम प्रणीत न्यायदर्शन

प्र.1 न्यायदर्शन के प्रणेता कौन है ?
उत्तर - महर्षि गौतम
प्र.2 आन्वीक्षिकी विद्या है ?
उत्तर - न्यायदर्शन
प्र.3 न्यायसूत्र के प्रणेता है ?
उत्तर - महर्षि गौतम।

प्र.4 न्यायसूत्र का विभाजन है ?
उत्तर - अध्याय-5, आह्निक -10, प्रकरण-84, सूत्र-524।
प्र.5 तर्कविद्या है ?
उत्तर - न्यायदर्शन।
प्र.6 न्यायदर्शन के किन्ही पाँच ग्रन्थों के नाम लिखिए ?
उत्तर– 1. महर्षि गौतम कृत न्यायसूत्र।
2. महर्षि उद्योतकर कृत न्यायवार्तिक।
3. वाचस्पति मिश्र कृत न्यायवार्तिकतात्पर्यटीका।
4. जयन्तभट्ट कृत न्यायमञ्जरी।
5. उदयनाचार्य कृत लक्षणावली, किरणावली, न्यायकुसुमाञ्जलि, आत्मतत्वविवेक।
प्र.7 न्यायशास्त्र में कितने भेद है ?
उत्तर– 2 प्राचीनन्याय (प्रमेय प्रधान)
नव्यन्याय (प्रमाण प्रधान)।
प्र.8 नव्यन्याय के प्रणेता कौन है ?
उत्तर - गंगेशोपाध्याय।
प्र.9 तत्वचिन्तामणि के प्रणेता है ?
उत्तर - गंगेशोपाध्याय।
प्र.10 न्यायदर्शन में वर्णित पदार्थ है ?
उत्तर - 16।
प्र.11 न्यायदर्शन में वर्णित प्रदार्थों के नाम लिखिए ?
उत्तर -

1. प्रमाण	5. दृष्टान्त	9. निर्णय	13. हेत्वाभास
2. प्रमेय	6. सिद्धान्त	10. वाद	14. छल
3. संशय	7. अवयव	11.जल्प	15 जाति
4. प्रयोजन	8. तर्क	12. वितण्डा	16. निग्रहस्थान

प्र.12 न्यायदर्शन का प्रमुख सि्द्धान्त है ?
उत्तर– असत्कार्यवाद।
प्र.13 न्यायदर्शन में कितने प्रमाण माने गये है नाम लिखिए ?
उत्तर - चार प्रमाण (प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, तथा शब्द)।
प्र. 14 दर्शन साहित्य का प्रवेश द्वार है ?
उत्तर - न्यायदर्शन।
प्र.15 वस्तुवादी दर्शन है ?
उत्तर - न्यायदर्शन।
प्र16 अक्षपाद दर्शन है ?
उत्तर - न्यायदर्शन।
प्र.17 न्यायदर्शन में मोक्ष की संज्ञा है ?
उत्तर - अपवर्ग।

प्र.18 न्याय एवं वैशेषिक दर्शन है ?

उत्तर - परतःप्रामाण्यवादी।

प्र.19 पिठरपाकवादी दर्शन है ?

उत्तर - न्यायदर्शन।

प्र.20 जिसके द्वारा वस्तु का ज्ञान प्राप्त किया जाये, उसे कहते है ?

उत्तर - न्याय।

प्र.21 न्यायसूत्र के भाष्यकार है ?

उत्तर - वात्स्यायन।

प्र.22 न्यायदर्शन है ?

उत्तर - वस्तुवादी।

प्र.23 न्यायदर्शन की रचना हुई ?

उत्तर - तत्व विवेचन के लिए।

प्र.24 प्रमाणैरर्थपरीक्षणन्यायः यह कथन है ?

उत्तर - वात्स्यायन।

महर्षि कणाद प्रणीत वैशेषिकदर्शन

प्र.1 महर्षि कणाद प्रणीत दर्शन है ?

उत्तर - वैशेषिक दर्शन।

प्र.2 वैशेषिक सूत्र के प्रणेता है ?

उत्तर - महर्षि कणाद।

प्र.3 वैशेषिक सूत्र का विभाजन है ?

उत्तर - अध्याय 10, आह्निक 20, सूत्र 370 ।

प्र.4 विशेष शब्द का क्या अर्थ है ?

उत्तर - तत्व निश्चयपूर्वक व्यवहार करना।

प्र.5 द्वित्वे च पाकजोत्पतौ विभागे च विभागजे। यस्य न स्खलिता बुद्धिदस्तं वै...........विदुः।।

उत्तर - वैशेपिक।

प्र.6 वैशेषिकदर्शन का अपर नाम है ?

उत्तर - प्रदार्थशास्त्र।

प्र.7 वैशेषिकदर्शन में कितने प्रदार्थ माने गये है ? नाम लिखिए ?

उत्तर - सात प्रदार्थ–द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय तथा अभाव।

प्र.8 वैशेषिकदर्शन में कितने प्रमाण माने गये है ?

उत्तर - दो प्रमाण–प्रत्यक्ष, अनुमान।

प्र.9 वैशेषिकदर्शन का प्रमुख उद्देश्य है ?

उत्तर - तत्वज्ञान द्वारा मोक्ष प्राप्ति।

प्र.10 पिलुपाकवादी दर्शन है ?

उत्तर - वैशेषिकदर्शन।

प्र.11 'परमाणुवाद' सिद्धान्त किस दर्शन का है ?

उत्तर - वैशेषिकदर्शन।

प्र.12 पदार्थधर्मसंग्रह के प्रणेता है ?

उत्तर - प्रशस्तपाद।

प्र.13 सप्तपदार्थी के लेखक है ?

उत्तर - शिवादित्य मिश्र।

प्र.14 वैशेषिकदर्शन में वैज्ञानिक संरचना है ?

उत्तर - परमाणुवाद।

प्र.15 न्याय-वैशेषिक के अनुसार जीवन का लक्ष्य है ?

उत्तर - निःश्रेयस्।

महर्षि कपिल प्रणीत सांख्यदर्शन

प्र.1 सांख्यदर्शन के प्रणेता कौन है ?

उत्तर - महर्षि कपिल।

प्र.2 सांख्यसूत्र के प्रणेता है ?

उत्तर - महर्षि कपिल।

प्र.3 प्रकृति-पुरुष के पार्थक्य ज्ञान को कहते है ?

उत्तर - सांख्य।

प्र.4 सांख्यदर्शन कितने तत्व स्वीकार करता है, नाम लिखिए ?

उत्तर - (25 तत्व) पुरुष, प्रकृति, महत्, अहंकार, एकादश इन्द्रियाँ, पंचतन्त्रमात्रा तथा पंचमहाभूत।

प्र.5 सांख्यदर्शन का प्रमुख सिद्धान्त है ?

उत्तर - सत्कार्यवाद।

प्र.6 सांख्यदर्शन कितने प्रमाण मानता हैं ? नाम लिखिए ।

उत्तर - तीन प्रमाण–प्रत्यक्ष, अनुमान तथा शब्द।

प्र.7 महर्षि कपिल द्वारा रचित सांख्यग्रन्थ का क्या नाम है ?

उत्तर - सांख्यसूत्र।

प्र.8 महर्षि कपिल ने अपने किस शिष्य को उपदेश दिया था ?

उत्तर - आसुरी।

प्र.9 सांख्य में मोक्ष को कहा गया है ?

उत्तर - कैवल्य।

प्र.10 सांख्यदर्शन में कितने पुरुषार्थ माने गये है ?

उत्तर - भोग- अपवर्ग.।

प्र.11 सांख्यदर्शन का किस दर्शन के साथ सम्बन्ध है ?

उत्तर - योग।

प्र.12 द्वैतवादी दर्शन है ?

उत्तर - सांख्यदर्शन।

प्र.13 सांख्य मतानुसार दुखः कितने है ?

उत्तर - तीन–आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक।

प्र.14 सांख्यदर्शन में त्रिविध विज्ञान है ?
उत्तर - व्यक्त, अव्यक्त तथा ज्ञ ।
प्र.15 सांख्यदर्शन में 'ज्ञ' है ?
उत्तर - पुरुष ।
प्र.16 सांख्यकारिका के प्रणेता कौन है ?
उत्तर– ईश्वरकृष्ण।

महर्षि पतंजलि प्रणीत योगदर्शन

प्र.1 योगदर्शन के प्रणेता कौन है ?
उत्तर– महर्षि पतंजलि।
प्र.2 महर्षि पतंजलि प्रणीत दर्शन ग्रन्थ है ?
उत्तर - योगसूत्र।
प्र.3 योग शब्द का अर्थ है ?
उत्तर - समाधि।
प्र.4 योगसूत्र में कितने पाद है ? नाम लिखिए ?
उत्तर - चार पाद- समाधिपाद, साधनापाद, विभूतिवाद एवं कैवल्यपाद।
प्र.5 योगसूत्र में कितने सूत्र है ?
उत्तर - 195 सूत्र।
प्र.6 योगदर्शन में किसकी स्तुति है ?
उत्तर - भगवान शिव।
प्र.7 योगश्चित्तवृतिः........?
उत्तर - निरोध।
प्र.8 समाधिपाद का प्रथम सूत्र है ?
उत्तर - अथ योगानुशासनम्।
प्र.9 योगदर्शन का प्रमुख प्रयोजन है ?
उत्तर - समाधि लाभ।
प्र.10 सेश्वरसांख्य के नाम से प्रसिद्ध दर्शन है ?
उत्तर - योगदर्शन।
प्र.11 योगदर्शन कितने प्रदार्थ मानता है ?
उत्तर - 26।
प्र.12 योगदर्शन में कितने प्रमाण स्वीकृत है ?
उत्तर - 3- प्रत्यक्ष, अनुमान तथा आगम।
प्र.13 योगदर्शन का प्रमुख सिद्धान्त है ?
उत्तर - सत्कार्यवाद।
प्र.14 योगदर्शन के उद्देश्य क्या है ?
उत्तर - आत्मशुद्धि का साधन।
प्र.15 क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टःपुरुष विशेष.....?
उत्तर - ईश्वरः।

महर्षि बादरायण कृत वेदान्तदर्शन

प्र.1 ब्रह्मसुत्र के प्रणेता है ?
उत्तर– आचार्य बादरायण।
प्र.2 ब्रह्मसुत्र का विभाजन है ?
उत्तर - 4 अध्याय, 16 पाद, 192 अधिकरण तथा 555 सूत्र।
प्र.3 अद्वेतवादी दर्शन है ?
उत्तर - वेदान्तदर्शन।
प्र.4 ब्रह्मसुत्र का अन्य नाम है ?
उत्तर - शारीरिकसूत्र।
प्र.5 वेदान्तदर्शन में कितने पदार्थ माने गये है ?
उत्तर - 2. ब्रह्म तथा विद्या।
प्र.6 वेदान्त दर्शन में कितने प्रमाण माने गये है ?
उत्तर - 6 प्रमाण–प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, आगम, अर्थापत्ति तथा अनुपलब्धि।
प्र.7 वेदान्तदर्शन का प्रमुख सिद्धान्त है ?
उत्तर - विवर्तवाद, परिणामवाद, अध्यास तथा अनिर्वचनीयख्याति।
प्र.8 वेदान्त सम्मत सूक्ष्मशरीर में कितने तत्व होते है ?
उत्तर - 17 तत्व।
प्र.9 ....नाम उपनिषत्प्रमाणम् ?
उत्तर - वेदान्तः।
प्र.10 ब्रह्मसूत्र के सुप्रसिद्ध भाष्यकारों के नाम लिखिए ?
उत्तर -

आचार्य	भाष्य	सम्प्रदाय
शंकराचार्य	शारीरिकभाष्य	कैवलाद्वैत
भास्कराचार्य	भास्करभाष्य	भेदाभेद
रामानुजाचार्य	श्रीभाष्य	विशिष्टाद्वैत
माध्वाचार्य	पूर्णप्रज्ञभाष्य	द्वैतवाद का सिद्धान्त
निम्बकाचार्य	वेदान्तपारिजातभाष्य	द्वैताद्वैत
आचार्यश्रीकण्ठ	शैवभाष्य	शैवविशिष्टाद्वैत
वल्लभाचार्य	अणुभाष्य	शुद्धाद्वैत
आचार्य विज्ञान भिक्षु	विज्ञानामृत भाष्य	अविभाद्वैत
आचार्य श्री पति	श्रीकर भाष्यवीरशैव	विशिष्टाद्वैत
आचार्य बलदेव	गोविन्दभाष्य	अचिन्त्यभेदाभेद

प्र.11 वेदान्त के अध्ययन का क्या प्रयोजन है ?
उत्तर - जीव एवं ब्रह्म की एकता का ज्ञान।
प्र.12 वेदान्तदर्शन का प्रमुख सिद्धान्त है ?
उत्तर - विवर्तवाद।

महर्षि जैमिनी कृत मीमांसादर्शन

प्र.1 मीमांसादर्शन का अभिप्राय है ?
उत्तर - विवेचन।
प्र.2 मीमांसा सूत्र के रचयिता है ?
उत्तर - महर्षि जैमिनी।
प्र.3 मीमांसासूत्र में सूत्र संख्या कितनी है ?
उत्तर - 2745।
प्र.4 मीमांसादर्शन के कितने सम्प्रदाय है ?
उत्तर - दो सम्प्रदाय- कुमारिलभट्ट तथा प्रभाकर गुरु।
प्र.5 मीमांसा दर्शन का प्रधान विषय है ?
उत्तर - धर्म।
प्र.6 भाट्ट मत के अनुसार कितने प्रमाण है ?
उत्तर - 6–प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति तथा अनुपलब्धि।
प्र.7 प्रभाकर मतानुसार प्रमाण कितने है ?
उत्तर -5 –प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द तथा अर्थापत्ति।
प्र.8 भाट्ट मत के अनुसार कितने प्रदार्थ है ?
उत्तर - 6–द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, शक्ति तथा अभाव।
प्र.9 कुमारिलभट्ट के मत में कितने प्रदार्थ माने गये है ?
उत्तर - 8- द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, शक्ति, समवाय, संख्या तथा सादृश्य।
प्र.10 मीमांसादर्शन में द्रव्य संख्या कितनी है ?
उत्तर - 11 -(वैशेषिक सम्मत 9, शब्द तथा तम)
प्र.11 मीमांसक है ?
उत्तर - स्वतःप्रमाण्यवादी- परतः अप्रमाण्यवादी।
प्र.12 देह का आत्यान्तिक उच्छेद ही मोक्ष है, मत है ?
उत्तर - प्रभाकर भट्ट।
प्र.13 यागादिरेव.......?
उत्तर - धर्मः।
प्र.14 अपूर्व की कल्पना किस दर्शन में मिलती है ?
उत्तर - मीमांसादर्शन।
प्र.15 अपूर्व क्या है ? इसके कितने भेद है ?
उत्तर - कार्यकारण उत्पत्ति अर्थ एक शक्ति का नाम अपूर्व है एवं इसके चार भेद है–परम, समुदाय, उत्पत्य तथा अंगापुर्व।
प्र.16 मीमांसादर्शन के तृतीय सम्प्रदाय के आचार्य कौन है ?
उत्तर - मुरारिमिश्र
प्र.17 आचार्य जैमिनी के अनुसार प्रमाण है ?
उत्तर - तीन- प्रत्यक्ष,अनुमान तथा शब्द।

प्र.18 अख्यातिवाद का सिद्धान्त है ?
उत्तर - मीमांसादर्शन।
प्र.19 मीमांसादर्शन में गुणों की संख्या कितनी है ?
उत्तर - 21।
प्र.20 कर्मकाण्ड पर आधारित दर्शन है ?
उत्तर - मीमांसादर्शन।
प्र.21 अपौरुषेय वाक्यं.....?
उत्तर - वेद।
प्र.22 'चोदनालक्षणोऽर्थो धर्मः 'रेखाकित पद से क्या अभिप्राय है ?
उत्तर - क्रिया का प्रवर्तक वचन।
प्र.23 मीमांसादर्शन के अनुसार भावना का लक्षण है ?
उत्तर - भावनानामभवितुर्भवनानुकूलो भावयितुः।
प्र.24 भावना कितने प्रकार की होती है ?
उत्तर - 2- शाब्दी और आर्थी।
प्र.25 मीमांसादर्शन के अनुसार धर्म का लक्षण है ?
उत्तर - वेदप्रतिपाद्य प्रयोजनवदर्थो धर्मः।
प्र.26 तत्राज्ञातर्थज्ञापको वेद भागो.....?
उत्तर - विधिः।
प्र.27 विधि कितने प्रकार की होती है ?
उत्तर - 4।

(ख) नास्तिक दर्शन

वार्हस्पत्य प्रणीत चार्वाकदर्शन

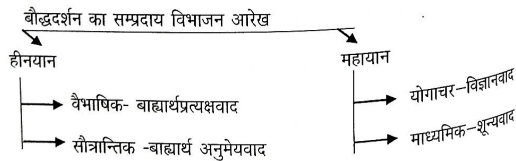
प्र.1 नास्तिक शिरोमणि दर्शन है ?
उत्तर - चार्वाक।
प्र.2 चार्वाकदर्शन के प्रणेता कौन है ?
उत्तर - बृहस्पति।
प्र.3 चार्वाकदर्शन का क्या अर्थ है ?
उत्तर - मीठी वाणी।
प्र.4 चार्वाकदर्शन को अन्य किस नाम से जाना जाता है ?
उत्तर - भौतिकवादी, प्रत्यक्षवादी, लोकायतवादि।
प्र.5 चार्वाकदर्शन प्रमाण मानता है ?
उत्तर - प्रत्यक्ष।
प्र.6 भारतीयदर्शन का कौनसा सम्प्रदाय भौतिकवाद का संस्थापक है ?
उत्तर - चार्वाक।
प्र.7 चार्वाकदर्शन का प्रमुख ग्रन्थ है ?
उत्तर - ब्राहस्पत्य सूत्र।

प्र.8 चार्वाकदर्शन के अनुसार भौतिकतत्व है ?
उत्तर - पृथिवी-जल-तेज-वायु।
प्र.9 चार्वाकदर्शन किस तत्व को नहीं मानता ?
उत्तर - आकाश।
प्र.10 चार्वाकदर्शन का मूलोद्देश्य क्या है ?
उत्तर - खाओं-पीओ और मौज करो।
प्र.11 चार्वाकदर्शन के अनुसार पुरुषार्थ कितने है ?
उत्तर - 2, काम एवं अर्थ।
प्र.12 चार्वाकदर्शन के अनुसार सृष्टि का निर्माण हुआ है ?
उत्तर - चत्वार भूतों के संयोग से।
प्र.13 चार्वाकदर्शन अनुमान को प्रमाण क्यों नहीं मानता है ?
उत्तर - हेतु और साध्य के अनिवार्य सम्बन्ध को नहीं करने से।
प्र.14 चार्वाकदर्शन आकाश को पदार्थ क्यों नहीं मानता है ?
उत्तर - अनुमेय होने से।
प्र.15 विश्वविचार सम्बन्ध में चार्वाक समर्थन करता है ?
उत्तर– स्वभाववाद।
प्र.16 चार्वाकदर्शन के अनुसार प्रमा एवं प्रमेय है ?
उत्तर - प्रमा—वास्तविक ज्ञान।
प्रमेय—ज्ञान का विषय।
प्र.17 चार्वाक के अनुसार आत्मा है ?
उत्तर - चैतन्यविशिष्टदेहः।
प्र.18 चार्वाक किस सुख पर अत्यधिक बल देता है ?
उत्तर - इन्द्रिय सुख।
प्र.19 यथार्थ की व्याख्या करना किसका उद्देश्य है ?
उत्तर - प्रमाणविज्ञान।
प्र.20 चार्वाक के अनुसार प्रत्यक्ष कितने प्रकार के होता है ?
उत्तर - 2—आन्तरिक और बाह्य।
प्र.21 चार्वाकदर्शन के ज्ञात अंश कौन-कौन से है ?
उत्तर - प्रमाण, तत्व, नीति।
प्र.22 चार्वाकदर्शन शब्द को प्रमाण क्यों नहीं मानता है ?
उत्तर - शब्द से अयथार्थज्ञान प्राप्त होता है।
प्र.23 चार्वाकदर्शन के अनुसार मोक्ष है ?
उत्तर - मृत्यु।
प्र.24 चार्वाकदर्शन के अनुसार ईश्वर कौन है ?
उत्तर - निग्रह और अनुग्रह करनें मे समर्थ व्यक्ति।
प्र.25 चार्वाकदर्शन के अनुसार दो विद्याएं कौन-कौन सी है ?
उत्तर - दण्डनीति एवं वार्ता।

प्र.26 चार्वाकदर्शन के अनुसार कौनसा मार्ग श्रेष्ठ है ?
उत्तर - प्रेयस्।
प्र.27 चार्वाक के अनुसार व्यक्तिज्ञान अनुमान से होने पर क्या दोष होगा ?
उत्तर - अनवस्था।
प्र.28 वेद की प्रामाणिकता में कौनसा दोष नहीं है ?
उत्तर - अनृत-व्याघात-पुनरुक्त।
प्र.29 चार्वाक दर्शन में जर्भरी व तुर्फरी का क्या अभिप्राय है ?
उत्तर - जर्भरी–शरीर को झुकाने वाली।
तुर्फरी–मारने वाली।
प्र.30 अतएव कण्टकादिजन्यं दुखमेव........?
उत्तर - नरकः
प्र.31 तत्वोपल्लवसिंह किसकी रचना है ?
उत्तर - भट्ट जयराशि।
प्र.32 भारतीय दर्शन में संशयवाद अपनी पराकाष्ठा रूप में किस दर्शन में उपलब्ध है ?
उत्तर - चार्वाकदर्शन।
प्र.33 यावज्जीवं सुखं जीवेन्नास्ति मृत्योरगोचरः।
उत्तर - भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः।। यह किस दर्शन का सिद्धान्त है ?
चार्वाकदर्शन।
प्र.34 चार्वाकदर्शन जगत् के निष्प्रयोजन दृष्टिकोण को किस नाम से जानता है ?
उत्तर - यद्दच्छावाद।
प्र.35 देहच्छेदो............?
उत्तर - मोक्षः।
प्र.36 शब्द है ?
उत्तर - अनित्य।
प्र.37 वेद के कर्ता कौन है ?
उत्तर - धूर्त, भाण्ड, निशाचर।
प्र.38 शब्द अनित्य कैसे है ?
उत्तर - उत्पन्न होने से।
प्र.39 कण्टकादि पीड़ा से उत्पन्न दुखः चार्वाक में कहा जाता है ?
उत्तर - निरय।
प्र.40 भारतीय दर्शन में संशयवाद अपनी पराकाष्ठा रूप में किस दर्शन में उपलब्ध है ?
उत्तर - चार्वाकदर्शन।
प्र.41 चार्वाकदर्शन की ज्ञान मीमांसा पाश्चात्य दर्शन की किस अवधारणा से मिलती है ?
उत्तर - अनुभवभाव या प्रत्यक्षवाद।
प्र.42 चार्वाक की दार्शनिक विचारधारा को क्या कहा जाता है ?
उत्तर - भौतिकवाद या जड़वाद।
प्र.43 चार्वाक के नीतिसिद्धान्त को क्या कहते है ?
उत्तर - सुखवाद।

भगवान बुद्ध प्रणीत बौद्धदर्शन

प्र.1 बिम्बसार के काल में किस धर्म का प्रादुर्भाव हुआ ?
उत्तर - बौद्धदर्शन।
प्र.2 भगवान बुद्ध का जन्म कब हुआ था ?
उत्तर - 623 ई0 पूर्व।
प्र.3 बुद्ध के उपदेश किस भाषा में है ?
उत्तर - पालि भाषा में।
प्र.4 त्रिपिटक है ?
उत्तर - सुत्तपिटक, अभिधम्मपिटक एवं विनयपिटक।
प्र.5 बुद्ध किन ग्रन्थों के ऋणि है ?
उत्तर - उपनिषद्।
प्र.6 चार आर्य सत्य कौन-कौन से है ?
उत्तर - 1 दुखः 2 दुखःसमुदाय 3 दुखःनिरोध 4 दुखःनिरोध मार्ग।
प्र.7 अष्टांगमार्ग किस ग्रन्थ में है ?
उत्तर - बौद्धदर्शन।
प्र.8 बौद्धदर्शन के अनुसार त्रिरत्न कौन-कौन से है ?
उत्तर - शील-समाधि-प्रज्ञा।
प्र.9 बौद्ध दर्शन का आधारस्तम्भ सिद्घान्त है ?
उत्तर - प्रतीत्यसमुत्पाद।
प्र.10 प्रतीत्यसमुत्पाद का क्या अर्थ है ?
उत्तर - साक्षेपकारणतावाद।
प्र.11 प्रतीत्यसमुत्पाद को शून्यता का सिद्घान्त माना है ?
उत्तर - नागार्जुन।
प्र.12 शून्यवाद के प्रर्वतक है ?
उत्तर - नागार्जुन।
प्र.13 प्रतीत्यसमुत्पाद के कितने अंग है ?
उत्तर - 12 अंग।
प्र.14 बौद्धदर्शन के सम्प्रदाय है ?
उत्तर - हीनयान तथा महायान।
प्र.15 आत्मा के लिए बौद्धदर्शन में किस शब्द का उल्लेख मिलता है ?
उत्तर - सत्काय।



प्र.16 अन्तःकरण की वृत्ति को बौद्धदर्शन में क्या नाम दिया है ?
उत्तर– प्रमाण।
प्र.17 बौद्धदर्शन कितने प्रमाण मानता है ?
उत्तर– 2-प्रत्यक्ष तथा अनुमान।
प्र.18 कल्पना और भ्रान्तिशून्य ज्ञान को बौद्धदर्शन में किस नाम से जाना जाता है ?
उत्तर - प्रत्यक्षप्रमाण।
प्र.19 बौद्धदर्शन में कितने प्रदार्थ माने गये है ?
उत्तर - आलयविज्ञान तथा प्रवृत्तिविज्ञान।
प्र.20 बौद्धदर्शन के प्रमुखसिद्धान्त है ?
उत्तर - प्रतीत्यसमुत्पादवाद, क्षणिकवाद, अर्थक्रियावाद, अर्थक्रियाकारित्ववाद, अनात्मवाद तथा असत्कार्यवाद।
प्र.21 **नित्यविज्ञानमैवात्मा** किस दर्शन से सम्बन्धित है ?
उत्तर - बौद्धदर्शन।
प्र.22 अपोहवाद का सिद्धान्त किस दर्शन का है ?
उत्तर - बौद्धदर्शन।
प्र.23 बौद्धदर्शन के पंचशीलसिद्धान्त के अन्तर्गत तत्व आते है ?
उत्तर - अहिंसा, अस्तेय, सत्य, ब्रह्मचर्य का पालन तथा मदिरा आदि नशीली वस्तुओं का त्याग।
प्र.24 अपोहवाद के प्रणेता कौन है ?
उत्तर - दिङ्नाग।
प्र.25 बौद्धदर्शन का उद्देश्य क्या है ?
उत्तर - दुखोः का अन्त।
प्र.26 बौद्धदर्शन में मोक्ष को माना गया है ?
उत्तर - निर्वाण।
प्र.27 माध्यमिक कारिका के लेखक है ?
उत्तर - नागार्जुन।
प्र.28 बौद्धों के अनुसार षड़ायतन है ?
उत्तर - पंचज्ञानेन्द्रियाँ तथा मन।
प्र.29 भगवान बुद्ध का जन्म, बोधित्व प्राप्ति एवं निर्वाण ये तीनों घटनाएं किस दिन हुई ?
उत्तर - वैशाखपूर्णिमा।
प्र.30 वह अवतार जो मानवमूर्ति के स्वरूप में पूजनीय है ?
उत्तर - भगवान् बुद्ध।
प्र.31 स्वतः प्रामाण्य, परतः अप्रमाणय को किस दर्शन में स्वीकार किया है ?
उत्तर - बौद्धदर्शन में।

भगवान महावीर प्रणीत जैन दर्शन

प्र.1 जैन धर्म के प्रणेता है ?
उत्तर– भगवान महावीर स्वामी।

प्र.2 जैन धर्म के अन्तिम तीर्थंकर कौन थे ?

उत्तर - वर्धमान महावीर।

प्र.3 जैनधर्म में प्रचलित सम्प्रदाय है ?

उत्तर - श्वेताम्बर एवं दिगम्बर।

प्र.4 तत्वार्थाधिगमसूत्र के रचयिता है ?

उत्तर - उमास्वाति।

प्र.5 जैनधर्म का सिद्धान्त है ?

उत्तर - स्याद्वाद।

प्र.6 अनेकान्तवादी दर्शन है ?

उत्तर - जैनदर्शन।

प्र.7 सप्तभंगीनय किस दर्शन का सिद्धान्त है ?

उत्तर - जैनदर्शन।

प्र.8 जैनदर्शन में कितने प्रमाण माने गये है ?

उत्तर - 3, प्रत्यक्ष, अनुमान, आगम।

प्र.9 भौतिक जडतत्व है ?

उत्तर - पुद्गल।

प्र.10 जैनदर्शन के त्रिरत्न है ?

उत्तर - सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चरित्र।

प्र.11 जैनदर्शन कितने प्रदार्थ मानता है ?

उत्तर - 7, आस्त्रव, बन्ध, संवर, निर्जरा, मोक्ष, जीव तथा अजीव।

प्र.12 जैनधर्म के अनुसार गुणों की संख्या है ?

उत्तर - 14।

प्र.13 जैनदर्शन के पञ्चमहाव्रत है ?

उत्तर - अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य तथा अपरिग्रह।

प्र.14 उत्पत्ति में प्रामाण्य-अप्रामाण्य स्वतः तथा ज्ञप्ति में प्रामाण्य-अप्रमाण्य परतः होते है, यह किस दर्शन का है ?

उत्तर - जैनदर्शन।

प्र.15 जैनदर्शन में मोक्ष है ?

उत्तर - अपवर्ग।

प्र.16 षड्दर्शनसमुच्चय के प्रणेता है ?

उत्तर -श्री हरिभद्र सूरि।

ईश्वरकृष्ण की सांख्यकारिका

सत्कार्यवाद

असदकरणादुपादानग्रहणात् सर्वसम्भवाभावात् ।
शक्यतस्यशक्यकरणात् कारणभावाच्च सत्कार्यम्।।

प्र.1 सांख्यदर्शन का प्रमुख सिद्धान्त है ?

उत्तर - सत्कार्यवाद

प्र.2 सत्कार्यवाद के सम्बन्ध में कारण है ?

उत्तर - 5।

प्र.3 सत्कार्यवाद के पाँच हेतु कौन-कौन से है ?

उत्तर - असदकरणात्, उपादानग्रहणात्, सर्वसम्भवाभावात्, शक्तस्यशक्यकारणात्, कारणभावात्।

प्र.4 कार्य में कारण अपनी उत्पत्ति से पूर्व सत् है, सिद्धान्त है ?

उत्तर - सत्कार्यवाद।

प्र.5 कार्यकारणभाव पर आधारित सांख्य का सिद्धान्त है ?

उत्तर - सत्कार्यवाद।

प्र.6 कोई भी कार्य उत्पत्ति से पूर्व विद्यमान रहता है ?

उत्तर - कारणावस्था में।

प्र.7 सत्कार्यवाद की सत्ता को किस दर्शन ने स्वीकार नहीं किया है ?

उत्तर - न्यायवैशेषिक दर्शन।

प्र.8 सत्कार्यवाद के कितने रूप है ?

उत्तर - परिणाम और विवर्तवाद।

प्र.9 सत्कार्यवाद का अपर नाम है ?

उत्तर - प्रकृतिपरिणामवाद।

प्र.10 उपादानग्रहणात् यहाँ उपादान कारण है ?

उत्तर - समवायिकारण।

प्र.11 सांख्यतत्वकौमुदी में वाचस्पति मिश्र ने सत्कार्यवाद की सिद्धि के लिए चार पक्ष उपस्थित किये है, बताइये ?

उत्तर - असतः संजायते = बौद्धदर्शन।
सतः असंजायते = न्याय-वैशेषिक दर्शन।
एकस्य ततो विवर्तः = वेदान्तदर्शन।
सतः संजायते = सांख्यदर्शन।

पुरुषस्वरूप

संघातपरार्थत्वात् त्रिगुणादि विपर्ययादधिष्ठनाद्
पुरुषोऽस्ति भोक्तृभावात् कैवल्यार्थ प्रवृत्तेश्च।।

प्र.1 सांख्य के अनुसार दो परमतत्व है ?

उत्तर - प्रकृति और पुरुष।

प्र.2 त्रिगुणातीत है ?

उत्तर - पुरुष ।

प्र.3 सांख्य सम्मतपुरुष है ?

उत्तर - बहवः।

प्र.4 कैवल्य को प्राप्त करने वाला है ?

उत्तर - पुरुष।

प्र.5 सांख्य में आत्मा है ?
उत्तर - पुरुष।
प्र.6 पुरुष का अस्तित्व है ?
उत्तर - अनुमानगम्य।
प्र.7 भोक्ता है ?
उत्तर - पुरुष।
प्र.8 सांख्यदर्शन में पुरुष की सिद्धि के लिए कितने तत्व प्रस्तुत किये है ?
उत्तर– 5. संघातपरार्थत्वात्
त्रिगुणादिविपर्ययात्
अधिष्ठानात्,
भोक्तृभावात्,
कैवल्यार्थ प्रवृतेश्च।
प्र.9 पुरुषतत्व से सम्बन्धित विशेषण है ?
उत्तर -

(i) निष्क्रिय	(vi) भोक्ता	(xi) द्रष्टा	(xvi) अगुण	(xxi) चेतन
(ii) अपरिणामी	(vii) विवेकी	(xii) अनाश्रित	(xvii) त्रिगुणातीत	(xxii) ज्ञानस्वरूप
(iii) पङ्गु	(viii) अलिङ्ग	(xiii) निरवयव	(xviii) असंसारी	(xxiii) असामान्य
(iv) अत्रिगुण	(ix) अविषय	(xiv) असामान्य	(xix) अप्रसवधर्मी	(xxiv) साक्षी
(v) कैवल्य	(x) मध्यस्थ	(xv) उदासीन	(xx) द्रष्टा	(xxv) स्वतंत्र

प्र.10 न प्रकृति न विकृति है ?
उत्तर - पुरुष।
प्र.11 सांख्यदर्शन में 'ज्ञ' है ?
उत्तर - पुरुष।

पुरुषबहुत्व

जन्ममरणकरणानां प्रतिनियमादयुगत्प्रवृतेश्च।
पुरुषबहुत्वं सिद्धं त्रैगुण्यविपर्ययाच्चैव।।

प्र.1 सांख्य पुरुष बहुत्व या अनेकत्व सिद्धि के लिए कितने हेतुओं को प्रस्तुत करता है ?
उत्तर– 5–जन्म, मरण, करण, अयुगपत्प्रवृते, त्रैगुण्यविपर्ययाच्च।

प्रकृतिस्वरूप

मूलप्रकृतिरविकृतिर्महदाद्याः प्रकृतिविकृतयः सप्त।
षोडशस्तु विकारो न प्रकतिर्नविकृतिः पुरुषः ।।

प्र.1 सांख्यदर्शन कितने तत्वों को मानता है ?
उत्तर - 25।
प्र.2 प्रकृति की विकार रहित अवस्था है ?
उत्तर - मूलप्रकृति।
प्र.3 सत्व, रजस् एवं तमस् गुणों की साम्यावस्था का नाम है ?
उत्तर - मूलप्रकृति।
प्र.4 प्रकृति-विकृति है ?
उत्तर - 7।
प्र.5 महत्, अहंकार, पंचतन्मात्राएं ये सात तत्व है ?
उत्तर - मूलप्रकृति।
प्र.6 सांख्यदर्शन में अचेतन है ?
उत्तर - मूलप्रकृति।
प्र.7 अजन्यत्वे सति जनकत्वम् लक्षण है ?
उत्तर - मूल प्रकृति।
प्र.8 प्रकृति के कितने हेतु है ?
उत्तर - 5।
प्र.9 विकृति है ?
उत्तर - 16।
प्र.10 प्रकृति की प्रथम विकृति है ?
उत्तर - बुद्धि।
प्र.11 गुणानां साम्यावस्था...?
उत्तर– प्रकृतिः।
प्र.12 प्रकृति की कितनी अवस्थाएँ है ?
उत्तर - 2, व्यक्त एवं अव्यक्त।
प्र.13 प्रधान शब्द का क्या अर्थ है ?
उत्तर - जगत् की प्रलयावस्था।
प्र.14 त्रिगुणात्मिका है ?
उत्तर - प्रकृति।
प्र.15 पुरुष विपरीत है ?
उत्तर - प्रकृति।
प्र.16 प्रकृति का अस्तित्व जानने का प्रमाण है ?
उत्तर - अनुमान।
प्र.17 प्रकृति को सांख्य ने किसके समान बताया है ?
उत्तर - नर्तकी।
प्र.18 अभिमानात्मक दशा है ?
उत्तर - अहंकार।
प्र.19 प्रसवधर्मणी है ?
उत्तर - प्रकृति।

प्र.20 प्रकृति की स्वतंत्र सत्ता सिद्धि में कितने हेतु है ?

उत्तर - 5–भेदानां परिमाणात्, समन्वयात्, शक्तितः प्रवृत्तेश्च, कारण-कार्य विभागात्, अविभागात् वैश्वरूपस्य।

प्र.21 महत् आदि स्थूल प्रकृति है ?

उत्तर - व्यक्त।

प्र.22 मूलप्रकृति है ?

उत्तर - अव्यक्त।

प्र.23 सांख्यदर्शन का वह तत्व जो सृष्टि व्यापार से अलिप्त है ?

उत्तर - पुरुष।

प्र.24 सांख्यसम्मत प्रकृति के विशेषण है ?

उत्तर - अचेतन, पारिणामिनी, तमस्, प्रसवधर्मिणी, जड़प्रधान, सक्रीय, अव्यक्त, भोग्या, अविवेकी, दृश्या।

प्र.25 सांख्य सम्मत पंचविशंति तत्वों की क्रम संख्या है ?

उत्तर– 1. प्रकृति 2. बुद्धि 3. अहंकार 4. मन (5-14) दस इन्द्रियाँ (पंचज्ञानेन्द्रियाँ पंचकर्मेन्द्रियाँ), (15-19) पंचतन्मात्राए, (20-24) पंचमहाभूत, 25. पुरुष।

प्र.26 सांख्यदर्शन में महदादि प्रकृति के विकार कहे गये है ?

उत्तर - 16

प्र.27 प्रकृति एवं पुरुष की परमसत्ता को मानने के कारण सांख्यदर्शन को कहा जाता है ?

उत्तर - द्वैतवादी दर्शन।

प्र.28 पंचतन्मात्राएं है ?

उत्तर - रूप-रस-गन्ध-स्पर्श-शब्द।

सृष्टिक्रम या विकासवाद

प्रकृतेर्महांस्ततोऽहङ्कारस्तस्माद् गणश्च षोडशकः।
तस्मादपि षोडशकात्पञ्चभ्यः पञ्चभूतानि !!

प्र.1 सांख्यदर्शन में सृष्टि का अर्थ है ?

उत्तर - परिणाम।

प्र.2 सृष्टि कार्य में प्रकृति को प्रेरित करने वाला तत्व है ?

उत्तर - पुरुष।

प्र.3 प्रकृति और पुरुष का संयोग किसके सदृश होता है ?

उत्तर - पङ्ग्वन्धवत्।

प्र.4 सांख्यमतानुसार सृष्टि का प्रयोजन है ?

उत्तर - पुरुष का कैवल्य।

प्र.5 प्रकृति का प्रथम परिणाम है ?

उत्तर - बुद्धि।

प्र.6 बुद्धि के कितने प्रकार है ?

उत्तर - सात्विक-राजसिक तथा तामसिक।

प्र.7 महत् तत्व से उत्पन्न होता है ?

उत्तर - अहंकार।

प्र.8 बुद्धि का परिणाम है ?

उत्तर - अहंकार।

प्र.9 अहंकार का आविर्भाव या विकास किस तत्व से होता है ?

उत्तर - बुद्धितत्व।

प्र.10 अहंकार कितने प्रकार होता है ?

उत्तर - सात्विक (वैकृत) तामस एवं राजस।

प्र.11 सात्विक अहंकार का अपरनाम है ?

उत्तर - वैकृत अहंकार ।

प्र.12 वैकृत अहंकार के कितने अंग होते है ?

उत्तर - एकादश (पंचज्ञानेन्द्रियाँ, पंचकर्मेन्द्रियाँ तथा मन)

प्र.13 अहंकार का लक्षण है ?

उत्तर - अभिमान।

प्र.14 तामस् अहंकार से किसका आविर्भाव होता है ?

उत्तर - पंचतन्मात्राओं।

प्र.15 राजस् अहंकार है ?

उत्तर - तैजस्।

प्र.16 पंचतन्मात्राओं से किसका आभिर्भाव होता है ?

उत्तर - आकाश, वायु, तेज, जल और पृथ्वी (पंचमहाभूत)।

प्र.17 मन का लक्षण है ?

उत्तर - संकल्प एवं विकल्प।

प्र.18 बाह्यकरण कितने है ?

उत्तर - 10, ज्ञानेन्द्रियाँ तथा कर्मेन्द्रियाँ।

प्र.19 अन्तःकरण कितने है ?

उत्तर - 3, बुद्धि, अहंकार, तथा मन।

प्र.20 करण कितने है ?

उत्तर - 13।

प्र.21 बुद्धि का लक्षण है ?

उत्तर - अध्यवसायात्मिका।

प्र.22 सृष्टिक्रम है ?

उत्तर - सूक्ष्म से स्थूल की ओर।

प्र.23 निरीश्वरवादी दर्शन है ?

उत्तर - सांख्यदर्शन।

प्रत्यसर्ग/बुद्धिसर्ग

एष प्रत्ययसर्गो विपर्ययाऽशक्ति तुष्टि सिध्दयाख्यः।
गुण वैषम्य विमर्दात तस्य च भेदास्तु पंचाशत्।।

प्र.1 सांख्यदर्शन के मतानुसार प्रकृति से लेकर महाभूतपर्यन्त सृष्टि विकासक्रम कितने प्रकार का होता है ?
उत्तर - 2, प्रत्ययसर्ग (बुद्धिसर्ग या भावसर्ग) तन्मात्रसर्ग (भौतिक सर्ग)।
प्र.2 बुद्धिसर्ग के कितने भेद है ?
उत्तर - 4, विपर्यय-अशक्ति-तुष्टि एवं सिद्धि।
प्र.3 विपर्यय का अन्तर्भाव किसमें होता है ?
उत्तर - अज्ञान।
प्र.4 अशक्ति का अन्तर्भाव किसमें होता है ?
उत्तर - अनैश्वर्य, अवैराग्य एवं अधर्म।
प्र.5 तुष्टि में किस-किस का अन्तर्भाव होता है ?
उत्तर - धर्म, वैराग्य, ऐश्वर्य।
प्र.6 सिद्धि में किसका अन्तर्भाव होता है ?
उत्तर - ज्ञान।
प्र.7 सत्य कथन है ?
उत्तर -

बुद्धिसर्ग	**गुणों के वैषम्य से भेद**
1. विपर्यय	05
2. अशक्ति	28
3. तुष्टि	09
4. सिद्धि	08

प्र.8 बुद्धिसर्ग के कुल कितने भेद है ?
उत्तर - 50
प्र.9 सृष्टि का मूल कारण प्रकृति है और प्रकृति की ही परिणाम परम्परा से इस विश्व की सृष्टि हुई है, यह मत किसका है ?
उत्तर - सांख्यदर्शन।
प्र.10 अहंकार से उत्पन्न तत्व कितने है ?
उत्तर - 11।
प्र.11 अध्यवसाय है ?
उत्तर - बुद्धि (अध्यवसायों बुद्धिः) बुद्धि के धर्म, ज्ञान, वैराग्य, अधर्म, अज्ञान, अवैराग्य, अनैश्वर्य।

मोक्ष

प्र.1 मोक्ष का साधन है ?
उत्तर - विवेकख्याति।
प्र.2 मोक्ष की अवस्था है ?
उत्तर - त्रिगुणातीत।

प्र.3 सांख्यदर्शन में मोक्ष को कहा गया है ?
उत्तर - कैवल्य।
प्राप्ते शरीर भेदे चरितार्थत्वात् प्रधानविनिवृतौ।
ऐकान्तिकमात्यन्तिकमुभयं कैवल्यमाप्नोति।।
प्र.4 सांख्यदर्शन में पुरुषार्थ माने गये है ?
उत्तर - 2, भोग तथा अपवर्ग।
प्र.5 सांख्यदर्शन के अनुसार मुक्ति कितने प्रकार की होती है ?
उत्तर - 2, जीवनमुक्ति तथा विदेहमुक्ति।

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्र.1 सांख्यकारिका के प्रणेता है ?
उत्तर– ईश्वरकृष्ण ।
प्र.2 सांख्यकारिका में कितनी कारिकाएं है ?
उत्तर - 70।
प्र.3 सांख्यकारिका को अन्य किस नाम से जाना जाता है ?
उत्तर - हिरण्यसप्तति, कनकसप्तति, सुवर्णसप्तति।
प्र.4 सांख्यकारिका पर कितने टीका ग्रन्थ प्राप्त होते है ? नाम लिखिए ?
उत्तर - 1. माठरकृतमाठरवृति।
2. गौडपादकृतगौडपादभाष्य।
3. अज्ञात कृतयुक्तिदीपिका।
4. शंकरा कृतजयमंगला।
5. वाचस्पति मिश्रसांख्यतत्वकौमुदी।

त्रिविधदुखः

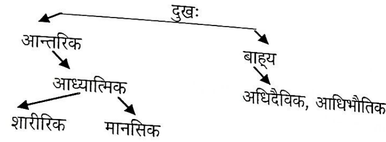
प्र.1 व्यक्ताव्यक्तज्ञ विज्ञान से किसकी निवृत्ति होती है ?
उत्तर - दुखोंः की।
प्र.2 सांख्य मतानुसारत्रिविध दुखः है ?
उत्तर - आध्यात्मिक, आधिदैविक एवं आधिभौतिक।
प्र.3 आध्यात्मिक दुखः कितने प्रकार का होता है ?
उत्तर - 2 शारीरिक/मानसिक।
प्र.4 आत्मनि इति अध्यात्मं तदधिकृत्यजायमानम्.....?
उत्तर - आध्यात्मिकम्।
प्र.5 भूतानि चराचरजातीयानि अधिकृत्य जायमानं यद् दुखः तद्.....?
उत्तर - आधिभौतिकम्।
प्र.6 देवान् यक्षादीन् दिवः प्रभवान् वातवर्षातपशीतोष्णादीन् वा अधिकृत्य जायमानं यद् दुखः तद्.....?
उत्तर - आधिदैविकम्।

प्र.7 स्थावर पदार्थों से उत्पन्न दुखः है ?

उत्तर - आधिभौतिक।

प्र.8 ग्रहों के आवेश से प्रभावित होने वाला दुखः है ?

उत्तर - आधिदैविक



दुखःत्रयाभिघाताज्जिज्ञासा तदपधातके हेतौ।
दृष्टे साऽपार्था चैन्नैकान्तात्यन्तोऽभावात्।।

आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक इन त्रिविध दुखोः के आघात के कारण उसके विधातक उपाय के विषय में जिज्ञासा उत्पन्न होती है। यदि यह कहा जाये कि उसके विनाशक लौकिक उपायों के विद्यमान होने पर शास्त्र विषयक जिज्ञासा व्यर्थ है किन्तु ऐसा नहीं है क्योंकि इससे ऐकान्तिक (अनिवार्य) तथा आत्यान्तिक (सार्वकालिक) दुःख की निवृति नहीं होती।

त्रिविध विज्ञानम्

प्र.1 त्रिविधविज्ञान के अन्तर्गत आते है ?

उत्तर - व्यक्त, अव्यक्त तथा ज्ञ।

प्र.2 सांख्यदर्शन में 'ज्ञ' है ?

उत्तर - पुरुष।

प्र.3 महत् आदि स्थूलप्रकृति है ?

उत्तर - व्यक्त।

प्र.4 मूलप्रकृति है ?

उत्तर - अव्यक्त।

प्र.5 व्यक्ततत्व है ?

उत्तर - 23।

प्र.6 अव्यक्ततत्व है ?

उत्तर - 18।

प्र.7 पुस्करपलाशवन्निर्लिप्त है ?

उत्तर - पुरुष।

प्र.8 सांख्यशास्त्र में प्रतिपादित 25 तत्वों को कितनी विधाओं में विभाजित किया था ?

उत्तर - 4, प्रकृति, विकृति, प्रकृति और विकृति, न प्रकृति न विकृति

मूलप्रकृतिरविकृतिर्महदाद्याः प्रकृतिविकृतयः सप्तः।
षोडशकस्तु विकारो न प्रकृतिर्न विकृतिः पुरुष।।

नोट :- मुलप्रकृति किसी का विकार (कार्य) नहीं है । महत् आदि सात तत्व प्रकृति (कारण) और विकृति (कार्य) दोनों है सोलह तत्वों का समूह केवल विकृति (कार्य) है और पुरुष न किसी का कारण है और न किसी का (कार्य) विकार है।

त्रिविधप्रमाणम्

दृष्टमनुमानमाप्तवचनं च सर्वप्रमाणसिद्धत्वात्।
त्रिविधं प्रमाणमिष्टं प्रमेयसिद्धिः प्रमाणाद्धि।।

सभी प्रमाणों का अन्तर्भाव होने से प्रत्यक्ष, अनुमान और आप्तवचन ये तीनो प्रमाण अभीष्ठ है, क्योंकि प्रमाणों से ही प्रमेय पदार्थों की सिद्धि होती है।

प्र.1 सांख्यदर्शन में कितने प्रमाण माने गये है ?

उत्तर - तीन।

प्र.2 प्रत्यक्ष प्रमाण को सांख्य में कहा गया है ?

उत्तर - दृष्ट।

प्र.3 आगम प्रमाण है ?

उत्तर - शब्द।

प्र.4 प्रमाण से किसकी सिद्धि होती है ?

उत्तर - प्रमेय।

प्र.5 प्रीतिविषयाध्यवसाय अर्थात् प्रत्येक इन्द्रियों के संबध से होने वाला निश्चयात्मक ज्ञान है ?

उत्तर - प्रत्यक्ष।

प्र.6 तल्लिंगलिंगिपूर्वकम् अर्थात् लिंग और लिंगी के सम्बन्ध से जो ज्ञान उत्पन्न होता है, उसे कहते है?

उत्तर - अनुमान।

प्र.7 सांख्यमतानुसार अनुमान के कितने भेद है ?

उत्तर - 3, पूर्ववत्, शेषवत् एवं सामान्यतोदृष्ट।

प्र.8 व्यतिरेकव्याप्ति के द्वारा होने वाला अनुमान कहलाता है ?

उत्तर - अवीत।

प्र.9 अन्वयव्याप्ति के द्वारा होने वाला अनुमान कहलाता है ?

उत्तर - वीत।

प्र.10 जिसका विषय सामान्य रूप हो और उसका विशेष रूप पूर्व में प्रत्यक्ष हो चुका हो और बाद में उसका अनुमान हो, उसे कहते है ?

उत्तर - पूर्ववत् अनुमान।

प्र.11 धूम के द्वारा अग्नि का ज्ञान है ?

उत्तर - पूर्ववत् अनुमान।

प्र.12 जहाँ पर कार्य के द्वारा कारण का अनुमान किया जाता है, उसे कहते है ?

उत्तर - शेषवत्।

प्र.13 जिस अनुमान का विषय सामान्यवस्तु हो और उसका विशेषरूप पहिले प्रत्यक्ष न हुआ हो, उसे कहते है?

उत्तर - सामान्यतोदृष्ट।

प्र.14 सुमेलित कीजिए ?

उत्तर - प्रीतिविषयाध्यवसायः = दृष्टः।

लिंगलिंगिपूर्वकम् = अनुमानम्।

आप्तश्रुतिः = आप्तवचनम्।

प्र.15 अनुमानप्रमाण किस ज्ञान पर आधारित होता है ?

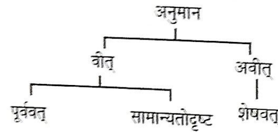
उत्तर - व्याप्ति

प्र.16 प्रमेयसिद्धिः.............?

उत्तर - प्रमाणाद्धिः

प्र.17 सांख्यदर्शन के अनुसार अनुमान प्रक्रिया को आरेख से समझाइये ?

उत्तर–



प्र.18 सांख्य के अनुसार शब्दप्रमाण कितने प्रकार का होता है ?

उत्तर– पौरुषेय तथा अपौरुषेय।

प्र.19 सांख्यमतानुसार वायु के कितने भेद है ?

उत्तर - 10, प्राण, अपान, उदान, समान, व्यान, नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त तथा धनंजय।

गुणत्रय

प्र.1 सांख्यमतानुसार गुण कितने है ?

उत्तर - तीन (सत्व-रजस्-तमस्)।

प्र.2 सत्वगुण का स्वरूप है ?

उत्तर - सुखात्मक (प्रीति)।

प्र.3 रजस् गुण का स्वरूप है ?

उत्तर - दुःखात्मक (अप्रीति)।

प्र.4 तमस् गुण का स्वरूप है ?

उत्तर - मोहात्मक (विषाद)।

प्र.5 सत्वं लघुप्रकाशकं किस गुण का स्वरूप है ?

उत्तर - सत्वगुण।

प्र.6 उपष्टम्भकं चलं किस गुण का स्वरूप है ?

उत्तर - रजस्।

प्र.7 सत्वगुण का प्रयोजन है ?

उत्तर - प्रकाशन।

प्र.8 रजोगुण का प्रयोजन है ?

उत्तर - प्रवर्तन।

प्र.9 तमोगुण का प्रयोजन है ?

उत्तर - नियमन।

प्र.10 सत्वगुण की वृत्ति है ?

उत्तर - अभिभववृत्ति।

प्र.11 रजस्गुण की वृत्ति है ?

उत्तर - आश्रयवृत्ति।

प्र.12 तमस् गुण की वृत्ति है ?

उत्तर - उद्भव।

प्र.13 सत्वगुण का स्वरूप है ?

उत्तर - ज्ञान का प्रतीक, प्रकाशनमान, श्वेतरंग, सुख का कारण, हल्का, लघु, ऊर्ध्वगमन।

प्र.14 रजोगुण का स्वरूप क्या है ?

उत्तर– दुःखदायक, क्रियाशील, चलायमान, रंग-लाल, विषाद, चिन्ता तथा असन्तोष का कारण। उपष्टम्भकम्-प्रर्वतक। चलं-चञ्चल। उत्तेजकता-मलीनता का प्रतीक।

प्र.15 तमोगुण का क्या स्वरूप है ?

उत्तर - अज्ञान, अन्धकार का प्रतीक, भारी, निष्क्रिय, रंग-काला, वरणकम्–आवृत करने वाला, अवरोधक।

प्र.16 सांख्यमतानुसार गुण है ?

उत्तर - द्रव्यरूप।

प्र.17 अनुमान (अतीन्द्रिय) का विषय है ?

उत्तर - गुण।

प्रीत्यप्रीतिविषादात्मकाः प्रकाशप्रवृतिनियमार्थाः।
अन्योऽन्याभिभवाश्रयजननमिथुनवृत्तयश्च गुणाः।।

सत्व-रजस्-तमस् ये तीनों गुण क्रमशः सुख-दुःख-मोहस्वरूप है। ये प्रकाश-प्रवृति एवं नियमन कार्य वाले तथा परस्पर एक दूसरे का अभिभव, आश्रय, उद्भव करने वाले तथा परस्पर मिलकर कार्य करने वाले है ।

सत्वं लघु प्रकाशकमिष्टमुपष्टम्भकं चलं च रजः।
गुरुवरणकमेव तमः प्रदीपवच्चार्थतो वृत्तिः।।

तीनों गुणों में सत्वगुण हल्का और प्रकाशक, रजोगुण प्रवर्तक एवं क्रियाशील होता है और तमोगुण भारी और नियामक होता है। प्रयोजनवंश इन गुणों का दीपक के समान व्यवहार होता है।

प्र.18 बुद्धि इन्द्रियाँ कितनी है, नाम लिखिए ?

उत्तर - 5, चक्षु, श्रोत्र, घ्राण, रस, त्वक्।

प्र.19 कर्मेन्द्रियाँ कितनी है, नाम लिखिए ?

उत्तर– 5, वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ।

केशवमिश्र कृत तर्कभाषा

पदार्थ, कारण, प्रमाण (प्रत्यक्ष-अनुमान-उपमान-शब्द)

प्र. 1. दर्शन साहित्य में आन्वीक्षिकी विद्या के नाम से जाना जाता है?

उत्तर– न्याय।

प्र. 2. केशवमिश्र का समय माना गया है।

उत्तर - 1250 ई.।

प्र. 3. तर्कभाषा में तर्क शब्द से क्या अभिप्राय है?

उत्तर - प्रमाणादयः षोडश पदार्थाः।

प्र. 4. बालोऽपि यो न्यायनये प्रवेशम्, अल्पेन वाञ्छत्यलसः श्रुतेन।
संक्षिप्तयुक्त्यन्वित तर्कभाषा, प्रकाश्यते तस्यकृते मयैषा।। मङ्गलाचरण किस ग्रन्थ से है?

उत्तर - तर्कभाषा।

प्र. 5. प्रमाण-प्रमेय-संशय-प्रयोजन-दृष्टान्त-सिद्धान्त-अवयव-तर्क-निर्णयवाद-जल्प-वितण्डा-हेत्वाभासच्छल-जाति-निग्रहस्थनानां किम् अधिगमः?

उत्तर - निःश्रेयस्।

प्र. 6. प्रमाकरणं.............?

उत्तर– प्रमाणम्।

प्र. 7. प्रमाणं लक्ष्यम्, प्रमाकरणं............?

उत्तर– लक्षणम्।

प्र. 8. यथार्थानुभवं............?

उत्तर– प्रमा।

प्र. 9. ज्ञातविषयं ज्ञानम............?

उत्तर– स्मृतिः।

प्रश्न-10. स्मृतिव्यतिरिक्तं ज्ञानम्?

उत्तर– अनुभवः।

प्र. 11 तत्तेदन्तावगाहिनी प्रतीतिः?

उत्तर - प्रत्यभिज्ञा।

प्र. 12. साधकतमं- ?

उत्तर - करणम्।

प्र. 13. यस्यकार्यात् पूर्वभावोनियतोऽनन्यथासिद्धश्च तत् किम्?

उत्तर - कारणम्।

प्र. 14 तर्कभाषा में सम्बन्ध के भेद है?

उत्तर - दो, संयोग एवं समवाय।

प्र. 15. ययोर्मध्ये एकमविनश्यदपराश्रितमेवावतिष्ठते तावत्?

उत्तर - अयुतसिद्धः।

प्र. 16. न्याय- वैशेषिकदर्शन के अनुसार कारण कितने है?

उत्तर– 3, समवायिकारण अर्थात् उपादान या भौतिक।
असमवायिकारण अर्थात् अभौतिक।
निमित्तकारण।

प्र. 17. अयुतसिद्ध सम्बद्ध घटक है?

उत्तर– 5, अवयव-अवयवी - कपाल-घट।
गुण-गुणी - घट-घटरूप।
क्रिया-क्रियावान् - रामो गच्छति।
जाति-व्यक्ति - घट-घटत्व।
नित्यद्रव्य - विशेष

प्र. 18. यन्नसमवायिकारणं, नाप्यसमवायिकारणम्। अथ च कारणम् तत्?

उत्तर - निमित्तकारणम्।

प्र. 19. जिसमें समवाय सम्बन्ध से कार्य उत्पन्न होता है, उसे कहते है?

उत्तर - समवायिकारण।

प्र. 20. यत्समवायिकारण प्रत्यासन्नमवधृतसामर्थ्य तद्...?

उत्तर - असमवायिकारणम्।

प्र. 21. तेनानन्यथासिद्धनियतपूर्व भावित्वं-?

उत्तर - कारणत्वम्।

प्र. 22. अनन्यथासिद्धनियत् पश्चाद् भावित्वं?

उत्तर - कार्यत्वम्।

प्र. 23. तन्तुसंयोग है?

उत्तर - असमवायिकारण।

प्र. 24. सांख्यनये प्रकृतिविकृतयः ?

उत्तर– सप्त।

प्र. 25. वेमादि पट के कारण है?

उत्तर - निमित्तकारण।

प्र. 26. भावपदार्थों के कितने कारण है?

उत्तर - तीन।

प्र. 27. अभावपदार्थ का कौनसा कारण है?

उत्तर - निमित्तकारण।

प्र. 28. तर्कभाषा में कितने प्रमाणों का वर्णन है?

उत्तर - 4, प्रत्यक्ष-अनुमान-उपमान तथा शब्द।

प्र. 29. साक्षात्कारि प्रमाकरणं?

उत्तर - प्रत्यक्षम्।

प्र. 30. वस्तु का साक्षात्कार करने वाली प्रमा के करण को कहते है?

उत्तर - प्रत्यक्ष प्रमाण।

प्र. 31. प्रत्यक्ष प्रमाण कितने प्रकार का होता है?

उत्तर - 2, निर्विकल्पक एवं सविकल्पक।

प्र. 32. प्रत्यक्ष प्रमाण के करण है?

उत्तर - कभी इन्द्रिय।
कभी इन्द्रिय और अर्थ का सन्निकर्ष।
कभी निर्विकल्पक ज्ञान।

प्र. 33. षड्विध सन्निकर्ष से उत्पन्न ज्ञान है?

उत्तर - प्रत्यक्ष।

प्र. 34. पदार्थस्य किं लक्षणम् ?

उत्तर - आधेयत्वम्, अभिधेयत्वम् तथा ज्ञेयत्वम्।

प्र. 35. सप्रकारकं ज्ञान नामजात्यादि योजना सहितम् ?
उत्तर - सविकल्पकम्।
प्र. 36. निष्प्रकारकं ज्ञानं?
उत्तर - निर्विकल्पकम्।
प्र. 37. ज्ञानमवान्तर व्यापारः ?
उत्तर - निर्विकल्पकम्।
प्र. 38. सविकल्पकं ज्ञानम् ?
उत्तर - फलम्।
प्र. 39. इन्द्रियार्थयोस्तु यः सन्निकर्षः साक्षात्कारि प्रमाहेतुः?
उत्तर - षड्विधः।
प्र. 40. आचार्यविश्वनाथ ने न्याय सिद्धान्तमुक्तावली में प्रत्यक्ष के कितने भेद बताये है?
उत्तर - 6।
प्र. 41. लिङ्ग परामर्शो ?
उत्तर - अनुमानम्।
प्र. 42. महर्षि वात्स्यायन ने अनुमान प्रमाण को कहा है?
उत्तर - अन्वीक्षा।
प्र. 43. व्याप्ति बलेनार्थगमकं- ?
उत्तर - लिङ्गम्।
प्र. 44. साहचर्यनियमः?
उत्तर - व्याप्तिः।
प्र. 45. यत्र-यत्र धूमः तत्र तत्र अग्निः?
उत्तर - अन्वयव्याप्तिः।
प्र. 46. तृतीय ज्ञानं?
उत्तर - परामर्शः।
प्र. 47. व्याप्तिविशिष्ट पक्षधर्मताज्ञानम् -?
उत्तर - परामर्शः।
प्र. 48. उपाधि शब्द का अर्थ है?
उत्तर - निमित्त या प्रयोजक।
प्र. 49. व्यभिचार रहित निरुपाधिहेतुक साहचर्य नियमो-?
उत्तर - व्याप्तिः।
प्र. 50. साध्य व्यापकत्वे सति साधना व्यापकः -?
उत्तर - व्याप्तिः।
प्र. 51. व्यभिचार और उपाधि का अभाव हो, उस अविनाभाव सम्बन्ध को कहते है?
उत्तर - व्याप्ति।
प्र. 52. व्याप्ति कितने प्रकार की होती है?
उत्तर - अन्वयव्याप्ति तथा व्यतिरेकव्याप्ति।
प्र. 53. विधिमुखेन जहाँ व्याप्ति की प्रतिपत्ति होती है, उसे कहते है?
उत्तर - अन्वयव्याप्ति।

प्र. 54. निषेधमुखेन प्रतिपत्ति है?
उत्तर - व्यतिरेकव्याप्ति।
प्र. 55. यत्र यत्र वहन्यभावतत्रतत्र -?
उत्तर - धूमाभावः।
प्र. 56. जिसमे केवल अन्वयव्याप्ति पायी जायें और व्यतिरेक का सर्वथा अभाव हो, उसे कहते है?
उत्तर - केवलान्वयि।
प्र. 57. जिसमें केवल व्यतिरेक व्याप्ति पायी जाती है और मन्वय का सर्वथा अभाव हो , उसे कहते है?
उत्तर - केवलव्यतिरेकी।
प्र. 58. जिसमें अन्वय और व्यतिरेक दोनों के दृष्टान्त मिलते है, उसे कहते है?
उत्तर - अन्वयव्यतिरेकी।
प्र. 59. पक्षः ?
उत्तर - सन्दिग्ध साध्यवान्।
प्र. 60. पर्वतोऽयमग्निमान्?
उत्तर - पक्षः।
प्र. 61. निश्चितसाध्यवान्?
उत्तर - सपक्षः।
प्र. 62. महानसः?
उत्तर - सपक्षः।
प्र. 63. निश्चितसाध्याऽभाववान् -?
उत्तर - विपक्षः।
प्र. 64. महाह्रदः?
उत्तर - विपक्षः।
प्र. 65. निश्चितसाध्याभाववान् ?
उत्तर - पक्षः।
प्र. 66. प्रमाणान्तरावधृत साध्याभावो हेतुः -?
उत्तर - बाधितविषयः।
प्र. 67. पक्ष में उसके लिङ्ग की सत्ता को कहते है?
उत्तर - पक्षधर्मता।
प्र. 68. पर्वत पर धूम का होना ज्ञान है?
उत्तर - परामर्श।
प्र. 69. अग्नि की व्याप्ति से विशिष्ट धूम के पक्षधर्मता ज्ञान को कहते है?
उत्तर - परामर्श।
प्र. 70. व्याप्तस्यपक्षधर्मत्वयोः?
उत्तर - परामर्शः।
प्र. 71. पक्ष, साध्य तथा लिङ्ग से उत्पन्न ज्ञान को कहते है?
उत्तर - परामर्श।
प्र. 72. परामर्शजन्यं ज्ञानम्–?
उत्तर - अनुमितिः।

प्र. 73. परामर्शजन्य ज्ञान को कहते है?
उत्तर - अनुमिति।
प्र. 74. पर्वतोऽयमग्निमान् ?
उत्तर - अनुमितिः।
प्र. 75. साध्यनिर्देशः.........?
उत्तर - प्रतिज्ञा।
प्र. 76. पक्ष के साथ सिद्ध की जाने वाली वस्तु का निर्देश करना है ?
उत्तर - प्रतिज्ञा।
प्र. 77. व्याप्ति के आधार पर साध्य की सत्ता प्रमाणित करने वाला तत्व है?
उत्तर - हेतु।
प्र. 78. वैशेषिक दर्शन में हेतु को कहते है?
उत्तर - अपदेश।
प्र. 79. व्याप्तिप्रतिपादकवचनम् ....?
उत्तर - उदाहरणम्।
प्र. 80. साध्य और साधन के अविनाभाव सम्बन्ध को कहते है ?
उत्तर - उदाहरण/दृष्टान्त।
प्र. 81. उदाहरण के प्रकार है?
उत्तर - 2, साधर्म्य तथा वैधर्म्य।
प्र. 82. व्याप्तिविशिष्टहेतोः पक्षधर्मताप्रतिपादकवचनम् ?
उत्तर - उपनयः।
प्र. 83. व्याप्तिविशिष्ट हेतु के प्रतिपादन करने वाले वाक्यांश को कहते है?
उत्तर - उपनय।
प्र. 84. वैशेषिकदर्शन में उपनय को कहते है?
उत्तर - अनुसंधान।
प्र. 85. व्याप्तिविशिष्टलिङ्ग प्रतिपादकवचनम् ?
उत्तर - उपनयः।
प्र. 86. प्रतिज्ञावाक्य का उपसंहार है?
उत्तर - निगमन।
प्र. 87. परार्थानुमान के अवयव है?
उत्तर - 5।
प्र. 88. अनुमान कितने प्रकार का होता है?
उत्तर - 2, स्वार्थानुमान तथा परार्थानुमान।
प्र. 89. परार्थनुमान के अवयवों को स्पष्ट कीजिए?
उत्तर - प्रतिज्ञा -पर्वतोऽग्निमान्।
हेतु -धूमत्वात्।
उदाहरण-यो यो धूमवान् स स अग्निमान्, यथा महानसम्।
उपनय -तथाचायम्।
निगमन-तस्मात्तथा।

प्र. 90. अनुमितितत्करणाऽन्यतरप्रतिबन्धक ज्ञानविषयत्वं -?
उत्तर - हेत्वाभासः।
प्र. 91. अनुमिति और उसका करण इनमें किसी एक के प्रतिबन्धक ज्ञान विषय को कहते है?
उत्तर - हेत्वाभास।
प्र. 92. तर्कभाषा के अनुसार हेत्वाभासों की संख्या कितनी है?
उत्तर - 5।
प्र. 93. हेत्वाभास कितने प्रकार का है, नाम लिखिए?
उत्तर - असिद्ध-विरुद्ध-अनेकान्तिक-प्रकरणसम-कालात्ययापदिष्ट।
प्र. 94. वैशेषिक दर्शन में हेत्वाभासों की संख्या कितनी है?
उत्तर - 3, असिद्ध, विरुद्ध तथा सन्दिग्ध।
प्र. 95. अनुमानवाक्य में ज्ञापक या बोधक के रूप में निश्चित रहने वाला हेतु कहलाता है?
उत्तर - असिद्ध।
प्र. 96. असिद्ध हेत्वाभास कितने प्रकार का होता है?
उत्तर - 3, आश्रयासिद्ध, स्वरूपासिद्ध तथा व्याप्यत्वासिद्ध।
प्र. 97. गगनारविन्दं सुरभि, अरविन्दत्वात्, सरोजारविन्दत् ?
उत्तर - आश्रयसिद्धः।
प्र. 98. अनित्यः शब्दः चाक्षुषत्वात् -?
उत्तर - घटवत्।
प्र. 99. जिस हेतु का आश्रय पक्ष ही सिद्ध न हो वह है?
उत्तर - स्वरूपासिद्ध।
प्र. 100. व्याप्यत्वासिद्ध हेत्वाभास कितने प्रकार का होता है?
उत्तर - 2।
प्र. 101. लिङ्गत्वेनानिश्चितो हेतुः?
उत्तर - असिद्धः।
प्र. 102. साध्यविपर्यय व्याप्तो हेतुः?
उत्तर - विरुद्धः।
प्र. 103. शब्दोनित्यः कृतकत्वात् -?
उत्तर - विरुद्धः
प्र. 104. जो हेतु साध्य के व्यवस्थित रूप या नियमपूर्वक नहीं रहता, वह हेतु कहलाता है?
उत्तर - सव्यभिचार।
प्र. 105. सव्यभिचारहेत्वाभास को कहते है?
उत्तर - अनैकान्तिक।
प्र. 106. अनैकान्तिकहेत्वाभास कितने प्रकार का होता है?
उत्तर - 2, साधारण तथा असाधारण।
प्र. 107. शब्दो नित्यः प्रमेयत्वात्?
उत्तर - साधारण अनैकान्तिक।

प्र. 108. भूः नित्या गन्धवत्त्वात् ?

उत्तर - असाधारण अनैकान्तिक।

प्र. 109. यस्यहेतोः साध्यविपरितसाधकं हेत्वन्तरं विद्यते?

उत्तर - प्रकरणसम।

प्र. 110. प्रकरणसम हेत्वाभास को कहते है?

उत्तर - सत्प्रतिपक्ष।

प्र. 111. शब्दोऽनित्यो नित्यधर्मरहित्वात्?

उत्तर - प्रकरणसम।

प्र. 112. पक्ष में जिस हेतु के साध्य का अभाव अन्य प्रमाण से ही निश्चित कर लिया गया हो, वह हेत्वाभास है?

उत्तर - कालात्ययापदिष्ट हेत्वाभास।

प्र. 113. अग्निरनुष्णः कृतकत्वाज्जलवत् ?

उत्तर - कालात्ययापदिष्ट हेत्वाभास।

प्र. 114. अपने ज्ञान का हेतु जो अनुमान है, वह कहलाता है?

उत्तर - स्वार्थानुमान।

प्र. 115. जब कोई व्यक्ति धूम रूप हेतु के देखने से अग्नि का अनुमान कर अन्य व्यक्ति को उस अग्नि का बोध कराने के लिए पाँच अवयवों वाले अनुमान वाक्य का प्रयोग करता है, तो वह अनुमान है?

उत्तर - परार्थानुमान।

प्र. 116. अतिदेशवाक्यार्थस्मरणसहकृतं गो सादृश्यविशिष्टपिण्डज्ञानम् ?

उत्तर - उपमानम्।

प्र. 117. गो सदृश गवयः उदाहरण है?

उत्तर - उपमानप्रमाण।

प्र. 118. संज्ञा संज्ञि सम्बन्धज्ञानम्–?

उत्तर - उपमितिः।

प्र. 119. उपमान प्रक्रिया के कितने अंग है ?

उत्तर - तीन।

प्र. 120. वैशेषिक दर्शन ने उपमान प्रमाण का अन्तर्भाव किस प्रमाण में किया है?

उत्तर - अनुमान।

प्र. 121. आप्तवाक्यं -?

उत्तर - शब्दः

प्र. 122. तर्कभाषा के अनुसार आप्तवाक्य है?

उत्तर - शब्दप्रमाण।

प्र. 123. यथाभूतस्यार्थस्योपदेष्टा पुरुषः?

उत्तर - आप्तः।

प्र. 124. आकांक्षा योग्यतासन्निधिमतां पदानां समूहः ?

उत्तर - वाक्यम्।

प्रश्न-125. वैशेषिकमतानुसार आप्तप्रमाण का अन्तर्भाव किसमें होता है ?

उत्तर - अनुमान।

प्रश्न-126. अनुपपद्यमानार्थदर्शनात् तदुपपादकी भूतार्थान्तर कल्पनम् -?

उत्तर - अर्थापत्ति।

प्रश्न-127. पीनोऽयं देवदत्तः दिवा न भुङ्क्ते उदाहरण है?

उत्तर - अर्थापत्ति।

प्रश्न-128. तर्कभाषाकार ने अर्थापत्ति प्रमाण का अन्तर्भाव किसमें किया?

उत्तर - अनुमान।

प्रश्न-129. अर्थापत्ति प्रमाण को मानते है?

उत्तर - मीमांसक तथा वेदान्ती।

प्रश्न-130. अनुपलब्धिश्चोपलब्धे -?

उत्तर - अभावः।

प्रश्न-131. केशवमिश्र ने अभाव प्रमाण का अन्तर्भाव किसमें किया है?

उत्तर - प्रत्यक्ष।

प्रश्न-132. परतः प्रामाण्यवादी दर्शन है?

उत्तर - न्याय एवं वैशेषिक दर्शन।

प्रश्न-133. न्यायदर्शनानुसार पदार्थों का नियामक तत्व है?

उत्तर - आकांक्षा।

प्रश्न-134. सादृश्यज्ञान का करण है?

उत्तर– उपमिति।

प्रश्न-135. 'अग्निनासिञ्चति' यह उदाहरण है?

उत्तर - योग्यताविषयक।

प्रश्नोत्तराणि

दर्शनशास्त्रम्

प्रश्नः-1 सांख्यनये प्रकृतिविकृतयः ? (क)
(क) सप्त (ख) पञ्च (ग) त्रिस्त्रः (घ) नव

प्रश्नः-2 सांख्यमते विकृतयः ? (ग)
(क) सप्त (ख) नव (ग) षोडशः (घ) अष्टादश

प्रश्नः-3 वेदान्तो नाम ? (ग)
(क) रामायण प्रमाणम् (ख) धर्मशास्त्र प्रमाणम्
(ग) उपनिषत्प्रमाणम् (घ) अर्थशास्त्रप्रमाणम्

प्रश्नः-4 सांख्यनये अन्तः करणम् ? (ग)
(क) द्विविधम् (ख) त्रिविधम् (ग) चतुर्विधम् (घ) पञ्चविधम्

प्रश्नः-5 अद्धैतवेदान्ते जीवब्रह्मणोः स्वरूपम् ? (क)
(क) जीव एवं ब्रह्म (ख) जीव एवं ईश्वरः
(ग) जीव एवं अज्ञानम् (घ) जीव एवं पुरूषः

प्रश्नः-6 अनुबन्धः ?
(क) त्रिविधः (ख) चतुर्विधः (ग) पञ्चविधः (घ) शड्विधः (ख)

प्रश्नः-7 अध्यारोपस्य लक्षणम् ?
(क) वस्तुन्यवस्तुनि आरोपः (ख) अवस्तुनिवस्तु आरोपः
(ग) मिथ्यारोपाश्चापवादः (घ) अपवादेनसहाध्यारोपः (क)

प्रश्नः-8 अर्थापत्तेः कस्मिन् प्रमाणेऽन्तर्भावः भवितुमर्हति ?
(क) प्रत्यक्षे (ख) अनुमाने (ग) शब्दे (घ) उपमितौ (ख)

प्रश्नः-9 सांख्यनये एकादशेन्द्रियाणि जायन्ते ?
(क) अहङ्कारात् (ख) महतः
(ग) प्रकृतेः (घ) पञ्चतन्मात्रेभ्यः (क)

प्रश्नः-10 अद्वैते सुषुप्ते देवता ?
(क) वैश्वानरः (ख) ईश्वरः (ग) हिरण्यगर्भः (घ) अग्निः (ग)

प्रश्नः-11 न्यायदर्शनानुसारं प्रमाणानि ?
(क) त्रीणि (ख) चत्वारि (ग) पञ्च (घ) षट् (ख)

प्रश्नः-12 न्यायनयेवाक्यम् ?
(क) पदवर्णाशब्दाः (ख) अभिधालक्षणा व्यञ्जना
(ग) आकांक्षायोग्यतासन्निधिमतां पदानां समूहः (घ) पदपदार्थयोजना (ग)

प्रश्नः-13 परार्थानुमानेऽवयवाः ?
(क) त्रयः (ख) पञ्च (ग) सप्त (घ) नव (ख)

प्रश्नः-14 सांख्यस्यमतमिदम् ?
(क) आरम्भवादः (ख) विवर्तवाद् (ग) असत्कार्यवादः (घ) सत्कार्यवादः (घ)

प्रश्नः-15 त्रिगुणातीतोऽयम् ?
(क) महान् (ख) अहङ्कारः (ग) पुरुषः (घ) विकारः (ग)

प्रश्नः-16 विषादोऽस्य स्वरूपम् ?
(क) सत्वगुणस्य (ख) तमोगुणस्य (ग) रजोगुणस्य (घ) पुरूषस्य (ख)

प्रश्नः-17 भूतद्यहङ्कारात् उत्पद्यते ?
(क) ज्ञानेन्द्रियपञ्चकम् (ख) कर्मेन्द्रियपञ्चकम् (ग) तन्मात्रपञ्चकम् (घ) मनः (ग)

प्रश्नः-18 अनुबन्धोऽयम् ?
(क) पञ्चीकरणम् (ख) अज्ञानम् (ग) विषयः (घ) लक्षणम् (ग)

प्रश्नः-19 नैमित्तिकं कर्मेदम् ?
(क) ज्योतिष्टोमयज्ञः (ख) ब्रह्महत्या (ग) जातेष्टिः (घ) सन्ध्यावन्दम् (ग)

प्रश्नः-20 विज्ञानमयकोशोऽयम् ?
(क) पञ्चज्ञानेन्द्रियाणि + बुद्धि (ख) पञ्चज्ञानेन्द्रियाणिमन
(ग) पञ्चप्राणादिपञ्चकम् + पञ्चज्ञानेन्द्रियाणि (घ) पञ्चकर्मेन्द्रियाणि + मन (क)

प्रश्नः-21 जीवन्मुक्तः इत्यस्यार्थे विद्यते ?
(क) जीवनान् मुक्तः (ख) जीवितः सन मुक्तः
(ग) प्रारब्धकर्मभ्योमुक्तः (घ) शुभवासनानुवृत्तेमुक्तः (क)

प्रश्नः-22 न्यायवैशेषिकानुसारं गुणाः सन्ति ?
(क) त्रयः (ख) चत्वारः (ग) चतुर्विंशतिः (घ) सप्तदश (ग)

प्रश्नः-23 घटः स्वगतरूपादेः ?
(क) असमवायिकारणम् (ख) समवायिकारणम् (ग) निमित्तकारणम् (घ) नकारणम् (ख)

प्रश्नः-24 सादृश्यवान..........?
(क) करणम् (ख) उपमितेः (ग) अनुमितेः (घ) शब्दबोधस्य (ख)

प्रश्नः-25 कारणभावाच्च इत्यनेन पुष्यते ?
(क) पुरूषबहुत्वम् (ख) प्रकृतिसिद्धः (ग) सृष्टिप्रक्रिया (घ) सत्कार्यवादः (घ)

प्रश्नः- 26 कार्यं भवति ?
(क) केवलं प्रकृतिसरूपम् (ख) केवलं प्रकृतिविरूपम्
(ग) प्रकृतिसरूपमपि प्रकृतिविरूपमपि (घ) न प्रकृतिसरूपमपि (ख)

प्रश्नः-27 अकर्तृत्वमस्य धर्मः ?
(क) प्रधानस्य (ख) अहङ्कारस्य (ग) पुरुषस्य (घ) ज्ञानेन्द्रियाणाम् (ग)

प्रश्नः-28 प्रकृतिः वस्तुतो बध्नाति ?
(क) स्वत्मानम् (ख) पुरुषम (ग) अहङ्कारम् (घ) आनन्दम् (क)

प्रश्नः-29 विहितकर्मणां विधिना परित्यागः ?
(क) तितिक्षा (ख) उपरतिः (ग) दमः (घ) श्रद्धाः (ख)

प्रश्नः-30 वेदान्तानुसारं लिङ्गशरीरस्यावयवाः सन्ति ?
(क) सप्तदशः (ख) षोडशः (ग) पञ्चविशतिः (घ) अष्टादशः (क)

प्रश्नः-31 अखिलशरीरवर्ती वायुः विद्यते ?
(क) प्राणः (ख) अपानः (ग) व्यानः (घ) उदानः (क)

प्रश्नः-32 शब्दस्पर्शौ अभिव्यञ्ज्येते ?
(क) पञ्चीकृताकाशे (ख) पञ्चीकृतवायौ
(ग) पञ्चीकृततेजसि (घ) पञ्चीकृतपृथिव्याम् (ख)

प्रश्नः-33 यत्र धुमस्तत्राग्निः इति साहचर्यनियमः ?
(क) परामर्शः (ख) पक्षधर्मता (ग) द्वितीयधूमज्ञानम् (घ) व्याप्तिः (घ)

प्रश्नः-34 संज्ञासंज्ञिसम्बन्ध ज्ञानस्यकारणम् ?
(क) प्रत्यक्षप्रमाणम् (ख) शब्दप्रमाणम्
(ग) अनुमान प्रमाणम् (घ) उपमान प्रमाणम् (घ)

प्रश्नः-35 अग्निनासिञ्चेत् इतीदम् उदाहरणम् ?
(क) योग्यता विषयम् (ख) आकांक्षा विषयम्
(ग) सन्निधिविषयम् (घ) उपमान विषयम् (क)

प्रश्नः-36 सत्कार्यवादे उत्पत्ते पूर्वं कार्यं कीदृशम् ?
(क) व्यक्तरूपेण (ख) अव्यक्त रूपेणसत् (ग) उभयरूपेण असत् (घ) सदसत् (ख)

प्रश्नः-37 सांख्यमतेवायोः प्रादुर्भावः कस्मात् ?
(क) शब्दतन्मात्रात् (ख) स्पर्शतन्मात्रात् (ग) गन्धतन्मात्रात् (घ) रसतन्मात्रात् (ख)

प्रश्नः-38 महतः का वृत्तिः ?
(क) अभिमानः (ख) सङ्कल्पः (ग) अध्यवसायः (घ) आलोचनम् (क)

प्रश्नः-39 तुष्टि कतिविधा ?
(क) सप्तविधा (ख) अष्टविधा (ग) नवविद्या (घ) दशविद्या (ग)

प्रश्नः-40 अद्वैतवेदान्तस्य विषयः कः ?
(क) जीवः (ख) ईश्वरः (ग) अज्ञानम् (घ) शुद्धं चैतन्यम् (क)

प्रश्नः-41 भूतानां केभ्योऽशेभ्यः कर्मेन्द्रियाणि उत्पद्यते ?
(क) सात्विवकेभ्यः (ख) राजसेभ्यः (ग) तामसेभ्यः (घ) सर्वेभ्यः (ख)

प्रश्नः-42 पञ्चीकृते वायौ जलस्य कियान् भागः ?
(क) 50% (ख) 25% (ग) 30% (घ) 12½% (घ)

प्रश्नः-43 जीवन्मुक्तौ सत्यां कस्य कर्मणः फलम् उपभोक्तव्यमेव ?
(क) सञ्चितस्य (ख) क्रियमाणस्य (ग) प्रारब्धस्य (घ) सर्वेषाम् (घ)

प्रश्नः-44 न्यायमते कति प्रमाणानि ?
(क) त्रीणि (ख) चत्वारि (ग) पञ्च (घ) षट् (ख)

प्रश्नः-45 समवेत समववायसन्निकर्षेण कस्य प्रत्यक्षं भवति ?
(क) गन्धस्य (ख) शब्दस्य (ग) स्पर्शस्य (घ) तेजस्य (ख)

प्रश्नः-46 असिद्धो हेत्वाभासः कतिविधः ?
(क) द्विविधः (ख) त्रिविधः (ग) चतुर्विधः (घ) पञ्चविधः (ख)

प्रश्नः-47 अतिदेशवाक्यार्थस्मरणं कुत्र व्यापारः ?
(क) प्रत्यक्षे (ख) अनुमितेः (ग) उपमितौ (घ) शब्द बोधे (ग)

प्रश्नः-48 पुरुषस्य स्वरूपं किम् ?
(क) अपरिणामि (ख) परिणामि (ग) त्रिगुणात्मकम् (घ) सक्रिय (क)

प्रश्नः-49 पञ्चतन्मात्राणि कुतः प्रादुर्भवन्ति ?
(क) प्रधानात् (ख) अहङ्कारात् (ग) महतः (घ) मनसः (ग)

प्रश्नः-50 कैवल्यं कस्माद् भवति ?
(क) विवेकख्यातेः (ख) सत्ख्यातेः
(ग) अनिर्वचनीय ख्यातेः (घ) अंख्यातेः (क)

प्रश्नः-51 सदसद्भ्यामनिव र्नीयं किम् ?
(क) ब्रह्म (ख) जीवः (ग) ईश्वरः (घ) अज्ञानम् (घ)

प्रश्नः-52 भूतानांकेभ्योऽशेभ्यः ज्ञानेन्द्रियाणि उत्पद्यन्ते ?
(क) राजसेभ्यः (ख) तामसेभ्यः (ग) सात्विकेभ्यः (घ) सर्वेभ्य (ग)

प्रश्नः-53 वेदान्तसारमते लिङ्ग शरीर घटकानि कति ?
(क) पञ्चदशः (ख) षोडशः (ग) सप्तदशः (घ) अष्टादशः (ग)

प्रश्नः-54 इन्द्रियार्थ सन्निकर्षः कतिविधः ?
(क) पञ्चविधः (ख) षडविधः (ग) सप्तविधः (घ) अष्टविधः (ख)

प्रश्नः-55 अनुमितिः कस्माद् अनन्तरं जायते ?
(क) परामर्शात् (ख) व्याप्तिज्ञानात्
(ग) पदज्ञानात् (घ) सदृभ्यज्ञानात् (क)

प्रश्नः-56 सतः सत् जायते इति कस्य मतम् ?
(क) बौद्धस्य (ख) नैयायिकस्य (ग) सांख्यस्य (घ) वेदान्तिन (ग)

प्रश्नः-57 कर्तृत्वं कुत्र विद्यते ?
(क) पुरुषे (ख) मनसिं (ग) प्रकृतौ (घ) अहङ्कारे (क)

प्रश्नः-58 बुद्धिसर्गः कतिविधो भवति ?
(क) एकविधः (ख) द्विविधः (ग) त्रिविधः (घ) पञ्चविधः (घ)

प्रश्नः-59 कैवल्यं किमस्ति ?
(क) नित्यसुखाभिव्यक्तिः (ख) आत्यन्तिकदुःखनिवृत्तिः
(ग) ऐकान्तिकदुखःनिवृत्तिः (घ) ऐकान्तिकदुःखनिवृत्तिः (घ)

प्रश्नः-60 अज्ञानस्य कतिविधा शक्तिर्भवति ?
(क) एकविधा (ख) द्विविधा (ग) चतुर्विधा (घ) बहुविधा (ख)

प्रश्नः-61 जीवस्य कतिविधाः अवस्थाः भवन्ति ?
(क) द्विविधा (ख) चतुर्विधाः (ग) पञ्चविधा (घ) शड्विधा (ख)

प्रश्नः-62 विवर्तोनाम किं विद्यते ?
(क) कारणस्य समसत्ता परिणामः (ख) कारणस्य कार्यवस्था
(ग) कारणात् विशमसत्ताकोत्पत्तिः (घ) कारणगुणात्मिका कार्योत्पत्तिः (क)

प्रश्नः-63 पदार्थस्य किं लक्षणम् ?
(क) सत्तावत्वम् (ख) भावत्वम् (ग) आधेयत्वम् (घ) प्रमेयत्वम् (ग)

प्रश्नः-64 सामान्यं पदार्थः नास्तीति कस्य मतम् ?
(क) बौद्धस्य (ख) नैयायिकस्य (ग) मीमासकस्य (घ) वैयाकरणस्य (घ)

प्रश्नः-65 विभुत्वं किमस्ति ?
(क) अपरिच्छिन्न परिमाणत्वम् (ख) परिमाणरहितत्वम्
(ग) पदार्थमात्रवृत्तित्वम् (घ) मुरारिमिश्रस्य (ग)

प्रश्नः-66 प्रामाण्यमनुव्यवायेन गृह्यते इति कस्य मतम् ?
(क) नैयायिकस्य (ख) वेदान्तिनः
(ग) प्रभाकरमीमा संकस्य (घ) प्रत्यक्ष योग्यद्रव्यम् (क)

प्रश्नः-67 अव्याप्यवृत्तित्वं किमस्ति ?
(क) सावच्छिन्नवृत्तिकत्वं (ख) निखच्छिन्न वृत्तिकत्वम्
(ग) एकमात्रवृत्तित्वम् (घ) अनेकवृत्तित्वम् (ख)

प्रश्नः-68 अहङ्कार कतिविधो भवति ?
(क) एकविधः (ख) द्विविधः (ग) त्रिविधः (घ) चतुर्विधः (ग)

प्रश्नः-69 समन्वयात् किं सिद्ध्यति ?
(क) प्रकृतिः (ख) पुरूषः (ग) गुणः (घ) कैवल्यम् (क)

प्रश्नः-70 वैराग्यात् किं भवति ?
(क) प्रकृतिलयः (ख) बुद्धिलयः (ग) अहङ्कारलयः (घ) भूतलयः (क)

प्रश्नः-71 ज्ञानं कस्य धर्मः ?
(क) पुरुषस्य (ख) प्रकृतेः (ग) अहङ्कारस्य (घ) बुद्धेः (घ)

प्रश्नः-72 केवलं शब्दादिगुणत्रयं कुत्र अभिव्यज्यते ?
(क) पञ्चीकृतवायौ (ख) पञ्चीकृताप्सु
(ग) पञ्चीकृततेजसि (घ) पञ्चीकृत् पृथिव्याम् (ग)

प्रश्नः-73 सांख्यानुसारेण लिङ् शरीरस्य कति अवयवाः सन्ति?
(क) पञ्चदशः (ख) षोडशः (ग) सप्तदशः (घ) अष्टादशः (ग)

प्रश्नः-74 अद्वैतवेदान्तमते मुक्तिः ?
(क) ब्रह्मज्ञानप्राप्तिः (ख) ब्रह्मसादृश्य प्राप्तिः
(ग) ब्रह्मासायुज्यम् (घ) ब्रह्मभावः (घ)

प्रश्नः-75 विशेषगुणः कुत्रद्रव्येनास्ति ?
(क) आकाशे (ख) वायौ (ग) मनसि (घ) आत्मनि (घ)

प्रश्नः-76 लौकिकसन्निकर्षः कतिविधः ?
(क) द्विविधः (ख) पञ्चविधः (ग) षडविधः (घ) चतुर्विधं (क)

प्रश्नः-77 प्रमाणं द्विविधमिति कस्यमतम् ?
(क) वैशेषिकस्य (ख) न्यायदर्शनस्य
(ग) चार्वाकदर्शनस्य (घ) सांख्यदर्शनस्य (ग)

प्रश्नः-78 पारिमाण्डल्यं नाम किम् ?
(क) परमाणुः (ख) अणुपरिमाणम् (ग) ब्रह्माण्डम् (घ) त्रसरेणुः (क)

प्रश्नः-79 पीलुपाकवादिनः के सन्ति ?
(क) नैयायिका (ख) बौद्धाः (ग) वैशेषिकाः (घ) जैनाः (ग)

प्रश्नः-80 सांख्यैः स्वीकृतानि तत्वानिः ?
(क) 20 (ख) 25 (ग) 15 (घ) 11 (ख)

प्रश्नः-81 सांख्यैः गुणाः इति वर्णिता ?
(क) सुख दुःख मोहात्मका (ख) इष्टानिष्टोभयात्मका
(ग) प्रीत्यप्रीति विशादात्मका (घ) सुखदुःखरामात्मका (क)

प्रश्नः-82 सांख्यस्वीकृतानि प्रमाणानि ?
(क) 4 (ख) 3 (ग) 5 (घ) 2 (ख)

प्रश्नः-83 पुरुषप्रकृति इति संसर्गः..............................वर्णितः ?
(क) जडाजडवत् (ख) मूकबधिरवत्
(ग) अन्धमालावत् (घ) पङ्ग्वन्धवत् (घ)

प्रश्नः-84 बुद्धिः-सहिता विज्ञानमय कोशोभवति ?
(क) कर्मेन्द्रियैः (ख) ज्ञानेन्द्रियैः (ग) अन्तः करणैः (घ) सूक्ष्मशरीरैः (ख)

प्रश्नः-85 अध्यासः .... ?
(क) कार्यरूपः (ख) स्मृतिरूपः (ग) कारणरूपः (घ) नित्यरूपः (ग)

प्रश्नः-86 द्रव्यप्रत्यक्षे सर्वदा सन्निकर्षः ?
(क) समवायः (ख) तादात्म्यम् (ग) संयोगः (घ) संयुक्तसमवायः (ग)

प्रश्नः-87 न्याये कतिपदार्थाः स्वीकृताः ?
(क) 7 (ख) 4 (ग) 9 (घ) 16 (घ)

प्रश्नः-88 तद्वति तत्प्रकारकं ज्ञानं भवति ?
(क) अयथार्थः (ख) यथार्थः (ग) स्मृतिः (घ) विपर्ययः (ख)

प्रश्नः-89 कार्यनियतपूर्ववृत्तित्वं..........?
(क) कारणत्वम् (ख) कार्यत्वम् (ग) करणत्वम् (घ) अकारणत्वम् (क)

प्रश्नः-90 सम्यग्ज्ञानवान् शरीरं.....इव धारयति ?
(क) मूढवत् (ख) चक्रभ्रमिवत् (ग) जडवत् (घ) पिशाचवत् (ग)

प्रश्नः-91 समीचीनां तालिकां चिनुत-
(a) संयुक्त-समवेत समवायः (i) मन्
(b) विशेषणता (ii) गुणः
(c) समवायः (iii) तमस्
(क) संयोगः (iv) घटरूपत्वम्
(क) a-iv, b-iii, c-ii, d-i
(ख) a-iii, c-ii, b-i, d-iv
(ग) a-i, b-ii, c-iii d-iv
(घ) a-ii, b-i, c-iiid- iv (क)

प्रश्नः-92 अध्यासः पण्डिताः ....इति मन्यते ?
(क) माया (ख) प्रकृतिः (ग) अविद्या (घ) ज्ञानम् (क)

प्रश्नः-93 वेदान्ते 'अथ' शब्दस्यार्थे भवति ?
(क) मङ्गलः (ख) अधिकारः (ग) आनन्तर्यः (घ) निरर्थकः (ग)

प्रश्नः-94 सदानन्दस्य गुरोः नाम-
(क) आत्मानन्दः (ख) सदानन्दः (ग) रामानन्दः (घ) अद्वयानन्दः (घ)

प्रश्नः-95 शब्द साक्षात्कारे सन्निकर्षः ?
(क) संयोगः (ख) समवायः
(ग) विशेषणता (घ) संयुक्तविशेषणता (घ)

प्रश्नः-96 न्याये स्वीकृतागुणाः ?
(क) 12 (ख) 20 (ग) 22 (घ) 24 (घ)

प्रश्नः-97 प्रागभाव प्रतियोगि भवति ?
(क) कारणम् (ख) कार्यम् (ग) करणम् (घ) अन्योन्याभावः (घ)

प्रश्नः-98 अनादि सान्तः भवति ?
(क) प्रागभावः (ख) अन्योन्याभावः (ग) प्रध्वंसाभावः (घ) अत्यन्ताभावः (क)

प्रश्नः-99 तन्तवः पटस्य.....भवति ?
(क) निमित्तकारणम् (ख) समवायिकारणम्
(ग) असमवायिकारणम् (घ) सहकारिकारणम् (ख)

प्रश्नः-100 प्रकृति...........................इव ?
(क) माता (ख) गृहिणी (ग) सुता (घ) नर्तकी (घ)

अध्याय–4
अलंकारशास्त्र

अलंकारशास्त्र के निम्नांकित आचार्यों का परिचय

आचार्य भरतः,अभिनवगुप्तः, मम्मटः, भामहः, विश्वनाथकविराजः, पीयूषवर्षजयदेवः, वामनः, कुन्तकः, आनन्दवर्धनः, क्षेमेन्द्रः, पण्डितराजजगन्नाथः।

1. आचार्य भरत का परिचय

- भरतमुनि का एकमात्र ग्रन्थ नाट्यशास्त्र है।
- शारिपुत्रप्रकरण नामक नाट्यशास्त्र खण्डित अवस्था में प्राप्त हुआ है, जो भरतमुनि का माना गया है।
- **न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला। नासौ योगो न तत्कर्म नाट्येऽस्मिन् यन्न** दृश्यते।। नाट्यशास्त्र के महत्व का सूचक है।
- नाट्यशास्त्र में 36 अध्याय तथा 6000 श्लोक है, इसीलिए इसे **षट्साहस्त्री संहिता** कहते है।
- रस प्रस्थान के प्रवर्तक भरतमुनि है– **विभावानुभावव्यभिचारि संयोगाद् रस निष्पत्तिः।**
  न हि रसादृते कश्चिदप्यर्थः प्रवर्तते।
- नाट्यशास्त्र पर अभिनव गुप्त ने **अभिनवभारती** नामक टीका लिखी है। जिसे **नाट्यवेदविवृत्ति** भी कहते है।
- लक्ष्मीस्वयंवर नाटक का प्रणयन, मत्स्यपुराण में वर्णित है।
- नाट्यशास्त्र का समय ई.पू. 2–3 शताब्दी माना गया है।
- रस विषयक उल्लेख नाट्यशास्त्र के छठे अध्याय में मिलता है।
- नाट्यशास्त्र में उपमा, दीपक, रूपक और यमक अलंकारों का विवेचन मिलता है।
- नाट्यशास्त्र पञ्चमवेद की संज्ञा प्राप्त एक महनीय कृति है।
- नाट्यशास्त्र में आठ रसों का उल्लेख है–**अष्टौ नाट्य रसाः।**
- जग्राह पाठ्यमृग्वेदात्सामभ्यो गीतमेव च। **यजुर्वेदादभिनयान् रसानाथर्वणादपि।।**

2. आचार्य भामह का परिचय

- अलंकार शास्त्र के प्रथम आचार्य भामह है।
- काव्यालंकार आचार्य भामह की प्रथम रचना है।
- भामह कश्मीर के रहने वाले थे, इनके पिता का नाम रक्रिल–गोमिन था।
- सार्वसर्वज्ञस्तुति के आधार पर भामह को बौद्ध माना गया है।
- आचार्य भामह का समय पाँचवी–छठी शताब्दी के मध्य निर्धारित किया है।
- काव्यालंकार में 6 परिच्छेद एवं 400 श्लोक है।

- भामह ने काव्य का लक्षण–**शब्दार्थौसंहितौ काव्यम्'** दिया है।
- वक्रोक्ति के प्रथम व्याख्याकार भामह है।
- भामह ने यह मान्यता प्रस्तुत की थी कि वक्रोक्ति के बिना अलंकार नहीं हो सकता–
  सैषा सर्वत्र वक्रोक्तिरनयार्थो विभाव्यते। यत्नोऽस्यां कविनाकार्यः कोऽलङ्कारोऽनयाविना।।
- उद्भट्ट की भामहविवरण टीका प्रसिद्ध है।
- काव्यलंकार के प्रथम परिच्छेद में–काव्यप्रयोजन, द्वितीय/तृतीय परिच्छेद में–गुणालंकारविवेचन, चतुर्थ/पञ्चम में–दोषवर्णन, षष्ठ में–शब्दशुद्धि विवेचन।
- **अलंकार का लक्षण–न कान्तमपि निर्भूषं विभाति वनिता आननम्।** आचार्य भामह ने दिया है।

3. वामनाचार्य का परिचय

- काव्यालङ्कार सूत्र के प्रणेता आचार्य वामन है।
- यह ग्रन्थ सूत्र शैली में लिखा गया है।
- यह ग्रन्थ तीन वर्गों में विभाजित है–सूत्र, वृत्ति एवं उदाहरण।
- वृत्ति को इन्होंने कविप्रिया नाम दिया है।
- काव्यालंकार सूत्र में 5 अधिकरण, 12 अध्याय एवं 319 सूत्र हैं।
- प्रथम अधिकरण – शरीर अधिकरण।
- द्वितीय अधिकरण –दोष दर्शन।
- तृतीय अधिकरण –गुण–विवेचन।
- चतुर्थ अधिकरण–आलङ्कारिक अधिकरण।
- पञ्चम अधिकरण–अधिकरण प्रायोगिक (इसमें शब्द शुद्धि का वर्णन है)
  काव्यशोभायाः कर्तारो धर्मागुणाः। तदतिशयहेतवस्त्वलङ्काराः।।
- वामन रीति सम्प्रदाय के प्रणेता है।
- इन्होंनें रीति को काव्य की आत्मा माना है–**रीति रात्माकाव्यस्य। विशिष्टापदरचनारीतिः। विशेषोगुणात्मा।**
- वामन ने उपमा को प्रमुख अलंकार माना है।
- टीकाएं–सहदेव–काव्यालंकार सूत्र वृत्ति। गोपन्द्रभूपाल–कामधेनु।
- वामन कश्मीर के रहने वाले थे। कल्हल की राजतरङ्गिणी के अनुसार वामन जयापीड़ राजा के मन्त्री थे।
- वामन का समय 8 वीं शती का उत्तरार्द्ध एवं नवीं शती का पूर्वार्द्ध।

4. आचार्य कुन्तक का परिचय

- वक्रोक्ति सम्प्रदाय के प्रणेता आचार्य कुन्तक है।
- आचार्य कुन्तक की रचना वक्रोक्तिजीवितम् है।
- राजानक की उपाधि।
- कुन्तक कश्मीर के निवासी एवं अभिनवगुप्त के समकालीन माने जाते है।
- कुन्तक का समय 10 वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध माना गया है।
- वक्रोक्तिजीवितम् ग्रन्थ में चार उन्मेष है।
- कुन्तक ने वक्रोक्ति को काव्य की आत्मा माना है।

- कुन्तक ने काव्य में वक्रोक्ति का स्वरूप बताया है—**वक्रोक्तिरेव वैदग्ध्य भङ्गीभणितिरुच्यते। वक्रोक्तिः काव्य जीवितम्।**
- कुन्तक ने वक्रोक्ति के छः भेद किये है—**1. वर्णविन्यास वक्रता। 2. पदपूर्वार्द्धवक्रता। 3. प्रत्यय वक्रता। 4. वाक्यवक्रता। 5. प्रकरणवक्रता। 6. प्रबन्ध वक्रता।** कुन्तक ने चार गुण माने है—माधुर्य, प्रसाद, लावण्य, अभिजात्या कुन्तक के अनुसार काव्य के तीन मार्ग है—वैचित्र्यमार्ग, सुकुमार मार्ग, सौकुमार्य वैचित्र्य—(मध्यम) (संवलित मार्ग)
- कुन्तक स्वाभावोक्ति को अलंकार न मानकर अलंकार्य मानते है। स्वभावोक्ति काव्य का शरीर है।
- रीति के लिए कुन्तक ने मार्ग पद का प्रयोग किया है—वैदर्भीरीति—सुकुमार मार्ग, गौड़ी रीति—विचित्र मार्ग, पाञ्चाली रीति—मध्यम मार्ग।
- प्राचीन आचार्यो ने कुन्तक को भक्तिवादी कहा है।
- ध्वनि सम्प्रदाय के विरोधी है।

काव्य प्रयोजन—(1) **चतुर्वर्गफल प्राप्तिः** (2) **व्यवहारज्ञानम्** (3) **चमत्कारस्य अनुभूतिः** (4) **अज्ञाननिवृत्तिश्च।**
काव्यलक्षण सिद्धान्त—शब्दार्थौ सहितौ वक्रकविव्यापार शालिनि। बन्धे व्यवस्थितौकाव्यं तद्विदाहलादकारिणि।।

5. आचार्य क्षेमेन्द्र का परिचय

- औचित्य विचार चर्चा के प्रणेता आचार्य क्षेमेन्द्र है।
- औचित्य सम्प्रदाय की स्थापना कवि ने की है।
- काव्य शास्त्र पर क्षेमेन्द्र की दो रचनाएं प्रसिद्ध है—औचित्य विचार चर्चा (19 कारिकाएं), कवि कण्ठा भरणम्।
- इनके अतिरिक्त 40 रचनाओं का प्रणयन किया है।
- क्षेमेन्द्र के पिता का नाम प्रकाशेन्द्र तथा पितामह का नाम सिन्धु था।
- क्षेमेन्द्र शैव परन्तु पश्चात् में वैष्णव मत को मानने वाले हो गये थे।
- इन्होंनें अपना उपनाम व्यासदास लिखा है।
- क्षेमेन्द्र ने अभिनवगुप्त को अपना गुरु माना है, बृहत्कथा मञ्जरी में यह उल्लेख है।
- इनका समय 1063—1089/1028—1063 के मध्य अनन्त तथा कलश नामक राजाओं के राज्यकाल के समक्ष माना है। 1020 से 1026 काश्मीर।
- आचार्य ने औचित्य को काव्य का सारतत्व माना है। जो वस्तु जिसके समान हो और जिनसे उनका मेल मिले, उसे कहते है—उचित और उचित का भाव ही औचित्य होता है।
- उचितं प्राहुराचार्याः सदृशं किल यस्य तत्।
  उचितस्यचयो भावस्तदौचित्यं प्रचक्षते।।
- सुवृत्ततिलकम् छन्दशास्त्र की रचना है।

6. आचार्य अभिनवगुप्त का परिचय

- अभिनवगुप्त दार्शनिक थे। इनका सम्बन्ध काश्मीर में प्रचलित शैव सम्प्रदाय से है। इन्होनें शिवाद्वैत दर्शन का प्रतिपादन किया था।
- अभिनवगुप्त के पिता नृसिंह गुप्त थे। इन्हें चुरवल भी कहा जाता है। पितामह वराहगुप्त तथा माता का नाम—विमला था।

- ईश्वरप्रत्यभिज्ञाविवृति विमर्शिणी एवं परात्रिंशिका विवरण ग्रन्थों में इनका परिचय मिलता है।
- उत्पलगुप्त द्वारा प्रतिपादित प्रत्यभिज्ञा दर्शन का विकास किया था।
- अभिनवगुप्त का समय 980 से 1010 के मध्य माना गया है।
- अभिनवगुप्त की रचनाएं—(टीकाएं) ध्वन्यालोक पर—ध्वन्यालोकलोचन टीका। नाट्यशास्त्र पर—अभिनव भारती। काव्यकौतुक पर—काव्यकौतुक विवरण।

स्रोत काव्य—	**तन्त्रकाव्य—**
भैरवस्तव	तन्त्रालोक
कर्मस्त्रोत	मालिनी विजय वार्तिक
बोध पञ्चाशिका	परात्रिंशिका विवरण।

प्रत्यभिज्ञादर्शन पर—अभिनव गुप्त ने दो टीका ग्रन्थ लिखें—ईश्वरप्रत्यभिज्ञा विमर्षिणी। प्रत्यभिज्ञाकारिकावृत्ति।

7. पण्डितराज जगन्नाथ का परिचय

- पं. जगन्नाथ की माता का नाम लक्ष्मी, पिता का नाम पेरु भट्ट था।
- पं. जगन्नाथ तैलङ्ग ब्राह्मण थे।
- पं. जगन्नाथ का जन्म दक्षिण भारत में हुआ था।
- शाहजहाँ बादशाह ने इन्हें पण्डितराज की उपाधि से अलंकृत किया है।
- पण्डितराज का समय 1628 ई. से 1666 ई. के मध्य माना गया है।
- पं. जगन्नाथ की निम्न रचनाएं (12) हैं—

अमृत लहरी	भामिनीविलास
लक्ष्मी लहरी	यमुना वर्णन चम्पू
करुणा लहरी	चित्र मीमांसा खण्डन
गङ्गा लहरी/पीयूष लहरी	मनोरमा कुच मर्दन
जगदाभरणम्	रस गंगाधर
आसफ विलास	

- रस गंगाधर में दो आनन है।
- **रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्।** यह काव्य लक्षण प्राप्त होता है।
- रस गंगाधर की टीकाएं—विषमपदी टीका। गुरुमर्म प्रकाशिका टीका।
- रस गंगाधर की शैली नव्यन्याय की है।
- बृहत्त्रयी काव्यशास्त्र में—ध्वन्यालोक—काव्यप्रकाश एवं रसगङ्गाधर को रखा गया है।
- पं. जगन्नाथ ने काव्य के चार भेद माने हैं—उत्तमोत्तम, उत्तम—मध्यम एवं अधम।

8. आनन्दवर्धनाचार्य का परिचय

- आनन्दवर्धन ध्वनि सम्प्रदाय के प्रणेता है।
- आनन्दवर्धन ने निम्नग्रन्थों की रचना की है—ध्वन्यालोक, देवीशतक, विषमबाण लीला, अर्जुन चरित, तत्वालोक (दर्शनग्रन्थ)
- राजानक की उपाधि।
- काश्मीर निवासी। समय—902 ई0।
- आनन्दवर्धन की ध्वन्यालोक पर लिखी टीका—लोचन। चन्द्रिकाकौमदी।

9. **मम्मटाचार्य का परिचय**

- राजानक की उपाधि।
- मम्मट का समय 11 वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध।
- माणिक्यचन्द्र ने 1959–60 ई. में काव्य-प्रकाश पर संकेत नाम की टीका लिखी है।
- आनन्द ने 1965 ई. में काव्य-प्रकाश पर निदर्शना नामक टीका लिखी है।
- मम्मट कश्मीर निवासी जैयट के पुत्र थे।
- रुय्यक ने अपनी संकेत टीका पर यही अभिप्राय व्यक्त किया है।
- काव्य-प्रकाश की सबसे प्राचीन टीका रुय्यक की काव्य प्रकाश संकेत टीका है।
- श्रीधर की काव्य-प्रकाश विवेक टीका।
- सोमेश्वर की काव्यादर्ण टीका।
- वाचस्पतिमिश्र की काव्य-प्रकाश दर्पण टीका।
- सरस्वती तीर्थ को नरसिंह, इनकी टीका बालचिता नुरञ्जिनी।
- कृतः श्रीमम्मटाचार्यवरैः परिकरावधिः। प्रबन्धः पूरितः शेषोविधायाल्लट सूरिणा।।
- काव्यप्रकाश पर विश्वनाथ कृत टीका है–दर्पण टीका।
- काव्यप्रकाश की सबसे नवीन टीका–बालबोधिनी/वामनाचार्य।

साहित्य दर्पण

प्रश्न 1 साहित्य दर्पण के प्रणेता है ?
उत्तर– आचार्य विश्वनाथ।
प्रश्न 2 विश्वनाथ का काल (समय) है ?
उत्तर– 13-14वीं शताब्दी।
प्रश्न 3 श्रीमन्नारायण के प्रपोत्र है ?
उत्तर– विश्वनाथ।
प्रश्न 4 श्रीमन्नारायण ने किस रस को सर्वश्रेष्ठ माना है ?
उत्तर– अद्भुत् रस।
प्रश्न 5 कवि सूक्तिरत्नाकर एवं अष्टादशभाषावार विलासिनी भुजङ्ग की उपाधि से युक्त कवि है ?
उत्तर– विश्वनाथ।
प्रश्न 6 आचार्य विश्वनाथ ने 16 भाषाओं में किस काव्य की रचना की थी ?
उत्तर– प्रशस्ति रत्नावली नामक करम्भक काव्य।
प्रश्न 7 विश्वनाथ कहाँ के निवासी थे ?
उत्तर– उत्कल प्रदेश।
प्रश्न 8 विश्वनाथ के पिता का क्या नाम था ?
उत्तर– चन्द्रशेखर।
प्रश्न 9 साहित्य-दर्पण का आरम्भ किससे होता है ?
उत्तर– वाक्यं रसात्मकं काव्यम्।
प्रश्न 10 आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पणकार की अन्य रचनाएं है ?
उत्तर– प्रभावती परिणय (नाटिका), कुवलयाश्वचरित, राघवविलास तथा प्रशस्ति रत्नावली।

प्रश्न 11 साहित्य दर्पण किसमें विभक्त है ?
उत्तर– परिच्छेद।
प्रश्न 12 साहित्य दर्पण में कितने परिच्छेद है ?
उत्तर– 10।
प्रश्न 13 साहित्य दर्पण में किस देवता की स्तुति मिलती है ?
उत्तर– सरस्वती।
प्रश्न 14 शरदिन्दुसुन्दररुचिश्चेतसिया मे गिरां देवी। अपहृत्य तमः सन्ततमर्थानखिलान्प्रकाशयतु।। प्रस्तुत कारिकांश में मङ्गलाचरण किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है ?
उत्तर– साहित्यदर्पण।
प्रश्न 15 चतुर्वर्गफलप्राप्तिः सुखादल्पधियामपि। काव्यादेव यतस्तेन तत्स्वरूपं निरूप्यते।। यहाँ विश्वनाथ का निर्देश है ?
उत्तर– काव्य प्रयोजन।
प्रश्न 16 धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च। करोति कीर्तिं प्रीति च साधुकाव्य निबन्धनम्।। प्रस्तुत काव्य प्रयोजन किस विचारक की देन है ?
उत्तर– भामह।
प्रश्न 17 नरत्वं दुर्लभं लोके विद्या तत्र सुदुर्लभा। कवित्वं दुर्लभं तत्र शक्तिस्तत्र सुदुर्लभा।। प्रस्तुत काव्य प्रयोजन में काव्य की उपादेयता किस आचार्य से सम्बन्धित है ?
उत्तर– अग्निपुराणकार।
प्रश्न 18 चतुर्वर्गफलप्राप्तिः सुखादल्पधियामपि।
काव्यादेव यतस्तेन तत्स्वरूपं निरूप्यते।। प्रस्तुत कारिकांश में यतः किसका विशेषण है ?
उत्तर– काव्य।
प्रश्न 19 त्रिवर्गसाधनं ..... ?
उत्तर– नाट्यम्।
प्रश्न 20 आचार्य विश्वनाथ ने कितने काव्य लक्षण का खण्डन किया है ?
उत्तर– चार मतों का–
(क) तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि – आचार्य मम्मट
(ख) वक्रोक्तिः काव्यजीवितम् – आचार्य कुन्तक
(ग) काव्यस्यात्माध्वनिः – आचार्य आनन्दवर्धन
(घ) रीतिरात्माकाव्यस्य – आचार्य वामन
प्रश्न 21 वाक्यं रसात्मकं काव्यम् यह काव्य लक्षण किसने दिया है ?
उत्तर– विश्वनाथ।
प्रश्न 22 आचार्य विश्वनाथ के अनुसार 'तददोषौ शब्दार्थौसगुणावनलंकृती पुनः क्वापि' आचार्य मम्मट के इस काव्य लक्षण में कौनसा दोष है ?
उत्तर– अव्याप्ति।
प्रश्न 23 न्यक्कारोह्यमेव मे यदरयस्तत्राऽप्यसौ तापसः।
सोऽप्यत्रैव निहन्ति राक्षसकुलं जीवत्यहो रावणः।।

धिग्धिक्छक्रजितं प्रबोधितवता किं कुम्भकर्णेन वा।
स्वर्गग्रामटिकाविलुण्ठन वृथौच्छूनैः किमेभिर्भुजैः।। प्रस्तुत पद्य में आचार्य विश्वनाथ के अनुसार कौनसा दोष है ?

उत्तर– अविमृष्टविधेयांश दोष।

प्रश्न 24 तददोषौ शब्दार्थों–में वर्णित अदोषौ पद में नञ् समास का प्रयोग किस अर्थ में हुआ है ?

उत्तर– ईषदर्थ में।

प्रश्न 25 वाक्यं रसात्मकं काव्यम्, दोषास्तस्यापकर्षकाः। उत्कर्षहेतवः प्रोक्ता गुणालङ्कार रीतयः।। यहाँ 'तस्य' पद किसका विशेषण है ?

उत्तर– काव्य।

प्रश्न 26 साहित्य दर्पण के प्रथम परिच्छेद को किस नाम से जाना जाता है ?

उत्तर– काव्यस्वरूप।

प्रश्न 27 स्याद्योग्यताकाङ्क्षासक्ति युक्तः पदोच्चयः लक्षण है?

उत्तर– वाक्यं।

प्रश्न 28 पदार्थानां परस्पर सम्बन्धे बाधाभाव ?

उत्तर– योग्यता।

प्रश्न 29 वह्निा सिञ्चति में किसका अभाव है ?

उत्तर– योग्यता ।

प्रश्न 30 वाक्योच्चयो ... ?

उत्तर– महावाक्यम्।

प्रश्न 31 वाक्य के कितने भेद है ?

उत्तर– 2।

प्रश्न 32 प्रयोग के योग्य, अनन्वित एक अर्थ का बोध कराने वाले वर्ण कहलाते है?

उत्तर– पद।

प्रश्न 33 अर्थ कितने प्रकार का होता है ?

उत्तर– 3।

प्रश्न 34 वाच्योऽर्थोऽभिधया बोध्यो लक्ष्यो लक्षणया मतः।
व्यङ्ग्योर्व्यञ्जनया ता स्युस्त्रिस्तः शब्दस्य शक्तयः।। प्रस्तुत कारिकांश से अभिप्रेत है ?

उत्तर– अभिधा, लक्षणा, व्यञ्जना।

प्रश्न 35 तत्र संकेतितार्थस्य बोधनादग्रिमा शब्द शक्तिः?

उत्तर– अभिधा।

प्रश्न 36 आप्तपुरुष के कथन से होता है ?

उत्तर– शक्तिग्रह।

प्रश्न 37 कवित्वबीज रूपः संस्कार विशेषः?

उत्तर– शक्तिः।

प्रश्न 38 अभिधा कितने प्रकार की होती है ?

उत्तर– तीन, रुढ़ि, योग तथा योग रुढ़ि।

प्रश्न 39 संकेत का किससे ग्रहण होता है ?

उत्तर– जाति, गुण, द्रव्य और क्रिया।

प्रश्न 40 मुख्यार्थबाधेतद्युक्तो ययाऽन्योऽर्थः प्रतीयते। रूढेः प्रयोजनाद्वाऽसौ .... शक्तिरर्पिता लक्षण है?

उत्तर– लक्षणा शब्द शक्ति।

प्रश्न 41 कलिङ्ग साहसिकः में लक्षणा है ?

उत्तर– रुढ़ि।

प्रश्न 42 उपचार वृत्ति किसको कहते है ?

उत्तर– लक्षणा शब्द शक्ति।

प्रश्न 43 लक्षणा स्वीकृति का आधार है ?

उत्तर– मुख्यार्थबाध।

प्रश्न 44 मुख्यार्थस्येतराक्षेपो वाक्यार्थेऽन्वय सिद्धये। स्यादात्मनोऽप्युपादानात् एषः ......।

उत्तर– उपादान लक्षणा।

प्रश्न 45 अर्पणं स्वस्य वाक्यार्थेपरस्यान्वय सिद्धये। उपलक्षणहेतुत्वाद् एषा ......।।

उत्तर– लक्षणलक्षणा।

प्रश्न 46 आचार्य विश्वनाथ ने लक्षणा के कितने भेद बताये है ?

उत्तर– 80

1. रूढि लक्षणा	–	कलिङ्ग साहसिकः।
2. प्रयोजनवतीलक्षणा	–	गङ्गाया घोषः।
3. रुढि उपादान लक्षणा	–	श्वेतो धावति।
4. प्रयोजनउपादान लक्षणा	–	कुन्ताः प्रविशन्ति।
5. रुढिलक्षण लक्षणा	–	कलिङ्ग साहसिकः।
6. प्रयोजनवतीलक्षण लक्षणा	–	गङ्गायां घोषः।
7. रूढि में सारोपा उपादान लक्षणा	–	अश्वः श्वेतो धावति।
8. प्रयोजन में सारोपा उपादान लक्षणा	–	ऐते कुन्ताः प्रविशन्ति।
9. रुढि में सारोपा लक्षणा	–	कलिङ्ः पुरुषो युध्यते?
10. प्रयोजन में सारोपा लक्षणा	–	आयुर्धतम्।
11. रूढि में साध्यवसाना उपादान लक्षण	–	श्वेतो धावति।
12. रूढि में साध्यवसाना लक्षणलक्षणा	–	कलिङ्ग साहसिकः।
13. प्रयोजन में साध्यवसानालक्षणा	–	गङ्गाया घोषः।
14. प्रयोजन में गौणी सारोपा लक्षण लक्षणा	–	गौर्वाहिकः।
15. प्रयोजन में गौणी साध्यवसाना लक्षण लक्षणा	–	गौर्जल्पति।

प्रश्न 47 विरतास्वभिधाद्यासु ययाऽर्थो बोध्यते परः, सा वृत्तिः–?

उत्तर– व्यञ्जना।

प्रश्न 48 गतोऽस्तमर्कः में शब्द शक्ति है ?

उत्तर– व्यञ्जना।

प्रश्न 49 शब्द एवं अर्थ में रहने वाली शब्द शक्ति है ?

उत्तर– व्यञ्जना।

प्रश्न 50 अभिधा लक्षणा तथा तात्पर्य नामक शब्द शक्ति के निवृत्त होने पर प्रवृत्त होने वाली शब्द शक्ति है?
उत्तर– व्यञ्जना।
प्रश्न 51 व्यञ्जनावृत्ति प्रधान काव्य की संज्ञा होती है ?
उत्तर– उत्तम।
प्रश्न 52 गङ्गायां घोषः में व्यंग्यार्थ है ?
उत्तर– शैत्यपावनत्व।
प्रश्न 53 प्रयोजन अर्थ को प्रकट करने वाली शब्द शक्ति है ?
उत्तर– लक्षणा शब्दशक्ति।
प्रश्न 54 विश्वनाथ के अनुसार काव्य की आत्मा है ?
उत्तर– रस।
प्रश्न 55 शाब्दी व्यञ्जना शब्द शक्ति कितने प्रकार की होती है ?
उत्तर– अभिधामूला तथा लक्षणामूला।
प्रश्न 56 अनेकार्थस्य शब्दस्य संयोगाद्यैर्नियन्त्रिते। एकत्रार्थेऽन्यधीहेतुर्व्यञ्जना सा ..... ?
उत्तर– अभिधामूला व्यञ्जना।
प्रश्न 57 अभिधामूलाव्यञ्जना की सोदाहरण प्रतीति–

1. संयोग	–	संशखचक्रो हरिः।
2. विप्रयोग	–	अशंखचक्रो हरिः।
3. साहचर्य	–	भीमार्जुनौ।
4. विरोध	–	कर्णार्जुनौ।
5. अर्थ	–	स्थाणुं वन्दे।
6. प्रकरण	–	सर्वं जानातिदेवः।
7. लिङ्ग	–	कुपितो मकर ध्वजः।
8. शब्दसन्निधि	–	देवस्यपुराराते।
9. सामर्थ्य	–	मधुना मत्तः पिकः।
10. औचिती	–	पातु वो दयितामुखम्।
11. देश	–	विभाति गगने चन्द्रः।
12. काल	–	निशिचित्रभानुः।
13. व्यक्ति	–	भांति रथाङ्गम्।

प्रश्न 58 गङ्गायां घोषः मे व्यञ्जना है ?
उत्तर– लक्षणामूला व्यञ्जना।
प्रश्न 59 लक्षणोपास्यते यस्य कृते तत्तु प्रयोजनम्। यया प्रत्यायते सा स्याद्...।
उत्तर– व्यञ्जना।
प्रश्न 60 आर्थी व्यञ्जना कितने प्रकार की होती है ?
उत्तर– 10।
प्रश्न 61 .... वृत्तिमाहुः पदार्थान्वय बोधने। तात्पर्यार्थं तदर्थं च वाक्यं तद् बोधकं परे।। रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए?
उत्तर– तात्पर्य शब्द शक्ति।

प्रश्न 62 साहित्य दर्पण के द्वितीय परिच्छेद को किस नाम से जाना जाता है ?
उत्तर– वाक्यस्वरूप निर्णय।
प्रश्न 63 विभावेनानुभावेन व्यक्तः संचारिणा तथा। रसतामेति रत्यादिः स्थायीभावः सचेतसाम्।। प्रस्तुत कारिकांश में किसका वर्णन है ?
उत्तर– रस स्वरूप।
प्रश्न 64 रस के प्रमुख अंग है ?
उत्तर– विभाव–अनुभाव तथा सञ्चारीभाव।
प्रश्न 65 विभाव के कितने भेद है ?
उत्तर– आलम्बन तथा उद्दीपन।
प्रश्न 66 अनुभाव कितने प्रकार का है ?
उत्तर– 4।
प्रश्न 67 रस सिद्धान्त के मूल प्रवर्तक है ?
उत्तर– भरतमुनि।
प्रश्न 68 विभावानुभाव व्यभिचारिसंयोगाद् रस निष्पत्तिः रस सूत्र है ?
उत्तर– भरतमुनि कृत नाट्यशास्त्र।
प्रश्न 69 गौणीलक्षणा का ज्ञान होता है ?
उत्तर– सादृश्य।
प्रश्न 70 गङ्गायां घोषः में शैत्य तथा पावनत्व की प्रतीति होती है ?
उत्तर– व्यञ्जना से।
प्रश्न 71 तथा रामायणादीनां भविता दुःखहेतुता पंक्ति ग्रहण की गई है ?
उत्तर– साहित्यदर्पण।
प्रश्न 72 संकेतित अर्थ को देने वाला शब्द कहलाता है ?
उत्तर– वाचक।
प्रश्न 73 संयोगादि के द्वारा अनेकार्थक शब्दों के वाचकत्व के नियन्त्रित होने पर वाच्यार्थ से भिन्न अर्थ की प्रतीति कराने वाला व्यापार है ?
उत्तर– व्यञ्जना।
प्रश्न 74 रसनावृत्ति का उल्लेख किया है ?
उत्तर– आचार्य विश्वनाथ।
प्रश्न 75 व्यभिचारी भावों की संख्या है ?
उत्तर– 33।
प्रश्न 76 रस को पानक रस न्याय से चर्व्यमाण स्वीकृत किया है ?
उत्तर– अभिनवगुप्त।
प्रश्न 77 रस सिद्धान्त के अन्तर्गत साधारणीकरण व्यापार का सर्वप्रथम किसने उल्लेख किया है ?
उत्तर– भट्टनायक।
प्रश्न 78 विश्वनाथ के मतानुसार काव्य शरीर में रस की क्या स्थिति होती है ?
उत्तर– आत्मवत्।
प्रश्न 79 वाक्यं रसात्मकं काव्यं इस काव्य लक्षण में रस के मध्य क्या ग्रहण किया है ?
उत्तर– रस–भाव–तदाभासादीनाम्।

प्रश्न 80 भरतमुनि के किन शब्दों पर परवर्ती आचार्यों ने व्याख्या की है ?
उत्तर– संयोग एवं निष्पत्ति।
प्रश्न 81 **स्मरण बिन्दु–**

आचार्य	सिद्धान्त	आधारित मत
भट्टलोल्लट	उत्पत्तिवाद	मीमांसा
श्री शङ्कुक	अनुमितिवाद	न्याय
भट्टनायक	भुक्तिवाद	सांख्य
अभिनवगुप्त	अभिव्यक्तिवाद	आलंकारिक

प्रश्न 82 चित्रतुरङ्न्याय से सम्बन्धित सिद्धान्त है ?
उत्तर– अनुमितिवाद।
प्रश्न 83 भट्टलोल्लट के मतानुसार संयोग व निष्पत्ति का क्या अर्थ है ?
उत्तर– संयोग का अर्थ सम्बन्ध, निष्पत्ति का अर्थ उत्पत्ति।
प्रश्न 84 श्री शङ्कुक के मतानुसार संयोग व निष्पत्ति से क्या अभिप्राय है ?
उत्तर– संयोग का अर्थ अनुमान, निष्पत्ति का अर्थ अनुमिति।
प्रश्न 85 भट्टनायक के मतानुसार संयोग एवं निष्पत्ति का क्या अर्थ है ?
उत्तर– संयोग का अर्थ भोज्य भोजक भाव एवं निष्पत्ति का अर्थ भुक्ति।
प्रश्न 86 अभिनवगुप्त के अनुसार संयोग व निष्पत्ति का अर्थ है ?
संयोग – व्यंग्यव्यञ्जक भाव
निष्पत्ति – अभिव्यक्ति।
प्रश्न 87 भट्टलोल्लट ने रस की स्थिति किसमें मानी है ?
उत्तर– नायक।
प्रश्न 88 सामाजिक रस का अनुमान करते है, यह मत है ?
उत्तर– श्री शंकुक।
प्रश्न 89 रस की उत्पत्ति के लिए अभिधा, भावकत्व एवं भोजकत्व ये तीन काव्य के व्यापार है, यह मत किसका है ?
उत्तर– भट्टनायक।
प्रश्न 90 स्थायी भाव वासनारूप में प्रेक्षक के हृदय में रहते है, यह मत है ?
उत्तर– अभिनवगुप्त।
प्रश्न 91 सत्वोद्रेकादखण्डस्वप्रकाशानन्द चिन्मयः। वेद्यान्तर स्पर्शशून्यो ब्रह्मस्वादसहोदरः।। लोकोत्तर चमत्कार प्राणः कैश्चित् प्रमातृभिः। स्वाकारवदभिन्नत्वेनायमास्वाद्यते ....।
उत्तर– रसः।
प्रश्न 92 साहित्यदर्पण के तृतीय परिच्छेद में रस निरूपण कितनी कारिकाओं के साथ अभिव्यक्त हुआ है ?
उत्तर– 29।
प्रश्न 93 साहित्यदर्पणकार के अनुसार रसों की संख्या है ?
उत्तर– 9।
प्रश्न 94 साहित्यदर्पणकार द्वारा वर्णित रसों के नाम लिखिए ?
उत्तर– शृंगारहास्यकरुणरौद्रवीर भयानकाः।
वीभत्सोऽद्भुत इत्यष्टौ रसाः शान्तस्तथा मतः।।

प्रश्न 95 नाट्यशास्त्र में रसों की संख्या कितनी है ?
उत्तर– आठ।
प्रश्न 96 शान्तोऽपि नवमो रसः मत है ?
उत्तर– आचार्य मम्मट।
प्रश्न 97 शृंग हि मन्मथोदेभदस्तदागमनहेतुकः। उत्तम प्रकृति प्रायो रसः .... इष्यते।।
उत्तर– शृंगार।
प्रश्न 98 'नायिका' शृंगार में वाञ्छित है ?
उत्तर– परकीया।
प्रश्न 99 शृंगार रस का स्थायी भाव है ?
उत्तर– रति।
प्रश्न 100 शृंगार रस का वर्ण है ?
उत्तर– श्याम।
प्रश्न 101 शृंगार रस के देवता है ?
उत्तर– विष्णु।
प्रश्न 102 'शून्यं वासगृहम्' में कौनसा रस है ?
उत्तर– शृंगार रस।
प्रश्न 103 आचार्य विश्वनाथ के अनुसार शृंगार के भेद है ?
उत्तर– 2 (संयोग तथा विप्रलम्भ)।
प्रश्न 104 संयोगकालावच्छिन्नत्वेन प्रकृष्टरति विषयः ....?
उत्तर– सम्भोगः।
प्रश्न 105 वियोगकालावच्छिन्नत्वेन ....?
उत्तर– विप्रलम्भः।
प्रश्न 106 शृंगार के संयोग तथा वियोग किस वृत्ति के भेद है ?
उत्तर– अन्तःकरण।
प्रश्न 107 विप्रलम्भ शृंगार कितने प्रकार का होता है ?
उत्तर– चार (पूर्वराग, मान, प्रवास और करुण)
प्रश्न 108 विकृताकार वाग्वेष चेष्टादेः कुहकाद्भवेत्–लक्षण है ?
उत्तर– हास्यरसः।
प्रश्न 109 हास्यरस का स्थायी भाव है ?
उत्तर– हास।
प्रश्न 110 हास्य रस का वर्ण है ?
उत्तर– श्वेत।
प्रश्न 111 हास्य रस के देवता है ?
उत्तर– प्रमथ (शिवगण)।
प्रश्न 112 हास्य रस के कितने भेद है ?
उत्तर– 6।

प्रश्न 113 गरोगिरः पञ्चदिनान्यधीत्य वेदान्तशास्त्राणि दिनत्रयं च। अमी समाघ्राय च तर्कवादान्समागताः कुक्कुट मिश्र पादाः।। प्रस्तुत पद्य में कौनसा रस है ?

उत्तर– हास

प्रश्न 114 इष्टनाशादनिष्टाप्तेः लक्षण है ?

उत्तर– करुण रस

प्रश्न 115 करुण रस का स्थायी भाव है ?

उत्तर– शोक

प्रश्न 116 करुण रस का वर्णन है ?

उत्तर– कपोत

प्रश्न 117 करुणरस के देवता है ?

उत्तर– यम

प्रश्न 118 विपिने क्व जटा निबन्धनं तव चेदं मनोहरं वपुः। अनयोर्घटना विधेः स्फुटं ननु खड्गेन शिरीषकर्तनम्।। पद्य में कौनसा रस है ?

उत्तर– करुण रस

प्रश्न 119 रौद्र रस का स्थायी भाव है ?

उत्तर– क्रोध।

प्रश्न 120 रौद्र रस का वर्ण है ?

उत्तर– लाल।

प्रश्न 121 रौद्र रस के देवता है ?

उत्तर– रूद्र

प्रश्न 122 कृतमनुमतं दृष्टंवायैरिदं गुरुपातकं में कौनसा रस है ?

उत्तर– रौद्ररस।

प्रश्न 123 उत्तमप्रकृतिः ....?

उत्तर– वीरः।

प्रश्न 124 वीर रस का स्थायी भाव है ?

उत्तर– उत्साह।

प्रश्न 125 वीर रस का वर्ण है ?

उत्तर– सुवर्ण।

प्रश्न 126 वीर रस के देवता है ?

उत्तर– महेन्द्र।

प्रश्न 127 वीर रस के कितने भेद है ?

उत्तर– 4 (दान, धर्म, युद्ध दया)

प्रश्न 128 भयानक रस का स्थायी भाव है ?

उत्तर– भय।

प्रश्न 129 भयानक रस का देवता है ?

उत्तर– काल।

प्रश्न 130 भयानक रस का वर्ण है ?

उत्तर– कृष्ण।

प्रश्न 131 नष्टं वर्षवरैः .... प्रस्तुत पद्य में कौनसा रस है ?

उत्तर– भयानक।

प्रश्न 132 ग्रीवाभङ्गाभिरामं में कौनसा रस है ?

उत्तर– भयानक।

प्रश्न 133 बीभत्स रस का स्थायीभाव है ?

उत्तर– जुगुप्सा।

प्रश्न 134 बीभत्स रस का वर्ण है ?

उत्तर– नीलवर्ण (धूम्रवर्ण)।

प्रश्न 135 बीभत्स रस के देवता है ?

उत्तर– महाकाल (कात्यायनी)।

प्रश्न 136 अद्भुत रस का स्थायी भाव है ?

उत्तर– विस्मय।

प्रश्न 137 अद्भुत रस का वर्ण है ?

उत्तर– पीतवर्ण।

प्रश्न 138 अद्भुत रस का देवता है ?

उत्तर– गन्धर्व।

प्रश्न 139 शान्त रस का स्थायी भाव है ?

उत्तर– शम।

नोट–आचार्य विश्वनाथ ने शान्तरस का स्थायी भाव 'शम' तथा अन्य मम्मटादि आचार्यों ने निर्वेद स्थायी भाव माना है।

प्रश्न 140 शान्तरस का वर्ण है ?

उत्तर– धवल (श्वेत) कुन्दपुष्पवत्।

प्रश्न 141 शान्तरस के देवता है ?

उत्तर– श्री नारायण।

प्रश्न 142 वत्सल रस का स्थायी भाव है ?

उत्तर– वात्सल्य।

प्रश्न 143 साहित्य दर्पण के तृतीय परिच्छेद को कहते है ?

उत्तर– रसादिनिरूपण।

प्रश्न 144 आचार्य विश्वनाथ के अनुसार काव्य के कितने भेद है ?

उत्तर– 2 (ध्वनि और गुणी भूत व्यंग्य)।

प्रश्न 145 उत्तम काव्य है ?

उत्तर– ध्वनिकाव्य।

प्रश्न 146 वाच्यातिशयिनि व्यङ्गये ध्वनिस्तत्काव्यम् ...... काव्य का लक्षण है ?

उत्तर– उत्तमम्।

प्रश्न 147 अपरं तु गुणीभूत व्यङ्गवाच्यादनुत्तमे व्यङ्गये। यह लक्षण किस आचार्य का है ?

उत्तर– विश्वनाथ।

प्रश्न 148 साहित्य दर्पण में ध्वनि काव्य के कितने भेद प्राप्त होते हैं ?

उत्तर– 5355।

प्रश्न 149 विश्वनाथ के अनुसार गुणीभूत व्यंग्य काव्य के कितने भेद है ?

उत्तर– 8।

प्रश्न 150 साहित्य दर्पण के पञ्चम परिच्छेद को किस नाम से जाना जाता है ?

उत्तर– व्यञ्जना व्यापार निरूपण।

प्रश्न 151 साहित्य दर्पण के षष्ठ परिच्छेद को किस नाम से जाना जाता है ?

उत्तर– दृश्य-शृव्य काव्य निरूपण।

रूपक की उत्पत्ति एवं प्रकार

प्रश्न 152 दृश्यश्रव्यत्वभेदेन ..... ?

उत्तर– काव्यम्।

प्रश्न 153 तद्रूपारोपात्तु .....?

उत्तर– रूपकम्।

प्रश्न 154 दृश्यं ......?

उत्तर– अभिनेयम्।

प्रश्न 155 अवस्थानुकारः ?

उत्तर– अभिनेयः।

प्रश्न 156 अभिनेय कितने प्रकार का होता है ?

उत्तर– 4 आङ्गिक, वाचिक, सात्विक तथा आहार्य।

प्रश्न 157 रूपक कितने है ?

उत्तर– 10।

प्रश्न 158 उपरूपक कितने है ?

उत्तर– 18।

प्रश्न 159 नाटकमथ प्रकरणं भाणव्यायोग समवकारडिमाः। ईहामृगाङ्कवीथ्यः प्रहसनमिति......दश।। रूपकाणि

उपरूपक = 18	उदाहरण
1. नाटिका	रत्नावली, विद्धशालभञ्जिका
2. त्रोटक	स्तम्भिरम्भम्, विक्रमोर्वशीयम्
3. गोष्ठी	रैवतमदनिका
4. सट्टक	कर्पूरमञ्जरी
5. नाट्यरासक	नर्मवती, विलासवती
6. प्रस्थानक	श्रृंगारतिलक
7. उल्लाप्य	देवी महादेव
8. काव्य	यादवोदयम्
9. प्रेङ्खणम्	बालिवध
10. रासक	मेनकाहितम्
11. संलापकम	मायाकापालिकम्
12. श्री गदितम्	क्रीडारसातलम्
13. शिल्पक	कनकावती माधव

14. विलासिका/विनायिका	अनुपलब्ध
15. दुर्मल्लिका	बिन्दुमती
16. प्रकरणी	अनुपलब्ध
17. हल्लीश	केलिरैवतकम्
18. भाणिका	कामदत्ता

नाटिकात्रोटकं गोष्ठी सट्टकं नाट्यरासकम् प्रस्थानोल्लाप्यकाव्यानि प्रेङ्खणं रासकं तथा।
सलापकं श्री गदितं शिल्पकं च विलासिका। दुर्मल्लिका प्रकरणी हल्लीशो भाणिकेति च।।
अष्टादश प्राहुरूपकाणि मनीषिणः। विना विशेषं सर्वेषां लक्ष्मनाटक वन्मतम्।।

नाटक का लक्षण

प्रश्न 160 नाटक का वृत्त होता है ?

उत्तर– ख्यात।

प्रश्न 161 नाटक में कितनी सन्धियाँ होती है ?

उत्तर– 5; दशकरूपक के अनुसार नाटक में मुख–प्रतिमुख–गर्भ–विमर्श– उपसंहृति (निर्वहण) ये पाँच सन्धियाँ है।

प्रश्न 162 नाटक में अंकों की संख्या कितनी मानी गई है ?

उत्तर– 5 से 10 नोट–पञ्चादिका दशपरास्तत्राङ्काः परिकीर्त्तिताः।

प्रश्न 163 नाटक में अङ्गीरस माना गया है ?

उत्तर– शृंगार एवं वीर।

प्रश्न 164 नाटक का नायक होना चाहिए ?

उत्तर– धीरोदात्त।

प्रश्न 165 गोपुच्छाग्रसमार्ग कथानक किसका होता है ?

उत्तर– नाटक।

प्रश्न 166 अङ्कोदरप्रविष्टयो रङ्गदारामुखादिमान्। अङ्कोऽपरः स..... सबीजः फल्वानपि। प्रस्तुत कारिकांश में किसका लक्षण है ?

उत्तर– गर्भाङ्क।

प्रश्न 167 यन्नाट्यवस्तुनः पूर्वं रङ्गविघ्नोपशान्तये। कुशीलवाः प्रकुर्वन्ति ..... स उच्यते।। प्रस्तुत कारिकांश में लक्षण है ?

उत्तर– पूर्वरङ्ग।

प्रश्न 168 आशीर्वचनसंयुक्ता .... ?

उत्तर– नान्दी।

प्रश्न 169 नान्दी के कितने भेद है ?

उत्तर– 2. (शुद्धा, नीली)।

प्रश्न 170 नायक के भेद है ?

उत्तर– 4 धीरोदात्त, धीरोद्धत, धीरललित तथा धीरप्रशान्त।

प्रश्न 171 त्यागी कृती कुलीनः सुश्री को रूप यौवनोत्साही। दक्षोऽनुरक्त लोकस्तेजो वैदग्ध्यशीलवान् ....।। लक्षण है।

उत्तर– नायकः।

प्रश्न 172 अविकत्थनः क्षमावानतिगम्भीरो महासत्वः। प्रस्तुतलक्षण किस कोटि के नायक को अभिव्यक्त करता है ?

उत्तर– धीरोदात्त।

प्रश्न 173 मायापरः प्रचण्डश्चपलोऽहङ्कारदर्पभूयिष्ठः। आत्मश्लाघा निरतो धीरैः किम् कथितः।। प्रस्तुत लक्षण किस कोटि के नायक को अभिव्यक्त करता है?

उत्तर– धीरोद्धतः।

प्रश्न 174 निश्चिन्तो मृदुरनिशं कलापरो स्यात्, प्रस्तुत लक्षण है?

उत्तर– धीरललितः।

प्रश्न 175 सामान्यगुणैर्भूयान् द्विजादिको, प्रस्तुत लक्षण है?

उत्तर– धीरप्रशान्तः

प्रश्न 176 सुमेलित कीजिए ?

धीरोदात्त	–	उदार प्रकृति।
धीरोद्धत	–	अविनीत प्रकृति।
धीरललित	–	मृदु प्रकृति।
धीर प्रशान्त	–	विनीत प्रकृति।

प्रश्न 177 नायक के अवान्तर भेद है ?

उत्तर– दक्षिण, दृष्ट, अनुकूल तथा शठ।

प्रश्न 178 साहित्यदर्पण में नायिका के भेद मुख्यतः कितने है ?

उत्तर– 3 (स्वकीया, परकीया तथा साधारण स्त्री)

प्रश्न 179 साहित्य दर्पण के अनुसार नायिकाओं के अवान्तर भेद सहित कुल कितने भेद प्रचलित है ?

उत्तर– 384/1152।

प्रश्न 180 साहित्य दर्पण के अनुसार नायकों के कितने भेद है ?

उत्तर– 48।

प्रश्न 181 कुसुम वसन्ताद्यभिधः कर्मवपुर्वेष भाषाद्यैः। हास्यकरः कलहरतिर्विदूषकः स्यात् स्वकर्मज्ञः।। लक्षण है?

उत्तर– विदूषक।

प्रश्न 182 संस्कृत प्रायो वाग्व्यापारो नराश्रयः। लक्षण है ?

उत्तर– भारतीवृत्ति।

प्रश्न 183 प्रस्तावना कितने प्रकार की होती है ?

उत्तर– साहित्य दर्पण के अनुसार उद्धात्यक–कथोद्धात–प्रवर्तक-संलापक और अवलगित ये प्रस्तावना के 5 भेद है।

प्रश्न 184 कथावस्तु कितने प्रकार की होती है ?

उत्तर– 2।

प्रश्न 185 अर्थोपक्षेपक कितने होते है ?

उत्तर– 5, प्रवेशक–विष्कम्भक–चूलिका–अङ्कास्य–अङ्कावतार।

प्रश्न 186 अर्थप्रकृतियाँ कितनी है ?

उत्तर– 5, बीज, बिन्दु, पताका, प्रकरी तथा कार्य लक्षणा।

प्रश्न 187 पञ्चावस्था है ?

उत्तर– आरम्भ, यत्न, प्राप्त्याशा, नियताप्ति तथा फलागमा।

प्रश्न 189 वृत्तियाँ कितनी है ?

उत्तर– 4, कैशिकी, सात्वती, आरभटी तथा भारती।

प्रश्न 190 नाटिका उपरूपक में है ?

उत्तर– नाटक तथा प्रकरण।

प्रश्न 191 अल्पमात्रं समुद्दीष्टं बहुधा यद्विसर्पति। फलस्य प्रथमो हेतुः .... तदभिधीयते।।

उत्तर– बीजं।

प्रश्न 192 अवान्तरार्थविच्छेदे ....।।

उत्तर– बिन्दुः।

प्रश्न 193 व्यापि प्रासङ्गिक वृत्तं ....।।

उत्तर– पताका।

प्रश्न 194 पताका नायक है ?

उत्तर– रामायण में सुग्रीव, वेणीसंहार में भीम, अभिज्ञानशाकुन्तलम् में विदूषक।

प्रश्न 36 प्रासङ्गिकं प्रदेशस्थं चरितं ....।

उत्तर– प्रकरी।

प्रश्न 37 नामकीर्तनम् ?

उत्तर– उद्देश्य।

प्रश्न 38 महानाटक है ?

उत्तर– बालरामायण।

2. प्रकरण

भवेत्प्रकरणे वृत्तं लौकिकं कविकल्पितम्।
शृंङ्गारोऽङ्गी नायकस्तु विप्रोऽमात्योऽथवा वणिक्।
सापायधर्म कामार्थपरो धीरप्रशान्तकः।।

- विप्रनायक – मृच्छकटिकम्।
- अमात्यनायक – मालतीमाधवम्
- वणिङ्नायक – पुष्पभूषितम्।

नायिका कुलजा क्वापि वेश्याक्वापिद्वयंक्वचित्,
तेन भेदास्त्रयस्तस्य तत्र भेदस्तृतीयकः।
कितवद्यूतकारादिविट चेट संकुलः।।

- कुलस्त्री – पुष्पभूषित।
- रङ्गवृत – वेश्या।
- मृच्छकटिक – वेश्या एवं कुलस्त्री।

प्रश्न 39 प्रकरण का नायक होता है ?

उत्तर– धीरप्रशान्त

प्रश्न 40 प्रकरण की कथावस्तु होती है ?
उत्तर– कवि कल्पित/लौकिक।

भाण रूपक

भाणः स्याद् धूर्तचरितो नानावस्थान्तरात्मकः।।
एकाङ्क एक एवात्र निपुणः पण्डितो विटः।
रङ्गे प्रकाश येत्स्वनानुभूत मितरेण वा,
संबोधनोक्ति प्रयुक्ती कुर्यादाकाशभाषितैः।
सूचयेद् वीर शृंगारौ शौर्य सौभाग्यवर्णनैः।।
तत्रेति वृत्तमुत्पाद्यं वृत्तिः प्रायेण भारती।
मुखनिर्वहणे लास्याङ्गानि दशापि च।।

प्रश्न 1 भाण का नायक होता है ?
उत्तर– धूर्त चरित्र युक्त।
प्रश्न 2 भाण में अङ्क होता है ?
उत्तर– एक।
प्रश्न 3 भाण की कथावस्तु होती है ?
उत्तर– कविकल्पित।
प्रश्न 4 आकाशभाषित द्वारा सम्बोधन होता है ?
उत्तर– भाण।
प्रश्न 5 भाणरूपक का अङ्गीरस है ?
उत्तर– शृंगार/वीर।
प्रश्न 6 लीलामधुकरम् है ?
उत्तर– भाण।
प्रश्न 7 भारतीवृत्ति का प्रयोग होता है ?
उत्तर– भाण।

4. व्यायोग

ख्यातेतिवृत्तो व्यायोगः स्वल्पस्त्रीजनसंयुतः।
हीनो गर्भ विमर्शाभ्यां नरैर्बहुभिराश्रितः।।
एकाङ्कश्च भवेद स्त्रीनिमित्त समरोदयः।
कैशिकी वृत्तिरहितः प्रख्यातस्तत्र नायकः।।
राजर्षिरथ दिव्यो वा भवेद्धीरोदत्तश्च सः।
हास्यशृंगारशान्तेभ्य इतरेऽत्राङ्गिनो रसाः।।

प्रश्न 1 व्यायोग है ?
उत्तर– रूपक
प्रश्न 2 सौगान्धिकारहरणम् रूपक है ?
उत्तर– व्यायोग

1. समवकार

वृत्तं समवकारे तु ख्यातं देवासुराश्रयम्।
सन्धयो निर्विमर्शास्तु त्रयोऽङ्कास्तत्र चादिम।।
सन्धी द्वावन्त्योस्तद्वदेक एको भवेत्पुनः।
नायका द्वादशोदात्राः प्रख्याता देवमानवाः।।
फलं पृथक्पृथक्तेषां वीरमुख्योऽखिलो रसः।
वृत्तयो मन्दकैशिक्यो नात्र बिन्दुप्रवेशकौ।।
वीथ्यङ्गानि च तत्र स्युर्यथालाभं त्रयोदश।
गायत्र्युष्णिङ् मुखान्यत्रच्छन्दांसि विविधानि।।
त्रिशृंङ्गारस्त्रि कपटः कार्यश्चायं त्रिविद्रवः।
वस्तुद्वादशनालीभिर्निष्पाद्यं प्रथमाङ्कगम्।।
द्वितीयेऽङ्के चतसृभिर्द्वाभ्यामङ्के तृतीयके।
धर्मार्थकामैस्त्रिविधः शृंङ्गारः कपटः पुनः।।
अचेतनैश्चेतनैश्च चेतनाचेतनैः कृतः।।

प्रश्न 3 समुद्रमन्थनम् है ?
उत्तर– समवकार।
प्रश्न 4 समवकार रूपक में अंक होते है ?
उत्तर– तीन।
प्रश्न 5 पञ्चरात्र है ?
उत्तर– समवकार।

2. डिम

मायेन्द्रजाल संग्रामक्रोधोद्भ्रातादिचेष्टितैः।
उपरागैश्च भूयिष्ठो डिमः ख्यातेतिवृत्तकः।।
अङ्गी रौद्ररसस्तत्र सर्वेऽङ्गानि रसाः पुनः
चत्वारोऽङ्का मता नेह विष्कम्भक प्रवेशकौ।।
नायका देवगन्धर्वयक्षरक्षो महोरगाः।
भूतप्रेत पिशाचाद्याः षोडशात्यन्तमुद्धता।।
वृत्तयः कैशिकीहीनानिविमर्शाश्च सन्धयः।
दीप्ताः स्युः षड् रसाः शान्तहास्य श्रृंगार वर्जिताः।।

प्रश्न 6 डिमरूपक में कितने अंक होते हैं ?
उत्तर– 4।
प्रश्न 7 डिमरूपक का अङ्गीरस है ?
उत्तर– रौद्र ।
प्रश्न 8 विष्कम्भक एवं प्रवेशक अर्थोपक्षेपक किस रूपक में नहीं होते ?
उत्तर– डिम।
प्रश्न 9 त्रिपुरदाह है ?
उत्तर– डिम।

3. ईहामृग

ईहामृगो मिश्रवृत्तश्चतुङ्क प्रकीर्तितः।
मुखप्रतिमुखं सन्धी तत्र निर्वहणं तथा ।
नरदिव्यावनियमौ नायक प्रतिनायकौ।
ख्यातौ धीरोद्धतावन्यो गूढभावादयुक्तलकृत्।।
दिव्यस्त्रियमनिच्छन्तीमपहारादिनेच्छतः।
शृंगारभासमप्यस्य किञ्चित्किञ्चित्प्रदर्शयेत्।।
पताकानायका दिव्या मर्त्या वापि दशोद्धताः।
युद्धमानीय सरम्भं परं व्याजान्न्विर्तते।।
महात्मानो वधप्राप्ता अपिवध्याः स्युरत्र नो।
एङ्काकोदेव एवात्र नेतेत्याहुः परे पुनः।।
दिव्यस्त्रीहेतुकं युद्धं नायकाः षडितीतरे।।

प्रश्न 10 ईहामृग में कितने अंक होते है ?
उत्तर– 4।
प्रश्न 11 कुसुमशेखरविजय रूपक है ?
उत्तर– ईहामृग।

4. अंक

उत्सृष्टिकाङ्क एकाङ्को नेतारः प्राकृता नराः।
रसोऽत्रकरुणः स्थायी बहुस्त्रीपरिदेवितम्।।
प्रख्यातमितिवृत्तं च कवि र्बुद्धया प्रपञ्चयेत्।
भाणवत् सन्धि वृत्यङ्गन्यस्मिञ्जय पराजयौ।।
युद्धं च वाचा कर्त्तव्यं निर्वेदवचनं बहु।।

प्रश्न 12 अङ्क रूपक का अङ्गीरस है ?
उत्तर– करुण रस।
प्रश्न 13 शार्मिष्ठाययाति रूपक है ?
उत्तर– अंक।

(9) वीथी–

वीथ्यामेको भवेदङ्क कश्चिदेकोऽत्र कल्प्यते।
आकाशभाषितैरूक्तैश्चित्रां प्रत्युक्तिमाश्रितः।।
सूचयेद् भूरि शृङ्गारं किञ्चिदन्यान्रसान् प्रति।
मुखनिर्वहणे सन्धी अर्थप्रकृतयोऽखिलाः।।

प्रश्न 3 मालविका रूपक है ?
उत्तर– वीथी।

(10) प्रहसन–

भाणवत्सन्धि सन्ध्यङ्ग लास्याङ्गाङ्कैः विर्निमितम्।
भवेत्प्रहसनं वृत्तं निन्द्यानां कविकल्पितम्।।
अत्र नारभटी, नापि विष्कम्भकप्रवेशकौ।
अङ्गी हास्यरसस्तत्र वीथ्यङ्गानां स्थितिर्नवा।।
तपस्विभगवद्विप्रप्रभृतिष्वत्र नायकः।
एको यत्र भवेद्धृष्टो हास्यं तच्छुद्धमुच्यते।।
आश्रित्य कञ्चनजनं सकीर्णमिति तद्विदुः।
वृत्तं बहूनां सङ्कीर्ण केचिदूचिरे।।
तत्पुनर्भवति द्वयङ्कमथवंकाङ्क निर्मितम्।।

प्रश्न 14 प्रहसन रूपक है ?
उत्तर– कन्दर्पकेलि (शुद्ध),
धूर्तचरितम् (संकीर्ण),
लटकमेलकादि (विकृत)

नाटकादिदशरूपक निरूपण आरेख

रूपक	अङ्क	नायक	कथावस्तु	श्रस
नाटक	5–10	धीरोदात्त	इतिहास प्रसिद्ध	शृंगार रस/वीर (उत्तररामचरितमंकरुण)
प्रकरण	10	धीरप्रशान्त	लौकिक एवं कवि कल्पित	शृंगार
भाण	01	विट	कविकल्पित	शृंगार/वीर
व्यायोग	01	धीरोदात्त	इतिहास प्रसिद्ध	हास्य, शृंगार एवं शान्त के अतिरिक्त अन्य रस
समवकार	03	12/देवता-मानव	इतिहास पुराणादि प्रसिद्ध	वीर
डिम	04	16 विविध	ऐतिहासिक	रौद्र
ईहामृग	04/01	1/6 विविध	ऐतिहासिक एवं कवि कल्पित	शृंगार
8 अङ्क	01	साधारण	इतिहास प्रसिद्ध	करुण
9 वीथी	01	साधारण	कविकल्पित	शृंगार
10 प्रहसनम्	01	निन्दनीय पुरूष	कविकल्पित	हास्य
नाटिका	उपरूपक 04	धीरललित	कविकल्पित (नारी-बहुल)	शृंगार

उदाहरण	प्रमुख विवरण
अभिज्ञानशाकुन्तलम्	सर्वोत्तम गुणों से युक्त
मृच्छकटिकम्	मालतीमाधवम् मन्त्री, वैश्य, ब्राह्मण नायक
लीलामधुकरम्	धूर्तचरित्र युक्त
सौगान्धिकाहरणम्	पुरुषों की अधिकता
समुद्रमन्थनम्	गायत्री उष्णिकादि
त्रिपुरदाह	मायेन्द्रजालादि युक्त
कुसुमशेखर विजय	दिव्य नायकादि के कारण कलह
शर्मिष्ठाययाति	स्त्री विलाप की अधिकता
मालविका	13 अंग
कन्दर्पकेलि	भाण एवं प्रहसन
रत्नावली	नाटक एवं प्रकरण लक्षण से युक्त

महाकाव्य के लक्षण

सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रैको नायकः सूरः।
सद्वंशः क्षत्रियों वापि धीरोदात्त गुणान्वितः।।
एकवंश भवाभूपाः कुलजा बहवोऽपि वा।।
शृंगार वीर शान्तानामेकोऽङ्गी रस इष्यते।
अङ्गनि सर्वेऽपि रसाः सर्वे नाटक सन्धयः।।
इतिहासोभ्दवं वृत्तमन्यद्वा सज्जनाश्रयम्।
चत्वारस्तस्य वर्गाः स्युस्तेष्वेकं च फलं भवेत्।
आदौ नमस्क्रियाशीर्वा वस्तुनिर्देश एव वा।।
क्वचिन्निन्दा खलादीनां सतां च गुण कीर्तनम्।।
एक वृत्तमयैः पद्यैरवसानेऽन्यवृत्तकैः।
नास्तिस्वल्पा नातिदीर्घाः सर्गा अष्टाधिका इह।।
नानावृत्तमयः क्वापि सर्गः कश्चन दृश्यते।
सर्गान्ते भाविसर्गस्य कथायाः सूचयेत् भवेत्।।
संध्या सूर्येन्दुरजनी प्रदोषध्वान्त वासराः।
प्रातर्मध्याह्न मृगयाशैलर्तु वन सागराः।।
संभोगविप्रलम्भौ च मुनि स्वर्गपुराध्वराः।
रण प्रयाणोपयम मन्त्र पुत्रोदयादयः।।
वर्णनीया यथायोगं साङ्गोपाङ्गा अमीइह।
कवेर्वृत्तस्य वा नाम्ना नायकस्येतरस्य वा।।
नामास्य सर्गोपादेय कथया सर्गनाम तु।
अस्मिन्नार्षे पुनः सर्गा भवन्त्याख्यान संज्ञकाः।।

प्राकृतैनिर्मिते तस्मिन्सर्गा आश्वाससंज्ञकाः।।
छन्दसा स्कन्धकेनैतत्क्वचिद्गलित कैरपि।।
अप्रभ्रंशनिबद्धेऽस्मिन् सर्गाः कुडवकाभिधाः।
तथापर्भंशयोग्यानिच्छान्दासि विविधान्यपि।।
भाषाविभाषानियमात्काव्यं सर्गसमुज्झितम्।
एकार्थप्रवणैः पद्यैः संधिसामग्रयवर्जितम्।।

प्रश्न 1 महाकाव्य किसमें विभक्त होता है ?
उत्तर– सर्ग।
प्रश्न 2 महाकाव्य का नायक होता है ?
उत्तर– धीरोदात्त।
प्रश्न 3 महाकाव्य का अङ्गीरस होता है ?
उत्तर– शृंगार, वीर।
प्रश्न 4 छन्दोबद्धं पदम् .... ?
उत्तर– पद्यम्।
प्रश्न 5 प्राकृत भाषा में रचित महाकाव्यों का विभाजन किसमें होता है ?
उत्तर– आश्वास।
प्रश्न 6 प्राकृत महाकाव्य में छन्द विधान है ?
उत्तर– स्कन्धक तथा गलितक।
प्रश्न 7 अपभ्रंश भाषा से निर्मित महाकाव्य में छन्द विधान हे ?
उत्तर– कुडवक।
प्रश्न 8. .... भवेत्काव्यस्यैक देशानुसारि च। लक्षण किस विधा का है?
उत्तर– खण्डकाव्यम्।
प्रश्न 9 वृत्तगन्धोज्झितं .... ?
उत्तर– गद्यम्।
प्रश्न 10 गद्य के कितने भेद होते हैं ?
उत्तर– 4, मुक्तक, वृत्तगन्धि, उत्कलिकाप्राय तथा चूर्णक।
प्रश्न 11 आचार्य विश्वनाथ के अनुसार श्रव्य काव्य कितने प्रकार का होता है ?
उत्तर– 2, गद्यकाव्य तथा पद्यकाव्य।
प्रश्न 12 सत्य कथन है ?
उत्तर– समासरहित गद्य–मुक्तक।
अल्पसमास युक्त चूर्णक।
छन्द के अंश से युक्त-वृत्तगन्धि।
दीर्घ समास युक्त-उत्कलिका प्राय।
प्रश्न 13 सरसं वस्तु गद्यैरेव विनिर्मितम्। क्वचिदत्र भवेदार्या क्वचिद्वक्तापवक्त्रके। आदौ पद्यैर्नमस्कारः खलादेर्वृत्तकीर्तनम्।। लक्षण है?
उत्तर– कथा।

प्रश्न 14 कथावत्स्यात्कवेर्वशानुकीर्तनम्। अस्यामन्य कवीनां च वृत्तं पद्यं क्वचित्क्वचित्।। कथांशानां व्यवच्छेद आश्वास इति बध्यते।
आर्यावस्त्रापवक्त्राणां छन्दसा येन क्वचित्।। अन्यापदेशेनाश्वासमुखे भाव्यर्थ सूचनम्।। लक्षण है?
उत्तर- आख्यायिका।
प्रश्न 15 गद्यपद्यकाव्यं लक्षण है?
उत्तर- चम्पू काव्य।
प्रश्न 16 देशराज चरितम् है ?
उत्तर- चम्पूकाव्य।
प्रश्न 17 गद्यपद्यमयी राजस्तुति को क्या कहा जाता है ?
उत्तर- विरुद।
प्रश्न 18 विविध भाषाओं में विरचित काव्य को कहा जाता है ?
उत्तर- करम्भक।
प्रश्न 19 विरुद काव्य का उदाहरण है ?
उत्तर- विरुदमणिमाला।
प्रश्न 20 प्रशस्तिरत्नावली है ?
उत्तर- करम्भक काव्य।
प्रश्न 21 साहित्य दर्पण के षष्ठ परिच्छेद को किस नाम से जानते है ?
उत्तर- दृश्यश्रव्यकाव्य निरूपण ।
प्रश्न 22 रस के अपकर्षक है ?
उत्तर- दोष (मुख्यार्थहतिदोषः)।
प्रश्न 29 साहित्यदर्पण के सप्तम परिच्छेद को किस नाम से जाना जाता है ?
उत्तर- दोष निरुपण।
प्रश्न 30 रसस्याङ्गित्वमाप्तस्य धर्माः शौर्यादयोः यथा ?
उत्तर- अलंकाराः।
प्रश्न 31 साहित्यदर्पण के अनुसार गुणों की संख्या है ?
उत्तर- तीन।
प्रश्न 32 चित्तद्रवीभावमयोह्लादो किसका लक्षण है?
उत्तर- माधुर्यम्।
प्रश्न 33 चित्त के विस्ताररूप दीपत्व को कौनसा गुण कहते है ?
उत्तर- ओज।
प्रश्न 34 'चित्तं व्याप्नोति यः क्षिपं शुष्केन्धनमिवानलः' किस गुण का लक्षण है ?
उत्तर- प्रसाद।
प्रश्न 35 साहित्य दर्पण के अष्टम परिच्छेद को किस नाम से जाना जाता है ?
उत्तर- गुण विवेचन
प्रश्न 36 पदसंघटना?
उत्तर- रीति।
प्रश्न 37 साहित्य दर्पण के अनुसार रीतियों की संख्या है ?
उत्तर- 4, गौड़ी, पाञ्चाली, वैदर्भी तथा लाटी।

प्रश्न 38 माधुर्यव्यञ्जकैर्वर्णै रचना ललितात्मिका। अवृत्तिरल्पवृत्तिर्वा .... रीतिरीष्यते। लक्षण किसका है?
उत्तर- वैदर्भी।
प्रश्न 39 ओजः प्रकाशकैर्वर्णैबन्ध आडम्बरः पुनः। समास बहुला रीति है ?
उत्तर- गौडी।
प्रश्न 40 वैदर्भी और पाञ्चाली के मध्य रहने वाली दोनों के कुछ लक्षणों से युक्त रीति को कहते हैं ?
उत्तर- लाटी।
प्रश्न 41 गौड़ी एवं वैदर्भी से मिश्रित रीति है ?
उत्तर- पाञ्चाली।
प्रश्न 42 साहित्यदर्पण के नवमपरिच्छेद को किस नाम से जानते हैं ?
उत्तर- रीति विवेचन।
प्रश्न 43 अलङ्कार विवेचन नामक साहित्य दर्पण का कौनसा परिच्छेद है ?
उत्तर- दशम्।
प्रश्न 44 वाग्वैदग्ध्यप्रधानेऽपि रस एवात्र जीवितम् यह उक्ति दर्पणकार ने किस ग्रन्थ से उद्धृत है?
उत्तर- वक्रोक्ति जीवितम्।
प्रश्न 45 राघवविलास रचना किसकी है?
उत्तर- विश्वनाथ।

काव्य प्रकाश

प्रश्नोत्तर-

प्रश्न 1 काव्य प्रकाश के प्रणेता कौन है ?
उत्तर- आचार्य मम्मट।
प्रश्न 2 काव्य प्रकाश किसमें विभक्त है ?
उत्तर- उल्लास।
प्रश्न 3 काव्य प्रकाश में कितने उल्लास है ?
उत्तर- 10।
प्रश्न 4 काव्य के नियमन करने वाली विद्या को कहते है ?
उत्तर- काव्यालंकार।
प्रश्न 5 इत्येतदग्निा प्रोक्तं काव्यालंकार शासनम्। न ये जानन्ति जानन्ति न ते काव्यविचारणाम्।। उपरोक्त कथन किससे सम्बन्धित है ?
उत्तर- काव्यप्रभावृत्ति।
प्रश्न 6 काव्यलंकारशास्त्र का सर्वप्रथम प्रयोग कब हुआ था ?
उत्तर- अग्निपुराण में।
प्रश्न 7 काव्यादर्श के प्रणेता कौन है ?
उत्तर- दण्डी।
प्रश्न 8 यथा सामर्थ्यमस्माभिः क्रियते काव्यलक्षणम्। यह किस ग्रन्थ से सम्बन्धित लक्षण है ?
उत्तर- काव्यादर्श।

प्रश्न 9 शासनात्?
उत्तर– शास्त्रम्।
प्रश्न 10 काव्यमीमांसा के प्रणेता कौन है ?
उत्तर– राजशेखर।
प्रश्न 11 'शब्दार्थौसंहितौ काव्यम्' काव्यलक्षण है ?
उत्तर– भामह।
प्रश्न 12 साहित्य शास्त्र का नाम है ?
उत्तर– क्रियाकल्प।
प्रश्न 13 काव्यालंकार शास्त्र का उद्‌गम ग्रन्थ है ?
उत्तर– ऋग्वेद।
प्रश्न 14 आचार्यक्षेमेन्द्र ने सुवृत्ततिलक में काव्य के कितने प्रकार बताये है ?
उत्तर– 4।
प्रश्न 15 राजानक की उपाधि से अलंकृत कवि है ?
उत्तर– मम्मट।
प्रश्न 16 आचार्य मम्मट का स्थितिकाल माना गया है ?
उत्तर– 10 वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध।
प्रश्न 17 काव्य प्रकाश में कितनी कारिकाएं हैं ?
उत्तर– 143।
प्रश्न 18 काव्य प्रकाश किस शैली में लिखित है ?
उत्तर– सूत्रशैली।
प्रश्न 19 रस सम्प्रदाय के प्रणेता कौन है ?
उत्तर– भरतमुनि।
प्रश्न 20 अलंकार सम्प्रदाय के प्रणेता कौन है ?
उत्तर– भामह ।
प्रश्न 21 रीति सम्प्रदाय के प्रणेता कौन है ?
उत्तर– वामन।
प्रश्न 22 वक्रोक्ति सम्प्रदाय के प्रणेता कौन है ?
उत्तर– कुन्तक।
प्रश्न 23 ध्वनि सम्प्रदाय के प्रवर्तक है ?
उत्तर– आनन्दवर्धन।
प्रश्न 24 औचित्य सम्प्रदाय के प्रवर्तक है ?
उत्तर– क्षेमेन्द्र।
प्रश्न 25 आचार्य मम्मट ने किसकी स्तुति की है ?
उत्तर– कवि भारति।
प्रश्न 26 कवि भारति की कितनी विशेषताओं का कवि ने उल्लेख किया है ?
उत्तर– 4।
प्रश्न 27 नियतिकृत नियम रहिता ह्लादैकमयीमनन्य परतन्त्राम्। नवरससरुचिरां निर्मितिमादधती भारती कवेर्जयति।। मङ्गलाचरण में निहित देवी है ?
उत्तर– कवि भारती।

प्रश्न 28 कवि भारती की विशेषताएं है ?
उत्तर– 1 नियतिकृतनियम रहिता 2 ह्लादैकमयी 3 अनन्य परतन्त्रा 4 नवरसरुचिरा।
प्रश्न 29 काव्य प्रकाश में मङ्लाचरण है ?
उत्तर– नमस्कारात्मक।

काव्य प्रयोजन

प्रश्न 30 काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये। सद्यः पर निवृत्तये कान्तासम्मितयोपदेश युजे।। प्रस्तुत कारिका में वर्णित है ?
उत्तर– काव्य प्रयोजन।
प्रश्न 31 आचार्य मम्मट ने काव्य के कितने प्रयोजन माने है ?
उत्तर– 6।
प्रश्न 32 कविनिष्ठ प्रयोजन है ?
उत्तर– यश, अर्थ एवं शिवेतरक्षतये।
प्रश्न 33 सहृदय निष्ठ प्रयोजन है ?
उत्तर– व्यवहारज्ञान, सद्यः पर निवृत्तयये, कान्तासम्मित उपदेश।
प्रश्न 34 कान्तासम्मितयोपदेश युजे में कान्ता शब्द किन–किन अर्थो में प्रयुक्त हुआ है ?
उत्तर– प्रभुसम्मित, सुहृत्सम्मित तथा कान्तासम्मित।
प्रश्न 35 आचार्य मम्मट के अनुसार सर्वोत्कृष्ट प्रयोजन है ?
उत्तर– सद्यः परनिवृत्ति।
प्रश्न 36 सुमेलित है–

काव्यं यशसे	–	कालिदासापदीनामिव यशः।
अर्थकृते	–	श्रीहर्षदिर्धाविकादीनामिव यशः।
व्यवहारविदे	–	राजादिगतोचिताचारपरिज्ञानम्।
शिवेतरक्षतये	–	मयूरभट्ट।

प्रश्न 37 रस प्रधान शैली है ?
उत्तर– कान्तासम्मित
प्रश्न 38 इतिहासपुराणादि की शैली है ?
उत्तर– सुहृत्सम्मित
प्रश्न 39 वेदशास्त्रादि की शैली है ?
उत्तर– प्रभु सम्मित।
प्रश्न 40 'काव्यं' सद् दृष्टादृष्टार्थं प्रीतिकीर्तिहेतुत्वात्' काव्य प्रयोजन है ?
उत्तर– आचार्य वामन।
प्रश्न 41 धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च। करोति कीर्तिं प्रीतिं च साधुकाव्य निबन्धनम्।।
उत्तर– काव्य प्रयोजन, आचार्य भामह।
प्रश्न 42 धर्मादिसाधनोपायः सुकुमार क्रमोदितः। काव्यबन्धोऽभि जातानां हृदयाह्लादकारकः।। काव्य प्रयोजन है ?
उत्तर– आचार्य कुन्तक।

प्रश्न 43 तददोषौ शब्दार्थौं सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि। उपर्युक्त काव्य लक्षण किससे सम्बन्ध रखता है ?
उत्तर– काव्यप्रकाश

प्रश्न 44 तददोषौ शब्दार्थौं सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि। यहाँ तद् शब्द से क्या अभिप्राय है ?
उत्तर– काव्य।

प्रश्न 45 तददोषौ शब्दार्थौं सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि में काव्य लक्षण है ?
उत्तर– शब्दार्थौं।

प्रश्न 46 तददोषौ शब्दार्थौं सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि में काव्य के विशेषण हैं ?
उत्तर– अदोषौ, सगुणौ, अनलंकृती पुनः क्वापि।

प्रश्न 47 तददोषौ शब्दार्थौं सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि आचार्य मम्मट के इस काव्य लक्षण का खण्डन किसने किया है ?
उत्तर– विश्वनाथ।

प्रश्न 48 यः कौमार हरः स एव हि वरस्ता एव चैत्रक्षपा, स्ते चोन्मीलित मालती सुरभयः प्रौढाः कदम्बानिलाः। सा चैवास्मि तथापि तत्र सुरत व्यापार लीला विधौ, रेवारोधसितरूतले चेतः समुत्कण्ठते।। प्रस्तुत पद्य आचार्य मम्मट के काव्य लक्षण में स्थित शब्दार्थौं के किस विशेषण को अभिव्यक्त करता है ?
उत्तर– अनलङ्कृती पुनः क्वापिः।

प्रश्न 49 रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दकाव्यम् यह काव्यलक्षण किस आचार्य ने दिया है ?
उत्तर– पं0 राज जगन्नाथ।

प्रश्न 50 काव्य केवल शब्द पर आश्रित है, यह किस आचार्य का मत है ?
उत्तर– पण्डितराज जगन्नाथ ।

प्रश्न 51 शब्दार्थौं संहितौ काव्यं गद्यं पद्यं च तद् द्विधा काव्य लक्षण किस आचार्य का है ?
उत्तर– भामह।

प्रश्न 52 शरीरं तावदिष्टार्थ व्यवच्छिन्ना पदावली काव्यलक्षण किस आचार्य का है ?
उत्तर– दण्डी।

प्रश्न 53 शब्दार्थौं संहितौ वक्रकवि व्यापार शालिनि। बन्धे व्यवस्थितौ काव्यं तद्विदाह्लादकारिणि।। काव्यलक्षण किस आचार्य से सम्बन्धित है ?
उत्तर– कुन्तक।

काव्याचार्यों के काव्य लक्षण

1. ध्वनिरात्माकाव्यस्य (आनन्दवर्धन)
2. रीतिरात्मा काव्यस्य (वामन)
3. शब्दार्थौं काव्यम् (रुद्रट)
4. अदोषौ सगुणौ सालङ्कारौ च शब्दार्थौं काव्यम् (हेमचन्द्र)
5. शब्दार्थौं निर्दोषौ सगुणौ प्रायः सालङ्कारौ च काव्यम् (वाग्भट)
6. गुणालङ्कारसहितौ शब्दार्थौं दोषवर्जितौ (विद्यानाथ)
7. शब्दार्थौवपुरस्य तत्र विबुधैरात्माभ्यधायि ध्वनिः। (विद्याधर–एकावली)

प्रश्न 54 'औचित्य' को काव्यलक्षण किस आचार्य ने माना है ?
उत्तर– क्षेमेन्द्र।

प्रश्न 55 काव्य शब्दोऽयं गुणालङ्कार संस्कृतयोः शब्दार्थयोर्वतेते। काव्यलक्षण है ?
उत्तर– वामन।

प्रश्न 56 काव्य हेतु है ?
उत्तर– शक्ति, निपुणता तथा अभ्यास।

प्रश्न 57 शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्र काव्याद्यवेक्षणात्। काव्यज्ञ शिक्षाभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे।। प्रस्तुत कारिकांश में वर्णन है ?
उत्तर– काव्य हेतु।

प्रश्न 58 आचार्य मम्मट के काव्य हेतु पर किस आचार्य का प्रभाव रहा है ?
उत्तर– रुद्रट।

प्रश्न 59 शक्ति काव्य हेतु को अन्य किस नाम से जाना जाता है ?
उत्तर– प्रतिभा।

प्रश्न 60 निपुणता काव्य हेतु को किस नाम से जाना जाता है ?
उत्तर– व्युत्पत्ति।

प्रश्न 61 हेतुस्तदुद्भवे से अभिप्रेत है ?
उत्तर– शक्ति, निपुणता तथा अभ्यास।

प्रश्न 62 कवित्व का बीजभूत संस्कार है ?
उत्तर– शक्ति।

काव्य भेद

प्रश्न 63 आचार्य मम्मट ने काव्य के कितने भेद माने हैं ?
उत्तर– 3।

प्रश्न 64 वाच्यार्थ की अपेक्षा व्यङ्ग्यार्थ के अधिक चमत्कार युक्त होन पर आचार्य मम्मट के किस काव्य भेद का लक्षण है ?
उत्तर– उत्तम काव्य।

प्रश्न 65 इदमुत्तममतिशयिनि व्यङ्गये वाच्याद् ध्वनि बुधैः कथितः। यहाँ 'इदम्' पद का क्या अभिप्राय है ?
उत्तर– काव्य।

प्रश्न 66 इदमुत्तममतिशयिनि व्यङ्ग्ये वाच्याद् ध्वनि बुधैः कथितः। यहाँ बुधैः किसके लिए प्रयुक्त है ?
उत्तर– वैयाकरण।

प्रश्न 67 वैयाकरणों के अनुसार शब्द है ?
उत्तर– नित्य।

प्रश्न 68 निः शेषच्युत चन्दनं निमृष्ट रागोऽधरो, नेत्रे दूरमञ्जने पुलकिता तन्वी तवेयं तनुः। मिथ्यावादिनी दूति बान्धवजनस्याज्ञात पीडागमें, वापीं स्नातुंमितो गतासि न पुनस्तस्याधमस्यान्तिकम्।। प्रस्तुत पद्य में व्यग्यार्थ की अभिव्यक्ति किस काव्य से हो रही है ?
उत्तर– अधम।

प्रश्न 70 अतादृशि गुणीभूत व्यङ्ग्यं तु किस काव्य का लक्षण है?

उत्तर– मध्यम काव्य।

प्रश्न 71 ग्राम तरुणं तरुण्या नववञ्जुल मञ्जरी सनाथकरम्। पश्यन्त्या भवति मुहुर्नितरां मलिना मुखच्छाया।। प्रस्तुत उदहारण में कौनसा काव्य है ?

उत्तर– गुणीभूतव्यङ्ग्यकाव्य।

प्रश्न 72 शब्द चित्रं वाच्य चित्रमव्यङ्गयं ...... ?

उत्तर– अवरं काव्यम्।

प्रश्न 73 स्वच्छन्दोच्छलदच्छकच्छ कुहरच्छातेतराम्बुच्छटा. प्रस्तुत पंक्ति किस काव्य से सम्बन्धित है ?

उत्तर– शब्दचित्रण काव्य।

प्रश्न 74 विनिर्गतंमानदमात्ममन्दिराद्, भवत्युपश्रुत्य यदृच्छयापि यम्। ससम्भ्रमेन्दु द्रुत पातितार्गला, निमीलिताक्षीव भियारामरावती। प्रस्तुत पद्य में काव्य का कौनसा भेद है ?

उत्तर– अर्थ चित्र।

प्रश्न 75 काव्य प्रकाश के प्रथम उल्लास को जिस नाम से जाना जाता है ?

उत्तर– काव्य के प्रयोजन, कारण तथा स्वरूप विशेष का निर्णय।

प्रश्न 76 सुमेलित है–

1. ध्वनिकाव्य – उत्तम काव्य।
2. मध्यम काव्य – गुणीभूत व्यङ्ग्य काव्य।
3. अधम काव्य – चित्रकाव्य।

प्रश्न 77 काव्य प्रकाश के द्वितीय उल्लास को किस नाम से जाना जाता है ?

उत्तर– शब्दार्थस्वरूप निर्णय।

प्रश्न 78 'स्याद्वाचको लाक्षणिकः शब्दोऽत्र व्यञ्जकस्त्रिधा' प्रस्तुत कारिका में आचार्य मम्मट ने किसका स्वरूप वर्णित किया है ?

उत्तर– शब्दार्थस्वरूप निर्णय।

प्रश्न 79 शब्द के तीन भेद कौन–कौनसे है ?

उत्तर– वाचक, लाक्षणिक एवं व्यञ्जक।

प्रश्न 80 उपाधि भेद से अर्थ के कितने भेद होते हैं ?

उत्तर– तीन (वाच्य–लक्ष्य–व्यंग्य)।

प्रश्न 81 अर्थ का चतुर्थभेद है ?

उत्तर– तात्पर्यार्थ।

प्रश्न 82 सुमेलित है–?

उत्तर– व्याकरण–पदशास्त्र, न्याय–प्रमाण शास्त्र, मीमांसा–वाक्य शास्त्र, काव्य हेतु–शक्ति।

प्रश्न 83 अभिहितान्वयवादी है ?

उत्तर– पार्थसारथी/कुमारिलभट्ट।

प्रश्न 84 अन्विताभिधानवादी है ?

उत्तर– प्रभाकर गुरु/शालिकनाथ।

प्रश्न 85 मीमांसक कौनसी शब्द शक्ति को नहीं मानते है ?

उत्तर– व्यञ्जना।

प्रश्न 86 तौतातिक मत है ?

उत्तर– कुमारिल भट्ट का।

प्रश्न 87 तात्पर्यार्थोऽपि केषुचित् यहाँ केषुचित् है ?

उत्तर– अभिहितान्वयवादी।

प्रश्न 88 आकाङ्क्षा–योग्यता–सन्निधिवशाद् वक्ष्यमाणास्वरूपाणां पदार्थानां समन्वये तात्पर्यार्थो वाक्यार्थः समुल्लतीति?

उत्तर– अभिहितान्वयवादिनां।

प्रश्न 89 वाच्य एव वाक्यार्थ इति?

उत्तर– अन्विताभिधानवादिनः।

प्रश्न 90 'वह्निना सिञ्चति' वाक्य में किसका अभाव है ?

उत्तर– योग्यता ।

प्रश्न 91 आकांक्षा–योग्यता–सन्निधि से युक्त पद समुदाय होता है, वह कहलाता है ?

उत्तर– वाक्य।

प्रश्न 92 पूर्व में पदों से केवल अन्वित पदार्थ उपस्थित होते है, उसके वाक्य पदों की आकांक्षा–योग्यता तथा सन्निधि के बल से तात्पर्य शक्ति द्वारा उन पदार्थों के परस्पर सम्बन्ध रूप वाक्यार्थ का बोध होता है?

उत्तर– अभिहितान्वयवाद।

प्रश्न 93 साक्षात्संकेतित योऽर्थमभिधत्ते स.....?

उत्तर– वाचकः।

प्रश्न 94 संकेतित अर्थ कितने प्रकार का होता है ?

उत्तर– 4।

प्रश्न 95 संकेतित अर्थ है ?

उत्तर– जाति, गुण, क्रिया तथा यदृच्छा।

प्रश्न 96 स मुख्योऽर्थस्तत्र मुख्यो व्यापारोऽस्योच्यते ?

उत्तर– अभिधा।

प्रश्न 97 मीमांसक मतानुसार संकेत ग्रह है ?

उत्तर– जाति।

प्रश्न 98 उपर्युक्त स मुख्योऽर्थस्तत्र मुख्योव्यापारोऽस्योच्यते में स पद से क्या अभिप्रेत है ?

उत्तर– संकेतित अर्थ।

प्रश्न 99 अग्रिमा शब्द शक्ति है ?

उत्तर– अभिधा।

प्रश्न 100 कल्पित व्यापार है ?

उत्तर– लक्षणा।

प्रश्न 101 लक्षणाशब्द शक्ति के हेतु है ?

उत्तर– मुख्यार्थबाध, मुख्यार्थयोग तथा रूढितोऽथप्रयोजनात्।

प्रश्न 102 मुख्यार्थबाधे तद्योगे रूढितोऽथ प्रयोजनात्। अन्योऽर्थोलक्ष्यते यत् सा.....।।

उत्तर– लक्षणारोपिता क्रिया

प्रश्न 103 रूढिलक्षणा का उदाहरण है ?

उत्तर– कर्मणिकुशलः।

प्रश्न 104 स्वसिद्धयेपराक्षेपः ?

उत्तर– उपादान लक्षणा।

प्रश्न 105 परार्थं स्वसमर्पणम् ?

उत्तर– लक्षण लक्षणा

प्रश्न 106 कुन्ताः प्रविशन्ति में लक्षणा है ?

उत्तर– उपादान लक्षणा।

प्रश्न 107 गङ्गायां घोषः में शब्द शक्ति है ?

उत्तर– प्रयोजनवती लक्षणा।

प्रश्न 108 शुद्धा लक्षणा के भेद कौन–कौन से हैं ?

उत्तर– उपादान लक्षणा तथा लक्षण लक्षणा।

प्रश्न 109 उपचार रहित लक्षणा कहलाती है ?

उत्तर– शुद्धा।

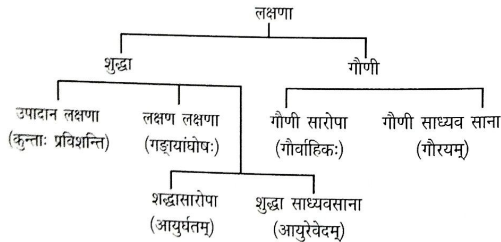
प्रश्न 110 उपचार युक्त लक्षणा शब्द शक्ति है ?

उत्तर– गौणी।

प्रश्न 111 आचार्य मम्मट के अनुसार लक्षणा के कितने भेद है ?

उत्तर– 6

भेद विवेचन निम्ननारेख से



प्रश्न 112 जहाँ आरोप्यमाण (उपमान) तथा आरोप विषय (उपमेय) दोनों शब्दतः कथित हो तो वहाँ लक्षणा होती है ?

उत्तर– सारोपा गौणी।

प्रश्न 113 विषय्यन्तः कृतेऽन्यस्मिन् सा स्यात् ?

उत्तर– साध्यवसानिका।

प्रश्न 114 सुमेलित है ?

उत्तर– गौणी सारोपा – गौर्वाहिकः।

गौणी साध्यवसाना – गौरयम्।

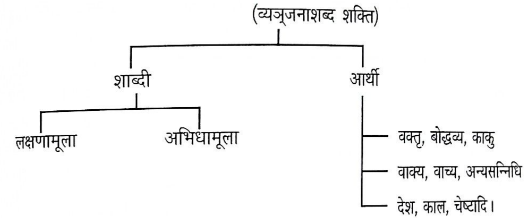
शुद्धासारोपा – आयुर्धृतम्।

शुद्धासाध्यवसाना – आयुरेवेदम्।

प्रश्न 115 शैत्य पावनत्व रूप व्यग्यार्थ को बोधित करने वाली शब्द शक्ति कहलाती है ?

उत्तर– व्यञ्जना।

प्रश्न 116 व्यञ्जना शब्द शक्ति की भेद प्रक्रिया को स्पष्ट कीजिए ?



प्रश्न 117 अनेकार्थस्य शब्दस्य वाचकत्वे नियन्त्रिते। संयोगाद्यैर वाच्यार्थधीकृद् व्यापृतिरञ्जनम्।। प्रस्तुत कारिकांश में कौनसी शब्द शक्ति है ?

उत्तर– लक्षणामूला।

प्रश्न 118 सत्य कथन है–

उत्तर– 1. संयोग–सशङ्खचक्रोहरिः।

2. विप्रयोग–अशङ्खचक्रोहरिः।

3. साहचर्य–रामलक्ष्मणौ।

4. विरोधिता–रामार्जुनगतिस्तयोः।

5. अर्थ–स्थाणु भज भवच्छिदे।

6. प्रकरण–सर्व जानाति देवः।

7. लिङ्ग–कुपितोमकरध्वजः।

8. अन्य शब्द की सन्निधि–देवस्य पुराराते।

9. सामर्थ्य–मधुनामत्त कोकिलः।

10. औचिती–पातुं वो दयिता मुखम्।

11. देश–भात्यत्रपरमेश्वरः।

12. काल–चित्रभानुर्विभाति।

13. व्यक्ति–भातिरथाङ्गम्।

14. स्वर–उदात्त, अनुदात्त, स्वरित।

प्रश्न 119 आर्थी व्यञ्जना कितने प्रकार की होती है ?
उत्तर– 10।

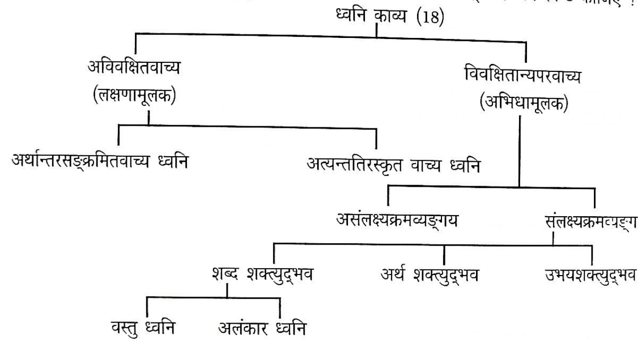
प्रश्न 120 काव्य प्रकाश में तृतीय उल्लास को किस नाम से जाना जाता है ?
उत्तर– अर्थ व्यञ्जकतानिर्णय।

प्रश्न 121 उत्तम काव्य के मम्मटानुसार कितने भेद है ?
उत्तर– 3।

प्रश्न 122 काव्य प्रकाश के तृतीय उल्लास में किसका वर्णन है ?
उत्तर– आर्थी व्यञ्जना।

प्रश्न 123 काव्य प्रकाश के चतुर्थ उल्लास को किस नाम से जाना जाता है ?
उत्तर– ध्वनि निर्णय।

प्रश्न 124 आचार्य मम्मट के अनुसार ध्वनि काव्य का भेदोपभेद आरेख से अठ्ठारह भेद स्पष्ट कीजिए ?



प्रश्न 125 त्वामस्मि वच्मि विदुषां समवायोऽत्र तिष्ठति। आत्मीयाँमतिमास्थाय स्थितिमत्र विधेहि तत्।। प्रस्तुत पद्य में ध्वनि है ?
उत्तर– अर्थान्तरसंक्रमित वाच्य ध्वनि।

प्रश्न 126 उपकृतं बहुतत्र किमुच्यते, सुजनता प्रथिता भवता परम्। विदधदीदृश मेव सदा सखे, सुखितमास्व ततः शरदा शतम्।। प्रस्तुत पद्य किस ध्वनि भेद का उदाहरण है ?
उत्तर– अत्यन्ततिरस्कृतवाच्यध्वनि।

प्रश्न 127 'ध्वनिगुणीभूतव्यङ्गय सङ्कीर्ण भेद निर्णय' काव्य प्रकाश के किस उल्लास को जाना जाता है ?
उत्तर– पञ्चम उल्लास।

प्रश्न 128 गुणीभूत व्यङ्गय काव्य के कितने भेद है ?
उत्तर– 8।

प्रश्न 129 रस, वस्तु तथा अलंकार किसके भेद है ?
उत्तर– व्यङ्य।

प्रश्न 130 अदृष्टे दर्शनोत्कण्ठा दृष्टे विच्छेद भीरूता। नादृष्टेन न दृष्टेन भवता लभ्यते सुखम्।। उपयुक्त उदाहरण में व्यङ्य है ?
उत्तर– अस्फुट व्यङ्गय काव्य।

प्रश्न 131 गुणीभूत व्यङ्य काव्य के आठ भेदों का नामोल्लेख कीजिए ?
उत्तर– (1) अगूढ़ (2) अपराङ्ग (3) वाच्यसिद्धि (4) अस्फुट (5) सन्दिग्धप्रधान्य (6) तुल्य प्राधान्य (7) काक्वाक्षिप्त (8) असुन्दर।

प्रश्न 132 शब्दार्थचित्र निरूपणं काव्य प्रकाश के किस उल्लास को जाना जाता है ?
उत्तर– षष्ठ।

प्रश्न 133 .... यत्पूर्वं काव्यद्वयमुदाहृतम्। गुणप्राधान्यतस्तत्र स्थितिश्चित्रार्थ शब्दायोः।।
उत्तर– शब्दार्थ चित्रम्।

प्रश्न 134 प्रथमम‍रुणच्छायस्तावत्ततः कनकप्रभः .... प्रस्तुत उदाहरण है ?
उत्तर– शब्दचित्रकाव्य।

प्रश्न 135 ते दृष्टिमात्रपतिता अपि कस्य नात्र .... प्रस्तुत उदाहरण है ?
उत्तर– अर्थचित्र काव्य।

प्रश्न 136 काव्य प्रकाश के सप्तम उल्लास को किस नाम से जाना जाता है ?
उत्तर– अर्थचित्र काव्य।

प्रश्न 137 मुख्यार्थहतिः ....।
उत्तर– दोषः।

प्रश्न 138 काव्य प्रकाश के अष्टम उल्लास को किस नाम से जाना जाता है ?
उत्तर– गुणालंकार भेद नियत गुण।

रस स्वरूप एवं रस सूत्र विमर्श

प्रश्न 139 कारणान्यथकार्याणि सहकारीणि यानि च, रत्यादेः स्थायिनो लोके तानि चेन्नाट्यकाव्ययोः। विभावा अनुभावास्तत् कथ्यन्ते व्यभिचारिणः, व्यक्तः स तैः विभावाद्यैः स्थायी भावो कः स्मृतः।। लक्षण है?
उत्तर– रसः।

प्रश्न 140 विभावादि के द्वारा अभिव्यक्त रत्यादि स्थायीभाव को रस किसने माना है ?
उत्तर– आचार्य मम्मट।

प्रश्न 141 विभावानुभाव व्यभिचारिभावसंयोगदृसनिष्पत्तिः यह कथन किस आचार्य का है ?
उत्तर– भरतमुनि।

प्रश्न 142 नाट्यशास्त्र में स्थायी भाव की संख्या है ?
उत्तर– 8।

प्रश्न 143 निर्वेदस्थायिभावोऽस्ति शान्तोऽपि नवमोरसः कारिकांश है ?
उत्तर– काव्यप्रकाश।

प्रश्न 144 लोकजीवन में नायक–नायिका को देखकर प्रेम अंकुरित होता है, इसलिए वे रति आदि की उत्पत्ति के कारण कहे गये है। काव्य और नाट्य में ये कहलाते है ?
उत्तर– विभाव।

प्रश्न 145 विभाव कितने प्रकार के होते है ?
उत्तर– आलम्बन तथा उद्दीपन विभाव के भेद से 2 प्रकार।

प्रश्न 146 संचारी भावों की संख्या कितनी है ?
उत्तर– 33।

प्रश्न 147 भरतमुनि के रससूत्र में वर्णित किन–किन शब्दों पर परवर्ती आचार्यों ने व्याख्या की है ?
उत्तर– संयोग तथा निष्पत्ति।
प्रश्न 148 उत्पत्तिवादी आचार्य है ?
उत्तर– भट्टलोल्लट।
प्रश्न 149 भट्टलोल्लट का मत किस नाम से प्रसिद्ध है ?
उत्तर– आरोपवाद, उत्पत्तिवाद।
प्रश्न 150 वेदान्तवादी सिद्धान्त के मीमांसक पण्डित थे ?
उत्तर– भट्टलोल्लट।
प्रश्न 151 श्री शंकुक का सिद्धान्त है ?
उत्तर– अनुमितिवाद।
प्रश्न 152 श्री शंकुक का अनुमितिवाद किस दर्शन का अनुसरण करता है ?
उत्तर– न्याय।
प्रश्न 153 चित्रतुरंग न्याय से सम्बन्धित सिद्धान्त है ?
उत्तर– श्री शंकुक का अनुमितिवाद।
प्रश्न 154 भट्टलोल्लट की मान्यता है ?
उत्तर– क. विभाग के साथ स्थायिभाव का 'संयोग' अर्थात् उत्पाद्य–उत्पादक भाव सम्बन्ध होने पर रस की निष्पत्ति अर्थात् उत्पत्ति।
ख. अनुभावों के साथ 'संयोग' अर्थात् गम्यगमक भाव सम्बन्ध होने पर रस की निष्पत्ति अर्थात प्रतीति।
ग. व्यभिचारिभावों के साथ पोष्य पोषक भाव सम्बन्ध होने पर रस की निष्पत्ति अर्थात् पुष्टि।
प्रश्न 155 विभावानुभाव व्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः में आचार्य ने संयोग और निष्पत्ति का क्या अर्थ बताया है ?
उत्तर– संयोग–गम्यगमकभाव, निष्पत्ति–अनुमिति।
प्रश्न 156 भट्टनायक ने अपने सिद्धान्त को क्या नाम दिया है ?
उत्तर– भुक्ति।
प्रश्न 157 भट्टनायक के अनुसार वास्तविक रसानुभूति किसको होती है ?
उत्तर– सामाजिक।
प्रश्न 158 भट्टनायक ने किन–किन आचार्यों के मतों की आलोचना की है ?
उत्तर– भट्टलोल्लट, भट्टनायक, अभिनवगुप्त।
प्रश्न 159 'साधारणीकरण सिद्धान्त' के जनक है ?
उत्तर– भट्टनायक।
प्रश्न 160 श्री भट्टनायक का भुक्तिवाद किस सिद्धान्त पर आधारित है ?
उत्तर– सांख्यसिद्धान्त।
प्रश्न 161 आलंकारिक मत है ?
उत्तर– अभिनवगुप्त का अभिव्यक्तिवाद।
प्रश्न 162 अभिनवगुप्त के अभिव्यक्तिवाद में संयोग एवं निष्पत्ति का क्या अर्थ है ?
उत्तर– संयोग–अनुमाप्य–अनुमापक भाव, निष्पत्ति–अनुमिति।

प्रश्न 163 अभिनवगुप्त के मतानुसार रस है ?
उत्तर– अलौकिक।
प्रश्न 164 अभिनवगुप्त के अनुसार रस राज है ?
उत्तर– शान्तरस।
प्रश्न 165 शान्त रस के प्रबल विरोधी है ?
उत्तर– धनञ्जय।
प्रश्न 166 शृंगार हास्यकरुणरौद्रवीर भयानकाः। बीभत्सादूभुत संज्ञौ चेत्यष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः।। प्रस्तुत कारिकांश से सम्बन्धित आचार्य है ?
उत्तर– भरतमुनि।
प्रश्न 167 तदाभासा अनौचित्यप्रवर्तिताः प्रस्तुत कारिकांश में तदाभास शब्द से अभिप्रेत है ?
उत्तर– रसाभास और भावाभास।
प्रश्न 168 शून्यं वासगृहं विलोक्य। पद्य में कौनसा रस है ?
उत्तर– शृंगार रस।
प्रश्न 169 आचार्य मम्मट के अनुसार विप्रलम्भ शृंगार के भेद है ?
उत्तर– 5, अभिलाष, ईर्ष्या, विरह, प्रवास तथा शाप।
प्रश्न 170 हा मातस्त्वरिताऽस्ति–पंक्ति में रस है ?
उत्तर– करुण रस।
प्रश्न 171 आकुञ्च्यपाणिमशुचिं मम मूर्ध्नि वेश्या .... पद्य में रस है ?
उत्तर– हास्य रस।
प्रश्न 172 ग्रीवा भङ्गाभिरामं मुहुरनुपतति स्यन्दने बद्धदृष्टिः–पद्य में रस है ?
उत्तर– भयानक रस।
प्रश्न 173 अहौ वा हारे वा कुसुमशयने वा दृषदि वा–पद्य में रस है ?
उत्तर– शान्त रस।

रस दोष

प्रश्न 174 आचार्य मम्मट के अनुसार रस दोष कितने है ?
उत्तर– 13, 1. व्यभिचारिभावरस दोष, 3. रस का स्वशब्दवाच्य कथन दोष, 3. स्थायिभावों का स्वशब्द द्वारा कथन, 4. विभाव, 5. अनुभाव, 6. प्रतिकूल विभावादि का ग्रहण, 7. रस की पुनः पुनः दीप्ति रस दोष, 8. अनवसर पर रस का विस्तार, 9. रसच्छेद, 10. अंग अप्रधान रस का अधिक विस्तृत, 11. प्रधान रस का विस्मरण, 12. प्रकृति विपर्ययय, 13. अनंग (प्रकृतरस का अनुपकारक)।
प्रश्न 175 सव्रीडा दयितानने सकरुणा मातङ्ग चर्माम्बरे–पद्य में रस दोष है ?
उत्तर– व्यभिचारिभाव की स्वशब्दवाच्यता रस दोष।
प्रश्न 176 तामनङ्गजयमङ्गलश्रियं–पद्य में रस दोष है ?
उत्तर– रस की स्वशब्दवाच्यता रस दोष।
प्रश्न 177 सम्प्रहारे प्रहरणैः प्रहाराणां परस्परम्। ठणत्कारैः श्रुतिगतैरुत्साहस्तस्यकोऽप्य भूत्।। पद्य में रस दोष है?
उत्तर– स्थायीभाव की स्वशब्दवाच्यता रस दोष।

प्रश्न 178 कर्पूरधूलिधवलद्युतिपुर धौत–पद्य में रस दोष है ?

उत्तर– अनुभाव की क्लिष्ट कल्पना रस दोष।

प्रश्न 179 परिहरति रतिं मतिं लुनीते स्खलति–पद्य में रस दोष है ?

उत्तर– विभाव की स्वशब्दवाच्यता रस दोष।

प्रश्न 180 न मुग्धे ! प्रत्येतुं प्रभवति गतः काल हरिणः–पद्य में रस दोष है ?

उत्तर– प्रतिकूल विभावादि का ग्रहण रस दोष।

प्रश्न 181 दीप्तिः पुनः पुनः यथा कुमारसम्भवे रति विलापे पंक्ति में रस दोष है ?

उत्तर– रस का पुनः पुनः दीप्ति रस दोष।

प्रश्न 182 वीर क्षये प्रवृत्ते भानुमत्या सह दुर्योधनस्य श्रृंगार वर्णनम्–पंक्ति में रस दोष है ?

उत्तर– अकाण्ड का रस दोष।

प्रश्न 183 अकाण्डे छेदो यथा वीरचरिते द्वितीयेङ्के–पंक्ति में रस दोष है ?

उत्तर– अकाण्डच्छेद रस दोष ।

प्रश्न 184 अंगस्याप्रधानस्यातिविस्तरेण वर्णनं–पंक्ति में रस दोष है ?

उत्तर– अप्रधान रस का अतिविस्तार।

प्रश्न 185 अंगिनोऽननुसन्धानं यथा रत्नावल्यां चतुर्थेऽङ्के वाभ्रव्यागमने सागरिकाया विस्मृतिः। यहाँ रस दोष है?

उत्तर– प्रधान नायकादि का विस्मरण रस दोष।

प्रश्न 186 आचार्य मम्मट के अनुसार नायक के भेद है ?

उत्तर– 36।

प्रश्न 187 जहाँ पर औचित्य का परित्याग कर प्रकृति के विपरीत वर्णन किया जाता है, वहाँ रस दोष होता है?

उत्तर– प्रकृति विपर्यय।

प्रश्न 188 नायिकया स्वात्मना च कृतं वसन्तवर्णनमनादृत्यवन्दि वर्णितस्य राज्ञा प्रशंसनम्। पंक्ति में रस दोष है?

उत्तर– प्रकृत रस के अनुपकारक का कथन।

प्रश्न 189 आचार्य मम्मट के अनुसार नवम उल्लास में किसका वर्णन है ?

उत्तर– शब्दालंकार विवेक।

प्रश्न 190 आचार्य मम्मट के अनुसार दशम उल्लास को किस नाम से जाना जाता है ?

उत्तर– अर्थालंकार निरूपण।

प्रश्न 191 आचार्य मम्मट के मतानुसार शब्दालंकार कितने है ?

उत्तर– 6।

प्रश्न 192 आचार्य मम्मट के मतानुसार अर्थालंकारों की संख्या है ?

उत्तर– 61।

प्रश्न 193 ये रसस्याङ्गिनो धर्माः शौर्यादयः इवात्मनः। उत्कर्षहेतवस्ते स्युश्चलास्थितयो –।। लक्षण है?

उत्तर– गुणाः।

प्रश्न 194 उपकुर्वन्ति तं सन्तं येऽङ्गद्वारेण जातुचित्। हारादिवदलङ्कारास्तेऽनुप्रासोपमादयः।। कारिकांश उद्धृत है ?

उत्तर– काव्यप्रकाश।

प्रश्न 195 आचार्य मम्मट के अनुसार काव्य गुण है ?

उत्तर– 3।

प्रश्न 196 आचार्य वामन के काव्य गुण माने है ?

उत्तर– 10।

प्रश्न 197 आह्लादकत्वं .... श्रृंगारे द्रुति कारणम्। किस गुण का लक्षण है?

उत्तर– माधुर्य गुणः।

प्रश्न 198 माधुर्य गुण की सत्ता किन–किन रसों में होती है ?

उत्तर– श्रृंगार, करुण, शान्त।

प्रश्न 199 दीप्त्यात्मक विस्तृते हेंतुः .... वीर रस स्थितिः किस गुण की परिभाषा है?

उत्तर– ओज गुण।

प्रश्न 200 शुष्केन्धनाग्निवत् स्वच्छजलवत्सहसैव यः में किस गुण का लक्षण है?

उत्तर– प्रसादगुण।

प्रश्न 201 पण्डितराज जगन्नाथ ने आचार्य मम्मट के किस पर आपत्ति प्रस्तुत की है ?

उत्तर– शब्दार्थौ।

रस विवेचन (आरेखानुसार)

क्र.सं.	रस	स्थायी भाव	वर्ण	देवता
1.	श्रृंगार	रति	श्याम	विष्णु
2.	हास्य	हास	श्वेत	प्रथम
3.	करुण	शोक	कपोत	यम
4.	रौद्र	क्रोध	रक्त	रुद्र
5.	वीर	उत्साह	हेम	महेन्द्र
6.	भयानक	भय	कृष्ण	भूत
7.	वीभत्स	जुगुप्सा	नील	महाकाल
8.	अद्भुत	विस्मय	पीत	गन्धर्व
9.	शान्त	शम/निर्वेद	इन्दुवर्ण	नारायण

काव्य प्रकाश-अष्टमोल्लासः (गुण–निरूपण)

- जो काव्य में महती शोभा को अनुगृहीत करता है, उसे गुण कहते है–**यः काव्ये महतीं छायामनुगृह्णात्यसौ गुणः।** (अग्निपुराण कार)
- **काव्य शोभायाः कर्त्तारो धर्माः गुणाः। (वामन) तदतिशयहेतवस्त्वलङ्काराः।।** (वामन) शोभाजनक धर्म–गुण, शोभावर्धक धर्म–अलंकार (काव्यालंकार सूत्र)।
- **ये रसस्याङ्गिनो धर्माः शौर्यादय इवात्मनः। उत्कर्षहेतवस्ते स्युश्चलास्थितयो गुणाः।।** आचार्य मम्मट ने माधुर्य-आदि गुणों को रस का धर्म माना है।
- नवरस के आस्वादन में सामाजिकों के हृदय की तीन अवस्थाएं होती है–द्रुति–विस्तार तथा विकास।

वामन ने शब्द गुण एवं अर्थ गुण माने है–10 + 10।

शब्द गुण—10	लक्षण
1. ओज	गाढबन्धत्वमोजः
2. प्रसाद	शैथिल्यं प्रसादः
3. श्लेषः	मसृणत्वं श्लेषः
4. समता	मार्गभेदः
5. समाधि	आरोहावरोह क्रम
6. माधुर्य	पृथक पदत्वं
7. सौकुमार्यम्	अजरठत्वम्
8. उदारता	विकटत्वमुदारता
9. कान्ति	औज्ज्वल्यं
10. अर्थ व्यक्ति	अर्थ व्यक्तिहेतुत्वमर्थव्यक्तिः।

- आल्हादकत्वं माधुर्यम् शृंगारेद्रुतिकारणम् चित्त की द्रुति का कारण आहलादकत्व ही माधुर्य गुण है और वह शृंगार रस में रहता है।
- करुणे विप्रलम्भे-तच्छान्ते चातिशयान्वितम्। वह माधुर्य गुण, करुण—विप्रलम्भ शृंगार और शान्त रस में चमत्कार जनक होता है।
- दीप्त्यात्मविस्तृते हेंतुरोजो वीर रस स्थिति—
- चित्त के विस्तार का हेतुभूत दीप्ति ही ओज गुण है और उसकी स्थिति वीर रस में होती है।
- यह ओज गुण सामान्यतः वीर रस में रहता है। वीभत्स और रौद्र रसों में क्रमशः उसका आधिक्य रहता है।
- शुष्केन्धनाग्निवत् स्वच्छ जलवत्सहसैव यः। व्याप्नोत्यन्यत् प्रसादोऽसौ सर्वत्र विहितस्थितिः।।

यह प्रसाद गुण समस्त रसों में तथा समस्त रचनाओं में रहता है।

1. ओज गुण में अन्तर्भाव—श्लेष, समाधि, उदारता और प्रसाद।
2. माधुर्य।
3. प्रसाद गुणों में अन्तर्भाव अर्थव्यक्ति।
4. समता—दोष रूप।
5. सौकुमार्य और कान्ति।

प्रश्न 1 काव्यशोभायाः कर्त्तारो धर्माः प्रस्तुत लक्षण है ?
उत्तर— गुणा।
प्रश्न 2 वामन ने काव्य गुण की परिभाषा दी है ?
उत्तर— काव्य शोभायाः कर्त्तारो धर्माः गुणाः।
प्रश्न 3 वामन मतानुसार शोभाजनक धर्म है ?
उत्तर— गुण।
प्रश्न 4 गुण धर्म है ?
उत्तर— काव्य के नित्य।
प्रश्न 5 काव्य के आत्मभूत् रसादि के आश्रित रहने वाले धर्म गुण कहलाते है, यह कथन है ?
उत्तर— आनन्दवर्धन।
प्रश्न 6 ये रसस्याङ्गिनो धर्माः शौर्यादय इवात्मनः। उत्कर्षहेतवस्ते स्युश्चला स्थितयो गुणाः।। कथन है ?
उत्तर— मम्मट का।

प्रश्न 7 जो आत्मा के शौर्यादि धर्म के समान काव्य में अंगीभूत रस के उत्कर्षक धर्म है और अचल स्थित है, कहे जाते है ?
उत्तर— गुण।
प्रश्न 8 उपकुर्वन्ति तं सन्तं येऽङ्गद्वारेण जातुचित्। हारादिवदलङ्कारास्तेऽनुप्रासोपमादयः।। कथन है ?
उत्तर— मम्मट का।
प्रश्न 9 आचार्य मम्मट ने गुणों को किसका धर्म माना है ?
उत्तर— रस।
प्रश्न 10 आचार्य मम्मट ने गुणों के तीन भेद किस पर आश्रित माने हैं ?
उत्तर— रस।
प्रश्न 11 माधुर्यौज्प्रासादाख्यास्त्रयस्ते न पुनर्दशः। कथन है ?
उत्तर— मम्मट।
प्रश्न 12 वामन ने गुण माने है ?
उत्तर— 10 शब्द गुण तथा 10 अर्थ-गुण।
प्रश्न 13 आह्लादकत्वं माधुर्य शृंगारे द्रुति कारणम्। यह कथन किसका है ?
उत्तर— मम्मट

- चित्त का आह्लादक।
- शृंगार रस में विद्यमान।
- वह माधुर्य गुण करुण, विप्रलम्भ शृंगार और शान्त रस में अत्यन्त चमत्कार जनक होता है। अत्यन्त द्रवीभाव का कारण होने से।

प्रश्न 14 दीप्त्यात्म विस्तृतेर्हेतु-रोजोवीर रस स्थितिः अर्थात् चित्त के विस्तार का हेतुभुत दीप्ति ही .... गुण है और उसकी स्थिति वीर रस में होती है। यह लक्षण किसका है?
उत्तर— ओज गुण।
प्रश्न 15 वीरत्वीभत्से ततौ रौद्रैः सातिशयम् लक्षण है?
उत्तर— ओज गुण।
प्रश्न 16 समस्त रसों में रहने वाला गुण है ?
उत्तर— प्रसाद गुणः।
प्रश्न 17 आचार्य मम्मट ने गुणों को किसका धर्म माना है ?
उत्तर— रस।
प्रश्न 18 मूर्ध्निवर्गान्त्यगाः स्पर्शा अटवर्गा रणौ लघू। अवृत्तिर्मध्यवृत्तिर्वा घटना तथा।। लक्षण हैं?
उत्तर— माधुर्य

नोट—शिर पर स्थित अपने वर्ग के अन्तिम वर्ण से युक्त ट वर्ग रहित स्पर्शसंज्ञक वर्ण, ह्रस्व रकार और णकार समास रहित और स्वल्प समास युक्त रचना माधुर्य कहलाती है।

प्रश्न 19 अनङ्ग रङ्ग प्रतिमं तदङ्ग भङ्गीभिरङ्गीकृत मानताङ्ग्याः। कुर्वन्ति यूनां सहसा यथैताः स्वान्तानि शान्ता पर चिन्तनानि।। गुण है ?
उत्तर— माधुर्य गुण।
प्रश्न 20 योग आद्यतृतीयाभ्यामन्त्ययो रेणतुल्ययोः। आदि शषौ वृत्ति दैर्घ्यं गुम्फ उद्धत ओजसि।। गुण की परिभाषा है।
उत्तर— ओज गुण।

प्रश्न 21 मूर्ध्नामुद्वृत्तकृत्ताविरलगलगलद्रक्तसंसक्तधारा– धौते शाङ्घ्रि प्रसादोपनतजयजगज्जात मिथ्यामहिम्नाम्। केलासोल्लासनेच्छाव्युतिकर पिशुनोत्सर्पिदर्योद् धुराणां, दोष्णां चैषां किमेतत् फलमिह नगरी रक्षणे यत्प्रयासः।। यहाँ गुण है?

उत्तर– ओज गुण।

प्रश्न 22 श्रुतिमात्रेण शब्दान्तु येनार्थप्रत्ययो भवेत्। साधारणः समग्राणां स प्रसादोगुणो महः।। यहाँ समग्र से अभिप्राय है ?

उत्तर– समस्त रस एवं रचनाएं।

प्रश्न 23 परिम्लानं पीनस्तन जघनसङ्गादुभयतः। तनोर्मध्यस्यान्तः परिमिलनं प्राप्य हरितम्। इदं व्यस्तन्यासं शलथभुजलताक्षेपवलनैः, कृशाङ्गय्याः सन्तापं वदति विसिनी पत्रशयनम्।। यहाँ कौन-सा गुण है ?

उत्तर– प्रसाद गुण।

प्रश्न 24 गुणालंकार भेद नियतगुण निर्णय उल्लास है ?

उत्तर– अष्टम उल्लास।

प्रश्न 25 इतिहास का स्वरूप है?

उत्तर– उपदेशप्रधान।

प्रश्न 26 अष्टम–उल्लास में मम्मट ने खण्डन किया है ?

उत्तर– भट्टोद्भट्ट के गुणालङ्कार विवेक में वामन सम्मत दस गुणों का।

प्रश्न 27 भामहविवरण के लेखक है ?

उत्तर– भट्टोद्भट्ट।

प्रश्न 28 गुण तथा अलंकार में भेद मानते है

उत्तर– वामन।

प्रश्न 29 त्रिगुणवाद की स्थापना किसने की है ?

उत्तर– मम्मट ने।

रस स्वरूप एवं रससूत्र विमर्श, रस दोष

रस स्वरूप–

प्रश्न 1 कारणान्यथ कार्याणि सहकारिणी यानि च, रत्यादेः स्थायिनो लोके तानि चेन्नाट्य काव्ययोः। विभावानुभावास्तत् कथ्यन्ते व्यभिचारिणः, व्यक्तः स तैर्विभावाद्यैः स्थायी भावो रसः स्मृतः।। प्रस्तुत कारिकांश उद्घृत है ?

उत्तर– काव्यप्रकाश।

प्रश्न 2 विभावानुभावव्यभिचारिभाव संयोगाद्रस निष्पत्तिः। पंक्ति है ?

उत्तर– भरतमुनि।

प्रश्न 3 भरतमुनि के रस सूत्र पर किन–किन आचार्यों ने टिप्पणी की है ?

उत्तर– भट्टलोल्लट–उत्पत्तिवाद, भट्टनायक-भुक्तिवाद, श्रीशंकुक–अनुमितिवाद, अभिनवगुप्त-अभिव्यक्तिवाद।

प्रश्न 4 उत्पत्तिवादी आचार्य है ?

उत्तर– भट्टलोल्लट।

प्रश्न 5 दण्डी ने किस मत का अनुसरण किया है ?

उत्तर– भट्टलोल्लट।

प्रश्न 6 रस न प्रतीत होता है, न उत्पन्न होता है और न अभिव्यक्त होता है, अपितु विभावादि भावकत्व व्यापार से भावित होता हुआ सत्वोद्रेक, प्रकाशानन्द रूप संविद्विश्राति स्वरूप भोजकत्व से आस्वादित होता है। यह मत है–

उत्तर– भट्टनायक।

प्रश्न 7 अभिव्यक्तिवादी आचार्य है ?

उत्तर– अभिनवगुप्त।

प्रश्न 8 अलक्ष्यक्रमव्यङ्ग्य ध्वनि को कहते है ?

उत्तर– रसादिध्वनि।

प्रश्न 9 चित्त की अवस्था के आधार पर रस कितने है ?

उत्तर– चार, (शृंगार, वीर, बीभत्स तथा रौद्र)।

प्रश्न 10 रसानुभूति का कारण है ?

उत्तर– विभाव ।

प्रश्न 11 नट में रस अनुमेय है, कथन है ?

उत्तर– शंकुक।

प्रश्न 12 शृंगार रस के कितने भेद है ?

उत्तर– 7।

प्रश्न 13 रतिर्देवादिविषयव्यभिचारी तथाऽञ्जितः। परिभाषा है?

उत्तर– भाव।

प्रश्न 14 काव्यालङ्कार सूत्र के निर्माता कौन है ?

उत्तर– वामन।

ध्वन्यालोक (प्रथम उद्योत)

प्रश्न 1 ध्वन्यालोक के प्रणेता कौन है?

उत्तर– आनन्दवर्धन

प्रश्न 2 ध्वन्यालोक में कितने उद्योत है?

उत्तर– 4

प्रश्न 3 काव्यस्यात्मा ध्वनिरिति बुधैर्यः समाम्नातः पूर्वः यहाँ बुधैः पद से क्या अभिप्रेत है?

उत्तर– वैयाकरण।

प्रश्न 4 आनन्दवर्धन ने ध्वनि की क्या परिभाषा दी है?

उत्तर– यत्रार्थः शब्दो वा...।

प्रश्न 5 ध्वनि सिध्दान्त की प्रेरणा ध्वनिकार को वैयाकरणों के किस सिद्धान्त से मिली है?

उत्तर– स्फोट।

प्रश्न 6 ध्वनि विरोधी मत है?

उत्तर– भक्तिवादी, अभाववादी तथा अलक्षणीयतावादी।

प्रश्न 7 स्वेच्छाकेसरिणः स्वच्छस्वच्छायाया सितेन्दवः। त्रायन्तां वो मधुरिपोः प्रयन्नार्तिच्छिदोनखाः।। प्रस्तुत मंगलाचरण किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है?

उत्तर– ध्वन्यालोक।

प्रश्न 8 ध्वन्यालोक में मंगलाचरण है?
उत्तर– आशीर्वादात्मक।
प्रश्न 9 अभिनवगुप्त की ध्वन्यालोक पर प्राप्त टीका है?
उत्तर– लोचन।
प्रश्न 10 ध्वन्यालोक में आचार्य ने किस देवता की स्तुति की है?
उत्तर– नृसिंह।
प्रश्न 11 सुमेलित–?
उत्तर– अधिकारी – सहृदयमनः प्रीतये।
विषय – काव्यस्य आत्मा ध्वनिः।
सम्बन्ध – बुधैः यः समाम्नातपूर्वः।
प्रयोजन – तेन ब्रूमः सहृदयमनः प्रीतये तत्स्वरूपम्।
प्रश्न 12 आनन्दवर्धन का स्थितिकाल है?
उत्तर– नवम शताब्दी।
प्रश्न 13 सत्य कथन है–?
उत्तर– क. अभाववादी–विपर्ययमूलक।
ख. भक्तिवादी–सन्देह मूलक।
ग. अलक्षणीयतावादी–अज्ञानमूलक।
प्रश्न 14 आचार्य आनन्दवर्धन किस सम्प्रदाय से है ?
उत्तर– ध्वनि।
प्रश्न 15 ध्वनि का आधार कौनसी शक्ति है?
उत्तर– व्यञ्जना।
प्रश्न 16 नास्त्येव ध्वनिः इस कथन के समर्थक है?
उत्तर– अभाववादी।
प्रश्न 17 भाक्तमाहुस्तमन्ये कथन से किस मत की प्रतीति होती है?
उत्तर– भाक्तवादी।
प्रश्न 18 आचार्य आनन्दवर्धन ने भाक्तवादियों के कुल कितने विकल्पों को उपस्थापित किया है?
उत्तर– 3।
प्रश्न 19 सहृदयश्लाध्य एवं काव्यात्मरूप में प्रतिष्ठित ध्वनि के मुख्यतः कितने भेद बताये गये है?
उत्तर– 2।
प्रश्न 20 भाक्त अर्थ को उपस्थित कराने वाली शक्ति को क्या कहते है?
उत्तर– लक्षणा।
प्रश्न 21 आनन्दवर्धन की ध्वन्यालोक पर लिखी टीका का क्या नाम है?
उत्तर– आलोक।
प्रश्न 22 शोकः श्लोकत्वमागतः यह उक्ति किस लक्षण ग्रन्थ से उद्धृत है?
उत्तर– ध्वन्यालोक।
प्रश्न 23 भारतीय काव्यशास्त्र का प्रथम ग्रन्थ होने का गौरव किसे प्रान्त है?
उत्तर– अग्निपुराण।

प्रश्न 24 आचार्य आनन्दवर्धन के अनुसार सहृदयश्लाध्य का अर्थ है?
उत्तर– प्रतीयमानार्थ।
प्रश्न 25 ध्वन्यालोक के प्रारम्भ में प्राप्त मंगलाचरण के आधार का आनन्दवर्धन को किस सम्प्रदाय का कहा जाता है?
उत्तर– वैष्णव।
प्रश्न 26 ध्वनिरितिः सुरिभिः कथितः इस कारिकांश की टीका में ध्वन्यालोककार ने किन-2 विद्वानों को प्रथम ध्वनिवादी बतलाया है?
उत्तर– वैयाकरणों को।
प्रश्न 27 भट्टलोल्लट किस मत के अनुयायी थे?
उत्तर– अभिहितान्वयवाद।
प्रश्न 28 काव्यस्यात्मा स एवार्थः इस कारिकांश से अभिप्रेत है?
उत्तर– प्रतीयमान।
प्रश्न 29 तत्तेदन्तावगाहिनी प्रतीति है?
उत्तर– प्रत्यभिज्ञा।
प्रश्न 30 उपलक्षण का उदाहरण है?
उत्तर– काकवद्देवदत्तस्यगृहम्।
प्रश्न 32 ध्वन्यालोक के प्रथम उद्योत में कितनी कारिकाएं है?
उत्तर– 19।
प्रश्न 33 महाकवियों की वाणी में मिलता है?
उत्तर– प्रतीयमान।
प्रश्न 34 जहाँ अर्थ स्वयं को तथा शब्द अपने अभिधेय अर्थ को गौण करके प्रकाशित करते है, उसे कहते है?
उत्तर– ध्वनि।
प्रश्न 35 ध्वन्यालोक में कुल कितनी कारिकाएं है?
उत्तर– 116।
प्रश्न 36 विशिष्ट पद रचना को कहते हैं ?
उत्तर– रीतिः।
प्रश्न 37 अज्ञात ज्ञापन लक्षण प्रतिपादनं हि ?
उत्तर– प्रतननम्।
प्रश्न 38 उपमा आदि अलंकारों से प्रसिद्धि पाने वाला अर्थ है?
उत्तर– वाच्य।
प्रश्न 39 राजानक की उपाधि से युक्त कवि है?
उत्तर– आनन्दवर्धन।
प्रश्न 40 नोणपुत्र है?
उत्तर– आनन्दवर्धन।
प्रश्न 41 आनन्दवर्धन के ग्रन्थ है?
उत्तर– ध्वन्यालोक, अर्जुनचरित, विषमबाणलीला, धर्मोत्तमा, देवीशतक एवं तत्वालोक।
प्रश्न 42 प्रतीयमानार्थ है?
उत्तर– व्यंग्यार्थ।

प्रश्न 43 ध्वनिरात्माकाव्यस्य यहाँ आत्मा का अर्थ है?
उत्तर– तत्व।
प्रश्न 44 ध्वनि का अलंकार में अन्तर्भाव नहीं होता, यह मत किसका है?
उत्तर– अभाववादी।
प्रश्न 45 ध्वनि के आधार पर काव्य के कितने भेद है?
उत्तर– तीन–1 ध्वनिकाव्य 2 गुणीभूतव्यंग्यकाव्य तथा 3 चित्रकाव्य।
प्रश्न 46 आनन्दवर्धन ने काव्य के किस भेद को स्वीकार नहीं किया है?
उत्तर– (तृतीय) चित्रकाव्य को।
प्रश्न 47 ध्वनिकाव्य के कितने भेद है?
उत्तर– रस, वस्तु तथा अलंकार।
प्रश्न 48 आनन्दवर्धन के अनुसार ध्वनि के भेद है?
उत्तर– 2 (क) अविवक्षित वाच्यध्वनि तथा (ख) विवक्षितान्यपर वाच्यध्वनि।
प्रश्न 49 अविवक्षितवाच्यध्वनि का अपर नाम है?
उत्तर– लक्षणामूला ध्वनि।
प्रश्न 5 अविवक्षितवाच्यध्वनि के कितने भेद है?
उत्तर– 2, अर्थान्तरसंक्रमित तथा अत्यन्ततिरस्कृत वाच्य ध्वनि।
प्रश्न 51 विवक्षितान्यपरवाच्यध्वनि का अपर नाम है?
उत्तर– अभिधामूलाध्वनि।
प्रश्न 52 विवक्षितान्यपर वाच्य ध्वनि के कितने भेद है?
उत्तर– 2, असंलक्ष्य क्रम ध्वनि तथा संलक्ष्यक्रम ध्वनि।
प्रश्न 53 प्रतीयमान कितने प्रकार का होता है?
उत्तर– 2।
प्रश्न 54 ध्वनिवादी आचार्य है?
उत्तर– आनन्दवर्धन, अभिनवगुप्त, मम्मट, विश्वनाथ, पण्डितराज जगन्नाथ।
प्रश्न 55 ध्वनिसिद्धान्त को एस्यालिंगुवा सिद्धान्त किसने कहा था?
उत्तर– पाश्चात्य काव्य चिन्तक एवं दार्शनिकों ने।
प्रश्न 56 ध्वनिविरोधी आचार्य है?
उत्तर– 1 महिमभट्ट 2 भट्टनायक 3 कुन्तक 4 प्रतिहारेन्दु राजशेखर 5 क्षेमेन्द्र 6 धनञ्जय।
प्रश्न 57 आनन्दवर्धन सर्वश्रेष्ठ रस किसे मानते है?
उत्तर– करुण रस।
प्रश्न 58 अर्थान्तरसंक्रमित वाच्य ध्वनि को कहा जाता है?
उत्तर– अजहत्स्वार्था वाच्यध्वनि।
प्रश्न 59 अत्यन्ततिरस्कृतवाच्य ध्वनि को कहा जाता है?
उत्तर– जहत्स्वार्था वाच्यध्वनि।
प्रश्न 60 असंलक्ष्यक्रम व्यंग्य ध्वनि को कहा जाता है?
उत्तर– रसादि ध्वनि वाच्यध्वनि।
प्रश्न 61 ध्वनि के कुल कितने भेद है?
उत्तर– 6।

प्रश्न 62 विषमबाणलीला किसकी रचना है?
उत्तर– आनन्दवर्धन।
प्रश्न 63 ध्वनि भेदों में उत्कृष्ट ध्वनि है?
उत्तर– रसध्वनि।

भरतमुनि प्रणीत नाट्यशास्त्र

प्र. 1. नाट्यशास्त्र के प्रणेता है ?
उत्तर– भरतमुनि।
प्र. 2. पञ्चाङ्गकं वाक्यं किस विधा का लक्षण है ?
उत्तर– ग्रन्थः।
प्र. 3. नाट्य विशेषण वेद शब्द के किस आशय को अभिव्यक्त करता है ?
उत्तर– अध्येयत्व।
प्र. 4. परिगृह्य प्रणम्याथ ब्रह्मा विज्ञापितो मया। अथाहं मां सुरुगुरु....योजय।। रिक्त स्थान हेतु उचित शब्द है ?
उत्तर– कैशिकी।
प्र. 5. सात्वती वृत्ति का प्रयोग किन पात्रों द्वारा किया जाता है ?
उत्तर– स्त्री।
प्र. 6. नाट्यवेद के प्रणेता है ?
उत्तर– ब्रह्मा।
प्र. 7. नाट्यशास्त्र का सर्वप्रथम प्रयोग किस अवसर पर हुआ था ?
उत्तर– इन्द्रध्वजमहोत्सव।
प्र. 8. विदूषक के लिए किस शब्द का प्रयोग होता है ?
उत्तर– कुटिलक।
प्र. 9. नाट्यशास्त्र का रचनाकाल है ?
उत्तर– ईसा की प्रथम शताब्दी।
प्र. 10. आचार्य भरत ने नाट्यमण्डप की कितनी शृंखलाएं बताई है ?
उत्तर– 3।
प्र. 11. नाट्य के प्रथम अध्याय को किस नाम से जानते है ?
उत्तर– नाट्योत्पति।
प्र. 12. देवताओं के लिए सर्वश्रेष्ठ नाट्यमण्डप है ?
उत्तर– त्र्यस्त।
प्र. 13. नेपथ्य और रंगपीठ के मध्य का स्थान क्या कहलाता है ?
उत्तर– रंगशीर्षं।
प्र. 14. **समास्थिरा च कठिना कृष्णा गौरी च या भवेत्। भूमिस्तत्रैव कर्तव्यः कर्तृभिः.....**रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए ?
उत्तर– नाट्यमण्डपः।
प्र. 15. **प्रणभ्य शिरसादेवी पितामहः महेश्वरौ। ......प्रवक्ष्यामि ब्रह्मणा यदुदाहतम्।।** रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए ?
उत्तर– नाट्यशास्त्रं।

प्र. 16. पञ्चम वेद है ?
उत्तर– नाट्यवेद।
प्र. 17. नाट्यशास्त्र में कितने अध्याय है ?
उत्तर– 36।
प्र. 18. जग्राहं पाठ्यं ऋग्वेदात्सामभ्यो गीतमेव च। यजुर्वेदादभिनयान् रसानाथर्वणादपि।। पंक्ति है ?
उत्तर– नाट्यशास्त्र।
प्र. 19. नाट्यशास्त्र पर अभिनवगुप्त की टीका है ?
उत्तर– अभिनवभारती।
प्र. 20. नाट्यवृत्ति कितनी है ?
उत्तर– भारती, सात्त्वती, कैशिकी तथा आरभटी।
प्र. 21. नृताङ्गहार सम्पन्ना रसभावक्रियात्मिका। दृष्टामयाभगवतोनीलकण्ठस्य नृत्यतः।। लक्षण है ?
उत्तर– कैशिकी।
प्र. 22. जर्जर है ?
उत्तर– इन्द्रध्वज (इन्द्रपताका)।
प्र. 23. नाट्यगृह के प्रणेता है ?
उत्तर– विश्वकर्मा।
प्र. 24. न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला।
नासौ योगो न तत् कर्मनाट्येऽस्मिन् यन्नदृश्यते।। उद्धृत है ?
उत्तर– नाट्यशास्त्र।
प्र. 25. योऽयंस्वभावो सुखदुःख समन्वितः। सोऽङ्गाद्यभिनयोपेतो......अभिधीयते।। रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए ?
उत्तर– नाट्यशास्त्र।
प्र. 26. प्रेक्षागृह कितने प्रकार का होता है ?
उत्तर– 3।
प्र. 27. सर्वोत्कृष्ट प्रेक्षागृह है ?
उत्तर– मध्यम।
प्र. 28. नाट्यमण्डप है ?
उत्तर– 3 (विकृष्ट, चतुरस्त्र तथा त्र्यस्त्र।)
प्र. 29. नाट्यशास्त्र में कितने श्लोक है ?
उत्तर– 6000।
प्र. 30. नीवं देने को नाट्यशास्त्र में कहते है ?
उत्तर– निवेशन।
प्र. 31. रंगपीठस्य पार्श्वे तु कर्त्तव्या......?
उत्तर– मत्तवारिणी।
प्र. 32. अभिनवगुप्त के अनुसार मत्तवारणी शब्द का क्या अर्थ है ?
उत्तर– बरण्डा।

प्र. 33. मत्तवारणी का माप होता है ?
उत्तर– 8 गुणा 8 वर्गाकार।
प्र. 34. पृष्ठ का मध्यभाग कहा गया है ?
उत्तर– रंगपीठ (अगला भाग)।
प्र. 35. रंगपीठ के मध्य शिरोभाग को नाट्यशास्त्र में क्या कहा है ?
उत्तर– रंगशीर्ष (पीछला भाग)।
प्र. 36. दारुकर्म का उल्लेख है ?
उत्तर– नाट्यशास्त्र।
प्र. 37. विकृष्ट (आयताकार) नाट्यमण्डप का माप है ?
उत्तर– 64 गुणा 32 हाथ।
प्र. 38. चतुरस्त्र नाट्य मण्डप (वर्गाकार) का माप है ?
उत्तर– 32 गुणा 32 हाथ।
प्र. 39. अष्टपदात्मिका है ?
उत्तर– नान्दी।
प्र. 40. 'जर्जर' की लम्बाई निर्धारित की है ?
उत्तर– 108 हाथ।
प्र. 41. नाट्यशास्त्र में नाट्य अंग है ?
उत्तर– 11, रसभावाह्यभिनयाधर्मी वृत्ति प्रवृत्तयः।
सिद्धि-स्वरास्तथातोद्यं गानं रङ्गश्च संग्रहः।।
प्र. 42. नाट्यशास्त्र के अनुसार रस कितने है ?
उत्तर– 8।
प्र. 43. सात्विकभाव कितने है ?
उत्तर– 8।
प्र. 44. व्यभिचारिभाव कितने है ?
उत्तर– 33।
प्र. 45. प्रवृत्तियां कितनी है ?
उत्तर– 5।
प्र. 46. स्वर कितने है ?
उत्तर– 7।
प्र. 49. हास्य रस कितने प्रकार का होता है ?
उत्तर– 2।
प्र. 50. नाट्यशास्त्र में रसनिरूपण अध्याय कौनसा है ?
उत्तर– षष्ठ।
प्र. 51. विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः सूत्र है ?
उत्तर– भरतमुनि कृत नाट्यशास्त्र।
प्र. 52. नेपथ्यगृह और रंगपीठ के मध्य का स्थान क्या कहलाता है ?
उत्तर– रंगशीर्ष।

प्र. 53. प्रेक्षागृहलक्षणम् नाट्यशास्त्र का कौनसा अध्याय है ?
उत्तर– द्वितीय।
प्र. 54. त्रिकोण कर्तव्यं नाट्यवेश्म प्रयोक्तृभिः। मध्ये त्रिकोणमेवास्य रंगपीठं तु कारयेत्।। लक्षण है ?
उत्तर– त्र्यस्त।
प्र. 55. नाट्याख्यं.....वेदं सेतिहासं करोम्यहम्। रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए ?
उत्तर– पञ्चमम्।
प्र. 56. महेन्द्रप्रमुखैर्देवैरुक्तः किल पितामहः। क्रीडनीयकमिच्छामो दृश्यं शृव्यं च यद् भवेत्।। यहाँ क्रीडनीयक है ?
उत्तर– नाट्यशास्त्र।
प्र. 57. नाट्यशास्त्र पर अभिनवगुप्त ने कौनसा टीकाग्रन्थ लिखा है ?
उत्तर– अभिनवभारती।
प्र. 58. या वाक्प्रधानापुरुषप्रयोज्या, स्त्रीवर्जितासंस्कृतवाक्य युक्ता।
स्वानायधेयैर्भरतैः प्रयुक्ता सा.......नाम भवेत् तु वृत्तिः।। रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए ?
उत्तर– भारती।
प्र. 59. प्रस्तावपातप्लुतलङ्घितानि चान्यानि मायाकृतमिन्द्रजालम्।
चित्राणि युक्तानि च यत्र नित्यं तां तादृशीम्....... वदन्ति।। रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए ?
उत्तर– आरभटीं।
प्र. 60. या सात्वतेनेह गुणयुक्तान्यायेन वृत्तेन समन्विता च।
हर्षोत्कटा संहृत शोकभावा सा......नाम भवेत तु वृत्तिः।। रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए ?
उत्तर– सात्वती वृत्ति।
प्र. 61. या श्लक्ष्ण नेपथ्य विशेषचित्रा, स्त्रीं संयुक्ता या बहुनृत्तगीता।
कामोपभोगप्रभवोपचारा, ता.......वृत्तिमुदाहरन्ति।। रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए ?
उत्तर– कैशिकीं वृत्ति।

प्रथम अध्याय–नाट्योत्पत्ति

प्र. 1. नाट्यशास्त्र में कितने अध्याय एवं श्लोक है ?
उत्तर– 36 अध्याय एवं 6000 श्लोक।
प्र. 2. अभिनवगुप्त की नाट्यशास्त्रीय टीका है ?
उत्तर– अभिनवभारती।
प्र. 3. प्रणम्य शिरसादेवौपितामहामहेश्वरौ मंगलाचरण है ?
उत्तर– नाट्यशास्त्र।
प्र. 4. नाट्यवेद के प्रणेता है ?
उत्तर– ब्रह्मा।
प्र. 5. भारत किस द्विप में है ?
उत्तर– जम्बूद्विप।
प्र. 6. क्रीडनीयक है ?
उत्तर– नाटक।

प्र. 7. 'सृजापरं वेदं पञ्चमं सार्ववर्णिकम्' उपयुक्त पंक्ति है ?
उत्तर– नाट्यवेद।
प्र. 8. इतिहास का लक्षण है ?
उत्तर– धर्मार्थकाममोक्षाणामुपदेशसमन्वितम्।
इतिवृत्त कथा युक्तमितिहासं प्रचक्षते।।
प्र. 9. पञ्चम वेद है ?
उत्तर– नाट्यवेद।
प्र. 10. जग्राहपाठ्यमृग्वेदात् सामभ्योगीतमेव च।
यजुर्वेदादभिनयान् रसानाथर्वणादपि।। प्रयुक्त उल्लेख है ?
उत्तर– नाट्यवेद।
प्र. 11 सुमेलित है ?
1. ऋग्वेद–नाट्य (गद्य पद्यात्मक) प्रथम अंग।
2. यजुर्वेद–अभिनय।
3. सामवेद–गीत।
4. अथर्ववेद–रस।
प्र. 12. इतिहास वेद है ?
उत्तर– नाट्यवेद,
उत्पाद्य नाट्यवेदं तु ब्रह्मोवाचसुरेश्वरम्।
इतिहासोमयासृष्टः स सुरेषु नियुज्यताम्।।
प्र. 13. भरतमुनि के कितने पुत्र थे ?
उत्तर– 100।
प्र. 14. भारतीं–सात्वती आरभटी वृतियों के प्रयोग पश्चात् ब्रह्मा ने किस वृत्ति हेतु प्रयोजित किया ?
उत्तर– कैशिकी वृत्ति।
प्र. 15. मृदङ्गहारसम्पन्ना रसभाव क्रियात्मिका है ?
उत्तर– कैशिकी वृत्ति।
प्र. 16. जो नृत्त और अङ्ग व्यवहारों से पूर्ण रस तथा भावों के व्यापारवाली, सुन्दर वेशभूषा से सज्जित तथा शृंगार रस की उत्पादिका है ?
उत्तर– कैशिकी वृत्ति।
प्र. 17. नाट्यवेद का सर्वप्रथम प्रयोग कब हुआ ?
उत्तर– इन्द्रध्वजमहोत्सव पर।
प्र. 18. नाट्यशास्त्र में नान्दी है?
उत्तर– आशीर्वादात्मक (अष्टपदा नान्दी)।
प्र. 19. अष्टपदानान्दी में आठ पद कौन-कौन से होते हैं ?
उत्तर– नाम, आख्यात, उपसर्ग, निपात, समास, तद्धित, सन्धि तथा विभक्ति।
प्र. 20. अहो प्रहरणं दिव्यमिदामासादितं त्वया, नाट्य विध्वंसिनस्सर्वे येन ते जर्जरी कृताः।
यस्मादनेन ते विघ्नाः सासुरा जर्जरीकृताः......इत्येव नामतोऽयं भविष्यति।। रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए?
उत्तर– जर्जर।

प्र. 21. रङ्गपीठस्य मध्ये तु स्वयं..... उचितपद की पूर्ति कीजिए?
उत्तर– ब्रह्मा।
प्र. 22. नायकं रक्षतीन्द्रस्तु नायिकाश्चसरस्वती। विदूषकमथोङ्कारः शेषासतुप्रकृतिर्हरः।। उद्धृत है ?
उत्तर– नाट्यशास्त्र।
प्र. 23. पूर्वे सामप्रयोक्तव्यं द्वितीयदानमेव च। तयोरूपरि भेदस्तु ततोदण्डः प्रयुज्यते।। उद्धृत है ?
उत्तर– नाट्यशास्त्र।
प्र. 24. दुःखार्तानां श्रमार्तानां शोकार्तानां तपस्विनाम्। विश्रान्तिजननं काले नाट्यमेतद् भविष्यति।। उद्धृत है?
उत्तर– नाट्यशास्त्र।
प्र. 25. अष्टाङ्गपद संयुक्ता...... है ?
उत्तर– नान्दी।
प्र. 26. योऽयं स्वभावो लोकस्य सुख दुःख समन्वितः। सोऽङ्गाधभिनयोपेतो ...... मित्यभिधीयते।। उद्धृत है?
उत्तर– नाट्यशास्त्र।
प्र. 27. वेदविद्येतिहासानामाख्यानपरिकल्पनम्। विनोदकरणं लोके नाट्यमेतद्भविष्यति।। उद्धृत है ?
उत्तर– नाट्यशास्त्र।
प्र. 28. श्रुतिस्मृतिसदाचारपरिशेषार्थकल्पनम्। विनोदजननं लोकेनाट्यमेतभविष्यति।। उद्धृत है ?
उत्तर– नाट्यशास्त्र।
प्र. 29. नाट्यशास्त्र के प्रथम अध्याय का क्या नाम है ?
उत्तर– नाट्योत्पति।
प्र. 30. नाट्यशास्त्र के प्रथम अध्याय में कितने श्लोक है ?
उत्तर– 131।

द्वितीयाध्याय-प्रेक्षग्रहलक्षणम्

प्र. 1. नाट्य का प्रारम्भिक तत्व है ?
उत्तर– रंगमञ्च।
प्र. 2. नाट्यगृह के कितने प्रकार है ?
उत्तर– विकृष्ट, चतुरस्त तथा त्र्यस्त।
प्र. 3. कनीयस स्मृतं त्र्यस्तं तु मध्यमम् । ज्येष्ठं विकृष्टं विज्ञेयं..... प्रयोक्तृभिः, उद्धृत है ?
उत्तर– नाट्यवेद।
प्र. 4. त्रिभागच्छिन्नयारज्ज्वा.....विधीयते। छिन्नायां तु चतुर्भागे प्रयोक्तु र्नाश उच्यते ?
उत्तर– राष्ट्रकोपः।
प्र. 5. नींव रखने के दिन बलि–विधान है ?
उत्तर– पूर्व दिशा में शुक्ल, दक्षिण में नील, पश्चिम में पीत, उत्तर में लाल।
प्र. 6. स्तम्भ विधान है ?
उत्तर– ब्राह्मण–चन्दन–सोना।
क्षत्रिय– खैर–ताँबा।
वैश्य– धव–चाँदी।
शूद्र–सभी वृक्ष–लोहा।

प्र. 7. रङ्गपीठस्य पार्श्वे तु कर्त्तव्या.....। चतुःस्तम्भ समायुक्ता रङ्गपीठ प्रमाणतः।। रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए ?
उत्तर– मत्तवारिणी।
प्र. 8. मत्तवारिणी की ऊँचाई कितनी होनी चाहिए ?
उत्तर– 1½ हाथ (रंगपीठ की ऊँचाई भी 1½)।
प्र. 9. ....कर्तव्यं षड्दारुकसमन्वितम् ? रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए?
उत्तर– रङ्गशीर्षं।
प्र. 10. एवविधं प्रकर्तव्यं रङ्गशीर्षे प्रयत्नतः। कूर्मपृष्ठं न कर्तव्यं मत्स्यपृष्ठं तथैव च।। शुद्धादर्शतलाकारं ...... प्रशस्यते ।। रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए ?
उत्तर– रङ्गशीर्षं।
प्र. 11. मन्दवातायनोपेतो निर्वातो धीर शब्दवान्। तस्मान्निवातः कर्तव्यः कर्तृभिः नाट्यमण्डपः।। किससे उद्धृत है ?
उत्तर– नाट्यशास्त्र।
प्र. 12. नाट्यशास्त्र के द्वितीय अध्याय का नाम है ?
उत्तर– प्रेक्षागृहलक्षणम् (109 श्लोक)।
प्र. 13. नाट्यशास्त्र के तृतीय, चतुर्थ, षष्ठ अध्याय का नाम है ?
उत्तर– तृतीय अध्याय–रंगदैवतपूजन (103 श्लोक)।
चतुर्थ अध्याय– ताण्डव लक्षणम् (326 श्लोक)।
षष्ठ अध्याय–पूर्वरंगविधान (221 श्लोक)।

षष्ठ अध्याय – रसाध्याय

प्र. 1. नाट्यशास्त्र के षष्ठाध्याय में कितने प्रश्नों का उल्लेख है ?
उत्तर– 5।
प्र. 2. विस्तरेणोपदिनामर्थानांसूत्रभाष्ययोः। निबन्धो यः समासेन.....रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए ?
उत्तर– संग्रह।
प्र. 3. संग्रह के कितने भेद है ?
उत्तर– 3।
प्र. 4. जब किसी अर्थ का परिमित शब्दों में कथन किया जाए तो अर्थों में संक्षेप बोधिका उक्ति को कहते है ?
उत्तर– कारिका।
प्र. 5. अल्पाभिधानेनार्थो यः समासेनोच्येते बुधैः। सुत्रतः सा तु विज्ञेया....रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए ?
उत्तर– कारिका।
प्र. 6. नानानामश्रयोत्पन्नं निघण्टुं निगमान्वितम्। धात्वर्थ हेतु संयुक्तं नाना सिद्धान्त साधितम्।। स्थापितोऽर्थोभवेद्यत्र समासेनार्थसूचकः। धात्वर्थवचनेनेह..... तत्प्रचक्षते।। रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए?
उत्तर– निरुक्त।
प्र. 7. शृंगारहास्यकरुणारौद्रवीरभयानकाः। वीभत्साद् भुतसंज्ञोचेत् कति नाट्येरसाः स्मृताः ?
उत्तर– अष्टौ।

प्र. 8. नाट्यशास्त्र के अनुसार रस कितने है ?

उत्तर– 8।

प्र. 9. स्थायीभाव कितने है ?

उत्तर– 8।

नोट–1. शृंगार–रति, 2. हास्य–हास, 3. करुण–शोक, 4. रौद्र–क्रोध, 5. वीर–उत्साह 6. भयानक–भय, 7. बीभत्स–जुगुप्सा, 8. अद्भुत–विस्मय।

प्र. 10. संचारीभाव कितने है ?

उत्तर– 33

प्र. 11. सात्विकभाव कितने है ?

उत्तर– 8 (स्तम्भ, स्वेद, रोमांच, स्वरभंग, वेपथु, वैवर्ण्य तथा अश्रु)।

प्र. 12. अभिनय कितने है ?

उत्तर– चार (आंगिक, वाचिक, आहार्य, सात्विक)।

प्र. 13. वृत्तियाँ कितनी है ?

उत्तर– 4।

प्र. 14. प्रवृत्तियाँ कितनी है ?

उत्तर– 5, (आवन्ती, दक्षिणात्या, औद्रमागधी, पाँचाली, तथा मध्यमा)।

प्र. 15. स्वर कितने होते है ?

उत्तर– 7, शारीराश्चैववैणाश्चसप्त षड्जादयः स्वराः।
निषादर्षभगान्धार मध्यपञ्चम धैवताः।।

प्र. 16. आतोद्य (वाद्यवृन्द) के कितने भेद है ?

उत्तर– 4 (तत, अवनद्ध, घना तथा सुषिर)।

प्र. 17. गायन कितने प्रकार का होता है ?

उत्तर– 5 (प्रवेश, आक्षेप, निष्काम, प्रसादिक, आन्तय)।

प्र. 18. मण्डप या प्रेक्षागृह कितने प्रकार के होते है ?

उत्तर– 3।

प्र. 19. 'विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पतिः' रससूत्र है ?

उत्तर– भरतमुनि।

प्र. 20. शृंगार से हास्य, रौद्र से करुण, वीर से अद्भुत तथा बीभत्स से किस रस की उत्पत्ति हुई थी ?

उत्तर– भयानक।

मुख्य रस–शृंगार, रौद्र, वीर तथा बीभत्स।

गौणरस–हास्य, करुण, अद्भुत तथा भयानक।

प्र. 21. श्यामो भवति शृंगारः, सितोहास्यः प्रकीर्तितः। कपोतः करुणश्चैव रक्तोरौद्र प्रकीर्तितः।।
गौरी वीरस्तु विज्ञेयः कृष्णश्चैव भयानकः। नीलवर्णस्तु बीभत्सः पीतश्चैवाद्भुतः स्मृतः।। उद्धृत है ?

उत्तर– नाट्यशास्त्र।

प्र. 22. शृंगारों विष्णुदैवत्यो हास्यः प्रथमदेवताः। रौद्रो रुद्रादिदैवत्यः करुणो यम देवताः।।
वीभत्स्य महाकालः, कालदेवो भयानकः। वीरोमहेन्द्रदेवः स्यादद्भुतो ब्रह्मदेवतः।। उद्धृत है ?

उत्तर– नाट्यशास्त्र।

प्र. 23. शृंगार रस के कितने भेद है ?

उत्तर– 2 (संयोग तथा विप्रलम्भ)।

प्र. 24. हास्य रस कितने प्रकार का होता है ?

उत्तर– 2 (आत्मस्थ तथा परस्थ)।

नोट–हास्य के ये भेद मनुष्य की उत्तम, मध्यम और अधम ये तीन प्रकृतियों में प्रयुक्त होकर 6 प्रकार बन जाते है

(क.) उत्तम– 1. स्मित, 2. हसित।

(ख.) मध्यम–3. विहसित, 4. उपहसित।

(ग.) अधम– 5. अपहसित, 6. अतिहसित।

प्र. 25. अद्भुतरस के कितने भेद होते है ?

उत्तर– 2 (दिव्य तथा आनन्द)।

प्र. 26. शान्तरस का स्थायिभाव है ?

उत्तर– शम।

प्र. 27. मोक्ष प्रवर्तक रस है ?

उत्तर– शान्त।

प्रश्नोत्तराणि–

प्रश्नः-1 साहित्यदर्पणस्य रचयिता कः ?
(क) जगन्नाथः (ख) विश्वनाथः (ग) कालिदासः (घ) भवभूतिः (ख)

प्रश्नः–2 अग्रिमा शब्द शक्तिः ?
(क) तात्पर्याख्या (ख) लक्षणा (ग) व्यञ्जना (घ) अभिधा (घ)

प्रश्नः–3 शब्दस्यार्थादिकस्य वृत्तिः ?
(क) अभिधा (ख) लक्षणा (ग) व्यञ्जना (घ) तात्पर्याख्या (ग)

प्रश्नः–4 सर्गबन्धो ?
(क) नाटकम् (ख) गद्यकाव्यम् (ग) महाकाव्यम् (घ) चम्पूकाव्यम् (ग)

प्रश्नः–5 रूपक भेदाः ?
(क) अष्टौः (ख) नव (ग) दश (घ) एकादश (ग)

प्रश्नः–6 विश्वनाथोक्तं काव्यलक्षणम् ?
(क) तद्दोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि।
(ख) वाक्यं रसात्मकं काव्यम्। (ख)
(ग) रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्।
(घ) इष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली।

प्रश्नः–7 वीररसस्य स्थायीभावः ?
(क) क्रोधः (ख) उत्साहः (ग) भयम् (घ) विस्मयः (ख)

प्रश्नः–8 अधोलिखितेषु किं रूपकं नास्ति ?
(क) भाणः (ख) प्रकरणं (ग) आख्यायिका (घ) वीथिः (ग)

प्रश्नः–9 काव्यादर्शकारः कः ?
(क) रूद्रटः (ख) वामनः (ग) दण्डी (घ) राजशेखरः (ग)

प्रश्नः–10 अनलङ्कृती पुनः क्वापि इति केनोक्तम् ?
(क) विश्वनाथेन (ख) मम्मटेन (ग) भामहेन (घ) दण्डिना (ख)

प्रश्नः–11 अद्भुतरसस्य स्थायिभावः कः ?
(क) रतिः (ख) शोकः (ग) विस्मय (घ) जुगुप्सा (ग)

प्रश्नः–12 शृंगाररसः कतिविधः ?
(क) द्विविधः (ख) चतुर्विधः (ग) त्रिविधः (घ) पञ्चविधः (क)

प्रश्नः–13 नाटके न्यूनतः कति अङ्का भवन्ति ?
(क) 5 (ख) 8 (ग) 6 (घ) 7 (क)

प्रश्नः–14 सान्तरानिष्ठो व्यापारो भवति ?
(क) लक्षणाव्यापारः (ख) अभिधाव्यापारः
(ग) व्यञ्जनाव्यापारः (घ) तात्पर्यभिधाव्यापारः (ग)

प्रश्नः–15 चत्वारः सन्ध्यो भवन्ति ?
(क) नाटके (ख) प्रकरणे (ग) नाटिकायाम् (घ) भाणे (ग)

प्रश्नः–16 काव्यालङ्कार सूत्रवृत्तिकारः कः ?
(क) भामहः (ख) वामनः (ग) दण्डी (घ) रूद्रटः (ख)

प्रश्नः–17 शरीरंतावदिष्टार्थ व्यवच्छिन्ना पदावली इति केनोक्तम् ?
(क) भामहेन (ख) वामनेन (ग) दण्डिना (घ) विश्वनाथेन (ग)

प्रश्नः–18 वाच्यार्थ प्रतिपादिका शक्ति र्भवति ?
(क) अभिधा (ख) लक्षणा (ग) व्यञ्जना (घ) तात्पर्या (क)

प्रश्नः–19 प्रकरणे कति अङ्का भवन्ति ?
(क) पञ्च (ख) षट् (ग) दश (घ) सप्त (ग)

प्रश्नः–20 महाकाव्ये न्यूनतः कति सर्गा: भवन्ति ?
(क) पञ्च (ख) अष्ट (ग) सप्त (घ) दश (ख)

प्रश्नः–21 साहित्य दर्पणानुसारं लक्षणायाः प्रभेदाः ?
(क) 16 (ख) 27 (ग) 36 (घ) 80 (घ)

प्रश्नः–22 विश्वनाथमते काव्यत्व सिद्धि र्भवति ?
(क) शब्दार्थाभ्याम् (ख) गुणालङ्काराभ्याम् (ग) रीतिवृत्तिभ्याम् (घ) रसात् (घ)

प्रश्नः–23 नाटके सन्ध्यो भवन्ति ?
(क) 10 (ख) 8 (ग) 5 (घ) 3 (ग)

प्रश्नः–24 नाटके अङ्गीरसो भवति ?
(क) वीरः (ख) हास्यः (ग) अद्भूतः (घ) शान्तः (क)

प्रश्नः–25 कस्यरसस्य चत्वारः प्रभेदाः सन्ति ?
(क) शृंगारस्य (ख) हास्यरसस्य (ग) करुणस्य (घ) वीरस्य (ख)

प्रश्नः–26 गङ्गाया घोषः इतीदं वाक्यमुदाहरणं भवति ?
(क) अभिधायाः (ख) रूढिपूर्विक लक्षणायाः
(ग) रूपकालङ्कारस्य (घ) प्रयोजनवती लक्षणायाः (घ)

प्रश्नः–27 साहित्यदर्पणकारमते काव्य गुणास्सन्ति ?
(क) 4 (ख) 3 (ग) 12 (घ) 13 (ख)

प्रश्नः–28 गुणीभूतव्यङ्ग्यस्य प्रभेदाः कति ?
(क) 8 (ख) 15 (ग) 7 (घ) 10 (क)

प्रश्नः–29 विश्वनाथस्य मते काव्यम् ?
(क) शब्दः (ख) शब्दार्थौ (ग) वाक्यम् (घ) पदावलिः (ग)

प्रश्नः–30 साहित्यदर्पणानुसारं शान्तरसस्य स्थायी भावोऽस्ति ?
(क) शमः (ख) निर्वेदः (ग) विवेकः (घ) माया (क)

प्रश्नः–31 नाटके नायको भवति ?
(क) धीरललितः (ख) धृष्टः (ग) शठः (घ) धीरोदात्तः (घ)

प्रश्नः–32 गणिकानायिका भवति ?
(क) नाटके (ख) प्रकरणे (ग) भाणे (घ) समवकारे (ख)

प्रश्नः–33 आत्मस्थः परस्थश्चेति द्विविधो रसः ?
(क) हास्यः (ख) वीभत्सः (ग) अद्भुतः (घ) भयानकः (क)

प्रश्नः–34 युग्मकं काव्यं भवति ?
(क) गद्यम् (ख) चम्पूः (ग) पद्यम् (घ) नाटकम् (ख)

प्रश्नः–35 अभिधापुच्छमितिव्यवहियते ?
(क) अभिधा (ख) लक्षणा (ग) व्यञ्जना (घ) तात्पर्या (ख)

प्रश्नः–36 मुख्यार्थबाधे सति भवति ?
(क) अभिधाव्यापारः (ख) लक्षणा व्यापारः (ग) व्यञ्जना व्यापारः (घ) तात्पर्यम् (ख)

प्रश्नः–37 करुणरसस्य स्थायी भावः कः ?
(क) शमः (ख) रतिः (ग) उत्साहः (घ) शोकः (घ)

प्रश्नः–38 व्यायोगे नायकः ?
(क) धीरोदात्तः (ख) धीरप्रशान्तः (ग) धीरललितः (घ) धीरोद्धत्तः (घ)

प्रश्नः–39 प्रहसनस्योदाहरणं ?
(क) प्रियदर्शिका (ख) मत्तविलासः (ख)
(ग) प्रतिज्ञायौगन्धरायणं (घ) मृच्छकटिकम्

प्रश्नः–40 वीभत्सरसस्य स्थायी भावः ?
(क) शोकः (ख) हासः (ग) भयः (घ) जुगुप्सा (घ)

प्रश्नः–41 करुणरसस्यवर्णः ?
(क) श्वेतः (ख) श्यामः (ग) नीलः (घ) कपोतः (घ)

प्रश्नः–42 वाक्यं रसात्मकं काव्यम् केनोक्तम् ?
(क) कुन्तकेन (ख) विश्वनाथेन (ग) दण्डिना (घ) भरतेन (ख)

प्रश्नः–43 साक्षात्सङ्केतितार्थस्य बोधिका –
(क) अभिधा (ख) लक्षणा (ग) व्यञ्जना (घ) तात्पर्यम् (क)

प्रश्नः–44 संकेतः कुत्र गृह्यते ?
(क) जातौ (ख) व्यक्तौ (ग)
(ग) जातिविशिष्टव्यक्तौ (घ) जातिव्यक्त्याकृतिषु

प्रश्नः–45 कस्यकाव्य लक्षणं खण्डितं विश्नाथेन ?
(क) मम्मटस्य (ख) भामहस्य (ग) राजशेखरस्य (घ) दण्डिनः (क)

प्रश्नः–46 अर्थोपक्षेपकाः उपयुज्यते ?
(क) रूपकेषु (ख) काव्येषु (ग) प्रकरण ग्रन्थेषु (घ) धर्मशास्त्रेषु (क)

प्रश्नः–47 गौर्वाहीकः इत्युदाहरणम् ?
(क) जहल्लक्षणायाः (ख) अजहल्लक्षणायाः
(ग) सारोपालक्षणायाः (घ) साध्यवसानालक्षणायाः (ग)

प्रश्नः–48 तात्पर्यार्थमङ्गी कुर्वन्ति ?
(क) अन्विताभिधानवादिनः (ख) अभिहितान्वयवादिनः
(ग) वैयाकरणाः (घ) दार्शनिकाः (ख)

प्रश्नः–49 रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्, इत्युक्तम् ?
(क) कुन्तकेन (ख) जगन्नाथेन (ग) आनन्दवर्धनेन (घ) मम्मटेन (ख)

प्रश्नः–50 आनन्दवर्धनाचार्यमतानुसारं काव्यस्यात्मा भवति ?
(क) ध्वनिः (ख) रसः (ग) रीतिः (घ) अलंङ्कारः (क)

प्रश्नः–51 सौन्दर्यमलंकारः इतिप्रतिपादितम् ?
(क) रुप्यकेन (ख) रुद्रटेन (ग) भामहेन (घ) वामनेन (घ)

प्रश्नः–52 विश्वनाथः अस्ति ?
(क) रसवादी (ख) अलंकारवादी (ग) ध्वनिवादी (घ) वक्रोक्तिवादी (ख)

प्रश्नः–53 भरतेनोक्ताः अलङ्काराः सन्ति ?
(क) चत्वारः (ख) विंशतिः (ग) पञ्च (घ) सप्त (क)

प्रश्नः–54 गङ्गायाघोषः इत्यत्र वर्तते ?
(क) उपादान लक्षणा (ख) प्रयोजनवती लक्षणा (ग) गौणीलक्षणा (घ) सारोपालक्षणा (ख)

प्रश्नः–55 व्यक्तिविवेकस्य रचयिता वर्तते ?
(क) अभिनवगुप्तः (ख) भट्टनायकः (ग) भट्टतौतः (घ) महिमभट्ट (क)

प्रश्नः–56 प्रतीयमानार्थस्य प्रतिपादिका शक्तिर्भवति ?
(क) व्यञ्जना (ख) लक्षणा (ग) अभिधां (घ) तात्पर्या (क)

प्रश्नः–57 'डिम' इति रूपके अङ्काः भवन्ति ?
(क) 5 (ख) 6 (ग) 10 (घ) 4 (घ)

प्रश्नः–58 स्थायिभावाः कति ?
(क) 8 (ख) 5 (ग) 10 (घ) 7 (क)

प्रश्नः–59 नाटके इतिवृत्तं किम् ?
(क) कल्पितम् (ख) प्रसिद्धम् (ग) अप्रसिद्धम् (घ) मिश्रम् (ख)

प्रश्नः–60 केवलरसप्रस्थानस्य प्रवर्तकः कः ?
(क) भामहः (ख) भरतः (ग) विश्वनाथः (घ) वामनः (ख)

प्रश्नः–61 रीतिरात्माकाव्यस्य इति कस्य मतम् ?
(क) रूद्रटस्य (ख) भामहस्य (ग) वामनस्य (घ) उद्भट्टस्य (ग)

प्रश्नः–62 प्रज्ञा नवनवोन्मेषशालिनीप्रतिभा मता इति केनोक्तम् ?
(क) भट्टतौतेन (ख) अभिनवगुप्तेन (ग) भट्टनायकेन (घ) महिमभट्टेन (ख)

प्रश्नः–63 आनन्दवर्धनः कस्य सभापण्डित आसीत् ?
(क) अशोकस्य (ख) शाहजहानस्य (ग) अवन्तिवर्मणः (घ) औसफ् अलेः (ख)

प्रश्नः–64 माधुर्यगुणस्य कस्मिन् रसे प्रकर्षः वर्तते ?
(क) श्रृंगारे (ख) करूणे (ग) हास्ये (घ) वीरे (क)

प्रश्नः–65 व्यभिचार्यञ्चितः को भवति ?
(क) भावध्वनिः (ख) रसध्वनिः (ग) अलंकार ध्वनिः (घ) रसाभासः (क)

प्रश्नः–66 श्रीशङ्कुमते कीदृशः स्थायी रसो भवति ?
(क) भावितः (ख) अनुमितः (ग) उत्पन्नः (घ) अभिव्यक्तः (ख)

प्रश्नः–67 रसनिष्पत्ति विषये साधारणीकरणं प्रथमतया केन प्रतिपादितम् ?
(क) शङ्कुकेन (ख) भट्टलोल्लटेन (ग) भट्टनायकेन (घ) भरतेन (ग)

प्रश्नः–68 आनन्दवर्धनमते मुधरतमः रसः कः ?
(क) करुणरसः (ख) श्रृंगाररसः (ग) हास्यरसः (घ) शान्तरसः (क)

प्रश्नः–69 अतादृशिगुणीभूत व्यङ्गये किं काव्यम् ?
(क) उत्तमोत्तमः (ख) उत्तमम् (ग) मध्यमम् (घ) अधमम् (ग)

प्रश्नः–70 अधोनिर्दिष्टेषु साध्यवसानालक्षणायाः उदाहरणं किं भवति ?
(क) गङ्गायांघोषः (ख) कुन्ताः प्रविशन्ति (ग) गौरेवायम् (घ) गौर्वाहीकः (क)

प्रश्नः–71 व्यायोगे नायकः कीदृशः ?
(क) धीरोदात्तः (ख) धीरप्रशान्तः (ग) धीरोद्धतः (घ) धीरललितः (ग)

प्रश्नः–72 रौद्ररसस्य स्थायिभावः कः ?
(क) उत्साहः (ख) भयम् (ग) जुगुप्सा (घ) क्रोधः (घ)

प्रश्नः–73 भट्टनायकस्य भुक्तिवादः कस्यमतस्यानुकूलम् ?
(क) मीमांसामतस्य (ख) सांख्यमतस्य (ग) न्यायमतस्य (घ) वेदान्त मतस्य (ख)

प्रश्नः–74 चतुर्वर्गफल प्राप्तिः सुखादल्पधियामपि, कस्येयमुक्तिः ?
(क) मम्मटस्य (ख) विश्वनाथस्य (ग) वामनस्य (घ) दण्डिनः (ख)

प्रश्नः–75 संस्कृत नाटकेषु विदुषकस्य को वर्गः ?
(क) ब्राह्मण वर्गः (ख) क्षत्रिय वर्गः (ग) वैश्य वर्गः (घ) शूद्र वर्गः (क)

प्रश्नः–76 लोकवृत्तानुकरणं नाट्यमेतन्मया कृतम् श्लोकपदोऽयं कस्मिन् शास्त्रग्रन्थे वर्तते ?
(क) धर्मशास्त्र (ख) अर्थशास्त्रे (ग) नाट्यशास्त्रे (घ) शिल्पशास्त्रे (ग)

प्रश्नः–77 मुख्यार्थबाधे तद्युक्तो ययाऽन्योऽर्थः प्रतीयते .... सा शक्तिः का ?
(क) अभिधा (ख) लक्षणा (ग) व्यञ्जना (घ) तात्पर्या (ख)

प्रश्नः–78 विश्वनाथेन कस्य काव्यलक्षणस्य खण्डनं प्रधानत्वेन कृतम् ?
(क) वामनस्य (ख) आनन्दवर्धनस्य (ग) मम्मटस्य (घ) कुन्तकस्य (ग)

प्रश्नः–79 वाग्वैदग्ध्यप्रधानेऽपि रस एवात्र जीवितम्। इत्युक्तिः दर्पणकारेण कुतः उद्धृता ?
(क) काव्यप्रकाशात् (ख) रामायणात् (ग) अग्निपुराणात् (घ) नाट्यशास्त्रात् (ग)

प्रश्नः–80 मम्मटस्य व्यङ्ग्यमूलाव्यञ्जनायाः उदाहरणं वर्तते ?
(क) निःशेषच्युतचन्दम् (ख) पश्य निश्चल निष्पदा
(ग) ग्रामं तरूणं तरूण्या (घ) माता गृहोपकरणम् (क)

प्रश्नः–81 रसः इति कः पदार्थः ?
(क) आस्वाद्यमानः (ख) श्रवणपेयः (ग) भोज्यमानः (घ) दृश्यमानः (क)

प्रश्नः–82 संग्रहकारिका निरूक्तानां वर्णनं नाट्यशास्त्रस्य कस्मिन्नाध्याये वर्तते ?
(क) द्वितीये (ख) तृतीये (ग) चतुर्थे (घ) षष्ठे (ख)

प्रश्नः–83 अविरूद्धा–विरूद्धा वा यं तिरोधातुमक्षमाः। आस्वादाङ्कुरकन्दोऽसौ भावः ...... इति सम्मतः।।
(क) सात्विकः (ख) सञ्चारी (ग) स्थायी (घ) अनुभावः (ग)

प्रश्नः–84 इतिहेतुस्तदुद्भवे इति कस्यमतम् ?
(क) जगन्नाथः (ख) हेमचन्द्रस्य (ग) वाग्भट्टस्य (घ) मम्मटस्य (घ)

प्रश्नः–85 ध्वनिप्रभेदेषु उत्कृष्टः कः ?
(क) अलंकार ध्वनिः (ख) भावध्वनिः (ग) रसध्वनिः (घ) वस्तुध्वनिः (ग)

प्रश्नः–86 नाट्यशास्त्रस्य अभिनवभारती इति व्याख्यायाः कर्ता कः ?
(क) आनन्दवर्धनः (ख) भरतः (ग) अभिनवगुप्तः (घ) धनञ्जयः (ग)

प्रश्नः–87 सात्विकभावानां संख्या भवति ?
(क) त्रयस्त्रिशत् (ख) नव (ग) अष्टौ (घ) अष्टादश (ग)

प्रश्नः–88 पण्डितराज जगन्नाथानुसारेण सामान्यवस्तु ध्वनिः गुणीभूत व्यंग्यप्रकाराश्च कस्मिन् काव्यप्रभेदेऽन्तर्भवति?
(क) उत्तमोत्तमकाव्ये (ख) उत्तमकाव्ये (ग) मध्यमकाव्ये (घ) अधमकाव्ये (ख)

प्रश्नः–89 रसोमुख्यतया अनुकार्ये रामादावेव भवति ?
(क) भट्टलोल्लटस्य (ख) शङ्कुकस्य (ग) भट्टनायकस्य (घ) अभिनवगुप्तस्य (क)

प्रश्नः–90 विश्वनाथानुसारेण शाब्दी व्यञ्जना कतिधा ?
(क) चतुर्धा (ख) द्विधा (ग) त्रिधा (घ) पञ्चमा (ख)

प्रश्नः–91 रसोमुख्यतया अनुकार्ये रामादावेव भवति इति कस्यमतम् ?
(क) भट्टलोल्लटस्य (ख) शङ्कुस्य (ग) भट्टनायकस्य (घ) अभिनवगुप्तस्य (क)

प्रश्नः–92 कारणान्यथ कार्याणि सहकारीणियानि च कस्यविषये आयाति ?
(क) रसस्वरूपविषये (ख) वस्तुस्वरूपविषये (ग) ध्वनि विषये (घ) अलङ्कार विषये (क)

प्रश्नः–93 गौरश्वः पुरुषो हस्तीति, कस्माद् हेतोः न प्रमाणम् ?
(क) पदत्वात् (ख) सन्निधरेभावात्
(ग) परस्पराङ्क्षाविरहात् (घ) योग्यता विरहात् (ग)

प्रश्नः–94 काव्यज्ञशिक्षयाभ्यासं इति ..... इयमुक्तिः कस्माद् ग्रन्थात् उद्घृता ?
(क) साहित्य दर्पणात् (ख) काव्यप्रकाशात् (ग) ध्वन्यालोकात् (घ) नाट्यशास्त्रात् (ख)

प्रश्नः–95 अपारेकाव्यसंसारे कविरेकः प्रजापतिः इति भव्यते–
(क) ध्वन्यालोके (ख) काव्यप्रकाशे (ग) नाट्यशास्त्रे (घ) दशकुमार चरिते (ग)

प्रश्नः–96 सर्गबन्धो महाकाव्यम् लक्षण केन विरचिता ?
(क) विश्वनाथेन (ख) मम्मटेन (ग) रूद्रटेन (घ) भामहेन (क)

प्रश्नः–97 अद्भुत रसस्य स्थायिभावः कः ?
(क) रतिः (ख) शोकः (ग) हासः (घ) विस्मयः (ग)

प्रश्नः–98 'अनलङ्कृती पुनः क्वापि' इति केनोक्तम् ?
(क) विश्वनाथेन (ख) मम्मटेन (ग) भामहेन (घ) दण्डेन (ख)

प्रश्नः–99 नाट्यशास्त्रानुसारं नाट्यमण्डपस्य रक्षणे कः नियुक्तः ?
(क) चन्द्रः (ख) सूर्यः (ग) अग्निः (घ) वरुणः (क)

प्रश्नः–100 नाट्यशास्त्रे प्रेक्षागृहस्य वर्णनं कस्मिन्नाध्यायेऽस्ति ?
(क) तृतीयेऽध्याये (ख) पञ्चमेऽध्याये (ग) द्वितीय अध्याये (घ) चतुर्थेऽध्याये (ग)

अध्याय–5

भाषाविज्ञान

भाषा की उत्पत्ति के सिद्धान्त

भाषा की उत्पत्ति के विषय में भाषा वैज्ञानिकों में व्यापक चिन्तन मनन हुआ है। इसी क्रम में 1866 ई. में पेरिस (फ्रांस) में भाषा विज्ञान समिति की स्थापना हुई। भाषा की उत्पत्ति पर विचार–

1. **प्रत्यक्ष मार्ग**–भाषा की उत्पत्ति के विषय में सरल विचार।
2. **परोक्ष मार्ग**–भाषाओं की वर्तमान स्थिति पर विचार। परम्परा का निर्वाह मात्र।

1. प्रत्यक्ष मार्ग के सिद्धान्त

(क) दैवी उत्पत्ति सिद्धान्त–

- भाषा की उत्पत्ति ईश्वर द्वारा।
- हिन्दू–संस्कृत, बौद्ध–पालि, जैन–अर्धमागधी, सिक्ख–पंजाबी, ईसाई–हिब्रू, मुसलमान–अरबी।

(ख) संकेत सिद्धान्त–(रुसो)

- इसे निर्णय सिद्धान्त भी कहते है। प्रतीकवाद/स्वीकारवाद।
- इसके सर्वप्रथम विचारक रुसो है।
- सामाजिक पृष्ठभूमि में संकेतिक सिद्धान्त द्वारा भाषा की उत्पत्ति हुई है।
- इस संकेत सिद्धान्त के आधार पर रिचर्ड, जोहान्सन आदि ने इंङ्गित सिद्धान्त का प्रतिपादन किया।

(ग) धातु सिद्धान्त या अनुरणन सिद्धान्त–(प्लेटों)

- इसके प्रवर्तक प्लेटो थे।
- हैज तथा मैक्समूलर ने इसे व्यवस्थित रूप प्रदान किया।

(घ) अनुकरण सिद्धान्त

- ह्विटनी, पॉल, हर्डर आदि विद्वान् इस सिद्धान्त को मानने वाले थे।
- इसे हिन्दी में अनुकरणमूलकतावाद का सिद्धान्त कहा जाता है।
- अंग्रेजी में ऑनामोटोपोयक सिद्धान्त कहते है।
- मैक्समूलर ने इसे बाऊ–बाऊ सिद्धान्त कहा है, जो कुत्ते की बोली का सूचक है।
- इस सिद्धान्त के अनुसार मनुष्य ने जिस पदार्थ अथवा प्राणी की जैसी ध्वनि सुनी, उसी का अनुकरण करते हुए उसने उसी ध्वनि के आधार पर उस–उस वस्तु या प्राणी का नामकरण कर दिया।

(ङ) आवेग सिद्धान्त

- हिन्दी में इसे मनोरागभिव्यंत्र्जकशब्दमूलकतावाद या मनोभावाभिव्यंजकतावाद भी कहा जाता है।

(च) श्रमध्वनि सिद्धान्त

- इस सिद्धान्त के प्रतिपादक प्रसिद्ध विद्वान् न्यारे है।
- इसे श्रमपरिहरणमूलकतावाद भी कहा जाता है। इसे हे–हे–हो सिद्धान्त भी कहा जाता है।

(छ) इंगित सिद्धान्त

- डॉ. राये, रिचर्ड, जोहान्सन इसके प्रतिपादक है।

(ज) सम्पर्क सिद्धान्त

- प्रसिद्ध विद्वान् जी. रेवेज इसके प्रतिपादक है।
- इनकी मान्यता है कि भाषा में पहले क्रिया शब्द बने तथा बाद में संज्ञा शब्द। इस सिद्धान्त में सम्पर्क का अर्थ है–**सामाजिक जीवों में आपसी सम्पर्क रखने की सहजात प्रवृत्ति।**

(झ) समन्वित सिद्धान्त

- हेनरी स्वीट इस सिद्धान्त के प्रणेता है।
- इसमें अनुकरण सिद्धान्त, आवेग सिद्धान्त, प्रतीक सिद्धान्त तथा उपचार सिद्धान्त का समन्वय है।

(ञ) टा–टा सिद्धान्त

इस सिद्धान्त के अनुसार आदि मानव काम करते समय जाने या अनजाने उच्चाचरणावयवों से काम करने वाले अवयवों की गति का अनुकरण करता था तथा इस अनुकरण में कुछ ध्वनियों तथा उनके संयोगों से शब्दों का उच्चारण हो जाया करता था।

(ट) संगीत सिद्धान्त

इस सिद्धान्त को संगीतवाद भी कहा जाता है। इसे प्रेम सिद्धान्त भी कहा जाता है।

2. परोक्ष मार्ग के सिद्धान्त

1. बच्चों की भाषा।
2. असभ्य जातियों की भाषा।
3. आधुनिक भाषा का इतिहास।

(ग) संस्कृत ध्वनियों के विशेष संदर्भ में मानवीय ध्वनि यन्त्र **उच्चारण स्थान/ध्वनियों का वर्गीकरण।**

माहेश्वर सूत्र–अइउण्, ऋलृक्, एओंङ्, एऔच्, हयवरट्, लँण्, जमङणनम्, झभञ्, घढधष्, जबगडदश्, खफछठथचटतव्, कपय्, शषसर् हल्।

उच्चारण स्थान–ध्वनियों के उच्चारण में वाग् यन्त्र के जिन अंग विशेषों से सहायता ली जाती है उन अंगों को उन ध्वनियों का स्थान कहा जाता है अर्थात् वर्णों के उच्चारण में जिन वाक् अवयवों का प्रयोग जहाँ से होता है, उन स्थानों को उन वर्णों का उच्चारण स्थान माना जाता है।

कण्ठ–अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः–अ, आ (18 प्रकार के अ वर्ण) कु–क वर्ग–क् ख् ग् घ् ङ् ह् तथा विसर्ग (:) का उच्चारण स्थान कण्ठ है।

तालु–इचुयशानां तालुः–इ, ई (अठारह प्रकार का इ वर्ण) चु–चवर्ग–च् छ् ज् झ्, ञ् य् तथा श् का उच्चारण स्थान तालु है।

मूर्धा–ऋटुरषाणां मूर्धा–ऋ, ॠ (अठारह प्रकार का ऋ वर्ण)–टु–ट वर्ग ट् ठ् ड् ढ् ण् र् तथा ष् का उच्चारण स्थान मूर्धा है।

दन्त–लृतुलसानां दन्ताः–(बाहर प्रकार का लृ वर्ण) तु–त वर्ग त् थ् द् ध् न् ल् तथा स् का उच्चारण स्थान दन्त है।

ओष्ठ्य–उपूपध्मानीयानाम् ओष्ठौः–उ, ऊ (अठारह प्रकार का उ वर्ण) पू–प वर्ग प् फ् ब् भ् म् और प, फ उपध्मानीय का उच्चारण स्थान ओष्ठ है।

नासिका–ञमङ्णनानां नासिका च–ञ् म् ङ् ण् न् का उच्चारण स्थान नासिका है। **नासिकाऽनुस्वारस्य** अनुस्वार का उच्चारण स्थान भी नासिका है।

कण्ठ–तालु–एदैतोः कण्ठतालुः–ए, ऐ का उच्चारण स्थान कण्ठतालु है।

कण्ठोष्ठम्–ओदौतोः कण्ठोष्ठम्–ओ, औ का उच्चारण स्थान कण्ठोष्ठ है।

दन्तोष्ठम्–वकारस्य दन्तोष्ठम्–व का उच्चारण स्थान दन्तोष्ठ है।

जिह्वामूलीय–जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम् जिन ध्वनियों में जीभ के मूल का स्पर्श होता है, उन्हें जिह्वामूलीय कहते है। क, ख ध्वनियों से पूर्व आधे विसर्ग के सदृश उच्चारण को जिह्वामूलीय कहते है।

वर्स्त्य–मुख विवर में ऊपरी दांतों के भीतरी मसूड़ों का ऊपर का खुरदरा भाग वर्स्व कहा जाता है। उदाहरणतः न्, न्ह, ल् ल्ह, र्‌ह्, स्, ज् ध्वनियाँ वर्स्त्य मानी जाती है।

उच्चारण प्रयत्न के अनुसार ध्वनियों का वर्गीकरण

ध्वनियों के उच्चारण में उच्चारणावायवों का जो व्यापार होता है, वह प्रयत्न कहलाता है। यह प्रयत्न दो प्रकार का होता है–

1. आभ्यान्तर प्रयत्न –
2. बाह्य प्रयत्न–

आभ्यन्तर प्रयत्न के अनुसार ध्वनियों का वर्गीकरण

आभ्यान्तर यत्न–वह प्रयत्न जो मुख विवर में होता है। आभ्यान्तर यत्न कहलाता है। इसके अनुसार ध्वनियों के आठ भेद होते है– (1) स्पर्श (2) संघर्षी (3) स्पर्श संघर्षी (4) अनुनासिक (5) पार्श्विक (6) लुण्ठित (7) उत्क्षिप्त (8) अर्द्ध स्वर।

व्यञ्जनों के भेद

स्पर्श–इनके उच्चारण में स्पर्श के साथ ही साथ मुख से निकलने वाली ध्वनियाँ स्पर्श व्यञ्जन कहलाती है। जैसे–(क् से लेकर म् तक)

इन ध्वनियों में दो उच्चारणावयवों के स्पर्श करने से पहले वायु क्षणभर अवरुद्ध हो जाती है तथा पुनः स्फोट सहित बाहर निकलती है, अतः ये ध्वनियाँ स्फोट कही जाती है।

स्पर्श संघर्षी–इसका आरम्भ स्पर्श से होता है तथा बाद में वायु संघर्ष करती हुई मुख से बाहर निकलती है। हिन्दी की च् छ् ज् झ् चार ध्वनियाँ स्पर्श संघर्षी होती है।

संघर्षी–इनके उच्चारण में मुखद्वार इतना संकुचित हो जाता है कि वायु घर्षण करती हुई और शीत्कार की ध्वनि के साथ निकलती है। जैसे–श् ष् स् ह् विसर्ग (:)।

अनुनासिक–जिन ध्वनियों का उच्चारण करते समय श्वास वायु मुख विवर के साथ–साथ नासिका विवर से भी निकले वे ध्वनियाँ अनुनासिक कही जाती है। (ञ, म् ङ् ण् न्) सभी स्वर।

पार्श्विक–जब मुख द्वार मध्य में बन्द हो जाता है और वायु दोनों ओर से निकल जाती है ऐसे में उच्चरित होने वाली ध्वनि पार्श्विक कहलाती है। जैसे 'ल्'।

लुण्ठित–जब मुख द्वार जिह्वा के अग्रभाग से दो–तीन बार शीघ्र खुलता और बन्द होता है तो वह ध्वनि लुण्ठित कहलाती है। जैसे–'र्'।

उत्क्षिप्त–जिनके उच्चारण में जिह्वा तालु के किसी भाग को झटके से मारकर हट जाती है, उन्हें उत्क्षिप्त कहते है। जैसे ड़, ढ़ ।

अर्धस्वर–कुछ ध्वनियाँ ऐसी होती हे जिनकी गणना तो व्यञ्जनों में होती है किन्तु इनका प्रयोग स्वरों के स्थान पर भी किया जाता है। जिनके उच्चारण में मुख द्वार अत्यधिक संकुचित हो जाता है और वायु स्वर की भाँति बीच से निकल जाती है, उस समय निकलने वाली ध्वनियों को अर्द्धस्वर कहते है–जैसे य्, व्।

संस्कृत के वैयाकरणों ने इन ध्वनियों को स्पृष्टादि पाँच भागों में विभक्त किया है–

जिनके उच्चारण में मुख द्वार अत्यधिक संकुचित हो जाता है और वायु स्वर की भाँति बीच से निकल जाती है, उस समय निकलने वाली ध्वनियों को अर्द्धस्वर कहते है– जैसे– य्, व्।

संस्कृत के वैयाकरणों ने इन ध्वनियों को स्पृष्टादि पाँच भागों में विभक्त किया है–

स्पृष्ट– 1. कादयोमावसानाः स्पर्शाः। तत्र स्पृष्टं स्पर्शानाम्।

ईषद् स्पृष्ट– 2. यणोऽन्तस्थाः। तत्र ईषद् स्पृष्टम् अन्तस्थानाम्।

ईषद् विवृतं– 3. शलः ऊष्माणः। तत्र ईषद्विवृतमूष्माणाम्।

विवृतं– 4. अचः स्वरा। विवृत्तं स्वराणाम्।

सवृत्तं– 5. सवृत्तं। ह्रस्वस्यावर्णस्यप्रयोगे सवृंत्तम्।

नोट– ह्रस्व अ वर्ण का प्रयोग दशा में संवृत्त आभ्यन्तर यत्न होता है तथा प्रक्रिया दशा में विवृत्त आभ्यन्तर यत्न होता है।

- **बाह्ययत्न के अनुसार ध्वनियों का वर्गीकरण–** मुख विवर से बाहर अर्थात् स्वरतन्त्री, उर (काकल या वक्ष) में होने वाला प्रयत्न बाह्य प्रयत्न होता है। नासिका भी मुखविवर की सीमा से बाहर ही होती है अतः नासिका से होने वाले प्रयत्न को भी विद्वान् बाह्य प्रयत्न के अन्तर्गत मानते है। इस प्रकार बाह्य प्रयत्न के तीन भेद है–
  स्वरतन्त्रीय बाह्य प्रयत्न।
  औररस्य बाह्य प्रयत्न।
  नासिक्य बाह्य प्रयत्न।
- **स्वरतन्त्रीय बाह्य प्रयत्न–**
  अघोष– क् ख्, च् छ्, त् थ्, ट् ठ्, श्, ष् स्।
  वर्गों के प्रथम तथा द्वितीय वर्ण संघर्षी वर्ण।
- **सघोष–**अ, आ, इ, ई आदि (सभी स्वर)
  ग्, घ्, ङ्
  ज्, झ्, ञ्
  ड्(ड़), ढ्(ढ़), ण्
  ब्, भ्, म्
  य्, र्, ल्, व् तथा ह्

- **औरस्य बाह्य प्रयत्न**–'उर' से तात्पर्य वक्ष (छाती) से है। उर में प्राणवायु कम या अधिक करने की क्षमता है। अतः उर सम्बन्धी ध्वनियाँ अल्पप्राण या महाप्राण के भेद से दो प्रकार की होती है।

अल्पप्राण, महाप्राण

- **अल्पप्राण**–वे ध्वनियाँ, जिनके उच्चारण में श्वासवायु का वेग अल्पप्राण कहलाती है–
  वर्गाणांप्रथमतृतीयपञ्चमयणश्चल्पप्राणः
  क्, च्, ट्, त्, प्
  ग्, ज्, ड्, द्, ब्
  ङ्, ञ्, ण्, न्, म्
  ड्, ऱ्
- **महाप्राण**–वे ध्वनिया जिनके उच्चारण में श्वासवायु का वेग अधिक रहता है, महाप्राण कहलाती है।
  वर्गाणांद्वितीयचतुर्थोशलश्चमहाप्राणः
  ख्, घ्
  छ्, झ्, ल्
  ठ् ढ् (ढ़)
  थ्, ध्
  फ्, भ्
- **नासिक्य बाह्यत्न**–अनुनासिक, अननुनासिक/ निरनुनासिक।
  (क) ङ्,ञ्, ण्, न् म् (ये ध्वनियाँ नित्य अनुनासिक है), यँ, वँ, लँ (ये विकल्प से अनुनासिक है)
  अनुस्वार (ँ) नित्य अनुनासिक ध्वनि।
  संस्कृत में 9 स्वर है अनुनासिक तथा अननुनासिक भेद से 9 गुणा 2 = 18 माने जाते है।
  (ख) **निरनुनासिक/ अननुनासिक**–जिन ध्वनियों के उच्चारण में श्वाँस वायु पूर्णतया मुखविवर से ही बाहर निकलती है। वे ध्वनियाँ अननुनासिक या निरनुनासिक कही जाती है।

केवल स्वरों का वर्गीकरण–

(1) **मात्रा के आधारपर**–इस आधार पर स्वरों के ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत तीन भेद होते है।
ह्रस्व–अ, दीर्घ–आ, प्लुत–आ३।

(2) **मुख कुहर के खुलने आधार पर**–इस आधार पर स्वरों के चार वर्ग बनाये जाते है–
I. विवृत्त।
II. ईषद्विवृत्त।
III. ईषद्संवृत्त।
IV. संवृत्त।

विवृत्त–जिन स्वरों के उच्चारण में मुख अधिक से अधिक खुला रहता है, वे विवृत्त कहलाते है– जैसे–आ।

ईषद्विवृत्त–(अर्द्धविवृत्तस्वर) जिनस्वरों के उच्चारण में मुख विवृत्त की अपेक्षा कुछ कम खुला रहता है, वे ईषद् विवृत्त कहलाते है– एँ, औं (ऐ,औ)।

संवृत्त–जिन स्वरों के उच्चारण में मुख कुहर अधिक से अधिक किन्तु इतना कि उच्चारण हो सके संकीर्ण रहता है। वे संवृत्त कहलाते है। यथा–ई, ऊ।

ईषद् संवृत्त–(अर्द्धसंवृत्तस्वर) जिन स्वरों के उच्चारण में मुखकुहर कुछ कम संवृत्त रहता है, वे ईषत्संवृत्त कहलाते है–ए, ओ।

- जिह्वा की स्थिति के आधार पर–अग्रस्वर–इ, ई, ए।
  मध्यस्वर–अ।
  पश्चस्वर–आ, उ, ऊ।
- ओष्ठों की स्थिति के आधार पर–वृत्ताकार–ऊ।
  अवृत्ताकार–आ तथा एँ।
  सामान्य– इ, ए, ऐ।
- अनुनासिकता के आधार पर–उदाहरणार्थ–
  अ, आ, इ, ई (अननुनासिक)।
  अँ, आँ, इँ, ईं (अनुनासिक)।

ध्वनियों का वर्गीकरण–

(1) **वैदिक ध्वनि समूह–**

स्वर–मुलस्वर– अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ ऌ, ए, ओ।
संयुक्तस्वर–अ+इ (ऐ), अ+उ (औ)
व्यञ्जन–स्पर्श– क्, ख्, ग्, घ्, ङ्
च्, छ्, ज्, झ्, ञ्
ट्, ठ्, ड्(ळ्) ढ,(ळ्ह) ण्
त्, थ्, द्, थ्, न्
प्, फ्, ब्, भ्, म्
अन्तःस्थ–य् (इँ), र्, ल्, व् (उ)
अघोषसंघर्षी– श्, ष्, स्
घोषऊष्म–ह्
अघोषऊष्म–ः (विसर्ग) जिह्वामूलीय, उपध्मानीय
शुद्ध अनुनासिक–ँ

(2) **संस्कृत ध्वनि समूह**

स्वर–मूलस्वर–अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ, ए, ओ।
संयुक्तस्वर– अ+इ (ऐ), अ+उ(औ)
व्यञ्जन–
स्पर्श– क् ख्, ग्, घ्, ङ्
च्, छ्, ज्, झ्,ञ्
ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्
त्, थ्, द्, ध्, न्
प्, फ्, ब्, भ्, म्
अन्तस्थ– य् (इँ), र् ल्, व् (उँ)
अघोषसंघर्षी– श्, ष्, स्

घोषऊष्म– ह्

अघोषऊष्म– :(विसर्ग)

शुद्ध अनुनासिक–ँ अनुस्वार।

डॉ. मंगलदेव शास्त्री ने संस्कृत ध्वनि समूह के वैज्ञानिक क्रम को निम्न रूपष्ठक में बहुत ही स्पष्टता के साथ प्रस्तुत किया है।

समानाक्षर– अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, लृ।

संध्यक्षर– ए, ओ, ऐ, औ।

स्पर्श– क्, ख्, ग्, घ्, ङ्।

च्, छ्, ज्, झ्, ञ्।

ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्।

त्, थ्, द्, ध्, न्।

प्, फ्, ब्, भ्, म्।

अन्तःस्थ– य्, र्, ल्, व्

घर्षक–ऊष्म श्, ष्, स्, ह्

(ङ) ध्वनिनियम

समान परिस्थितियों में, समान रूप से कोई परिवर्तन आदि की क्रिया भाषा–ध्वनि के क्षेत्र में घटित हो उसे भी, निश्चय ही ध्वनिनियम कहा जा सकता है।

ध्वनि–नियम की परिभाषा

- **श्री.टी.जी. टक्कर**–किसी भाषा का ध्वनिनियम वह कथन है, जिसका सम्बन्ध भाषा विशेष की किसी एक ध्वनि या ध्वनि समूह में विशेष काल तथा विशेष परिस्थितियों में नियमित विकार से होता है।
- **डॉ.भोलानाथ तिवारी**–किसी विशिष्ट भाषा की कुछ विशिष्ट ध्वनियों में, किसी विशिष्ट काल और दशाओं में हुए नियमित परिवर्तन या विकार को उस भाषा का ध्वनिनियम कहते है।

(1) ग्रिमनियम तथा तत्सम्बन्धी संशोधन–

(क) ग्रिम नियम।

(ख) ग्रासमैन नियम।

(ग) वर्नर उपनियम।

(घ) सादृश्य उपनियम।

(2) तालव्य नियम।

(3) मूर्धन्य नियम।

(4) ग्रीक नियम।

(5) लैटिननियम

(6) फारसी नियम तथा

(7) प्राकृतनियम।

भाषाविज्ञान में ध्वनि नियम से तात्पर्य है–मानवभाषा में प्रयुक्त ध्वनियों के परिवर्तन से सम्बन्ध रखने वाला नियम।

ध्वनिनियम–ध्वनिनियमों में सबसे प्रसिद्ध नियम 'ग्रिम–नियम' है। इसका उल्लेख जर्मन विद्वान् याकोब ग्रिम

ने सन् 1882 ई. के लगभग अपने "जर्मनभाषा का व्याकरण" ग्रन्थ में किया था। उनका यह ध्वनि–नियम दो भागों में विभक्त है, जिन्हें ग्रिमनियम कहते है। **प्रथम वर्ण परिवर्तन, द्वितीय वर्ण परिवर्तन**।

प्रथम वर्ण परिवर्तन ग्रिम नियम

प्रथम वर्ण परिवर्तन ही वस्तुतः ग्रिम नियम है। इसका सम्बन्ध मूल भारोपीय भाषा की नौ स्पर्श ध्वनियों से ही है। घ्, ध्, भ्, ग्, द्, ब्, क्, त्, प्, इस नियम का उद्देश्य यह है कि प्रागैतिहासिक काल में ही जब मूल भारोपीय भाषा से भारोपीय भाषाओं का विकास हुआ तो मूलभारोपीय भाषा की उपर्युक्त नौ ध्वनियाँ घ्, ध्, भ्, ग्, द्, ब्, क्, त्, प् संस्कृत, ग्रीक, लैटिन कुछ भारोपीय भाषाओं में तो अर्थात् उसी रूप में अर्थात् अपरिवर्तित ही रही, किन्तु जर्मनिक या ट्यूटॉनिक शाखा में–ग्, द्, ब्, क्, त्, प्, ख्, थ्, फ् में परिवर्तित हो गयी।

मूलभारोपीय भाषा की ध्वनियाँ	**भारोपीय जर्मनिक भाषा**
सघोष महाप्राण स्पर्श घ्, ध्, भ्	सघोष अल्पप्राण ग्, द्, ब्
सघोष अल्पप्राण ध्वनियाँ ग्, द्, ब्	अघोष अल्पप्राण क्, त्, प्
अघोष अल्पप्राण ध्वनियाँ क्, त्, प्	अघोष महाप्राण ख्, थ्, फ्

द्वितीय वर्ण परिवर्तन

इस नियम का सम्बन्ध केवल जर्मनभाषा से है। यह वर्ण परिवर्तन 7 वी शताब्दी ई. के लगभग उस समय घटित हुआ था। जब ऐंग्लो सैक्सन जाति के लोग उच्च जर्मन जाति के लोगों से अलग हुए थे।

इस वर्ण परिवर्तन का उद्देश्य केवल यह प्रदर्शित करना है कि उच्च जर्मन भाषा निम्न जर्मन भाषा से किस प्रकार भिन्न हुई है। यही कारण है कि इस द्वितीय वर्ण परिवर्तन का उल्लेख केवल जर्मन भाषा के व्याकरणों में ही मिलता है।

द्वितीय वर्णपरिवर्तन का सम्बन्ध भी निम्न जर्मन भाषा की 9 स्पर्श ध्वनियों से है–

निम्न जर्मन ख्, थ्, फ् ग्, द्, ब् क्, त्, प्।

उच्च जर्मन ग्, द्, ब् क्, त्, प् ख्, थ्, फ्।

3. ग्रासमान नियम–

हरमन ग्रासमेन ने ग्रिम के नियम को संशोधित किया है–ग्रासमान का समय 1809 ई. के मध्य माना गया है।

संस्कृत	**गाँथिक (अंग्रेजी)**
धधामि	दधामि
बोधति	बिउदन
दभ्	दउबस
भभार	बभार

दो सन्निकृष्ट महाप्राण ध्वनियाँ एक साथ नहीं रह सकती, उनमें प्रथम ध्वनि अल्पप्राण होती है। यह नियम ग्रासमान का है। पाणिनीय शिक्षा में ध्वनियाँ 05 वर्गों में विभक्त है।

3. वर्नर नियम

भारोपीय मूलभाषा (संस्कृत, लैटिन, ग्रीक)	**जर्मन् (गाँथिक भाषा)**
ध, ध्, भ् (घोष महाप्राण)	ग्, द्, ब्, (घोष अल्पप्राण)

ग्, द्, ब् (घोष अल्पप्राण)	क्, त्, प् (अघोष अल्पप्राण)
क्, त्, प् (अघोष अल्पप्राण)	ख्, थ्, फ् (अघोष महाप्राण)

ग्रिम महोदय द्वारा दिये गये प्रथम और द्वितीय वर्ण परिवर्तन को उक्त तालिका के द्वारा समझानें का प्रयत्न किया गया है–

आदिम भाषा (संस्कृत)	**गाँथिक भाषा**
घ् (ह) हंसः, दुहिता	ग् goose द् Daughter
ध् विधवा, धा	द् Widow, Do
भ् भातृ, भू, भरामि	ब् Brother, Be , Bear

- द्वितीय वर्ग में आदिम भाषा के ग्, द्, ब् गाँथिक में क्रम से क्, त्, प् हो जाते है।

आदिम भाषा(संस्कृत)	**गाँथिक भाषा (अंग्रेजी)**
ग् गौ, युग	क् Cow, Yoke
द द्वौ, दश	त् Two, Ten
ब् बाधन्	प् Pain

- तृतीय वर्ग में होने वाले आदिम भाषा के क्, त्, प् गाँथिक में क्रमशः ख्, थ्, फ् बन जाते है।

आदिम भाषा (संस्कृत)	**गाँथिक भाषा (अंग्रेजी)**
क् श्वन्, शतम् = केन्तुम	स् (ह्) Haund, Hundred,
त् तृण	थ् Thorn, That
प् पितृ, पाद	फ् Father, Foot

3. वर्नर नियम–बर्नर ने खोज की कि ग्रिमनियम स्वराघात पर आधारित था। यह ग्रिमनियम का अन्तिम संशोधित नियम था। उनके अनुसार यदि भारोपीय मूल–भाषा के क्, त्, प् के बाद पहले स्वराघात होगा तो परिवर्तन एक पग आगे कार्य करता है। तब ग्रासमैन के नियम की तरह ग्, द्, ब् हो जाता है।

संस्कृत	**गाँथिक**	**अंग्रेजी**
शतम्	HUNDRA	HUNDRA क्, ग्
सप्तम्	SIBAM	SEVEN त्, द्
युवशंस्	JUGGS	YOUNG प्, ब्

यहां क्रमशः त् का द्, प् का ब् एवं श् का ग् हो गया है।

4. तालव्य नियम–इस नियम का आविष्कार सन् 1857 ई॰ के लगभग थाँम्सन तथा काँलित्ज आदि विद्वानों द्वारा किया गया था। इस नियम में स्पष्ट किया गया है किस प्रकार मूलभारोपिय भाषा की कण्ठोष्ठ्य तथा शुद्ध कण्ठ्य ध्वनियाँ भारत–ईरानी शाखा में कही तो च वर्ग ध्वनियों में परिवर्तित हो जाती है और कहीं क वर्ग ही बनी रहता है।

नियम–मूल भारोपीय भाषा की कण्ठोष्ठ्य तथा शुद्ध कण्ठ्य ध्वनियाँ (क्व, ग्व आदि क्, ग् आदि) अपने तत्काल बाद इ या ए स्वर के आने पर भारत ईरानी शाखा में च वर्ग (तालव्य) ध्वनियाँ (च्, ज् आदि) में परिवर्तित हो जाती है अन्यथा के वर्ग ही बनी रहती है।

मूलभारोपीय भाषा (शब्द)		**भारत (संस्कृत)**	**ईरानी (अवेस्ता)**
किद्	>	चिद्	चितु
क्वे	>	च	च

अन्यथा–

क्वोस	>	कः	
युगोम्	>	युगम्	को

अतः स्पष्ट है कि मूल भारोपीय क् या क्व ध्वनि, अपने बाद में 'इ' या 'ए' स्वर आने के कारण तालव्य ध्वनि 'च' में परिवर्तित हो गई है अन्यथा 'क' ही रही है।

मूर्धन्य नियम–मूर्धन्य नियम के प्रणेता है– प्रोः फोर्तनातोव। इस नियम का आधार पाणिनीय अष्टाध्यायी है। इसे फाँरटूनेटोव नियम भी कहते है।

ग्रीक नियम–मूल भारोपीय भाषा के दो शब्दों में दो स्वरों के मध्य आने वाली स् ध्वनि ग्रीक में पहले ह् हो जाती है। बाद में लुप्त हो जाती है।

मूल भारोपीय		**भाषा ग्रीक भाषा**
Genesos	>	geneyhos(h)
	>	geneos (x)

लैटिननियम–

मूल भारोपीय भाषा के शब्दों में दो स्वरों के मध्य आने वाली (स्) ध्वनि लैटिन में (र्) हो जाती है।

मूल भारोपीय		**भाषा लेटिन**
Genesos	>	generos

फारसीनियम–

संस्कृत की स् तथा ज् ध्वनियाँ फारसी में क्रमशः ह् तथा ज् के रूप में मिलती है। उदाहरण–

संस्कृत		**फारसी**
सप्त	>	हफ्त
दश	>	दह
जातः (पुत्र)	>	जादह

प्राकृत नियम–

संस्कृत की व्, य् आदि ध्वनियाँ प्राकृत में ब्, ज् आदि हो जाती है।

भाषा प्रक्रिया एवं ध्वनियाँ का वर्गीकरण

सभी वर्णो में व्यक्त होती है, उसे कहते है–भाषा।

भाषा–प्रक्रियाँ वर्णन किस ग्रन्थ में है– महर्षि पाणिनि कृत शिक्षाग्रन्थ पाणिनीय शिक्षा।

प्रयत्न लाघव से क्या प्रक्रिया है–मुख–सुख।

आगम	–	स्कूल = इस्कूल	स्नान = अस्नान।
लोप	–	स्थल = थल	दुग्ध = दूध।
विकार	–	हस्त = हाथ	शाक = साग।
विपर्यय	–	डूबना = बूडना	पिशाच = पिचास।
विषमीकरण	–	कंकण = कंगन	प्रकट = प्रगट।
स्वरभक्ति	–	भ्रम = भरम।	

ध्वनि का तात्पर्य इससे है–स्वन।

ध्वनि का वर्गीकरण है–स्थान, प्रयत्न तथा करण।

(ख) भाषाओं का वर्गीकरण–

1. महाद्वीप के आधार पर
2. देश के आधार पर
3. धर्म के आधार पर
4. काल के आधार पर
5. आकृति के आधार पर
6. परिवार के आधार पर
7. प्रभाव के आधार पर

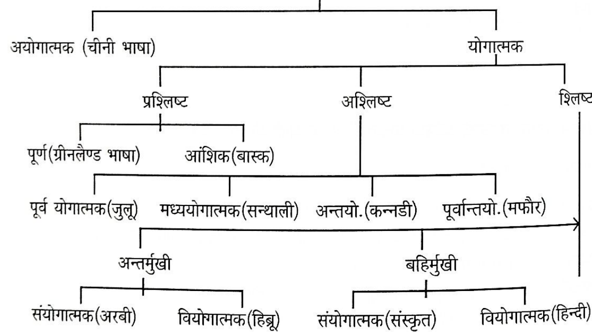
आकृतिमूलकवर्गीकरण

विश्व भर की भाषाओं में भाषा तत्व के दृष्टि से दो प्रकार की समानताएँ प्राप्त होती है।

– सम्बन्ध तत्व या प्रत्यय की समानता।
– अर्थतत्व या विवेच्य वस्तु की समानता।

- सम्बन्धतत्व या पद रचना की शैली पर आधारित वर्गीकरण को ही "आकृतिमूलकवर्गीकरण" कहा जाता है।
- इस वर्गीकरण का प्रमुख श्रेय **श्लेगल** को है।
- आकृतिमूलक वर्गीकरण का दूसरा नाम रूपात्मक वर्गीकरण भी है।
- पदरचना तथा वाक्यरचना भी आकृति के ही अन्तर्गत है, अतः इसी वर्गीकरण को पदात्मक या वाक्यमूलक भी कहा जाता है।
- इसे आकृति, रूप, रचना, पद, वाक्यमूलक वर्गीकरण के नाम से जाना जाता है।
- अंग्रेजी में इसे–Morphological या syntactical classification कहा जाता है।
- आकृतिमूलकवर्गीकरण के अन्तर्गत भाषाओं में आकृति की समानता देखी जाती है।

"आकृतिमूलकवर्गीकरण"



अयोगात्मक

वह भाषा वर्ग, जिसकी भाषाओं में अर्थतत्व (आकृति) के साथ रूपतत्व (प्रत्यय) का योग नहीं होता है।

योगात्मक

वह भाषा वर्ग, जिसकी भाषाओं में अर्थ तत्व के साथ रूप तत्व का योग होता है।

अर्थ तत्व (प्रकृति) के साथ रूप तत्व के योग की शैली के आधार योगात्मक भाषाओं को पुनः तीन विभागों में विभक्त किया जाता है।

(क) अश्लिष्ट या प्रत्यय प्रधान।
(ख) श्लिष्ट या विभक्ति प्रधान।
(ग) प्रश्लिष्ट या समास प्रधान।

इस प्रकार अयोगात्मक का एक तथा योगात्मक के 3 भेदों को जोड़कर आकृतिमूलक वर्गीकरण के आधार पर विश्व की भाषाओं को कुल चार वर्गों में विभक्त किया जाता है।

अयोगात्मक भाषाएं–हिन्दी में इस वर्ग को निरवयव या व्यासप्रधान भी कहा जाता है। इसी प्रकार अंग्रेजी में इसे Inoranic भी कहते है।

- **अयोगात्मक भाषा**–में स्थान, निपात तथा सुर का बहुत महत्व है। इस वर्ग की प्रमुख भाषा चीनी है। इसके अतिरिक्त सूडानी, बर्मी तथा स्यामी भाषाएं भी इसी वर्ग की है।
- चीनी भाषा में स्थान तथा स्वर का,
- सूडानी भाषा में स्थान का,
- स्यामी भाषा में सुर का तथा
- बर्मी–तिब्बत में निपात का विशेष महत्व है।

योगात्मक भाषाएँ

(क) अश्लिष्ट या प्रत्यय प्रधान भाषाएं

अश्लिष्ट योगात्मक भाषाओं में सम्बन्ध तत्व + अर्थतत्व से तिल तण्डुलवत् जुडा रहता है।

क. पुरः प्रत्यय संयोगी–इन वर्ग की भाषाओं में प्रत्यय, प्रकृति के पूर्व जुड़ता है। दक्षिण अफ्रीका का बाँण्टू/बन्तू परिवार।

ख. पर प्रत्यय संयोगी–इन भाषाओं में प्रत्यय प्रकृति में पर अर्थात् बाद में जुड़ता है। इन भाषाओं में युराल, अल्ताई तथा द्रविड़ परिवार आते है।

ग. मध्य प्रत्यय संयोगी–इस वर्ग की भाषा में प्रत्यय प्रकृति के मध्य में जुड़ता है।

- भारत की संथाली भाषा।
- मलय भाषा परिवार की टगलाँग भाषा।

घ. पूर्वान्त प्रत्यय संयोगी– न्यूगिनी द्वीप की भाषा। इसमें प्रत्यय प्रकृति के पहले तथा बाद में मिलता है।

ड. सर्व प्रत्यय संयोगी– सर्व प्रत्यय संयोगी–मलय भाषा।

च. ईषत्प्रत्यय संयोगी– बास्क भाषा जापानी, न्यूजीलैन्ड तथा हवाई द्विप की भाषाएँ।

(ख) श्लिष्ट या विभक्ति प्रधान भाषाएँ

श्लिष्ट से यहाँ तात्पर्य है– प्रकृति से प्रत्यय का घनिष्ठता के साथ संयुक्त होना। संस्कृत, ग्रीक, लैटिन तथा अरबी इस वर्ग की प्रमुख भाषाएं है।

अन्तर्मुखी विभक्ति प्रधान

इसमें विभक्ति, प्रकृति के अन्दर ही जुड़ती है। सामी परिवार की प्रमुख भाषा अरबी तथा हामी परिवार की मिस्त्री भाषाएं इसी प्रकार की है। अन्तर्मुखी विभक्ति प्रधान भाषाओं में भी दो अवस्थाएँ दृष्टिगोचर होते है–

संयोगात्मक–अरबी।
वियोगात्मक– हिब्रू।

बहिर्मुखी विभक्ति प्रधान भाषाएँ

इनमें विभक्ति (प्रत्यय) प्रकृति के बाहर जुड़ती है। यह प्रकृति के पूर्व भी जुड़ सकती है तथा बाद में भी। भारोपीय परिवार की भाषाएं संस्कृत–ग्रीक–लैटिन–अवेस्ता आदि इसी वर्ग की है।

संयोगात्मक– संस्कृत।
वियोगात्मक– हिन्दी।

(ग) प्रश्लिष्ट या समास प्रधान भाषाएं

इन भाषाओं के शब्द रूपों में प्रकृति या प्रत्यय की पृथक्–पृथक् कल्पना करना कठिन होता है। उन्हें पृथक्–पृथक् रूप से अलग नहीं किया जा सकता।

उत्तरी अमरीका की चेरोकी नामक भाषा, ग्रीनलैण्ड की एस्किमों भाषा तथा पिरेनीज पर्वतमाला की बास्क नामक भाषा।

(घ) पूर्ण प्रश्लिष्ट या पूर्णतया समास प्रधान भाषाएं

इन भाषाओं में प्रकृति तथा प्रत्यय आदि के रूप में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि कर्त्ता, कर्म, क्रिया आदि सबको एक समान, समस्त पद के रूप में प्रयुक्त किया जाता है।

उत्तरी अमरीका की चेरोकी नामक भाषा।
नाधोलिनिन
नतेन– लाना (क्रिया)
अमोखोल– नौका (संज्ञा, कर्म)
निन– हम (सर्वनाम, सम्प्रदान)

(ङ) आंशिक प्रश्लिष्ट या आंशिक समास प्रधान भाषाएं

इनमें पूर्ण प्रश्लिष्ट की भाँति कर्ता, क्रिया, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि सबका समास न होकर मुख्य रूप से सर्वनाम तथा क्रिया का ही समास होता है।

पिरेनीज पर्वतमाला में बोली जाने वाली भाषा बास्क इसके अन्तर्गत– हर्कात् नकासु दकार्कि ओत्।

भारतीय आर्य भाषाएँ

1. प्राचीन भारतीय आर्य भाषाएं–1500 ई.पू.–500 ई.पू. तक (1000वर्ष)
   1. वैदिक संस्कृत ध्वनियाँ– 52।
   2. लौकिक संस्कृत ध्वनिया–48।
2. मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएं– 500 ई.पू.–1000 ई. तक (1500 वर्ष)
   (क) पालि 500 ई.पू. से प्रारम्भ तक 500 वर्ष प्राचीन प्राकृत (पालि) अशोक का शिलालेख प्राकृत (प्रथम प्राकृत)।
   (ख) मध्यकालीन प्राकृत–ई. से 500 ई. तक।
   क. शौरसेनी।
   ख. महाराष्ट्री। द्वितीय प्राकृत।

ग. मागधी।
घ. अर्धमागधी।
ङ पैशाची।

(ग) अपभ्रंश– 500ई. से 1000ई. तक (500वर्ष) तृतीय प्राकृत।
आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ 1000ई. से वर्तमान तक 1000 वर्ष।
नव्य भारतीय आर्य भाषाकाल।
द्रविड़ भाषा को छोड़कर हिन्दी, गुजराती, मराठी, उडिया, बंगला, असमिया, राजस्थान।

प्रश्नोत्तर

(क) भाषा की उत्पत्ति के प्रमुख सिद्धान्त

प्र. 1. भाषा विज्ञान, भाषा की उत्पत्ति, उसकी बनावट उसके विकास तथा उसके ह्रास की वैज्ञानिक व्याख्या करता है? कथन है ?
उत्तर– डॉ. श्याम सुन्दर दास।
प्र. 2. भाषा वह साधन है, जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों पर भली भाँति प्रकट कर सकता है और दूसरों के विचार स्वयं स्पष्ट रूप से समझ सकता है, यह कथन किसका है ?
उत्तर– महर्षि पतञ्जलि।
प्र. 3. ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा विचारों को प्रकट करना ही भाषा है ?
उत्तर– हैनरी स्वीट।
प्र. 4. भाषा का मूलतम संघटक है ?
उत्तर– ध्वनि।
प्र. 5. भाषा की लघुतम सार्थक इकाई है?
उत्तर– स्वनिम।
प्र. 6. भाषा विज्ञान है ?
उत्तर– भाषाणामध्ययनम्।
प्र. 7. 'वक्ता वाचि वर्णां येषां त इमे व्यक्त वाचः' भाषा की यह परिभाषा कहाँ से उद्धृत है ?
उत्तर– महाभाष्य।
प्र. 8. भाषा विज्ञान का अंग नही है ?
उत्तर– ज्ञान।
प्र. 9. भाषा शब्द की उत्पत्ति भाष् से हुई है, जिसका अर्थ है ?
उत्तर– बोलना।
प्र. 10. भाषा मानव के उच्चारणावयों से उच्चारित ध्वनि प्रतीकों की वह संरचनात्मक व्यवस्था है ?
उत्तर– डॉ. भोलानाथ।
प्र. 11. किस वेदांग में ध्वनि विज्ञान की विवेचना है ?
उत्तर– शिक्षा।
प्र. 12. भाषा विज्ञान परिषद् की स्थापना कब हुई ?
उत्तर– 1866।

प्र. 13. मानव भाषा के अध्ययन का प्रमुख तत्व है ?
उत्तर– ध्वनि।
प्र. 14. इदमन्धतमः कृत्स्नं जायेत भुवनत्रयम्। यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते।। कथन किस ग्रन्थकार से निसृत है ?
उत्तर– दण्डी।
प्र. 15. प्रगतिवादी है ?
उत्तर– व्याकरण।
प्र. 16. नेपाली भाषा की लिपि है ?
उत्तर– नेवारी।
प्र. 17. 'भाषा विज्ञान समिति' की स्थापना कब–कहाँ हुई थी ?
उत्तर– 1866 (फ्रांस)।
प्र. 18. भाषा की उत्पत्ति पर विचार के लिए विद्वानों ने दो मार्गों का आश्रय लिया है, वह है ?
उत्तर– प्रत्यक्ष तथा परोक्ष मार्ग।
प्र. 19. भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन है ?
उत्तर– आधुनिक युग की देन।
प्र. 20. आधुनिक गुरुमुखी लिपि किस लिपि से उद्धृत है ?
उत्तर– शारदा लिपि।
प्र. 21. भाषा की उत्पत्ति से सम्बन्धित सर्वप्राचीन सिद्धान्त है ?
उत्तर– दैवी उत्पत्ति सिद्धान्त।
प्र. 22. देवभाषा है ?
उत्तर– संस्कृत।
प्र. 23. विज्ञान तथा तर्क पर आधारित जो सिद्धान्त खरा नहीं उतरता, वह सिद्धान्त है?
उत्तर– दैवी सिद्धान्त।
प्र. 24. निर्णय सिद्धान्त है ?
उत्तर– संकेत सिद्धान्त।
प्र. 25. संकेत सिद्धान्त के जन्मदाता है ?
उत्तर– रुसो।
प्र. 26. संकेत सिद्धान्त किस सिद्धान्त का जन्मदाता है ?
उत्तर– इङ्गित सिद्धान्त।
प्र. 27. धातु सिद्धान्त का अपर नाम है ?
उत्तर– अनुरणन सिद्धान्त।
प्र. 28. धातु सिद्धान्त के प्रणेता है ?
उत्तर– प्लेटो।
प्र. 29. बाऊ–बाऊ का सिद्धान्त है ?
उत्तर– अनुकरण सिद्धान्त।
प्र. 30. मैक्समूलर ने किस सिद्धान्त की आलोचना की थी ?
उत्तर– अनुकरण सिद्धान्त।

प्र. 31. प्रतीकवाद सिद्धान्त है ?
उत्तर– धातु सिद्धान्त ।
प्र. 32. 'डिंग–डांगवाद या रणन सिद्धान्त' है ?
उत्तर– धातु सिद्धान्त।
प्र. 33. धातु सिद्धान्त को व्यवस्थित रूप देने का कार्य किसने किया है ?
उत्तर– प्रो॰ हेस।
प्र. 34. शब्दानुकरणवाद सिद्धान्त है ?
उत्तर– अनुकरण सिद्धान्त।
प्र. 35. 'मनोरागाभिव्यंजक शब्द मूलकतावाद' का सिद्धान्त है ?
उत्तर– आवेग सिद्धान्त ।

नोट–आवेग सिद्धान्त को मनोभावाभिव्यक्तिवाद, मनोरागमूलकतावाद, पूह–पूहवाद, शब्दमूलकतावाद सिद्धान्त भी कहते है।

प्र. 36. श्रमध्वनि सिद्धान्त के प्रतिपादक है ?
उत्तर– न्यारे।
प्र. 37. श्रमध्वनि सिद्धान्त के अपर नाम है ?
उत्तर– यो–हे–हो वाद, श्रम–परिहरणमूलकतावाद।
प्र. 38. हियो– हियो, हैया–हैया, हूँ–हूँ किस सिद्धान्त का परिचायक है ?
उत्तर– श्रम–ध्वनि सिद्धान्त।
प्र. 39. जब मनुष्य पानी पीता था तो ओठो को पास लाकर अन्दर को श्वांस खींचने में 'पा–पा' जैसी ध्वनि होती थी। उसी से पानी–पीना–पिपासा आदि शब्दों का विकास हुआ। भाषा की उत्पत्ति में यह किस सिद्धान्त की ओर संकेत करता है ?
उत्तर– इंगित सिद्धान्त।
प्र. 40. इंगित सिद्धान्त के प्रणेता है ?
उत्तर– राये।
प्र. 41. सम्पर्क सिद्धान्त के प्रणेता है
उत्तर– जी. रेवेज।
प्र. 42. आंशिक रूप से भाषा की उत्पत्ति के सिद्धान्त की अभिव्यक्ति का सिद्धान्त है ?
उत्तर– सम्पर्क सिद्धान्त।
प्र. 43. समन्वित सिद्धान्त के जनक है ?
उत्तर– हेनरी स्वीट।
प्र. 44. समन्वित सिद्धान्त में समायोजित सिद्धान्त है ?
उत्तर– अनुकरण–आवेग–प्रतीक–उपचार।
प्र. 45. किस सिद्धान्त के आरम्भ में आदिम मानव काम करते समय जाने–अनजाने उच्चारण अवयवों से काम करने वाले अवयवों की गति का अनुकरण करता था ?
उत्तर– टा–टा सिद्धान्त।
प्र. 46. संगीत सिद्धान्त का अपर नाम है ?
उत्तर– प्रेम सिद्धान्त।

प्र. 47. भाषाशास्त्र भाषाविज्ञान का पर्याय है, कथन है ?
उत्तर– भोलानाथ तिवारी।
प्र. 48. प्राचीन भाषा साहित्य एवं शिलालेखीय भाषा के अध्ययन के लिए भाषाविज्ञान का प्रयोग सर्वप्रथम कहाँ हुआ ?
उत्तर– अमेरिका।
प्र. 49. भाषाशास्त्र शब्द के प्रयोग को अनुचित माना है ?
उत्तर– डॉ. बाबूराम सक्सेना।
प्र. 50. भाषा के व्याकरणिक स्वरूप के विकास का अध्ययन भाषाविज्ञान के जिस अंग में किया जाता है, वह है ?
उत्तर– रूपविज्ञान।
प्र. 51. स्वरूप की दृष्टि से वाक्य विज्ञान के भेद है ?
उत्तर– 4।
प्र. 52. व्यतिरेकी भाषा विज्ञान की प्रमुख विशेषता है ?
उत्तर– एककालिक।
प्र. 53. कोशविज्ञान तथा व्युत्पत्तिविज्ञान को अंग माना गया है ?
उत्तर– शब्दविज्ञान।
प्र. 54. संस्कृत वाङ्मय में ध्वनिविज्ञान का प्राचीन नाम है ?
उत्तर– शिक्षा।
प्र. 55. अनुनासिक वर्णों की संख्या है ?
उत्तर– 5।
प्र. 56. पालि–भाषा में यह सन्धि नहीं है ?
उत्तर– विसर्ग।
प्र. 57. केवल वैदिक संस्कृत में पाया जाने वाला लकार है ?
उत्तर– लेट्।
प्र. 58. उच्चरित ध्वनि संकेतों की सहायता से भाव या विचार की पूर्व अभिव्यक्ति भाषा है, यह किसका मत है ?
उत्तर– देवेन्द्रनाथ शर्मा।
प्र. 59. तुलनात्मक एवं ऐतिहासिक पद्धति के आधार पर किन भाषाओं का निर्धारण किया गया है ?
उत्तर– भारोपीय भाषा।
प्र. 60. भाषाओं के वर्गीकरण का श्रेय किसको है ?
उत्तर– F. Schlegel।
प्र. 61. ऐतिहासिक भाषा विज्ञान में सहायक होता है ?
उत्तर– तुलनात्मक भाषा विज्ञान।
प्र. 62. भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन मनोविज्ञान के बिना असम्भव है ?
उत्तर– स्टाइन्थाल।
प्र. 63. अर्थ विज्ञान के प्रथम प्रतिपादक थे ?
उत्तर– मैक्समूलर।

प्र. 64. भाषाविज्ञान के प्रथम अमेरिकी विद्वान् है ?
उत्तर– विलियम हिव्टनी।
प्र. 65. निकोलस मैडविग के सिद्धान्तों का प्रमुख आधार क्या है ?
उत्तर– तर्कवाद।

(ख) उच्चारणस्थान

प्र. 66. ध्वनि विज्ञान का अपर नाम है ?
उत्तर– स्वन विज्ञान।
प्र. 67. संस्कृत में ध्वनि विज्ञान का प्राचीन नाम क्या है ?
उत्तर– शिक्षाशास्त्र ।
प्र. 68. ध्वनि अध्ययन के कितने आधार है ?
उत्तर– उच्चारण, प्रसरण या संवहन, श्रवण।
प्र. 69. किसी भी वस्तु से किसी भी तरह का कुछ ऐसा हो जो सुना जा सके, उसे सामान्यतया कहते है ?
उत्तर– ध्वनि।
प्र. 70. वह ध्वनि, जिसके उच्चारण में हवा अबाध गति से मुख विवर से निकल जाती है, कहलाती है ?
उत्तर– स्वर।
प्र. 71. जिसके उच्चारण में हवा अबाध गति से नहीं निकल पाती है, वह ध्वनि है ?
उत्तर– व्यञ्जन।
प्र. 72. स्वरतन्त्रियो के बीच में जो खुला अंश रहता है, उसका नाम है ?
उत्तर– काकल।
प्र. 73. निःश्वास वायु को जहाँ अवरुद्ध करते है, वह है ?
उत्तर– स्थान।
प्र. 74. उच्चारण स्थान कितने है ?
उत्तर– 8।
प्र. 75. ह् का उच्चारण स्थान है ?
उत्तर– कण्ठ।
प्र. 76. किसी ध्वनि के उच्चारण में लगने वाला काल कहा जाता है ?
उत्तर– मात्रा।
प्र. 77. ह्रस्वार्ध है ?
उत्तर– य्।
प्र. 78. किसी भी ध्वनि के उच्चारण में मुख विवर से लेकर कण्ठ पर्यन्त जो प्रयास करना पड़ता है, उसे कहते है ?
उत्तर– प्रयत्न।
प्र. 79. प्रयत्न कितने प्रकार का होता है ?
उत्तर– 2।
प्र. 80. आभ्यन्तर यत्न कितने प्रकार का होता है ?
उत्तर– 5।

प्र. 81. बाह्य यत्न कितने प्रकार का होता है ?

उत्तर– 11।

प्र. 82. ध्वनियाँ कितने प्रकार की होती है ?

उत्तर– 2।

प्र. 83. दाँतों से लगा हुआ खुरदरा कठोर भाग इसे भ्रम से कहते है ?

उत्तर– वर्स्व।

प्र. 84. घोष ऊष्म है ?

उत्तर– ह्।

प्र. 85. संस्कृत में स्वर है ?

उत्तर– 11।

(वैदिक ध्वनिसमूह)

स्वर

मूल स्वर– अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, लृ, ए, ओ (11)
संयुक्त स्वर– अ+इ (ऐ) अ+उ (औ)

व्यञ्जन

स्पर्श–क्, ख्, ग्, घ्, ङ् (कण्ठ्)
च्, छ्, ज्, झ्,ञ् (तालु)
ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण् (मूर्धन्य)
त्, थ्, द्, ध्, न् (दन्त्य)
प्, फ्, ब्, भ्, म् (ओष्ठ्य)
अन्तःस्थ– य् (इँ), र्, ल्, व् (उ)
अघोष संघर्षी– श्, ष्, स्
घोष ऊष्म– ह्
अघोष ऊष्म– (विसर्ग): (जिह्वामूलीय) (उपध्मानीय)
शुद्ध अनुनासिक–ँ (अनुस्वार)

संस्कृत ध्वनि समूह

स्वर

मूल स्वर– अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, लृ, ए, औ (11)
ह्रस्व स्वर– अ, इ, उ, ऋ, लृ (5)
दीर्घ स्वर– आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ओ (6)
संयुक्त स्वर– अ+इ=(ऐ) अ+उ=(औ) (2)

व्यञ्जन

स्पर्श व्यञ्जन– क्, ख्, ग्, घ्, ङ् (कण्ठ्)

च्, छ्, ज्, झ्,ञ् (तालु)
ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण् (मूर्धन्य)
त्, थ्, द्, थ्, न् (दन्त्य)
प्, फ्, ब्, भ्, म् (ओष्ठ्य) (25)
अन्तःस्थ व्यञ्जन– य् (इँ), र्, ल्, व् (उँ) (4)।
अघोष सघर्षी– श्, ष्, स्।
घोष ऊष्म– ह्।
अघोष ऊष्म– : विसर्ग।
शुद्ध अनुनासिक–ँअनुस्वार।

प्र. 86. उरस्य ध्वनियाँ है ?

उत्तर– : विसर्ग तथा ह्।

प्र. 87. कखाभ्यां प्रागर्धा विसर्ग सदृशौ .....?

उत्तर– जिह्वामूलीय।

प्र. 88. उच्चारणावयवों के परिचय से ज्ञात होता है कि कण्ठ पिटक अथवा स्वरयन्त्र में दो लचीली स्वरतन्त्रियाँ होती है। श्वासनलिका से प्रवाहित वायु इन्हीं स्वरतन्त्रियों के मध्य से होकर जब निकलती है, तब सामान्य ध्वनि उत्पन्न होती है। इन्हीं स्वरतन्त्रियों के मध्य स्थित वायु मार्ग को कहते है ?

उत्तर– काकल।

प्र. 89. जिह्वा जहाँ से प्रारम्भ होती है, उसका मूलस्थान कहलाता है ?

उत्तर– जिह्वामूलीय।

प्र. 90. जिह्वामूलीय है ?

उत्तर– ≍ क, ≍ ख

प्र. 91. न्, न्ह्, ल्, ल्ह्, र् ह्, स्, ज् ध्वनियाँ है ?

उत्तर– वर्स्व्य।

प्र. 92. स्पर्श व्यञ्जन कितने है ?

उत्तर– 25।

प्र. 93. स्पर्श सघर्षी व्यञ्जन है ?

उत्तर– च्, छ्, ज्, झ्।

प्र. 94. आभ्यान्तर प्रयत्न के अनुसार ध्वनियों के कितने भेद प्राप्त होते है ?

उत्तर– 8। ये आठ भेद निम्नलिखित है– स्पर्श, संघर्षी, स्पर्शसंघर्षी, अनुनासिक, पार्श्विक, लुण्ठित, उत्क्षिप्त, अर्द्धस्वर।

प्र. 95. जिन व्यञ्जनों के उच्चारण में जिह्वा कण्ठ से लेकर ओष्ठपर्यन्त सम्बन्धित स्थानों का प्रयत्न करती है, उसे कहते है ?

उत्तर– स्पर्श।

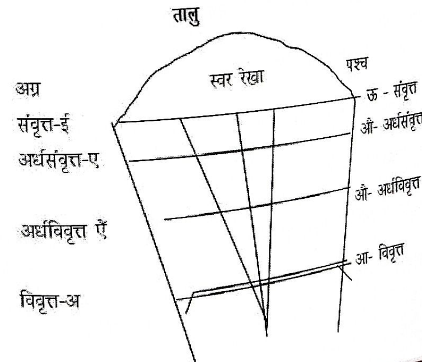
प्र. 96. जिन व्यञ्जनों के उच्चारण में स्पर्श के साथ–साथ निःश्वास के निकलने से हल्का सा संघर्षण होता है, उन्हें कहते है?

उत्तर– स्पर्शसंघर्षी।

प्र. 97. संघर्षी ध्वनियाँ है ?
उत्तर– श्, ष्, स्, ह्, विसर्ग (:)।
प्र. 98. पार्श्विक ध्वनि है ?
उत्तर– ल्।
प्र. 99. लुण्ठित ध्वनि है ?
उत्तर– र्।
प्र. 100. अर्धस्वर है ?
उत्तर– य्, व्।
प्र. 101. उत्क्षिप्त व्यञ्जन है ?
उत्तर– ड्, ढ्।
प्र. 102. अनुनासिक व्यञ्जन है ?
उत्तर– ङ्, ञ्, ण्, न्, म्।
प्र. 103. अन्तस्थ का दूसरा नाम है ?
उत्तर– अर्धस्वर।
प्र. 104. पाणिनीय शिक्षा में ध्वनियाँ कितने वर्गों में विभक्त है ?
उत्तर– 5।
प्र. 105. 'अ' कौनसा स्वर है ?
उत्तर– केन्द्रीय स्वर।
प्र. 106. 'ऐ' कौनसा स्वर है ?
उत्तर– अर्धविवृत्त।
प्र. 107. 'ई' से संकेतित स्वर है ?
उत्तर– अग्र।
प्र. 108. 'ओ' कौनसा स्वर है ?
उत्तर– अर्धसंवृत्त।
प्र. 109. बाह्ययत्न श्वांस का दूसरा नाम क्या है ?
उत्तर– अघोष।
प्र. 110. सघोष का अपर नाम है ?
उत्तर– घोष, नांद।
प्र. 111. स्वरों का वर्गीकरण निम्न में से किस आधार पर नहीं होता है ?
उत्तर– तालु।
प्र. 112. जिन स्वरों के उच्चारणकाल में मुख अधिक खुला रहता है,वे कहलाते है ?
उत्तर– विवृत्त।
प्र. 113. विवृत्तस्वर है ?
उत्तर– आ।
प्र. 114. जिन स्वरों के उच्चारण में मुख विवृत की अपेक्षा कम खुला रहता है, वे कहलाते है ?
उत्तर– ईषद् विवृत्त।
प्र. 115. ऍ–ऑ है ?
उत्तर– ईषद् विवृत्त।

प्र. 116. जिन स्वरों के उच्चारण में मुख कुहर अधिक से अधिक किन्तु इतना कि उच्चारण हो सके, संकीर्ण रहता है, वे कहलाते है ?
उत्तर– संवृत्त।
प्र. 117. संवृत्त है ?
उत्तर– अ–आ।
प्र. 118. ईषत्संवृत्त है ?
उत्तर– ए, ओ
प्र. 119. अग्रस्वर है ?
उत्तर– इ, ई, ए।
प्र. 120. मध्यस्वर है ?
उत्तर– अ।
प्र. 121. पश्च स्वर है ?
उत्तर– आ उ ऊ।
प्र. 122. वृत्ताकार स्वर है ?
उत्तर– ऊ।
प्र. 123. अवृत्ताकार है ?
उत्तर– आ, एँ।
प्र. 124. अँ–आँ स्वर है ?
उत्तर– अनुनासिक।
प्र. 125. मानस्वर के प्रणेता है ?
उत्तर– डैनियल जोन्स।
प्र. 126. मानस्वर में कुल कितने स्वरों का प्रयोग हुआ है ?
उत्तर– 8।

डेनियल जोन्स कृत मानस्वर रेखाचित्र



मानस्वर के अपर नाम– आदर्शस्वर, मूलस्वर, आधारस्वर।

अग्रस्वर– ई, ए, ऍं, अ।

पश्च स्वर– उ, ओ, ऑं, आ।

चित्र–4 डॉ. मंगलदेव शास्त्री ने संस्कृत ध्वनि समूह के वैज्ञानिक क्रम को निम्नारेख से समझते है–

स्वर–समानाक्षर– अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ

संध्यक्षर– ए, ऐ, ओ, औ।

व्यञ्जन– स्पर्श–**कण्ठ्य्**– क्, ख्, ग्, घ्, ङ्

तालव्य– च्, छ्, ज्, झ्,ञ्

मूर्धन्य– ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्

दन्तय– त्, थ्, द्, ध्, न्

ओष्ठ्य– प्, फ्, ब्, भ्, म्

अन्तस्थ– य्, व्, र्, ल्

घर्षक– ऊष्म– श्, ष्, स्, ह्

प्र. 127. अनुकरण को मनुष्य का सबसे बड़ा गुण माना है ?

उत्तर– अरस्तू।

प्र. 128. मानस्वरतन्त्र प्रतिसेकण्ड में कितने चक्र कम्पन करने के लिए समर्थ है ?

उत्तर– 42–2048 चक्र।

प्र. 129. मानस्वरतत्र प्रति सेकण्ड में कितनी बार अनावृत्त और संवृत्त होने के लिए समर्थ है ?

उत्तर– 800।

प्र. 130. सामान्य वार्तालाप में पुरुषों में स्वरतन्त्र की कम्पन गति है ?

उत्तर– 109–163 चक्र/सेकण्ड।

प्र. 131. सामान्य वार्तालाप में स्त्रियों में स्वरतन्त्र की कम्पन गति है ?

उत्तर– 228–326 चक्र/सेकण्ड।

प्र. 132. भाषा विज्ञान में स्वनिम शब्द का प्रथम प्रयोग किसके द्वारा और कब किया जाता है

उत्तर– प्रो. हैवेट महोदयेन– 1876A.D.।

प्र. 133. मानस्वर चतुर्भुज की कल्पना किसके द्वारा कि गई थी ?

उत्तर– प्रो. डेनियल जॉन्स।

प्र. 134 भाषाध्वनियों के वर्गीकरण का आधार है ?

उत्तर– स्थान–प्रयत्न–करण।

प्र. 135. भाषा ध्वनियों के वर्गीकरण में मुख्यतया कितने आधार स्वीकार किये गये है ?

उत्तर– 3।

प्र. 136. अ वर्ण का उच्चारण स्थान है ?

उत्तर– कण्ठ।

प्र. 137. ह् तथा क् वर्ग के वर्णो का उच्चारणस्थान है ?

उत्तर– कण्ठ।

प्र. 138. इकार का उच्चारण स्थान है ?

उत्तर– तालु।

प्र. 139. 'यू' का उच्चारण स्थान है ?

उत्तर– तालु।

प्र. 140. ऋकार का उच्चारण स्थान है ?

उत्तर– मूर्धा।

प्र. 141. च वर्ग के वर्णो का उच्चारण स्थान है ?

उत्तर– तालु।

प्र. 142. 'रेफ' का उच्चारण स्थान है ?

उत्तर– मूर्धा।

प्र. 143. मूर्धा उच्चारण स्थान है ?

उत्तर– र्, ऋ वर्ण, ट वर्ग।

प्र. 144. 'ष्' का उच्चारण स्थान है ?

उत्तर– मूर्धां।

प्र. 145. ऌकार का उच्चारण स्थान है ?

उत्तर– दन्ता।

प्र. 146. त वर्ग और लकार का उच्चारण स्थान क्या है ?

उत्तर– दन्ता।

प्र. 147. उकार व प वर्ग का उच्चारण स्थान है ?

उत्तर– ओष्ठ।

प्र. 148. 'ञमङणनानाम्' ....?

उत्तर– नासिका।

प्र. 149. अधोलिखित वर्णो में कण्ठोष्ठ्य वर्ण है ?

उत्तर– औ।

प्र. 150. निम्नलिखित में दन्तोष्ठ्य वर्ण है ?

उत्तर– व्।

प्र. 151. आभ्यन्तरयत्न कितने प्रकार के होते है ?

उत्तर– 5।

प्र. 152. स्पृष्ट प्रयत्न है ?

उत्तर– स्पर्शानाम्।

प्र. 153. ईषत्स्पृष्टम्.....?

उत्तर– अन्तस्थानाम्।

प्र. 154. ईषद् विवृत्तम्.....?

उत्तर– ऊष्माणाम्।

प्र. 155. स्वराणाम्.....?

उत्तर– विवृत्तं।

प्र. 156. ह्रस्वस्यावर्णस्य प्रयोगे.....?

उत्तर– संवृत्तम्।

प्र. 157. बाह्य प्रयत्न कितने प्रकार के होते है ?
उत्तर– 11।
प्र. 158. खर् वर्णाः भवन्ति ?
उत्तर– श्वासा अघोषाश्च।
प्र. 159. हश् प्रत्याहार के वर्णों का बाह्ययत्न है ?
उत्तर– संवार और घोष।
प्र. 160. वर्गाणां प्रथम तृतीय–पञ्चमयणश्च.....?
उत्तर– अल्पप्राणः।
प्र. 161. वर्गाणां द्वितीय चतुर्थो शलश्च.....?
उत्तर– महाप्राणः।
प्र. 162. उ, ऊ, ओ, औ ये किस प्रकार के स्वर है ?
उत्तर– वर्तुल।
प्र. 163. डेनियल जॉन्स महोदय किस विश्वविद्यालय में प्रोफेसर थे ?
उत्तर– लन्दन विश्वविद्यालय।
प्र. 164. भाषा विज्ञान की नवीनतम शाखा का क्या नाम है ?
उत्तर– मनोभाषा विज्ञान ।
प्र. 165. अर्थविज्ञान का मूल आधारभूत विज्ञान है ?
उत्तर– मनोविज्ञान।
प्र. 166. प्रत्यक्षतः भाषा की उत्पत्ति से सम्बन्धित सिद्धान्त है ?
उत्तर– दैवी उत्पति सिद्धान्त।
प्र. 167. वाक्य विज्ञान स्वरूप की दृष्टि से कितने प्रकार का है ?
उत्तर– 4।
प्र. 168. भाषा विज्ञान के प्रथम अमेरिकन् विद्वान् थे ?
उत्तर– विलियम ह्विटनी

(ग) ध्वनिनियम

प्र. 169. सभी देशकालो में, समान परिस्थितियों में, समान रूप से घनिष्ठ क्रिया को कहते है ?
उत्तर– नियम।
प्र. 170. किसी भाषा का ध्वनि नियम वह कथन है, जिसका सम्बन्ध भाषा विशेष की किसी एक ध्वनि में, विशेषकाल तथा विशेष परिस्थितियों में होने वाले नियमित विकार से होता है। कथन है ?
उत्तर– श्री.टी.जी टकर।
प्र. 171. किसी विशिष्ट भाषा की कुछ विशिष्ट ध्वनियों में, किसी विशिष्ट काल और विशिष्ट दशाओं में हुए नियमित परिवर्तन या विकार को उस भाषा का ध्वनि नियम कहते है, उपर्युक्त मत किस विद्वान् का है
उत्तर– डॉ. भोलानाथ तिवारी।
प्र. 172. मानव भाषा में प्रयुक्त ध्वनि के परिवर्तन से सम्बन्ध रखने वाला परिवर्तन है ?
उत्तर– ध्वनि नियम।

प्र. 173. ध्वनिनियमों में सबसे प्रसिद्ध नियम है ?
उत्तर– ग्रिम नियम।
प्र. 174. ग्रिम का पूरा नाम है ?
उत्तर– याकोब ग्रिम।
प्र. 175. ग्रिम नियम का समय है ?
उत्तर– 1882।
प्र. 176. 'जर्मन भाषा का व्याकरण' ग्रन्थ के प्रणेता है ?
उत्तर– याकोब ग्रिम।
प्र. 177. ग्रिम ध्वनि नियम कितने भागों में विभक्त है ?
उत्तर– 2।
प्र. 178. ग्रिम नियम माना गया है ?
उत्तर– प्रथम वर्ण परिवर्तन।
प्र. 179. प्रथम वर्ण परिवर्तन ही वस्तुतः ग्रिम नियम है, इसका सम्बन्ध है ?
उत्तर– मूलभारोपीय।
प्र. 180. 'मूल भारोपीय भाषा' में कितनी ध्वनियाँ है ?
उत्तर– 9।
प्र. 181. ग्रिम नियम के अनुसार सघोष् महास्पर्श ध्वनियाँ है ?
उत्तर– क्, त्, प्।
प्र. 182. ग्रिम नियम के अनुसार सघोष अल्प प्राण स्पर्श ध्वनियाँ है ?
उत्तर– ग्, द्, ब्।
प्र. 183. अघोष अल्पप्राण स्पर्श ध्वनियाँ है ?
उत्तर– क्, त्, प्।
प्र. 184. अघोष महाप्राण स्पर्श ध्वनियाँ है ?
उत्तर– ख्(ह्), थ्(त्स,स्स), फ्(प्फ)।
प्र. 185. ग्रिम नियम के अनुसार घोष महाप्राण का परिवर्तन रूप है ?
उत्तर– घोष अल्पप्राण।
प्र. 186. ग्रिम नियम 'प्रथम ध्वनि परिवर्तन' के अनुसार मूल–भारत–यूरोपीय शाखा के अनुसार किसमें परिवर्तन हुआ ?
उत्तर– जर्मनिक शाखा।
प्र. 187. द्वितीय ध्वनि परिवर्तन हुआ था ?
उत्तर– निम्न जर्मन से उच्च जर्मन।
प्र. 188. निम्नलिखित में वियोगात्मक भाषा है ?
उत्तर– लैटिन।
प्र. 189. भाषाओं के वर्गीकरण का स्वीकृत आधार है ?
उत्तर– आकृति।
प्र. 190. भारतीय आर्य भाषाओं में प्राचीनतम भाषा है ?
उत्तर– संस्कृत।

प्र. 191. ग्रिमनियम के अपवादों का निदान किस नियम में मिलता है ?
उत्तर– ग्रासमान।
प्र. 192. धा 'धातु' से 'दधामि' का बनना किसके नियम का संकेत है ?
उत्तर– ग्रासमान।
प्र. 193. तालव्य नियम की उत्पत्ति कब हुई ?
उत्तर– 1875 ई.।
प्र. 194. किस नियम के अनुसार दो सन्निकृष्ट महाप्राण ध्वनियां एक साथ नहीं रहती, उनमें प्रथम अल्पप्राण हो जाती है ?
उत्तर– ग्रासमान नियम।
प्र. 195. मूर्धन्य नियम किस ग्रन्थ पर आधारित है ?
उत्तर– अष्टाध्यायी।
प्र. 196. मूर्धन्य नियम के प्रणेता है
उत्तर– प्रो. पाट–फोर्तनातोव।
प्र. 197. फेर्नर के अनुसार शतम् का गाथिक में परिवर्तित रूप है ?
उत्तर– हुन्द।
प्र. 198. फेर्नर नियम है ?
उत्तर– वर्नर ।
प्र. 199. सादृश्य नियम का उदाहरण है ?
उत्तर– पिता > फाथर, माता > माथर, भ्राता > ब्राथर।
प्र. 200. सादृश्य नियम किस नियम का अपवाद है ?
उत्तर– ग्रिम नियम।

(घ) भाषा का वर्गीकरण

प्र. 201. भाषाओं का वर्गीकरण कितने प्रकार से किया जाता है ?
उत्तर– 2, आकृतिमूलक, पारिवारिकमूलक।
प्र. 202. आकृतिमूलक वर्गीकरण का अपर नाम है
उत्तर– रूपात्मक वर्गीकरण।
प्र. 203. शब्दों या पदों की रचना के आधार पर जो वर्गीकरण किया जाता है, कहलाता है
उत्तर– आकृतिमूलक।
प्र. 204. आकृतिमूलक वर्गीकरण के आधार पर भाषाओं को सर्वप्रथम कितने भागों में बाँटा गया है ?
उत्तर– 2।
प्र. 205. अयोगात्मक एवं योगात्मक वर्गीकरण है ?
उत्तर– आकृतिमूलक।
प्र. 206. वह भाषा वर्ग, जिसकी भाषाओं में अर्थतत्व (प्रकृति) के साथ रूपतत्व (प्रत्यय) का योग नहीं होता है ?
उत्तर– अयोगात्मक।

प्र. 207. धातु प्रधान या एकाक्षर भाषा वर्ग है ?
उत्तर– अयोगात्मक।
प्र. 208. योगात्मक भाषा वर्ग किसमें विभक्त नहीं है ?
उत्तर– प्रत्यय, विभक्ति और समास।
प्र. 209. अयोगात्मक वर्ग की प्रमुख भाषा है ?
उत्तर– चीनी।
प्र. 210. वैदिक भाषा के उदात्त–अनुदात्त तथा स्वरित स्वरों को भाषा विज्ञान में कहा जाता है ?
उत्तर– सुर।
प्र. 211. पुरः प्रत्यय संयोगी भाषा के अन्तर्गत आती है ?
उत्तर– बान्तू ?
प्र. 212. पर प्रत्यय संयोगी भाषा के अन्तर्गत आने वाला भाषा परिवार है ?
उत्तर– यूराल, अल्ताई और द्रविड़।
प्र. 213. भारत के मुण्डा(भारत परिवार) की संथाली भाषा किस वर्ग के अन्तर्गत आती है ?
उत्तर– मध्य प्रत्यय संयोगी।
नोट–मध्य प्रत्यय–संयोगी भाषाओं में मूलशब्द दो अक्षरों का होता है।
प्र. 214. पूर्वान्त प्रत्यय संयोगी भाषा परिवार के अन्तर्गत कौनसी भाषा आती है ?
उत्तर– न्यूगिनी द्वीप की मफोर।
प्र. 215. जिन भाषा परिवार में, आदि–मध्य तथा अन्त तीनों स्थानों पर प्रत्यय जुड़ते है, उन्हे कहा जाता है?
उत्तर– सर्वप्रत्यय संयोगी।
प्र. 216. जिन भाषाओं में प्रत्यय प्रधानता के साथ ही साथ विभक्ति तथा समास आदि की विशेषताएं भी मिलती है, उन्हें कहते है ?
उत्तर– ईषत्प्रत्यय।
प्र. 217. न्यूजीलैण्ड तथा हवाई द्विपों में बोली जाने वाली भाषाएँ किसके अन्तर्गत आती है ?
उत्तर– ईषत्प्रत्यय।
प्र. 218. योगात्मक भाषा परिवार को कितने वर्गों में बाँटा गया है ?
उत्तर– अश्लिष्ट या प्रत्ययप्रधान, श्लिष्ट या विभक्तिप्रधान, प्रश्लिष्ट या समासप्रधान।
प्र. 219. विभक्ति प्रधान भाषा है ?
उत्तर– श्लिष्ट।
प्र. 220. सामी–हामी का अपर नाम है ?
उत्तर– सैमेटिक–हैमेटिक।
प्र. 221. सामी शाखा की प्राचीन शाखा है ?
उत्तर– अक्कादी।
प्र. 222. एकाक्षरी भाषा है ?
उत्तर– चीनी।
प्र. 223. मेरियो पाई के अनुसार विश्व में इस समय लगभग कितनी भाषाओं का प्रयोग होता है ?
उत्तर– 2796 (लगभग– 3000)।

प्र. 224. पारिवारिकमूलक वर्गीकरण में डॉ. देवेन्द्रनाथ शर्मा ने कितने भाषा परिवार माने है ?
उत्तर– 18।
प्र. 225. साहित्यिक दृष्टि से सर्वाधिक समृद्ध भाषा परिवार कौनसा है ?
उत्तर– भारोपीय भाषा परिवार ।
प्र. 226. सर्वाधिक भाषा किस परिवार में उपलब्ध है ?
उत्तर– अमरीकी परिवार ।
प्र. 227. वैज्ञानिक सांस्कृतिक दृष्टि से सर्व प्रमुख भाषा परिवार कौनसा है ?
उत्तर– भारोपीय परिवार।
प्र. 228. अवेस्ता भारोपीय परिवार की किस शाखा से सम्बद्ध है ?
उत्तर– भारत–इरानी।
प्र. 229. अंग्रेजी–भाषा, भारोपीय परिवार की किस शाखा से सम्बद्ध है ?
उत्तर– जर्मनिक।
प्र. 230. भाषाओं का वर्गीकरण किस भाषा विज्ञानी को है ?
उत्तर– सहगल।
प्र. 231. पूर्ण प्रश्लिष्ट भाषा परिवार के अन्तर्गत गणनीय भाषा है ?
उत्तर– एस्किमों।
प्र. 232. 'दकार्क ओत' किस भाषा परिवार से सम्बन्धित है ?
उत्तर– बास्क।
प्र. 233. भारोपीय भाषा परिवार को कितने वर्गों में बाँटा गया है ?
उत्तर– 2।
प्र. 234. आकृतिमूलक वर्गीकरण में अश्लिष्ट योगात्मक भाषा है ?
उत्तर– तेलुगू ।
प्र. 235. भारोपीय भाषा परिवार के दो वर्ग कौन–कौन से है ?
उत्तर– सतमवर्ग एवं केन्टुमवर्ग
प्र. 236. भारोपीय परिवार की भाषाओं को कहा गया है ?
उत्तर– श्लिष्टयोगात्मक।
प्र. 237. द्रविण परिवार की भाषाएँ है ?
उत्तर– अश्लिष्ट अन्तयोगात्मक।
प्र. 238. भारोपीय परिवार की प्रतिनिधि भाषा के अन्तर्गत है ?
उत्तर– संस्कृत।
प्र. 239. काकेशी परिवार की भाषा है ?
उत्तर– आक।
प्र. 240. जापानी कोरियाई परिवार की भाषा है ?
उत्तर– अश्लिष्ट योगात्मक।
प्र. 241. अयोगात्मक भाषाओं के अन्तर्गत आने वाली भाषाओं को कहते है
उत्तर– स्थान प्रधान।

प्र. 242. योगात्मक भाषा है ?
उत्तर– तुर्की
प्र. 243. अयोगात्मक भाषा है ?
उत्तर– तिब्बती।

नोट–निम्नलिखित आरेख के अन्तर्गत भारोपीय भाषा परिवार की भाषाओं को मुख्य रूप से दो वर्गों (सतम एवं केन्टुम) में विभाजित किया है। प्रतिनिधि भाषा के रूप में लैटिन तथा अवेस्ता को आधार बनाकर 'सौ' के वाचक शब्दों की सहायता से अपने निष्कर्ष को प्रमाणित किया गया है। सौ को **अवेस्ता में 'सतम' तथा लैटिन में 'केन्टुम' कहते है।**

सतम वर्ग	**केन्टुम वर्ग**
संस्कृत– शतम्	लैटिन– केन्टुम्
हिन्दी– सौ	ग्रीक– हेकातोन
अवेस्ता– शतम्	जर्मनीक– हुन्द
फारसी– सत (सद्)	केल्टिक– केत
स्लाविक– स्तो	तोखारी– कंध
बाल्टिक– जिम्तस	आयरिश– केद
लिथुआनियन– शिम्तास	अंग्रेजी– हुण्ड/हण्ड्रेड

प्र. 244. ग्रिम नियम के अनुसार निम्न जर्मन 'U P' का उच्च जर्मन में क्या भाव होता है ?
उत्तर– AUE
प्र. 245. ग्रासमन नियम के प्रतिष्ठापक हरमन ग्रासमान किस देश के निवासी थे ?
उत्तर– जर्मन।
प्र. 246. ग्रासमान मत में 'दधामि' इसका मूल रूप क्या है ?
उत्तर– धधामि।
प्र. 247. ग्रासमान मत में 'बभार' इसका मूल रूप क्या था ?
उत्तर– भभार।
प्र. 248. प्राचीन भारतीय आर्यभाषा का समय है ?
उत्तर– 1500B.C -500 B.C।
प्र. 249. मध्यकालीन आर्यभाषा का समय है ?
उत्तर– 500B.C-1000 A.D.।
प्र. 250. आधुनिक भारतीय आर्यभाषा का समय है ?
उत्तर– 1000 A.D. से अद्यावधि पर्यन्तम्।
प्र. 251. भारोपीय परिवार की भाषा नहीं है ?
उत्तर– तमिल भाषा।
प्र. 252. भारतीय आर्य भाषाओ में प्राचीनतम है ?
उत्तर– वैदिक संस्कृत भाषा।
प्र. 253. भाषाओं के वर्गीकरण का आधार है ?
उत्तर– आकृति।

प्र. 254. भाषा.....विनिमयस्य साधनमस्ति ?

उत्तर– विचार।

प्र. 255. वियोगात्मक भाषा है ?

उत्तर– हिन्दी।

प्र. 256. भारतीय आर्यभाषा की अवस्था है ?

उत्तर– तिस्त्रः।

प्र. 257. भारोपीय भाषा परिवार में केन्टुम वर्ग के प्रमुख भेद कितने है ?

उत्तर– चार।

प्र. 257. निम्नलिखित सिद्धान्तों के जनक कौन–कौन है ?

उत्तर– संकेत सिद्धान्त– रूसो।
धातु सिद्धान्त– प्लेटो।
श्रम ध्वनि सिद्धान्त– न्यारे।
ईगिंत सिद्धान्त– राये।
सम्पर्क सिद्धान्त– जी रेवेज।
समन्वित सिद्धान्त– हेनरी स्वीट।

प्र. 258. वक्ता वाचि वर्णा येषा ते इमे व्यक्त वाचः।। कथन है ?

उत्तर– महर्षि पतञ्जलि कृत महाभाष्य (1/3/48)।

भाषाविज्ञानस्य प्रश्नोत्तराणि

प्रश्नः–1 संस्कृत ध्वनिषु अर्धस्वराः सन्ति ?
(क) श् ष् स् ह् (ख) य् व्
(ग) घ् द् घ् ष् (घ) ख् फ् ह् ठ् थ् (ख)

प्रश्नः–2 पार्श्विक व्यञ्जनमस्ति ?
(क) य् (ख) र् (ग) ल् (घ) व् (ग)

प्रश्नः–3 ग्रिम नियमे मूलभारोपीय भाषायाः घोषाल्पप्राण ध्वनयः जर्मनिक भाषासु कथं परिवर्तन्ति ?
(क) घोष महाप्राण ध्वनिषु (ख) अघोष महाप्राण ध्वनिषु
ग) अघोषाल्पप्राणध्वनिषु (घ) सघोषल्पप्राण ध्वनिषु (ग)

प्रश्नः–4 पुरः प्रत्यय प्रधान भाषा का ?
(क) बाँण्टू (ख) संथाली (ग) तुर्की (घ) कन्नड़ (क)

प्रश्नः–5 वाक्यस्य लक्षणमस्ति ?
(क) योग्यताकांक्षा सन्धियुतानां पदानां समुच्चयः वाक्यम्।
(ख) सार्थकपदानां समूहः वाक्यम्।
(ग) भावाभिव्यक्ति सामर्थ्य भूतानां पदानां समहू वाक्यम्।
(घ) विचाराभिव्यक्ति सामर्थ्य भूतानां पदानां समूह वाक्यम्। (क)

प्रश्नः–6 भारोपीय–भाषा–परिवारः विश्वस्य सर्वप्रसिद्धः परिवार अस्ति यतोहि –
(क) सभ्यता–संस्कृति–साहित्य विकास दृष्ट्या समृद्धः
(ख) सामाजिक दृष्टया प्रभावः
(ग) दार्शनिक ग्रन्थाना परम्परा
(घ) आर्थिकविचारंषु (क)

प्रश्नः–7 भाषाणाम् आकृतिमूलकं वर्गीकरणमस्ति ?
(क) वाक्यपदरचना आधारितम् (ख) वर्णप्रतिपदिक रचना आधारितम्
(ग) प्रश्लिष्टाश्लिष्ट रचनाधारितम् (घ) व्यक्ताव्यक्तायोगाधारितम् (क)

प्रश्नः–8 आयोगात्मक भाषायाः उत्तमोदाहरणमस्ति ?
(क) चेरोकी भाषा (ख) जुलूभाषा (ग) चीनीभाषा (घ) संथाली भाषा (ग)

प्रश्नः–9 सूडानी भाषा परिवारस्य भाषाः सन्ति मूलतः ?
(क) संयोगात्मिका (ख) प्रश्लिष्ट योगात्मिकाः
(ग) अयोगात्मिकाः (घ) श्लिष्ट योगात्मिकाः (ग)

प्रश्नः–10 प्राचीनतमः भाषावैज्ञानिकः कः अस्ति ?
(क) पाणिनिः (ख) अरस्तूः (ग) प्लेटो (घ) पतञ्जलि (क)

प्रश्नः–11 मानस्वर चतुर्भुजस्य कल्पना केन कृता ?
(क) डॉ. राधाकृष्ण दीक्षितेन (ख) प्रो. डेनियल जॉन्स महोदयेन
(ग) जोन्सस्मिट महोदयेन (घ) कार्लबर्नर महोदयेन (ख)

प्रश्नः–12 एकाक्षरी भाषा का अस्ति ?
(क) चीनी (ख) बान्टू (ग) संस्कृतम् (घ) मिश्री (ख)

प्रश्नः–13 संघर्षी ध्वनिसंवर्गे परिगणितः अस्ति ?
(क) उदान्तः (ख) विवारः (ग) य् (घ) ष् (घ)

प्रश्नः–14 अर्थबोधस्य कति प्रमुख साधनानि ?
(क) सप्त (ख) नव (ग) एकादश (घ) त्रयोदश (ख)

प्रश्नः–15 भाषाविज्ञाने बलाघातस्य भेदाः सन्ति ?
(क) चत्वारः (ख) सप्त (ग) दश (घ) द्वादश (क)

प्रश्नः–16 भाषा–उत्पत्ति सिद्धान्तेषु सम्पर्क सिद्धान्तस्य प्रवर्तकः ?
(क) स्प्रेशरः (ख) राये (ग) जी. रैवेज (घ) हर्डरः (ग)

प्रश्नः–17 अश्लिष्ट योगात्मक वर्गस्यप्रतिनिधी भाषा अस्ति ?
(क) संस्कृत (ख) अरबी (ग) हिब्रू (घ) तुर्की (ग)

प्रश्नः–18 भाषाविज्ञान दृष्टया अर्थपरिवर्तनान्तर्गतौ को नास्ति ?
(क) अर्थविस्तारः (ख) अर्थसंकोचः (ग) अर्थ–आदेशः (घ) अर्थ–आगमः (घ)

प्रश्नः–19 संस्कृत भाषा भवति ?
(क) विभक्ति प्रधाना (ख) प्रत्यय प्रधाना (ग) व्यास प्रधाना (घ) समास प्रधाना (क)

प्रश्नः–20 प्राचीनतमः भाषावैज्ञानिकः अस्ति–
(क) प्लेटो (ख) ग्रासमानः (ग) देवेन्द्रनाथः (घ) पाणिनिः (घ)

प्रश्नः–21 भाषापरिवर्तनस्य कति बाह्यकारणानि ?
(क) चत्वारि (ख) षट् (ग) अष्टौ (घ) दश (ख)

प्रश्नः–22 भारोपीय भाषा परिवारे केन्टुमवर्गस्य कति प्रमुखभेदाः ?
(क) चत्वारः (ख) सप्त (ग) नव (घ) एकादशः (क)

प्रश्नः–23 अयोगात्मक भाषासु न भवन्ति ?
(क) उपसर्गाः (ख) क्रियाः (ग) कारकाणि (घ) लिङ्गानि (क)

प्रश्नः–24 भारतीय आर्यभाषायाः अवस्था अस्ति ?
(क) चतस्त्रः (ख) पञ्चः (ग) त्रिस्तः (घ) षट् (ग)

प्रश्नः–25 वियोगात्मक भाषा अस्ति ?
(क) संस्कृतम् (ख) हिन्दी (ग) अंग्रेजी (घ) मैथिली (ख)

प्रश्नः–26 भारतीयार्य भाषासु प्राचीनतमा ?
(क) पालिभाषा (ख) प्राकृतभाषा
(ग) वैदिक संस्कृतः (घ) लौकिक संस्कृत भाषा (ग)

प्रश्नः–27 संकेत सिद्धान्तस्य जन्मदातास्ति ?
(क) अरस्तू (ख) रुसो (ग) लॉक (घ) प्लेटो (ख)

प्रश्नः–28 भाषाशास्त्रः भाषा विज्ञानस्य पर्यायास्ति, कथनमस्ति ?
(क) डॉ. बाबूराम सक्सेना (ख) भोलानाथ तिवारी (ग) डॉ. रिजवे (घ) डॉ. न्यारे (क)

प्रश्नः–29 का उरस्य ध्वनियाँ ?
(क) जिह्वामूलीय (ख) उपध्यमानी (ग) : तथा ह् (घ) घ् तथा ह् (ग)

प्रश्नः–30 भारोपीय परिवारस्य प्रतितिधि भाषा अस्ति ?
(क) संस्कृतम् (ख) नार्वे (ग) तिब्बती (घ) तुर्की (क)

प्रश्नः–31 समानाक्षरं विचिनुत ?
(क) क्ष (ख) ऐ (ग) औ (घ) आ (घ)

प्रश्नः–32 भाषाविज्ञान दृष्ट्या अर्थपरिवर्तनान्तर्गतो को नास्ति ?
(क) अर्थ विस्तारः (ख) अर्थसंकोचः (ग) अर्थ–आदेशः (घ) अर्थ–आगमः (ग)

प्रश्नः–33 भाषोत्पतेः सिद्धान्ताः कति संख्यकाः?
(क) एकादशः (ख) द्वादशः (ग) पञ्चदशः (घ) षोडशः (क)

प्रश्नः–34 कस्मिन् वेदाङ्गे ध्वनि विज्ञानस्य विवेचना दरीदृश्यते ?
(क) व्याकरणवेदाङ्गे (ख) ज्योतिषवेदाङ्गे (ग) छन्दवेदाङ्गे (घ) शिक्षावेदाङ्गे (घ)

प्रश्नः–35 आधुनिक भारतीय आर्यभाषा योगात्मका–अयोगात्मका वा ?
(क) योगात्मका (ख) अयोगात्मका
(ग) उभायात्मका (घ) श्लिष्ट योगात्मका (क)

प्रश्नः–36 पारिवारिक वर्गीकरणस्य कति प्रमुख भेदाः ?
(क) चतुर्दशः (ख) षोडशः (ग) अष्टादशः (घ) विंशतिः (ग)

प्रश्नः–37 भारोपीय परिवारे भारत–ईरानी वर्गः कस्मिन् वर्गे ?
(क) केन्टुमवर्गः (ख) शतंवर्गः (ग) चीनी परिवारः (घ) आर्मीनीपरिवारः (ख)

प्रश्नः–38 अर्धस्वराः के सन्ति ?
(क) स्पर्शः (ख) अन्तस्थः (ग) ऊष्माः (घ) सर्वाः (ख)

प्रश्नः–39 ध्वनिप्रवृत्तिरेव भाषा वैज्ञानिकैः किमुच्यते ?
(क) अर्थनियमः (ख) शब्दध्वनिः (ग) अर्थध्वनिः (घ) ध्वनिनियमः (घ)

प्रश्नः–40 ग्रासमन नियमः कस्य नियमस्यापवादः ?
(क) बर्नर नियमस्य (ख) ग्रिम नियमस्य (ग) अरस्तूनियमस्य (घ) अर्थनियमस्य (ख)

प्रश्नः–41 भाषोत्पत्ति–विषये प्लेटोमहोदयस्य कः सिद्धान्तः ?
(क) धातु सिद्धान्तः (ख) प्रकृति सिद्धान्तः
(ग) रणनसिद्धान्तः (घ) अनुकरण सिद्धान्तः (ग)

प्रश्नः–42 अनुकरण सिद्धान्तः केन प्रदत्तः ?
(क) प्लेटोमहोदयेन (ख) मैक्समूलरमहोदयेन
(ग) लैटिन महोदयेन (घ) पाणिनि महोदयेन (ख)

प्रश्नः–43 भाषाविज्ञाने स्वनिम शब्दस्य प्रथम प्रयोगः केन कदा कृतः ?
(क) प्रो0 हैवेट महोदयेन 1876 AD (ख) प्रो0 प्लेटो महोदयेन 1720 AD
(ग) प्रो0 मैक्समूलर महोदयेन 1640 AD (घ) प्रो0 हार्बट महोदयेन 1920 AD (क)

प्रश्नः–44 ग्रासमन मते 'दधामि' इत्यस्य मूल रूपं किम् आसीत् ?
(क) धदामि (ख) ददामि (ग) धधामि (घ) ददति (ग)

प्रश्नः–45 ग्रामसन मते 'बभारः' इत्यस्य मूलरूपं किम् आसीत् ?
(क) भबारः (ख) भभारः (ग) बभारः (घ) बरार (ख)

प्रश्नः–46 फेर्नरमते संस्कृत भाषायाः 'सप्तम्' गाथिक भाषा किम् ?
(क) सिबुन् (ख) हुन्दः (ग) सेविन् (घ) सात (ख)

प्रश्नः–47 वाग्–रूपं भावप्रकटनम् इत्युक्ते किम् ?
(क) भाषणम् (ख) लेखनम् (ग) पठनम् (घ) श्रवणम् (क)

प्रश्नः–48 भरसि इत्यस्य संस्कृत शब्दस्य अवेस्ता रूपं किमस्ति ?
(क) बरहि (ख) अबहि (ग) सबहि (घ) रहहिं (क)

प्रश्नः–49 पिशाच इति शब्दस्य पिसाच उच्चारणे किम् कारणम् ?
(क) लोपस्यकारणम् (ख) विपर्ययकारणम् (ग) स्वरभक्तिकारणम् (घ) वर्तुलाकारणम् (ख)

प्रश्नः–50 रोमनलिपिः कीदृग् लिपिरस्ति ?
(क) ध्वनिलिपिः (ख) सामीलिपिः (ग) ब्राह्मी (घ) नागरीलिपिः (क)

प्रश्नः–51 भाषिक ध्वनि वर्गीकरणस्य आधाराः काः सन्ति ?
(क) स्थानम् (ख) प्रयत्नः (ग) स्थानप्रयत्नकरण (घ) उच्चारणस्थानम् (ग)

प्रश्नः–52 राजस्थानी भाषायाः अन्तर्गताः विभाषाः कियत्यः ?
(क) पञ्चम् (ख) सप्तम् (ग) चत्रस्तः (घ) त्रयः (ग)

प्रश्नः–53 संस्कृतं कस्य परिवारस्य मुख्यभाषास्ति ?
(क) भारत युरोपीय परिवारस्य (ख) देवनागरी परिवारस्य
(ग) चीनी परिवारस्य (घ) अमरीकी परिवारस्य (क)

प्रश्नः—54 वर्णमाला युक्त लिपिः का अस्ति ?
(क) सिन्धुघाटीलिपिः (ख) हिटाइटलिपिः
(ग) ब्राह्मीलिपिः/अरबीलिपिः (घ) रोमनलिपिः (ग)

प्रश्नः—55 वाक् कतिविधा ?
(क) चतुर्विधा (ख) पञ्चधा (ग) त्रिविधा (घ) सप्त विधा (क)

प्रश्नः—56 संस्कृतम् कीदृशी भाषा विद्यते ?
(क) प्रश्लिष्टभाषा (ख) अश्लिष्टभाषा (ग) शिलष्टभाषा (घ) विश्लिष्ट भाषा (ग)

प्रश्नः—57 लौकिक संस्कृते कति ध्वनयः सन्ति ?
(क) अष्टचत्वारिशत् (ख) चतुर्चत्वारिशत् (ग) अष्टाविशंतिः (घ) चतुर्दशः (क)

प्रश्नः—58 ककारस्य घोषरूपं किमस्ति ?
(क) ग् (ख) द् (ग) ब् (घ) ध् (क)

प्रश्नः—59 पकारस्य घोषरूपं किमस्ति ?
(क) ब् (ख) भ् (ग) द् (घ) क् (ख)

प्रश्नः—60 कस्योच्चारणे वायुः निर्बाधगत्या बहिः निःसरति ?
(क) व्यञ्जनस्य (ख) स्पर्शस्य (ग) स्वरस्य (घ) अर्धस्वरस्य (ग)

प्रश्नः—61 चीनी भाषा कीदृशी भवति ?
(क) योगात्मिका (ख) अयोगात्मिका
(ग) प्रश्लिष्ट योगात्मिका (घ) शिलष्ट योगात्मिका (क)

प्रश्नः—62 निम्नलिखितेषु अन्तः स्थेषु को ध्वनिः न गण्यते ?
(क) ट् (ख) र् (ग) ल् (घ) य् (क)

प्रश्नः—63 निम्नलिखितेषु विषमीकरणस्योदाहरणं किमस्ति ?
(क) बभूव (ख) संसार (ग) गमिष्यति (घ) पपाठ (घ)

प्रश्नः—64 ध्वनिपरिवर्तने बलाघातस्य महत्वं केन प्रतिपादितम् ?
(क) ग्रिमेण (ख) ग्रासमानेन (ग) बर्नरेण (घ) लूथरेण (ख)

प्रश्नः—65 का भाषा आयोगात्मिकायाः भाषायाः उदाहरणम् ?
(क) संस्कृतम् (ख) तुर्की (ग) चैरौकी (घ) चीनी (घ)

प्रश्नः—66 का भाषा 'सतम्' वर्ग न विद्यते ?
(क) संस्कृतम् (ख) फारसी (ग) लैटिनम् (घ) ईरानी (ग)

प्रश्नः—67 निम्नलिखितेषु का ध्वनिः महाप्राणोनास्ति ?
(क) ध् (ख) भ् (ग) ह् (घ) ङ् (घ)

प्रश्नः—68 निम्नलिखितेषु शब्देषु अर्थसंकोचस्य उदाहरणमस्ति ?
(क) सिंहः (ख) वृकः (ग) कुशलः (घ) मृगः (घ)

प्रश्नः—69 अर्थविस्तारोदाहरणेष्वन्यतमो नास्ति ?
(क) तैलम् (ख) मुग्धः (ग) गौः (घ) सभ्यः (ग)

प्रश्नः—70 अर्थसङ्कोचोदाहरणेष्वन्यतमो नास्ति ?
(क) जलदः (ख) सभ्यः (ग) मनुष्यः (घ) पंकज (ख)

प्रश्नः—71 का भाषा केन्तुम् वर्गेण असम्बद्धा ?
(क) ग्रीक—भाषा (ख) इताली (ग) लैटिन (घ) मोखरी (ख)

प्रश्नः—72 प्रसिद्ध ध्वनिनियमेषु अर्वाचीनतमः कः ?
(क) बर्नर नियमः (ख) ग्रासमान नियमः
(ग) ग्रिम नियमः (घ) विन्टरनिट्जनियमः (क)

प्रश्नः—73 जिह्वा भाग विशेषोच्चारण दृष्ट्या मध्यस्वरोऽस्ति?
(क) अ (ख) इ (ग) उ (घ) ए (क)

प्रश्नः—74 आकृतिमूलक वर्गीकरेण असम्बद्धम् ?
(क) प्रकृतिः (ख) प्रत्ययः (ग) उपसर्गः (घ) व्यापार (घ)

प्रश्नः—75 पारिवारिक वर्गीकरेण असम्बद्धम् ?
(क) फलसाम्यम् (ख) ध्वनिसाम्यम् (ग) पदसाम्यम् (घ) अर्थसाम्यम् (क)

प्रश्नः—76 संस्कृत भाषायाः शतम् इति पदं गाथिक भाषायां 'हुन्द' इति कस्यमतम् ?
(क) ग्रिमः (ख) बर्नरः (ग) ग्रासमानः (घ) चार्ल्सः (ख)

प्रश्नः—77 अर्थपरिवर्तनकारेणष्वन्यतमम् ?
(क) सादृश्यम् (ख) आगमः (ग) लोपः (घ) स्वरभक्ति (ख)

प्रश्नः—78 भाषायाः उत्पत्तिः सम्बन्धितः सर्वप्राचीन सिद्धान्तः वर्तते ?
(क) विकासवादी सिद्धान्तः (ख) धातु सिद्धान्तः
(ग) निर्णय सिद्धान्तः (घ) दैवोत्पत्ति सिद्धान्तः (घ)

प्रश्नः—79 निर्णयसिद्धान्तः अस्ति ?
(क) संकेत सिद्धान्तः (ख) अनुकरण सिद्धान्तः
(ग) देवीसिद्धान्तः (घ) इंगित सिद्धान्तः (क)

प्रश्नः—80 संकेतसिद्धान्तस्य जन्मदाता कः ?
(क) अरस्तूः (ख) रुसो (ग) प्लेटो (घ) लॉक (ख)

प्रश्नः—81 संकेतसिद्धान्तः कस्य सिद्धान्तस्य जन्मदातास्ति ?
(क) धातुसिद्धान्तस्य (ख) अनुकरण सिद्धान्तस्य
(ग) इङ्गित सिद्धान्तस्य (घ) श्रमध्वनि सिद्धान्तस्य (ग)

प्रश्नः—82 धातु सिद्धान्तस्यापरं नाम किम् ?
(क) अनुकरण सिद्धान्तः (ख) अनुरणन सिद्धान्तः (ग) संकेत सिद्धान्तः (घ) देवीसिद्धान्तः (ख)

प्रश्नः—83 धातुसिद्धान्तस्य प्रणेता कः ?
(क) प्लेटो (ख) रूसो (ग) अरस्तूः (घ) लॉक (क)

प्रश्नः—84 बाऊ—बाऊ इत्यस्य सिद्धान्तः ?
(क) अनुकरण सिद्धान्तः (ख) धातुसिद्धान्तः (ग) अनुरणनसिद्धान्तः (घ) देवीसिद्धान्तः (क)

प्रश्नः—85 समन्वित सिद्धान्तस्य जनकः कः ?
(क) रिजवे (ख) न्यारे (ग) हेनरीस्वीटः (घ) प्लेटो (ग)

प्रश्नः—86 सम्पर्कसिद्धान्तस्य प्रणेता कः ?
(क) जी रेवेज (ख) डॉ राये (ग) प्लेटो (घ) अरस्तूः (क)

प्रश्नः–87 संगीतसिद्धान्तः अस्ति ?
(क) प्रेमसिद्धान्तः (ख) इंगितसिद्धान्तः
(ग) समन्वित सिद्धान्तः (घ) सम्पर्क सिद्धान्तः (क)

प्रश्नः–88 आभ्यन्तर प्रयत्नमधारीकृत्य व्यञ्जनस्य कति भेदाः जायन्ते ?
(क) पञ्च (ख) सप्त (ग) अष्ट (घ) षष्ट (ग)

प्रश्नः–89 घोष–अघोषध्वन्योः सुस्पष्ट मापकः यन्त्र विशेषः कः ?
(क) काइमोग्राफः (ख) विडियाग्राफः
(ग) संचारयन्त्रः (घ) संहर्षीवर्त्स्यतालव्यः (क)

प्रश्नः–90 ध्वनिपरिवर्तनस्य बाह्यकारणमस्ति ?
(क) सहजीकरणम् (ख) स्वभावकरणम् (ग) ज्ञानकरणम् (घ) रूपकरणम् (क)

प्रश्नः–91 पठति इति क्रियापदं कीदृश्याः भाषायाः उदाहरणमस्ति ?
(क) अयोगात्मिकायाः (ख) श्लिष्टयोगात्मिकायाः
(ग) प्रश्लिष्ट योगात्मिकायाः (घ) अश्लिष्ट योगात्मिकायाः (ख)

प्रश्नः–92 ग्रीकभाषाकस्य परिवारस्य भाषा अस्ति ?
(क) भारोपीय परिवारस्य (ख) सेमेटिक परिवारस्य
(ग) सूडानी परिवारस्य (घ) काकेशी परिवारस्य (क)

प्रश्नः–93 निम्नलिखितासु भाषासु का भाषा सतम् वर्गस्य नास्ति ?
(क) संस्कृतभाषा (ख) ईरानी भाषा (ग) ग्रीक भाषा (घ) फारसी भाषा (ग)

प्रश्नः–94 अंग्रेजी भाषायाः सम्बन्धः कया भाषा शाखया अस्ति ?
(क) कैल्टिक शाखया (ख) जर्मनिकशाखया (ग) इटैलिक शाखया (घ) ग्रीक शाखया (ख)

प्रश्नः–95 अर्थपरिवर्तनस्य दिशः सन्ति ?
(क) सप्त (ख) त्रिस्तः (ग) पञ्च (घ) षष्ट (ख)

प्रश्नः–96 अयोगात्मक भाषायाः उत्तमोदाहरणमस्ति ?
(क) चीनी भाषा (ख) संस्कृत भाषा (ग) हिब्रू भाषा (घ) सूडानी भाषा (क)

प्रश्नः–97 अश्लिष्ट योगात्मकवर्गस्य प्रतिनिधिभाषा अस्ति ?
(क) संस्कृत (ख) अरबी (ग) हिब्रू (घ) तुर्की (क)

प्रश्नः–98 अघोष् ध्वनिः अस्ति ?
(क) ज् (ख) ध् (ग) त् (घ) अ (ग)

प्रश्नः–99 निम्नलिखितषु ध्वनिनियमानां निर्माता कोऽस्ति ?
(क) कीलहोर्नमहोदयः (ख) ग्रिममहोदयः
(ग) विल्सन महोदयः (घ) जेम्सर्पिसेप महोदयः (ख)

प्रश्नः–100 घोष् ध्वनिः अस्ति ?
(क) यू (ख) श्र् (ग) ग् (घ) अ (घ)

अध्याय–6

भारतीय संस्कृति

भारतीय संस्कृति से सम्बन्धित बिन्दुओं के अन्तर्गत निम्न विषय सम्मिलित किए गए है, जो इस प्रकार है– (1) **वर्ण व्यवस्था** (2) **आश्रम व्यवस्था** (3) **संस्कार तथा** (4) **महायज्ञ** ।

वर्ण व्यवस्था

भारतीय सामाजिक संरचना में वर्णव्यवस्था का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। ऋग्वेद में पुरुष सूक्त के अनुसार सम्पूर्ण समाज ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र इन चार वर्णो में विभक्त था जो 12वीं सदी तक विभिन्न परिवर्तनों और स्थितियों से होकर विकास की ओर प्रवृत्त रहा है। इनके विकास का आधार इनका धर्म या कर्म था जो इनके शरीर, मन तथा मस्तिष्क तीनों से सम्बन्धित था। इसी कारण वर्ण व्यवस्था को 'वर्ण धर्म' भी कहते है। सत्व, रज और तम इन तीनों गुणों में से सत्व का सम्बन्ध ब्राह्मण से, रजस् का क्षत्रिय से, रजस् और तमस् का वैश्य से तथा तमस् का सम्बन्ध शुद्र से है। प्रमुख समाजशास्त्री डॉ. हट्टन के अनुसार ब्राह्मण का रंग सफेद, क्षत्रिय का लाल, वैश्य का पीला तथा शुद्र का रंग काला होता है। वर्ण शब्द की व्युत्पत्ति 'वृ' धातु से हुई है। जिसका शाब्दिक अर्थ 'चुनना' या 'वरण करना' है। ऋग्वैदिक काल में प्रायः व्यक्ति अपनी अभिरुचि तथा योग्यता के अनुसार अपनी जीविका का वरण करता है। वर्णों की उत्पत्ति के सन्दर्भ में अनेक सिद्धान्त प्रचलित है, जो निम्नलिखित है –

1. **परम्परागत सिद्धान्त**–इस सिद्धान्त के अनुसार ऋग्वेद के पुरुष सूक्त से स्पष्ट होता है कि उस विराट् पुरुष के मुख से ब्राह्मण, भुजाओं से क्षत्रिय, जंघाओं से वैश्य तथा पैरों से शुद्र की उत्पत्ति हुई है।
2. **सामाजिक उपयोगिता का सिद्धान्त**–इस सिद्धान्त के अनुसार वृहदारण्यकोपनिषद् में वर्णित मान्यता का प्रादूर्भाव है। देवलोक में ब्रह्मा ने देवताओं को चार वर्णों में विभाजित करके उनके अनुकूल कार्यों को सुदृढ़ व्यवस्थित किया और यहीं निर्वाह पृथ्वी लोक में भी स्थापित हुआ।
3. **रंग का सिद्धान्त**–
4. **कर्म का सिद्धान्त**– कुछ विद्वानों का मानना है कि वैदिककाल में चार मूलभूत आवश्यकताएं थी –
   (क) पठन–पाठन तथा धार्मिक एवं बौद्धिक कार्यों की पूर्ति।
   (ख) राज्य का संचालन तथा सामाजिक सुरक्षा।
   (ग) आर्थिक व्यवस्था का समुचित प्रबन्ध तथा (घ) सेवा।
5. **गुणात्मक कर्म सिद्धान्त**–इस सिद्धान्त के समर्थक भगवान श्रीकृष्ण है। उन्होंने अर्जुन से कहा है–"गुण और कर्म के आधार पर चारों वर्णो की सृष्टि मैने ही की है।"

वर्णों के सामान्य कर्तव्य

(1) किसी पर क्रोध नहीं करना (2) धन का त्यागपूर्वक उपभोग करना (3) सत्य बोलना (4) क्षमा भाव रखना (5) एक पत्नी वृति होना (6) पवित्र रहना (7) विद्रोह नहीं करना (8) सरल स्वभाव रखना (9) आश्रय

रहित व्यक्ति को आश्रय देना (10) जीवित प्राणियों को हानि नहीं पहुंचाना (11) क्षमा, आत्मसंयम आदि गुणों से युक्त होना।

विशेष कर्त्तव्य

(1) ब्राह्मण के कर्तव्य

(क) वेद पढ़ना–पढ़ाना (ख) यज्ञ करना–कराना (ग) दान लेना तथा विशेष परिस्थितियों में देना।

(2) क्षत्रिय के कर्तव्य

(क) प्रजा की रक्षा करना (ख) यज्ञ करना (ग) वेद पढना (घ) दान देना।

(3) वैश्य के कर्त्तव्य

(क) व्यापार करना (ख) वेद पढ़ना (ग) यज्ञ करना।

(4) शुद्र के कर्त्तव्य

(क) सेवा करना (ख) पशुपालन, शिल्पकार्य द्वारा आजीविका को चलाना।

वर्ण व्यवस्था का सामाजिक महत्व

1. समाज में सरल श्रम विभाजन।
2. सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति।
3. सामाजिक संगठन को दृढता प्रदान करना।
4. समाज में समानता बनाए रखना।
5. देश की उन्नति में सहायक।
6. प्रेम व भाईचारे की वृद्धि।
7. अपने दायित्वों को पूरा करने की प्रेरणा।

वर्ण व्यवस्था से सम्बन्धित महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1. वर्ण शब्द में धातु है ?
उत्तर– वृ धातु।
प्रश्न 2. वर्ण का शाब्दिक अर्थ है ?
उत्तर– वरण करना।
प्रश्न 3. भारतीय संस्कृति में कितने वर्ण है ?
उत्तर– चार– ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र।
प्रश्न 4. वर्ण व्यवस्था का उत्तरार्द्ध काल रहा है ?
उत्तर– 12वीं सदी।
प्रश्न 5. वर्ण व्यवस्था को अन्य किस नाम से जाना जाता है ?
उत्तर– वर्ण धर्म।
प्रश्न 6. वैदिक मान्यता के अनुसार ब्राह्मण की उत्पत्ति किस अंग से हुई है ?
उत्तर– मुख से।

प्रश्न 7. सत्व गुण से युक्त वर्ण है ?
उत्तर– ब्राह्मण।
प्रश्न 8. रजस् और तमस् गुणों का मिश्रित वर्ण है ?
उत्तर– वैश्य।
प्रश्न 9. वेद पुरुष का चरण किस वर्ण का उत्पत्ति स्थान है
उत्तर– शुद्र।
प्रश्न 10. वर्ण व्यवस्था का प्रमुख सिद्धान्त है
उत्तर– कर्म का सिद्धान्त।
प्रश्न 11. वर्ण व्यवस्था में सर्वश्रेष्ठ वर्ण बताया गया है ?
उत्तर– ब्राह्मण।
प्रश्न 12. क्षत्रिय शब्द की उत्पत्ति किस शब्द से हुई है ?
उत्तर– क्षत्र से।
प्रश्न 13. वह वर्ण जो व्यापारिक कार्यों में संलग्न रहता है ?
उत्तर– वैश्य।
प्रश्न 14. ब्याज (सूद) लेना किस वर्ण का कर्त्तव्य कर्म है ?
उत्तर– वैश्य।
प्रश्न 15. निम्नतम कार्य करने का विधान किस वर्ण को है ?
उत्तर– शुद्र को।

आश्रम व्यवस्था

प्राचीन भारतीय समाज में आश्रम व्यवस्था का महत्वपूर्ण स्थान था। भारतीय ऋषियों ने मानव जीवन को सुव्यवस्थित, सुसंस्कृत रूप प्रदान करने के निमित्त सम्पूर्ण जीवन को ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यास नामक चार सोपानों में विभक्त किया है। उनके मत में जीवन का महत्व लौकिक और पारलौकिक है। वस्तुतः धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार पुरुषार्थों की अभिव्यक्ति के निमित्त जीवन के चार आश्रमों के रूप में विभक्त करने की व्यवस्था की गयी थी। ज्ञान, कर्म, त्याग और अध्यात्म की कुशलता को प्राप्त करके मोक्ष की ओर अग्रसर होना ही आश्रम व्यवस्था का परम लक्ष्य था। आश्रम शब्द संस्कृत की 'श्रम्' धातु से निष्पन्न हुआ है जिसका अर्थ 'प्रयास करना' है। परमपथ की प्राप्ति में प्रयत्नशील रहना ही आश्रम व्यवस्था का मुख्य लक्ष्य है। प्राचीन भारत में मनुष्य की आयु को सामान्य रूप से 100 वर्ष स्वीकार किया गया था। इस सम्पूर्ण आयु को 4 बराबर भागों में विभाजित करके चार आश्रमों की प्रतिष्ठा की गई थी –

(1) ब्रह्मचर्य आश्रम (1 से 25 तक ब्रह्मचर्याश्रम)

ब्रह्मचर्य आश्रम की अर्थाभिव्यक्ति ज्ञान प्राप्ति से है। व्यक्ति इस आश्रम में रहकर नियम, संयमपूर्वक अनुशासित ढंग से त्याग, तपोमय जीवन व्यतीत करता हुआ अनेक विद्याओं का ज्ञान प्राप्त करता था। ब्रह्मचर्य शब्द की निष्पत्ति ब्रह्म तथा चर्य दो शब्दों के योग से हुई है। इसमें ब्रह्म का अर्थ वेद और चर्य का अर्थ विचरण करना है। इस प्रकार इन्द्रिय निग्रह पूर्वक वेद के मार्ग का अनुसरण करना ही ब्रह्मचर्य है। उपनयन संस्कार को ब्रह्मचर्य का प्रवेश माना जाता है।

(2) **गृहस्थ आश्रम (26 से 50 तक गृहस्थाश्रम)**

गृहस्थ आश्रम महत्वपूर्ण आश्रम है क्योंकि अन्य सभी आश्रम इसी पर आश्रित है। ब्रह्मचर्य जीवन की समाप्ति तथा समावर्तन संस्कार के बाद व्यक्ति इस आश्रम में प्रवेश करता है। गृहस्थ आश्रम में प्रवेश की प्रक्रिया वैवाहिक संस्कार के सम्पन्न होने पर ही पूर्ण मानी जाती है। गृहस्थ व्यक्ति गृहस्थ आश्रम में ही रहते हुए अपने व्यक्तिगत, सामाजिक, धार्मिक, नैतिक, आर्थिक आदि कर्त्तव्यों का पालन करता है। मनुस्मृति में तो गृहस्थ के द्वारा पंच महायज्ञों की प्रक्रिया को पूर्ण करने का विधान है।

(3) **वानप्रस्थ आश्रम (51 से 75 वानप्रस्थाश्रम)**

गृहस्थ आश्रम के बाद वानप्रथ आश्रम की जीवन शैली प्रारम्भ होती है। वानप्रस्थ व्यक्ति का जीवन अत्यन्त त्याग, तपोमय और साधना का जीवन है। इसमें इन्द्रिय सुख का विधान नहीं है। वानप्रस्थ व्यक्ति को दिन के तीसरे पहर में एक बार फलाहार करना चाहिए। अग्निहोत्र, गौ–सेवा, अतिथि सत्कार इसके परम कर्त्तव्य है। वानप्रस्थ व्यक्ति वस्त्र के रूप में मृगचर्म और वल्कल वस्त्र को धारण करता है। शरीर के दाढ़ी, बाल, नाखून काटना निषिद्ध है। इन्द्रिय संयम करते हुए जमीन पर ही सोना पड़ता है। सांसारिकता से विरक्त होकर भिक्षा पर ही जीविका का उपार्जन करना होता है।

(4) **सन्यास आश्रम (76 से जीवनपर्यन्त सन्यास आश्रम)**

यह अन्तिम आश्रम है। इस आश्रम में मोक्ष की प्राप्ति बताई गई है। मोक्ष के लिए जो अत्यन्त क्लिष्ट साधना व तपस्या है, वह संन्यास आश्रम में ही निहीत हैं। सन्यास आश्रम को प्राप्त व्यक्ति स्वयं की इन्द्रिय को अपने में समाहित कर लेता है और एकान्त में परमात्मा की आराधना करता है।

आश्रम व्यवस्था से सम्बन्धित प्रश्न

प्रश्न 1. आश्रम शब्द की उत्पत्ति हुई हे ?
उत्तर– श्रम धातु से।
प्रश्न 2. भारतीय संस्कृति में आश्रम है ?
उत्तर– चार। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा सन्यास।
प्रश्न 3. ब्रह्मचर्य आश्रम का प्रवेश द्वारा किस संस्कार को माना जाता है ?
उत्तर– उपनयन संस्कार/यज्ञोपवित संस्कार।
प्रश्न 4. ब्रह्मचर्य शब्द की निष्पति किन दो शब्दां से हुई है ?
उत्तर– ब्रह्म तथा चर्य।
प्रश्न 5. सभी आश्रमों में सर्वश्रेष्ठ आश्रम है ?
उत्तर– गृहस्थ आश्रम।
प्रश्न 6. स्वर्गलोक का प्रवेश द्वार है ?
उत्तर– गृहस्थ आश्रम।
प्रश्न 7. गृहस्थ आश्रम की आयु निर्धारित है ?
उत्तर– 26 से 50 वर्ष।
प्रश्न 8. वानप्रस्थ आश्रम में व्यक्ति का जीवन किन गुणों से युक्त होता है ?
उत्तर– त्याग, तपस्या और साधना से।

प्रश्न 9. इन्द्रिय सुखों के उपभोग से रहित आश्रम है ?
उत्तर– ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और सन्यास-आश्रम।
प्रश्न 10. किस आश्रम में आरण्यक की रचना हुई थी ?
उत्तर– वानप्रस्थ आश्रम में।
प्रश्न 11. वानप्रस्थ व्यक्ति का प्रमुख लक्ष्य है ?
उत्तर– आध्यात्मिक उन्नति।
प्रश्न 12. अन्तिम आश्रम है ?
उत्तर– सन्यास आश्रम।
प्रश्न 13. वह आश्रम जिसमें मोक्ष प्राप्ति का विधान है ?
उत्तर– संयास आश्रम।

संस्कार

संस्कार व्यक्ति के शारीरिक, सामाजिक, बौद्धिक और धार्मिक परिष्कार के निमित्त की गई वह धार्मिक प्रक्रिया है, जो विशुद्ध पवित्र अनुष्ठान में आस्था रखती है। व्यक्ति के असंस्कृत स्वरूप के सुसंस्कृत और अनुशासित करने के निमित्त ही संस्कारों की अभिव्यक्ति की गई है। संस्कार शब्द सम् उपसर्गपूर्वक कृ धातु से घञ् प्रत्यय करने पर निष्पन्न होता है। जिसका सामान्य अर्थ शुद्धि, परिष्कार अथवा स्वच्छता है। धर्मसूत्रों में इसका अर्थ शिक्षा, प्रशिक्षण, पवित्रता, अनुष्ठान आदि है। संस्कारों के साथ इनके कुछ मुख्य उद्देश्य भी है–

(1) सामाजिक सौहार्द (2) अशुभ शक्तियों का विनाश (3) देवताओं की प्रसन्नता (4) सुख समृद्धि की कामना (5) सामाजिक मूल्यों, आदर्शों आदि का ज्ञान (6) जीवन के नैतिक मूल्यों का ज्ञान (7) व्यक्तित्व विकास (8) दार्शनिक और आध्यात्मिक पक्ष का विकास।

संस्कारों की संख्या

- संस्कारों का सर्वप्रथम उल्लेख गृह्य सूत्रों में हुआ है। जिसमें इनकी संख्या (11) ग्यारह है।
- आचार्य मनु ने तेरह (13) संस्कार बताए है।
- स्वामी दयानन्द सरस्वती ने 'संस्कार विधि' नामक पुस्तक में सोलह (16) संस्कारों का उल्लेख किया है, जो निम्नलिखित है –

(1) **गर्भाधान संस्कार**

गर्भाधान संस्कार वह संस्कार है जिसके अन्तर्गत पति प्रदत्त वीर्य को पत्नी गर्भ के रूप में धारण करती है। धर्मशास्त्रों में इसका विस्तृत उल्लेख है। आचार्य मनु ने बताया है कि रजोदर्शन के दिन से लेकर 16 रात्रि पर्यन्त स्त्रियों का स्वाभाविक ऋतुकाल माना जाता है। इसमें प्रथम चार, ग्यारहवीं तथा तेहरवीं रात्रियां संभोग के लिए अनुचित है अन्य शेष उचित है। पुत्र प्राप्ति के लिए सम रात्रियों में तथा पुत्री की कामना के लिए विषम रात्रियों में संभोग करना चाहिए। अमावस्या, पूर्णिमा और दिन में संभोग वर्जित है किन्तु दीपावली की अमावस्या को यह दोष अभिप्रेत नहीं है। इस संस्कार को निषेक, ऋतु संगम, चतुर्थी कर्म या चतुर्थी होम के नाम से भी जाना जाता है।

(2) **पुंसवन संस्कार**

पुंसवन वह संकार है जिसके अन्तर्गत पुत्र प्राप्ति का अनुष्ठान किया जाता है। इस संस्कार के दिन स्त्री उपवास रखती है। स्नान के बाद नवीन वस्त्र धारण करती है। पति-पत्नी के समीप खड़ा होकर कुछ मंत्र उच्चारित करता

है। रात्रि में वटवृक्ष की छाल का रस स्त्री की नाक के दाहिने छिद्र में डाला जाता है, जिससे गर्भपात का भय नहीं रहता है। सामान्यतया यह संस्कार 2 मास से 8 मास के मध्य किसी भी दिन सम्पन्न कर दिया जाता है।

(3) सीमन्तोन्नयन संस्कार

यह संस्कार जन्म के पूर्व चौथे या पांचवे महिने में सम्पन्न किया गया जाता है। इसमें गर्भिणी स्त्री के बालों को मंत्रोच्चारणपूर्वक ऊपर की ओर उठाया जाता है। इसके पीछे दुष्ट शक्तियों के विनाश की धारणा है।

(4) जातकर्म संस्कार

यह जन्म के बाद होने वाला प्रथम संस्कार है। इसमें सोने के चम्मच से बच्चे को दही, मधु और घी को पिता के द्वारा चटाया जाता है या 'ओ३म्' लिखा जाता है, इसके पश्चात् नाल काटी जाती है और बालक को स्नान कराके माता का दूध पिलाया जाता है, दानादि पुण्य कर्म किया जाता है।

(5) नामकरण संस्कार

यह संस्कार बालक के जन्म के 10वें या 12वें दिन में होता है। इसमें नवजात शिशु का नाम प्रायः अपने इष्ट देवों के नाम पर रखा जाता है। आचार्य मनु ने ब्राह्मण का नाम मंगल सूचक, क्षत्रिय का नाम बल सूचक, वैश्य का नाम धनसूचक तथा शुद्र का नाम दास शब्द से युक्त बताया है। स्त्रियों के नामकरण के पीछे यह विधान है कि उनका नाम कोमल, स्पष्ट वर्णवाला मनोहर, मांगलिक, अंत में दीर्घ अक्षर वाला, आशीर्वाद से युक्त अर्थ वाला होना चाहिए। जैसे–सुशीला, यशोदा।

(6) निष्क्रमण संस्कार

निष्क्रमण का अर्थ है बाहर निकालना। जिस संस्कार के साथ शिशु को प्रथम बार घर से बाहर लाने का संस्कार किया जाता है, उसे निष्क्रमण संस्कार कहते है। यह जन्म के 12वें दिन से चतुर्मास पर्यन्त किसी भी दिन शुभ–मुहुर्त में एक ऐसे पवित्र स्थान का चयन करके किया जाता है जिसमें सूर्य का दर्शन हो सकें।

(7) अन्नप्राशन्न संस्कार

यह वह संस्कार है जिसके द्वारा शिशु को प्रथम बार अन्न युक्त भोजन कराया जाता है। जन्म के छठे मास या कुल परम्परा के अनुसार शुभ मुहुर्त में यह संस्कार होता है। बालक को छठे या आठवें मास में और बालिका को 5वें मास में यह संस्कार कराया जाता है।

(8) चुड़ाकरण संस्कार

चूड़ा का अर्थ है बालों का गुच्छा। इसी को मुण्डन संस्कार भी कहते है। मुण्डित सिर पर एक बालों का शिखा के रूप में गुच्छा रख दिया जाता है। सिर के काटे हुए बालों को मिट्टी या गोबर में लपेट कर नदी में फेंक दिया जाता है तथा मुण्डित सिर पर दही या मक्खन का लेप कर दिया जाता है।

(9) कर्णभेद संस्कार

यह संस्कार शिशु की शोभा तथा अलंकरण के निमित्त किया जाने वाला एक धार्मिक कृत्य है जो शिशु के जन्म से 10वें, 12वें, 16वें दिन या छठें, 7वें, 8वें, 12वें मास में भी तृतीय अथवा पंचम वर्ष में या कुल परम्परागत रीति के अनुसार किया जाता है। ब्राह्मण तथा वैश्य शिशु का कान चांदी की सूई से, क्षत्रिय का कान सोने की सूई से और शूद्र का कान लोहे की सूई से छेदा जाता था। सबसे पहले दायां कान तथा बाद में बायां कान छेदने की व्यवस्था थी। वर्तमान में भी यहीं व्यवस्था प्रचलित है।

(10) विद्यारम्भ संस्कार

यह शिक्षा सम्बन्धी प्रथम संस्कार है। यह संस्कार चूड़ाकर्म संस्कार के बाद सम्पादित किया जाता है। यह तृतीय वर्ष से सातवें वर्ष पर्यन्त शनिवार व मंगलवार को छोड़कर शुभ समय में प्रारम्भ किया जाता है। इसमें गणेश, लक्ष्मी, विष्णु, सरस्वती या इष्ट देव की पूजा की जाती है।

(11) यज्ञोपवीत संस्कार

इसे उपनयन संस्कार भी कहते है। उपनयन का अर्थ है बालक को गुरु, वेद, यम–नियम तथा देवताओं के सामीप्य के लिए दीक्षित किया जाता है। इसका मुख्य विषय वेदाध्ययन हैं। यह संस्कार शूद्र के अतिरिक्त तीनों वर्णों के लिए किया जाता है। इस संस्कार के पश्चात् ही व्यक्ति को 'द्विज' की संज्ञा दी जाती है। यह संस्कार ब्राह्मण बालक के लिए पांचवे व आठवें वर्ष में, क्षत्रिय के लिए 11वें वर्ष में तथा वैश्य के लिए 12वें वर्ष में किया जाता है। इस संस्कार के अवसर पर गणेश, लक्ष्मी, सरस्वती आदि देवी–देवताओं की पूजा की जाती है और रात्रि में बालक को मौन व्रत धारण करना पड़ता है। गुरु के द्वारा ब्रह्मचारी को शरीर के ऊपरी भाग को ढकने के लिए एक दुपट्टा दिया जाता है जो शक्ति और तेज का प्रतीक होता है तथा उसे तीन धागों से युक्त जनेऊ भी दी जाती है जो सत्व, रज और तमस् की प्रतीक है।

(12) वेदारम्भ संस्कार

उपनयन के पश्चात् शुभ मुहुर्त में मातृ पूजा के बाद अग्नि के समक्ष गुरु और शिष्य दोनों बैठ जाते है। वेदाध्ययन की इच्छा रखने वाला ब्रह्मचारी, बह्मञ्जलि बाँधकर हल्के वस्त्रों को धारण करके जितेन्द्रिय होकर 'ओ३म्' शब्द के उच्चारण पूर्वक वैदिक पाठ प्रारम्भ करता है और पुनः इसी रीति से 'ओ३म्' शब्द के उच्चारण पूर्वक वैदिक पाठ को बन्द करता है।

(13) केशान्त संस्कार

यह संस्कार चुडाकर्म संस्कार की तरह ही है किन्तु इसमें दाढ़ी–मुँछ के बालों का मुण्डन होता है और अन्त में शिष्य आचार्य को एक गाय प्रदान करता है। अतः यह गोदान संस्कार कहलाता है। मनु ने ब्राह्मण के लिए सोलह वर्ष, क्षत्रिय के लिए बाईस वर्ष और वैश्य के लिए 24 वर्ष निर्धारित किए है।

(14) समावर्तन संस्कार

समावर्तन संस्कार विद्यार्थी की शिक्षा की पूर्णता तथा घर की ओर लौटने की भावना का प्रतीक है। यह ब्रह्मचर्य आश्रम का अन्तिम संस्कार है। इसे स्नान संस्कार भी कहते है। इस संस्कार को पूर्ण करने वाला व्यक्ति स्नातक कहा जाता है।

(15) विवाह संस्कार

विवाह संस्कार गृहस्थ आश्रम का प्रवेशद्वार है जो समस्त संस्कारों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथा गौरवशाली है। इस संस्कार में व्यक्ति भोग से संयम की ओर, प्रवृत्ति से निवृति की ओर तथा संसार से ईश्वर की ओर अग्रसर है। यह बंधन मात्र नहीं है अपितु जीवन भर का वह धार्मिक बंधन है जिसको तोडना सामाजिक मूल्यों के विरुद्ध है। विवाह को धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष रूपी पुरुषार्थ की प्राप्ति का साधन बताया गया है। विवाह वि उपसर्ग पूर्वक वह् धातु से घञ् प्रत्यय करने पर निष्पन्न होता है जिसका अर्थ है **ले जाना** अर्थात् पत्नी को पति के घर ले जाना। विवाह उपरान्त ही व्यक्ति धार्मिक कार्यों के फल को प्राप्त करता है।

विवाह के उद्देश्य

(क) वंश वृद्धि करना (ख) पितृ ऋण से मुक्ति (ग) धार्मिक अनुष्ठान (घ) सामाजिक तथा धार्मिक कर्तव्य (ङ) धर्मानुकुल काम की प्राप्ति (च) सुख–दुःख में समान सहभागी जीवन साथी (छ) पुरुषार्थ की प्राप्ति में सुगमता।

विवाह–भारतीय संस्कृति में आठ प्रकार के विवाह प्रचलित है, जो निम्न है –

(क) ब्रह्म विवाह–यह सर्वोत्तम विवाह है। इसमें वेदज्ञ सदाचारी वर को बुलाकर उसकी पूजा करके वस्त्र आभूषणों से वर–कन्या को अलंकृत करके कन्या के पिता द्वारा कन्यादान किया जाता है।

(ख) देव विवाह–इस विवाह के अन्तर्गत कन्या के पिता द्वारा एक यज्ञ का आयोजन किया जाता है जो व्यक्ति उस प्रसंग प्राप्त यज्ञ को विधिपूर्वक सम्पन्न करा देता है, उसी व्यक्ति को कन्या का पिता दक्षिणा के रूप में अपनी कन्या को समर्पित कर देता है।

(ग) आर्ष विवाह–इस विवाह में कन्या का पिता धर्मकार्य की सिद्धि के लिए वर से या विवाह करने में इच्छुक ऋषि से एक बैल और एक गाय लेकर अपनी कन्या का विवाह करता है।

(घ) प्राजापत्य विवाह–तुम दोनों एक साथ धर्माचरण करो ऐसा कहकर तथा वर की पूजा करके जो कन्यादान किया जाता है, वह प्राजापत्य विवाह कहलाता है।

(ङ) गान्धर्व विवाह–जब काम के वशीभूत होकर युवक–युवती विवाह के पूर्व ही माता–पिता की उपेक्षा करते हुए योन संबंध स्थापित कर ले तो ऐसे विवाह को गान्धर्व विवाह या प्रेम विवाह कहते है।

(च) असुर विवाह–जिस विवाह में वर पक्ष से यथाशक्ति धन लेकर कन्या का पिता विवाह के रूप में अपनी कन्या को समर्पित करता है, इसे असुर विवाह कहते है।

(छ) राक्षस विवाह–जब कन्या के सम्बन्धी जनों को हताहत करके रोती, चिल्लाती हुई कन्या को जबरदस्ती ले जाकर उसके साथ विवाह सम्बन्ध स्थापित किया जाता है तो इसे राक्षस विवाह कहते है।

(ज) पैशाच विवाह–यह निन्दनीय विवाह हैं। इसमें रोती हुई कन्या को ले जाकर विवाह सम्बन्ध स्थापित किया जाता है, जो ब्राह्मणें के लिए सर्वथा वर्जित है।

(16) **अन्त्येष्टि संस्कार**–अन्त्येष्टि संस्कार को जीवन का अन्तिम संस्कार माना जाता है। दूसरे अतिरिक्त श्राद्ध, पिण्डदान आदि भी इस संस्कार की क्रियाएं है, जिसका उद्देश्य प्रेत आत्मा को शान्ति प्रदान करना है।

संस्कार से सम्बन्धित प्रश्न

प्रश्न 1. संस्कार से युक्त व्यक्ति कहलाता है ?
उत्तर– द्विज (पक्षी, दाँत, ब्राह्मण)।
प्रश्न 2. महर्षि मनु ने कितने संस्कार माने है ?
उत्तर– तेरह (13)
प्रश्न 3. संस्कार को अन्य किन नामों से जाना जाता है ?
उत्तर– सेक्रामेंट, धार्मिकविधान, विधिवतशुद्धि, आत्मव्यंजकशुद्धि।
प्रश्न 4. संस्कार शब्द में कौनसी धातु है ?
उत्तर– कृ धातु।
प्रश्न 5. धर्मशास्त्रों में कितने संस्कार बताए गए है ?
उत्तर– (16) सोलह संस्कार।

प्रश्न 6. जन्म से पूर्व कितने संस्कार किए जाते है ?
उत्तर– तीन।
प्रश्न 7. निषेक किस संस्कार को कहते है ?
उत्तर– गर्भाधान संस्कार को।
प्रश्न 8. गर्भाधान संस्कार का कर्ता कौन होता है ?
उत्तर– पति।
प्रश्न 9. पुत्र प्राप्ति के लिए किया जाने वाला संस्कार है ?
उत्तर– पुंसवन संस्कार।
प्रश्न 10. पुंसवन संस्कार कौनसे माह में किया जाता है ?
उत्तर– चतुर्थ माह में।
प्रश्न 11. पुंसवन संस्कार में किस वृक्ष के रस का विधान है ?
उत्तर– बरगद वृक्ष के रस का।
प्रश्न 12. वह संस्कार जिसमें स्त्री के केशों को ऊपर उठाया जाता है ?
उत्तर– सीमन्तोन्नयन संस्कार।
प्रश्न 13. सीमन्तोन्नयन संस्कार में किस देव की पुजा करने का विधान है ?
उत्तर– नान्दीमुख नामक पितर की।
प्रश्न 14. बाल्यकाल का प्रथम संस्कार है ?
उत्तर– जातकर्म संस्कार।
प्रश्न 15. जातकर्म संस्कार को यह भी कहते है ?
उत्तर– नाल छेदन संस्कार।
प्रश्न 16. शिशु को स्तनपान किस संस्कार में कराया जाता है ?
उत्तर– जातकर्म संस्कार।
प्रश्न 17. जन्म के उपरान्त प्रथम बार सन्तान को घर से बाहर निकालने का संस्कार है ?
उत्तर– निष्क्रमण संस्कार।
प्रश्न 18. अन्नप्राशन संस्कार कौनसे माह में होता है ?
उत्तर– जन्म से छठें मास में।
प्रश्न 19. चूड़ा का शाब्दिक अर्थ है ?
उत्तर– शिखा।
प्रश्न 20. वह संस्कार जो वेदों के अध्ययन की अनुमति देता है ?
उत्तर– उपनयन संस्कार।
प्रश्न 21. स्नान संस्कार कहा जाता है ?
उत्तर– समावर्तन संस्कार।
प्रश्न 22. ब्रह्मचर्य का अन्तिम संस्कार है ?
उत्तर– समावर्तन संस्कार।
प्रश्न 23. सर्वाधिक महत्वपूर्ण संस्कार है ?
उत्तर– विवाह संस्कार।

प्रश्न 24. विवाह का शाब्दिक अर्थ है ?
उत्तर– ले जाना।
प्रश्न 25. विवाह कितने प्रकार के होते है ?
उत्तर– आठ प्रकार के।
प्रश्न 26. सर्वश्रेष्ठ विवाह है ?
उत्तर– ब्रह्म विवाह।
प्रश्न 27. निकृष्ट विवाह है ?
उत्तर– पैशाच विवाह।
प्रश्न 28. आठ विवाह के अतिरिक्त अन्य कौनसे विवाह प्रचलित है ?
उत्तर– अनुलोम विवाह तथा प्रतिलोम विवाह।
प्रश्न 29. मानव का वास्तविक संस्कार है ?
उत्तर– अन्त्येष्टि संस्कार।
प्रश्न 30. गोदान संस्कार कहा जाता है ?
उत्तर– केशान्त संस्कार।

पंच महायज्ञ

प्रतिदिन किए जाने वाले यज्ञों में पंच महायज्ञों का महत्वपूर्ण स्थान है, जो निम्नलिखित है–

(1) **ब्रह्म यज्ञ**–ब्रह्मयज्ञ द्वारा मनुष्य अपने प्राचीन ऋषि मुनियों के प्रति श्रद्धा व्यक्त करता है। इस यज्ञ में व्यक्ति वेद मंत्रों का पाठ करता है। इस यज्ञ को नियमित करने वाला व्यक्ति मानव जाति का कल्याण करके अमृतत्व को प्राप्त करता है।

(2) **पितृ यज्ञ**–मृत पूर्वजों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने हेतु पितृ यज्ञ का विधान है जो पुत्र के द्वारा ही गृहस्थ आश्रम में किया जाता है। इसका मनोवैज्ञानिक महत्व भी है। वर्तमान जीवन में व्याप्त गृह–कलह के निवारण हेतु प्राचीन ऋषियों ने इस यज्ञ का निर्माण किया। इससे पारिवारिक जीवन आनन्दपूर्वक व्यतीत किया जा सकता है।

(3) **देव यज्ञ** –इस यज्ञ में देवताओं का पूजन–अर्चन किया जाता है तथा बलि और अग्नि में आहुति देकर उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट की जाती है। जिसके पीछे यह विधान है कि हमारे पास जो सुख–समृद्धि के साधन है वह परमात्मा के द्वारा दिए गए है। अतः विभिन्न बाधाओं से मुक्ति हेतु इस यज्ञ को किया जाता है।

(4) **भूत यज्ञ**–इसे **'वलिवैश्वदेवयज्ञ'** भी कहते है। घर में जो कुछ भोजन बना है उसका 5वाँ भाग लेकर मंत्रों के उच्चारण सहित पाकशाला में डालना चाहिए।

(5) **नृ यज्ञ**–इसे 'अतिथि यज्ञ' भी कहते है। अतिथि सत्कार करना गृहस्थ का प्रथम धर्म है। सामाजिक, आधुनिक और नैतिक दृष्टि से नृ–यज्ञ का अत्यधिक महत्व है। 'अतिथि देवो भवः' यह उक्ति भी प्रसिद्ध है। वैदिक मान्यता है कि अतिथि भोजन नहीं करता अपितु वह गृहस्थ के पापों का भक्षण करता है।

पंच महायज्ञ से सम्बन्धित प्रश्न

प्रश्न 1. पञ्चैवमहायज्ञाः। तान्येवमहासत्राणिदेवयज्ञभूतयज्ञोमनुष्ययज्ञोपितृयज्ञोब्रह्मयज्ञेति। उद्धृत अंश है ?
उत्तर– शतपथब्राह्मण।
प्रश्न 2. पंचमहायज्ञ कौन–कौन से है ?
उत्तर– देवयज्ञ, नृ (मनुष्य) यज्ञ, भूतयज्ञ, पितृयज्ञ तथा ब्रह्मयज्ञ।

प्रश्न 3. पितृ यज्ञ है ?
उत्तर– महायज्ञ।
प्रश्न 4. अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः, पितृयज्ञस्तु तर्पणम्।
होमोदेवौं बलिभौतो, नृयज्ञोऽतिथि पूजनम्।। में वर्णित है ?
उत्तर– पंचमहायज्ञ।
प्रश्न 5. ऋषि यज्ञ है ?
उत्तर– ब्रह्मयज्ञ।
प्रश्न 6. पितृयज्ञ कितनी प्रकार से सम्पादित होता है ?
उत्तर– तीन प्रकार से (तर्पण, बलि तथा श्राद्ध)।
प्रश्न 7. मनु ने होम को कहा है ?
उत्तर– देवयज्ञ।
प्रश्न 8. बलिवैश्वदेव यज्ञ है ?
उत्तर– भूतयज्ञ।
प्रश्न 9. अतिथि यज्ञ है ?
उत्तर– नृयज्ञ।
प्रश्न 10. यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवातानि धर्मानि प्रथमान्यासन् मन्त्रांश है ?
उत्तर– ऋग्वेद।
प्रश्न 11. यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म उक्ति है ?
उत्तर– शतपथ ब्राह्मण।
प्रश्न 12. अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः उद्धृत अंश है ?
उत्तर– अथर्ववेद।
प्रश्न 13. ऋषियज्ञं देवयज्ञं भूतयज्ञं च सर्वदा।
नृयज्ञं पितृयज्ञं च यथाशक्तिं न हावयेत्।। किस ग्रन्थ से उद्धृत है ?
उत्तर– मनुस्मृति।
प्रश्न 14. अग्निहोत्र यज्ञ है ?
उत्तर– देवयज्ञ।
प्रश्न 15. पंचमहायज्ञ का किसके लिए विधान है ?
उत्तर– गृहस्थ।
प्रश्न 16. पुरोहितों की आवश्यकता किस यज्ञ में नहीं होती ?
उत्तर– पंच महायज्ञ।
प्रश्न 17. वैदिक मन्त्र का अध्ययन–अध्यापन कौनसा यज्ञ है ?
उत्तर– ब्रह्म यज्ञ।
प्रश्न 18. दैनिक अनुष्ठान स्वरूप यज्ञ है ?
उत्तर– पंच महायज्ञ।
प्रश्न 19. यज्ञ शब्द में कौनस प्रत्यय है ?
उत्तर– नङ् प्रत्यय।

प्रश्न 20. सृष्टि के संचालन का भारतीय प्रतीक है ?
उत्तर– यज्ञ।
प्रश्न 21. गृहस्थ के लिए कितने यज्ञों का विधान है ?
उत्तर– पंच महायज्ञों का।
प्रश्न 33. मृत पूर्वजों के प्रति किया जाने वाला यज्ञ है ?
उत्तर– पितृयज्ञ।
प्रश्न 34. यज्ञ का वैज्ञानिक महत्व किसलिए है ?
उत्तर– पर्यावरण शुद्धि के लिए।
प्रश्न 22. भूत यज्ञ का अपर नाम है ?
उत्तर– बलिवैश्वदेवयज्ञ।
प्रश्न 23. नृ–यज्ञ को यह भी कहते है ?
उत्तर– अतिथि यज्ञ।
प्रश्न 24. पाक यज्ञ कितने प्रकार का है ?
उत्तर– सात।
प्रश्न 25. हवि यज्ञ कितने प्रकार का है ?
उत्तर– सात।
प्रश्न 26. वाजपेय है ?
उत्तर– सोमयाग।

प्रश्नोत्तराणि

भारतीय संस्कृत्याः सम्वन्धिताः

प्रश्न 1. स्मृति शब्देन किं बोध्यते?
(क) वेदः (ख) धर्मशास्त्रम् (ग) पुराणम् (घ) दर्शनशास्त्रम् (ख)
प्रश्न 2. मनुस्मृतेः लेखकः कः?
(क) पाराशरः (ख) नारदः (ग) मनोः जुवः (घ) महर्षि मनुः (घ)
प्रश्न 3. स्वयम्भूवस्य मनोः धर्मपत्नी का आसीत्?
(क) शताङ्गराः (ख) शतरुपाः (ग) शतप्रज्ञा (घ) दिव्यास्वप्ना (ख)
प्रश्न 4. कति आश्रमाः सन्ति?
(क) त्रयः (ख) चत्वारः (ग) पञ्च (घ) षट् (ख)
प्रश्न 5. आचारः परमोधर्मः श्रुत्युक्तः स्मार्त एव च इतीदं कस्यां स्मृतौ विद्यते?
(क) मनुस्मृतौ (ख) नारद स्मृतौ (ग) पाराशर स्मृतौ (घ) याज्ञवल्क्य स्मृतौ (क)
प्रश्न 6. कति संस्काराः सन्ति?
(क) 15 (ख) 13 (ग) 16 (घ) 18 (ग)
प्रश्न 7. एकं ब्राह्मं अहः?
(क) दैविक युग सहस्त्रम् (ख) मनुष्य युगचतुष्कम्
(ग) दैविक युग शतम् (घ) मनुष्य युग शतम् (क)

प्रश्न 8. शिशोः जन्मात् पूर्वं कति संस्काराः भवन्ति?
(क) 3 (ख) 2 (ग) 4 (घ) 9 (क)
प्रश्न 9. समावर्तन संस्कार विधौ स्नातकानां प्रकाराः भवन्ति?
(क) चत्वारः (ख) पञ्च (ग) त्रयः (घ) षट् (ग)
प्रश्न 10. कन्यकाच्छलात् विवाहोऽस्ति?
(क) असुरः (ख) पैशाचः (ग) राक्षसः (घ) गान्धर्व (ख)
प्रश्न 11. वैश्यस्य गोदानं विधीयते?
(क) अष्टमे वर्षे (ख) नवमे वर्षे
(ग) चतुर्विंशंति वर्षे (घ) षोडशेवर्षे (ग)
प्रश्न 12. गौतमेन कति संस्काराः कथिताः?
(क) 35 (ख) 38 (ग) 40 (घ) 42 (ग)
प्रश्न 13. आश्रमाणां योनिरस्ति?
(क) ब्रह्मचारी (ख) गृहस्थः (ग) वानप्रस्थः (घ) सन्यासः (ख)
प्रश्न 14. मनुस्मृत्या मुल्लेखिता कति संस्काराः?
(क) 4 (ख) 6 (ग) 5 (घ) 3 (घ)
प्रश्न 15. निष्क्रमण संस्कारः कर्तव्यः?
(क) प्रथमे मासि (ख) द्वितीये मासि (ग) चतुर्थे मासि (घ) षष्ठे मासि (ग)
प्रश्न 16. उपनयन संस्कारे राज्ञः दण्डो भवति?
(क) केशान्तिकः (ख) ललाटसम्मितः
(ग) नासिकान्तिकः (घ) कर्णान्तिकः (ख)
प्रश्न 17. 'अङ्गुलिमूले' किं तीर्थ भवति?
(क) ब्राह्मतीर्थम् (ख) प्रजापति तीर्थम्
(ग) दैवतीर्थम् (घ) पितृतीर्थम् (ख)
प्रश्न 18. मनुना राजा स्वराष्टे कीदृशोऽभिप्रेतः?
(क) क्षमन्वितः (ख) भृशदण्डः (ग) न्यायवृतः (घ) अजिह्नः (ग)
प्रश्न 19. क्षत्रियार्थम् केशान्त संस्कारस्य काल उक्तः?
(क) द्वादश वर्षे (ख) षोडशे वर्षे (ग) द्वाविंशे (घ) चतुर्विंशे वर्षे (ग)
प्रश्न 20. चूडाकरणं कदा क्रियते?
(क) चतुर्थ वर्षे (ख) पञ्चम वर्षे (ग) दशमे मासे (घ) सम्वत्सरे (घ)
प्रश्न 21. धर्मस्य लक्षणं किम्?
(क) एक विधम् (ख) द्विविधम् (ग) त्रिविधम् (घ) चतुर्विधम् (घ)
प्रश्न 22. श्रुतिनामर्थानुगामि ग्रन्थाः उच्यन्ते?
(क) पुराणनि (ख) कालिदासस्य नाटकानि
(ग) वदोङ्ग (घ) स्मृतयः (घ)
प्रश्न 23. धर्मं जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमंश्रुतिः कस्य स्मृतौ वर्तते?
(क) याज्ञवलक्यस्यं (ख) पाराशरस्य
(ग) मनुस्मृतेः (घ) नारदस्य (ग)

प्रश्न 24. मनुस्मृत्यनुसारेण सरस्वती-दृषद्वत्योर्देवनद्योर्मध्ये देशोऽस्ति?
(क) आर्यावर्तः (ख) ब्रह्मवर्तः (ग) मध्यप्रदेशः (घ) कुरुक्षेत्रम् (ख)

प्रश्न 25. मनुस्मृत्यनुसारेण कः परमोधर्मः?
(क) अहिंसा (ख) सत्यम् (ग) आचारः (घ) परोपकारः (ग)

प्रश्न 26. मनुस्मृत्यनुसारं क्षत्रियः अर्हति?
(क) बैल्वपालाशौ (ख) वाटखादिरौ
(ग) पैलवौदुम्बरौ (घ) आश्वत्थाभ्रकौ (ख)

प्रश्न 27. मनुस्मृत्यनुसारं सनातनः अव्यक्तः सर्वप्रथमं किम् असृजत्?
(क) अपः (ख) तेजः (ग) वायुः (घ) शब्दः (क)

प्रश्न 28. ब्राह्मणस्योपनयनं कदा भवति?
(क) गभष्टिमे वर्षे (ख) गर्भेकादशे वर्षे
(ग) गर्भद्वादशे वर्षे (घ) गर्भनवमे वर्षे (क)

प्रश्न 29. विवाहः कतिविधः?
(क) पञ्च (ख) सप्त (ग) अष्ट (घ) दश (ग)

प्रश्न 30. कति महायज्ञाः?
(क) त्रयः (ख) पञ्च (ग) सप्त (घ) दश (ख)

प्रश्न 31. कति वर्णाः?
(क) त्रयः (ख) पञ्च (ग) चत्वारः (घ) षट् (ग)

प्रश्न 32. कति उपायाः?
(क) त्रयः (ख) पञ्च (ग) षट् (घ) चत्व (घ)

प्रश्न 33. प्राचीनकाले 'शिक्षायां कस्य प्रभावः' सर्वाधिकः आसीत्
(क) धनस्य (ख) राज्ञः (ग) गुरोः (घ) संस्कारस्य (ग)

प्रश्न 34. उचित क्रममास्ति?
(क) आर्षः, दैवः, ब्राह्मः, प्राजापत्यः, गान्धर्वः, आसुरः, पैशाचः, राक्षसः।
(ख) ब्राह्मः, प्राजापत्यः, आर्षः, दैव5, पैशाचः, आसुरः, राक्षसः, गान्धर्वः।
(ग) ब्रह्मः, दैवः, आर्षः, प्राजापत्यः, आसुरः, गान्धर्वः, राक्षसः, पैशाचः।
(घ) दैवः, आर्षः, ब्राह्म, प्राजापत्यः, पैशाचः राक्षसः असुरः, गान्धर्वः। (ग)

प्रश्न 35. किं नाम देवतीर्थम्?
(क) कनिष्ठिका मूलम् (ख) तर्जनीमूलम्
(ग) अगुष्ठमूलम् (घ) अङ्गुल्याग्रम् (घ)

प्रश्न 36. कस्मिन् वर्षे विद्यारम्भः कार्यः?
(क) तृतीये (ख) चतुर्थे (ग) पञ्चमे (घ) षष्ठे (ग)

प्रश्न 37. केशान्त संस्कारः कस्मिन् वर्षे भवति?
(क) पञ्चमे (ख) द्वादशे (ग) पञ्चदशे (घ) षोड़षे (घ)

प्रश्न 38. क्षत्रियस्योपनयनं कदा भवति?
(क) गभष्टिमे वर्षे (ख) गभदि् द्वादशे वर्षे
(ग) गर्भदिकादशे (घ) गर्भाद् दशमे वर्षे (ग)

प्रश्न 39. क्षत्रियस्य कः धर्म्यः विवाहः?
(क) ब्राह्म (ख) आर्षः (ग) प्राजापत्यः (घ) गान्धर्वः (घ)

प्रश्न 40. सीमन्तोन्नयनं कस्मिन् मासे क्रियते?
(क) चतुर्थे (ख) पञ्चमे (ग) सप्तमे (घ) अष्टमे (क)

प्रश्न 41. द्रविण दानं कस्मिन् विवाहे क्रियते?
(क) गान्धर्वे (ख) आसुरे (ग) राक्षसे (घ) आर्षे (ख)

प्रश्न 42. कर्णवेधः कदा प्रशस्यते?
(क) चतुर्थेमासि (ख) पञ्चमे मासि (ग) नवमे मासि (घ) दशमे मासि (घ)

प्रश्न 43. वैश्यस्य कः मुख्य विवाहः?
(क) आसुरः (ख) आर्षः (ग) राक्षसः (घ) गान्धर्व (क)

प्रश्न 44. वैदिककाले कस्मात् संस्कारात् परं शिक्षायाः प्रारम्भः?
(क) गर्भाधान संस्कारात् (ख) कर्णवेध संस्कारात्
(ग) नामकरण संस्कारात् (घ) उपनयन संस्कारात्। (घ)

प्रश्न 45. 'उद्वाह' शब्दस्य कोऽर्थः?
(क) वरस्य विवाहः (ख) कन्यायाः विवाहः
(ग) विधवायाः विवाहः (घ) बालविवाहः (ख)

प्रश्न 46. हस्ते ब्रह्म तीर्थं कुत्र भवति?
(क) अङ्गुष्ठमूले (ख) कनिष्ठिकामूले
(ग) कराग्रे (घ) हस्तमूले (क)

प्रश्न 47. एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्र शिक्षेरन् पृधिव्यां सर्वमानवाः॥ इत्युक्तम्–
(क) रामायणे (ख) महाभारते (ग) मनुस्मृतौ (घ) भगवद्गीतायाम् (ग)

प्रश्न 48. मनुसंहितातः रिक्त स्थानं पूरयत–
वेदः स्मृतिः..............स्वस्य च प्रियमात्मनः।
एतत् चतुर्विध प्राहुः साक्षात् धर्मस्य लक्षणम्॥
(क) उपकारः (ख) अपकारः (ग) सदाचारः (घ) परम्परां (ग)

प्रश्न 49. विवाहेषु अधमोऽस्ति?
(क) राक्षसः: (ख) पैशाचः (ग) आसुरः (घ) गन्धर्व (ख)

प्रश्न 50. विद्द्भिः सेवितः सद्भिः नित्यम् द्वेष रागिभिः हृदयेनभ्युनुज्ञातः। कस्य लक्षणम् इदम्?
(क) अनुरागस्य (ख) द्वेषस्य (ग) धर्मस्य (घ) मोक्षस्य (ग)

!! इति भावः !!